ट्रस्ट से प्रकाशित प्रथम संस्करण—
जुलाई, १९७५ ई०

मूल्य— २५·००

मुद्रक:—
वाणी प्रेस
भुवन वाणी ट्रस्ट
'प्रभाकर निलयम्', ४०५/१२८, चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

माल्यार्पण

नागरी लिपि भारत की जोड़-लिपि हो, विश्व की सम्पर्क लिपिओं में भी स्थान हो, अपनी मातृलिपि के साथ-साथ नागरी लिपि भी अपनाई जाय— इस मंत्र को अनुप्राणित करनेवाले।

सत्य प्रेम करुणा



विश्व भाषा बन्धुत्व

बाबा का जय जगत

तुलसी के रामचरितमानस से एक शती प्राचीन बँगला 'कृत्तिवास रामायण' के पाँच काण्डों का नागरी लिप्यन्तरण और हिन्दी पद्यानुवाद से बाबा को माल्यार्पण करते हुए ट्रस्ट कृतकृत्य है।

१० जुलाई, १९७५

रथयात्रा-दिवस

नन्दकुमार अवस्थी

प्रतिष्ठाता—भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ—३

भूमिका

श्री नन्दकुमार अवस्थी हिन्दी भाषार एकजन प्रसिद्ध साहित्यिक, बाङ्ला भाषाओ ताहार यथेष्ट दखल आछे। दीर्घ दिन अनेक परिश्रम करिया तिनि वंग भाषाय रचित बिख्यात कृत्तिवास रामायण सुललित हिन्दी छन्दे अनुवाद करियाछेन। देवनागरी अक्षरे मूल बाङ्लाओ पुस्तके सन्निविष्ट हइयाछे। आमार हिन्दी भाषार ज्ञान सामान्य। एइ भाषाय अभिज्ञ मिशनेर अनेक संन्यासी श्री अवस्थी जीर एइ अनुवादेर भूयसी प्रशंसा करियाछेन। आमार दृढ़ विश्वास श्री अवस्थी जीर एइ प्रशंसनीय प्रचेष्टा हिन्दी भाषाभाषीदेर वाङ्ला भाषाय लिखित एइ अमूल्य ग्रंथेर रसग्रहणे साहाय्य करिवे। श्री अवस्थी जी ताहार एइ अनुवादेर द्वारा बाङ्ला भाषाभाषी ओ हिन्दी भाषा-भाषीदेर अशेष कृतज्ञतापाश आवद्ध करियाछेन। आमि एइ पुस्तकेर वहुल प्रचार कामना करि। इति।

(स्वामी) गंभीरानन्द
सा० स० रामकृष्ण मिशन
पो० बिलूरमठ, हावड़ा

१०-४-६९

अनुवाद

श्री नन्दकुमार अवस्थी हिन्दी भाषा के एक प्रसिद्ध साहित्यिक हैं। बंगला भाषा में भी उनकी यथेष्ट गति है। दीर्घकाल तक बहु परिश्रम द्वारा उन्होंने वंगभाषा में रचित सुप्रसिद्ध कृत्तिवास रामायण को सुललित हिन्दी काव्य में अनुवादित किया है। (साथ ही) देवनागरी अक्षरों में मूल बंगला पाठ भी पुस्तक में सन्निविष्ट है। मेरा हिन्दी भाषा का ज्ञान सामान्य है। तथापि इस भाषा के अभिज्ञ (रामकृष्ण) मिशन के अनेक संन्यासी जनों ने श्री अवस्थी जी के इस अनुवाद की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि श्री अवस्थी जी की यह प्रशंसनीय प्रचेष्टा हिन्दी भाषाभाषियों को वंग-भाषा में लिखित इस अमूल्य ग्रन्थ का रस ग्रहण करने में सहायता प्रदान करेगी। श्री अवस्थी ने अपने इस अनुवाद (और लिप्यन्तरण) द्वारा वंगभाषाभाषी और हिन्दी-भाषाभाषी दोनो—को समानरूपेण कृतज्ञतापाश में आवद्ध किया है। हम इस पुस्तक के बहुल प्रचार की कामना करते हैं। इति।

(स्वामी) गंभीरानन्द
सा० स० रामकृष्ण मिशन
पो० बिलूरमठ, हावड़ा

१०-४-६९



जिनकी पुष्कल लेखनी से यह सलिल-काव्य प्रवाहित है

उन्हीं महासंत कृत्तिवास को

सादर समर्पित

—नन्दकुमार अवस्थी

उपहार

....

....

....

....

प्रकाशकीय

'कृत्तिवास रामायण' का विस्तृत विवरण पृष्ठ १४-२१ में अनुवादक के वक्तव्य में प्रस्तुत है। इस ग्रन्थ का आदिकाण्ड मात्र श्री प्रभाकर साहित्यालोक, लखनऊ से सन् ५९-६० में प्रकाशित हुआ था। उसको प्राप्त समादर से प्रोत्साहित होकर आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दर—इन पाँच काण्डों का सानुवाद लिप्यन्तरण भुवन वाणी, लखनऊ से जून १९६९ ई० में प्रकाशित हुआ। देश में उसकी सराहना हुई।

इसी बीच १९६९ ई० में भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ की स्थापना हुई। इस संस्था के द्वारा, भारत में व्यवहृत लगभग बीस भाषाओं का सानुवाद नागरी लिप्यन्तरण-कार्य सफलता के साथ हो रहा है। ट्रस्ट ने कृत्तिवास रामायण लंकाकाण्ड का नागरी लिप्यन्तरण गद्यानुवाद सहित प्रकाशित किया। इसको दृष्टि में रख कर कृत्तिवास रामायण के उपर्युक्त पाँच काण्डों को भी ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित करवाना समुचित समझा गया।

रहा प्रकाशन। बड़ा खर्चीला काम था। इसमें देश के उदार श्रीमन्त जन और उत्तर प्रदेश शासन की आंशिक सहायता रही। साथ-साथ में अन्य भाषाओं के लगभग बीस ग्रन्थों का प्रकाशन भी चल रहा था। भगवान् की कृपा से भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार श्री रमाप्रसन्न नायक और तत्कालीन गृहमन्त्री श्री उमाशंकर जी दीक्षित की दृष्टि ट्रस्ट के भाषाई सेतुकरण के पुष्कल कार्यों की ओर गई। उनकी संस्तुति, पर शिक्षा एवं समाजकल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की कृपा हुई। फलस्वरूप, ग्रन्थ के शेषांश को पूरा करके अखिल देश की जनता के सामने प्रस्तुत करने की नौबत आई। शिक्षामन्त्रालय के मर्मज्ञ विद्वान् डाइरेक्टर श्री सनत्कुमार चतुर्वेदी जी की बड़ी कृपा रही। हम इन महानुभावों का, भाषाई सेतुकरण के राष्ट्रीय कार्य में उत्तरोत्तर दृढ़ और कार्यरत रहने का संकल्प लेते हुए, आभार प्रर्दन करते हैं।

कृत्तिवास रामायण उत्तर काण्ड का सानुवाद लिप्यन्तरण का प्रकाशन अभी अवशेष है।

नन्दकुमार अवस्थी

प्रतिष्ठाता—भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३

(उ० प्र० सरकार द्वारा मई ६० में पुरस्कृत)

कृत्तिवास रामायण (आदिकाण्ड)

के देवनागरी लिप्यन्तरण तथा हिन्दी पद्यानुवाद पर चन्द विद्वानों की प्रशस्तियाँ

(रामचरितमानस से सौ वर्ष प्राचीन बंगला काव्य)

यह अनुवाद प्रकाशित करके आपने बंगला और हिन्दी दोनो भाषाओं की अमूल्य सेवा की है; हमें विश्वास है कि हिन्दी जगत् आपके इस प्रयत्न का हार्दिक स्वागत करेगा।

ता. १६ जुलाई १६६० **—स० मन्त्री, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली**

'कृत्तिवास रामायण' (आदिकाण्ड) की पुस्तक देख ली। अच्छा काम शुरू किया है। एक बात सहज ही लिख दूँ, कृत्तिवास से भी ७०-८० साल पहले 'माधवकन्दली' रचित 'असमिया' रामायण है।.........

सारनिया आश्रम—गौहाटी, ४-१-६१ **—विनोबा**

कृत्तिवास रामायण (आदिकाण्ड) का पद्यानुवाद मिला। बहुत ही अच्छा बन पड़ा है। कृपया बधाई स्वीकार करें।

वाराणसी, २८-७-५९ **—हजारीप्रसाद द्विवेदी**

बंगला भाषा के महाकवि कृत्तिवास की बंगला रामायण का पं० नन्दकुमार अवस्थी द्वारा किया गया हिन्दी पद्यानुवाद पढ़कर प्रसन्नता हुई। अभी अनुवाद का आदिकाण्ड ही प्रकाशित हुआ है। पूरे प्रकाशन की संस्तुति करता हूँ। अवस्थी जी का यह कार्य बहुत ही सराहनीय है।

लखनऊ विश्वविद्यालय, ९-२-६० **—डा० दीनदयाल गुप्त**

आपने 'कृत्तिवास रामायण' पर जो श्रम किया है, सर्वथा श्लाघ्य है। अनुवाद पद्यबद्ध अच्छा रहा।

कनखल, २८-५-५९ **—किशोरीदास बाजपेयी**

निस्सन्देह कृत्तिवास रामायण को हिन्दीवालों के लिए सुलभ करके आपने अत्यन्त उपयोगी कार्य किया है; जनता का कर्तव्य है कि वह उक्त ग्रन्थ को खरीदकर पढ़े, जिससे आपका पुण्यकार्य सफल हो।

नई दिल्ली, ९-९-५९ **—बनारसीदास चतुर्वेदी**

'कृत्तिवास रामायण' का पद्यानुवाद प्रकाशित कर आपने वास्तव में हिन्दी का बड़ा उपकार किया है।

दिल्ली विश्वविद्यालय, १७-८-५९ —डा० नगेन्द्र

कृत्तिवास रामायण का अनुवाद ऐसी लोकप्रिय शैली में करके आपने बड़ा ही उपयोगी कार्य पूरा किया।

आकाशवाणी भवन, नई दिल्ली, ता० २३-१०-६२ —नरेन्द्र शर्मा

मैंने कृत्तिवास रामायण के अनुवाद का आदिकाण्ड देखा। पुस्तक बहुत अच्छी लगी।

राजभवन, जयपुर २६-२-६३ —सम्पूर्णानन्द

बंगला कृत्तिवास रामायण का पद्यानुवाद एवं मूल का देवनागरी लिप्यन्तरण, यह प्रयास सचमुच ही स्तुत्य है। आदिकाण्ड आद्योपांत देखा। बेहद पसंद आया। आशा है अगले काण्ड भी शीघ्र प्रकाशित होंगे।

—सत्यनारायण झुनझुनवाला

सलखिया, हावड़ा, ३०-३-६५ (मंत्री ठाकुरदास सुरेखा ट्रस्ट)

आपकी कृत्तिवास रामायण तो बहुत सुन्दर है। कल से इसी तखत पर रखी है। और भी सज्जनों ने देखा। उनका कहना है कि अनुवाद तो मूल से भी सुन्दर है। —रमेशचन्द्र देव

रामनगर दुर्ग, वाराणसी, ७-३-६५ मंत्री, अखिल भारती काशिराज न्यास

बंगला-देवनागरी वर्णमाला

অ अ	আ आ	ই इ	ঈ ई	উ उ
ঊ ऊ	ঋ ऋ	ঌ ऌ	এ ए	ঐ ऐ
ও ओ	ঔ औ		অং अं	অঃ अः
ক क	খ ख	গ ग	ঘ घ	ঙ ङ
চ च	ছ छ	জ ज	ঝ झ	ঞ ञ
ট ट	ঠ ठ	ড ड	ঢ ढ	ণ ण
ত त	থ थ	দ द	ধ ध	ন न
প प	ফ फ	ব ब	ভ भ	ম म
য य	র र	ল ल	ব व	শ श
ষ ष	স स	হ ह	ক্ষ क्ष	জ্ঞ ज्ञ
শ্র श्र	ড় ड़	ঢ় ढ़	ৎ त्	য় य

विषय-सूची

अयोध्या काण्ड

अनुवादक का वक्तव्य

मंगलमय भगवान् की दया, पूर्वजों की अनुकम्पा और गुरुजनों के आशीर्वाद से मुझ अकिञ्चन ने, आज से लगभग ५०० वर्ष पूर्व अवतीर्ण, वंगभाषा के महाकाव्य "कृत्तिवास रामायण" के हिन्दी-रूपान्तर को प्रस्तुत करने का साहस किया। पाठकों के लिए भी यह कौतूहलजनक है। प्रश्न उठ सकता है कि हिन्दी में रामचरित्र पर तुलसी की अमर रचना 'रामचरितमानस' के अखंड और सार्वभौम साम्राज्य के रहते एक नवीन रामायण की रचना करने की आवश्यकता क्या है? इस जिज्ञासा के समाधान और महासन्त कृत्तिवास तथा उनके सुललित और सर्वांगपूर्ण इस महाकाव्य का, पाठकों के समक्ष, कुछ परिचय प्रस्तुत करने के हेतु, हिन्दीकार के नाते यह वक्तव्य देना आवश्यक प्रतीत हुआ।

संस्कृत के उत्तरकालीन साहित्य और संस्कृतेतर भारत की क्षेत्रीय तथा जनपदों की अन्य विपुल भाषाओं में प्राप्त धार्मिक अथवा सांस्कृतिक प्रायः सारे साहित्य पर व्यास के जयग्रन्थ (महाभारत) अथवा वाल्मीकि (रत्नाकर) की रामायण का प्रभाव है। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि-रचित 'वाल्मीकीय रामायण' रामचरित्र पर उपलब्ध रचनाओं में सर्वप्रथम काव्य † है। इसी के आधार पर वृहत्तर भारत§ के विभिन्न क्षेत्रों और विभिन्न भाषाओं में कालिदास, कृत्तिवास, तुलसीदास आदि सरस्वती के वरद पुत्रों ने समय-समय पर मर्यादापुरुषोत्तम राम पर अपनी-अपनी भावना के अनुरूप काव्यरचना की है।

उल्लेखनीय है कि गोस्वामीजी के 'रामचरितमानस' के रचनाकाल से लगभग सौ वर्ष पूर्व "कृत्तिवासी रामायण" का आविर्भाव हुआ। उसके रचयिता संत कृत्तिवास वंगभाषा के आदिकवि माने जाते हैं। प्रारम्भ में संस्कृत के अभिमानी पण्डितों ने कृत्तिवास की रचना का वड़ा उपहास किया। उन पर चारो ओर से आक्षेप और प्रहार होने लगे। किन्तु परम स्वाभिमानी, संस्कृत और वंगला भाषाओं के समानरूपेण विद्वान्,

---

† वैसे आर्ष वचनों से यह आभास मिलता है कि च्यवन ऋषि एवं उनके अनुवर्ती वंशजों ने समय-समय पर रामायण का गान किया है और उन्हीं की परम्परा मे आगे चलकर उत्पन्न रत्नाकार (वाल्मीकि) द्वारा रामचरित्र का जो संस्करण हुआ, वही आजकल की प्रचलित "वाल्मीकीय रामायण" का कलेवर अथवा कलेवर का आधार है।

§ वृहत्तर भारत में आधुनिक भारत, पाकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, ईरान, वलख़, वरमा, दक्षिण-पूर्व एशिया तथा हिन्द महासागर के द्वीपपुञ्ज भी सम्मिलित थे।

महापण्डित कृत्तिवास की दृढ़ता और ओज के समक्ष उन पण्डितों का मिथ्या अहंभाव टिक नहीं सका। थोड़े ही समय में जनताजनार्दन के हृदय को मुग्ध कर इस महाकाव्य ने चिरंतन साम्राज्य के लिए अपना स्थान बना लिया। बंग-भाषा-भाषी प्रत्येक परिवार में आबाल-वृद्ध-वनिता सब इसके अनवरत गान में आनंदित होने लगे।

संत कृत्तिवास का समय गोस्वामी तुलसीदास जी से लगभग एक शताब्दी पूर्व होने के बावजूद उनका जन्म-स्थान, कुल और वंश-परिचय असंदिग्ध और सुविख्यात है। सन् ७३२ ई० में बंग-नरेश 'आदिशूर' द्वारा, यज्ञ के लिए कान्यकुब्ज देश से आमंत्रित और फिर बंगाल में ही बस गये पाँच ब्राह्मण-प्रवरों में सुपूज्य भारद्वाज गोत्रीय 'श्रीहर्ष' पण्डित से तेरहवीं पीढ़ी में 'माधवाचार्य' का जन्म हुआ। माधवाचार्य के 'उत्साह', उत्साह के 'आयित', आयित के 'उद्धव', उद्धव के 'शिव' और शिव के पुत्र 'नृसिंह ओझा' हुए जो सुवर्णग्राम के अधिपति महाराजा 'वेदानुज' के प्रधानमंत्री थे। आज से लगभग ६२५ वर्ष पूर्व वेदानुजकाल में अराजकता उत्पन्न हो जाने के फलस्वरूप नृसिंह ओझा ने सुवर्णग्राम का परित्याग कर उस समय के अति समृद्धिशाली फूलिया ग्राम में जाकर निवास किया।

कृत्तिवास के 'आत्मपरिचय' तथा इतिहास के विद्वानों के मत से प्रकट है कि 'फूलिया' धन-धान्य पूरित और मनोरम पुष्पोद्यानों से प्रफुल्लित, गंगाभागीरथी के उत्तर-पूर्व तट पर, श्रीमानों एवं प्रकाण्ड पण्डितों का उस समय प्रमुख पीठस्थान था। फूलिया, बेलगड़े, मालीपोता, सिमला, नवला, प्रभृति पञ्चग्राम संगठित होकर 'फूलिया-समाज' के नाम से प्रसिद्ध थे। कृत्तिवास से पूर्व और पश्चात् इस जागती भूमि ने अनेक भारत प्रसिद्ध विद्वानों एवं साधकों को जन्म दिया है। स्वयं कृत्तिवास के अति पवित्र कुल में ही 'अन्नदामंगल' आदि के रचयिता 'भारतचन्द्र गुणाकर' सुविख्यात स्मार्त और नैय्यायिक 'वासुदेव सार्वभौम' ओझा (उपाध्याय) वंश के प्रथम 'मुखोपाध्याय' उपाधिधारी 'श्रीगर्भ', 'रामचन्द्र विद्यालंकार', 'सर आशुतोष मुखर्जी' और अभी कल ही हम से विलग हुए, राष्ट्र के लिए प्राणोत्सर्ग करनेवाले 'स्व० श्यामाप्रसाद मुखर्जी' आदि नररत्नों ने या तो इसी पुण्यभूमि में जन्म लिया अथवा 'फूलिया के मुखर्जी' के पुनीत परिवार का होने के नाते अपनी कुलीनता का गर्व करते रहे हैं। यहीं पर उल्लेखनीय है कि भारत के सुवर्णकलश साहित्यसम्राट् बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय से आठ पीढ़ी पूर्व उनके पूर्वज अवस्थी गंगानन्द भी 'चटर्जीवंश' के अतिकुलीन 'फूलिया घराने' के आदिपुरुष थे और फूलिया के ही निवासी थे। आज कालस्रोत के प्रवाह में पड़कर 'फूलिया' गंगा से काफ़ी दूर हटकर एक साधारण ग्राम मात्र रह गया है। संत कृत्तिवास की यादगार उनका 'दोलमञ्च' आज भी एक टीले की शक्ल में वहाँ विराजमान है।

अस्तु उसी फूलिया में नृसिंह ओझा ने सुवर्णग्राम से आकर निवास किया। नृसिंह ओझा के 'गर्भेश्वर', गर्भेश्वर के 'मुरारि', मुरारि के तृतीय पुत्र 'वनमाली' और इन्हीं वनमाली की पत्नी 'मालिनी' के गर्भ से उत्पन्न छः पुत्र और एक कन्या में कृत्तिवास कदाचित् ज्येष्ठ थे। इस प्रकार इस पुनीत वंश के प्रथम बंगवासी 'श्रीहर्ष' से २२ वीं पीढ़ी में सन्त कृत्तिवास ने जन्म लिया।

कृत्तिवास ने स्वरचित 'आत्मपरिचय' नामक प्रवन्ध में अपने जन्म-दिवस के संबंध में इस प्रकार लिखा है:—

"आदित्यवार श्रीपंचमी पूर्ण माघ मास।
ताखि मध्ये जन्म लइलाम कृत्तिवास॥"

इसके अनुसार पंचांग में ठीक शुभ क्षण खोजकर तथा अन्य विविध तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर अनेक वंगीय विद्वानों के सहयोग से पण्डित-प्रवर अध्यापक योगेशचन्द्र ने १४३३ ई० ११ फरवरी, रविवार, माघ संक्रांति, रात्रिकाल को कृत्तिवास का जन्मकाल माना है। उन्हीं विद्वद्वर के मत से ४७ वर्ष की आयु प्राप्त होने पर १४८० ई० में संत का निर्वाण-काल और १४६७ ई० से १४७२ ई० के मध्य के पाँच वर्षों को रामायण कृत्तिवास की रचना का समय माना जाता है। कृत्तिवास के संतान होने का उनके 'आत्मपरिचय' में अथवा अन्यत्र भी कहीं उल्लेख नहीं है।

कृत्तिवास के पितामह मुरारि ओझा, व्यास और मार्कण्डेय के समान विद्वान् एवं तपस्वी थे। उनके सात पुत्र और वहुसंख्यक पौत्र-प्रपौत्रों का विपुल परिवार अतुल पाण्डित्य, कीर्ति और ऐश्वर्य का यशस्वी केन्द्र था। बारह वर्ष की अवस्था में कृत्तिवास, गंगापार किसी (अज्ञातनामा) सर्व-गुणनिधान गुरु के पास पढ़ने जाने लगे। कृत्तिवास ने स्थान-स्थान पर उनको महातेजस्वी कहकर व्यास-वाल्मीकि से तुलना की है। अध्ययन के पश्चात् सरस्वती के वरद पुत्र कृत्तिवास ने गौड़ेश्वर के प्रमुख सभापण्डित का पद प्राप्त किया। उस समय बंगाल में अनेक राजा-महाराजा सब गौड़ेश्वर करके प्रसिद्ध होते थे। कृत्तिवास के आश्रयदाता गौड़ेश्वर का नाम अज्ञात है। इन्हीं गौड़ेश्वर की प्रार्थना पर 'सन्त' द्वारा रचित ललित महाकाव्य आज 'कृत्तिवास रामायण' के नाम से प्रसिद्ध है।

'कृत्तिवास रामायण' सात काण्डों में समाप्त जनसाधारण के लिए सुबोध अति सरल पयार छन्दों में वर्णित 'पाञ्चाली गान' है। महाकाव्य को पढ़ने पर यह निश्चय प्रतीत होता है कि कृत्तिवास ओझा छन्द, व्याकरण ज्योतिष, धर्म और नीतिशास्त्र के अगाध पण्डित थे। भाषा सरल, अलंकार अनुप्रास से युक्त, तथा भाव और कवित्व-कल्पना से परिपूर्ण है। पारिवारिक

सामाजिक, राजनैतिक आचार का पूरा ज्ञान और संस्कृत भाषा पर उनका सर्वांग अधिकार है। राम-नाम में परम आस्था और विष्णु-शिव-शक्ति के स्वरूप में उनकी समानरूपेण भक्ति थी।

'कृत्तिवास' द्वारा हस्त-लिखित रामायण की प्रति अप्राप्य है। यदा-कदा प्राप्त प्राचीन पाण्डुलिपियों और सर्वत्र गाये जानेवाले पाञ्चाली गान के संग्रह बहुधा एक-दूसरे से भिन्न भी पाये गये हैं। अतः प्रस्तुत रामायण-ग्रन्थ के विषय में निश्चय रूप से यह कहना असम्भव है कि कृत्तिवास की प्रस्तुत रचना में कितना अंश प्रक्षिप्त है। फिर भी 'बंगीय साहित्य परिषद' जैसे भाषा-देव-मंदिरों में संगृहीत रामायण की अति प्राचीन लगभग ४०० पाण्डुलिपियों का निरीक्षण करके, श्रीरामपुर मिशनरी के प्रधान पादरी श्री केरी साहब के अनुरोध पर, विद्वन्मार्तण्ड स्व० जयगोपाल तर्कालंकार के प्रयास से सन् १८०२ ई० में "श्रीरामपुर मिशन प्रेस" से सर्वप्रथम 'रामायण कृत्तिवास' का परिष्कृत संस्करण प्रकाशित हुआ। तब से अनेक विद्वानों ने समय-समय पर उसका परिमार्जन किया और आज बाजार में उपलब्ध रामायण उन्हीं प्रयासों का पुष्कल परिणाम है। भले ही उनमें कोई-कोई अंश प्रक्षिप्त हों, किन्तु वह पवित्र ग्रन्थ कृत्तिवास की रचना करके मान्य है।

'कृत्तिवास रामायण' बंगभाषा-भाषियों की रग-रग में ओतप्रोत है। धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित, पण्डित-मूर्ख, प्रत्येक सम्प्रदाय, समाज और वर्ग के लिए समानरूपेण वह आनन्दकारी है। संस्कृत में कालिदास और हिन्दी में गोस्वामी तुलसीदास के समान बंगला में 'कृत्तिवास' अजर-अमर और उनकी 'रामायण-रचना' सर्वकालानुयायिनी, सर्वतोगामिनी तथा सर्वतोव्यापिनी है। भाव सुस्पष्ट और भाषा प्राञ्जल, सरल और रोचक होते हुए भी अतुल पाण्डित्यपूर्ण है।

'कृत्तिवास रामायण' का कथानक प्रायः वाल्मीकीय रामायण के अनुसार है, फिर भी स्थान-स्थान पर अन्य पौराणिक अंशों का भी पर्याप्त समावेश है। गोस्वामी जी के मानस की तुलना में आख्यानों की अत्यधिक प्रचुरता कृत्तिवास रामायण की अपनी विशेषता है।

कृत्तिवास द्वारा रचित अनेक ग्रन्थों में रामायण के अतिरिक्त 'योगाद्यार बन्दना', 'शिवरामेर युद्ध', 'रुक्मांगदेर एकादशी' प्राप्य हैं। बंगला भाषा के इस महाकाव्य के रचयिता की सर आशुतोष मुखर्जी ने भी भूरि-भूरि वन्दना की है, और उसी कुल में जन्म पाने के नाते अपने को धन्य माना है।

अस्तु, प्रातःस्मरणीय सन्त कृत्तिवास और उनकी रामायण का संक्षिप्त परिचय देने के पश्चात् ऐसे 'सुधाभाण्ड' को हिन्दी पाठकों के समक्ष

प्रस्तुत करने की आवश्यकता पर अधिक लिखने का प्रयोजन शेष नहीं रहता। असंख्य कथारत्नों से अलंकृत, सर्वरसपूर्ण इस महाकाव्य से राष्ट्र-भाषा के भण्डार की श्रीवृद्धि करने की लालसा इस अकिंचन के मन में जाग्रत हुई।

इस मनोरथ के जागने पर, सन् १९१६ ई० में स्टीम प्रिन्टिंग प्रेस लखनऊ द्वारा प्रकाशित 'कृत्तिवास वालकाण्ड' को देखा। उसके सम्वन्ध में जिज्ञासाएँ कीं जिनसे विदित हुआ कि मेरे पड़ोसी एवं आदरणीय, साहित्य-मूर्धन्य स्व० पण्डित रूपनारायण पाण्डेय जी ने प्रसिद्ध साहित्यप्रेमी न्यायाधीश स्व० वावू कालीप्रसन्न सिंह के आग्रह पर यह रचना की थी, जो वाद में वावू कालीप्रसन्न सिंह के नाम से ही प्रकाशित हुई। स्व० पाण्डेयजी से चर्चा करने पर उन्होंने मुझे उक्त बातें वतलाईं। अनुवाद के संवंध में भी उन्होंने वताया कि "कृत्तिवास वालकाण्ड" के हिन्दी अनुवाद से ही वँगला भाषा के हिन्दी अनुवाद का अभ्यास उन्होंने आरम्भ किया था। और शायद इसी कारण, वँगला का प्रारम्भिक अभ्यास होने से, कृत्तिवास रामायण का हिन्दी भाषा में उनके द्वारा प्रस्तुत वालकाण्ड, मूल ग्रन्थ का अनुवाद न होकर एक परिवर्द्धित और स्वतंत्र ग्रन्थ सा वन गया है। उनका वह बालकाण्ड निस्सन्देह उनकी विद्वत्ता एवं प्रतिभा का परिचायक है। स्व० पाण्डेयजी हिन्दी के प्रतिभाशाली कवि, संस्कृत-भाषा के प्रकाण्ड पण्डित तथा श्रीमद्भागवत् के पुश्तैनी विद्वान् थे। और कदाचित् इसीलिए वे कृत्तिवास रामायण के आधार को लेकर भी श्रीमद्भागवत्, योगवाशिष्ट, अध्यात्म-रामायण, रघुवंश, मत्स्यपुराण, मार्कण्डेयपुराण आदि से विविध विषयों को प्रचुर संख्या में लेकर एक स्वतंत्र वृहत्काव्य की रचना-निर्माण का लोभ संवरण न कर सके। यहाँ तक कि वह ग्रन्थ मूल कृत्तिवास के आदिकाण्ड से कई गुना वढ़ भी गया। यह ग्रन्थ वावू कालीप्रसन्न सिंह के नाम से छपा। पाण्डेय जी का नाम उस पर नहीं दिया गया है। आज उसके संस्करण प्राप्य भी नही हैं। इसी प्रकार वावू कालीप्रसन्न सिंह ने 'कृत्तिवास लंकाकाण्ड' भी अमेठी निवासी श्री मथुराप्रसाद मिश्र द्वारा अनुवादित कराकर स्टीम प्रिन्टिग प्रेस लखनऊ से ही प्रकाशित करवाया। इस अनुवाद का कथानक मूल वँगला पाठ के प्रायः अनुरूप होते हुए भी स्वतंत्र नाना छंदों से युक्त है, और निस्सन्देह विद्वत्तापूर्ण है। यह भी अव अप्राप्य है।

अतः यह विचार कर कि स्व० पाण्डेय जी की उक्त रचना से 'कृत्तिवास रामायण' के न तो ७ काण्डों की पूर्ति होती है और न आदिकाण्ड की ही, हिन्दी के इस अनमोल ग्रन्थ को प्रस्तुत करने की मेरी अभिलाषा दृढ़तर हो उठी।

बँगला रामायण की प्राञ्जल और सुबोध भाषा ने मेरे कार्य को सरल किया। गोस्वामी जी के रामचरितमानस के प्रमुख छन्द "दोहा-चौपाई" मानो रामायण के स्वरूप ही समझे जाते हैं। इसलिए कृत्तिवास के हिन्दी पद्यानुवाद को भी मैंने दोहा-चौपाई में ही रचना आरम्भ किया। यह पुष्कल कार्य १९५३ ई० में आरम्भ हुआ परन्तु मध्यम वर्ग की पारिवारिक एवं अन्यान्य कठिनाइयों के कारण बेछपा पड़ा रहा।

हिन्दी-काव्य में १६ चौपाइयों की एक कड़ी रखी गई है। और इन कड़ियों को कहीं एक, कहीं दो, 'दोहा-सोरठा' से जोड़कर एक-एक विराम की क्रमसंख्या दी गई है। एक कठिनाई अनुवाद करते समय मेरे सामने और थी। बँगला भाषा में संस्कृत के अनुसार विभक्तियों और प्रत्ययों से प्राय: काम ले लिया जाता है। हिन्दी में यह सुविधा कम होने से मैटर 'लाइन टु लाइन" जाने में कठिनता होती थी। दूसरी ओर मेरा सतत प्रयास था कि हिन्दी का कलेवर बँगला की अपेक्षा बढ़ने न पाये। इस कठिनाई को किसी प्रकार पार किया। कथानक और भावचित्रण में कहीं-कहीं ऐसा अवसर भी आया है कि हिन्दी और बंगला-पाठों में कुछ अन्तर प्रतीत हो। उनका उत्तरदायी सर्वरूपेण हिन्दीकार है। हिन्दी-अनुवाद काव्य, भाषा और व्यंजना की दृष्टि से कहाँ तक सफल हुआ है, यह सहृदय पाठक ही समझ सकते हैं। आशा है, मेरी त्रुटियों को क्षमा करते हुए संत कृत्तिवास के सुधा-सलिल का पान करेंगे।

पुस्तक का अनुवाद करते समय एक नई समयोचित भावना जाग्रत हुई। बँगला मूल देवनागरी लिपि में हिन्दी-रचना के साथ-साथ देने से हिन्दी पाठक को मूल बँगला काव्य के पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। बँगला भाषा जैसी सरल, मधुर, और संस्कृतमय है, उससे दो ही एक आवृत्ति कर लेने पर मूल काव्य समझ में आने लगेगा। इस प्रकार बँगला भाषा का ज्ञान और क्रमशः बंगला भाषा के अन्य ग्रन्थों को पढ़ने की अभिरुचि भी उत्पन्न होगी। दूसरी ओर बंगलाभाषा-भाषी अपने पवित्र सद्ग्रन्थ को हिन्दी-लिपि में पाकर राष्ट्रलिपि को सीखने और फिर क्रमशः राष्ट्रभाषा के साहित्य और विशेष रूप से गोस्वामी जी के 'रामचरितमानस' जैसे अद्वितीय महाकाव्य को पढ़ने-समझने में भी अनुरक्त होंगे। इस प्रकार राष्ट्रभाषा को अखिल देश में व्याप्त करने और विभिन्न राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं को एक राज्य से दूसरे राज्य तक प्रसारित कर सुपाठ्य और सुबोध बनाने के पुनीत राष्ट्रधर्म में मुझ जैसा साधारण नागरिक समुचित योगदान देकर धन्य होगा।

अस्तु। बंगला उच्चारण को नागरी लिपि में देने की समस्या की ओर ध्यान गया। कश्मीर से कन्याकुमारी पर्यन्त ग्राम-ग्राम, नगर-नगर

और प्रान्त-प्रान्त में मैं देखता हूँ, एक मूल भाषा ही कश्मीरी, पंजाबी, सौरसेनी, अवधी, मागधी, मैथिली, बंगला, उड़िया, असमिया, आदि अनेक भाषाओं में परिणित होती चली गई है। किन्तु हिन्दी के राष्ट्रभाषा एवं देवनागरी लिपि के राष्ट्रलिपि स्वीकृत हो जाने से भाषा और लिपि में यथासाध्य एकरूपता को लाना और जोड़-लिपि प्रस्तुत करना कर्तव्य सा बन गया। अतएव बंगला कविता को देवनागरी लिपि में लिखते समय 'योड़' को 'जोड़' एवं 'याय' को 'जाय' लिखना उचित समझा गया; फिर भी सर्वत्र अनेक स्थलों पर उसी शैली का अनुसरण किया गया है जिसे स्वयं बंगाली लेखकों ने अपनाया है, अर्थात् जलवायु से प्रभावित भिन्न उच्चारण की ओर ध्यान न देकर शब्दों को जैसे के तैसे रूप में लिखना। बंगला वर्णमाला का उच्चारण ओकारान्त होने पर भी बंगाली लेखक 'जल' और 'चक्षु' ही लिखते हैं यद्यपि पढ़नेवाले उन्हें 'जोल' और 'चोख' पढ़ लेते हैं। स्वर के संवृत-विवृत प्रयत्नों के फल-स्वरूप इस भेद को उच्चारण तक ही सीमित रखा है, लेखन में नहीं। हमने भी इसी मार्ग को ग्रहण करके मूल बंगला का प्रायः अक्षरान्तर कर दिया है। अनेक स्थलों पर व को ब और य को ज भी लिखा है।

अब दो शब्द अवशेष है। इस बड़े कार्य में यदि मेरे गुरुजनों और सहृदय मित्रों द्वारा उत्साह मुझे प्राप्त न होता तो कदाचित् मैं थककर कहीं बैठ जाता। मैं उनके स्नेह और सहृदयता का आभारी हूँ। स्व० श्री रूपनारायण जी पाण्डेय का आशीर्वाद मुझे प्राप्त था। उन्होंने मेरे अनुवाद को देखकर प्रशंसा की थी और मेरे उत्साह को दुचन्द कर दिया था।

प्रस्तुत पाँचकाण्डी संस्करण की भूमिका

एक बार इसका आदिकाण्ड श्री प्रभाकर साहित्यालोक से प्रकाशित हुआ। वह 'हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश' द्वारा पुरस्कृत हुआ; साहित्य अकादमी, दिल्ली तथा मूर्धन्य विद्वानों द्वारा प्रशंसित हुआ। प्रशस्तिपत्र पृष्ठ ७ पर दिये हैं। इससे उत्साहित होकर मैंने अगले काण्डों का अनुवाद और लिप्यन्तरण आरम्भ किया। और भगवान् की असीम कृपा से आदिकाण्ड, जो समाप्त हो चुका था, को सम्मिलित कर आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किधा और सुन्दर पर्यन्त पाँच काण्ड को एक जिल्द में प्रकाशित किया गया। लंका और उत्तरकाण्ड, इन संयुक्त पाँचों काण्डों की अपेक्षा कलेवर में बड़े हैं। उनका भी प्रकाशन शीघ्र ही आरम्भ होने की आशा है। मैं समझता हूँ स्वर्गीय बाबू कालीप्रसन्न सिंह की पुष्कल अभिलाषा की भी पूरी पूर्ति इस प्रयास से होगी।

'आदिकाण्ड' के संस्करण की भूमिका साहित्यमनीषी श्री भगीरथ मिश्र जी ने लिख कर रचना की भूरि-भूरि सराहना की थी। पश्चात् पाँचकाण्डी संस्करण की भूमिका श्री रामकृष्ण मिशन, विलूरमठ, हावड़ा के स्वामी जी महाराज ने लिखकर हिन्दी रूपान्तरकार के श्रम को गौरवान्वित किया। मैं उनकी एवं मठ के संन्यासी विद्वानों की इस उदारता से कृतार्थ हूँ।

पाठकों को जानकर यह हर्ष होगा कि विभिन्न भारतीय भाषाओं के सेतुकरण-हेतु हिन्दी में सानुवाद लिप्यन्तरण का मेरा संकल्प और अनवरत श्रम १९४७ ई० से आरम्भ हुआ और अब वह संतोषजनक रूप में पल्लवित-पुष्पित हुआ है। सन् १९६९ में मैंने भुवन वाणी ट्रस्ट की स्थापना की। उसमें न केवल बँगला का पुनीत ग्रंथ कृत्तिवास रामायण, वरन् हिन्दी, उर्दू, कश्मीरी, गुरुमुखी, असमिया, ओड़िया, बँगला, मराठी, गुजराती, सिंधी, तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयाळम, राजस्थानी, संस्कृत, अ़रबी, फ़ारसी नेपाली आदि में बहुमुखी अच्छा-ख़ासा कार्य देवनागरी लिपि में सानुवाद प्रस्तुत हो चुका है। इसलिए कृत्तिवास रामायण पाँचकाण्ड का यह पुनर्संस्करण भुवन वाणी ट्रस्ट के माध्यम से पहली बार प्रकाशित हो रहा है। आशा है सहृदय पाठक एवं विज्ञजन विभिन्न भाषाओं के सेतुकरण के इस पुनीत कार्य में सहयोग देते रहेंगे। सूचनार्थ यह भी निवेदन है कि लंका और उत्तरकाण्ड का पद्यानुवाद होने में विलम्ब देखकर, भुवन वाणी ट्रस्ट से लंकाकाण्ड का देवनागरी लिप्यन्तरण, गद्यानुवाद सहित प्रकाशित हो चुका है। उत्तरकाण्ड का सानुवाद लिप्यन्तरण तैयार हो रहा है।

३१-३-७५ —नन्दकुमार अवस्थी

मुख्यन्यासी—सभापति, भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ-३



श्रीराम-पञ्चायतन





अतुलितबलधामं स्वर्णशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

* श्रीगणेशाय नमः *

कृत्तिवास रामायण

(हिन्दी पद्यानुवाद, बँगला मूल-सहित)

मंगलाचरण

श्लोक—यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवै-
वेदैः सांगपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः ।
ध्यानावस्थिततद्गतेनमनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः ॥ १ ॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥ २ ॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तुते ॥ ३ ॥
कृष्ण कृष्ण कृपालुस्त्वमगतीनां गतिः प्रभो ।
संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ ४ ॥

(मूल ग्रन्थ)

श्लोक—रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरम् ।
काकुत्स्थं करुणामयं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ॥
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तिमूर्त्तिम् ।
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥
दक्षिणे लक्ष्मणोधन्वी वामतो जानकी शुभा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं नमामि रघूत्तमम् ॥
रामाय रामचन्द्राय रामभद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

(ग्रन्थ-परिचय)

दोहा—विघ्नविनाशन गजवदन, ऋद्धि-सिद्धि की खानि।
मंगलवाणी भारती, जय भगवती भवानि ॥ १ ॥
रामचरित - अमरित - सलिल, पाप - नसावनहार।
वाल्मीकि मुनि आदिकवि, कीह्नेउ जग विस्तार ॥ २ ॥
विविध भाव भाषा भरे, धर्म अर्थ अरु काम।
मुक्ति, नीति अरु प्रीत के, अनुपम छन्द ललाम ॥ ३ ॥
सोइ पुनीत विरदावली, रघुवर काव्य अनन्त।
युग-युग सों गावत रहे, मुनि मनीषि अरु सन्त ॥ ४ ॥
कालिदास वाणीवरद, अमर गिरा-अवतंस।
बुधजन काव्य-विनोद हित, रचेउ ललित रघुवंस ॥ ५ ॥
देवनागरी-वाटिका, मानस-पुहुप विकास।
सुरभित भारत भूमि चहुँ, धनि-धनि तुलसीदास ॥ ६ ॥
सजल श्यामला वंग की, उर्वर भूमि पुनीत।
जहँ चैतन्य-रवीन्द्र सम, जन्मे जन-नवनीत ॥ ७ ॥
भक्ति-काव्य के स्रोत जहँ प्रकटे चण्डीदास।
तहाँ सरस धारा वही, 'रामायण कृतिवास' ॥ ८ ॥
कोकिल-कूजित सुधामय, अनुपम काव्य सुवास।
रचेउ, धन्य! तुम धन्य मुनि! महासन्त कृतिवास ॥ ९ ॥
भारतीय भाषा-प्रमुख, सकल रसन की खानि।
देवनागरी माहि सोइ, रचहुँ जोरि जुग पानि ॥ १० ॥
भाव रहित भाषा-विरस, कतहुँ न काव्य-प्रवीन।
इत-उत के सत्संग सों विवस, प्रेरना लीन ॥ ११ ॥
कान्यकुब्ज-द्विज-गगन विच, अवर प्रभाकर भास।
जनमि, 'प्रभाकर' प्रवर किय, कुल-उपमन्यु प्रकास ॥ १२ ॥
विदित 'अवस्थी' आस्पद, वीते वरहीं साख।
विक्रम चौसठ, शत-उनिस, पाँच कृष्ण वैशाख ॥ १३ ॥
रानीकटरा—लखनऊ, संज्ञा 'नन्दकुमार'।
तनय-दयाशंकर, जनम, मम परिचय-विस्तार ॥ १४ ॥
निर्गुण-सगुण अनन्त छवि, जड़-जंगम जगरूप।
वन्दि सकल, रचना करहुँ 'कृत्तिवास'-अनुरूप ॥ १५ ॥
जतन भगीरथ, अल्प बल, तबौ लगी यह साध।
गुनी-सन्त-सज्जन सकल, छमहि मोर अपराध ॥ १६ ॥

आदि काण्ड

(हिन्दी पद्यानुवाद)

नारायण चार अंश जन्म-प्रकाश

सुखद सकल लोकन अति पावन ❋ परमधाम गोलोक[1] सुहावन
विटप कल्पतरु अचरज नयना ❋ मन-वाञ्छित अनन्त फल दयना
चन्द्र-सूर्य जहँ सतत[2] प्रकासा ❋ विष्णु सहित श्री[3], दिव्य निवासा
नेतपाट[4] युत सुभग सिंहासन ❋ नारायण विराज वीरासन
एक अंस प्रभु अस मन लाई ❋ चारि अंस प्रगटैं रघुराई
राम भरत लक्ष्मण रिपुसूदन ❋ यहि विधि चतुर्मूर्ति मधुसूदन

नारायणेर चारि अशे जन्म प्रकाश

गोलोक बैकुण्ठपुरी सबार उपर ❋ लक्ष्मीसह तथाय आछेन गदाधर
तथाय अद्‌भुत वृक्ष देखिते सुचारु ❋ जाहा चाइ ताहा पाइ नाम कल्पतरु
दिवानिशि तथा चंद्र सूर्य्येर प्रकाश ❋ तार तले आछे दिव्य विचित्र आवास
नेतपाट सिंहासन उपरेते तुली ❋ वीरासने वसिया आछेन वनमाली
मने मने प्रभुर हइल अभिलाष ❋ एक अंश चारि अंश हइते प्रकाश
श्री राम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण ❋ एक अंशे चारि अंश हैला नारायण

१ वैकुण्ठ २ निरन्तर ३ लक्ष्मी ४ प्राचीन दिव्य वस्त्र—अलौकिक।

पाठकों को विदित है कि अवधी भाषा में 'एकार' और 'ओकार' की मात्राएँ ह्रस्व और दीर्घ—दो प्रकार से बोली जाती है। यथा—'जे बिन काज दाहिनेंहि बायें', 'जो जस कीन सो तस फल चाखा'। इनमें 'जे, नें और जो, सों' में ए और ओ की मात्राएँ क्रमशः दीर्घ और ह्रस्व हैं। अवधी मे अनभ्यस्त समुदाय के पाठ करते समय, ह्रस्व-दीर्घ एकार-ओकार के उच्चारण में भ्रम उत्पन्न होकर छन्द और लय भंग न हो जाय—इस हेतु सर्वभारतीय काशिराज-न्यास द्वारा प्रकाशित मानस-संस्करण में प्रयुक्त ह्रस्व तथा दीर्घ क्रमशः ॆ ॊ, े ो का प्रयोग कृत्तिवास रामायण के अनुवाद के प्रस्तुत संस्करण में किया गया है। पूज्य श्री विनोबा भावे जी ने भी अपने तमिळ-देवनागरी लिप्यन्तरण में इन मात्रा-चिह्नों का प्रयोग किया है। भुवन वाणी ट्रस्ट भी, उर्दू-फ़ारसी के सामासिक पदों, कश्मीरी, तमिळ, तेलुगु, मलयाळम और कन्नड़-ग्रंथों के देवनागरी-लिप्यन्तरणों, तथा अवधी, व्रजभाषा में इन विशिष्ट ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणों को खास अवसरों पर व्यक्त करने के लिए, इन्हीं मात्रा-आकृतियों का प्रयोग कर रहा है। तदर्थ हम सर्वभारतीय काशिराज-न्यास तथा उसके मंत्री श्री रमेशचन्द्र देव के अतिशय अनुगृहीत है। —नन्दकुमार अवस्थी, अनुवादक

रमा रूप सोहति सिय वामा ❋ कर जोरे कपि करत प्रनामा
चँवर भरत सत्रुघ्न डुलावत ❋ कनक छत्र सौमित्रहिं भावत
यहि छबि प्रभु बैकुण्ठ विराजा ❋ पहुँचे तहँ नारद मुनिराजा
भक्ति सने श्रीहरि-गुण गावत ❋ वीणा मंजुल तार बजावत
पंचायतन सरूप निहारी ❋ सिथिल गात मोचत दृग वारी[1]
चकित रुप अद्‌भुत नव हेरी ❋ नारद डगर[2] लीन शिव केरी
त्रिकालज्ञ शिव अन्तरयामी ❋ हरिहैं सकल कुतूहल स्वामी
पंथ प्रथम भेंटे चतुरानन ❋ लखि विरंचि हुलसे मुनिपावन
तिन सन करि सब कथा प्रकासा ❋ लै विधि चले शिखर कैलासा
उमा सहित सोहत जहँ शंकर ❋ बन्देउ तिनहिं सहित विधि[3] मुनिवर

दो० कस विरंचि? कस तपोधन? मुनि! अस पुलकित गात।
हरषि शंभु पूछेउ, कवन हेतु आगमन तात ॥ १ ॥

सुनि ब्रह्मा मृदु गिरा उचारी ❋ सुनहु कुतूहल अति त्रिपुरारी
परमधाम गोलोक सुहावन ❋ परमेश्वर त्रिभुवनपति पावन
तिनकर चारि अंश कर रूपा ❋ नव प्रगटेउ कस आज अनूपा
विधि[3] सन सुनि सब कहेउ त्रिलोचन ❋ लखेउ जु छबि, तुम, पाप-विमोचन

लक्ष्मीमूर्ति सीतादेवी वसेछेन वामे ❋ स्वर्णछत्र धरेछेन लक्ष्मण श्रीरामे
चामर ढुलाय ताँरे भरत शत्रुघ्न ❋ जोड़ हाते स्तव करे पवननन्दन
एइरूपे वैकुण्ठे आछेन गदाधर ❋ हेनकाले चलिला नारद मुनिवर
वीणा यंत्र हाते करि हरिगुण गान ❋ उत्तरिल गिया मुनि प्रभु विद्यमान
रूप देखि विह्वल नारद चान धीरे ❋ वसन तितिल तार नयनेर नीरे
हेनरूप केन धरिलेन नारायण ❋ इहा जिज्ञासिव गिया यथा पंचानन
भावी भूत वर्त्तमान शिव भाल जाने ❋ ए कथा कहिव गिया महेशेर स्थाने
एतेक भाविया यात्रा करे मुनिवर ❋ उत्तरिला प्रथमेते ब्रह्मार गोचर
विधातारे लये जान कैलास शिखरे ❋ शिव के वन्दिया परे वन्दिल दुर्गारे
निरखिया दुइजने तुष्ट महेश्वर ❋ जिज्ञासा करेन तवे ताँदेर गोचर
कह ब्रह्मा कह हे नारद तपोधन ❋ दोंहे आनन्दित अद्य देखि कि कारण
वलेन विरिञ्चि शुन देव भोलानाथ ❋ देखिलाम गोलोके अपूर्व्व जगन्नाथ
देखिलाम पूर्व्वेते केवल नारायण ❋ चारि अंश देखि एवे किसेर कारण
ब्रह्मा वाक्य शुनिया कहेन कृत्तिवास ❋ सेइरूप इहकाले हइवे प्रकाश

१ आँसू २ रास्ता ३ ब्रह्मा।

बरस बितीतहिं साठि हजारा * सोइ सरूप, प्रभु लै अवतारा
निसिचरनाह प्रचण्ड दशानन * तेहि विनासि भुवि-भार उतारन
अवधपुरी अति रम्य विशाला * सूर्यवंश दशरथ महिपाला
तिन कहँ तीनि नारि छबि-अयनी * तिन सुभघरी सुमंगल-दयिनी
चारि अंश प्रगटहिं मधुसूदन * राम भरत लछिमन रिपुसूदन
राम, सत्यपितु पालन हेतू * गवनहिं बन सिय-लखन समेतू
सिय उद्धार, नास खल रावन * लव-कुश सिय-सुत सुख-सरसावन
गोबध आदि अधम जे पापा * राम नाम मेटै संतापा
राम नाम भवसागर तारन * मुक्तिदेन पातकी उबारन
हँसि विधि कही सुनहु वृषकेतू[१] * अवनि[२] कहहु अस को अघहेतू[३]
करहु प्रतीति[४], शंभु कह बानी * भूतल[५] एक अधम अज्ञानी
राममंत्र तेहि दीजिय जाई * तासु प्रभाव मुक्ति जग पाई

दो० को अस नर? सोचन लगे, विधि नारद धरि ध्यान ।
'रत्नाकर' मुनि च्यवन-सुत, है पातकी महान ॥ २ ॥

लूटै बधै पथिक बनचारी * दस्युवृत्ति, रुचि पापाचारी
मुनि-विधि[६] चले संत के रूपा * विधि-माया तेहि दिवस अनूपा

ये रूपे आछेन हरि गोलोक भितर * जन्म निते आछे षाटि सहस्र वत्सर
रावण राक्षस हबे पृथ्वीमण्डले * ताहाके बधिते जन्म लेबेन भूतले
दशरथ घरे जन्मिबेन चारिजन * श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न
एक अंश नारायण चारि अंश ह'ये * तिन गर्भे जन्मिबेन शुभक्षण पेये
जानकीसहित राम लइया लक्ष्मण * पितृसत्य पालनार्थे जाइबेन बन
सीता उद्धारिबे राम मारिया रावण * लवकुश नामे हबे सीतार नन्दन
मनुष्य गोहत्या आदि जत पाप करे * एक बार रामनामे सर्ब्ब पापे तरे
महापापी ह'ये यदि राम नाम लय * संसार समुद्रे तार मुक्ति लाभ हय
हासिया बलेन ब्रह्मा शुन त्रिलोचन * पृथ्वीते हेन पापी आछे कोन जन
धूर्ज्जटि वलेन मम वाक्ये देह मन * मध्यपथे महापापी आछे एक जन
तारे गिया रामनाम देह एक बार * तबे से नितान्त मुक्त हइबे संसार
विधाता नारद ताँर भावेन दुजन * पृथिवीते महापापी आछे से केमन
च्यवन मुनिर पुत्र नाम रत्नाकर * दस्युवृत्ति करे सेइ बनेर भितर
विरिञ्चि नारद दोंहे संन्यासी हइया * रत्नाकर काछे दोहे मिलिल आसिया

१ शंकर २ पृथ्वी ३ पाप [illegible] ४ विश्वास ५ पृथ्वी पर ६ नारद और ब्रह्मा ।

तरु चढ़ि तकै पथिक मग ओरा ❋ बिफल आजुदिन बीतेउ मोरा
हरषेउ निरखि पाप - अनुगामी ❋ लूटौं बसन, हतौं दोउ स्वामी
लौहदण्ड लै सो तेहि मारा ❋ तासु विफल विधि कीन्ह प्रहारा
मायाबस, कर अस्त्र न उठई ❋ शठ कौतुक मन चिंतन करई
पूछेउ सहित सनेह विधाता ❋ को तुम कवन प्रयोजन ताता
लूटहुँ बसन हरहुँ तव प्राना ❋ मम नितनेम[1] न तुम अनुमाना
मम बध किये कतक धन पावै ❋ कवन लोभ नित पाप कमावै
सौ रिपु हने जु पातक अहहीं ❋ एक धेनु-बध सोइ नर लहहीं
सुनु सठ शत गोबधहिं समाना ❋ लिये एक अबला कर प्राना
शत नारी सम विप्र-विनासा ❋ टारे टरहि न सो अघ-त्रासा[2]
एक ब्रह्मचारी बध करई ❋ शत द्विज हनै, न अन्तर परई
एते पाप बरन बहुरासी ❋ अगनित पाप वधे संन्यासी
बिचरैं जहाँ संत बनबासी ❋ चारि कोस महि[3] सो जनु कासी
सुनि सब सीख तबहुँ मन भावै ❋ तौ पातक मनमौजि कमावै

दो० छद्मभेस बिधि-बैन सुनि, जड़ कीन्हेउ परिहास ।
तुम सम केतक सन्त-मुनि, नित उठि करौं विनास ॥ ३ ॥

विधातार माया हैल रत्नाकर प्रति ❋ सेइ दिन सेइ पथे कारो नाहि गति
उच्चवृक्षे चड़िया से चतुर्द्दिके चाय ❋ ब्रह्मा नारदेरे पथे देखिवारे पाय
भावे मुनि रत्नाकर लुकाइया बने ❋ संन्यासी मारिया वस्त्र लइव एक्षणे
विधाता नारदे लये जान सेइ पथे ❋ लोहार मुद्गर तोले ब्रह्मारे वधिते
ब्रह्मार मायाते तार मुद्गर ना चले ❋ मायाते मुद्गर बद्ध तार करतले
ना पारे मारिते दस्यु भावे मने मन ❋ ब्रह्मा जिज्ञासेन वापू तुमि कोन जन
रत्नाकर बले तुमि ना चिन आमारे ❋ लइव्र तोमार वस्त्र मारिया तोमारे
ब्रह्मा वले मारि मोरे कत पाबे धन ❋ करियाछ जत पाप कहिव्र एखन
शत शत्रु मारिले जतेक पाप हय ❋ एक गो बधिले तत पापेर उदय
एक शत धेनु वध जेइ जन करे ❋ तत पाप हय जदि एक नारी मारे
एक शत नारी हत्या करे जेइ जन ❋ तत पाप हय एक मारिले ब्राह्मण
एक शत ब्रह्म वधे जत पाप हय ❋ एक ब्रह्मचारी वधे तत पापोदय
ब्रह्मचारी मारिले पातक हय राशि ❋ संख्यानाई कत पाप मारिले संन्यासी
जेइ पथ दिया गति करेन संन्यासी ❋ आड़ेदीर्घे चारिकोश सम पुरीकाशी
से पाप करिते जदि थाके तव मन ❋ करह ए पाप सव कहिनु एखन
शुनिया कहेन दस्यु रत्नाकर हासि ❋ मारियाछि तोमाहेन कतेक संन्यासी

१ नित्य का नियम (धन्धा) २ पाप का दुखमयभोग ३ पृथ्वी ।

कह मुनि, यदि मम-बध तव प्रीती ❊ मारहु अवनि विलोकि पुनीती[१]
पिपीलिका[२] जहँ कीट-पतंगा ❊ जुरैं न लोभ सुगंध-प्रसंगा
गदाघात मम गात निपाता ❊ कुचिलैं कीट, कवन सिर घाता
हे हतबुद्धि कुफल इन केरे ❊ भागीदार कौन अघ[३] तेरे
लूट-पाट क्रय-विक्रय जेता ❊ कहेउ दस्यु पुनि दर्प समेता
विलसहिं मातु-पिता अरु गृहनी ❊ भागीदार सकल मम करनी
कह विरञ्चि तव मति बौरानी ❊ ते तव पाप-युक्त ! कस जानी
पातक, तव पुरुषार्थ विशेषा ❊ करै-भरै सो जग यह लेखा
नहिं प्रतीति तौ जाहु निकेतू[४] ❊ जो परिजन साझी तव हेतू
तौ पुनि लौटि करहु बध मोरा ❊ तरु ढिग बैठि, लखहिं मग तोरा
भाई जुगुति[५], दस्यु मन चिन्तय ❊ रहै कि भागि जाय मुनि, संसय
दै भरोस तेहिं पठयि विधाता ❊ लावहु मत-पत्नी-पितु-माता
कछु पग बढ़ै, लखै पुनि तरुतर ❊ करत जहाँ विश्राम संतवर

रत्नाकर का पापक्षय आरंभ

प्रथम जाय पितु सन रत्नाकर ❊ कहत, सुनहु मम विनय गुनागर

ब्रह्मा बलिलेन जदि ना छाड़िबे मोरे ❊ भाल स्थल देखिया हे वधह आमारे
जथा कीट पतङ्गादि पिपिलिका गन्धे ❊ लोभे ना आइसे मृत खाइते आनन्दे
मारिबे दण्डेर बाड़ि पाड़िब भूमिते ❊ पिपीलिका मरिबेक आमार चापेते
ब्रह्मा बलिलेन पाप कर कार लगि ❊ तोमार ए पातकेर केबा हबे भागी
रत्नाकर बले जत ल'ये जाइ धन ❊ मातापिता पत्नी आमि खाइ चारिजन
जेबा किछु बेचि किनि खाइ चारिजने ❊ आमार पापेर भागी सकले ए क्षणे
शुनिया हासिया ब्रह्मा कहिलेन तबे ❊ तोमार पापेर भागी तारा केन हबे
करियाछ जत पाप आपनार काय ❊ आपनि करिले पाप आपनार दाय
जिज्ञासा करिया तुमि आइस निश्चय ❊ तोमार पापेर भागी तारा जदि हय
नितान्त आमारे वध कर तबे तुमि ❊ एइ वृक्ष तलेते बसिया थाकि आमि
हरिष विषादे दस्यु लागिल भाषिते ❊ बुझिलाम एइ जुक्ति कर पलाइते
ब्रह्मा बले सत्यकरि ना पालाब आमि ❊ माता पिता दारा सुते पुछे एस तुमि
अतःपर जाय दस्यु फिरिफिरि चाय ❊ भावे बुझि भांडाइया संन्यासी पलाय

रामनामे रत्नाकरेर पापक्षय

प्रथमे पितार काछे करे निवेदन ❊ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण
मनुष्य मारिया आमि जत धन आनि ❊ आमार पापेर भागी हओ किना तुमि

१ पवित्र २ चीटी ३ पाप ४ घर ५ युक्ति, उपाय ।

हरहुँ द्रव्य नित करि नरघाता ❋ सेवहुँ सकल स्वपरिजन ताता
यहि विधि सुत के जे अपकर्मा ❋ भागीदार अहौ, पितु-धर्मा

दो० जनक छोभ, सुनि सुत-बयन, बोले, जड़ मतिहीन !
पुत्र-पाप पितु लहै, अस, शास्त्र-मंत्र को दीन ॥ ४ ॥

पिता सुवन कहुँ सुत पितु रूपा ❋ जगत-चक्र यहि भाँति अनूपा
तव शिशुकाल कठिन श्रम धारी ❋ पोषण किय पितु-धर्म विचारी
अनुचित-उचित जो मैं तव कीन्हा ❋ ताकर कुफल न तो कहँ दीन्हा
जरठ भयेउँ, शिशु सम असमर्था ❋ सब विधि अब तैं युवक समर्था
पितु समान पालन करु मोरा ❋ जनक रूप तैं, मैं शिशु तोरा
सो पालन मिस, करु नित हिंसा ❋ कस अपराध मोर अवतंसा
सुनत जनक[1] कर यह खर[2] बानी ❋ सीस नवाय दुखित अज्ञानी
अति विनम्र बरनेउ ढिग-जननी ❋ पापमयी निज दैनिक करनी[3]
बाँटहु मातु मोर कछु पापा ❋ नतरु मिटै किमि मम संतापा
सहेउँ कलेस गर्भ दस मासा ❋ मम पोषन तव धर्म प्रकासा
सोइ पालन तैं कृत पसुवेसू ❋ तव पातक मोहिं किमि लवलेसू[4]
लोचन लचे दस्यु मन पीरा ❋ साहस जोरि गयो तिय[5] तीरा
प्रिय! मम हिंसा-वृत्ति कमाई ❋ बिलसहु सुमुखि सकल सुख पाई

पुत्रेर वचन शुनि कहिछे च्यवन ❋ हेन कथा तोमाय वलिल कोन जन
कोन शास्त्रे शुनियाछ के कहे तोमारे ❋ पुत्र-कृत पाप केन लागिवे पितारे
अज्ञान वालक तोरे कि कहिव कथा ❋ कभु पिता पुत्र हय पुत्र हय पिता
जखन बालक छिले पिता छिनु आमि ❋ एखन बालक आमि पिता हैले तुमि
जखन बालक छिले ना छिल यौवन ❋ वहुदुःख करि तोमाय करेछि पालन
जत करियाछि पाप आपनि संसारे ❋ से सब पापेर भाग न लागे तोमारे
एवे पिता हइयाछ पुत्रतुल्य आमि ❋ कोनरूपे आमारे पुषिवे नित्य तुमि
मनुष्य मारिते तोमा वले कोन जन ❋ तोमार पापेर भागी हव कि कारन
शुनिया बापेर कथा हेंट माथा करे ❋ काँदिते काँदिते कहे मायेर गोचरे
सत्य करि आमारे गो कहिवे जननी ❋ आमार पापेर भागी हवे कि आपनि
जननी कहिछे क्रुद्धा हइया आपार ❋ एक दिवसेर धार के शोधे आमार
दश मास गर्भे धरि पुषेछि तोमाय ❋ तव कत पाप पुत्र ना लागे आमाय
शुनिया मायेर वाक्य माथा हेंट कैल ❋ पत्नीर निकटे गिया सकल कहिल
जिज्ञासि तोमारे प्रिय सत्य करि कओ ❋ आमार पापेर भागी हओ कि न हओ

१ पिता २ खरी, कटु सत्य ३ नित्यकर्म ४ तनिक भी लगाव ५ पत्नी ।

तौ पुनि पाय बटावहु मोरे ❋ सुनि तिय[1] बिनय कीन्ह कर जोरे
जेहि सुभ घड़ी गहेउ मम हाथा ❋ मम पालन माथे तव नाथा
पोषन-भरन हेत नरघाता ❋ केहि आदेस करहु नित ताता

दो० पाप-पुन्य सुख-दुख सहौं, आजीवन पति संग।
पालन हित पातक करहु, लगहि न मोरे अंग ॥ ५ ॥

धीरज छूट विकल रत्नाकर ❋ किमि अब तरहुँ विषम भवसागर
नरघाती पातकी अपावन ❋ अहह बृथा बीतेउ मम जीवन
मुद्गर-लौह हनेउ सिर माहीं ❋ गिरेउ अचेत च्यवनसुत ताहीं
चलेउ सँभरि पुनि दृग भरि आँसू ❋ विटप तरे जहँ मुनिन निवासू
करि दण्डवत जोरि जुग पानी ❋ करहु सनाथ दास निज जानी
पूछेउँ सबन तीय-पितु-माता ❋ कोउ न अंस-अघ[2] लेइ विधाता
दिव्य ज्ञान जो मुनि सों पावौं ❋ सफल जनम करि, पाप नसावौं
सर[3] नहाइ करि अंग पुनीता ❋ आवहु अस विधि कही सप्रीता
रत्नाकर सरवर ढिग गयेऊ ❋ जलचर विकल, शुष्क जल भयेऊ
दस्यु गलानि, मनै बहु त्रासा ❋ बरनेउ कथा लौटि विधि पासा

शुनिया स्वामीर वाक्य कहिछे रमणि ❋ निवेदन करि प्रभु शुन गुणमणि
विधाता नरिछे मोरे अर्द्धाङ्गिर भागि ❋ अन्य पाप निते पारि ए पाप तेयागि
जखन करिले तुमि आमारे ग्रहण ❋ सर्वदा करिबे मम रक्षण पोषण
आर जत पाप पुण्य भाग लागे मोरे ❋ पोषणार्थे पापभाग ना लागे आमारे
मनुष्य मारिते केवा बलिल तोमाय ❋ एइमात्र जानि आमि पालिबे आमाय
शुनिया भार्यार कथा रत्नाकर डरे ❋ केमन तरिब आमि ए पाप सागरे
डुबिनू पापेते आमि कि हइबे गति ❋ काँदिते लागिल दस्यु स्मरिया दुष्कृति
लोहार मुद्गर निज माथाय मारिया ❋ पड़िल भूमेते तबे अचेतन हैया
उठिया मुनिर पुत्र भाविल अन्तरे ❋ सेइ महाजन यदि मोरे कृपा करे
एइ भावि उभयेर निकटेते गिया ❋ कहिल ब्रह्मार पाय दण्डवत् हैया
एके-एके जिज्ञासिनु आमि सवाकारे ❋ मम पापभागी केह नाहिक संसारे
आपनि करिया कृपा दिले दिव्यज्ञान ❋ ए सकल पापे किसे हब परित्राण
कहिले न पितामह मुनिर कुमारे ❋ करिया आइस स्नान तुमि सरोवरे
शुनिया चलिल दस्यु सरोवर पाड़ ❋ शुकाइया गेल जल दृष्टिमात्र तार
शुष्क-स्थले मरे मीन मकर कुम्भीर ❋ कहिल ब्रह्मार काछे ना पाइया नीर

१ पत्नी २ पाप में साझा ३ सरोवर।

अगम सलिल नित, सो जलहीना ❋ अधम दीठि[1] मम सो कस काना
बीतेउ पाप च्यवन-सुत तारन ❋ नारद सों मत करि चतुरानन
नीर कमण्डल ते सिर डारी ❋ महामंत्र मुनि देन बिचारी
ब्रह्मा निकट आइ तेहि काना ❋ 'राम' नाम कर दिय वरदाना
करत पाप नित जड़ भइ रसना ❋ 'राम नाम' तेहि मुख निकसत ना
लखि-कौतुक विरंचि चितलागी ❋ किमि कहि सकै 'राम' हतभागी

दो० मारत जन बीतेउ जनम, 'मरा' शब्द अनुकूल।
तेहि पलटे सक 'राम' कह, अस सोचेंउ जगमूल[2] ॥ ६ ॥

मृतकहिं कहत कौन विधि नागर[3] ❋ 'मड़ा-मड़ा' बोलेउ रत्नाकर
मड़ा न कहु, जपु 'मरा' निरन्तर ❋ होई राम उदय उर-अन्तर[4]
काठ सुखान विटप[5] दिखराई ❋ ककस[6] कहत? पूछत मुनिराई
करि अनुमान, जतन बहु कीना ❋ 'मरा' काठ, मुनिसुत कहि लीना
'मरा-मरा' तेहि शब्द सुहावा ❋ सगुन राम मानहुँ सो पावा
पुलकित रोम, नैन स्रव नीरा ❋ रटनि एक, नहिं चेत सरीरा
उलटै जापु जपत अविरामा ❋ पलटि भयेउ सो रामै-रामा
अनल पाय जिमि भसम कपासा ❋ राम नाम सब पातक नासा

छिल जे अगाध जल एइ सरोवरे ❋ मम दृष्टिमात्र गेल शुकाये अन्तरे
शुनिया कहेन ब्रह्मा सङ्गी तपोधने ❋ हइयाछे पूर्ण पाप तरिवे केमने
कमण्डलु जल छिल दिलेन माथाय ❋ महामन्त्र मुनि तारे करिवारे जाय
निकटे आसिया ब्रह्मा कहे तार काने ❋ एक बार राम-नाम बल रे वदने
पापे जड़ जिह्वा राम वलिते ना पारे ❋ कहिल आमार मुखे ओ कथा ना स्फुरे
शुनिया ब्रह्मार वड़ चिन्ता हैल मने ❋ उच्चारिवे राम-नाम ए मुखे केमने
मकार कहिले अग्रे रा कहिले शेषे ❋ तवे वा पापीर मुखे रामनाम आसे
ब्रह्मा वलिलेन तारे उपाय चिन्तिया ❋ मनुष्य मारिले वापू डाक कि बलिया
शुनिया ब्रह्मार कथा बले रत्नाकर ❋ मृत मनुष्येरे मड़ा वले सब नर
मड़ा नय. मरा वलि जप अविराम ❋ तव मुखे वाहिरिवे तवे रामनाम
शुष्क काष्ठ देखिलेन वृक्षेर उपरे ❋ अंगुलि ठारिया ब्रह्मा देखान ताहारे
वहुक्षणे रत्नाकर करि अनुमान ❋ वलिल अनेक कष्टे मरा काष्ठखान
मरा-मरा वलिते आइल राम नाम ❋ पाइल सकल पापे दस्यु परित्राण
तुलाराशि जेमन अग्निते भस्म हय ❋ एक बार राम नामे सर्व्व पाप क्षय

१ दृष्टि २ ब्रह्मा ३ बुद्धिमान् ४ हृदय के भीतर ५ सूखा वृक्ष ६ किस प्रकार।

राम-नाम लखि अमित प्रभावा * चकित विरंचि[1] मोद अति पावा

ब्रह्मा द्वारा रत्नाकर का 'वाल्मीकि' नामकरण तथा रामायण रचने का वरदान

बोले, सुनहु तपोधन ज्ञानी * सदा बचन-शिव अमिट बखानी
रत्नाकर समाधि लवलीना * वत्सर साठि सहस जप कीना
एक नाम, इक थल, एकासन * अडिग जपत तन चुनेउ कीटगन
विरहित मांस अस्थि अवसेसा * माटी जमि जिमि पिण्ड विसेसा
कण्ट काँस कुस जमत ढूह पर * तेंहि बिच राम नाम निसिवासर
बीते साठि सहस जब वत्सर * कमलासन[2] हेरेउ रत्नाकर
धरती ऊँचि, जापु सुनि परही * मानुष-तन न विधिहिं कहुँ लखही

दो० पिण्ड बीच मुनिसुत जपत, जानि विधाता लीन।
सात दिवस बरसैं जलद, इन्द्रहिं आयसु दीन ॥ ७ ॥

अविरल[3] जल मृत्तिका[4] बहाई * शुभ्र अस्थि-तन विधि दरसाई
सुनि विधि-टेर चेतना जागी * दौरि दण्डवत किय अनुरागी
कियेउ मुक्त मोंहि, दै हरि नामा * पुलकित पुनि पुनि करत प्रनामा
रत्नाकर तजि नाम विधाता * वाल्मीकि[5] जग किय विख्याता

नामेर महिमा देखि ब्रह्मार तरास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

ब्रह्मा कर्तृक रत्नाकरेर वाल्मीकि नाम[6] ओ रामायण रचना करणेर वरदान

ब्रह्मा कह शुनह नारद तपोधन * जे कहिल मिथ्या नहे शिवेर वचन
राम नाम ब्रह्मा स्थाने पेये रत्नाकर * सेइ नाम जपे षाटि हाजार वत्सर
एक नाम जपे एकस्थाने एकासने * सर्वाङ्ग खाइल वल्मीकेर कीटगणे
माँस खाइया पिण्ड करिल सोसर * हइल कण्टक-कुश ताहार उपर
खाइल सकल मांस अस्थिमात्र थाके * वल्मीकेर मध्ये मुनि राम नाम डाके
ब्रह्मार मुहूर्त्त षाट हाजार वत्सर * पुनः आइलेन ब्रह्मा जथा मुनिवर
सेखाने आसिया ब्रह्मा चारिदिके चाय * मनुष्य नाहिक किन्तु रामनाम हय
राम नाम शुने मात्र पिण्डेर भितर * जानिल इहार मध्ये आछे मुनिवर
आज्ञा करिलेन ब्रह्मा डाकि पुरन्दरे * सात दिन वृष्टि कर पिण्डेर उपरे
वृष्टिते गलिया गेल मृत्तिका सकल * देखिल केवल अस्थि आछे अविकल
सृष्टिकर्ता करिलेन ताहारे आह्वान * पाइया चैतन्य मुनि उठिया दाँड़ान
ब्रह्मारे कहिल मुनि करिया प्रणाम * मोरे मुक्त कैला तुमि दिया रामनाम

---

१ ब्रह्मा २ ब्रह्मा ३ लगातार ४ मिट्टी ५ वल्मीक अर्थात् दीमकों से व्याप्त मिट्टी के ढेर से निकलने के कारण ब्रह्मा ने रत्नाकर को वाल्मीकि नाम दिया।

तै सुत सात काण्ड सुखकारी ❋ राम-रुचिर-रचना-अधिकारी
राम नाम किय तोहिं अति पावन ❋ रचहु चरित सोइ गाइ सुहावन
विद्याहीन न पिंगल-ज्ञाना ❋ केहि विधि रचिहौं राम-पुराना
बाल्मीकि कर सविनय वानी ❋ सुनि, प्रबोधि, बोले विधि ज्ञानी
सरस्वती तव गिरा निवासा ❋ सहज काव्य तहँ होइ प्रकासा
जो वरनै तैं छन्द ललामा ❋ सोइ जग जनमि, करैं श्री रामा
दै वर, गमन कियो विधि, देसा ❋ वाल्मीकि हिय हरष विशेसा

नारद द्वारा वाल्मीकि को रामायण की रचना का आभास देना

बाल्मीकि एकदा विटप तर ❋ जपत राम, जहँ सुखद सरोवर
एक क्रौंच पच्छिन की जोरी ❋ बिलसति जहाँ निपट मदभोरी
व्याध-बान-हत खग - निस्संका ❋ आकुल गिरा धरनि, मुनि-अंका
'अहह राम!' मुनि वचन उचारा ❋ मुग्धकाल पच्छी किन मारा
बिन अपराध कीन खग - हिंसा ❋ अस कुकर्म! मम रहत नृसंसा

दो० नरक बास पावै अधम, शाप दियेउ भरि शोक।
शाप देत वानी प्रगट, छन्दबद्ध सुश्लोक ॥ ८ ॥

ब्रह्मा वले तव नाम रत्नाकर छिल ❋ आजि ह'ते तव नाम वाल्मीकि हइल
बाल्मीकेते छिला जेइ सेइ ए विधान ❋ सात काण्ड कर गिया रामेण पुराण
जेइ राम नाम हैते हइला पवित्र ❋ सेइ ग्रन्थ रच गिया रामेर चरित्र
जोड़ हाते बले मुनि ब्रह्मा विद्यमान ❋ केमन हइवे ग्रन्थ केमन पुराण
केमन कविताछन्द आमि नाहिजानि ❋ शुनिया विधाता ताँरे कहिछेन वाणी
सरस्वती रहिवेन तोमार जिह्वाय ❋ हइवे कविता राशि तोमार कथाय
श्लोकछन्दे पुराण करिवे तुमि जाहा ❋ जन्मिया श्रीरामचन्द्र करिवेन ताहा
एत वलि ब्रह्मा गेल आपन भुवन ❋ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

नारदकर्त्तृक वाल्मीकि के रामायण रचनार आभास प्रदान

एक दिन से वाल्मीकि सरोवर कूले ❋ राम नाम जपे वसि सुखे वृक्ष मूले
क्रौञ्चक्रौञ्ची वसि तथा आछे वृक्षतले ❋ एक व्याध सेइ पक्षी विन्धिलेक नले
विन्धिलेक सेइ पक्षी शृङ्गारेर काले ❋ व्याकुल हइया पड़े वाल्मीकिर कोले
रामे स्मरि वले मुनि काणे दिया हात ❋ जीवहत्या कैलि पापी आमार साक्षात्
शृङ्गारे मारिलि पाखी वड़इ कुकर्म्म ❋ पापिष्ट नारकि तुइ नाहि तोर धर्म्म
विना अपराधे हिंसा कर पक्षीजाति ❋ बुझिलाम तोमार नरके हवे स्थिति
एतेक वलिया मुनि शाप दिल ताके ❋ एई शोके एक श्लोक निःसरिल मुखे

जो न होत मुनि कहँ यहु शोका ※ तौ कस प्रगटत पुण्यश्लोका
'मा निषाद'[1] पद अमित अनन्दा ※ मुनि लिख लियेउ चतुष्पद छंदा
मर्म न विदित, चकित निज वचना ※ आश्रम - भरद्वाज पुनि गमना
दोउ गुरु-शिष्य मनन-आसीना[2] ※ सुनी उतै नारद-मधुबीना
वालमीकि मुनि काज सवाँरन ※ नारद कहँ पठयेउ चतुरानन
करि बन्दना, विनय रस पागे ※ रचना धरी देवमुनि[3] आगे
नारद ताकर मर्म बुझावा ※ वाल्मीकि मन अति सुख पावा
रामचरित वरनौ यहि छंदा ※ मानव - रूप सच्चिदानन्दा
रामभक्त, सब विधि सब लायक ※ वरनौ तात ! चरित-रघुनायक
सुर्यवंश दसरथहि निकेतन ※ राम भरत लक्ष्मण रिपुसूदन
तीनि गर्भ, जन्मैं चारिउ जन ※ यहि विधि चतुर्मूर्त्ति नारायन
मिथला जनक जनमि वैदेही ※ चाप भंजि हरि ब्याहेउ तेही
पितु-आयसु धरि कृपानिकेता ※ बन गवने सिय-लखन समेता
तहँ सिय-हरन कियेउ दशग्रीवा ※ पुनि मित्रता सुकपि सुग्रीवा
बालि-हतन सुग्रीवहिं राजू ※ खोजेउ सिय, कपि सकल समाजू

शोक हैते श्लोकेर हइल उपादान ※ मा निषाद वलि तार हय उपाख्यान
चारि पद छन्द मुनि लिखिलेन हाते ※ लिखिया आपनि मूल ना पारे बुझिते
भरद्वाज सन्निधाने करिला गमन ※ गुरु शिष्य बसिया आछेन दुइजन
ब्रह्मा पाठाइया दिल तथा नारदेरे ※ वाल्मीकिरे उपदेश करिबार तरे
जेखाने वाल्मीकि मुनि भावेन बसिया ※ सेखाने नारद मुनि उत्तरिल गिया
नारद देखिया मुनि सम्भ्रमे उठिल ※ दण्डवत् करि वसिते आसन दिल
सेइ श्लोक शुनाइल मुनि नारदेरे ※ नारद करिया अर्थ बुझाइल ताँरे
एइ श्लोक छन्दे तुमि कर रामायण ※ उपदेश कहि जानि तुमि से भाजन
सूर्य्यबंशे दशरथ हबे नरपति ※ रावण बधिते जन्मिलेन लक्ष्मीपति
श्रीराम भरत आर शत्रुघ्न लक्ष्मण ※ तिन गर्भे जन्मिबेन एई चारि जन
सीता देवी जन्मिबेन जनकेर घरे ※ धनुर्भङ्ग पणे ताँर विवाह तत्परे
पितार आज्ञाय राम जाइवेन बन ※ संगेते जावेन तार जानकी-लक्ष्मण
सीतारे हरिया लवे लङ्कार रावण ※ सुग्रीव सहित राम करिबे मिलन
वालि के मारिया तारे दिवे राज्य भार ※ सुग्रीव करिया दिबे सीतार उद्धार

१ चतुष्पद अनुष्टुप छंद का प्रथम चरण, जिससे राम का पुण्यचरित्र वाल्मीकीय रामायण में आरम्भ हुआ है। यह पद अकस्मात् उनके मुख से आहत पक्षी को देखकर निकल पड़ा। २ विचार करने [illegible] नारद।

भुजा बीस बधि लंक दसानन ※ लौटि अवधपुरि कीन्हेंउ सासन

दो० वरनी रावन-दिग्विजय, कथा अगस्त्य ललाम ।
पचंमास कर गर्भ सिय, पुनि सोइ त्यागेंउ राम ॥ ६ ॥

गोपवास सियकर, तप-उपवन ※ लव-कुश जनम जानकीनन्दन
रामायण वेदादि पुराना ※ सिखवहु तिनहिं अस्त्र विधि नाना
ग्यारह सहस वर्ष छिति पालन ※ सुतहिं राज प्रभु स्वर्ग सिधारन
रचहु चरित जो मुनि गुन-सीला ※ करिहैं जनमि राम नर - लीला
देवलोक नारद पगु धारा ※ चन्द्रवंश पुनि इमि विस्तारा

चन्द्रवंश का वृत्तान्त

सागर-मथन 'चन्द्र' आलोका ※ 'बुध' शशिसुवन विदित त्रयलोका
बुध 'पुरुरुवा' नाम कर ताता ※ तेहि सुत 'सतावर्त' विख्याता
सतावर्त के 'स्वर्ग' कहाये ※ 'श्वेत' नाम सुत-स्वर्ग सुहाये
श्वेत-पुत्र 'निमि' नाम कहावा ※ जिनि गाथा मुनि देवन गावा
मथेंउ सबन निमि केर शरीरा ※ तेहि प्रगटेंउ 'मिथि' सुत अतिवीरा
तिन यश मिथिलापुर विख्याता ※ 'सीरद्ध्वज' 'कुशध्वज' तिन ताता[1]

दशमुण्ड विश हात मारिया रावण ※ अयोध्या जाय राजा हइवेन नारायण
करिबेन अगस्त्य रावण दिग्विजय ※ पुनरपि सीता के वर्ज्जिबे महाशय
पञ्चमास गर्भवती सीतारे गोपने ※ लक्ष्मण राखिवे लये तव तपोवने
कुश लव नामे हवे सीतार नन्दन ※ उभये शिखावे तुमि वेद रामायण
एगार सहस्र वर्ष पालिबेन क्षिति ※ पुत्रे राज्य दिया स्वर्ग करिबेन गति
जन्म हैते कहिलाम स्वर्ग आरोहण ※ करिबेन जन्मि इहा प्रभु नारायण
एत वलि नारद गेलेन स्वर्गवास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

चन्द्रवंशेर उपाख्यान

सागर मन्थने 'चन्द्र' हइल उत्पन्न ※ हइल चन्द्रेर पुत्र वुध अति धन्य
पुरुरवा नामे हइल ताँहार नन्दन ※ ताँहार पुत्र शतावर्त्त जाने सर्व्वजन
स्वर्ग नामे ताँहार हइल एक सुत ※ हइल ताँहार पुत्र श्वेत नाम युत
नामेते हइल निमि ताहार नन्दन ※ निमिके प्रशंसा करे जत देवगण
सकले मिलिया ताँर मथिल शरीर ※ जन्मिल ताहाते पुत्र मिथि नामे वीर
सेइ वसाइल एइ मिथिला नगर ※ वीरध्वज कुशध्वज ताँहार कोङर

१ वालक ।

जग-कल्याण हेतु कछु साधन ※ सोचन लगे तबै चतुरानन
जनक-गेह लक्ष्मी अवतारा ※ 'सीता' रूप प्रगट संसारा
बरनेउ चन्द्रवंस कृतिवासा ※ सूर्यवंस कर बहुरि प्रकासा

सूर्यवंश का वृत्तान्त और मान्धाता का जन्म

आदिपुरुष जो अलख 'निरञ्जन' ※ 'शिव' 'विधि' 'विष्णु' प्रगट ताहीसन
सुवन तीनि, पुनि एक नन्दिनी ※ सबन धरेउ मिलि नाम 'कन्दिनी'

दो० जरत्कारु अवतंस-मुनि, तिनसन रचेउ विवाह ।
नारद, भगिनी कन्दिनी, सहित समोद उछाह ।। १० ।।

तिन कर सुता 'भानु' जेहि नामा ※ ऋषि 'जमदग्नि' केरि सो बामा
जिन घर एक अंश अवतारा ※ जनमे विष्णु[1] विदित संसारा
बीजपात तहँ किय चतुरानन ※ प्रगटे मुनि 'मरीच' सोइ कारन
सुत-मरीच 'कश्यप' विख्याता ※ कश्यप-सुवन 'सूर्य' सुखदाता
सूर्य-तनय 'मनु' नाम कहाये ※ तिन अतिरूप 'सुषेन' सुहाये
अंश-सुषेन 'प्रसन्न' भुआला ※ तेहि 'युवनाश्व' अवध महिपाला
सुता 'कालनिधि' 'कंदक' नृपवर ※ वरेउ ताहि युवनाश्व तपागर

सृष्टिरक्षा हेतु धाता चिन्तिल अन्तरे ※ करिल लक्ष्मीर जन्म जनकेर घरे
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सुन्दर ※ चन्द्रवंश रचना करिला कविवर

सूर्यवंशेर उपाख्यान ओ मान्धातार जन्म

आदि पुरुषेर नाम हैला निरञ्जन ※ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पुत्र तिन जन
तिन पुत्र हइला तनया एक जानि ※ सकले ताँहार नाम राखिल कन्दिनी
जरत्कारु मुनिपुत्रे से नारद आनि ※ ताँहारे विवाह दिल कन्दिनी भगिनी
सत्रे गाय बाजाय नारद मुनि वेणु ※ ताहाते जन्मिल कन्या नाम हैल भानु
ब्रह्मार काछेते ताँर पड़िलेक वीज ※ ताहाते जन्मिल पुत्र नामेते मारीच
मारीचेर नन्दन कश्यप नाम धरे ※ ताँर पुत्र सूर्य्य इहा विदित संसारे
सूर्य्येर हइल पुत्र मनु नाम ताँर ※ सुषेण ताँहार पुत्र रूपे चमत्कार
प्रसन्न ताहाँर पुत्र अति से सुठाम ※ हइल ताँहार पुत्र युवनाश्व नाम
युवनाश्व हइल राजा अयोध्या नगरे ※ विवाह करिते गेल कन्दकेर घरे
कालनिमि नामे कन्या कन्दक राजार ※ विवाह करिल युवनाश्व गुणाधार

१ परशुराम ।

नृप न किन्तु किय तिय-सहवासा ❊ पितुहिं, लाज तजि, सुता प्रकासा
क्रुद्ध निरखि तनया-संतापा ❊ जामातहिं दीन्हेउ अभिशापा
तप सों लौटि इतै गृह आई ❊ विनय द्विजन युवनाश्व सुनाई
संतति-वर पावहुँ द्विजदाया ❊ सुनि हँसि कहेउ विप्र-समुदाया
दरस तैं न पत्नी कर कीना ❊ सुत-कामना कौन विधि लीना
तदपि यज्ञ-पुंसवन[1] गृहीता ❊ पियै रानि सोइ वारि पुनीता
इमि सतेज सुत इक उत्पन्ना ❊ सविधि याग नृप किय संपन्ना
जल पुंसवन यतन धरि लीना ❊ नृप युवनाश्व शयन तब कीना
अर्ध निसा गत, लागि पिपासा ❊ आकुल नृपति सहत नहिं त्रासा

दो० श्वसुर-शाप, भावी प्रबल, जो जल-यज्ञ महान ।
धरेउ यतनयुत रानि हित, स्वयं कियेउ नृप पान ।। ११ ।।

निसा विगत, रवि-वैभव जागा ❊ बिप्रन नीर-पुंसवन मांगा
तब राजन निसि-कथा बुझाई ❊ सुनि सखेद कह द्विज-समुदाई
यज्ञ-सलिल कर अमिट प्रभाऊ ❊ धारौ गर्भ, न संसय राऊ
पूरन गर्भ विगत दस मासा ❊ उदर फारि इक कुवँर प्रकासा
अति वेदना, तजे नृप प्राना ❊ मुनि विरंचि आदिक जे नाना

विवाह करिल मात्र सम्भोग ना करे ❊ लज्जा घुसाइया कन्या वलिल वापेरे
विशेष जानिया से कन्दक महीपति ❊ अभिशाप करिलेक जामातार प्रति
तपस्या करिया जबे आइल भूपति ❊ प्रणति करिया द्विजे माँगिल सन्तति
आशीर्व्वाद कर मम हउक नन्दन ❊ शुनिया ईषत् हास कहे द्विजगण
पत्नीसह तोमार नाहिक दरशन ❊ केमने वलिव तव हउक नन्दन
एक युक्ति कर राजा यदि लय मन ❊ यज्ञ कर ताहे तव हइवे नन्दन
यज्ञजल कराइबे राणी के भक्षण ❊ हइवे तोमार पुत्र अति विचक्षण
यज्ञ करि जल राजा राखे निज घरे ❊ शयन करिल राजा खाटेर उपरे
जखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर ❊ जल आन वलि राजा हइल कातर
तृष्णाय पीड़ित राजा आकुल हइल ❊ पुंसवन जल छिल मुखेते टालिल
प्रभाते प्रकाश हैल सूर्य्येर किरण ❊ जल आन बलि डाके यतेक ब्राह्मण
राजा वले द्विजगण करि निवेदन ❊ रात्रिकाले जल आमि करेछि भक्षण
एकथा शुनिया बले यत महामति ❊ रात्रिकाले जल खेले हबे गर्भवती
श्वशुरेर अभिशाप ताहारे लागिल ❊ युवनाश्व महाराज गर्भ जे धरिल
दशमास गर्भ पूर्ण हइल राजार ❊ बाहिर हइल पेट चिरिया कुमार
नृपति त्यजिल प्राण पेये बड़ व्यथा ❊ ब्रह्मा आदि पुत्र नाम राखिल मान्धाता

---

१ पुत्रेष्टि यज्ञ से प्राप्त जल ।

नामकरन कीन्हेउ 'मान्धाता' ॐ सोइ सुत अवधभूप विख्याता
दानशील अस पुण्य गुणागर ॐ सप्त द्वीप लौं नाम उजागर

सूर्यवंश-निर्वश और अयोध्या में हारीत का अभिषेक

तनय तासु 'मुचकुन्द' सुहाये ॐ हर्षित होत युद्ध के पाये
भूतल भेदि चक्र जिन स्यन्दन ॐ सप्तसिंधु किय, सोइ 'पृथु' नन्दन
पुनि 'इक्ष्वाकु' समर सुविशारद ॐ जिन सारथि वशिष्ठ अरु नारद
'सतावर्त' पुनि ताकर ताता ॐ 'आर्यावर्त' तासु प्रख्याता
तिनके 'भरत' अमित बलधारन ॐ 'भारत' नाम ख्याति जेहि कारन
'भूधर' भरत केर अधिकारी ॐ 'खाण्ड' प्रकट तेहि सुत धनुधारी
'दण्ड' सुवन तेहि पापाचारी ॐ जेहि व्यभिचार दुखित पुरनारी
पुरजन नृपहिं निवेदन करहीं ॐ तव सुत हेत अयोध्या तजहीं
मन अति छोह खाण्ड नरनाहा ॐ सुवन दण्ड कर रचेउ विवाहा

दो० नगर तजन, वन गमन कर, आयसु नृप पुनि कीन्ह ।
करि प्रवेश कानन सघन, दण्ड नगर तजि दीन्ह ॥ १२ ॥

नगर एक तहँ दण्ड बसावा ॐ 'दण्डारण्य' नाम सोइ पावा
तहँ मुनिप्रवर 'शुक्र' कर वासा ॐ नृप नित पठन जाय तिन पासा

अयोध्या नगरे राजा हइल मान्धाता ॐ सप्तद्वीप अधिपति पुण्यशील दाता
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व सेठाम ॐ आदिकाण्ड गान मान्धातार उपाख्यान

सूर्य्यवंश निर्व्वश एवं अयोध्याय हारीतकेर अभिषेक

मान्धातार तनय हइल मुचुकुन्द ॐ समर पाइले जार हृदये आनन्द
ताँहार तनय नामे पृथु नृपवर ॐ जाँर रथचक्रे सप्त हइल सागर
ताँर पुत्र हइल इक्ष्वाकु नरपति ॐ वशिष्ठ नारदे कैल रथेर सारथि
शतावर्त्त नामे ताँर हइल कुमार ॐ आर्य्यावर्त्त नामे पुत्र हइल ताँहार
भरत ताहार पुत्र अति बलवान ॐ जाहा हैते उपजिय भारत पुराण
जन्मिल ताहार पुत्र नामेते भूधर ॐ खाण्ड नामे ताँर पुत्र अति धनुर्धर
खाण्डेर हइल पुत्र दण्ड नाम धरे ॐ प्रजार कामिनी कन्या बलात्कार करे
कहिल जतेक प्रजा राजार गोचर ॐ तव पुत्र हेतु छाड़ि अयोध्या नगर
एकथा शुनिया खाण्ड विषादित मन ॐ पुत्रेर विवाह राजा दिल सेइ क्षण
परे पाठाइल राजा दण्डेरे कानने ॐ प्रवेश करिल दण्ड सेइ महावने
कानन मध्येते गिया दण्ड नृपवर ॐ बसाइल दण्डारण्य नामेते नगर
ताहाते बसति करे शुक्र मुनिवर ॐ पड़िवारे दण्ड नित्य जाय ताँर घर

एक दिवस तपहित मुनि गयेऊ * गुरुगृह दण्ड उपस्थित भयेऊ
तोरत सुमन सुतामुनि 'अब्जा' * लखि नृप दंड, काम मन उपजा
कामातुरहिं कहेउ मुनिबाला * उचित न, तैं पितु-शिष्य भुवाला
बन्धु! वरन मोहिं जो मन चहहू * प्रकट पिता सन आयसु लहहू
रुचै न मोहिं तव सीख-प्रसंगा * यहि छन केलि करयि मम संगा
करि बाटिका विवस मुनि-ललना * कुमति तृप्त निज कीन वासना
क्षत-विक्षत अरु नख आघाता * अब्जा कर कौमार्य निपाता
तप निवृत्त, मुनि आश्रम आये * आसन सलिल सुता सों पाये
दिवस क्लांत मुनि, सुता-सरूपा * निरखि क्षुब्ध, पूछेउ करि कोपा
कस शरीर श्रृंगार सहीता * सकुचि निवेदन किय भयभीता
'दंड' शिष्य तव सूने आवा * कियेउ विवस, मम धर्म नसावा
कुपित शुक्र नृप तुरत बुलावा * पोथिन सहित पढ़न मनु आवा
विद्यादान जो मोसन लीना * गुरु-दक्षिणा भली विधि दीना
दंड-भस्म सों[1] राजु पुनीता * होय, शाप दिय क्रोध अतीता

दो० भयेउ अवधपुर नृपति बिन, भानुवंस निर्वंस।
मुनि-शापित असमय तजेउ, जीवन, दंड नृशंस ॥ १३ ॥

शुक्र गेल एकदिन तपस्या करिते * दण्ड राजा हेन काले गेलेन पड़िते
शुक्र कन्या अब्जा जाय पुष्प आहरणे * दण्ड तारे वले मोरे तोष आलिङ्गने
अब्जा वले शुन राजा कहि तव ठाँई * पितृ शिष्य तुमित सम्वन्धे हओ भाई
करिते विवाह यदि लय तव मन * पितृ विद्यमाने तवे कर निवेदन
राजा बले ए कथाय स्थिर नहे मन * विभा हवे पाछे आगे देह आलिङ्गन
गुरुकन्या वलि राजा ना करे विचार * पुष्पवाटिकाते तारे करे वलात्कार
प्रथम युवक राजा युवती मिलन * नखाघाते रक्तपात हैल सेइ क्षण
तपस्या करिया मुनि शुक्र एल घरे * आसन सलिल अब्जा दिल मुनिवरे
दिनान्ते अभुक्त मुनि पुड़े कलेवर * कन्यारे देखिया मुनि कुपित अन्तर
मुनि वले अब्जा कन्या देखि ए केमन * तोमार सर्व्वाङ्गे देखि श्रृङ्गार लक्षण
लज्जा घुचाइया कन्या कहे ताँर पाश * तव शिष्य दण्डराजा कैल जाति नाश
शुनिया ए हेन कथा क्रोधे मुनिवर * दण्डक वलिया तवे डाकिल सत्वर
पुथि काँखे करि दण्ड आसे पड़िवारे * देखिया कुपित मुनि कहिल ताँहारे
पड़ाइया तोमारे यदि दियाछ चेतन * ताहार दक्षिणा भाल दिले हे एखन
कोपदृष्टे चाहिल तखन महाऋषि * राज्य शुद्ध हइल से दण्ड भस्मराशि

---

१ कुमार्गी दण्ड के नष्ट होने से राज्य पवित्र हो, ऐसा शाप।

मुनि बशिष्ठ-माथे सब सासन * करैं प्रजा कर सुतसम पालन
जप तप नेम ब्राह्मण-धर्मा * छूटे सकल राज्य के कर्मा[1]
अति चिन्तित सोचत मुनि ज्ञानी * छन्न जेहि दंड-बुद्धि बौरानी
ऋतुवंती अब्जा तेहि काला * निश्चय धरेउ गर्भ मुनिबाला
शुक्र बुलाय सुगिरा उचारी * तव दौहित्र[2] राज्य-अधिकारी
शुक्र-मर्म सुनि उर सुख पावा * अब्जा अवध सहर्षि पठावा
मुनितनया किय अवध निवासा * प्रसवि कियेउ सुत मंजु प्रकासा
जननी जासु हरित[3]—जग जाना * नाम तासु 'हारीत' बखाना
अन्नप्रासन किय षटमासा * गुरु असीस मन अमित हुलासा
वर्ष एक गत, मुनी प्रवीना * सिंहासन सुत किय आसीना
वयस[4] अल्प वैधव्य सरूपा * निरखि मातु आकुल सुतभूपा
नृप हरीत पूँछत इमि बानी * कहेउ जननि निज करुन कहानी
तव पितु सन नहिं सविधि विवाहू * बल प्रयोग बरबस नरनाहू
मुनि-सूने[5] मम चरित बिनासा * मम-पितु-शाप तासु तन नासा
आख्यान-दंडक यहि रूपा * कृत्तिवास किय बरनि अनूपा

अयोध्याते दण्डराजा त्यजिल जीवन * निर्ब्बंश हइल सूर्य्यबंशेर राजन
अयोध्याते हैल राजा बशिष्ठ ब्राह्मण * पुत्रेर समान करि पाले प्रजागण
मुनि बले जप तप सब नष्ट हैल * मिछा राज्य करि मम जन्म गोङाइल
ध्यान करि जानिल से बशिष्ठ ब्राह्मण * अब्जार हइबेक एक उत्तम नन्दन
जेइकाले अब्जाकन्या ऋतुमती छिल * दण्ड राजा बलात्कार तखन करिल
ध्याने जानि बशिष्ठ कहेन शुक्र प्रति * शीघ्र पाठाइया देह राजा हबे नाति
शुनि शुक्र मुनि तबे हैल हृष्ट मन * कन्या पाठाइबार सज्जा करिल तखन
अब्जा के पाठाय शुक्र अयोध्या नगर * अब्जारे हइल एक अपूर्व्व कोङर
हरणे हइल ताँर नाम जे हारीत * मुनि तारे आशीष करिल जथोचित
दिने दिने वाड़िल जेमन शशधर * छय मास मध्ये अन्न दिल मुनिवर
एक वर्ष हैल जेइ राजार कोङर * बसाइल निया सिंहासनेर उपर
हारीत बलेन माता करि निवेदन * अल्पकाले विधवा हइले कि कारण
एइ कथा शुनि राणी कहिल निश्चय * तोमार वापेर सङ्गे विवाह ना हय
तव पिता आमारे करिल वलात्कार * मम पिता कैल तव पितार संहार
कृत्तिवास पण्डितेर रामायण गान * आदिकाण्डे गाइल दण्डक उपाख्यान

१ राजकाज के कारण २ नाती, कन्या का पुत्र ३ विवश करके पत्नी वनाई गई ४ उम्र ५ मुनि की अनुपस्थिति में।

राजा हरिश्चन्द्र का उपाख्यान

भल हारीत प्रजा प्रतिपालत ❋ तासु तनय 'हरिबीज' बखानत

दो० परनारी-हारी सदा, पुरजन विकल अनन्य ।
ताके सुत 'हरिचन्द' नृप, ख्याति चराचर धन्य ॥ १४ ॥

नृप तन कियो जाह्नवी अर्पन ❋ 'हरिश्चन्द्र' कहँ राज्य समर्पन
सत्य-रूप हरिचन्द भुआला ❋ पितु सम प्रजा सतत प्रतिपाला
सोमदत्त नृप-तनया 'शैव्या' ❋ कियो विवाह सुन्दरी भव्या
अनुपम तेहि रुहदास कुमारा ❋ सब बिधि मोद भूप-परिवारा
सत्य-सुयश तिन पुन्य विलोका ❋ वरनन इतै सुनौ सुरलोका
सुरपति इक दिन सभा विराजा ❋ पचकन्यान नृत्य तहँ छाजा
नृत्य मुग्ध नर्तकी तरंगा ❋ नाचति भयो ताल कहुँ भंगा
कोह,[1] चूक लखि, सुरपति व्यापा ❋ दीन पंचकन्यन अभिशापा
यौवनमत्त बन्दिगृह जाहीं ❋ विश्वामित्र तपोवन माहीं
रूपसि कहैं विकल भरि लोचन ❋ नाथ होय किमि शाप विमोचन
पुन्यनरेस अवध हरिचन्दा ❋ तिन कर छुये कटैं तव फन्दा

राजा हरिश्चन्द्रेर उपाख्यान

हारीतेर पुत्र हरिवीज नाम धरे ❋ राजा हैल हरिवीज अयोध्या नगरे
परवधू हरि हरिवीज राज्य करे ❋ ताँर पुत्र हरिश्चन्द्र ख्यात चराचरे
हरिश्चन्द्रे समर्पण करि सर्व्व देश ❋ स्वरूपे गङ्गाते राजा करिल प्रवेश
पितृ मृत्यु परे हरिश्चन्द्र हैल राजा ❋ पुत्रेर समान पाले अयोध्यार प्रजा
सोमदत्त राजकन्या ताँर नाम शैव्या ❋ विवाह करिल हरिश्चन्द्र अति भव्या
पाइया सुन्दरी जाया अन्तरे उल्लास ❋ हइल ताहार पुत्र नाम रुहिदास
सुखे राज्य करे हरिश्चन्द्र महीपति ❋ इन्द्रेरे लइया किछु शुनह सम्प्रति
एक दिन सभाते वसिल सुरपति ❋ पञ्चकन्या नृत्य करे प्रथम युवती
नाचिते नाचिते अति वाड़िल तरंग ❋ एक वार करिलेक तारा ताल भंग
देखिया करिल कोप देव पुरन्दर ❋ अभिशाप दिल पञ्चकन्यार उपर
यौवन गर्व्विता तोरा हयेछिस् मने ❋ वद्ध हये थाक विश्वामित्र तपोवने
चरणे धरिया तारा करेन क्रन्दन ❋ कतकाले वल हवे शाप विमोचन
इन्द्र वले वन्दीरूपे थाक तपोवने ❋ हवे मुक्त राजा हरिश्चन्द्र परशने

---

१ क्रोध ।

चुनैं सुमन नित तोरैं डारी ❊ तरु उपवन शापित सुकुमारी
निरखि तपोवन डारि-निपाता ❊ कह शिष्यन सह कौशिक बाता
विटप-अंग जड़मति जेंहि भंगा ❊ जड़वत बँधै लता के संगा
भोर होत पुनि सोइ अतिरूपा ❊ किंसुक[1] तोरन चलीं अनूपा
छुवतै चपकि लता सन लागीं ❊ मुनि के शाप न बचीं अभागी

दो० अपराधिनि तरुबद्ध लखि, करि भर्त्सन[2] अति रीस।
किय पयान निज आसरम, विश्वामित्र मुनीस ॥ १५ ॥

मृगया हेत फिरत तहँ भूपा ❊ कानन हरिश्चन्द्र यशरूपा
भेंट कुरंग[3] न, सिथिल सरीरा ❊ डोलत मग-मारग प्रनधीरा
सोइ, तरु तरे लियो विश्रामा ❊ कीन गोहार निरखि सुरबामा[4]
क्रन्दन[5] सुनत छुयो तरु जैसे ❊ कन्या पंच मुक्त भइँ तैसे
लखेउ भूप सोइ अचरज नयना ❊ कीन स-सेन राज्य निज गमना
भोर गाधिसुत उपवन आये ❊ लखि न नवेलिन[6] मन अकुलाये
जेंहि अपराध छुटे तिन बंधन ❊ होय नष्ट कह गाधियनन्दन
हरिश्चन्द्र-कर[7] तिन कर त्राना ❊ धरत ध्यान कौतुक मुनि जाना

नित्य से रूपसी पुष्प करे आहरण ❊ डाल भांगे फूल तोले के करे वारण
शिष्यसह विश्वामित्र गेल तपोवने ❊ डाल भाँग गाछ सब देखिल नयने
एमन करिया डाल भाँगे जेइ जन ❊ आइले लागिबे कालि लतार बन्धन
एत बलि शाप तारे दिल मुनिवरे ❊ आइल प्रभाते कन्या पुष्प तुलिबारे
जेइ काले कन्या आसि डाले भर दिल ❊ लतार बन्धन हाते अमनि लागिल
प्रभाते आसिया विश्वामित्र तपोधने ❊ कन्या देखि भाविते लागिल रुष्ट मने
अनेक प्रकारे तारे करिया भर्त्सन ❊ यथास्थाने मुनिवर करिल गमन
हेन काले तथा हरिश्चन्द्र यशोधन ❊ मृगया करिते करिलेन आगमन
मृग ना पाइया अति व्याकुलित मन ❊ क्लान्त हन नाना स्थाने करिया भ्रमण
मनस्ताप पाइया बसिला तरुतले ❊ कन्या डाके उच्चै:स्वरे हरिश्चन्द्र बले
क्रन्दन शुनिया राजा गेल तपोवने ❊ स्पर्शमात्र मुक्त हये गेल पञ्चजने
आश्चर्य्य देखिया हरिश्चन्द्र यशोधन ❊ सैन्यसह निज राज्ये करिलगमन
प्रात:काले आइलेन गाधिर नन्दन ❊ कन्यागणे ना देखे दु:खित हैल मन
आमि जे वान्धिनु मुक्त कैल कोनजन ❊ सर्व्वनाश हैल तार संशय जीवन
ध्यान करि जानिलेन गाधिर नन्दन ❊ हरिश्चन्द्र छाड़ाइया दिल कन्यागण

१ पुष्प २ फटकार ३ हिरन ४ देव-पंचकन्याएँ ५ रोना ६ सुन्दरियों को ७ हाथ से।

तुरत चले कौशिक तन ज्वाला ※ सत्यसंध जहँ अवध-भुआला
आदर-विनय सहित दै आसन ※ कह नृप, धाम कियो मुनि पावन
जीवन सफल नाथ मम आजू ※ धन्य! धन्य! कौशिक ऋषिराजू
सुनु नृप, अग्निपुञ्ज मुनि कहेऊ ※ मम बन्दिनी मुक्त किमि करेऊ
कह नृप, असत न कहौं तपोधन ※ करुन टेर[1] सुनि काटेउँ बंधन
दान-पुन्य नित द्विज-परितोषू ※ कस मोहिं नाथ अकारन रोषू
रे नृप ! अहंकार तोहिं छावा ※ दान-पुन्य-यश मोहिं सुनावा
बहु अभिलाष, करौं कछु याचन ※ कस समरथ, देखौं तैं राजन

दो० सफल धर्म, गृह आजु मम, पुलकित कह अवनीस ।
स्वयं दान मोसन गहैं, विश्वामित्र मुनीस ।। १६ ।।

तन मन धन जो कछु अवसेसा ※ अर्पन सकल नाथ-आदेसा
मुनि तव मान बचन प्रतिपाला ※ राखौं अटल कहेउ महिपाला
व्याध-फन्द मृग फसहिं अबूझा[2] ※ मुनि-प्रपंच तिमि नृपहिं न सूझा
प्रन-पालन हरिचन्द सुभाऊ ※ साखी[3] देव, कहत मुनिराऊ
जो कछु देन, नृपति! मन आनौ ※ तौ दै अवनि सकल, सुख मानौ

क्रोध करि मुनि तवे चलिल सत्वर ※ उत्तरिल गिया मुनि राजार गोचर
मुनिरे देखिया राजा कैल अभ्यर्थन ※ एस एस वलि दिल वसिते आसन
सफल भवन मोर सफल जीवन ※ मोर गृहे आइलेन गाधिर नन्दन
ज्वलन्त अनल जेन वले तपोधन ※ बाँधिनु ये कन्यागणे छाड़ कि कारन
राजा वले कन्या मोरे कैल आमन्त्रण ※ मिथ्या ना वलिव प्रभु करेछि मोचन
दान पुण्य करि प्रभु तुषि ये ब्राह्मण ※ आमा प्रति क्रोध केन कर अकारण
ए कथा शुनिया कहे गाधिर कुमार ※ दान पुण्य कर वले एत अहङ्कार
करिबे कि दान तुमि देखि तव मन ※ आमारे किञ्चित दान देह त राजन
राजा वले गृहधर्म्म सफल जीवन ※ मोर दान लवे प्रभु गाधिर नन्दन
याहा चाहा ताहा दिव ना करिव आन ※ नाना दाने गोसाँई राखिव तव मान
मुनि वले दान देह यद्यपि राजन ※ करह अग्रेते तुमि सत्य निवन्धन
राजा वले सत्य सत्य ना करिव आन ※ ए सत्य लङ्घिले नाहि पाव परित्राण
भूपति करिल सत्य ना बुझिया छन्द ※ मृग वन्दी हैल येन ना देखिया फान्द
मुनि वले देखह सकल देवगण ※ राजा करिबेन निज सत्येर पालन
मुनि वले दिवे यदि करेछ अन्तरे ※ राजन पृथिवी दान करह आमारे

---

१ पुकार २ धोखे में ३ गवाह ।

हरषि भूप लै किञ्चित माटी * कृत संकल्प दान-परिपाटी
श्रद्धायुत भूदान अनूपा * स्वस्ति! स्वस्ति! कहि लिय तपरूपा
कह मुनि सुनु कुल-भानु-विभूषन * बिन दच्छिना दान नहिं पूरन
कोष-अधिप कह कृपानिकेता * कोटि सप्त सुबरन मुनि हेता
स्वर कठोर कह कौशिक बानी * दानवीर कस मति बौरानी
धरनि दिये अब तैं न नरेसा * धन सेवक न राजु अवसेसा
सुनत मर्म, नृप मन सुधि आई * निज करनी निज सर्ब नसाई
प्रन किमि सधै महीप विचारा * उत मुनि किय पुनि वाक्प्रहारा
दान-धर्म कर दर्प घनेरा * तजि महि अन्त लखौ कहुँ डेरा
सुहृदन कह, मुनि विनय विचारहु * कछुक धरनि हरिचन्दहिं छाड़हु
जहँ निज तन नृप करैं निवासू * धरा छाँड़ि कित मानव वासू

दो० सूची अग्र न महि तजौं, कह सकोपि मुनि बैन ।
महि-तटस्थ वाराणसी, सो अकेल नृप-अैन[1] ।। १७ ।।

काशीवास सहित परिवारा * तजैं राजु लिय सहित कुमारा
शैव्या, रोहिदास अरु राजन * तजेउ अवध, धरि मुनि-अनुसासन

दानेर करिल राजा अति परिपाटी * आनिलेन हाते करि तिन तोला माटी
भू-दान करिल हरिश्चन्द्र श्रद्धायुत * स्वस्ति स्वस्ति बलिया लइल गाधिसुत
मुनि वले दान दिला पाइनु एखन * दानेर दक्षिणा राजा देह त कांचन
राजा वले दक्षिणा ना करिह घृणा * दानेर दक्षिणा दिब सात कोटि सोना
मुनि वले विलम्बे नाहिक प्रयोजन * सात कोटि काञ्चन करह समर्पण
भूपति करेन आज्ञा भाण्डारीर प्रति * आमारे आनिया देह स्वर्ण शीघ्रगति
दृढ़ करि वले मुनि गाधिर कुमार * भाण्डारी उपरे तव किबा अधिकार
सकल पृथिवी दान करिले आमारे * भाण्डारी काहार धन दिबेक तोमारे
शुनिया भावित राजा छाड़िल निश्वास * करिलाम आपना आपनि सर्व्वनाश
मुनि वले भूपति मजिले अहङ्कारे * पृथिवी छाड़िया तुमि जाह स्थानान्तरे
पात्र मित्र सबे बले करि जोड़ पाणि * हरिश्चन्द्र भूपे दिते पल्ली एकखानि
सूच्यग्र खनने तत उठे वसुमती * उहाके ना देय विश्वामित्र महामति
पात्र मित्र वले शुन गाधिर तनय * कोथाय वसिबे हरिश्चन्द्र निराश्रय
एत शुनि क्रोध करि वले महाऋषि * पृथिवीर बहिर्भाग आछे वाराणसी
शैव्या नारी आर निज पुत्र रुहिदास * तिन जन जाउक करिते काशीवास
विश्वामित्र कथा शुनि सूर्य्यवंशधन * दारा पुत्र सह काशी करिल गमन

१ अयन, निवास ।

तब लौं मुनि पुनि गर्जन कीन्हा ❋ सप्तकोटि सुबरन नहिं दीन्हा
विवस भूप सविनय कह बानी ❋ सात दिवस ठहरौ मुनिज्ञानी
यहि बिच सुबरन-भार उतारन ❋ कहि काशी-पथ किय पग धारन
बीते दिवस, सोन कहँ मोरा ? ❋ कौशिक कह पुनि वचन कठोरा
नृप ससोच किमि उबरहिं भारा ❋ सहभामिनि सह करत विचारा
हाट[1] बेंचि मोहिं आनहु काञ्चन ❋ यहि विधि करौ नाथ! प्रन-पालन
नृप पुकारि कह, सुनु पुरबासी ❋ लेहु जु लेन चहौ कोउ दासी
भद्र विप्र इक फिरत बजारा ❋ परी कान हरिचन्द-पुकारा
हे नर-रतन! उचित तुम कहहू ❋ कतक[2] मोल दासी कर चहहू
कह नृप, नहिं प्रवञ्च[3] द्विजराई ❋ चारि कोटि सेविका बिकाई
हर्षि विप्र सोइ दीन्हेउ सुबरन ❋ लै शैव्या, पुनि चलेउ निकेतन
अञ्चल धरि रुहिदास कुमारा ❋ मातहिं तजत न, रुदन अपारा
छोड़-छोड़ कहि लकुटि[4] दिखावै ❋ द्विज हियहीन सुवन बिलगावै[5]
बटु[6]! दामन बिन सुत लै लीजै ❋ रानी कहत, अनुग्रह कीजै
दो० दुइ जीवन भोजन-वसन, नहिं बाउरि[7] बस केरि ।
विप्र-बचन ढारस कछुक, बहुरि रानि किय टेरि ।। १८ ।।

मुनि वले शुन राजा आमार वचन ❋ दिया जाह सात कोटि आमारे काञ्चन
राजा वले गोसाँई ना करिवे घृणा ❋ सात दिन परे दिव सात कोटि सोना
सात दिन पथे राजा हाँटिया चलिल ❋ पथ आगुलिया मुनि कहिते लागिल
मम कथा शुन हरिश्चन्द्र यशोधन ❋ आगे देह सात कोटि आमारे काञ्चन
शैव्यार सहित राजा करिल मन्त्रणा ❋ कि दियाशोधिव आमि ब्राह्मणेर सोना
शैव्या वले शुन प्रभु निवेदि तोमारे ❋ करह विक्रय मोरे हाटेर माझारे
स्त्री लइया चले राजा हाटेर भितरे ❋ दासी के कि निवे वलि डाके उच्चैःस्वरे
एक विप्र छिल से पण्डित साधुजन ❋ छिर तार एकटि दासीर प्रयोजन
ब्राह्मण वलेन ओहे पुरुषरतन ❋ लइवे दासीर मूल्य कतेक काञ्चन
राजावले नाहिजानि मिथ्या प्रवञ्चना ❋ ए दासीर मूल्य चाइ चारि कोटि सोना
शुनिया ए कथा विप्र स्वीकार करिल ❋ चारिकोटि स्वर्णदिया शैव्यारे किनिल
दासी निया द्विज जाय आपनार वास ❋ मायेर कापड़ धरि कान्दे रुहिदास
अञ्चले धरिया पुत्र जाय गड़ागड़ि ❋ 'छाड़ छाड़' वलि विप्र देखाइल वाड़ि
शैव्या वले गोसाँई गो करि निवेदन ❋ विना पणे किनह एवे आमार नन्दन
शुनिया कहिल विप्र हइला वातुल ❋ दुजनार तरे कोथा पाइब तण्डुल

---

१ बाजार में २ कितना ३ ठगी, मोलतोल ४ लाठी ५ अलग करे
६ हे ब्रह्मन् ७ पगली ।

प्रभु निज भाग इतर[1] नहिं चाहौं ॥ सुवन सहित, सोइ बिच निर्बाहौं
प्रति दिन सेर अन्न अधिकाई ॥ सुलभ न, कहि गमने द्विजराई
चारि कोटि सुबरन जो लहेऊ ॥ मुनि ढिग नृपति उपस्थित भयेऊ
कस मम करत अवज्ञा राजन ॥ चारि कोटि दिखरावत काञ्चन
रत्ती सात होय नहिं अल्पा[2] ॥ सप्त कोटि पूरन संकल्पा
आकुल हृदय माथ धरि हाथा ॥ हाटहिं चले अयोध्यानाथा
कासी पुरबासी सुनि लीजै ॥ सेवक चहौ तो मोहिं लै लीजै
कालू नाम श्वपच[3] तहँ आवा ॥ दास लेन कै रुचि दिखरावा
राखौ सुअर-यूथ मन भावै ॥ तौ मोहिं जन! निज मोल बतावै
जो आदेस, करौं चितलाई ॥ बूझौ मोल तो नहिं चतुराई
तीन कोटि सुबरन मोहिं दीजै ॥ कह नृप, मोहिं चाकर करि लीजै
नहिं बिलम्ब सोइ दाम चुकाये ॥ यहि बिधि सात कोटि मुनि पाये
गाधितनय उत अवध बिरामा ॥ डोम इतै पूछत नृप - नामा
जननी-जनक नाम जो दीन्हा ॥ 'हरिश्चन्द्र' कहि जग मोहिं चीन्हा
हरिचन्दा, हरि, हरे पुकारैं ॥ जेहि जस प्रीति सो नाम उचारैं

शैव्या वले मुनि अन्न दिवे जे आमाके ॥ ताहाइ भक्षण कराइव ए बालके
ब्राह्मण वलेन क्रोधे हइया बातुल ॥ दिन प्रति सेर मात्र पाइबे तण्डुल
दासी किनि विप्र जाय आपनार स्थाने ॥ अर्थ लये गेल राजा मुनि विद्यमाने
अत्यल्प देखिया स्वर्ण कहे तपोधन ॥ अल्पज्ञान कर हरिश्चन्द्र हे राजन
सातकोटि लब नहे कम सात रति ॥ विश्वामित्रे अवज्ञा ना कर महामति
ए कथा शुनिया महा प्रमाद भाविल ॥ शिरे हात दिया राजा हाटे चलि गेल
हाट खानि बैसे वाराणसीर गोचरे ॥ तृण बान्धि सान्धाइल हाटेर भितरे
नफर कि निबे बलि डाके उचैःस्वरे ॥ कालू नामे हाडि एक छिल से नगरे
से वले आमार कर्म्म आछे त नफरे ॥ चाहि एक नफर से राखिबे शूकरे
ए कथा शुनिया राजा बलिछे बचन ॥ आमि या वलिब ताहा करिवे पालन
कालू बले शुन ओहे पुरुषरतन ॥ आपनार मूल्य लबे कतेक काञ्चन
राजा बले नाहि जानि मिथ्या व्यवहार ॥ स्वर्ण लब तिन कोटि मूल्य आपनार
एकथा शुनिया कालू बिलम्ब ना कैल ॥ तिन कोटि स्वर्ण दिया नफर किनिल
सात कोटि सोना निया दिया मुनिवरे ॥ धन पेये गेल मुनि अयोध्या नगरे
कालू बले शुन ओहे कर वरनन ॥ कि नाम तोमार कह पुरुषरतन
करिया प्रवन्ध राजा कहिते लागिल ॥ हरिश्चन्द्र नाम बाप मायेते राखिल
कत वा डाकिबे हरिश्चन्द्र नाम धरे ॥ वलिओ कखन हरि कखन वा हरे

१ अलावा २ कम ३ चाण्डाल।

'हरिश्चन्द्र' सों करि 'हरिदासा' ※ कालू गमन चहेउ निज बासा

दो० प्रभु! उच्छिष्ट[1] भोजन कबौं, देहु न, यह अरदास[2]।
विनय सुनत बोलेउ श्वपच, धरौ ध्यान हरिदास ।। १६ ।।

शूकरगन मम पालहु नीके ※ आवै मृतक, घाट सुरसरि[3] के
मरघट-कर[4] तिन सों नित लेहू ※ बिन, शव-दाह करन जनि देहू
कालू सौंपि काज गृह जाई ※ सुअर-वृन्द[5] नृप कहेउ बुलाई
पुन्य-दान नित किय जिन हाँथन ※ तव मल-मूत्र न होयँ अपावन
सो तुम अन्त विसर्जन करहू ※ जो मम हित बराह[6] मन धरहू
नृप-विनती पशु नित अनुसरहीं ※ कबहुँ न घाट अपावन[7] करहीं
तजि राजसी भाव अरु वेषा ※ राजचिह्न तजि बाँधेउ केशा
हाँथ बाँस अरु डोम सरूपा ※ मरघट घाट फिरैं नित भूपा
शैव्या बसत उतै द्विज-भवना ※ पावत सेर एक नित अन्ना
तीनि भाग रोहित सुत पालै ※ एक पाव निज-तन प्रतिपालै
विप्र विलोकि दसा अति दीना ※ अनुष्ठान देवार्चन लीना
सुनु सेविका ! सुवन तव जाई ※ उपवन सुमन तोरि नित लाई

लइया नफर कालू जाय निज वास ※ हरिश्चन्द्र घुचाइल हैल हरिदास
हरिदास बले प्रभु करि निवेदन ※ खाइते उच्छिष्ट मोरे ना दिबे कखन
कालू बले हरिदास शुनह वचन ※ वाराणसी पुरे राख शूकरेर गण
वाराणसी तीरे जत मड़ा दाह हय ※ पञ्चाश काहन लह प्रत्येक मड़ाय
सँपिया कर्त्तव्य कर्म्म हाड़ि गेल घरे ※ डाकिया आनिल राजा सकल शूकरे
बलिते लागिल हरिश्चन्द्र महिपाल ※ मोर एक कथा शुन शूकरेर पाल[6]
दानपुण्य करिलाम ए दक्षिण करे ※ तोमादेर मलमूत्र मुछिब कि क'रे
एक सत्य पालिबे हे सकल शूकरे ※ मलमूत्र परित्याग करिबे अन्तरे
पालिल राजार वाक्य सकल शूकरे ※ मलमूत्र परित्याग करिल अन्तरे
उभ झुँटि चूल बान्धे राजा उच्चकरे ※ बाराणसी तीरे नित्य दौड़ादौड़ि करे
राजचिह्न राजार सकल दूरे गेल ※ पाटनिर वेश राजा तखन धरिल
शैव्या रहिलेन तथा ब्राह्मण आगारे ※ एक सेर तण्डुल ब्राह्मण देय तारे
तिन पोया रुहिदास खान तिन बारे ※ एक पोया खान शैव्या द्विजेर आगारे
विप्र वले शुन शैव्या आमार वचन ※ खाइल तोमार भाग तोमार नन्दन
कालि हैते आमि ये करिव देवार्च्चन ※ तव पुत्रे फूल हेतु पाठाइब वन

१ जूठा, अपवित्र २ विनती ३ गंगा ४ श्मशान का टैक्स ५ शूकर-समूह ६ सुअर ७ अपवित्र।

तन्दुल[1] अधिक देउँ सोइ हेता ❋ कहत रानि, द्विज कृपानिकेता!
जब जेहि विधि सुत आयसु देहू ❋ पूरन करै न संसय येहू
कनकपात्र लै भोर कुमारा ❋ कौशिक -तप-उपवन पग धारा
तोरत फूल डार कहुँ टूटहिं ❋ एक दिवस सोइ मुनि अवलोकहिं

दो० क्षत-विक्षत उपवन निरखि, को कीन्हेसि अपराध ?
धरत ध्यान जानेउ सकल, कोपपुञ्ज सुत-गाधि[2] ।। २० ।।

पितु गृह डोम, जननि द्विज-दासी ❋ रोहित सुत बाटिका बिनासी
पुनि आवै तोरै तरु-अंगा ❋ दियेउ शाप सोइ डसै भुजंगा
कौशिक कोप शाप बिकराला ❋शैव्या लखि निसि[3] सपन बिहाला[4]
मञ्जु प्रभात अरुन छबि छाजा ❋ किंशुक[5] लेन चलेउ युवराजा
निसि कर सपन भयानक वरनत ❋ हटकेउ[6] मातु, जाहु जनि उपवन
कह कुमार, भय करौ न जननी ❋ साँचु न होय सपन कै करनी
जो गृह बैठि सुमन नहिं लावौं ❋ दुर्मुख द्विज सन अन्न न पावौं
तव-तंदुल, धिक! मम प्रतिपालन ❋ धनि ते, करैं जननि-पितु पालन
सुनी न मातु-बैन नृपनन्दन ❋ चलेउ सुमन हित जहँ मुनि उपबन
बन विहरत सुत, भीति न अंगा ❋ तोरत पुहुप सुरंग - बिरंगा

याउक तुलिते पुष्प वालक तोमार ❋ बाड़ाइया दिव जे तण्डुल किछु आर
शैव्या वले जेइ आज्ञा करिबे जखन ❋ सेइ आज्ञा पालिबेक आमार नन्दन
स्वर्ण साजि लइल ये स्वर्णेर आकाँड़ि ❋ विश्वामित्र-तपोबने जाय रड़ारड़ि
डाल भांगे फूल तोले आपनार मने ❋ एक दिन एल मुनि से वन भ्रमणे
भांगा डार देखिया कुपिल मुनि मने ❋ एमन कुकर्म्म आसि करे कोन जने
ध्यान करि विश्वामित्र जानिल कारण ❋ पुष्पार्थे आइसे हरिश्चन्द्रेर नन्दन
विप्र घरे जननी हाड़िर घरे वाप ❋ कल्य यदि आसे हेथ ताके खाबे साँप
इहा वलि शाप दिल क्रोधे तपोधन ❋ रात्रिकाले हेथा शैव्या देखिछे स्वपन
प्रातःकाले प्रकाशित सूर्य्येर किरण ❋ तुलिते कुसुम जाय राजार नन्दन
तपोवने राजार कुमार जवे चले ❋ हेन काले शैव्या तारे स्नेह करि बले
ना जाइओ तुलिते कुसुम तपोवन ❋ नितान्त करिबे तोरे भुजगे दंशन
रुहिदास वले नाहि जाइले तथाय ❋ दुर्म्मुख ब्राह्मण अन्न नादिबे तोमाय
कृति पुत्र करे माता-पितार पालन ❋ खाइया तोमार अन्न थाकि सर्व्वक्षण
शुनिल ना रुहिदास मायेर वचन ❋ कुसुम तुलिते जाय मुनि-तपोवन
रुहिदास प्रवेशिल कुसुम-कानने ❋ नाना जाति पुष्प तुले जाहा लय मने

१ चावल २ विश्वामित्र ३ रात्रि में ४ व्याकुल ५ पुष्प ६ मना किया।

गेंदा गुलदाउदी सुहावन ※ गुलमेंहँदी गुलाब मनभावन
बेला बकुल कुसुम चहुँ फूला ※ हरसिंगार कुअँर मन झूला
शेफालिका सुकेसर प्यारी ※ चम्पा जवा विरञ्जित क्यारी
पारिजात किंशुक कहुँ तोरैं ※ कहुँ वल्लरी[1] सुमन झझकोरैं
कहुँ मल्लिका जुही मदभीनी ※ कलिका कछुक कुअँर चुनि लीनी
डाली विविध प्रसून सजावा ※ पुनि श्रीफल ढिग रोहित आवा

दो० छुअत डार मुनि-शाप वस, डसेउ सर्प विकराल ।
अबुध[2] धरनि स्रव[3] रक्त मुख, तन विष बाढ़ी ज्वाल ।। २१ ।।

दिन गत अर्ध, न सुत तव आवा ※ देवार्चन किमि सुमन अभावा !
सपन-ससंक रानि हित लर्जत ※ द्विज समुझाय चली सुत खोजत
चहुँ दिसि दौठि पुकारत उपवन ※ तरुतर लखि अचेत निज नन्दन
खाय पछार अवनि गिरि माता ※ जिमि समूल कदली[4] भुइँ पाता
निरखत छबि मुख बिलखत धरनी ※ सुत कित गमन कियो तजि जननी
धर्म करत दारुन दुख डारा ※ हे प्रभु ! अनल करौं तन छारा
लिये अंक सुत भरत उसासा[5] ※ विलपत रानि गई द्विज पासा
केहि विधि प्रान बचैं मम नन्दन ※ दासी तोर अकारथ क्रन्दन

जाति यूथी मल्लिका से तुलिल रंगन ※ शेफालिका पारिजात शिउलि काञ्चन
अशोक किंशुक जवा आतसी केशर ※ आकन्द गोलाव तोले वकुल टगर
अवशेषे श्रीफले आँकाड़ि लगाइल ※ आछिल डालेते शाप बुकेते दशिल
सर्व्वांगेते शिशुर वेड़िल विषज्वाला ※ भूमिते पड़िल शिशु मुखे भांगे लाला
हइल आकाशे वेला द्वितय प्रहर ※ तवु से राजार पुत्र ना आइल घर
विलम्व देखिया तारे कहिछे ब्राह्मण ※ एखन ना एले कवे हवे देवार्च्चन
शैव्या वले प्रभु एइ करि निवेदन ※ आपनि देखिया आसि कोथा से नन्दन
तनये देखिते शैव्या करिल गमन ※ विश्वामित्र तपोवने दिलेक दरशन
वालकेरे चाहिया वेड़ान तपोवने ※ देखे वृक्ष आड़े पड़े आपन नन्दने
पुत्रके देखिया शैव्या पड़िल भूतले ※ येमन कलार गाछ भांगे डाले मूले
पुत्र कोले करि शैव्या करिछे क्रन्दन ※ कोथा गेल मम पुत्र रुहिन नन्दन
धर्म्म करिवारे दुःख दिल नारायण ※ अगिनते पुड़िया आमि त्यजिव जीवन
पुत्र कोले करि शैव्या छाड़िल निश्वास ※ कांदिते कांदिते गेल ब्राह्मणेर पाश
निवेदन करि शुन सकल ब्राह्मणे ※ कह ए अधीन पुत्र वाँचिवे केमने

---

१ बेल २ बेहोश ३ बहने लगा ४ केला का वृक्ष ५ दुःख-भरी साँसें लेना ।

सर्पदंश घातक तेँहि प्राना ❋ मृतक पुरुष किमि जीवन-दाना
धैर्य, सती ! करु धीरज धारन ❋ भावी अमिट न सकौं उबारन
काशीघाट दाह मृत देहू ❋ बहु प्रबोधि, द्विज रहेउ स्वगेहू
मरघट चली रानि शव अंका ❋ डोलत जहँ हरिदास निशंका
लिये बाँस अरु श्वपच्च सरूपा ❋ मृतक देखि पहुँचे ढिग भूपा
जौं लौं कर नहिं घाट चुकावौ ❋ नारी जनि तुम चिता लगावौ
विधि मोहिं विवस अधम गति दीना ❋ मरघट नियम विनय तोहिं कीना
मम अधिकार प्रथम द्वै दीजै ❋ नतरु[1] दाह कहुँ अन्तै कीजै

दो० घाट-अधिप अनुमति मिलै, अर्ध वस्त्र तन फारि ।
चुकवौं कर तव, रानि कह, कातर गिरा उचारि ॥ २२ ॥

बिप्रगेह दासी कर कामा ❋ कटैं दिवस, सब विधि विधि बमा
तापर अहह दुसह दुख आई ❋ उतरेउ मम सिर गाय बजाई
पुनि-पुनि 'हरिश्चन्द्र' कर नामा ❋ करत उच्च लै रोदन भामा
अहौ कितै तुम अवधनरेसू ❋ तव सुत गमन आजु यम-देसू
धर्मयज्ञ कै आहुति पूरन ❋ प्रानहीन लखि सुअन बिसूरन[2]
सुनत नाम निज, रानि विलापा ❋ पूर्ववृत्त[3] हरिचन्दहिं जागा

शुनिया प्रवोध वाक्य कहे द्विजगण ❋ सर्पेर दशने प्राण छाड़िल नन्दन
मरिले मानुष कभु वाँचे कि कखन ❋ सम्वर सम्बर सती सम्बर क्रन्दन
वाराणसी पुरे तुमि मड़ा लये जाह ❋ काष्ठ चिता करि एइ मृत देह दाह
मड़ा लैया गेल शैव्या कातर अन्तरे ❋ एकाकी रहिल द्विज आपनार घरे
मड़ा लैया गेल शैव्या वाराणसी वास ❋ हातेते मुद्गर करि आसे हरिदास
हरिदास बले आमि मड़ा दाह करि ❋ मड़ा दाह प्रति लइ पञ्चाश काहन कड़ि
सत्यकथा एइ तोमाय कहिनु निश्चय ❋ तोमारे बलिनु याहा मिथ्या नाही हय
अन्येर घाटेते लैया पोड़ाओ कुमार ❋ विधाता करिल मोरे हाड़िर आचार
शैव्या वले गोसाई बलिते भय बासि ❋ विधाता करिल मोरे ब्राह्मणेर दासी
आज्ञा कर यदि मोरे घाटेर पाटनी ❋ दिव आमि चिरिया ये वस्त्र अर्द्धखानि
एतेक शुनिया तवे शैव्यार वचन ❋ हातेते मुद्गर लैया आइसे राजन
पड़िलेन पुत्र लैये शैव्या स्थानान्तरे ❋ हरिश्चन्द्र वलिया से कान्दे उच्चैःस्वरे
प्रभु हरिश्चन्द्र राजा गेल कोथाकारे ❋ आसिया देखह मृत आपन कुमारे
धर्म्म तरे देख नाथ की दशा हयेछे ❋ पराण पुतलि पुत्र छाड़िया गियाछे
हरिश्चन्द्र बलि शैव्या कान्दे विद्यमान ❋ तखन राजार हैल सेइ पूर्व्वज्ञान

१ नहीं तो २ विसूरना, दुःखों को याद करके कलपना ३ पहले का हाल ।

धरि धीरज शैव्या-ढिग आई ❋ परिचय दै, बहु बिधि समुझाई
सुनि सकोप बोलत अकुलानी ❋ कल लौं अवधभूप-महरानी
मरघट-डोम करै परिहासा ❋ हाय विरञ्चि पलट कस पासा
पुनि नृप कहत सुनौ प्रिय रानी ❋ व्यथा-विवस सब कथा भुलानी
सोमदत्त-तनया जो शैव्या ❋ अवध-भूप मैं वरेउँ सुभव्या
रोहित जनम लियेउ युवराजू ❋ कौशिक हरन कियेउ पुनि राजू
नृप-ललाट इक चिन्ह विशेखी ❋ संशय मिटेउ रानि सोइ देखी
उपजा मोह, नृपति तजि धीरा ❋ रोहित-तन लखि शिथिल शरीरा
हे सुत ! हे कुमार ! हे ताता ❋ कितै गमन किय तजि पितु-माता
सत मारग, दिय दुख नारायन ❋ अनल भेंटि तन, मिटवौं कारन

दो० सुवन सहित चन्दन-चिता, सजि बैठे पितु-मात ।
अनल देत प्रगटे तबै, धर्मराज साक्षात ॥ २३ ॥

अगिनि नृपति जनि करौ प्रवेसा ❋ पद्मपाणि रोहित-तन परसा
खोले दृग, विष दूर कुमारा ❋ पुनि रविकुल-बाटिका बहारा
कालू आय कहत सुनु राजन ❋ मुक्त बंध तव, सोन न याचन[1]
सोइ छन विप्र विनय किय आई ❋ दीन सोन, सो मैं भरपाई

हरिश्चन्द्र बले राणी ना कर क्रन्दन ❋ आमि सेइ हरिश्चन्द्र देखह लक्षण
शैव्या वले हरि हरि कपाले ए छिल ❋ आमार रूपेर मोहे पाटनी पड़िल
अयोध्याय छिलाम जे राजार रमणी ❋ एबे परिहास करे घाटेर पाटनी
हरिदास वले प्रिये वलि तव ठाँइ ❋ पासरिले सकलि किछुइ मने नाइ
सोमदत्त राजकन्या शैव्या तव नाम ❋ तोमारे विवाह प्रिये आमि करिलाम
रुहिदास नामे तव हइल नन्दन ❋ मम राज्य निल विश्वामित्र तपोधन
ए कथा शुनिया राणी देखिते लागिल ❋ कपाले निशान छिल तखनि चिनिल
पुत्र कोले करि राजा करिछे क्रन्दन ❋ कोथा एड़ि गेले बापू रुहित नन्दन
ए धर्म्म करिते दुःख दिल नारायण ❋ अग्निते पुड़िया आजि त्यजिब जीवन
तखनि चन्दन काष्ठे साजाइल चिता ❋ मध्येते राखिल पुत्र पाशे माता-पिता
ये काले ज्वलन्त अग्नि दिवेन चिताते ❋ हेन काले धर्म्मराज कहेन साक्षाते
अग्निते पुड़िया केन त्यजिवा जीवन ❋ आमि बांचाइया दिब तोहार नन्दन
पद्महरत परशेन बालकेर गाय ❋ विषज्वाला दूरे गेल चक्षु मेलि चाय
हेन काले कालू आसि राजारे सम्भाषे ❋ तोमाय आमारस्वर्ण दाय नाहि आसे
ब्राह्मण आसिया वले राजार सदने ❋ तोमाते आमाते दाय घुचिल काञ्चने

---

१ मूल्य में दिया सुवरन भर पाया ।

मम कल्यान न द्विज-धन लीने * शैव्या कर-कंकण तेहिं दीने
विश्वामित्र मुनीस विचारा * विनसेउ जप-तप-जोग-अचारा
वृथा प्रपंच राज कर लीना * भेंटि नृपति, मुनि आयसु दीना
साधु-साधु नृप गमनौ आजू * करौ सनाथ अवधपुर राजू
सपरिवार महिपति पग धारा * गाधितनय मन मोद अपारा
छँटे बिपति-घन उघरेउ चन्दा * सुखी भानुकुल पुरजन वृन्दा
राजसूय विधिवत करि पूरन * राजतिलक दै रोहित नन्दन
श्वान विडाल प्रजागन केते * भूपति-सह पयान जिन चेते[1]
सतन[2] स्वर्ग तिन लै पगु धारा * सत्य-धर्म कर बजेउ नगारा
नारायन बैकुण्ठ बिराजा * हरिश्चन्द्र कर निरखि समाजा
नृप के तप-आधार, कुवर्गा[3] * जुरैं न कहुँ मेटैं छबि-स्वर्गा
कहेउ सकोप गदाधर, नारद * नृप-संकल्प करौ मुनि गारद[4]

दो० प्रभु आयसु, सोइ दिसि चले, वीणापाणि मुनीस ।
गति अबाध[5] रथ लखेउ नभ, बढ़त कोशलाधीश ।। २४ ।।

करि प्रणाम बरनेउ निज अर्था * कह मुनि, नृप किमि भयेउ समर्था
जोरि समाज सतन गोलोका * के सुकर्म अस पुण्यश्लोका ?

राजा बले गोसांई गो करि निवेदन * ब्रह्मस्व लइब बल किसेर कारण
राणीर हातेते स्वर्ण कङ्कण जेछिल * ताहा दिता राज तार दाय घुचाइल
मुनि भावे तप जप सब नष्ट कैनु * मिथ्या राज्य करिया ये जन्म काटाइनु
येखाने आछेन हरिश्चन्द्र यशोधन * सेइखाने मुनि आसि दिल दरशन
मुनि बले शुन हरिश्चन्द्र महीपति * आपनार राज्ये तुमि जाह शीघ्र गति
स्त्री-पुत्र लइया राजा करिल गमन * प्रसन्न मानस मुनि प्रफुल्ल वदन
अयोध्याय राजा आसि दिल दरशन * राजसूय यज्ञ राजा करिल तखन
राज्यभार पुत्रेरे करिया समर्पण * हरिश्चद्र परलोके करिला गमन
पुरीर सहित चले वैकुण्ठ भुवने * कुक्कुर विड़ाल आदि जे छिल खाने
देव गदाधर ताहे कुपिल अन्तरे * कहिलेन डाकिया नारद मुनिवरे
स्वर्ग नष्ट करे हरिश्चन्द्र नृपवर * ए कथा शुनिया मुनि चलिला सत्वर
वीण वाजाइया जाय महातपोधन * देखे रथे स्वर्गे राजा करिछे गमन
मुनि प्रणमिया राजा स्वर्ग जाइ वले * मुनि कन जाओ राजा कोन पुण्य फले

१ चाहना की २ स-देह ३ राजा के तप के वल पर अनधिकारी लोग भी
४ मटिया-मेट ५ विना रोक-टोक ।

उपजी कुमति सुबुद्धि नसावा ※ सत पर विजय रजोगुन पावा
वापी कूप तडाग सुकरनी ※ निज मुख नृप नारद सन बरनी
सेतु हाट फल विटप लगाये ※ यज्ञ दान प्रन-सत्य निभाये
कौशिक राज सकल करि अर्पन ※ काया बेंचि चुकाये सुबरन
जस-जस सुजस भूप निज गावा ※ स्यन्दन[1] तस लखि भुइँ तन[2] आवा
रथ कर पतन, पतन नृप केरा ※ लखी चूक, हिय[3] छोभ घनेरा
होत ज्ञान, रथ पुनि टिकि गयउ ※ सरग[4]-धरनि बिच स्थिर भयऊ
कटक सहित नृप भोजन-वसना ※ देवन मिलि कीन्ही अस रचना
जोरत अन्न मोद मन लेहीं ※ खरचत ताहि प्रान तजि देहीं
खेत धान्य भरि धरैं कोठारा ※ खाई भूप-कटक सोइ सारा
लोभी बसन संजूतहिं जेता ※ आवै सकल कटक के हेता
अन्न-वस्त्र जेते सुख साधन ※ यहि विधि सकल जुटाये देवन
हरिश्चन्द्र कै पुन्य कहानी ※ कृत्तिवास यहि भाँति बखानी

सगर-वंश का उपाख्यान

इत रुहिदास सम्हारेउ सासन ※ पितु सम करत प्रजा प्रतिपालन

सुबुद्धि राजा के तवे कुबुद्धि घटिल ※ आपनार पुण्य सव कहिते लागिल
कूप-वापी-तडागादि नानास्थाने करि ※ दियाछि जांगाल आर वृक्ष सारि सारी
मम राज्य निल विश्वामित्र तपोधन ※ आपनारे वेचि शुधिलाम से काञ्चन
पुण्यकथा जेइ राजा कहिते लागिल ※ कहिते कहिते रथ नामिया पड़िल
नामिल राजार रथ दुःखित अन्तर ※ भाल मन्द नाहि वले हइल कातर
स्वर्गे थाकि युक्ति करे यत देवगण ※ राजार कटक किवा करिवे भक्षण
ये शस्य सञ्चय करे ना करिया व्यय ※ हरिश्चन्द्र राजार कटक ताहा लय
क्षेत्र हइते ये शस्य आनिया फेलाय ※ हरिश्चन्द्र राजार कटके ताहा खाय
नूतन बसन राखे करिया यतन ※ राजार कटके परे सेइ से वसन
ए नियम करिल सकल देवगण ※ अर्द्धपथे हरिश्चन्द्र रहिल तखन
स्वर्गे नाहि गेल राजा मर्त्य ना पाइल ※ हरिश्चन्द्र राजा मध्य पथे ते रहिल
कृत्तिवास पण्डित कवित्व विचक्षण ※ आदिकाण्डे गान हरिश्चन्द्र विवरण

सगरवंशेर उपाख्यान

अतःपर हइलेन रुहिदास राजा ※ पुत्र तुल्य पालन करेन सव प्रजा

१ रथ २ पृथ्वी की ओर ३ हृदय में ४ स्वर्ग।

दो० रोहित-नन्दन 'सगर' नृप, चहुँ दिसि जासु बखान ।
तासु रुचिर गाथा सुने, बिनसै पाप महान् ॥ २५ ॥

संततिहीन सगर अति शोका ❋ वंशहीन-मुख लखहिं न लोका
मन अति छोभ, गमन किय कानन ❋ बहु दिन कीन शंभु-आराधन
आसुतोष सब विधि परितोषू ❋ कहु नरपति, तोहि कौन कलेशू
नाथ? तनय बिन निसिदिन त्रासा ❋ 'सुत अनेक' लहि मिटै पिपासा
भोलानाथ बिहँसि वर दीना ❋ सुत सठ सहस एक[1] पितु कीना
लै वर, सगर गमन किय धामा ❋ केशिनि-सुमति युगल तेहि भामा
गर्भवती भईं शिव-वर पाई ❋ गत दस मास प्रसव नियराई
सुत असमंज केशिनी-नन्दन ❋ अतुलित छबि मनोज-मनरंजन
सुमति उठी वेदना कराला ❋ चर्म-उल्ब[2] प्रसवित तेहि काला
सगर उल्ब लखि, क्रोध प्रकासा ❋ 'भंगड़' कहि, किय शिव-उपहासा
तोरत उल्ब बुद्धि चकरानी ❋ तिल सम साठि सहस लखि प्रानी
मोहक रूप, सगर सुख पावा ❋ क्षीर-कलस सठ सहस मँगावा
दुग्धपुष्ट ते नर-तन पावत ❋ साठि सहस नृपसुत हुंकारत

ताहार नन्दन से सगर नाम धरे ❋ सगर हइल राजा अयोध्या नगरे
मन दिया शुन सगरेर विवरण ❋ ये कथा शुनिले हय पाप विमोचन
अपुत्रक राजा राज्य करे मनोदुःख ❋ प्राते नाहि देखे लोक अपुत्रेर मुख
दुःखेते सगर राजा करिल गमन ❋ बहु काल करिल शिवेर आराधन
सन्तुष्ट हइया शिव बलेन सगरे ❋ वर मागि लह राजा या चाह अन्तरे
सगर वलेन, पुत्र विना बड़ दुःख ❋ वर देह देखि आमि बहु पुत्र मुख
हासिया दिलेन वर भोला महेश्वर ❋ पुत्र षाटि हाजार हइवे तव घर
वर पेये आइलेन सगर नृपति ❋ शिव वरे दुइ नारी हैला गर्भवती
केशिनी-सुमती तार दुइ स्त्रीर नाम ❋ दिने दिने गर्भ दोंहा बाड़े अनुपम
दश मास गर्भ हैल प्रसव-समय ❋ केशिनी प्रसव कैल सुन्दर तनय
तनये देखिल येन अभिनव काम ❋ असमञ्ज बलिया थुइल तार नाम
सुमतीर गर्भ-व्यथा हइल यखन ❋ चर्म्मेर अलाबु एक प्रसवे तखन
देखिया अलाबु राजा कुपित अन्तरे ❋ भाङ्गड़ बलिया गालि दिलेन शिवेरे
कोपे लाउ भाङ्गिया करिल खानखान ❋ षाटि हाज़ार पुत्र हैल तिलेर प्रमाण
उषिमिषि करे सव देखिते रूपस ❋ षाटि हाजार आने राजा दुग्धेर कलस
खाइते खाइते दुग्ध नव रूप धरे ❋ षाटि हाजार पुत्रेर सगर हाँकारे

---

१ साठ हजार एक २ चमड़े की झिल्ली, थैली के समान जिसमे गर्भ रहता है ।

सुत-समूह, दिय शाप बिसाई[1] ✻ बिनसहु अल्प अवस्था पाई
बढ़त बढ़त बीते षट मासा ✻ डगरत सुत लखि सगर हुलासा
चुटकी जब-जब भूप बजावैं ✻ चहुँ दिसि घसिलि अंक चढ़ि आवैं

दो० द्वादस वयस किशोरगन, सबन विवाहेउ भूप ।
'अंशुमान' असमंज-सुत, प्रगटे धर्मस्वरूप ॥ २६ ॥

एकाधिक-सठ-सहस कुमारा ✻ नाति एक, नृप सुख परिवारा
विगत जन्म जिन जोग नसावा ✻ सोइ असमंज जनम पुनि पावा
असत जगत, सत ब्रह्म सनातन ✻ छूटै राजपाश[2] किमि ? चिंतन
उबवौं[3] सबन विविध दै त्रासा ✻ तौ पितु तजैं, मिटै जग-पासा[4]
पुर बालक मारग जे खेलत ✻ पकरत तिन्हैं बाँधि जल बोरत
भरैं नीर नारी सर तीरा ✻ तोरत घट, पुरजन अति पीरा
नित प्रति घरन लगावैं आगी ✻ नृप सन कहेउ प्रजा दुख-पागी
सुवन-चरित सुनि मन अति त्रासू ✻ सुत असमंज दीन बनवासू
हर्षित गमन कितो सोइ कानन ✻ जग बंधन, भल मिटे अपावन[5]

षाटि हाजार पुत्रे शाप दिलेन विसाई ✻ अचिरे मरिवि तोरा ना हवि चिराई
दिने दिने वाड़े सेइ सगरनन्दन ✻ छय मास वयस्क हइल पुत्रगण
जबे त सगर राजा हाते मारे तुड़ि ✻ षाटिहाजार कोले आसे दिया हामागुड़ि
यखन हइल तारा द्वादश वत्सर ✻ सकलेर परिणय दिलेन सगर
षाटि हाजारेर षाटि हाजार नारी ✻ सुखे राज्य करे राजा अयोध्या नगरी
ज्येष्ठ पुत्र असमञ्ज धर्म्मपरायण ✻ अंशुमान नामे ताँर हइल नन्दन
षाटि हाजार तनय एक मात्र नाति ✻ येखिया सगर राजा आनन्दित अति
असमञ्ज सदाई भावेन मनेमन ✻ संसार असत्य सत्य देव नारायण
असार संसारे केन वद्ध हये मारि ✻ निभृते वसिया आमि भजिव श्रीहरि
भाविल संसारे आमि ना थाकिव आर ✻ अनुचित कर्म्म सव करे दुराचार
यतेक वालक खेला खेलाय नगरे ✻ हाते गले बान्धि सकलेरे फेले नीरे
यत नारीगण जल भरिवारे आसि ✻ आछाड़िया भाङ्गे सव जलेर कलसी
अग्नि दिया पोड़ाय सकल प्रजाघर ✻ कहिल सकल प्रजा राजार गोचर
पुत्रेर चरित्र शुनि लागिल तरास ✻ असमञ्ज पुत्र राजा दिल वनवास
वने गिया अममञ्ज हरपित मन ✻ संसारेर वन्धन छेदिल नारायण

---

१ इन्द्र—पृथ्वी के पराक्रमी राजाओं से सदैव सशंकित इन्द्र ने सगर की प्रताप-वृद्धि देख कर शाप दिया २ राज्य का बन्धन ३ उबाऊँ, पीड़ित कर दूँ. ४ संसार के बन्धन ५ अपवित्र ।

अंशुमान सुत तासु[1] धर्मधर ॥ इतर[2] सुवन सह सुखित भूप वर
कछुक सगर-सुत सरग बिराजहिं ॥ कछुक कियेऊ तैनाथ[3] पतालहिं
डोलति धरा धरनिधर काँपै ॥ सगर-सुवन यहि बिधि चहुँ व्यापैं

राजा सगर का अश्वमेध यज्ञ आरम्भ और वश-नाश

अश्वमेध शुचि यज्ञ उछाहा[4] ॥ उपजेउ एक दिवस नरनाहा
सो सुभ घड़ी कियेउ आरंभन ॥ यज्ञ-अश्व किय सुतन समर्पन
सजेउ अवधपुर यज्ञ-तुरंगा ॥ साठि सहस्र सहोदर संगा
लौटै तुरग जीति दिग्देसा ॥ पुरवहु याग कहेउ अवधेसा

दो० मम विवाद सुरपति सदा, परैं कतक भय-व्याध ।
मेटि तिनहिं रविकुल सुभट, हय[5] आनहु निर्बाध[6] ॥ २७ ॥

सागर कटक तरंग अनन्ता ॥ उमड़त लखि सुरपति मन चिन्ता
जुगुति विरञ्चि! रचौं केहि भाँती ॥ सगर-तुरग[7] हरि जुड़वौ छाती
मध्य दिवस तम निसि सम छावा ॥ तकि अवसर हय इन्द्र चुरावा
बाँधेउ ताहि पताल शचीसा[8] ॥ योगलीन जहँ कपिल मुनीसा

असमञ्जे पाठाइया वनेर भितरे ॥ अपर सन्तान लये सुखे राज्य करे
कृत्तिवास पण्डितेर मुखे सरस्वती ॥ अमृत समान कैल आदिकाण्ड पूथि

सगरेर अश्वमेध यज्ञारम्भ ओ वंशनाशेर विवरण

कत पुत्रे रखे राजा स्वर्गेर उपर ॥ कतेक राखिल लये पाताल भितर
पृथिवीर राजा यत मम नामे काँपे ॥ मम वंशजात यत तिन लोके व्यापे
एक दिन सगर भाविया मने मने ॥ अश्वमेध यज्ञ करे अयोध्या भुवने
एतेक भाविया यज्ञ कैल आरम्भन ॥ तुरङ्ग राखिते दिल यतेक नन्दन
बापेर आगेते तारा करिल उत्तर ॥ घोटा सह जाब षाटि हाजार सोदर
पुत्र वाक्य शुनिया सगर बले ताय ॥ आनिते पारिले घोड़ा यज्ञ हबे साय
इन्द्रेर सहित मोर हइल विवाद ॥ एइ यज्ञे कत शत हइवे प्रमाद
यज्ञाश्व राखिते जाय सगर-नन्दन ॥ शुनिया हइल इन्द्र वड़ भीत मन
वासव बलेन ब्रह्मा कोन युक्ति करि ॥ विरिञ्चि वलेन तुमि घोड़ा कर चुरि
दिने दुइ प्रहरे हइल निशाप्राय ॥ घोड़ा चुरि करि इन्द्र पाताले पलाय
तपस्या करेन मुनि कपिल ये खाने ॥ घोड़ा लये राखिल ताहार विद्यमाने

१ केशिनी से उत्पन्न कुमार असमंज के पुत्र अंशुमान २ अन्य ३ नियुक्त ४ उत्साह, उमंग ५ घोड़ा ६ बेरोक-टोक ७ सगर का यज्ञ के लिए छोड़ा हुआ अश्व ८ शचिपति इन्द्र ।

मिटेउ अंध[1] पुनि भानु अलोका * कटक न सुतगन बाजि[2] विलोका
हेरत फिरे सकल भूमण्डल * मिलेउ न हय पुनि चले रसातल
लै कुदारि[3] सठसहस कुमारा * कोस-कोस महि करत प्रहारा
हुमकि हनैं भल चोट कुदारी[3] * लागैं कूर्म-पृष्ठ[4] महि फारी
चारि दण्ड खनि[5] चारिउ सागर * पहुँचे पुनि पताल बल-आगर
दिसि-पावक[6] बाँधा बट-छाहीं * उपवन-कपिल तुरग लखि ताहीं
करत कुलाहल कहि कटु बचना * घोर-चोर[7] किमि ध्यान-निमग्ना
हनेउ कुदार-बेंट मुनि अंगा * लागत भयेउ ध्यान-मुनि भंगा
अनल-नयन ऋषि झरैं अँगारा * पल बिच साठि सहस भे छारा

कपिल ऋषि द्वार सगर-वंश के उद्धार का उपाय-कथन

फिरे न अश्व सहित नृपनन्दन * बीतेउ बरस, न यज्ञ अरम्भन
अंशुमान असमञ्ज-कुमारा * सगर-सुतन खोजन पग धारा
नृप आयसु सो रथ आरूढा * अवनि सकल मग-मारग ढूँढा

योगेते आछेन मुनि केह नाहि काछे * इन्द्र हय वान्धिया गेलेन तार पछे
अंधकार वृष्टि सब घुचिल यखन * हय हाराइल वले सगरनदन
चाहिया ना पाइलेक पृथिवीमण्डले * पृथिवी खुँजिया तारा चलिल पाताले
भाइ पाटि हाजार कोदालि हातेधरे * एक क्रोश एकेक कोदालि परिसरे
क्रोध करि जेइ धरे कोदालिर मुष्टे * एक चोटे भेजाय पाताले कूर्म्मपृष्ठे
चारि दण्डे खुँड़िलेक चारि जे सागर * सागर खुँड़िया गेल पाताल भितर
पूर्व्व ओ दक्षिण दिक तार मध्यखाने * घोड़ा वान्धा देखिल कपिल विद्यमाने
डाकाडाकि करिया कहिल सब ताँइ * घोड़ाचोरे देखिते पाइनु एक भाई
मुनिर गायेते मारे कोदालिर पाशि * ध्यान भङ्ग हइया चाहेन महाऋषि
क्रोधेते नयने अग्नि झरे राशिपाशि * पुड़े षाटि हाजार हैल भस्म राशि
एककाले क्षय हैल सगरनन्दन * आदिकाण्डे गान कृत्तिवास विचक्षण

कपिल ऋषि कर्त्तृक सगर-वंश उद्धारेर उपाय-कथन

एक वर्ष हैल न यज्ञ अवशेष * तुरङ्ग लइया पुत्र ना आइल देश
श्री असमञ्जेर पुत्र नाम अंशुमान * पुत्रेर करिते तत्व ताहारे पाठान
राज-आज्ञा पाइया चड़िया निज रथे * एके एके पृथिवीते खोजे नाना पथे

---

१ अन्धकार २ घोडा ३ कुदाल, भूमि खोदने का एक औज़ार ४ भूमि को धारण करनेवाले कच्छप की पीठ पर ५ खोद कर ६ आग्नेय कोण ७ घोड़ा हरण करनेवाला।

दो० खनित[1] लखेउ चहुँ धरातल, प्रविशे भेदि पताल ।
प्राची[2] दिसि कर महोदधि[3], दर्शन कियेउ विशाल ॥ २८ ॥

नीलम बरन नील गज सुन्दर ※ दसनन धरा धरे तहँ भूधर
बन्दन करि पूँछेउ युवराजू ※ किय संकेत पन्थ गजराजू
अश्व-ओर[4] सों रहेउ सचेतू ※ सोइ पथ चले भानु-कुल-केतू[5]
सागर पुनि उत्तर दिशि सोहा ※ दिग्गज श्वेत निरखि मन मोहा
धवल रूप हे अवनि-अधारा[6] ※ लखे जात कहुँ सगरकुमारा
रविकुल-तुरग मिलै याही पथ ※ बढ़ेउ कुअँर उपजेउ पुरुषारथ
पच्छिम दिसा पयोधि तरंगा ※ दन्ती[7] जहँ सेंदुर सम अंगा
रक्त बरन अरु दन्त कराला ※ टिकी जहाँ मेदिनी[8] बिशाला
लचत माथ जिन, डोलत धरनी ※ अनुपम कथा-दिग्गजन बरनी
पूरुब-दखिन कोन हय-बंधन ※ किये समीप कपिलमुनि-दर्शन
हे मुनीस ! पूँछेउ करि वन्दन ※ देखे कतौं सगर के नन्दन
कपिल-अनल सुनि वंस-विनासा ※ अंशुमान मृदु वचन प्रकासा
सुत असमञ्ज, सगर-अवतंसा ※ छार कियेउ प्रभु ! ते मम बंसा

जे पथे प्रवेश करे देखे खानखान ※ सेइ पथ दिया तबे पाताले संधान
आगेते देखिल पूर्व्व दिकेर सागर ※ देखे नील वर्ण हस्ती परम सुन्दर
धरियाछे पृथिवी येन दशन उपरे ※ प्रणाम करिया तारे बलिछे सत्वरे
हस्ती वले एइ पथे जाह अशुमान ※ छोड़ाचोर निकटे हइबे सावधान
पूर्व्व हबे चलिलेन उत्तर सागर ※ श्वेत वर्ण एक हस्ती देखिल सुन्दर
अंशुमान ताँहारे लागिल शुधाइते ※ ए पथे सगर-पुत्रे देखेछ जाइते
शुनिया ताहार कथा लागिल कहिते ※ पाइबेन घोड़ा जाह एइ एइ पथे
तथा यदि ना पाइले घोड़ार दर्शन ※ पश्चिम सागरे गिया दिल दरशन
रक्तवर्ण एक हस्ती देखिल सुन्दर ※ मेदिनी से धरियाछे दशन उपर
से सब हस्तीर शुन अपूर्व्व कथन ※ मस्तक नाड़िले हय मेदिनी कम्पन
पूर्व्व ओ दक्षिण दिक तार मध्यखाने ※ घोड़ा बान्धा देखिल कपिल विद्यमाने
दण्डवत् हइया ताँरे लागिल कहिते ※ ए पथे सगरपुत्रे देखेछ जाइते
महाऋषि कपिल ये बलिल तखन ※ मम कोपानले भस्म हैल सर्व्वजन
शुनिया त अंशुमान जुड़िल स्तवन ※ सेइ वंशे तपोधन आमार जनम
असमञ्ज पुत्र आमि सगरेर नाति ※ तोमार महिमा वले काहार शकति

---

१ खुदी हुई २ पूर्व ३ महासागर ४ यह व्यंग्य कपिल मुनि की ओर संकेत है ५ अंशुमान ६ दिग्गज ७ हाथी ८ पृथ्वी ।

तिन सद्गति कछु कहौ उपाऊ ※ महिमा अमित छमौ मुनिराऊ
ब्रह्म-कोप थिर[1] नहिं अति काला ※ हरषि कहेउ मुनि, सुनौ भुवाला
जो शुचि गंग बहै भुवि लोका ※ लहैं पितर-तत्र सद्गति-लोका[2]

दो० कहँ उद्गम, कहँ बसति सो, मिलै दरस किमि गंग?
विनय मानि, बरनेउ कपिल, सुरसरि-जनम प्रसंग ।। २६ ।।

गंगा का जन्म और मर्त्यलोक मे सगर का गंगा के लाने का उपाय-कथन
तथा भगीरथ का जन्म

परमधाम त्रिभुवनपति रूपा ※ सुर-मुनि सहित विराज अनूपा
अमियमूरि श्री आनँदकन्दा ※ निरखत शिव-हिय उदित अनन्दा
ताण्डव नर्त ताल विधि नाना ※ आनन पाँच, सकल हरिगाना
डमरू डिमि-डिमि जीव जगावैं ※ सिंगी पुनि हरि-नेह लगावैं
अनुपम गान भाव तल्लीना ※ मुदित सकल मुनि-देवन कीना
लक्ष्मी सहित द्रवित[3] नारायण ※ सरसित द्रव लखि भक्तिपरायण
सरसि प्रेम-द्रव सोइ प्रभु अंगा ※ प्रगटीं पतितपावनी गंगा
नीर कमण्डल भरि सोइ पावन ※ आदर सहित धरेउ चतुरानन

अंशुमान वलिलेन शुन महामति ※ केमने हइवे मोर वंशेर सद्गति
ब्राह्मणेर कोपे नाहि थाके एक तिल ※ प्रसन्न हइया तारे कहेन कपिल
मर्त्यलोके यदि वहे प्रवाह गंगार ※ तवे से तोमार वंश हइवे उद्धार
विनयेते अंशुमान कहे ताँर प्रति ※ कोथाय जन्मिल गंगा कोथाय वसति
कोथा गेले पाइव से गंगार दरशन ※ कह मुनि शुनि सेइ गंगार जनम
गंगार जन्मेर कथा करेन प्रकाश ※ आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

गंगार जन्म विवरण ओ मर्त्यलोके सगरेर गंगा-आनयनेर उपाय-कथन
एवं भगीरथेर जन्म

एक दिन गोलोके वसिया नारायण ※ चतुर्द्दिके आर यत देव-ऋषिगण
सभ माझे त्रिलोचन गान पञ्चमुखे ※ देवऋषि स्वर्गवासी पुलकित देखे
शिंगा वले श्रीराम डम्बुरे वले हरि ※ पञ्चमुखे स्तुतिगान देव त्रिपुरारी
लक्ष्मी सह वसिया आछेन महाशय ※ शुनिया से गान हइलेन द्रवमय
द्रवमय हइलेन निजे नारायण ※ पतितपावनी गंगा ताहारे जनम
सेइ जल कमण्डुले भरिया आदरे ※ राखिलेन तुलिया विधाता निजघरे

---

१ टिकाऊ २ मुक्तजन का लोक ३ प्रेम में पिघलना ४ भक्ति-तल्लीन शिव।

सलिल पुनीत धरनि सोइ आवै ※ सगरवंश सद्गति तब पावै
सुत तव-पितर-बनावन करनी ※ मम-वर, सुरसरि प्रगटै धरनी
अंशुमान लै तुरग सिधाये ※ दुखित अवध भूपति ढिग आये
साठि सहस मुनि-कोप विनासा ※ धरत न धीर सगर अति त्रासा
जन्मत बिपुल वंस, भय पाई ※ दीन विनास-शाप सुरराई
सोइ चरितार्थ, यज्ञ भइ भंगा ※ अब किमि अवनि अवतरन-गंगा
सुरसरि विन न तरैं सुत-लोका ※ करैं विलाप भूप अति शोका
अंशुमान प्रति राज समर्पन ※ चले सगर मन्दाकिनि आनन[1]

दो० सकल जतन-जप-तप विफल, दरस न सुरसरि दीन ।
शोकाकुल नित गलत तन, स्वर्ग गमन नृप कीन ।। ३० ।।

अंशुमान इत अवधनरेसू ※ सुत 'दिलीप' करि अर्पन देसू
सद्गति पितर लहैं सोइ कारन ※ सुरसरि हेत कीन तप धारन
सहस वर्ष दस, विन आहारा ※ सफल न तप, नृप स्वर्ग सिधारा
युगल रानि तजि, संततिहीना ※ नृप दिलीप पुनि, पितुपथ[2] लीना
जलाहार कहुँ निर्जल घोरा ※ तप विरञ्चि कर कीन कठोरा

सेइ गगा यदि पार आनिते भूपति ※ तवे से सगर-वंश पाइबे सद्गति
अंशुमान तोमारे दिलाम एइ वर ※ तव वंश हेतु गंगा हबेन गोचर
घोड़ा लैया अंशुमान अयोध्याते जाय ※ विवरण बले आसि सगरेर पाय
कपिलेर स्थाने पाइलाम अश्वधने ※ ताँर कोपाग्निते भस्म हैल सर्व्वजने
शुनिया सगर राजा शोकाकुल मन ※ पुत्रशोके निरवधि करेन क्रन्दन
षाटि हाजार पुत्रे शाप दिलेन विशाइ ※ अल्पकाले मरिल, ना हइल चिराइ
अशुचि हइल यज्ञ ना हइल साय ※ किमते पावेन मुक्ति, भावेन उपाय
स्वर्गेते आछेन गंगा करि कि प्रकार ※ ताहा विना किसे हबे वंशेर उद्धार
अंशुमाने राज्य राजा करि समर्पण ※ गंगारे आनिते राजा करिल गमन
गंगा ना पाइया राजा नित्य बाड़े शोक ※ मरिया सगर राजा गेल ब्रह्मलोक
अंशुमान राज्य करे आयोध्यानगरे ※ ताँर पुत्र हइल दिलीप नाम धरे
पुत्र राज्य दिया गेल गंगा आनिवारे ※ तप करे दश हाजार वर्ष अनाहारे
गंगा ना पाइया गेल स्वर्गेर उपर ※ दिलीप राजत्व करे येन पुरन्दर
अपुत्रक राजा दुःख भावेन अन्तरे ※ दुइ नारि थुये गेल अयोध्यानगरे
चलिल दिलीप राजा गंगा आनिवारे ※ कठोर तपस्या करे थाकि अनाहारे
कभु जलाहार करे कभु अनाहार ※ अयुत वत्सर सेवाकरिल ब्रह्मार

---

१ लाने के लिए २ पिता-पितामह के अनुसार ही गंगा-हेत तप को गये ।

अयुत वर्ष सुरसरि नहिं आना * ब्रह्मलोक नृप कीन पयाना
निरखि भानुकुल वंस-विहीना * इन्द्रादिक मिलि चिन्तन कीना
सुनी अवध प्रभु कर अवतारा * सो किमि ! इतै न वंस-अधारा
देवन सोचि जतन मन लावा * गौरीपति कहँ अवध पठावा
विधवा युगुल बसति जहँ रानी * वृषभ-अरूढ़[1] शंभु वरदानी
'पुत्रवती भव कोउ एक नारी' * अलख जगाय कहत त्रिपुरारी
जीवन विधुर[2] चकित दोउ भामा * किमि असीष, सुत होय ललामा?
रति-रत होंहि परस्पर रानी * जन्मै सुत, न असत सम्भ वानी
गमन शंभु, इत नारि-दिलीपा * आयसु धरि नित रहहिं समीपा
युगुल रहैं दम्पति सम तरुणी * लहेउ काल-ऋतु तिन अंक रमणी
शंभु-प्रसाद गर्भ धरि रानी * गत दस मास प्रसव नियरानी

दो० मांसपिण्ड कौतुक जनम, अस्थिहीन असमर्थ ।
लोक-हँसी! रानी दुखित, शिव दिय संतति व्यर्थ[3] ।। ३१ ।।

चलीं अंक-शिशु सरयू तीरा * तजहिं पंगु विन-अस्थि सरीरा

तथापि ना पाय गगा ना हय अशोक * मरिल दिलीप राजा गेल ब्रह्मलोक
अराजक हैल राज्य अयोध्यानगर * स्वर्गेते चिन्तित ब्रह्मा आर पुरन्दर
शुनियाछि जन्मिबेन विष्णु सूर्य्यकुले * केमने वाड़िवे वंश निर्म्मूल हइले
भाविया सकल देव युक्ति करि मने * अयोध्याय पाठाइल प्रभु त्रिलोचने
दिलीपेर दुइ जाया आछिलेन वासे * वृष आरोहणे शिव गेलेन सकाशे
कहिलेन दोंहाकार प्रति त्रिपुरारि * मम वरे पुत्रवती हवे एक नारी
दुइ नारी कहे शुनि शिवेर वचन * आमरा विधवा किसे हइबे नन्दन
शङ्कर वलेन दुइजने कर रति * मम वरे एकेर हइबे सुसन्तति
एइ वर दिया गेल दिया त्रिपुरारि * स्नान करि गेल दुइ दिलीपेर नारी
सम्प्रीतिते आछिलेन से दुइ युवती * कत दिने एकजन हैल ऋतुमती
दोंहेते जानिल यदि दोंहार सन्दर्भ * दोंहे केलि करिते एकेर हैल गर्भ
दश मास हैल गर्भ प्रसव समय * मांसपिण्ड मात्र पुत्र हइल उदय
पुत्र कोले करिया काँदेन दुइजन * हेन पुत्र वर केन दिला त्रिलोचन
अस्थि नाइ मांसपिण्ड चलिते न पारे * देखिया हासिबे लोक सकल संसारे
कोले करि निल ताहा चुपड़ि भितरे * सरयूर तीरे गेल फेलवार तरे

१ वैल पर सवार २ विधवा का, वैधव्य ३ शम्भुप्रसाद से रानी के गर्भ से अस्थिहीन लुण्ड-मुण्ड मांसपिण्ड का प्रसव देख सारा हर्ष लुप्त हो गया और निराशा तथा लोक-परिहास की आशंका से वह दुःखित हो उठी।

सोइ छन मुनि बशिष्ठ धरि ध्याना ※ कौतुक सकल तपोधन जाना
आयसु—पथ सोवाय सुत देहू ※ पथिक-दया तजि गमनहु गेहू
अष्टावक्र, हेतु असनाना ※ व्यथित-अंग तेहि पंथ पयाना
पंगु अचञ्चल सुवन-सरीरा ※ लखि अस मन सोचत मुनि धीरा
मम तन बिषम, नकल यदि करई ※ विनसै, ब्रह्मकोप सुत परई
जो वस्तुतः लुञ्ज, मम दाया ※ मदनमुग्ध छबि पावै काया[1]
अष्टावक्र विष्णु सम समरथ ※ जिन वर-शाप न होय अकारथ
चमत्कार-मुनि, रविकुलनन्दन ※ चपल सतेज लगेउ मग धावन
सुनि मुनि-टेर रानि दोउ आई ※ तनय-सरूप निरखि हरषाई
आशिष देयँ देव, मुनि, समरथ ※ सुवन-दिलीप नाम भागीरथ

भगीरथ द्वारा मर्त्यलोक में गंगा का लाना

पचयें वर्ष भगीरथ नन्दन ※ गुरु बशिष्ठ-गृह विद्यारंभन

हेन काले देखिलेन वशिष्ठ तपोधन ※ ध्यानेते जानिल तार सकल लक्षन
मुनि वले थुये जाओ पथे शोयाइया ※ करुणा करिबे केह आतुर देखिया
पुत्रे पथे शोयाइया दोंहे गेल बासे ※ स्नान करिबारे अष्टावक्र मुनि आसे
आट ठाँइ वाँका मुनि गमने कातर ※ बालक तेमनि करे पथेर उपर
एक दृष्टे अष्टाबक्र तार पाने चाय ※ मनेभावे आमारे ए देखिया भेङ्चाय
आमारे देखिया यदि करे उपहास ※ मम ब्रह्मशापे हबे शरीर विनाश
यदि तव देह हय स्वभावे एमन ※ मम वरे हओ तुमि मदनमोहन
अष्टावक्र मुनि सेइ विष्णुर समान ※ यारे वर शाप देन कभु नहे आन
अष्टावक्र मुनिर महिमा चमत्कार ※ दाँडाइया उठिल से राजार कुमार
ध्याने जानिलेन अष्टाबक्र तपोधन ※ धन्य महापुरुष ए दिलीप नन्दन
उभय राणी के डाकि आने मुनिवर ※ पुत्र लये हरषित दोंहे गेल घर
आसिया सकल मुनि करिल कल्याण ※ भगे-भगे जन्म हेतु भगीरथ नाम
महाकवि कृत्तिवास पण्डित परम ※ आदिकाण्ड गान भगीरथेर जनम

भगीरथ कर्त्तृक मर्त्त्ये गंगा-आनयन

पाँच वत्सरेर हैल हाते खड़ि दिल ※ वशिष्ठेर बाड़ि पड़िबारे पाठाइल

[1] मार्ग में छोड़ दिये गये मांसपिण्ड को, दूर से आते हुए अष्टावक्र मुनि ने देखकर कल्पना की कि यदि यह कोई प्राणी मेरे विकृत शरीर की नकल या हँसी उड़ा रहा है तो नष्ट हो जाय और, यदि सचमुच असमर्थ है तो कामदेव के समान छविमयी काया को प्राप्त हो।

कुअँर संग बालकन विवादा * 'जारज'[1] कहि इक शिशु प्रतिवादा
दुखित भगीरथ, उतर न आवा * मन गलानि लोचन जल छावा
तजि चटसार[2] कोपगृह सयना * मौन कुमार! न निकसत वयना
प्रहर द्वितीय दिवस चढ़ि आवा * आकुल जननि, न सुत गृह आवा

दो० शिशु हेरान बाघिनि यथा, विलपैं मुनि सन मात ।
मुनि प्रबोध, किय गमन दोउ, लखेउ कोपगृह तात ।। ३२ ।।

चूमि माथ अञ्चल मुख पोछत * भरि सुअंक ममता सों बोलत
कहु केहि धनपति करौं भिखारी * बन्दिमुक्ति, कै रोग दुखारी
तौ शत वैद्य करैं उपचारा * गर भरि कह मृदु वचन कुमारा
कछु अभिलाष न रोग सरीरा * लाञ्छन लगत, मातु मोहिं पीरा
आश्रम कछु बालकन विवादा * कहि 'जारज' मोहिं शिशु प्रतिवादा
केहि कुल जनम, नाम-पितु कहहू * बरनि, जननि! मम संसय हरहू
सुनि सुत-बिथा[3] रानि अति कातर * कथा सत्य सुनु बंस-उजागर
साठि सहस सुत सगर अधीसा * नसे कोप परि कपिल मुनीसा
तजि सुरपुर, छिति गंग पधारहिं * तौ तव पितर सगरसुत तारहिं

बालके-वालके द्वन्द्व यखन वाड़िल * जारज वलिया गालि एक शिशु दिल
मने भगीरथ दुःखी ना दिल उत्तर * विषादे आइल शिशु आपनार घर
सर्व्वदा अस्थिर हय सजल नयन * शयन-मन्दिरे शिशु करिल शयन
आकाशे हइल बेला द्वितीय प्रहर * माता वले पुत्र केन ना आइल घर
शावक हाराये येन फुकारे वाघिनी * मुनि काछे कान्दि जाय दिलीप कामिनी
वशिष्ठ वलेन माता ना कर क्रन्दन * कोपेर मन्दिरे पुत्रे पावे दर्शन
आसि राणी भगीरथे कोले करि निल * निजेर आँचले तार मुख मुछाइल
वलिते लागिल भगीरथेर जननी * कोन दुःखे दुःखी तुमि कह यदुमणि
कारे वाड़ाइव कारे करिव काङ्गाल * वन्दी मुक्ति करि यदि थाके वन्दीशाल
कोन रोगे रोगी तुमि अमित ना जानि * एइक्षणे करि सुस्थ शत वैद्य आनि
भगीरथ वले माता कर अवधान * रोग दुःख नहे आजि पाइ अपमान
विरोध बाधिल एक वालकेर सने * जारज वलिया गालि दिल से ब्राह्मणे
कोन वंशजात आमि काहार नन्दन * इहार वृत्तान्त कथा कह विवरण
पुत्रेर हइले दुःख माये लागे व्यथा * पुत्रे सम्वोधिया माता कहे सत्य कथा
सगरेर छिल षाटि हाजार तनय * कपिल मुनिर शापे हैल भस्ममय
गंगा स्वर्ग हैते यदि आइलेन क्षिति * तवे से सगरवंश पाइबे निष्कृति

---

१ उपपति से उत्पन्न बालक २ पाठशाला ३ व्यथा, पीड़ा ।

प्रवर[1] तीनि तव किय आराधन ॐ सके न करि सुरसरि आवाहन
तव पितु गमन स्वर्ग सुतहीना ॐ नृप-बनितन महेश वर दीना
युगुल रानि कृत दंपति जीवन ॐ यहि विधि जनम भगीरथ नन्दन
तैं सुत भानुवंश उजियारा ॐ सुनि अति मुदित दिलीप-कुमारा
सुर-सलिला किमि सहज प्रयत्ना ॐ सुलभ न विना भगीरथ-यत्ना[2]
जप-तप-जोग पितरगन हेता ॐ लौटौं महि, जाह्नवी[3] समेता
सुनि हठ-तनय विकल दोउ माता ॐ हटकहिं, यहि छन जाहु न ताता

दो० सुनेउ न, मातन बंदि सुत, गमनेउ मुदित उमंग ।
गुरु बशिष्ठ लै दीच्छा, फरके दच्छिन अंग ।। ३३ ।।

अनाहार पुनि हेतु-पुरंदर[4] ॐ सहस सात जपि वर्ष निरंतर
सदा मंत्रबस सुरगन रीती ॐ प्रगटि इन्द्र कह वचन सप्रीती
को पितु धन्य, कौन कुलकेतू ? ॐ माँगु माँगु वाञ्छित हिय-हेतू
तनय-दिलीप भानु-कुल-नन्दन ॐ बन्दहुँ सुरगनपति जगबन्दन
पितर सहस सठ सगर-कुमारा ॐ कपिल-शाप विनसे जरि छारा
मंदाकिनि जो प्रभु सों पावौं ॐ तिनहिं सुगति सुरपुरहिं पठावौं

क्रमे तिन पुरुष करिल आराधना ॐ तबु गंगा आनिते नारिल कोन जना
दिलीप तोमार पिता गेल स्वर्गपुरे ॐ पाइलाम तोमा पुत्र महेशेर वरे
भगे-भगे जन्म हेतु भगीरथ नाम ॐ सूर्य्यवंशे जन्म तव अयोध्याय धाम
शुनिया मायेर कथा भगीरथ हासे ॐ हासिया कहिल कथा जननीर पाशे
सूर्य्यवंशे भूपतिरा निर्ब्बोधेर प्राय ॐ अल्प श्रमे गंगा देवी के कोथाय पाय
यदि आमि धरि भगीरथ अभिधान ॐ गंगा आनि करिव सगर वंश त्राण
काँदिया कहिछे भगीरथेर जननी ॐ तपस्याय एक्षणे ना जाइ वंशमणि
मायेर वचने भगीरथ ना रहिल ॐ वशिष्ठेर स्थाने मन्त्रदीक्षा से करिल
यात्रा काले करे राजा मायेर स्मरण ॐ दक्षिण लोचन तार करिछे स्पन्दन
मायेर चरणे आसि करिल प्रणति ॐ प्रथमे सेविते गेल देव सुरपति
इन्द्रमन्त्र अनाहारे जपे निरन्तर ॐ इन्द्रसेवा करे सात हाजार वत्सर
मन्त्रवश देवता रहिते नारे घर ॐ वासब एलेन तथा दिते तारे वर
कोन वंशे जन्म तव काहार तनय ॐ वर मागि लह या अभीष्ट तव हय
करिया प्रणाम इन्द्रे बलिल वचन ॐ सूर्य्यवंशे जात आमि दिलीप-नन्दन
सगरेर छिल पाटि सहस्र तनय ॐ कपिल मुनिर शापे हैल भस्ममय
आछेन स्वर्गेते गंगा देव सुरपति ॐ ताहे मम वंशेर ये हइवे सद्गति

१ पूर्वज २ अकथ और अथक परिश्रम ३ गंगा ४ इन्द्र के लिए ।

सुनहु सुवन, कह सहसविलोचन ❋ गंग हेतु पूजहु त्रैलोचन
जो कुछ विघिन परैं तव काजा ❋ करौं सहाय, न छल युवराजा !
इन्द्र प्रनम्य, चलेउ कैलासा ❋ तप अनन्य किय शंभु-निवासा
आक[1] धतूर विल्वदल[2] चन्दन ❋ अनाहार कहुँ अजल शिवार्चन
अडिग सहस दस वर्ष कठोरा ❋ कह पशुपति तैं सफल किशोरा
भाव अनन्य गदाधर रूपा ❋ परम तत्व सेवहु सुतभूपा !
मम वर सफल साधना तोरी ❋ सुरसरि मिलै अमिय-मय-मूरी
चलेउ बन्दि शिव, जहँ श्रीकन्ता ❋ नित जप कोटि मंत्र भगवन्ता
शिशिर[3] शरीर सलिल[4] विच थापै ❋ ग्रीषम रुद्र पञ्चगिन तापै
यहि विधि विगत वर्ष चालीसा ❋ भक्त-विवस प्रगटे जगदीसा

दो० निष्ठा, भक्ति, अनन्य तप, जतन-भगीरथ, तात ।
सफल, माँगु वर वाञ्छित, बोले करुनानाथ ।। ३४ ।।

सहस साठि जे सगर-कुमारा ❋ ते मम पितर कपिल किय छारा
हे प्रभु ! मुक्तिदान तिन दीजै ❋ सुलभ गगनवाहिनि[5] मोंहि कीजै
प्रभु हँसि कहेउ जो गंग पुनीता ❋ ज्ञान न मोंहि, सो अगम अतीता

इन्द्र वले वलि शुन दिलीपकुमार ❋ आमा हैते दरशन ना पावे गंगार
आनिवेक गंगा यदि आमि देइ वर ❋ एक भावे पूज गिया देव दिगंवर
गंगारे आनिते पथे विघ्न यदि घटे ❋ आमि ता करिव मुक्त कहि अकपटे
इन्द्रेर चरणे राजा करिल प्रणति ❋ कैलासे सेविते गेल देव पशुपति
ओकड़ा धुतूरा ये आकन्द विल्वपात ❋ इहातेइ तुष्ट हन त्रिदेवेर नाथ
कभु अनाहारे कभु निराहार करे ❋ दृढ़ तप करे दश हाजार वत्सरे
महेश वलेन शुन राजार नन्दन ❋ अनाहारे ए तपस्या कर कि कारण
गङ्गारे आनिवे तुमि आमि दिव वर ❋ एक भावे सेव गिया देव गदाधर
शिवेर चरणे पुनः करिया प्रणति ❋ गोलोके चलिया गेल यथा लक्ष्मीपति
भगीरथ प्रतिदिन कोटी मन्त्र जपे ❋ तप करे ग्रीष्मकाले रौद्रेर उत्तापे
शीत चारि मास थाके जलेर भितर ❋ ए मते करिल तप चलिश वत्सर
मन्त्रवश देवता रहिते नारे घर ❋ आसिया कहेन हरि तारे निते वर
तपस्या तोमार मोरे लागे चमत्कार ❋ माग इष्ट वर दिव राजार कुमार
भगीरथ वले प्रभु करि निवेदन ❋ सगरेर छिल षाटि हाजार नन्दन
कपिलेर शापेते हइल भस्ममय ❋ पाइले गङ्गारे तारा मुक्त तवे हय
कहिलेन सहास्य वदने चक्रपाणि ❋ गङ्गार महिमा वापू आमि किबा जानि

१ मदार २ वेलपत्र ३ घोर जाड़े में ४ जल ५ गंगा ।

होहुँ विफल जो कृपानिधाना ※ पदपंकज तव, त्यागहुँ प्राना
कह हरि, सुरसरि हित तजि सोकू ※ चलौ संग मम, सुत! विधिलोकू[1]
सदन-बिरञ्चि वारि रह जेता ※ हरन कियेउ सो कृपानिकेता
प्रभुहिं दरसि विधि सविनय आसन ※ दै पुनि चहेउ नीर पद परसन
लखि निकेत-बासन[2] जलहीना ※ सञ्चित गंग-कमण्डल लीना
हरिपद परसेउ करि आवाहन ※ कह 'अंह्रिजा' गंग सोइ कारन
कहेउ विष्णु, गमनौ लै संगा ※ सुत ! सोइ पतितपावनी गंगा
गो-द्विज-घात अधम जे पापा ※ कुस परसत विनसत संतापा
अकथ पुन्य सुरसरि असनाना ※ पितर-मुक्ति-हित करौ पयाना
गमनौ छिति, हे धवल-तरंगा ! ※ तारौ वेगि सगर नृप-अंगा[3]
कहेउ गंग आयसु धरि माथा ※ कछु मम विनय सुनौ जगनाथा
पापी अधम बसत बहु धरनी ※ अपँ मोहिं मलिन निज करनी
लहैं मुक्ति सुरपुर मम संगति ※ कहौ उपाय नाथ ! मम सद्गति

दो० सुकृत-रूप वैष्णव अखिल, जिन बिच रमौं अनन्य ।
दरस-परस-असनान तिन, करै देवि तोंहि धन्य ॥ ३५ ॥

भगीरथ बले गंगा नाहि दिबे दान ※ तव पादपद्मेते त्यजिव आमि प्राण
शुनिया ताहारे हरि करेन आश्वास ※ ब्रह्मलोके आछे गंगा चल ताँर पाश
छिल ब्रह्मलोकेते सामान्य यत जल ※ माया करि हरिलेक हरि से सकल
ब्रह्मार सदने प्रभु दिल दरशन ※ सम्भ्रमे उठिया ब्रह्मा दिलेन आसन
पाद्य दिते यान ब्रह्मा घरे नाहि जल ※ जलहीन पात्र मात्र आछे अविकल
कमण्डलु मध्ये गंगा पड़े ताँर मने ※ आस्ते आस्ते गिया ब्रह्मा आनेन यतने
गंगाजले विष्णुपद करेन स्खालन ※ अंह्रिजा वलिया नाम एइ से कारण
भगीरथ राजारे वलेन चिन्तामणि ※ लये जाह एइ गंगा पतितपावनी
ब्रह्महत्या गोहत्या प्रभृति पाप करे ※ कुशाग्रे परशे यदि सव पाप तरे
कतेक स्नानेते पुण्य वलिते ना पारि ※ वंशेर उद्धार कर लैया गंगावारि
श्रीहरि वलेन गंगा करह प्रस्थान ※ अविलम्बे मुक्त कर सगर-सन्तान
कहिलेन एत यदि प्रभु जगन्नाथ ※ काँदिया वलेन गंगा प्रभुर साक्षात्
पृथिवीते कत शत आछे पापीगण ※ आसिया आमाते पाप करिवे अर्पण
ताहारा हइया मुक्त जाइवे स्वर्गेते ※ मुक्त हव आमि प्रभु काहार स्पर्शेते
श्रीहरि वलेन यत वैष्णव अखिले ※ ताँहारा करिवे स्नान तोमार सलिले
करि आमि वैष्णवेर संगति वासना ※ वैष्णवेर संगे तुमि हवे पूतमना

---

१ ब्रह्मलोक २ घर के वरतन ३ वंश, पुत्र ।

गंग बोध दै केकी-पंखा[1] ❋ दीन भगीरथ अनुपम शंखा
जेंहि पथ शंखनाद सुत करई ❋ सोइ मारग सलिला[2] अनुसरई
कह विरञ्चि हे पुण्यकुमारा ❋ तव प्रयास त्रैलोक्य उबारा
मम रथ बैठि समर्थ भगीरथ ❋ मारग चलहु बनावत तीरथ
शंखनाद, स्यन्दन जस बढ़ई ❋ तव अनुगमन गंग तस करई
मंदाकिनि सुरलोक प्रवाहू ❋ अमरपुरी-जन अमित उछाहू
करि असनान भानु-कुल-अंसहिं[3] ❋ अछत[4] दूरबा-दल लै पूजहिं
स्वर्गलोक-जन सुरसरि-नामा ❋ मंदाकिनि कहि करहिं प्रनामा

ऐरावत का अहंकार चूर्ण और चार धाराओं में गंगा का मृत्युलोक में आगमन

तजि विधिलोक भगीरथ संगा ❋ पहुँची सैल-मेरु[5] ढिग गंगा
योजन साठि सहस्र उतंगा[6] ❋ सहस बतीस मूल गिरि शृंगा
सुमन धतूर सरिस तेंहि रूपा ❋ ता बिच गह्वर[7] गहन अनूपा
द्वादश बर्ष भ्रमण तहँ कीन्हा ❋ गह्वर-पथ सुरसरि नहिं चीन्हा
अस्तुति करत जोरि जुग पानी ❋ बिलमति कितै गंग महरानी
तव बिन बंस न मोर उधारा[8] ❋ अनुनय करत दिलीप-कुमारा

कहिया गंगाके एइ वाक्य जगत्पति ❋ शङ्ख दिया वलिलेन भगीरथ प्रति
जाह तुमि आगे आगे शङ्ख वाजाइया ❋ जावेन पश्चाते गंगा तोमारे देखिया
विरिञ्च वलेन राजा तुमि पुण्यवान ❋ तोमा हैते तिनलोक पावे परित्राण
आमार ए रथ तुमि लह भगीरथ ❋ चड़िया आगेते तुमि जाह एइ रथ
रथ चड़ि यान आगे शङ्ख वाजाइया ❋ चलिलेन गंगा तार पाछु गोड़ाइया
स्वर्गवासी आसि करे गंगाजले स्नान ❋ भगीरथेर माथाय देय दूर्व्वाधान
आदिकाण्ड कृत्तिवास करिल वाखान ❋ स्वर्गेते गंगार हैल मन्दाकिनी नाम

ऐरावतेर अहंकार चूर्ण ओ चारि धाराय गंगार मर्त्ये आगमन

ब्रह्मलोके ह'ते गंगा आने भगीरथ ❋ आनिया मिलेन गंगा सुमेरु पर्व्वत
सुमेरुर चूड़ा षाटि सहस्र योजन ❋ वत्रिश सहस्र तार गोड़ाय पत्तन
एइ आदि कहिलाम एइ तार मूल ❋ सुमेरु पर्व्वत येन धूतुरार फूल
तार मध्ये आछे एक दारुण गह्वर ❋ भ्रमेन ताहाते गंगा द्वादश वत्सर
गंगार ना पाय देखा नाहि कोन पथ ❋ जोड़हाते स्तुति करे राजा भगीरथ
सुमेरुते हइल तोमार अवतार ❋ ना करिले गंगा मम वंशेर उद्धार

---

१ मयूरपंखधारी भगवान् २ गंगा ३ भानुकुल में उत्पन्न भगीरथ को
४ अक्षत, चावल ५ मेरु पर्वत ६ ऊंचा ७ खोह, विवर ८ उद्धार।

तात सुमेरु पंथ अवरोधा ※ सफल करौं किमि तव अनुरोधा
ऐरावत मतंग जो आवै ※ दन्त चीरि गिरि पंथ बनावै
सोइ निकास मम होय प्रवाहू ※ चले भगीरथ जहँ सुरनाहू

दो० ब्रह्मलोक सों अवतरी, करि पुनीत सुरधाम।
जिमि सुमेरु-गह्वर रुकी, धारा गंग ललाम ॥ ३६ ॥

गाथा सकल इन्द्र सन वरनी ※ केहि विधि प्रगति करै जगतरनी
ऐरावत पठवौ मम संगा ※ पर्वत फोरि देय पथ गंगा
इन्द्रायसु चलि अधिपमतंगा[1] ※ पहुँचेउ जहाँ हेमगिरि शृंगा
अहंकार कुञ्जर[2] मन आवा ※ मलिन भाव तब सुतहिं जनावा
मम ढिग गंग एक निसि बासा ※ तौ गिरि भञ्जि मिटावौं त्रासा
विकल भगीरथ सुनि गजबानी ※ द्रवित नैन काया कुम्हिलानी
मुख न बैन; कित उदधि-मतंगा[3] ※ करुनमई पूछत इमि गंगा
सुरपति दया न संसय माता ※ तदपि गजेन्द्र मलिन जिमि बाता
कही, सो बरनौं किमि, अति हीना ※ सुरसरि बूझि मर्म सब लीना
सुरपुर-सुख उन्माद बिसेसा ※ दन्तीपति सन कहेउ सँदेसा

गंगा वलिलेन शुन बाछा भगीरथ ※ जाब आमि कोन दिके नाहि पाई पथ
ऐरावत हस्ती यदि आनिवारे पार ※ तबे से पर्व्वत हैते पाइ ये निस्तार
ऐरावत पर्व्वत चिरिया देय दाँते ※ तबे त बाहिर हइ आमि सेई पथे
गंगार चरणे राजा करिया प्रणति ※ आरवार गेल यथा देव सुरपति
प्रणाम करिया बन्दे जोड़ करि हात ※ कहिते लागिल कथा इन्द्रेर साक्षात्
ब्रह्मलोक हइते आसिया कोन मते ※ पड़िया आछेन गंगा सुमेरु पर्व्वते
ऐरावत पर्व्वत चिरिया देय दाँते ※ तबे त बाहिर हन गंगा सेइ पथे
लहिल आयसु इन्द्र, गेल ऐरावते ※ आसिया मिलिल सेई सुमेरु पर्व्वते
ऐरावतेर अन्तरे हइल अहङ्कार ※ कहगे गङ्गा के गिया संवाद आमार
गंगा यदि एक रात्रि वञ्चे मम सने ※ अव्याहति दिव तबे वन्धन खण्डने
यखन कहिल एइ कथा ऐरावत ※ म्लान मुखे माथा हेंट करे भगीरथ
मुखे नाहि वाक्य सरे चक्षे बहे जल ※ दुरु दुरु हिया करे अन्तर विकल
दशा देखि दयामयी जिज्ञासेन ताय ※ कि हेतु एमन दशा घटिल तोमाय
पारिले कि ऐरावत आनिते हेथाय ※ कोन दुःखे काँद वापू कह त आमाय
भगीरथ कहे माता करि निवेदन ※ सुरमणि मनवाञ्छा करिल पूरण
ऐरावत ये कहिल आमार गोचरे ※ पुत्र हये जननीरे वलिव कि करे

१ गजपति ऐरावत २ हाथी (ऐरावत) ३ चारो दिशाओं के सागरों के दिग्गजों के शिरोमणि।

साधि लेय मम वेग-तरंगा ※ सात-रैन[1] निबसौं तेंहि संगा
सुनत मोद ऐरावत लीना ※ दन्तप्रहार चारि ढिग[2] कीना
कनकसैल[3] फूटी चौधारा ※ 'भद्रा' नाम उतर[4] पग धारा
'वसु' प्रवही प्राची दिसि सागर ※ पच्छिम जलधि 'श्वेत' लिय डागर[5]
बही अवनि[6] शुचि[7] 'अलकानन्दा' ※ सुत-दिलीप हिय अमित अनन्दा
इत गज विकल प्रवाह प्रचण्डा ※ जल चहुँ भरेउ श्रवण मुख शुण्डा[8]

दो० मातु-मातु कहि, धरनि गिरि, प्रान याचना कीन ।
दलित दर्प इमि दन्तिपति, सुरपुर मारग लीन ।। ३७ ।।

महादेव के द्वारा गंगा का वेग धारण

सहित कुअँर सुरसरि तजि मेरू ※ चलि कैलास वास शिव केरू
गिरि उतंग[9] सों पात-प्रहारा[10] ※ डगमग धरनि सहत नहिं भारा
बिबस बहेउ जलबेग पताला ※ लखि दिलीप-सुत हाल बेहाला
करहु रसातल मातु प्रवेसू ※ बिन गति, पितर सहहिं मम क्लेसू

गंगा वलिलेन तार बुझिलाम तत्त्व ※ राजभोगे ऐरावत हइयाछे मत्त
यद्यपि आड़ाइ ढेउ से सहिते पारे ※ तार घरे सप्त रात्रि रव वल तारे
भगीरथ एइ कथा कहे हस्तीवरे ※ शुनिया गंगार कथा अपना पासरे
चारिखान करिया पर्व्वत चिरे दाँते ※ चारि धारा हैल गंगा सुमेरु कायाते
वसु भद्रा श्वेत आर अलकानन्दा आर ※ पड़िलेन पर्व्वत हइते चारि धार
वसु नामे गंगा हर पूर्व्वेर सागरे ※ भद्रा नामे सुरधुनी चलिला उत्तरे
श्वेत नामे चलिलेन पश्चिम सागरे ※ गेलेन अलकानन्दा पृथिवी उपरे
मारिलेन एक ढेउ ऐरावतोपरे ※ गेल जल नाक मुखे हाँसफाँस करे
मारिलेन आर ढेउ प्राय गत प्राण ※ हस्ती वले गंगामाता कर परित्राण
मा वलिया हस्ती यदि दाँते खड़ करे ※ राखिलेन आर ढेउ पर्व्वत उपरे
ऐरावत पलाइल पाइया तरास ※ आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

महादेव कर्त्तृक गंगार वेग धारण

भगीरथ सुमेरु हइते गंगा निया ※ कैलास पर्व्वते परे मिलिल आसिया
कैलास हइते पड़े पृथिवी उपरे ※ वसुमती तार भारे टलमल करे
वेगवती हये गंगा चले रसातले ※ दाँड़ाइया भगीरथ जोड़ हाते वले
पातालेते हइल तोमार आगुसार ※ केमने हइवे मम वंशेरे उद्धार

---

१ सात रात्रि २ स्थान ३ सुवर्णपर्वत ४ उत्तर दिशा ५ रास्ता ६ पृथ्वी पर ७ पवित्र ८ सँड़ ९ ऊँचे १० धार के प्रपात की चोट ।

जनि मम वेग सकै छिति धारी ❊ सेवहु सुत समरथ त्रिपुरारी
रोपहिं[1] शम्भु जो मम जल-भारा ❊ तव हित अवनि[2] लेहुँ अवतारा
कियेउ भगीरथ गंग प्रनामा ❊ वर्ष अराधन किय शिवधामा
शिव बहोरि पूछत तप-हेता ❊ बरनी बिथा भानु-कुल-केता
सुरसरि-धार सहति नहिं धरनी ❊ नाथ शीश रोपहु जगतरनी
सुनि शिव नाचत पुलकित अंगा ❊ उमा सुनहु जग प्रगटति गंगा
जटाजूट शिरपञ्च कराला ❊ तहँ प्रवही शुचि धार मराला
द्वादश वर्ष न मारग पावा ❊ केस-महेस विपुल भ्रम छावा
कौतुक लखेंउ भानुकुलनन्दन ❊ किय बहोरि गौरीपति-बन्दन
शंकर जटा चीरि पथ दीन्हा ❊ सोइ थल 'हरद्वार' जग चीन्हा
जहँ असनान दान जन करहीं ❊ पुन्य अमित विधि वरनि न सकहीं
विलग धार अेक बही पताला ❊ 'भोगवती' तेहि नाम विशाला

दो० संग भगीरथ पुनि चली, बही त्रिवेनी तीर।
गंगा-यमुना-सरस्वति, संगम जहँ शुचि नीर ॥ ३८ ॥

गंगा बलिलेन बापू शुनह वचन ❊ धरित्री आमार वेग ना सबे कखन
शिव यदि आसिया बहेन जलधार ❊ तबे पारि क्षितिते हइते अवतार
गंगार चरणे पुनः करिया प्रणति ❊ आरबार गेल यथा देव पशुपति
एक वर्ष करिल शिवेर आराधन ❊ बलेन महेश पुनः एले कि कारण
भगीरथ बले गंगा दिल नारायण ❊ पृथिवी धरिते वेग ना पारे कखन
तुमि यदि आसि शिरे धर जलधार ❊ पृथिवीते हय तवे गंगा अवतार
गौरीर सहित तबे नाचे त्रिलोचन ❊ तोमा हैते पाब आजि गंगा दरशन
पातिलेन-पञ्चानन पञ्चशिर सुखे ❊ पतितपावनी गंगा पड़ेन कौतुके
शिवेर माथाय जटा बड़ भयङ्कर ❊ बेड़ान जटार मध्ये द्वादश वत्सर
भगीरथ बलेन मा ए कि व्यवहार ❊ आमार केमने हबे वंशेर उद्धार
गङ्गा बलिलेन वापू शुन भगीरथ ❊ जटा हैते बाहिर हइते नाहि पथ
भोलानाथ बलिया डाकेन जोड़ हाते ❊ ध्यान भंग हइया चाहेन विश्वनाथे
महेश चिरिया जटा दिलेन गंगार ❊ सेइ खाने तीर्थ ये हइल हरिद्वार
जेइ नर स्नान दान करे हरिद्वारे ❊ तार पुण्य सीमा ब्रह्मा कहिते ना पारे
एक धारा गेल गंगा पाताल मण्डले ❊ भोगवती ब'ले नाम हैल रसातले
पश्चाते चलेन गंगा भगीरथ आगे ❊ आसि गंगा मिलिलेन त्रिवेणीर भागे
भगिनि यमुना गंगा आर सरस्वती ❊ नामेते त्रिवेणी तिन धारा युक्तगति

१ रोकें २ पृथ्वी।

तीरथराज प्रयाग सुहावन * मकर-नहान स्वर्ग-पथ पावन
शंख-घोष रविकुल-सुत आगे * बारानसी-भाग पुनि जागे
काशी-थल जहँ शुचि सुरधारा * महिमा चित दै सुनहु अपारा
एक दिवस द्विज बधेउ त्रिलोचन * पातक तासु लखात न मोचन
गौरि गनेश षडानन चिंता * किमि अघ-मुक्त होयँ भगवन्ता
ब्रह्मघात किमि उतरइ माथा * उमा कही शिव सन, हे नाथा !
बिहँसि कहेउ शिव,लखु मन्दाकिनि * बसति अवनि जो पाप-बिनासिनि
उमा, उमापति वृष असवारी * सुरसरि ढिग यातरा[1] सँवारी
कुस परसत सो बिनसेउ पापा * कहत शंभु लखु गंग-प्रतापा
पञ्चकोस सीमित करि धामा * वारानसी छेत्र सरनामा
जहँ तन तजे लहै शिवलोका * मिटैं सकल भव दारुन सोका
दिवस एक तहँ विलम्बि बिरामा * सुरसरि सहित कुँअर तजि धामा
शंखघोष, पुनि पथ गहि लीना * सोइ सुरधुनी[2] अनुगमन कीना
पर्नकुटी बिच-पंथ सुहाई * जहँ तप करत जह्नु मुनिराई
भइ जलमगन कुटी, मुनि ध्याना * भयेउ भंग, किय सुरसरि पाना
तब लौं दीठि भगीरथ डारी * लुप्त गंग, जनि कतौं[3] निहारी

प्रयागे मकरे जेइ नर स्नान करे * मुक्त ह'ये सर्व्वपापे जाय स्वर्गपुरे
भगीरथ आगे जाय शङ्ख वाजाइया * वाराणसी पुरे गंगा उत्तरिल गिया
मन दिया शुन वाराणसीर आख्यान * वाराणसी तीर्थ जाहे हइल निर्म्माण
काटिलेन एक काले हर द्विज माथा * ब्रह्महत्या पाप तार ना हय अन्यथा
चापिलेक ब्रह्महत्या गिरीशेर काँधे * कार्त्तिक गणेश आर कात्यायनी काँदे
गौरी कन केन वा काटिले विप्रमाथा * ब्रह्मवध हइले के करिबे अन्यथा
गौरीर शुनिया कथा शिव हासि भाषे * पृथिवीते गेल गंगा कत पाप नाशे
वृषभे चापिया तबे शङ्करी शंकर * दाँड़ाइल सुरधुनी तीरेते सत्वर
कुशाग्रे करिया हर कैल परशन * ब्रह्महत्या पाप ताँर हैल विमोचन
वलेन धूर्ज्जटी देख परीक्षा गंगार * पञ्च क्रोश युड़ि हर देन गण्डी तार
सेइ पञ्चक्रोश तीर्थ नाम वाराणसी * ताहाते छाड़िले तनु शिवलोके वसि
एक रात्रि गंगा तथा करि अवस्थान * करिलेन भगीरथ सहित प्रस्थान
भगीरथ आगे जान शङ्ख वाजाइया * जह्नुर निकटे गिया मिलिल आसिया
पाता लता कृत जह्नु मुनिर कुटीर * गंगास्रोते भेसे जाय प्लावि दुइ तीर
चक्षु मेलिलेक मुनि भांगिलेक ध्यान * गण्डुष करिया सब जल करे पान
कत दूरे गिया भगीरथ फिरे चाय * कोथा गेल गंगादेवी देखिते ना पाय

---

१ यात्रा २ गंगा ३ किसी भी जगह ।

दो० बट तर जह्नु मुनीस लखि, पूछी अवध नरेस।
कस कौतुक? संसय अतिव, मेटहु मोर कलेस ॥ ३९ ॥

उचित न कँहु बिधि गंग-अचारा[1] ※ नासेउ मम आश्रम निज धारा
सुरसरि पान कीन सोइ कारन ※ लावहु टेरि बिधातहिं राजन्[2]
सुनत महीप व्याप अति त्रासा ※ दोउ कर विनय करत मुनि पासा

काण्डार मुनि का वैकुण्ठगमन

तुम बिधि, बिष्णु, तुमहिं त्रैलोचन ※ तव महिमा-गुन जानत को जन
सगर-तनय जे साठि हजारा ※ कपिल-अनल बिनसे जरि छारा
उदर न मुक्त गंग मुनि करहीं ※ तौ मम पितर न सद्गति लहहीं
ब्रह्मकोप नहिं थिर अतिकाला ※ मुदित जह्नु कह सुनु महिपाला
पुनि मुख निसरि[3] गंगजल आवै ※ तौ उच्छिष्ट ! निरादर पावै
दच्छिन जानु[4] चीरि मुनि ज्ञानी ※ प्रगट कीन इमि सुरसरि रानी
नाम 'जाह्नवी' भगवति लोका ※ लहत हरहिं भव-तन-मन सोका
मुनि काण्डार शापवश जाना ※ नहिं त्रिभुवन पातकी समाना

अकस्मात् गंगादेवी गेल कोन खाने ※ देखे मुनि वटतले वसियाछे ध्याने
जह्नुरे जिज्ञासे भगीरथ जोड़ हात ※ गंगा मोर केवा निल पथे अकस्मात्
बलिलेन मुनि शुन राजा भगीरथ ※ आनिते गंगारे तव नाहि छिल पथ
मम घर भांगे गंगा केमन आचार ※ गिया कह भगीरथ निकटे ब्रह्मार
आनगिया देखि ब्रह्मा मम किवा करे ※ गण्डुष करिया गंगा रेखेछि उदरे
मुनिर वचन शुनि लागिल तरास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

काण्डार मुनिर बैकुण्ठे गमन

जोड़ हाते भगीरथ करेन स्तवन ※ तुमि ब्रह्मा तुमि विष्णु तुमि त्रिलोचन
तोमार महिमा गुण जाने कोनजन ※ मनुष्य शरीरे तव कि जानि स्तवन
सगर राजार षाटि हाजार तनय ※ कपिलेर शापेते हइल भस्ममय
तोमार उदरेते गंगार अवतार ※ आमार वंशेर किसे हइवे उद्धार
ब्राह्मणेर कोप नाहि थाकये कखन ※ कृपाते बलेन तारे जह्नु तपोधन
मुख हइते बाहिर करिले गङ्गाजल ※ उच्छिष्ट बलिया तवे घुपिवे सकल
चिरिल दक्षिण जानु सेइ क्षणे मुनि ※ जानु दिया वाहिर हइल सुरधुनी
छिलेन किञ्चित् काल जह्नुर उदरे ※ जाह्नवी वलिया ख्यात हइल संसारे
गंगामाता शुनि शापभ्रष्ट सेइ खाने ※ उत्तर वाहिनी हैया जान सेइ खाने

१ आचरण, २ यह व्यंग्य है ३ निकलकर ४ जाँघ।

बसत पाप-रत गनिका-धामा ❋ मोह-काम कर फन्द ललामा
कानन काठ लेन सो गयऊ ❋ तहँ मुनि-प्रान व्याघ्र हरि लयऊ
लै यमदूत चले यमलोका ❋ मांसपिण्ड केहरि[1] अवलोका[2]
अस्थि अरण्य[3] शेष जहँ डारी ❋ तहाँ उतर दिसि गंग पधारी
पुन्य सलिल वन कियेउ प्रकासा ❋ उड़ेउ अस्थि लै काक अकासा

दो० निरखि चील्ह अेक लोभबस, अभिरी[4] वायस[5] संग ।
अस्थि हेत सुरसरि उपर, जूझत दुहू विहंग ॥ ४० ॥

तजी अस्थि वायस भय पाई ❋ दैव-योग सुरधुनी[6] समाई
परसत जल काण्डार अपावन ❋ चौभुजरूप भयेउ सो पावन
गयेउ लोक जहँ हरि अभिरामा ❋ यमकिंकर[7] भाजे यमधामा
रोय कथा यमराज बुझाई ❋ मुनि पातकी बन्दि जिमि लाई
तासु पापमय जीवन वरना ❋ लहेउ अन्त सो किमि हरि-चरना
दुसह लाज ! नहिं काज हमारा ❋ सुनि यम चकित स्वर्ग पग धारा
गहि पदपंकज-विष्णु पुनीता ❋ यम वरनी जिमि भई अनीता[8]
कानडार पातकी अपावन ❋ अधम विदित सो,जग मनभावन !

काण्डार नामेते मुनि छिल एक जन ❋ तार तुल्य पापी नाइ ए तिन भुवन
जन्मावधि सेइ मुनि वेश्या सेवा करे ❋ तार वशीभूता हैया थाके तार घरे
काष्ठ काटिवारे गियाछिल से कानन ❋ धरिया व्याघ्रेते तार बधिल जीवन
यमदूत आसि तारे करिया बन्धन ❋ लइया चलिल तारे यमेर भवन
व्याघ्रेते सकल मांस गेल त खाइया ❋ वनेर मध्येते अस्थि रहिल पड़िया
काकेते लइया जाय गंगा मध्य दिया ❋ हेन काले सञ्चान से काकेरे देखिया
जाय पक्षी महावेगे काके खेदाइया ❋ गंगा दिया जाय काक भये पलाइया
दुइजने तारा तथा जड़ाजड़ि करे ❋ दैवयोगे अस्थि सेइ गंगा नीरे पड़े
करिल यखन अस्थि गंगा परशन ❋ चतुर्भुज हइया से चलिल व्राह्मण
हेन काले नारायण वैकुण्ठे थाकिया ❋ काड़िया निलेन यमदूतेरे मारिया
काँदिते काँदिते सब यमेर किङ्कर ❋ जिज्ञासा करिते गेल यमेर गोचर
विषय छाड़िनु प्रभु आर नाहि काज ❋ आजि वड़ यमराज पाइलाम लाज
काण्डार नामेते पापी त्रिभुवने जाने ❋ वैकुण्ठे ताहारे हरि निलेन कि ज्ञाने
यमराज रोषे शुनि दूत याहा भाषे ❋ जिज्ञासा करिते गेल श्रीहरिर पाशे
काँदिते लागिल यम धरि प्रभु पाय ❋ विषय छाड़िनु नाहि विषयेर दाय

१ सिंह २ देखा ३ वन ४ गुँथ गयी ५ कौआ ६ गंगा में ७ यम के दूत
८ नीति के विरुद्ध, अन्याय ।

पापिन पर यम-चिरअधिकारू ※ प्रभु छीनेउ सो किमि अविचारू
पाप-पुन्य कर एकहि भोगू ※ तौ यम-शासन कर कित योगू?
हँसि हरि कही सुनहु यमराया ※ रहत गंग किमि पातक-छाया ?
महिमा अकथ अमित शुचि धारा ※ जतक[1] दूर ताकर विस्तारा
दण्डपाणि कह, बस नसि जाई ※ जाहु समीप न, मोर दुहाई
करि शवदाह अस्थि जल-शयना ※ चौभुज जीव लहै मम अयना[2]
बसै तीर गंगोदक पाना ※ प्रानो सो मम रूप समाना
बरजौ दूत, न पग तहँ डारैं ※ ते मम जन, मम आन[3] विचारैं
दो० यम-प्रबोध इमि, उत सुखद, महिमा जासु अपार
गौड़ देश पावन करत, बही गंग शुचि धार ॥ ४१ ॥

सगर-वंश उद्धार

पूरुब जात 'पद्म' मुनिनाथा ※ भागीरथी चलीं तिन साथा
मम अकाज पूरुब दिसि जाये ※ विनय भगीरथ मातु सुनाये
चली फेरि शुचि प्रबल तरंगा ※ भागीरथी भगीरथ संगा
बही धार इक तजि जग-तरनी[4] ※ पद्मावती[5] पद्म[6] अनुसरनी

पापीर उपरे मोर चिर अधिकार ※ आजि केन ताहार हइल अविचार
काण्डार ब्राह्मण पापी विदित संसारे ※ आनिलेन कोन गुणे बैकुण्ठे ताहारे
शुनिया यमेर कथा हरि हासि कय ※ गंगा यथा तथा कभु पाप नाहि रय
गंगार महिमा कत कि वलिते जानि ※ मन दिया शुन तबे कहि दण्डपाणि
यत दूरे जाइवेक गंगार वातास[7] ※ आमार दोहाई यदि जाओ तार पाश
पुड़े मरे अस्थि लैया फेले गंगोदके ※ चतुर्भुज हैया सेत' आसिवे गोलोके
गंगातीरे थाकि गंगाजल करे पान ※ से शरीर जान तुमि आमार समान
निषेध करह यत दूतेरे तोमार ※ यदि जाओ सेइ स्थाने दोहाइ आमार
शुनिया प्रभुर कथा शमनेर त्रास ※ आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

सगरवंश-उद्धार

काण्डारेर प्रति गंगा मुक्तिपद दिया ※ गौड़ेर निकटे गंगा मिलिल आसिया
पद्म नामे एक मुनि पूर्व्वमुखे जाय ※ भगीरथ भावि गगा पश्चात् गोड़ाय
जोड़हात करिया वलेन भगीरथ ※ पूर्व्व दिक जाइते आमार नाहि पथ
पद्ममुनि लये गेल नाम पद्मावती ※ भगीरथ सङ्केते चलिल भागीरथी

१ जितनी २ धाम ३ मर्यादा, लीक ४ गंगा ५ बंगाल में प्रसिद्ध नदी
६ पद्म मुनि ७ वायु ।

गंग दीन पछिहि पुनि शापा ❊ तासु-नीर जनि मेटइ पापा
प्रथम कछुक पुनि भैरव[1] वाहिनि ❊ पुनि भई मातु उदधि-अनुगामिनि
मंदाकिनि कर दरस पुनीता ❊ करैं शंखध्वनि देव सप्रीता
शंखघोष, मज्जन जे करहीं ❊ अयुत वर्ष सुरपुर नर लहहीं
कीन्ह समोद इन्द्र असनाना ❊ इन्द्रेश्वर† प्रसिद्ध अस्थाना
इन्द्रेश्वर जो घाट सुपावन ❊ स्वर्गदैन सब पाप नसावन
द्रुतगति[2] चली सरित[3] जगमाया ❊ 'मेढ़ा' चढ़ि भेंटे द्विजराया
मेड़ातला† नाम सोइ कारन ❊ थल प्रसिद्ध पातकी उबारन
मुदित महीप चले कछु आगे ❊ भाग तबै 'नदिया'[4] के जागे
सप्तद्वीप† बिच श्रेष्ठ सुठामा ❊ नवद्वीप† सुरसरि विश्रामा
रैन निवसि पुनि सप्तग्रामा† ❊ पहुँची शुचि प्रयाग सम धामा
दछिन महेश† गंग पगु धारा ❊ परसत अगनित घाट-विहारा

दो० तव संगति कत[5] वर्ष गत, कतक[6] दूर तव देश ।
कहहु भगीरथ भसम कहँ, सन्तति-सगरनरेस ? ॥ ४२ ॥

शापवाणी सुरधुनी दिलेन पश्चारे ❊ मुक्ति केह तव नीरे पाबे ना संसारे
एक बार गेल गङ्गा भैरववाहिनी ❊ आरबार फिरिलेन सागरगामिनी
अजय गंगार जल हइल दर्शन ❊ शंखध्वनि करेन यतेक देवगण
शंखध्वनि घटे येवा नर स्नान करे ❊ अयुत वत्सर सेइ थाके स्वर्गघरे
गंगा लये भगीरथ चलिल सत्वर ❊ निमिषेते आइलेन नाम इन्द्रेश्वर
गंगाजले यथा इन्द्र करिलेन स्नान ❊ इन्द्रेश्वर वलि नाम हइल से स्थान
इन्द्रेश्वर घाटे येवा नर स्नान करे ❊ सर्व्वपापे मुक्त हये जाय स्वर्गपुरे
चलिलेन गंगा माता करि वड़ त्वरा ❊ मेड़ातला नाम स्थाने यान सरिद्वरा
मेड़ाय चड़िया वृद्ध आइल ब्राह्मण ❊ मेड़ातला वलि नाम एइ से कारण
गंगारे लइया जान आनन्दित हैया ❊ आसिया मिलिला गंगा तीर्थ जे नदीया
सप्तद्वीप मध्ये सार नवद्वीप ग्राम ❊ एक रात्रि गंगा तथा करिल विश्राम
रथे चड़ि भगीरथ यान आगुयान ❊ आसिया मिलिल गंगा सप्तग्राम स्थान
सप्तग्राम तीर्थ जान प्रयाग समान ❊ सेखान हइते गंगा करेन प्रयाण
आकना महेश गंगा दक्षिण करिया ❊ विहारोदेर घाटे गंगा उत्तरिल गिया
गंगा वलिलेन वापू शुन भगीरथ ❊ कत दूरे तोमार देशेर आछे पथ
भ्रमितेछि कत वर्ष तोमार संहति ❊ कोथा आछे भस्ममय सगर-सन्तति

---

१ एक पवित्र स्थान २ तीव्र गति से ३ सरिता, नदीप ४ नवद्वी ५ कितने ६ कितनी । † चिह्नित स्थान बंगाल के भगीरथी तट पर स्थित पुनीत स्थानो के नाम हैं।

दछिन-पुरुब बिच देश सुहावन * जहाँ कपिल मुनि आश्रम पावन
भस्म-पितर मम तहँ अनुमाना * जननी-कथन सुनेउँ अस काना
सुनत शतमुखी होइ सुरधारा * बही, क्षार जहँ सगर-कुमारा
परसि गंग चौभुज तनु पाये * सगर-तनय सुरपुरहिं सिधाये
बसेउ सुवन इक जल-अधिकारी * शेष धाम-हरि मंगलकारी
निरखु भगीरथ! प्रवर[1] तिहारे * सकल मुक्त, सुरधाम सिधारे
बंस-मुक्ति धनि सफल मनोरथ * प्रनवति पुनि पुनि गंग भगीरथ
जाहु देस सुत बंस-उजागर * मैं अब मिलौं भेंटि उर सागर
'गंगासागर' तीर्थ महाना * संगम करहिं दान असनाना
अमित पुन्य, पातक सब छीना * लहहिं स्वर्ग हरिपद आधीना
सुरसरि अवनि[2] भगीरथ लाई * मुक्ति-दैनि जग पाप नसाई

गंगा-प्रार्थना

आई सुचि[3] सलिल मातु सन्तन सुखकारी ।।
सुरधुनी गंगा नाम, प्रगटी सो धरा धाम,
तीनि भुवन-जासु नाम, मंगल जयकारी ।। आई० ।।
सुरनर मुनि तारिनि जो, पाप ताप हारिनि जो,
संकट निवारिनि जो, कलियुग अवतारी ।। आई० ।।

भगीरथ वले पड़े मने ये आमार * पूर्व्व ओ दक्षिण दिक मध्यस्थाने तार
जेइखाने आछिल कपिल महामुनि * सेइ खाने मम वंश मातृ मुखे शुनि
एइ कथा येखाने गंगारे राजा वले * हइलेन शतमुखी गंगा सेइ स्थले
आछिल सगर-वंश भस्मराशि हैया * वैकुण्ठे चलिल सवे गंगाजल पाइया
एक जन रहिल जलेर अधिकारी * आर सब गेल स्वर्गे चतुर्भुजधारी
हस्त तुलि गंगा भगीरथेरे देखान * ओई तव वंश देख स्वर्गवासे यान
वंश मुक्ति हइल देखिया भगीरथ * गंगा ते प्रणाम करि पूर्ण मनोरथ
गंगा वले देशे जाओ राजार नन्दन * सागरेर संगे आमि करिवे मिलन
महातीर्थ हइल से सागर संगम * ताहाते यतेक पुण्य नाहि व्यतिक्रम
गंगासागरे ये नर करे स्नान दान * सर्व्वपापे मुक्त ह'ये स्वर्गे पाय स्थान
गंगा आनि लोक मुक्त कैल भगीरथ * कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व महत्

गंगार महिमा

सुरधुनी गंगा नामे, आइलेन धरा धामे, ए तिन भुवने प्रतिकार ।
सुर नर निस्तारिणी, पाप ताप निवारिणी, कलियुगे हन अवतार ।।

१ पूर्वज (सगरनन्दन) २ पृथ्वी पर ३ पवित्र ।

धन्य धन्य बसुन्धरी, सुरसरि नित जहाँ सरी,
धनि धनि हे क्षेमकरी, भव-तम उजियारी ।। आई० ।।
योजन शत पूत[1] धार, गंगे, गंगे पुकार,
दरसि परसि पुन्यवारि, सुरपुर अधिकारी ।। आई० ।।
कूजत तहँ पच्छिवृन्द, वरनौं किमि सो अनन्द,
बिलसत फल-फूल-कंद, पियत सुधा वारी ।। आई० ।।
भूपन के जे भुआल, बाँधे कुञ्जर[2] विसाल,
तेऊ लखि हैं निहाल, खगन मोद भारी ।। आई० ।।
सेतुबंध, नीलाचल, द्वारिका, वदरिका थल,
कासी, मथुरादि विमल नगरी सुचि सारी ।। आई० ।।
तीरथ मनभावन जे, विष्णु सरिस पावन जे,
अति महान ताहू ते सुरसरि महतारी ।। आई० ।।

सौदास राजा का आख्यान

दो० बीते वर्ष सहस्र सठ, सुरसरि लाये भूप ।
पहुँचि अवध पुनि प्रजागन, पालत सुत अनुरूप ।। ४३ ।।

लहि 'सौदास' जनम युवराजू ✻ मुदित नृपति सह अवध समाजू
सासन सौंपि सुवन नृप धीरा ✻ बसे भगीरथ सुरसरि तीरा
बीते दिवस, काटि भवफंदा ✻ लहेउ सरित-तट मुकुति अनन्दा

धन्य धन्य बसुमती, याहाते गंगार गति, धन्य धन्य कलियुग सार ।
शतेक योजन थाके, गंगा गंगा वलि डाके, शुने यमे लागे चमत्कार ।
पक्षिगण थाके यत, गंगातीरे कव कत, करे सदा गंगाजल पान ।
दूरे राज चक्रवर्त्ती, यार आछे कोटी हस्ती, सेइ नहे पक्षीर समान ।।
काशी गया नीलाचल, द्वारका मथुरा स्थल, रामेश्वर बदरिकाश्रम ।
ए सव यतेक तीर्थ, विष्णुर सम महत्त्व, सर्व्व तीर्थ गंगा सर्वोत्तम ।।

सौदास राजार उपाख्यान

गंगाहेतु गेल षाटि हाजार वत्सर ✻ पुनर्व्वार गेल राजा अयोध्या नगर
राजा हैया करिलेन प्रजार पालन ✻ हइल सौदास नामे ताहार नन्दन
अयोध्याते करिलेन राजत्व सौदास ✻ भगीरथ करिलेन गङ्गातीरे वास
किछु काल भगीरथ भागीरथी तटे ✻ थाकिलेन मुक्त ह'ये संसार सङ्कटे

१ पवित्र २ हाथी ।

करि सौदास श्राद्ध पितु तर्पन ※ बहु बिधि दान द्विजन करि अर्पन
पावन चरित तासु सुनि ध्याना ※ तन सुचि होइ, मिटहिं अघ[1] नाना
दिवस एक मृगया[2] कर साजा ※ हेरत चहुँ वन-वन मृग राजा
दनुज एक तहँ भामिनि साथा ※ उतरेउ जहाँ भानुकुल नाथा
तजि निसिचर-तन व्याघ्र सरूपा ※ करत केलि तहँ माया रूपा
लखि सार्दूल[3] हनेउ नृप बाना ※ मुग्धकाल पसु त्यागेउ प्राना
हनेउ केलि-रत पति, केहि दोषा ※ विकल कहेउ निसिचरी सरोषा
दारुन कोप ब्रह्म कर शापा ※ परहु फन्द भुगतहु नृप ! पापा
करि कुभाष निसिचरी सिधारी ※ चले नगर तन भूप दुखारी
गुरु प्रिय परिजन सुहृद बुलाई ※ मुनि बशिष्ठ सन कथा सुनाई
अश्वमेध नर पातक मोचन ※ शास्त्र वचन इमि कहत तपोधन
सोइ सौदास याग संपन्ना ※ सुरभि दान वसनादिक अन्ना
द्विज गृह गमन, तोष भूपाला ※ इत चिन्तित निसिचरी कराला

दो० वचन अकारथ मोर कस, तजेउ दानवी रूप ।
पुनि बशिष्ठ सम रूप धरि, प्रगटी सम्मुख भूप ।। ४४ ।।

करिलेन राजार श्राद्धतर्पण सौदास ※ ब्राह्मणेरे दिल दान यत यार आश
मन दिया शुन राजा सौदास चरित्र ※ शुनिले ये पापक्षय शरीर पवित्र
एक दिन गेल राजा मृगया कारण ※ मृग लागि फिरे राजा घुरे सारा वन
आइल राक्षस एक संगे जाया निया ※ सौदासेर काछे उत्तरिल से आसिया
छाड़िया राक्षसरूप व्याघ्ररूप धरे ※ दुइ जने प्रभासेर तीरे केलि करे
हेन काले सौदास से शार्दूल देखिया ※ श्रृंगारेर काले तीरे मारिल विन्धिया
सेइ काले राक्षसी राजार प्रति कय ※ विना दोषे स्वामी मार श्रृंगार समय
परिणामे जानिबे हइवे यत पाप ※ महापाप भुञ्जिबे हइवे ब्रह्मशाप
एतेक वलिया ये राक्षसी गेल वन ※ मनोदुःखे घरे राजा करिल गमन
पात्रमित्रगणे राजा करिल आह्वान ※ बशिष्ठ मुनिरे आगे करिल सम्मान
मुनिरे कहिल राजा सब विवरण ※ एइ पाप केमने हइवे विमोचन
पुरोहित बशिष्ठ अनुज्ञा प्रमाणे ※ अश्वमेध करिलेन शास्त्रेर विधाने
यज्ञ पूर्ण दिल राजा दक्षिणा यखन ※ विदाय हइया तवे गेल सर्व्वजन
हेन काले से राक्षसी भावे मने मन ※ मम वाक्य व्यर्थ हबे जानिल कारण
आपन राक्षसरूप दूरे तेयागिया ※ वशिष्ठ मुनिर रूप धरिया आसिया

१ पातक २ शिकार ३ सिंह ।

सामिष[1] नृपति! करावहु भोजन ※ मुनि-आयसु सुनि कहेउ यशोधन
अर्जित[2] अश्वमांस मन लावहु ※ करि असनान-ध्यान गुरु आवहु
तौलौं तासु रुचिर परिपाका ※ होइ, कहत रवि-वंश-पताका
तजि निशिचरी छद्म गुरु-वेषा ※ पुनि गृहपाक[3] विप्र धरि वेषा
भूपति अबुध, दनुजि छल कीन्हा ※ रंधि[4] मांस-मानव धरि दीन्हा
इत, नृप गुरु सन्मानि बुलावा ※ छल न ज्ञात, दोउ परे भुलावा
परसि मांस-मानुष विष बोई ※ मायाविनी लोप भइ सोई
लखि उपहास मुनिहिं संतापा ※ होहु ब्रह्मराकस दिय शापा
मैं निर्दोष शाप किमि दीन्हा ※ लै जल मुनिहिं भस्म चह कीन्हा
धरत ध्यान मुनि कौतुक जाना ※ जिमि निसिचरी रचेउ छल नाना
इत सौदास-रानि दमयंती ※ नृपहिं निषेध कीन सतवंती
उदय दनुज-बध-फल शुभकेतू ※ तजहु न शाप-नीर गुरु-हेतू
क्रोध शमन, सोचत मन राऊ ※ अभिमंत्रित जल अमिट प्रभाऊ
सुरपुर नीर तजे सुर-त्रासा ※ नागलोक तजि नाग-विनासा

सौदास राजार काछे कहिल वचन ※ मोरे मांस भोजन कराओ यशोधन
राजा बले अश्व मांस करि आहरण ※ खाइवारे सेइ मांस गेल तव मन
स्नान सध्या करिया आइस महामुनि ※ एइ मांस कराइव रन्धन एखनि
बशिष्ठेर रूप से दुरे ते तेयागिया ※ पाचक विप्रेर वेश धरिया आसिया
मनुष्येर मांस लैया करिल रन्धन ※ वशिष्ठके डाके राजा करिते भोजन
यजमान वाक्य मुनि लङ्घिते ना पारे ※ हइलेन उपस्थित रन्धन आगारे
वसिलेन मुनि तबे करिते भोजन ※ राक्षसी मनुष्य मांस दिल ततक्षण
थाल कोले थुइया राक्षसी गेल घरे ※ देखिया मुनिर क्रोध बाड़िल अन्तरे
मनुष्येर मांस दिया कर उपहास ※ तुमि ब्रह्मराक्षस ये हओ हे सौदास
एत यदि श्री वशिष्ठ मुनि शाप दिल ※ मुनिरे शापिते राजा हाते जल निल
नहि आमि दोपी शाप दिला अकारणे ※ एइ जले भस्म करि पोड़ाव एक्षणे
राक्षसी राजार शाप शुनिया तखनि ※ घर हैते पलाइल चलिल आपनि
ध्यान करि जानिल वशिष्ठ तपोधन ※ राक्षसी आसिया मांस मागिल भोजन
मुनिके दिवारे शाप राजा जल निल ※ तारे दमयन्ती नारी निषेध करिल
क्रोध सम्बरिया राजा भावे मने मन ※ कोन स्थाने एइ जल थुइव एखन
स्वर्गे यदि थुइ तबे मरे देवगण ※ यदि फेलि नागपुरे नागेर मरण

---

१ मांसयुक्त २ (अश्वमेध यज्ञ द्वारा) प्राप्त किया हुआ ३ रसोई में ४ पकाकर।

शस्य[1] नष्ट छिति, नृप भय पाये * निज पद जल तजि पाँव जराये
युगुल पाँव भूपति निज जारे * जग कल्माषपाद विस्तारे

सो० पूछत बिकल नरेस, बहुरि धाय गुरुचरन धरि ।
ब्रह्मराकसी वेस, तजि कब लौं पावहुँ मुकुति ।। ४५ ।।

कह बशिष्ठ नृपवर धरु धीरा * ग्यारह वर्ष विगत गत पीरा
दरस गंग पावहु तेहि काला * मिटहि शाप तजु योनि कराला
ब्रह्मराकछस भयेउ नरेसा * द्विजन भच्छि भरमत दिग्देसा
शाप-अवधि बीती जेहि काला * बिन अहार दिन तीनि भुआला
सिथिल,बिलमि[2] जहँ सुथल 'प्रभासा' * बिटप मूल किय कछुक निवासा
क्षुधित[3] भूप तहँ लखेउ सुपासा * तेहि तरु ब्रह्म-दैत्य कर वासा
पूँछत दैत्य कवन तैं प्रानी * कस मम बिटप वास अज्ञानी
क्षुधा ज्वाल अति उदर कराला * भच्छहुँ तोहि इमि कहेउ भुआला
राकस-दैत्य युगुल भटभेरा[4] * मल्लयुद्ध षट मास घनेरा
कोउ न न्यून, नहिं मानत हारी * पुनि भे सुहृद दोऊ तजि रारी[5]
सखा सुनहु, कह दैत्य सप्रीता * मम वरदत्त सुनाम अतीता[6]

पृथिवी ते फेलिले शस्य सब जाय * सेइ जल फेले राजा आपनार पाय
राजार पुड़िये गेल दुखानि चरण * राजार कल्माषपाद नाम से कारण
वशिष्ठ बलेन शाप दिनु नृपवर * राक्षस हइया थाक एगारे वत्सर
लोटाय धरिया राजा वशिष्ठ चरण * कत दिने हबे मम शाप विमोचन
मुनि वले पाबे जबे गंगा दरशन * तबेइ तोमार पाप हइवे मोचन
सौदास भूपति ब्रह्मराक्षस हइया * देशे देशे नित्य फिरे ब्राह्मणे खाइया
एगार वत्सर पूर्ण हइल यखन * तिन दिन आहार ना मिलिल तखन
उत्तरिल गिया राजा प्रभासेर कूले * श्रमयुक्त हइया वसिल वृक्षमूले
क्षुधाय अज्ञान राजा वृक्ष ये ने पारे * एक ब्रह्मदैत्य आछे सेइ वृक्षडाले
ब्रह्मदैत्य बले ओहे तुमि केन हेथा * मम स्थान तुमि निले आमि जाव कोथा
शुनिया ताहार कथा सौदास हासिल * ब्रह्मदैत्य देखि एटा खाइते आइल
ब्रह्मदैत्य राक्षसे विवाद दुइजने * छय मास मल्लयुद्ध करिछे एमने
दुइजन युद्धे सम न्यून नहे केह * मित्रता करिया परस्पर करे स्नेह
सर्व्व दुःख दुइजन करेन प्रकाश * वशिष्ठ शापिल मोरे बलेन सौदास
ब्रह्मदैत्य बले मित्र शुन विवरण * वरदत्ता नामे आमि छिलाम ब्राह्मण

१ धान्य, फ़सल २ ठहरकर ३ भूखा ४ झुरमुट, गुत्थम-गुत्था ५ युद्ध
६ शापवश ब्रह्मदैत्य होने से पूर्व का मेरा नाम 'वरदत्त' था ।

गुरुगृह वेद पढ़ेउँ बहु काला ※ तासु दच्छिना वचन न पाला
लखि उपहास, शाप गुरु दीना ※ दिय मोंहि ब्रह्मदैत्य गति हीना
पुनि गुरुद्रवित[1] कहेउ, द्विजनन्दन! ※ परसि गंग कटिहैं तव बन्धन
भयेउ चेत, भल कह सौदासा ※ चलहिं सखा दोउ गंग निवासा

दो० मंदाकिनि असनान करि, गंगकलश धरि सीस।
तेंहि मारग आवत लखे, भार्गव महामुनीस ॥ ४६ ॥

मुनिवर! दै कछु सुरसरि-वारी[2] ※ दया करहु दोउ शाप निवारी
बिन जल-अर्घ प्रथम शिवशीसा ※ इतर हेतु किमि? कहत मुनीसा
आदि न शेष, तासु सम रूपा ※ गंग-सलिल सब भाँति अनूपा
अनुचित मुनि,न सोह यह बानी ※ भार्गव सुनत कथा सब जानी
चीन्हेउ नृपति भगीरथ-नन्दन ※ कुश सन कीन्ह गंग जल सरसन
विगत पाप तजि अधम सरीरा ※ निज-निज पंथ चले तजि पीरा
लहेउ स्वर्ग पुनि गंग प्रभावा ※ कृत्तिवास जस विमल सुनावा

दिलीप का अश्वमेध यज्ञ

नृप सौदास वास सुरधामा ※ तनय 'सुदास' तासु कर नामा

बहुकाल वेद पड़िलाम गुरुवासे ※ चाहिला-दक्षिणा गुरु आमार सकाशे
करिलाम उपहास गुरुर वचने ※ गुरु वले ब्रह्मदैत्य हओ एइ क्षणे
यखन गंगार जल पावे दरशन ※ तखन पाइले मुक्ति ब्राह्मण नन्दन
सौदास वलेन मित्र चिताइले मोरे ※ तेंइ से गंगार तत्व दुइजने करे
गंगा स्नान करि यान भार्गव महर्षि ※ माथाय करिया गंगाजलेर कलसी
हेन काले दोंहे वले आगुलिया ताय ※ गंगाजल विन्दुमात्र दाओ दुजनाय
लागिलेन कहिते भार्गव तपोधन ※ अग्रभागशिवेर ता दिव ना कखन
दोंहे कहे मुनि तव नाहि विद्यालेश ※ गंगाजले नाहि हय अग्र अवशेष
जानिलेन तखन भार्गव तपोधन ※ महाजन वटे भगीरथेर नन्दन
कुशाग्र करिया गंगाजल दिल ताय ※ ब्रह्महत्या आदि पाप एड़िया पलाय
छिलेन सौदास ब्रह्मराक्षस हइया ※ वैकुण्ठे चलिया गेल गंगाजल पाइया
ब्रह्मदैत्य आर ब्रह्मराक्षस सत्वरे ※ दुइ जने मुक्ति हैया गेल निजघरे
गंगार महिमा कथा अनन्ता ये गुनि ※ आदिकाण्ड रचे कृत्तिवास महागुनि

दिलीपेर अश्वमेध यज्ञ

सौदास गेलेन आयु शेषे स्वर्गस्थले ※ हइलेन सुदास भूपति भूमण्डले

---

१ दया से पिघलकर २ गंगाजल।

विपुल वर्ष सासन सुखदाई * सुत 'दिलीप' सासन पुनि पाई
'रघु' पुनि तनय दिलीप[1] प्रकासा * सुत सम पालि प्रजा दुख नासा
'रघु' बल-विक्रम अतुल बखाना * जनक[2] सरिस विक्रम बलवाना
रघु-बल अतुल निरखि नरनाहा * अश्वमेध कर उठेउ उछाहा[3]
छाँड़ेउ यज्ञ-तुरंग महीपा * जहँ-तहँ जात, सुदूर, समीपा
तुरग[4] जीति लौटइ दिग्देसा * सफल याग तब, कहत नरेसा
रघु युवराज दिलीप प्रनामी * सुभटन सहित बाजि[4] अनुगामी
सफल याग, सुरपुर अधिकारी * होय दिलीप दुखित असुरारी[5]

दो० हे विरञ्चि! कस करिय? विधि कहेउ, अश्व हरि लेहु।
विफल दिलीप-उछाहु करि, सुरपति! आनँद लेहु ॥ ४७ ॥

मध्य दिवस तम निसि सम छावा * अवसर तकि हय[4] इन्द्र चुरावा
कटक न तुरग[6], सोच उर अन्तर * हरेउ अवसि मम बाजि[6] पुरंदर
वत्सर दस, लघु नवल किशोरा * मुदित, हेलि[7] रघु सुरपुर ओरा
सहस तुरंग पवन-गति धावन * रघु-रथ निमिष[8] जहाँ सहसानन

सुदास करेन राज्य अनेक वत्सर * दिलीप हइल राजा राज्येर उपर
दिलीपेर नन्दन हइल रघुराजा * पुत्रेर समान पाले पृथिवीर प्रजा
एकेन दिलीप राजा महाबलवान * तद्रूप हइल पुत्र पितार समान
पुत्रेर विक्रम देखि भावे मने मन * अश्वमेध यज्ञ करिलेन आरम्भन
घोड़ा राखिवारे नियोजिलेन रघुरे * येखाने सेखाने जाबे निकटे कि दूरे
घोड़ा दिया दिलीप कहिल तार ठाँइ * यज्ञ पूर्ण काले जेन एइ घोड़ा पाइ
घोड़ा राखिवारे रघु करिल पयान * सङ्गेते चलिल तुल्य योद्धा वलवान
महेन्द्र बलेन ब्रह्मा कोन वुद्धि करि * अश्वमेध करि राजा लवे स्वर्गपुरी
किसे निवारण हय वल कृपा करि * विरिञ्चि बलेन तार घोड़ा लओ हरि
अश्व विना राजा यज्ञ करिते ना पारे * चलिलेन इन्द्र घोड़ा चुरि करिवारे
द्वितीय प्रहर दिवा अन्धकार करि * लइलेन देवराज यज्ञ अश्व हरि
घोड़ा हाराइया भावे दिलीपनन्दन * इन्द्र बिना घोड़ा मोर लवे कोन जन
नय वत्सरेर शिशु पड़ियाछे दशे * इन्द्रेर उपर रथ चालाय हरषे
सहस्र घोड़ाय वहे स्वर्ग रथखान * पलके प्रवेशे गिया इन्द्र विद्यमान

---

१ सूर्यवंश की एक ही परंपरा में भगीरथ के पिता और उन्हीं भगीरथ के प्रपौत्र, दोनों का नाम 'दिलीप' कृत्तिवासी रामायण मे उल्लिखित है, जो कुतूहलजनक है। मालूम नहीं किसी पुराण में ऐसा ही वर्णन है, अथवा सन्त कृत्तिवास के वाद यह लिखने-छपने की भूल है ! २ पिता ३ उत्साह ४ घोड़ा ५ असुरों के शत्रु इन्द्र ६ (यज्ञ का) घोड़ा ७ धावा मार के ८ पलमात्र मे।

कितै इन्द्र ? रघु गर्जन करई ❋ कुसल तासु लखि आजु न परई
मारु-मारु हुंकरत कुमारा ❋ चढ़ि गजेन्द्र सुरपति पग डारा
रघु तन हेरि कहेउ कटु बानी ❋ मरन हेतु तव मति बौरानी
माछी[1] मेरु-भार किमि सहई ❋ बाँधि कण्ठ घट सागर तरई
धार कृपान दरस कहँ कीन्हा ❋ वालक-हठ मोसन रन लीन्हा
मैं अजान-रन, कह रघुवीरा ❋ तव बल-बुद्धि लखौं रनधीरा
मैं वालक तैं बीर पुरन्दर ❋ सम्हरि आजु मोसन करु संगर[2]
बान तीन रघु, तकि हिय मारे ❋ सह-कुन्जर सुरपति तिन टारे
चकित इन्द्र भल भेटेउँ वालक ❋ अगिनि कराल तजत सर घालक
सर दस तजेउ इन्द्र कोदण्डा[3] ❋ रघु सायक तिन बीचहिं खण्डा
बान अगाध वृष्टि दोउ करहीं ❋ कोउ न न्यून अविरल[4] दोउ लरहीं
रघु पशुपति पुनि अस्त्र चलाई ❋ विवस कीन्ह बाँधे सुरराई

दो० गिरे धरनि गजपति सहित, रघु बाँधेउ सुरनाथ।
लै तुरंग पहुँचे अवध, पितु पद नायेउ माथ ॥ ४८ ॥

सप्त दिवस तहँ बन्दि पुरन्दर ❋ लखि आकुल सुरगन उर अन्तर
सुरगण तब अतिसय अकुलाये ❋ सहित विरंचि अवधपुर आये

कोथा इन्द्र वलि रघु घन छाड़े डाक ❋ आजि इन्द्र तोमा प्रति घटिल विपाक
मार-मार वलि रघु डाकिते लागिल ❋ इन्द्र ऐरावते चड़ि वाहिर हइल
रघुरे देखिया इन्द्र कहे कटु भाषे ❋ मरिवार निमित्त आइले स्वर्गवासे
माछि हइया सहिवे कि पर्व्वतेर भार ❋ गलाय कलसी वान्धि सागरे साँतार
शाणित क्षरेर धार केवा सह्य करे ❋ वालक हइया आइस आमार उपरे
रघु वले गर्व्व कर नाहि जान रण ❋ यार यत वल वुद्धि जानिवे एखन
बालक आमाके देख आपनि कि वीर ❋ वालकेर रणे आजि हओ देखि स्थिर
तिन वाण मारे रघु वासव हियाय ❋ ऐरावत सह इन्द्र घोर पाक खाय
इन्द्र वले भाल वलि वयसे वालक ❋ एड़िलेन वाण येन ज्वलन्त पावक
दश वाण इन्द्र तवे पूरिल सन्धान ❋ दश वाणे काटिल इन्द्रेर दश वाण
दुइजने वाणवृष्टि वरषार धारे ❋ दुइजने युद्ध करे केह नाइ हारे
रघुराज जाने वाण पशुपति सन्धि ❋ हाते गले देवराजे करिलेक वन्दि
ऐरावत हइते पड़िल भूमितले ❋ लोहार शिकले वान्धि रथे निया तोले
घोड़ा निये आइलेन वापेर गोचरे ❋ सात दिन इन्द्र वान्धा अयोध्या नगरे
सङ्केते करिया व्रह्मा यत देवगण ❋ आपनि चलिया यान अयोध्याभवन

---

१ मक्खी २ समर ३ धनुष ४ लगातार।

विधि बोले, दिलीप! सुनु भूपा * तव नन्दन, रघु तव अनुरूपा
तासु ख्याति रघुवंस उजागर * जग यश लहहि महान गुनागर
मुदित बैन सुनि, नृप आदेसा * बन्दि-मुक्त पुनि कीन्ह सुरेसा
पावसपति[1]! जनि वृष्टि अभावा * अवध कबौं रघु शपथ करावा
खेतन भार मानि निज सीसा * चले स्वर्ग सुर-सहित सचीसा[2]

राजा रघु की दान-कीर्ति

पुन्य दिलीप विश्व चहुँ छाजै * रघुहिं राजु दै स्वर्ग विराजै
करि पितुश्राद्ध द्विजन हित अर्पन * अखिल कोष किय शेष[3] यशोधन
असन-बसन[4] हित द्रव्य न लहहीं * माटी-बासन[5] नृप बैपरहीं
सुनहु कथा, कश्यप मुनि गेहा * बसत शिष्य वरदत्त सनेहा
दिवस अनेक अध्ययन कीना * चौंसठ कला भयेउ सुप्रवीना
विदाकाल नत प्रणवत माथा * गुरु-दक्षिणा देहुँ का नाथा
अधिक न कोटि चतुर्दस सुबरन[6] * दै मोहिं उरिन होहु द्विजनन्दन

विधाता बलेन राजा तुमि पुण्यवान * तोमार तनय रघु तोमारि समान
आर किवा वर दिव रघुरे तोमार * रघुवंश वलि यश घोषिवे संसार
एत यदि वलिलेन ब्रह्मा मुनिवर * तबे मुक्त हइलेन देव पुरन्दर
रघु बलिलेन सत्य कर पुरन्दर * अनावृष्टि नहे येन अयोध्या उपर
इन्द्र बलिलेन चिन्ता ना करिह तुमि * क्षेतेर या किछु कर्म्म ता करिव आमि
करिलेन एइ सत्य देव पुरन्दर * इन्द्र सह स्वर्गे गेल सकल अमर
रघुर विक्रम शुनि शत्रु पक्षे त्रास * आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवास

रघु राजार दान-कीर्ति

दिलीप राजत्व करे अयुत वत्सर * पुत्रे राज्य दिया गेल अमर नगर
पितृ श्राद्ध करिलेन रघु यशोधन * ब्राह्मणेरे दिल राजा यत छिल धन
अद्य भक्ष्य रघुराजा नाहि धन घरे * मृत्तिकार पात्रे राजा जलपान करे
वरदत्त नामे एक मुनिर नन्दन * कश्यप मुनिर ठाँइ करे अध्ययन
गुरुगृहे वसति करिल वहु दिन * चतुःषष्टि विद्याते से हइल प्रवीण
गुरुरे दक्षिणा दिते कहिल ताँहारे * कि दक्षिणा दिव गुरु आदेश आमारे
गुरु वले अल्प मागि कर विवेचना * चौषट्टी विद्यार देह चौद्द कोटि सोना

१ वर्षा के स्वामी इन्द्र २ शची के पति इन्द्र ३ समाप्त ४ भोजन-वस्त्र
५ मिट्टी के बरतन ६ सुवर्ण मुद्रा।

चकित अमित सुनि सुबरन भारा ❀ लहौं सु किमि? मन सोच कुमारा
पुन्यवान रघु अवध प्रतापू ❀ तिन पहँ माँगि मेटु संतापू

दो० सुनत सीख, गुरु सन अवधि[1], सात दिवस पुनि लीन्ह ।
किय पयान, हिय थिर न, द्विज दरस अवधपुर कीन्ह ॥ ४६ ॥

विप्र निसेध[2] न रघुपुर कतहूँ ❀ अन्तःपुर प्रविसेउ, नृप जहहूँ
भाण्ड-मृत्तिका[3] जहँ जलपाना ❀ चौदह कोटि कनक किमि दाना
लौटत द्विज देखेउ रघुराई ❀ स्वयं द्वार चलि संग लेवाई
परसि चरन चन्दन अरु फूला ❀ विविध पाक सुरभित तांबूला
बहु सन्मानि सुधा सम वचनू ❀ मम निकेत कस द्विज आगमनू
सुयश पुन्य सुनि तव यशरूपा ❀ आयेउँ दान लेन ढिग भूपा
छिति[4] यश-विपुल केर अधिकारी ❀ तासु हीन गति लखि दुख भारी
माटीपात्र करत जल पाना ❀ सो समरथ किमि सुबरन दाना
दसा दीन लखि, कह द्विज बानी ❀ नहिं याचना कीन्ह भय मानी
जो कामना करहु भूदेवा ❀ सब विधि हरषि करौं तव सेवा
जिमि मोदक बालकन भुलावा ❀ तस न सरल, द्विज वचन सुनावा

द्विज कहिलेन एइ असम्भव कथा ❀ मने भावे एतेक सुवर्ण पाव कोथा
सवे वले रघुराजा वड़ पुण्यवान ❀ ताँर ठाँइ आनि गिया मागि स्वर्णदान
सात दिवसेर तरे समय चाहिल ❀ गुरु के कहिया शिष्य विदाय हइल
सात पाँच भाविया से निज अकिञ्चन ❀ अयोध्यानगरे आसि दिल दरशन
ब्राह्मणे निषेध नाहि दुयारे रघुर ❀ उत्तरिल गिया सेइ राज अंतःपुर
मृत्तिकार पात्रे राजा करे जलपान ❀ देखिया ब्राह्मणपुत्र करे अनुमान
मृत्तिकार पात्रेते करिछे जलपान ❀ कि रूपे करिबे चौद्दकोटि स्वर्ण दान
देखिया ब्राह्मणपुत्र जाय पाछु हैया ❀ उठिल ब्राह्मणे रघु द्वारेते देखिया
आपनि पाखाले राजा ताहार चरण ❀ विविध मिष्टान्न दिया कराय भोजन
कर्पूर ताम्बूल माल्य दिलेन चन्दन ❀ जिज्ञासा करेन करि पाद सम्वाहन
ब्राह्मण बलेन राजा तुमि पुण्यवान ❀ आसियाछि तव स्थाने लइवारे दान
देखिलाम घटियाछे ये दशा तोमारे ❀ आपनार नाहि किछु कि दिवे आमारे
तोमार अधीन राजा धरणी अशेष ❀ ऐश्वर्य तोमार देखि मृत्पात्र शेष
देखि तव दशा डर लागिल आमारे ❀ एसेछि तोमार ठाँइ धन मागिवारे
भूपति वलेन तुमि कत चाह धन ❀ याहा माग ताहा दिब ठाकुर ब्राह्मण
शुनिया राजार कथा द्विजवर बले ❀ बालके भाँड़ाओ कि लाडु दिवार छले

१ मोहलत २ रोकटोक ३ मिट्टी के बरतन ४ पृथ्वी पर ।

कह नृप, वचन न होइ अकारथ * जो न करौं, विनसै परमारथ
'हरि' कहि, हाथ कान पुनि राखी * चौदह कोटि सोन अभिलाषी
रमहु रैनि[1] इक पुर, मुनिनन्दन * गमनहु भोर होत लै कञ्चन
दै द्विज बास, टेरि पुनि राजन * अवध प्रजा जे अहउ महाजन
सुबरन चौदह कोटि जुटावहु * दसगुन तासु प्रात पुनि पावहु

दो० एक कोटि लौं कनक प्रभु, नगर न तव अवसेस ।
विवस प्रजा वानी-विनय, सुनि अनमने[2] नरेस ॥ ५० ॥

तेंहि अवसर नारद मुनि आये * आसन अर्घ बन्दना पाये
हे नृपमणि! कस बदन मलीना * रघु द्विज-कथा निवेदन कीना
चहत आजु द्विज, सो किमि लहहीं * मुदित देवऋिषि[3] रघु सन कहहीं
कालिह कुबेरहिं देहुँ सँदेसा * लहहु बैठि गृह धन अवधेसा
नारद गमन, इतै रघुराजा * सजे, अवध बाजे रनबाजा
सुभट अमात्य[4] स्वसैन बुलावा * सजेउ कटक, दुंदुभी बजावा
सुनेउ कुबेर घोष कैलासा * तासु दूत[5] नित अवध निवासा

राजा बले येवा माग ना करिब आन * वलिया ना दिले नाहि पाब परित्राण
श्रीविष्णु बलिया विप्र काने दिल हात * चौद्दकोटि सोना मागि तोमार साक्षात
राजा बले एक रात्रि थाक महामुनि * प्रातःकाले दिव धन लये जेओ तुमि
एत बलि ब्राह्मणे राखिल निज घरे * आपनि जिज्ञासा करे साधु सदागरे
चौद्दकोटि सोना धार येवा दिते पारे * चौद्ददश कोटि कालि शुधिब ताहारे
जोड़ हात करिया कहिछे प्रजागण * तोमरा नगरे नाइ एक कोटि धन
हेंट माथा करि राजा भाविल विपद * हेन काले तथा मुनि आइल नारद
पाद्य अर्घ्य दिल राजा वसिते आसन * मुनि बले केन राजा विरस वदन
राजा वले महाशय शुन बलि कथा * ब्राह्मण चाहिल धन आजि पाव कोथा
लागिलेन हासिते नारद महामुनि * इहार उपाय कहि शुनह आपनि
बल कालि कुबेरे करिब सम्भाषण * घरे ते बसिया पावे यत चाह धन
तार परे गेलेन नारद तपोधन * अयोध्या नगरे राजा बाजाय बाजन
आज्ञा करिलेन राजा पात्र मित्रगणे * सबे साज जाइब कुबेर सम्भाषणे
कटक साजिल बाजे दुन्दुभि बाजन * कैलासे कुबेर ताहा करेन श्रवण
कुबेरेर दूत[2] छिल अयोध्या-भुवने * जिज्ञासा करिल सब पात्र मित्रगणे

१ रात्रि-भर विश्राम करो २ चिन्तित ३ नारद ४ मंत्रिगण ५ राजदूत, एम्बेसेडर—त्रेता के प्राचीन काल में एम्बेसेडर की व्यवस्था की झलक कृत्तिवासी रामायण में अनूठी है ।

पूछत चहूँ, कित कटक सम्हारा? ※ मद-कुबेर भञ्जन पग धारा
सुनत दूत कैलास सिधायेउ ※ तहँ नारद कुबेर ढिग[1] पायेउ
चढ़ेउ साजि दल रघु नरनाहा ※ अस अचेत धनपति[2] न निबाहा
चौदह कोटि हेम[3] संकल्पा ※ परबस नृप, न कनक पुर स्वल्पा
सुमति दूत सिख मानि मुनीसा ※ सुबरन अमित दीन धनईसा
कनक सहित चर[4] अवध सिधावा ※ रघु-प्रताप-जस चहुँ दिसि छावा
भेंट-कुबेर लीन सन्मानी ※ द्विज हित सकल देन मनमानी
कान हाथ धरि, मुख 'हरि' भाषा ※ रत्ती अधिक न मम अभिलाषा
चौदह कोटि लीन गिनि कञ्चन ※ सो लदवाइ चलेउ द्विजनन्दन

दो० कनक-राशि-युत शिष्य लखि, गुरु अति अजरज लीन।
　　पुण्यरूप रघु-दान-यश, विरद[5] शिष्य बहु कीन ॥ ५१ ॥

गहन अरण्य[6] दस्यु[7] भयकारी ※ मुनिहिं प्रान-धन-संसय भारी
इन्द्र समीप अमानत[8] धरहीं ※ यज्ञकाल सोइ लै बैपरहीं
गुरु आयसु[9] द्विज द्रव्य असेसा ※ सहित चलेउ जहँ बसत सुरेसा
बटु[10] सन्मानि भेंटि सुरनाथा ※ सुनी सकल पुनि सुबरन गाथा

पात्र मित्र वले कि वेड़ाओ शुधाइया ※ प्रमाद पड़िवे कालि कुवेरे लइया
शुनिया चलिल दूत धाइया अमनि ※ कैलासे नारद गिया कहेन तखनि
कि कर कुवेर तुमि निश्चिन्त वसिया ※ तोमार उपरे रघु आसिछे साजिया
सुवर्ण नाहिक रघु राजार भाण्डारे ※ चौद्दकोटि स्वर्ण विप्र चेयेछे ताँहारे
एत यदि वलिल नारद महामुनि ※ कुवेर वलेन आमि पाठाव एखुनि
स्वहस्ते कुवेर धन दिलेन गणिया ※ दूत गिया भाण्डारेते दिल फेलाइया
विनये कहेन रघु ब्राह्मण कुमारे ※ भाण्डार सहित स्वर्ण दिलाम तोमारे
श्रीविष्णु वलिया मुनि स्पर्शे दुइ कान ※ चौद्दकोटि मात्र लव ना लइव आन
चौद्दकोटि स्वर्ण तारे दिलेन गणिया ※ शत शत जने वोझा दिलेन वाँधिया
शिष्येरे आनिते देखि चौद्दकोटि सोना ※ गुरु बले एत धन दिल कोन जना
शिष्य वले रघु राजा वड़ पुण्यवान् ※ करिलेन तिनि चौद्दकोटि स्वर्ण दान
मुनि वले थाकि आमि गहन कानने ※ धन हरि दस्युगण वधिवे जीवने
एइ धन राख ल'ये इन्द्रेर भाण्डारे ※ यज्ञकाले धन आनि देय ये आमारे
काञ्चन लइया गेल इन्द्रेर सदने ※ सम्भ्रमे उठिल इन्द्र देखिया ब्राह्मणे
द्विज वले गुरु पाठाइलेन आमारे ※ रघुराजा स्वर्णदान दिल भारे भारे
राखह भाण्डारे महामुनिर से धन ※ एत वलि धन तथा राखेन ब्राह्मण

१ समीप　२ धन के स्वामी, कुवेर　३ स्वर्ण　४ दूत, धावन　५ प्रशंसा
६ घना जंगल　७ डाकू　८ धरोहर　९ आज्ञा　१० ब्राह्मण।

विप्र-सुवन दच्छिना पुरावा ✽ पुष्कल[1] हेम[2] अवध जिमि आवा
सरिस कल्पतरु रघु दिय दाना ✽ दस्यु-त्रास सोइ तव ढिग आना
श्रवन हाथ धरि कहि पुनि 'रामा' ✽ सम्मुख मम न लेहु रघु-नामा
रैन न नींद, तासु भय पाई ✽ खेतन अवध रखावहुँ जाई[3]
इतर धरौ कहुँ धन हे ब्रह्मन् ! ✽ नतरु निपातै रघु मम जीवन
सुनि वरदत्त वचन-सुरनाहा ✽ गुरु-आश्रम-पथ पुनि अवगाहा[4]
मुनि आयसु बहोरि सोइ कञ्चन ✽ राखेउ ढिग कुबेर द्विजनन्दन
बिहँसि कही धनपति कैलासा ✽ जासु द्रव्य, आयेउ सोइ पासा
सुयश भूप रघु त्रिभुवन छावा ✽ कृत्तिवास शुचि गाइ सुनावा

राजा अज का विवाह और दशरथ का जन्म

वर्ष सहस दस रघु किय राजू ✽ मनमोहन 'अज' पुनि युवराजू
यौवन पग छबि-सुत अवलोका ✽ सौंपि राजु रघु गे सुरलोका
अज समान नहिं इतर भुआला ✽ पितु सम प्रजा करत प्रतिपाला

दो० रति लजाय, रूपसि परम, इन्दुमती जेहि नाम ।
माथुर-नृप तनया सुभग, अति लावण्य ललाम ।।५२।।

वासव वलेन बापू सत्य कह कथा ✽ उच्छवृत्ति करि सोना पाइलेन कोथा
द्विज वले दक्षिणा चाहिल स्वर्ण गुरु ✽ आमारे दिलेन रघुराजा कल्पतरु
राम राम वलि इन्द्र काने दिल हात ✽ रघुनाम ना करिओ आमार साक्षात्
निशाते ना जाइ निद्रा रघुर भयेते ✽ अयोध्या नगरे सदा भ्रमि क्षेते क्षेते
स्थानान्तरे निया प्रभु राख एइ धन ✽ धनेर कारण रघु बधिवे जीवन
धन लैया वरदत्त गेल गुरुपाशे ✽ गुरु बले राख निया पर्व्वत कैलासे
निजधन देखिया कुबेर मने हासे ✽ गियाछे जाहार धन एल तार पाशे
रघु भूपतिर यश त्रिभुवन घोषे ✽ रचिलेन आदिकाण्ड कवि कृत्तिवासे

अज राजार विवाह ओ दशरथेर जन्म

रघु राज्य करे दश हाजार वत्सर ✽ अज नामे ताँहार तनय मनोहर
देखिया पुत्रेर रांजा प्रथम यौवन ✽ पुत्रे राज्य दिया गेल वैकुण्ठ-भुवन
अजेर समान राजा नाहिक संसारे ✽ पुत्रेर समान राजा पालेन सबारे
माथुर राजार कन्या इन्दुमती नाम ✽ परमा सुन्दरी सेइ लावण्येर धाम

---

१ ढेर का ढेर २ सुवर्ण ३ दिलीप के अश्वमेध यज्ञ के अवसर पर इन्द्र को बाँधकर रघु ने अयोध्या के राज्य में वृष्टि और खेती की सुरक्षा की व्यवस्था का वचन ले लिया था। यह कथा पहले आ चुकी है। ४ ग्रहण किया (नालन्दा कोष)।

इच्छावर विवाह मन लीना ※ सकुच न नेक, प्रकट पितु कीना
सुता-स्वयंवर भूप उछाहा ※ नेउते चहुँ नरपति नरनाहा
पाय निमंत्रण माथुर देसा ※ चले सुभट बहु अवनि-नरेसा
तजेउ न अवसर, तजि-तजि धामा ※ जुरे सकल बल-रूप-ललामा
अवधभूप अज सभा विराजा ※ मनौ वृन्द-पशु छवि-मृगराजा
पौत्र-दिलीप, सुवन-रघु नाहर ※ एक छत्र छिति तपत गुनागर
सजी स्वयंवर सभा विसाला ※ बिनय कीन लखि नृपन भुआला
सुता दान हित ऐक मम गेहू ※ आनहुँ सभा, ध्यान सब देहू
जासु कण्ठ अर्पित बरमाला ※ सोइ मम अतिथि गहै कर-वाला
विदा शेष नृप लै घर जाहीं ※ रारि-द्वन्द अवसर कछु नाहीं
राजन उजुर[1] न, आतुर वचना ※ सभा वेगि आनौ नृप ! ललना
सजी इन्दुमति बेनि[2] सँवारी ※ श्रुत कुण्डल कज्जल दृग डारी
ससि सम विमल, सुकुंकुम भाला[3] ※ पैंज सिँगार विविध गर माला
जगमग छबि अति सुघर सुहावन ※ पुतरी कनक रची चतुरानन
सह सहचरिन चली गजगामिनि ※ मद मतंग सकुचत लखि भामिनि

इच्छावरी हइते कन्यार गेल मन ※ कहिल पितार अग्रे ना करि गोपन
स्वयंवरा हइते आमार आछे मन ※ सकल राजारे आन करि निमंत्रण
यत यत महाराज एइ धरा वासे ※ माथुरेर निमंत्रणे सब्बे येन आसे
प्रथम यौवन सबे देखिते सुन्दर ※ सकले आइसे केह ना रहिल घर
अयोध्या हइते हैल अजेर गमन ※ सभामध्ये अज गिया वसिल तखन
पशुर मध्येते येन पशिल केशरी ※ वसिल सकल राजा अज मध्य करि
रघुर तनय अज दिलीपेर पौत्र ※ पृथिवीमण्डले जाँर एकदण्ड छत्र
बसिल करिया सभा यत राजगण ※ तखन माथुर राजा करे निवेदन
एक कन्या दानयोग्या आछे मम घरे ※ आज्ञा कर सेइ कन्या आनि स्वयंवरे
परिणामे द्वन्द्व येन ना हय घटन ※ तवे शीघ्र आनि कन्या एइ निवेदन
मम कन्या वरमाल्य दिवेन जाँहारे ※ सिवारे विदाय दिया राखिव ताँहारे
भाल भाल वलिल सकल राजगण ※ शीघ्र इन्दुमती आन करिया साजन
केश आँचड़िया तार बाँधिल कुन्तल ※ विविध पुष्पेर माला करे झलमल
कपाले सिन्दूर दिल नयने कज्जल ※ चन्द्रेर समान रूप अतीव विमल
सुचित्र विचित्र परे पायेते पाशुलि ※ विधाता गड़ेछे येन कनक पुतुलि
सहचरीगण संगे चलिल घेरिया ※ मत्त गजपति रामा चलिल साजिया

---

१ उज्र, आपत्ति २ वेणी, चोटी ३ मस्तक ।

चितवनि इन्दुमती जेंहि भूपा * सुधि न रहत लखि बदन अनूपा

दो० पाय चेत,[1] बोलत वचन—जासु गरे वरमाल।
देय सुमुखि, सोइ सफल तन, सोइ धनि-धन्य भुआल ॥ ५३ ॥

कोउ कह मोंहि निरखति मृगनयनी * कोउ कह चहति मोंहि पिकवयनी
जेंहि नृप तजै, बढ़ै पग बाला * रोवत धरनी लोटि बेहाला[2]
कस कुत्सित मम रूप निहारी * सुमुखि तजेसि मोंहि सोक मँझारी
पैंज-पैंज[3] तजि नृपन विलोकत * सुता बढ़ी जहँ रघुसुत सोहत
दारिद जिमि बहुधन सुख पावा * हुलसि माल गर अज पहिरावा
इन्दुमती पुलकित गृह जाई * चला व्यथित नृपयूथ[4] लजाई
कानन बटुरि[5] मंत्रना करहीं * केहि विधि प्रान भूप अज हरहीं
इत-उत वन लुकान[6] सब तहहीं * अजहिं निपाति इन्दुमति लहहीं
सुतादान माथुर इत कीना * हय, गज, रथ, संपति बहु दीना
दिवस तीनि आतिथि सन्माना * अज-दंपति पुनि अवध पयाना
चला बेगि रथ, लै दोउ संगा * कटक साथ अगनित चतुरंगा
अज सोवत, रथ बन-पथ आवा * नृपगन घेरि पंथ किय धावा

जेइ जन करे इन्दुमती निरीक्षण * रूपेर मोहेते हरे ताहार चेतन
चेतन पाइया उठि वले नृपगण * ए कन्या पाइवे तार सार्थक जीवन
केह वले कन्या मोरे करे निरीक्षण * केह कहे कन्यार आमाते आछे मन
जा.रे पाछु करि कन्या करिल गमन * भूमेते पड़िया सेइ जुड़िल रोदन
कन्या कि कुत्सित रूप देखिल आमारे * आमारे छाड़िया सेइ भजिवे काहारे
एके एके देखिया यतेक राजगण * अजेर निकटे आसि दिल दरशन
धन पेले हृष्ट येन दरिद्रेर मति * गले माल्य दिया वले तुमि मम पति
वरमाल्य दिया यदि कन्या गेल घर * यत राजा पलाइल लज्जाय कातर
वनेते वसिया सवे ह'ये एकमति * वधिते अजेर प्राण करिल युकति
एक्षणे सवाइ थाकि वने लुकाइया * अजे मारि इन्दुमती लइव काड़िया
लुकाइया वने तारा रहे स्थाने स्थान * हेथाय माथुर राजा करे कन्यादान
कन्यादान करे राजा करिया कौतुक * नानारत्न हस्ती अश्व दिलेन यौतुक
तिन दिन छिल राजा माथुरेर घरे * तारपर यान राजा अयोध्या नगरे
इन्दुमती सह रथे करे आरोहण * कत सेना संगे रंगे चले अगणन
निद्राय कातर राजा चलितेछे रथ * सेइकाले राजगण आगुलिल पथ

---

१ होश २ खराब हालत में ३ पग-पग पर ४ राजाओं का समूह ५ इकट्ठा होकर ६ छिप गये।

मारु मारु बोलत चहुँ ओरा ❊ इन्दुमती संकट लखि घोरा
बचैं कंत[1] किमि? संसय लागी ❊ रुदन सुनत अज निद्रा त्यागी
अरि गर्जन न भीत[2] रनबंका ❊ निरखत तिय-मुख मलिन निसंका
अहह नाथ ! शत-शत भट योधा ❊ चहुँ दिसि पंथ घेरि अवरोधा

दो० हरन मोर, बध स्वामि तव, अधमन[3] मिलि मत कीन।
महारथी रघु-तनय सुनि, भामिनि धीरज दीन ॥ ५४ ॥

सुमुखि ! सोच तजि होहु अनन्दा ❊ सायक एक हनौं अरि-वृन्दा
इतर गहौं सर सत्रु-सँहारन ❊ तौ रघु आन अस्त्र धिक् धारन
चढ़उ चाप, स्यन्दन अज सोहा ❊ खल नृपगन मन उपजेउ छोहा[4]
छत्रप[5] विपुल ! सो तृण करि जाना ❊ अज गंधर्वबान संधाना
व्यापे तीनि कोटि गंधर्वा ❊ अभिरे[6] नृपति परस्पर सर्वा
सर अमोघ[7] जनि आनि उपाऊ ❊ सकल मरे कटि जे नरराऊ
सहित प्रिया पुनि चलि नरनाहा ❊ आये अवध अतीव उछाहा[8]
अज तन, प्रान इन्दुमति ताकर[9] ❊ धारेउ गर्भ विगत कछु वासर
गत दस मास प्रसव शिशु कीना ❊ शशि जिमि जनमि अवनि छवि दीना
काम सरिस गुन-रूप निहारी ❊ दशरथ नाम तनय कर धारी

मार मार वलि सवे आगुलिल तथा ❊ इन्दुमती देखिया करिल हेंट माथा
केमने वाँचाव स्वामी कान्दे इन्दुमती ❊ से क्रन्दने जानिलेन अज महारथी
राजगण डाके ताहे भीत नहे मन ❊ मलिन देखिल इन्दुमतीर वदन
इन्दुमती वले नाथ कि भाव एखन ❊ देखना तोमारे घेरिलेक नृपगण
शत शत राजा आछे पथ आगुलिया ❊ आमरे काड़िया लवे तोमारे मारिया
अज वले प्रसन्न करह प्रिये मुख ❊ एकबाणे सवे मारि देखह कौतुक
एक वाण विन यदि दुइ वाण मारि ❊ रघुर दोहाई तवे वृथा अस्त्र धरि
एत वलि धनु लैया रथे दाण्डाइल ❊ अजे देखि राजगण भाविते लागिल
शत शत भूपतिरे करि तृण ज्ञान ❊ एड़िलेन अज से गन्धर्व्व नामे वाण
एक वाणे हइल गन्धर्व्व तिन कोटि ❊ आपना आपना करे करि काटाकाटि
गन्धर्व्व वाणेते रण नाहि जाय आँटा ❊ एक वाणे राजगण सवे गेल काटा
सेइ सव राजगणे युद्धेते मारिया ❊ अयोध्याते गेल अज इन्दुमती निया
अज राजा तनु तार प्राण इन्दुमती ❊ हइलेन किछु काल परे गर्भवती
दश मास गर्भ हैल प्रसव समय ❊ हइल तनय येन चन्द्रेर उदय
रूपे गुणे देखि येन अभिनव काम ❊ दशरथ वलिया राखिन तार नाम

---

१ पति २ भयभीत ३ पतितों ने ४ क्षोभ ५ नृपगण, ६ परस्पर गुथे ७ अचूक ८ उमंग ९ अज शरीर और इन्दुमती उनका प्राण थी।

दशरथ बिरद बरनि नहिं जाई ❋ जाके सुवन राम रघुराई
दशरथ-जनम कथा सुखकरनी ❋ कृत्तिवास मञ्जुल इमि वरनी

दशरथ का राज्याभिषेक

किंशुकबन, जहँ द्वादस मासा ❋ सुत सोवाय दोउ मगन विलासा
इत रत-केलि हास-परिहासा ❋ गमनत नारद उतै अकासा
पारिजात माला खसि[1] वीना ❋ गिरत रानि-तन परसन[2] कीना
छुवत माल सो तजेउ सरीरा ❋ बिलखत अज, दृग नीर, अधीरा
दो० रुदन अकथ, बिलपत अतिव, मिटत न हिय संताप।
पारिजात पुनि परसि तहँ, तजेउ प्रान नृप आप ॥ ५५ ॥
नर्त-नर्तकी सुरपुर - वासी ❋ भये सापबस धरनि-निवासी
चले युगुल पुनि सुरपुर वासा ❋ तजि दशरथ सुत द्वादस मासा
जनक-जननि-विरहित शिशु देखी ❋ मुनि बशिष्ठ हिय सोच विशेषी
पञ्च वर्ष सिखयेउ गृह राखी ❋ सविधि शास्त्र सुत-हित अभिलाषी
पितु-पद[3] लहि, गुरु-आयसु माना ❋ परशुराम किय आयुध[4] दाना

आमि दशरथेर कि कैब गुण ग्राम ❋ जार पुत्र हइलेन आपनि श्रीराम
कृत्तिवास पण्डित कवित्वे विचक्षण ❋ गान दशरथेर उत्पत्ति विवरण

दशरथेर राज्याभिषेक

एक वर्ष वयस्क यखन दशरथ ❋ पुत्रे शोयाइया दोंहे साधे मनोरथ
पुष्पवने क्रीड़ा करे हास्य परिहास ❋ नारद चलिया यान उपर आकाश
पारिजात माला छिल ताँहार वीणाय ❋ वातासे उड़िया पड़े इन्दुमती गाय
पारिजात यखन हइल परशन ❋ इन्दुमती छाड़िलेन तखनि जीवन
प्राण छाड़ि इन्दुमती गेल स्वर्गधाम ❋ काँदे अज नयनेते वारि अविराम
कत वा कहिव सेइ राजार विलाप ❋ ना पारे सहिते इन्दुमतीर सन्ताप
सेइ पारिजात मारे आपनार गाय ❋ दुइजने मुक्त हये स्वर्गपुरे जाय
नर्त्तक नर्त्तकी छिल दोंहे स्वर्गपुरे ❋ शापभ्रष्टे जन्मिया छिलेन भूमि परे
दुइ जन यखन गेलेन स्वर्ग पथ ❋ एक वर्ष वयस्क तखन दशरथ
पिता माता अल्प काले मरिल दुजन ❋ देखिया चिन्तित ये वशिष्ठ तपोधन
लैया गेल सेइ पुत्र आपनार घरे ❋ पड़ाइल नाना शास्त्र शास्त्र-अनुसारे
पञ्चवर्ष हइलेन वयस्क यखन ❋ लइलेन आपनि पैतृक सिंहासन
भृगुराम मुनि तारे अस्त्र दिल दान ❋ शिखाइल यत्न करि शव्दवेधी वाण

---

१ खिसककर २ स्पर्श ३ पिता का स्थान, राजसिंहासन ४ अस्त्र।

शब्दबेध किय अस्त्र-प्रवीना ※ वयस पञ्चदश नृप पग दीना
लोकपाल पितु सरिस धनुर्धर ※ तपत राजु जिमि प्रबल पुरंदर

दशरथ के साथ कौशल्या का विवाह

सूर्यवंश दशरथ महराजा ※ सकल प्रशंस सर्वगुन साजा
अधिप महीपन के, नरनाहा ※ बर्ष तीस नहिं रचेउ विवाहा
सो सुभ घड़ी अवधि सजि आई ※ कोशलपुर - नृप कोशलराई
तासु सुता कौशल्या नामा ※ सोच वयस[1] लखि वढ़त ललामा
प्रोहित द्विज बटोरि पुनि राजन ※ कौशल्या-वर जोगु विचारन
गवनहिं विप्र अवध तत्काला ※ बिनवहिं मम संवाद भुवाला
तुम समान वर धरनि न दूजा ※ हरषि जासु कर देहुँ तनूजा[2]
लै संबाद चले द्विजराई ※ सत्वर[3] अवधपुरी नियराई
लखि सोइ, दशरथ कीन प्रनामा ※ दै असीस प्रगटत द्विज नामा

सो० मैं द्विज-कोशलनाथ, सुता तासु अति रूपसी।
देन चहत तव हाथ, सो पठयेउ संबाद नृप ॥ ५६ ॥

राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर ※ पुत्र तुल्य पाले प्रजा महा धनुर्द्धर
राजार वयस हैल पनर वत्सर ※ आदिकाण्डे रचे कृत्तिवास कविवर

दशरथेर सहित कौशल्यार विवाह

दशरथ महाराज जन्म सूर्यवंशे ※ सर्व्व गुणेश्वर राजा सकले प्रशंसे
राज चक्रवर्ती राजा सवार उपर ※ विवाह ना हय वयः त्रिशत् वत्सर
दैवेर घटने हैल राजार निर्व्वन्ध ※ हेन काले घटे ताँर विवाह सम्बन्ध
कौशलेर नृपति कौशल दण्डधर ※ कौशल्या नामेते कन्या आछे ताँर घर
कौशल्यार रूप राजा देखिया मूर्च्छित ※ कारे कन्या दिव वलि राजा सुचिन्तित
पुरोहित ब्राह्मणेरे कहिल सत्वर ※ दशरथे आनिवारे जाह द्विजवर
आमार संवाद कह राजार गोचरे ※ कौशल्या नामेते कन्या दिव ताँर करे
ताँहा बिन कौशल्यार वर नाहि आन ※ सुखी हव दशरथे करि कन्यादान
संवाद लइया विप्र चलिल सत्वर ※ शीघ्रगति गेल द्विज अयोध्या नगर
ब्राह्मणे देखिया राजा करेन प्रणाम ※ आशीष करिया कहे आपनार नाम
कोशल देशेते घर राजपुरोहित ※ तोमारे लइते राजा करे नियोजित
परमा सुन्दरी कन्या आछे ताँर घरे ※ कौशल्या नामेते कन्या दिवेन तोमारे

---

१ उम्र २ कन्या ३ शीघ्र ही।

नहिं तव रूप आन[1] दिग्देसा ※ तुमहिं वरन नृप चाउ[2] बिसेसा
करौ अनुग्रह कोसल देसू ※ सुनत वचन द्विज, अवध-नरेसू
बोलि सचिव सुहृदन मत कीना ※ निज-सूने[3] सासन तिन दीना
स्यन्दन साजि सारथी आना ※ सैन-सहित किय नृपति पयाना
नाचति विद्याधरी समाजा ※ तुरही भेरि झाँझ बहु बाजा
सहस पचास मृदंग बजावा ※ तीनि कोटि सिंगी रव[4] छावा
शंख कोटि अरु घण्टाजाला ※ अगनित बजत भरंग रसाला
डफ सहनाइ सुढोल दमामा ※ तबल घोष जयढोल ललामा
घन सम गर्जत नाद कराला ※महाप्रलय, छिति-व्योम[5] बिहाला[6]
तुमुल[7]-विराट बजत चहुँ बाजा ※ आयेंउ कोशल अवध-समाजा
सुनत, समाद[8] सविधि अगवानी ※ पाद अर्घ्य सन नृप सन्मानी
कन्यादान शास्त्र - आचारा ※ पुर - तिय - गान मंगलाचारा
शुभ क्षण दोउन दीठि शुभ डारी ※ धरा न अस दंपति छबि न्यारी
नाना रत्न-दान, सत्कारू ※ दै पुनि अर्ध[9] राज-अधिकारू

तव तुल्य रूप आर नाहि कोन देशे ※ तोमार दिवेन तिनि मनेर आवेशे
राजार संवाद एइ जानानु तोमारे ※ विवाह करिते चल कोशल आगारे
एतेक शुनिया राजा संवाद वचन ※ पात्र वर्ग लैया राजा करेन मन्त्रण
यावत् विवाह करि नाहि आसि वरे ※ तावत् पालह राज्य अयोध्या-नगरे
रथ लैया योगाइल रथेर सारथि ※ सेनागण संगे राजा चले शीघ्रगति
नाना वाद्य वाजे नाचे विद्याधरीगण ※ तुरी भेरी झाँझरी ता ना जाय गणन
पाखोयाज पञ्चाश सहस्र परिमाण ※ तिन कोटि शिङ्गा बाजे अति खरशान
वाजे तिन कोटि शङ्ख आर घण्टाजाल ※ भोरङ्ग सहस्रकोटि शुनिते रसाल
सहस्र सानाई वाजे डम्फ कोटि कोटि ※ तिन सहस्र दामामा घन पड़े काटि
तबल विशाल बाद्य वाजे जयढोल ※ महा प्रलयेर काले येन गण्डगोल
वाद्यभाण्ड महाभाण्ड करिल प्रचुर ※ रथ वेगे गेल राजा कोशलेर पुर
कोशलेर राजा वार्त्ता पाइया ताँहार ※ पूजेन राजारे दिया पाद्य अर्घ्य भार
राजा कन्यादान करे शास्त्र व्यवहारे ※ आमोद करिल रामागण स्त्री आचारे
शुभ क्षणे दुइजने शुभदृष्टि करे ※ उभयेर रूपे धरा कत शोभा धरे
नाना रत्न दिया राजा करे कन्यादान ※ शास्त्रेर विहित राजा करिल सम्मान
आपनि अर्द्धेकराज्य दिला अधिकार ※ विलाइते दिल राजा अर्द्धेक भाण्डार

१ दूसरा २ चाहना ३ अपनी अनुपस्थिति मे ४ शोर ५ पृथ्वी-आकाश सर्वत्र ६ हलचल पूर्ण ७ घोर कोलाहल ८ आदर-सम्मान ९ आधा।

कौशल्या-सह प्रमुदित अंगा ※ आये दशरथ अवध-पतंगा[1]

दशरथ के साथ कैकेई का विवाह

दो० हिम-अञ्चल कैकय नृपति, सुखसासन बहु काल।
कैकेई तिन सुता-छवि, जगमग पुरी-भुवाल ॥ ५७ ॥

सुता स्वयंवर नृप मन भावा ※ भूपन सकल निमंत्रि बुलावा
अवध दूत पठयेउ तत्काला ※ जहँ दसरथ महिपन-महिपाला
द्विज बसीठ[2] लखि नृप सन्माना ※ दै आसिस सो काज बखाना
गिरि प्रदेस कैकय नृप धामा ※ रचेउ स्वयंवर-सुता ललामा
जुरे भूप तहँ अगनित-देसा ※ चलौ बेगि गिरिनगर, नरेसा !
समारोह मिलि बढ़बहु सोभा ※ सुनि द्विजवचन भूप मन लोभा
नृप-रथ चलेउ वेगि द्विज साथा ※ सभा, जुरे जहँ बहु नरनाथा
यज्ञस्थल कैकई सुरूपा ※ जगमग करत नगरगिरि-भूपा
लखि छबि अतुल सबन भ्रम जाई ※ विद्याधरी स्वयंवर आई
तिलोत्तमा अप्सरा अनूपा ※ उर्वसि, कै[3] रंभा अतिरूपा
तुलना ककस[4] ? अतुल त्रैलोका ※ भौंचक[5], चकित सबन अवलोका

कौशल्या लइया राजा आसिलेन वास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथेर सहित कैकेयीर विवाह

गिरिराज नगरेते कैकयेर घर ※ सुखे राज्य करे राजा अनेक वत्सर
कैकेयी नामेते कन्या परमा सुन्दरी ※ ताँर रूपे आलो करे सेई राजपुरी
स्वयंवर हवे कन्या हेन आछे मन ※ पृथिवीर यत राजा कैल निमन्त्रन
दूत जाय दशरथे आनिते सत्वर ※ शीघ्रगति गेल दूत अयोध्या-नगर
ब्राह्मणे देखिया राजा प्रणाम करिल ※ आशीष करिया द्विज कहिते लागिल
गिरिराज नगरेते आमार वसति ※ राजकन्या स्वयंवरा हवे नरपति
राजगण आसियाछे तथाय प्रचुर ※ चल राजा शीघ्र तुमि गिरिराजपुर
स्वयंवर स्थान ये करिल सुशोभन ※ संवाद पाइया राजा चलिल तखन
रथे त्वरा दशरथ गेल सभास्थाने ※ सभा करि राजगण वसेछे येखाने
स्वयंवर स्थाने एल कैकेयी सुन्दरी ※ गिरिराजपुरी तार रूपे आलो करि
कैकेयीरे देखि सवे करे अनुमान ※ आइल कि विद्याधरी स्वयंवर स्थान
किम्वा रम्भा उर्व्वशी आइल तिलोत्तमा ※ त्रिभुवने निरूपमा कि दिब उपमा
पूर्व्वे राजकन्या येन छिल इन्दुमती ※ सेइ येन वरिलेक अज महामति

१ अवध के सूर्य २ दूत ३ अथवा ४ किस प्रकार हो ? ५ भौचक्के ।

जिमि 'अज' बरेउ 'इन्दु' महरानी ✻ प्रगट दीख चहुँ कथा पुरानी
तासु रूप सुनि, हेतु विवाहा ✻ आतुर जुरे सबै नरनाहा
'अज' वरमाल, शेष भट लाजा ✻ अजहुँ न बिसरत भूप-समाजा
सारभौम[1] अति छबि जगबन्दन ✻ अतुल सोह तहँ सोइ अजनन्दन[2]
दसरथ रहत, गहै को बाला! ✻ अवनत सुख सोचत नरपाला

दो० तजे नृपति बहु कैकई, निरखत अवध-भुवाल।
पुलकि, दरिद जिमि लहै धन, बढ़ि डारी गर माल ॥ ५८ ॥

दसरथ गर डोलत बरमाला ✻ लचे लाजबस सीस - भुवाला
वरै आनि किमि सुता सयानी[3] ✻ निज-निज गेह चले कहि बानी
कैकय नृप किय कन्यादाना ✻ बहु मनि रतन द्रव्य सन्माना
दासी निपुन मंथरा साथा ✻ लै कैकई, अयोध्यानाथा
चले वेगि पुनि साजि तुरंगा ✻ सैन सहित नृप प्रमुदित अंगा

राजा दशरथ के साथ सुमित्रा का विवाह और
राज्य पर शनिदृष्टि तथा उसके निवारणार्थ इन्द्र पर चढ़ाई

कौशल्या-कैकइ युग[4] भामा ✻ क्रीड़ारत महीप अविरामा

ताँहार रूपेर कथा गेल देशे देशे ✻ विवाहार्थे राजगण आसिलेन हेसे
इन्दुमती वरिलेक अज महाराजे ✻ सब राजा गेल देशे पड़िया ये लाजे
परम सुन्दर राजा राजचक्रवर्ती ✻ दशरथ तुल्य नाहि भूमिते भूपति
दशरथ थाकिते वरिबे कोन जने ✻ एइ युक्ति अधोमुखे करे राजगणे
प्रत्यक्षे देखिल कन्या सब राजगणे ✻ सबारे भूलिल दशरथ दरशने
धन पाइले तुष्ट येन दरिद्रेर मति ✻ गले माल्य दिया वले तुमि हओ पति
दशरथ भूपतिर गले माल्य दोले ✻ लज्जाय नृपतिगण माथा नाहि तोले
राजगण बले कन्या वड़ विचक्षणे ✻ दशरथ थाकिते वरिबे कोन जन
राजगण परस्पर करिया सम्मान ✻ विदाय हइया गेल निज निज स्थान
कन्यादान करे राजा परम कौतुके ✻ मन्थरा नामेते चेरी दिलेन यौतुके
माणिक मुकुता राजा पाइया बिस्तर ✻ अश्ववेगे निज देशे चलिल सत्वर
कैकेयी लइया राजा आसे निज देशे ✻ आदिकाण्ड रचिल पण्डित कृत्तिवासे

राजा दशरथेर सहित सुमित्रार विवाह ओ राज्ये शनिर दृष्टि
ओ अनावृष्टि निवारण जन्य इन्द्रेर निकट रणयात्रा

कौशल्या कैकेयी एइ सपत्नी उभय ✻ उभये लइया क्रीड़करे महाशय

---

१ चक्रवर्ती २ दशरथ ३ चतुर ४ दो।

नृप सुमित्र सिंहल-अधिकारी ❋ सुता सुमित्रा छबि उजियारी
कहँ वर लहौं सुजोग कुमारी ❋ मन सुमित्र नित करैं विचारी
सारभौम दसरथ जग जाना ❋ दनुज-गँधर्व जासु भय माना
द्विज बुलाय दिय नृप आदेसू ❋ आनहु दसरथ अवध-नरेसू
हरषि विप्र नृप आयसु माना ❋ कीन अवध दिसि बेगि पयाना
अज-सुत निरखि विप्र सन्माना ❋ दै असीस, सो करत बखाना
सिंहलपति-प्रोहित, सोइ[1] काजा ❋ आयेउँ लेन हेत महराजा
सुता सुमित्रा परमा रूपा ❋ सिंहल करत अलोक[2] अनूपा
मञ्जुल छबि अतुलित दिग्देसू ❋ हरषि देन मन तुमहिं नरेसू
अकथ रूप सुनि प्रमुदित दसरथ ❋ वरौं सुमुखि अविलंब मनोरथ

दो० सजे भूप आखेट-मिस[3], बनिता-युगुल[4] अजान ।
बाजन बाजे, सदल बल सिंहल कियेउ पयान ॥ ५९ ॥

नृप-आगम सिंहलपति जानी ❋ पाद अर्घ्य बहु बिधि सन्मानी
दसरथ रूप सराहत लोगू ❋ राजसुता बिधि[5] वर दिय योगू
नंदीमुख आदिक सुभ कर्मा ❋ हरषि दुहू पालत कुलधर्मा

सिंहल राज्येते से सुमित्र महीपति ❋ सुमित्रा तनया ताँर अति रूपवती
कन्यारे देखिया राजा भावे मने मन ❋ कन्या योग्य वर कोथा पाइब एखन
राजा चक्रवर्ती दशरथ लोके जाने ❋ राक्षस गन्धर्व्व काँपे जाँर नाम शुने
ब्राह्मण डाकिया राजा कहिल सत्वर ❋ दशरथे आन गिया अयोध्यानगर
राजार आज्ञाय द्विज चलिल हरिषे ❋ शीघ्रगति गेल द्विज अयोध्यार देशे
ब्राह्मणे देखिया राजा करेन प्रणाम ❋ आशीष करिया द्विज कहे निज नाम
सिंहल देशेर आमि राज पुरोहित ❋ तोमारे लइते राजा आमि उपस्थित
राजकन्या सुमित्रा से परमा सुन्दरी ❋ ताँर रूपे आलो करे सिंहल नगरी
समरूप राजकन्या नाहि कोन देशे ❋ तोमारे दिवेन राजा परम हरिषे
शुनिया कन्यार कथा हृष्ट दशरथ ❋ हइते सुमित्रा पति हैल मनोरथ
कौशल्या कैकेयी पाछे जाने दुइजन ❋ मृगयार छले राजा करिल गमन
नाना वाद्ये दशरथ चले कुतूहले ❋ उत्तरिल गिया राजा नगर सिंहले
वार्त्ता शुनि हरषित सिहलेर राजा ❋ पाद्य अर्घ्य दिया ताँर करिलेन पूजा
देखि दशरथेर लावण्य मनोहर ❋ लोक बले विधि दिल कन्यायोग्य वर
नान्दीमुख करि दोंहे विशेष हरिषे ❋ दुइजने वृद्धि श्राद्ध करे अवशेषे

---

१ उन्ही के २ आलोक, प्रकाश ३ शिकार के वहाने ४ दोनों रानी (कौशल्या-कैकेई) ५ विधाता ।

दम्पति दीठि[1] परस्पर डारी ※ दोउ छबि बसुन्धरा उजियारी
सय्या सुमन साँझि किय सयना ※ अलसभरे झपके नृप-नयना
भोर भूप उठि सय्या त्यागी ※ दिये नेग परजन[2] अनुरागी
यौतुक[3] लहेंउ भूप मनमाना ※ प्रमुदित दीन विविध बहु दाना
दोउ नरेस किय बागबिदाई[4] ※ सतिय चढ़े रथ कोसलराई
छबि नवबधू निरखि नहिं धीरा ※ काम-अनल नृप अबुध सरीरा
भोर-बिवाह 'कालनिसि' कहहीं ※ स्यन्दन-उपर रमन युग करहीं
कालनिसा परसत जो नारी ※ परति नारि दुर्भाग बिचारी
आनि सुमित्रा अवध, नरेसू ※ अन्तःपुर किय पुलकि प्रवेसू
कौशल्या-कैकयि दोउ भामा ※ सोंच तासु लखि रूप ललामा
हमहिं बिसारि सौति अपनावैं ※ यहि भय शंकर-गौरि मनावैं
रानि तीन विलसत महिपाला ※ सुख सासन बीतेंउ अतिकाला
सुत कर मुख न लखेंउ नरनाहू ※ किय सत सप्त पचास बिवाहू

दो० बहु बनितान निकेत नृप, जिनहिं प्रमुख पद दीन ।
कौशल्या, कैकय-सुता, अरु सुमित्रजा तीन ॥ ६० ॥

गोधूलिते दुइजने शुभदृष्टि करे ※ दोंहाकार रूपे आलो वसुमती करे
कुसुमशय्याय राजा शयन करिल ※ निद्रार अलसे प्राय अचेतन हैल
शय्या छाड़ि उठे दशरथ नृपवर ※ शय्यार उत्थान कौड़ि दिलेन विस्तर
वासिबिया सेइ स्थाने कैल दशरथ ※ यौतुक पाइल वहुधन मनोमत
विदाय हइल राजा राजार साक्षाते ※ सुमित्रा सहित राजा चड़े निज रथे
सुमित्रार रूपे राजा मदने मोहित ※ अधैर्य्य हइया राजा हइल मूर्च्छित
विलम्ब ना सहे आर करे इच्छाचार ※ रथेर उपरे राजा करेन शृङ्गार
बासिवियाहेर दिन हय कालराति ※ स्त्री पुरुष एक ठाँइ ना थाके संहति
कालरात्रे ये नारी के करे परशन ※ से स्त्री दुर्भागा हय नाहय खण्डन
सुमित्रा लइया राजा आनि निज देशे ※ अन्त.पुरे प्रवेशिलि परम हरिषे
कौशल्या कैकेयी तारा राणी दुइजन ※ सुमित्रार रूप देखि भावे मने मन
सुमित्रार रूप मजाइवे भूप-चित ※ आर ना चाहिवे आमा सवाकार भित
निरवधि सेवे तारा पार्व्वती शङ्कर ※ सुमित्रा दुर्भागा ह'क एइ मागे वर
तिन रानी लैया राजा आछे कुतूहले ※ सुखे राज्य करे वहुकाल भूमण्डले
पुत्रहीन महाराज मने दुःख दाह ※ करिलेन सात शत पञ्चाश विवाह
सात शत पञ्चाशेर मुख्य तिन गणि ※ कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा सतिनी

---

१ दृष्टि २ सेवको (नेगियो) को ३ दहेज ४ कन्यापक्ष वरपक्ष को विदाई के अवसर पर विदा करते व नजर देते है ।

तिन, छबि अतुल सुमित्रा न्यारी ※ जगमग करत अयोध्या सारी
कालनिसा अपराध, बिचारी[1] ※ दैवयोग मन-भूप उतारी[2]
प्राणाधिक कैकई सनेहा ※ बसति भूप निसिदिन सोइ गेहा
तीनिहुँ - भाग सराह न जाई ※ सबन गर्भ जन्मे हरि[3] आई
मगन भूप इत सुख-संभोगू ※ अनावृष्टि उत अवध कुयोगू
वृष-रोहिणी दीठि शनि डारी§ ※ पावस[4] हरन अमंगलकारी
भोग विलास नारि - संभाषन ※रत[5]; पुर विपति न अवगत[6] राजन
सोइ अवसर नारद मुनि आये ※ आसन भूप पूजि बैठाये
सुनौ मुकुटमणि आगम-हेतू ※ कहौं कथा, सुनि होहु सचेतू
इन्द्र वृष्टि पोषत संसारा ※ तव पुर जल बिन सोक मँझारा
तैं कामिनि सन रत निसिवासर ※ भोगत नरक प्रजा दुखसागर
किय न अकाज काहु मुनि ज्ञानी ※ निन्दति प्रजा, बुद्धि बौरानी
पुरजन भोगत दुख निज कर्मा ※ लेपति किमि मम अंग अधर्मा
वर्षा छीन हेतु सुनु ताता ※ वृष-रोहिणी दृष्टि शनि पाता

तार मध्ये सुमित्रा ये परमा सुन्दरी ※ ताँर रूपे आलो करे अयोध्या नगरी
हेन स्त्री दुर्भागा हैल राजार विषाद ※ कालरात्रि दोप हैल एतेक प्रमाद
प्राणेर अधिक राजा कैकेयीरे देखे ※ दिवारात्रि दशरथ तारे लैया थाके
ए तिनेर भाग्य कत वर्णिव सम्प्रति ※ या सबार गर्भे जन्म लवेन श्रीपति[3]
सतत थाकेन राज सुखेर सागरे ※ दैवे अनावृष्टि हैल अयोध्या-नगरे
रोहिणी वृषेते हैल शनिर गमन ※ ते कारणे वृष्टि नाहि हय वरिषण
कौतुके थाकेन राजा भार्य्या सम्भाषणे ※ राज्येते प्रमाद हैल इहा नाहि जाने
सकल अयोध्या राज्ये हइल आपद ※ हेन काले आइलेन तथाय नारद
पाद्य अर्घ्य देन राजा बसिते आसन ※ मुनिर करिया पूजा वसिल राजन
नारद बलेन नृप करि निवेदन ※ आइलाम तोमारे करिते विज्ञापन
इन्द्रेर वृष्टीते बाँचे सकल संसार ※ तव राज्ये अनावृष्टि दुःख सवाकार
कामिनि लइया राजा करितेछ सुख ※ नरके पड़िला प्रजागण पाय दुःख
राजा वले कारे आमि नाहि करि दंड ※ कि कारणे मन्द मोरे वल राज्यखण्ड
दुःख पाय प्रजागण निज कर्म्मफले ※ कोन दोषे प्रजागण मोरे मन्द बले
नारद बलेन शुन नृप चूड़ामणि ※ रोहिणी नक्षत्रे दृष्टि दिया गेल शनि

---

१ वेचारी, दीन २ उपेक्षित, मनउतरी ३ रामादिक चार वन्धुओं में प्रगट होनेवाले नारायण के चार अंश ४ वर्षा ५ लीन ६ भिज्ञ, परिचित।

§ वृषराशि-स्थित रोहिणी नक्षत्र पर शनिश्चर की दृष्टि पड़ने पर अकाल योग होता है, यह ग्रंथकार का कथन है।

सोइ कारन तव प्रजा दुखारी * चले नृपहिं कहि बीनाधारी
आवा चेत, साजि रथ राजा * चले लेन सुधि प्रजा-समाजा

दो० लखे उतर[1], आकुल सकल, जलचर, खग, पसु, वन्य[2]।
नदी, ताल, नद, बड़े सर, जल बिन शुष्क अरण्य[3] ॥ ६१ ॥

साँझ भई तरु-तर नृप वासा * शाखा, शुक-सारिका निवासा
कछु निसि बीति नींद भइ भंगा * कह बिहंग इमि सोक-प्रसंगा
कह सारिका, बास बहुकाला * गत, नित करत उपास[4] कराला
रविकुल-राजु न दुख कहुँ लेसू[5] * सो कस पाप ? दुसह दुखदेसू
चौदह वर्ष असन[6]-जलहीना * पावस-रहित, न फल तरु दीना
सर, सरिता, नद बारिविहीना * नृप पुरजन-हित चित तजि दीना
नारि-लिप्त निसि दिवस नरेसू * क्षुधा असह, शुक चलौ विदेसू
प्रिया ! सुनौ, कह शुक मृदु वानी * सोख न तव मैं रुचिकर जानी
सतयुग सों वन वसत सप्रीती * पीढ़ी मम पचास इत बीती
हमहिं[7] न दुख, दुख सब जग छावा * निरखि विषाद स्वयं नृप पावा
जेहि थल जनम, मरन सोइ देसू * तव सिख उचित न त्याग-स्वदेसू

एइ हेतु अनावृष्टि हइल राज्येते * प्रजागण दुःख पाय एइ कारणेते
एत बलि करिलेन नारद गमन * रथे चड़ि राज्य देखि बेड़ाय राजन
गेलेन उत्तर दिके गहन कानन * जलजन्तु देखे राजा पशु पक्षिगण
नद नदी देखे राजा ताहे नाहि जल * दिघि सरोवर देखे शुष्क से सकल
बेला अवसाने राजा बसे वृक्षतले * शारी शुक पाखी आछे सेइ वृक्ष डाले
शेष रात्रि हइल पक्षीर निद्रा भाङ्गे * पक्षिणी कहिल कथा पक्षिराज सङ्गे
बहुकाल हइल मोरा एइ वनबासी * आर कत पाब कष्ट नित्य उपवासी
सूर्यवंश राज्ये कभु दुःख नाहि जानि * चौद्द वर्ष अनाहार नाहि पाइ पानि
अनावृष्टि कारणे वृक्षेते नाहि फल * नद नदी सरोवर ताहे नाहि जल
भूपति पालिते राज्य चेष्टा नाहि करे * रात्रि दिन स्त्री लइया थाके अन्तःपुरे
कष्ट पाइ आर कत थाकि अनाहारे * अतएव चल प्रभु जाइ स्थानान्तरे
पक्षिराज बले प्रिये शुन मोर वाणी * तोमार वचने कि छाड़िव अरण्यानी
सत्ययुग हैते मोर एइ वने वास * गोंयाइनु एइ वने पुरुष पञ्चाश
मोर दुःख नहे दुःख हयेछे संसारे * एइ दुःखे आछे राजा दुःखित अन्तरे
एइ खाने जन्म मोर एखाने मरण * तोर बोले छाड़िते नारिव एइ वन

१ उत्तर दिशा २ जंगल के [illegible] ४ लंघन, फाका ५ लवलेश, भी ६ भोजन ७ केवल हम पर

कह सारिका सुनौ शुक बाला ❋ पापराज वसि प्रान निपाता
श्वास रुद्ध जल बिन गत प्राना ❋ चलि तट सिंधु करैं जलपाना
युगुल पच्छि जिमि व्यथा बखाना ❋ सुनि दसरथ तरुतर निज काना
असत[1] न कहेँउ तपोधन वानी ❋ खग निन्दति प्रतच्छ दर्सानी
इन्द्र लबार[2], वचन थिर नाहीं ❋ कहनि-करनि[3] प्रतिकूल दिखाहीं

दो० बाँधि इन्द्र राखे अवध, रघु पितुजनक[4] स्वधाम।
कटे फन्द दीने वचन, पावस सतत ललाम ॥ ६२ ॥

पकरि इन्द्र पुनि, धरि जनि लावौं ❋ तौ दसरथ—अजसुत न कहावौं
रजनी विगत, प्रभात अलोका ❋ दुखित भूप, दोउ विहग विलोका
कह शुक, सुनु सारिका अपावन ❋ अधम पच्छि किमि निन्दति राजन
सुनहिं सकल दसरथ निज काना ❋ शब्दवेध सर हरहिँ पराना
प्रान-मोह खग मन अति त्रासा ❋ लिये डिम्ब[5] उड़ि चले अकासा
भुज उठाय नृप विहग बुलावा ❋ पुनि प्रबोधि मृदु बचन सुनावा
अन्त[6] न जाहु तजौ भय-संका ❋ सुख मन मानि बसौ तरु-अंका[7]
दोस न लेस[8] तोर खगरानी ❋ लहेँउँ चेत[9] सुनि तव सतबानी

पक्षिणी वलये पक्षी शुन विवरण ❋ पातकीर राज्ये थाकि हाराबे जीवन
जल विन श्वासगत व्याकुलित प्राण ❋ समुद्रेर तीरे गिया करि जलपान
एइ कथावार्त्ता तारा कहे दुइजने ❋ वृक्ष तले थाकि ताहा दशरथ शुने
राजा वले नारदेर वचन प्रत्यक्ष ❋ पक्षी मोरे निन्दा करे पेये उपलक्ष
बुझिलाम इन्द्रराज वड़इ चतुर ❋ मुखे एक कहे से अन्तरे करे दूर
मम पितामह सेइ रघुनाम धरे ❋ इन्द्रे आनि खाटाइल अयोध्यानगरे
तवे आजि हय मम दशरथ नाम ❋ इन्द्रेरे वान्धिया आनि यदि निज धाम
रजनी प्रभात करे राजा मनोदुःखे ❋ प्रभात हइले राजा दुई पक्षी देखे
पक्षी वले पापिनी पक्षिणी शुन वाणी ❋ राजारे निन्दिला केन हइया पक्षिणी
से सकल दशरथ शुनियाछे काने ❋ शब्दभेदी वाणे राजा मारिवे पराणे
पक्षीर पराण फाटे एतेक वलिया ❋ डिम्व लये ठोंटेते आकाशे उठे गिया
पक्षी पलाइया जाय पाइया तरास ❋ ऊर्द्धवाहु करि राजा करेन आश्वास
दशरथ वले पक्षी ना पालाओ डरे ❋ फिरिया आसिया वैस वासार उपरे
स्त्री वाक्ये अपराध नाहिक तोमार ❋ तोमार वचने ज्ञान हइल आमार

१ मिथ्या २ झूठा, वकवादी ३ कहने और करने में अन्तर ४ पितामह
५ अण्डे-वच्चे ६ अन्यत्र, और कही ७ वृक्ष की गोद में ८ जरा भी ९ होश।

कटहल - आमादिक जे कानन ※ खगन-अधीन कीन ते राजन
चले हेलि स्यन्दन सुरलोका ※ सभा-अमरगन[1] भूप विलोका
रन हुंकरत गर्जि महराजा ※ कहौ अमरगन कित सुरराजा
पुनि-पुनि समर हेत ललकारा ※ पूछेउ देव, क्रोध कस धारा
तुम सन रारि[2] न सुरपति भावा[3] ※ अनावृष्टि, नृप, जोगु सुनावा
चौदह वर्ष अवध जल नाहीं ※ उपज न अन्न, जीव बिलखाहीं
विनसत सृष्टि विकल जलहीना ※ नर, पसु, पच्छि, विटप, जलमीना
पावस बिन, नित सहत कलेसा ※ सकल करत अपमान नरेसा

दो० कै[4] सुवृष्टि बरसैं जलद, अवध चराचर लोक ।
हरषैं; नतरु[5], न दोष मोहिं, लहौं जीति सुरलोक ॥ ६३ ॥

चले अमरगन जहँ सुरनाथा ※ सबिधि वरन किय दसरथ-गाथा
काज कवन ? सुरपुरी प्रवेसा ※ मनुज न भय! किमि? कहेउ सुरेसा
अहंकार तजि सुनौ पुरंदर[6] ※ नहिं निस्तार[7] भूप सन संगर[8]
शब्दबेध संधान - प्रवीना ※ इत रन मनहुं प्रान उत दीना
मिटै न जब लौं नृप मन-तापा ※ तिन सन करौ मधुर संलापा

एइ वने यत आम्र काँठालेर भार ※ आजि हैते दिलाल तोमारे अधिकार
पक्षी सम्वोधिया राजा राखि वासा घरे ※ आपनि गेलेन परे इन्द्रेर नगरे
स्वर्गेते पाइया राजा देवेर समाजे- ※ कोथा इन्द्र वलिया डाकेन देवराजे
तर्जन करेन दशरथ महाराज ※ रणं देहि रणं देहि कोथा सुरराज
देवेरा वलेन राजा क्रोध कि कारण ※ तव संगे वासव ना करिवेक रण
भूपति वलेन मम राज्ये नाहि वृष्टि ※ अनावृष्टि हेतु मोर नष्ट हैल सृष्टि
मम राज्ये वृष्टि नाहिं हय कोन काजे ※ अनावृष्टि हेतु यत प्रजागण मजे
चौद्द वर्ष अनावृष्टि नाहि हय धान ※ प्रजागण दुःखे मोरे करे अपमान
सुवृष्टि करिया सृष्टि राखुन सम्प्रति ※ नतुवा जिनिया लव ए अमरावती
एतेक शुनिया यान यत देवगण ※ इन्द्रके कहेन ताँर सब विवरण
वासव वलेन राजा एलो कि कारणे ※ मनुष्य हइया निन्दे शङ्का नाहि मने
देवेरा वलेन इन्द्र त्यज अहङ्कार ※ 'राजार युद्धेते कार' नाहिक निस्तार
शव्दभेदी वाण राजा शव्द मात्रे हने ※ तार सने युद्ध करि मरिव आपने
यावत् मनेते राजा नाहि पाय ताप ※ राजार सहित कर मधुर आलाप

---

१ देवताओं की सभा २ झगड़ा ३ पसंद ४ या तो ५ नही तो ६ इन्द्र
७ पार पाना ८ समर, युद्ध ।

सुरन-सीख सुरपति हिय आनी ※ पाद अर्घ्य दसरथ सन्मानी
भूपति कहेउ, सुनहु सहसानन ※ मम पुर अनावृष्टि केहि कारन
वृष-रोहिणी दीठि शनि डारी ※ कारन अजल[1] कहेउ असुरारी
करौ निवारन तासु नरेसू ※ महावृष्टि सरसै तव देसू
दशरथ रथ शनिलोक चलावा ※ शनि-निकेत पुनि हाँक[2] लगावा
रविसुत[3] दीठि भूप-रथ भंगा ※ गिरे गगन सों अष्ट तुरंगा
दड़ा[4] टूट रथ रहित अधारा ※ भ्रमत चक्रवत व्योम[5] मँझारा
तहाँ न कोउ नृप मीत-सहाई ※ सोइ छन, नभ कहुँ उड़त जटाई
लखेउ भ्रमित रथ, नरपति-पाता ※ चूर अथाह होय गिरि गाता[6]
जो संकट सों महिप उबारौं ※ विरद सुयस चहुँ दिसि विस्तारौं
धर्मधुरीन[7], रहत मम, नासा ※ गिरै धरनि कातर, अति त्रासा!

युगुल पसारे पंख नभ, अतुल बीर खगनाथ ।
पंख-उपर थिर भूप पुनि, हय जोरे रथ साथ ।। ६४ ।।

बाँधि दड़ा अरु ध्वजा पताका ※ सारथि पवन-तुरंगन[9] हाँका

देवतार वाक्य इन्द्र नाहि करे आन ※ पाद्य अर्घ्य दिया ताँर करेन सम्मान
कहिलेन दशरथ करि सम्वोधन ※ मम राज्ये अनावृष्टि हय कि कारण
वासव वलेन राजा शुन एक चित्ते ※ पड़िल शनिर दृष्टि रोहिणी नक्षत्रे
छाड़ाइते पार यदि रोहिणीते दृष्टि ※ हइवे तोमार देशे तवे महावृष्टि
चलिलेन दशरथ इन्द्रेर वचने ※ रथ चालाइया जाय शनिर सदने
शनि घरे वलि राजा डाकिलेन ताय ※ वाहिर हइया शनि सम्मुखे दाँड़ाय
शनिर दृष्टिते तवे छिड़े रथदड़ा ※ आकाश हइते पड़े तार अष्ट घोड़ा
छिड़िया रथेर दड़ा नाहि पाय स्थल ※ पाके पाके पड़े रथ करे टलमल
चक्रवत् फिरे रथ गगन उपरे ※ हेनजन नाहि ये राजारे रक्षा करे
जटायु नामेते पक्षी उड़े अन्तरीक्षे ※ आकाशे थाकिया पक्षी रथ पड़े देखे
भूमेते पड़िवे राजा नाहि पेये स्थल ※ राजार हइवे चूर्ण शरीर सकल
हेन काले करि यदि राजार उद्धार ※ घोषिते थाकिवे यश आमार अपार
दशरथ महाराज धर्म्म अधिष्ठान ※ हेन राजा त्यजे प्राण मम विद्यमान
कातर हइवे राजा पड़िले भूमिते ※ इहाभावि पक्षीराज दुइ पाखा पाते
पाखा पाति रहिल जटायु महावीर ※ हइलेन ताहार उपर राजा स्थिर
स्थिर हैया दशरथ रथे जोड़े घोड़ा ※ ध्वजा आर पताका वान्धेन जोड़ा जोड़ा

१ वर्षा का अभाव २ आवाज ३ शनिश्चर ४ वंधन ५ आकाश ६ शरीर ७ धर्म के आधार (दशरथ) ८ घोड़े ९ हवा के समान चलनेवाले घोड़ों को ।

सोचत नृप, उत हय[1] नभ ओरा ❊ बचे प्रान मम काहि निहोरा[2]
अज किंबा रघु, पितर भुवाला ❊ मेटो विपति कवन यहि काला
सम्मुख दरस जटायु पावा ❊ रथ चढ़ाय, मृदु वचन सुनावा
गिरत धरनि विनसत मम काया ❊ बचे प्रान तव पाय सहाया
को तुम भद्र? कहौ पितु नामा ❊ परिचय देहु बसौ केहि ग्रामा
नाम जटायु, पच्छि मम जाती ❊ जेठ बंधु मम, नृप सम्पाती
गरुड़-तनय, सुभाव नभचारी ❊ तहँ गिरत तव विपति निहारी
पंख पसारि भार तव साधा ❊ सोइ प्रकार, विनसी तव व्याधा
तैं मम सखा श्रेष्ठ सुनु प्रानी ❊ दिय जिउदान, न जाय बखानी
मुदित-दोऊ पुनि अगिन जराई ❊ करि साखी सोइ कीन मिताई
नरपति - बन्धु विहगपति भयऊ ❊ नृप सन बिदा माँगि घर गयऊ
सुनै जटायु-कथा धरि ध्याना ❊ तासु विपति समुखैं भगवाना

राजा दशरथ का दुबारा शनि के निकट गमन और शनि द्वारा गणेश का जन्म-
वृत्तान्त वर्णन तथा दशरथ को वरदान

शनिगृह पुनि धाये अजनन्दन ❊ सभय मूँदि दृग कह रविनन्दन[3]

सारथि घोड़ार गाय मारिलेक छाँट ❊ आरबार चले घोड़ा आकाशेर बाट
राजा बलिलेन रथ राख एइखान ❊ राखिल आमार प्राण देखि कोन जन
रघु पितामह किंवा सेइ अज पिता ❊ एमन विपदे केवा आमार रक्षिता
तुलिलेन पक्षिराजे रथेर उपरे ❊ मधुर सम्भाषे राजा जिज्ञासेन तारे
आछाड़ खाइया पड़िताम भूमितले ❊ करिले आमारे रक्षा तुमि हेन काले
कोन देशे थाक तुमि काहार नन्दन ❊ परिचय देह मोरे तुमि कोन जन
पक्षीराज बलिलेन आमि पक्षीजाति ❊ मम ज्येष्ठ भाइ पक्षी भूपति सम्पाति
जटायु आमार नाम गरुड़-नन्दन ❊ अन्तरीक्षे भ्रमि आमि उपर गगन
आछाड़ खाइया पड़ देखिया राजन ❊ राखिलाम पाखा पाति तोमार जीवन
दशरथ बलिलेन तुमि मोर मित्र ❊ प्राणदान दिले मम कि कह चरित्र
तारपर रथ काष्ठ खसाइया आनि ❊ ज्वालिलेन हुतभुक् नृपति आपनि
उभये मित्रता करे अग्नि करि साक्षी ❊ हइल राजार मित्र जटायु ये पक्षी
जटायु पक्षीर कथा शुने येइ जन ❊ सर्वत्र ताहारे राखे देव नारायण
विदाय हइया पक्षी चलिलेक देशे ❊ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

दशरथेर पुनर्व्वार शनिर निकटे गमन ओ शनि कर्त्तृक गणेशेर जन्म-वृत्तान्त-वर्णन
एवं शनि कर्त्तृक दशरथ के वरदान

पुनश्च गेलेन राजा शनिर भवने ❊ राजारे देखिया शनि भीत हय मने

१ घोड़े २ अनुग्रह से, बदौलत ३ शनिश्चर।

पाय प्रथम कुदीठ निस्तारा ॐ सकेँउ जौं नृप आगम यहि बारा
सारभौम रविकुल मणि राजन ॐ जन्मैं तव निकेत नारायन

दो० धर्मरूप ! सोइ हेत नृप, मम सक दीठि निवार[1] ।
नतरु[2] दीठ-शनि परत छन, सकल होत जरि छार ॥ ६५ ॥

तासों मोरि कुदीठ निवारी ॐ आवौ भूपति घूमि पछारी
सुनौ कथा, धरि ध्यान, पुरातन ॐ जिमि गनेस पायउ गज-आनन
सुनेउ जनम-सुत गौरि-निकेता ॐ जुरे सकल सुर दरसन हेता
देव-समाज न शनि अवलोका ॐ कहत, न रवि-सुत, देवि! विलोका
उमा दूत पठयेउ मम वासा ॐ आयसु पाय चलेउँ कैलासा
परत दीठि मम सुवन-गिरीसा[3] ॐ लखेउ सबन उत शिशु विन सीसा
देव अवाक् शंभु मन चिन्ता ॐ पारवती उर ताप अनन्ता
जस के तस, न सभा कोउ त्यागी ॐ मम सुत सीस हरन को भागी[4]
कहत अमरगन, हे जग-जननी ॐ असुभ दीठि-शनि कै यह करनी
सुनि, सकोपि शनि-बध मन ठानी ॐ लै त्रिशूल हुंकरीं भवानी
चहुँ, मैं फिरत, न आश्रय पावा ॐ सुरन बीच लुकि, प्रान बचावा
चण्डि-कोप ! कर शूल कराला ॐ निरखि देवगन हाल-बिहाला

शनि बले दशरथ आइले आवार ॐ तुमि से आमार दृष्टे पाइले निस्तार
दशरथ तुमि सूर्य्यवंशेर भूषण ॐ लवेन तोमार घरे जन्म नारायण
राज-चक्रवर्ती तुमि धर्म अवतार ॐ ते कारणे मोर दृष्टे पाइले निस्तार
मुदिया नयन शनि दशरथे बले ॐ सम्मुख छाड़िया तुमि एस पृष्ठमूले
पूर्व्व कथा कहि राजा ताहे देह मन ॐ येमते शिवेर पुत्र हैल गजानन
जन्मिलेन गणपति गौरीर नन्दन ॐ देखिते गेलेन तथा यत देवगण
देवगण वले देवी तोमार आदेशे ॐ आइल सकल देव शनि ना आइसे
दूत पाठइया दिल आमार गोचर ॐ देखिते गेलाम पुत्र कैलास शिखर
शुभ दृष्टे गिया येइ मुखपाने चाइ ॐ सवे वले गणेशेर मुण्ड देखि नाइ
ता देखिया देवगण हइल विस्मित ॐ पार्व्वतीर मनोदुःखे महेश चिन्तित
पार्व्वती वलेन हेथा आछे देवगण ॐ आमार पुत्रेर मुण्ड निल कोन जन
देवगण वलेन शुनह विश्वमाता ॐ शनिर दृष्टिते भस्म गणेशेर माथा
देवतार वाक्य शुनि रुपिया भवानी ॐ आमारे वधिते जान लये शूलपाणि
पलाइया जाइ आमि स्थान नाहि पाइ ॐ देवतार आड़ालेते तखनइ लुकाइ
शूल हस्ते आइलेन देवी महाकोपे ॐ पार्व्वतीर कोप देखि देवगण काँपे

---

१ वच निकलना २ नही तो ३ शिव के पुत्र गणेश ४ जिम्मेदार ।

विनवैं, अगम, अकथ तव दाया * आदिशक्ति, जगगति, जगमाया
शनि कुदीठ भव सीस-विहीना * कौतुक वर माता तुम दीना
सोइ वर, वरदायिनि विपरीता[1] * शनि-वध उचित न मातु प्रतीता
स्वयं सिर्जि पुनि-ताहि निपाती * तासु त्रान जगती केहि भाँती

दो० विनय गौरि सन कीन विधि[2], शनिबध कतहुँ न हेत ।
धरौ धीर, गनपति-वदन[3], सिरजौं, करौं सचेत[4] ॥ ६६ ॥

चलेउ पवन विधि-आयसु पाई * लखेउ अबुध सोवत गजराई[5]
उतर-सीस[6] जल-गंग-अघाना[7] * निरखि मरुत[8] अवसर मनमाना
काटि भाल-गज[9] आनि बहोरी * नर-तन, मुख-कुञ्जर इमि जोरी
रूप बिहंगम तनय बिलोका * कस गजवदन ? गौरि मन सोका
अन्य-देव-सुत-छबि मन मोहा * निज नन्दन निरखत मन छोहा
विधि[2] विधान दै, पुनि समुझावा * तव सुत आदि-पूज-पद पावा
तजि गजवदन, इतर सुर ध्यावै * धर्म, लोक-परलोक नसावै
ऐरावत इत सीस विहीना * निरखि अपार इन्द्र दुख कीना

सकल देवतागण करिछे स्तवन * आपनि सृजिया शनि मार कि कारण
तुमि आद्याशक्ति माता जगतेर गति * तोमार महिमा बले काहार शकति
आपनि दियाछ वर परम कौतुके * शनि यारे देखे तार माथा नाहि थाके
पाइया तोमार वर तोमाते परीक्षा * तुमि यदि मार तारे के करिबे रक्षा
शनिके मारह केन विधाता बलेन * स्थिर हओ जीयाइब तोमार नन्दन
आज्ञा करिलेन ब्रह्मा तबे पवनेरे * मुण्ड काटि आन येवा उत्तर शियरे
गङ्गा नीर खाइया इंद्रेर ऐरावत * उत्तर शियरे शुयेछिल निद्रागत
काटिया ताहार मुण्ड आनिल पवन * रक्तमांसे जीयाइल हैल गजानन
शरीर नरेर मत बदन करीर * देखिया हइल बड़ दुःख पार्व्वतीर
सकल देवेर पुत्र देखिते सुन्दर * गजमुख वसिवेक ताहार भितर
विरिञ्चि वलेन करि गणेशेरे राजा * आगे गणेशेर पूजा पिछे अन्य पूजा
गणेश थाकिते येवा अन्य देवे पूजे * पूर्व्व धर्म्म नष्ट तार हय सव काजे
ऐरावत मुखे जीयाइल लम्बोदर * हस्तीर शोकेते कान्दि कहे पुरन्दर

१ शनि को स्वयं भगवती से यह वरदान प्राप्त था कि उसकी दृष्टि में आते ही वस्तु नष्ट हो जाय । अब उसका प्रयोग उन्ही के पुत्र पर हो जाने से, उन्हे अपने ही दिये वर के विपरीत, शनि पर कोप न करना चाहिए । विनम्र देवताओं ने इस प्रकार निवेदन किया २ ब्रह्मा ३ मुख ४ प्राणयुक्त ५ ऐरावत ६ उत्तर दिशा की ओर सिर रखकर ७ तृप्त ८ पवन, वायु ९ गज-मस्तक ।

उच्चैःश्रवा - दन्तिपति[1] हीना ※ किमि सुरपति सुर-साज विहीना
अनिल[2] बहोरि विरञ्चि पठावा ※ श्वेत मतंग[3] पछिम सिर पावा§
लाय कीन गजपतिहिं स-बदना[4] ※पच्छिम शिर अनुचित इमि शयना
बन्दि गौरि, पुनि सहित मतंगा ※ सुरपति चले सुरन लै संगा
गनपति-जनम-कथा शनि बरनी ※ दसरथ सुनौ, दृगन मम करनी
तैं मानव पुनि-पुनि पग धारा ※ किमि संभव कुदृष्टि निस्तारा
मैं रविसुत, तैं रविकुल जाया ※ सोइ कारन निबरेउ[5] नृपराया
जो जानौं तव आगम हेतू ※ पूरन करौं भानु - कुल - केतू

दो० तव लोचन रोहिनि ग्रसित, विकल धरा, जल-हीन ।
भूप-मनोरथ जानि शनि, मुक्त रोहिणी कीन ।। ६७ ।।

तजि विषाद गृह जाहु नरेसू ※ पावस[6] अतुल झरइ तव देसू
तव यश भूप त्रिलोक प्रकासी ※ जब जहँ रोहिनि गृह वृष रासी
तहाँ न शनि आगम सोइ काला ※ लहि रविसुत[7]-वर, तोष[8] भुवाला
दसरथ चले जहाँ सुरराजा ※ तहँ विराज विच देव-समाजा

उच्चैःश्रवा घोड़ा आर ऐरावत हाती ※ ए सब सम्पदे मम नाम सुरपति
आज्ञा करिलेन चतुर्मुख पवनेरे ※ मुण्ड काटि आन येवा पश्चिम शियरे
पश्चिम शियरे शुये श्वेत हस्ती यथा ※ पवन काटिया आनि दिल तार माथा
प्राण पेये ऐरावत गेल निज घरे ※ हेलाय आलस्य नाइ पश्चिम शियरे
देवीरे प्रणाम करि गेल देवगणे ※ गणेशेर जन्म शनि कहिल राजने
शुभदृष्टे कोपदृष्टे यार पाने चाइ ※ आमार दृष्टिते केह रक्षा पावे नाइ
मनुष्य हइया तुमि एस वार वार ※ सूर्य्यवंशे जन्म हेतु पाइले निस्तार
सूर्य्यवंश जात आमि सूर्य्येर कुमार ※ एक वंशे जन्म तेंइ पाइले निस्तार
कि कारणे आसियाछ तुमि मोर पाश ※ वर चाह तोमार पूराव अभिलाष
तखन वलेन दशरथ यशोधन ※ रोहिणीते तव दृष्टि नहे वरिषण
शनि वले आजि हैते छाड़िव रोहिणी ※ अविलम्बे देशे चलि जाओ नृपमणि
आजि हैते तव राज्ये हवे वरिषण ※ घोषिबे तोमार यश ए तिन भुवन
रोहिणी वृषभ राशि हवे येइ जन ※ सेइ राज्ये हवे ना आमार आगमन
हइया सन्तुष्ट नृपे शनि दिल वर ※ चलिलेन राजा इन्द्र निकटे सत्वर
सभाते वसिया इन्द्र सह देवगणे ※ दशरथ बसिलेन ताँर एकासने

१ ऐरावत २ पवन ३ सफ़ेद हाथी ४ शिरसहित ५ बच सके हो ६ वर्षा
७ शनिश्चर ८ तृप्ति ।

§ श्वेत हस्ती के पश्चिम दिशा की ओर शिर रखकर सोने पर शिरच्छेद होने के कारण पश्चिम की ओर शिर करके सोना वर्जित है ।

गाथा, शनि - प्रसाद जिमि पावा ※ सकल सुरपतिहिं भूप सुनावा
बोले वचन देव मन हर्षा ※ सात दिवस अविरल[1] जल वर्षा
घन बरसैं तव धाम नरेसू ※ यथाकाल पावस तव देसू
पाय मनोरथ इमि नृपराई ※ चले अवध मन मुद अधिकाई
पुनि, 'आवर्त्त', 'द्रोण' अरु 'पुष्कर' ※ घन 'संवर्त' चारि जे जलधर§
आयसु-इन्द्र पाय दिन साता ※ अवध-धरा अविरल जलपाता
पूरित जल नद, नदी, तडागा ※ हरित रसाल[2] विटप फल लागा
जड़-जंगम[3] सचेत, सुख छावा ※ जिमि तप अन्त मनोरथ पावा
दान, ध्यान, सुख, संपति, साजा ※ इन्द्र सरिस[4] शासन-रत राजा
वयस[5] सहस नव, भूपति बीती ※ सार्द्ध-सप्त-शत[6] रानि निपूती[7]
भार्गव-सुता एक तहँ रानी ※ तनया तासु गर्भ छबिखानी
जन्मी, सुबरन सरिस निहारी ※ 'हेमलता' तिन नाम पुकारी

दो० लोमपाद दसरथ - सखा, अंगप[8] धर्म-धुरीन ।
प्रथम अवधपति सों कबहुँ, जिन अस वाचा लीन ।। ६८ ।।

कहिलेन से सब वृत्तान्त पुरन्दरे ※ शनिके प्रसन्न करिलेन ये प्रकारे
शुनिया राजार कथा देवराज भाषे ※ एक्षणे हइबे वृष्टि जाओ तुमि देशे
सात दिन वृष्टि मात्र झड़ न करिब ※ तोमार राज्येते जल यथाकाले दिब
विदाय हइया राजा गेलेन स्वदेशे ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे
अनुज्ञा करिल इन्द्र चारि जलधरे ※ सात दिन वृष्टि करे अयोध्या-नगरे
आवर्त्त सम्वर्त्त द्रोण आर ये पुष्कर ※ चारि मेघे वृष्टि करे पृथिवी उपर
नद नदी सरोवर पूर्ण हैल जले ※ अनावृष्टि घुचिल वृक्षेते फल झुले
जीवन पाइया सब जीवेर समृद्धि ※ तपस्यार अन्ते येन मनोरथ सिद्धि
दान ध्यान सदा करे राज्ये प्रजागण ※ सुखे राजा राज्य करे सम्पदभाजन
राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर ※ राजार वयस नय हाजार वत्सर
सात शत पञ्चाश ये नृपति रमणी ※ कारो पुत्र ना हइल वन्ध्या सब नारी
भार्गव राजार कन्या छिल एक जन ※ तार गर्भे एक कन्या जन्मिल तखन
परमा सुन्दरी कन्या अति सुचरिता ※ स्वर्णमूर्त्ति देखे नाम राखे हेमलता
दशरथ सखा अङ्गदेशेर नृपति ※ लोमपाद अंगदेशे करित बसति
जन्मियाछे कन्या दशरथेर शुनिया ※ लोमपाद आने तारे लोक पाठाइया

---

१ लगातार २ रस वाले (वृक्ष) ३ चल-अचल सृष्टि ४ समान ५ उम्र ६ साढ़े सात सौ ७ निस्संतान ८ अंग देश के नरेश ।

§ इन नामों वाले चार बादलों को अयोध्या में जल बरसाने हेतु इन्द्र ने नियुक्त किया ।

सुता-जनम सुनि सोइ अनुसारी ❋ पठये दूत अंग-अधिकारी[1]
दसरथ विवस, न आनाकानी[2] ❋ लोमपाद गृह कन्या आनी
तासु गेह कन्या प्रतिपाला ❋ राजत अवध, अवध-महिपाला

दशरथ के द्वारा अंधमुनि के पुत्र का वध

भावी प्रवल ! दिवस अेक राजन ❋ चले साजि मृगया[3] हित कानन
शत शत गज, रथ सहित तुरंगा ❋ मृग हित फिरत सिथिल नृप-अंगा
निबिड़[4] अरण्य, न मृग कहुँ पेखा ❋ 'अन्धक' मुनि तप-उपवन देखा
तहँ तरु-तर नृप किय विश्रामा ❋ जहँ तडाग लख दिव्य ललामा
अंधक-पुत्र 'सिंधु'[5] सर तीरा ❋ घट ढेंढुकाय[6] भरत तहँ नीरा
डब-डब धुनि घट-मुख जल भरई ❋ मृगी पियति जिमि जल—सुनि परई
खाय दूब-तृण सर जलपाना ❋ नृप अनुमानि बान संधाना
सब्धबेध सायक तज चापा ❋ सोइ छन सिन्धु वदन सर व्यापा
मृगी लेन नृप पनघट धाये ❋ प्रान कण्ठगत मुनि-सुत पाये
बान विद्ध लखि भ्रम निज जाना ❋ अहह ! विकल लीने मुनि-प्राना

सत्य छिल पूर्व्वेते करिते नारे आन ❋ लोमपाद पुण्यवान धर्म्म अधिष्ठान
कन्या रहे लोमपाद भूपतिर घरे ❋ दशरथ राजत्व करेन निज पुरे

दशरथ कर्त्तृक अन्धमुनिर पुत्र-वध

दैवेर निर्व्वन्ध आछे ना जाय खण्डन ❋ मृगया करितें राजा करेन गमन
हस्ती घोड़ा राजार चलिल शते शते ❋ मृग अन्वेपिते राजा वेड़ान वनेते
भ्रमिया वेड़ान राजा निविड़ कानन ❋ अन्धकेरे तपोवने गेलेन तखन
श्रमयुक्त हइया वसेन वृक्षतले ❋ दिव्य सरोवर देखिलेन सेइ स्थले
अन्धक मुनिर पुत्र सिन्धु नामे धरे ❋ कलसीते जल भरे सेइ सरोवरे
कलसीर मुख करे वुक् वुक् ध्वनि ❋ राजा भावे जल पान करिछे हरिणी
पाता लता खाइया पशेछे सरोवर ❋ इहा भावि वधिते जुड़ेन धनुःशर
शव्दभेदी वाण राजा शव्द मात्र हने ❋ मुनि पुत्रोपरि वाण पड़े सेइ क्षणे
मृग ज्ञाने बाण हने राजा दशरथ ❋ वाणाघाते मुनि पड़े प्राण ओष्ठागत
मृगेर उद्देशे राजा यान दौड़ादौड़ि ❋ मृग नहे मुनि-पुत्र यान गड़ागड़ि
देखेन सिन्धुर वुके विद्ध आछे वाण ❋ अति भीत दशरथ उड़िल पराण

१ अंगनरेश लोमपाद २ संकोच, टाल-मटूल ३ शिकार ४ घने ५ माता-पिता के अनन्य सेवक लोकप्रसिद्ध 'श्रवण' का नाम 'सिन्धु' कृत्तिवास ने लिखा है ६ झुकाकर ।

बोल न मुख, हत अंधकुमारा * कियेउ कछुक जल हेत इसारा[1]
अञ्जलि जल नृप द्विज-मुख दीना * सरसति 'सिंधु' सचेतन कीना
धुनत सीस, दसरथ संतापा * सो लखि मुनिसुत दीन न शापा

दो० लाभ न दीन्हे शाप कछु, होहु न भीत भुवाल ।
टरै न टारे करमगति, जो विधि लिखी कपाल ॥ ६९ ॥

सुरति[2] कथा मोहिं जनम पुरातन * मम तन भूप-सुवन, सुनु राजन !
प्रिय आखेट गुलेल अनन्दा * नित कानन मारौं खग-वृन्दा
युगुल कपोत[3] निरखि तरु-डारी * तिनहिं गुलेल साधि तकि मारी
गिरत कपोत कपोतिनि तापा * व्यथित विहंगिनि दिय मोहिं शापा
खगी-शाप-तरु-किंशुक[4] फूला * तव सर हतन मोर अनुकूला[5]
कस प्रमाद ? कस शोक ? नरेसू ! * मम बध तव न दोष लवलेसू
तदपि कलेस न बिसरै[6] दारुन * अंध जननि-पितु श्रीफल-कानन
मम बिन मरैं, जुगुल बिलखाई * मरनकाल तिन दरस न पाई
रहेँउ[7] अंध-अंधिनि कै आसा * मेटै को तिन छुधा-पिपासा ?
को फल-सलिल देय ढिग जाई * विनसैं अबुझ छोभ अधिकाई

बुके बाण बाजियाछे कथा नाहि सरे * 'जल देह' बले मुनि हस्त अनुसारे
अञ्जलि पूरिया राजा आनिल जीवन * मुखे दिवामात्र मुनि पाइल चेतन
शिरे हस्त दिया राजा करे मनस्ताप * व्याकुल देखिया मुनि नाहि दिल शाप
मुनि बले दशरथ भय कि कारण * तोमारे शापिया आमि पाब कत धन
कपाले या थाके याहा ना हय खण्डन * पूर्व्व जनमेर कथा हइल स्मरण
पूर्व्वेते छिलाम आमि राजार कुमार * मारिताम बाँटुलेते पक्षी अनिवार
कपोत कपोती पक्षी छिल एक डाले * कपोतेरे मारिलाम एकइ बाँटुले
मृत्युकाले कपोती आमारे दिल शाप * परजन्मे एइ रूप पाबे मनस्ताप
व्यर्थ ना हइल सेइ पक्षीर वचन * होइल तोमार बाणे आमार मरण
लइला आमार प्राण कोन अपराधे * आमारे मारिया वड़ पड़िले प्रमादे
अन्ध पिता माता मम श्रीफलेर वने * आजि तारा मरिबेन आमार बिहने
एत बड़ दुःख मम रहिल ये मने * मृत्युकाले देखा ना हइल दोंहासने
आमि अन्धकेर प्राण हइया छिलाम * तृष्णाय सलिल फल क्षुधाय दिताम
आर केवा फल जल दिबेक दोंहाके * अनाहारे मरिबेक आमा पुत्र शोके

१ संकेत, इशारा २ याद ३ कबूतर का जोड़ा ४ कबूतरी के शाप रूपी वृक्ष में फूल निकला ५ मुनासिब, उचित ६ भूलता ७ था ।

करौ काज अेक, शव नृपराई ❋ राखौ जनक-जननि ढिग जाई
नहिं अनुसरे[१], नसै संसारा ❋ तव अपराध न पुनि प्रतिकारा[२]
सिथिल गात 'हरि' नाम उचारा ❋ बही सिंधु-मुख शोनित[३] धारा
कम्पमान लखि भूप अधीरा ❋ लियेउ खैंचि सर सिन्धु-सरीरा
सोचति पुनि कस कौन विधाता ❋ मृगया फिरत फसेउँ द्विज-घाता
पुनि शव[४]-सिंधु कंध धरि राजन ❋ चले, रुदन बहु, अंधक-कानन

दो० शकुन असंगल इत भुजा, दृग फरकत विपरीत।
कस विलंब सुत आगमन ? पूछत मातु सभीत* ॥ ७० ॥

कहत अंध कस मति बौरानी ❋ नित समीप पावत फल पानी
आज दूरि कहुँ कानन हेरा[५] ❋ सोइ विलंब कारन सुत केरा
चर्चा-सुवन करैं दोउ प्रानी ❋ सोइ अवसर शव, नृप तहँ आनी
सूख पात, श्रीफल चरचरहीं ❋ आयेउ तात, अंध मुनि कहहीं
जोति न लोचन, पल-पल भारी ❋ अहह ! पुत्र ! दोउ कहत पुकारी
दिवस उपास[६] न किय जलपाना ❋ असन[७]-नीर दै राखहु प्राना

एइ सत्य दशरथ करह आपने ❋ आमा लैया जाओ पिता मातार सदने
इहा विना तोमार नाहिक प्रतिकार ❋ नहे सृष्टि नाश हवे मजिवे संसार
मृत्युकाले सिन्धुमुनि नारायणे डाके ❋ नारायण बलिते उटिल रक्त मुखे
देखि दशरथ हइलेन कम्पमान ❋ खसाइलेन ताहार बुक हैते वाण
भूपति भावेन आसि मृग मारिवारे ❋ घटिल तपस्वी हत्या आमार उपरे
मृत मुनि तुलि राजा लइल काँधेते ❋ अन्धकेर वने गेल काँदिते काँदिते
हेथा तपोवने बसे अन्धक अन्धकी ❋ वाम नेत्र भुज स्पन्दे अमंगल देखि
गृहिणी वलेन नाथ ए कि कुलक्षण ❋ आजि केन पुत्रेर विलम्ब एत क्षण
अन्धक बलेन शुन पागली गृहिणी ❋ आर दिन निकटे पाइत फल पानि
आज बुझि गियाछे से दूरस्थ कानन ❋ सेइ हेतु विलम्ब हइल एतक्षण
एइ कथावार्त्ता ताँरा कहेन दुजन ❋ मड़ा काँधे करि राजा गेलेन तखन
शुष्क श्रीफलेर पाता मच मच करे ❋ अन्धक वलेन एइ पुत्र एल घरे
चक्षु नाहि मुनिर ये देखिते ना पाय ❋ एस पुत्र वलिया डाकिछे उभराय
कालिकार उपवासी करिब पारण ❋ फल जल दिया वापू राखह जीवन

१ ऐसा न करने पर २ प्रायश्चित्त ३ रक्त ४ मृतक शरीर ५ ढूँढ़ा
६ लंघन, उपवास ७ भोजन।

* अपशकुन होने पर, अपने पुत्र सिंधु (श्रवण) के आने में विलंब देख अंधी माता ने श्रवण के अंधे पिता से डरते हुए पूछा।

दोउन गोहार[1], भूप मन त्रासा * संसय-बस न जात तिन पासा

राजा दशरथ को अन्धक मुनि का शाप

आगे बढ़त, हटत पिछलाहीं * सुत लखि मौन, अंध घबराहीं
जनक-जननि सन कस उपहासू * जोतिहीन-हिय-जोति-प्रकासू
धरत ध्यान कौतुक[2] मुनि देखा * धुनेउ सीस कर, रुदन विशेषा
दसरथ! तव-सायक सुत घाला * शव समीप आनौ नरपाला
"सुवन-बिछोह[3] प्रान तव जाहीं * इतर शाप मुख निकसत नाहीं
पुत्र-शोक दारुन अनुतापा * भोगहु नृप", इमि अंध विलापा
"तजब प्रान दोउ", सुनि नरराई * शाप सरिस-वरदान[4] सुहाई
सत[5] द्विज-वचन फलवती मंसा[6] * मरौं भले, निरखौं अवतंसा[7]
विष्णु-तुल्य मुनि मोहिं प्रतीता * अमिट वचन तव, हर्ष अतीता

दो० सुत-वियोग किमि वर-सरिस? लखेउ अंध धरि ध्यान।
नृप-निकेत[8] जन्मैं स्वयं कृपासिंधु भगवान ।। ७१ ।।

दुइ जने डाक छाड़े राजार तरास * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथेर प्रति अंधकेर अभिशाप

देखि दुइ अन्धे राजा सन्देह अन्तरे * याइते नारेन अग्रे पाछु यान धीरे
कहिल अन्धक मुनि करिया विश्वास * किवा माता-पिता सने कर उपहास
देखिते ना पाय मुनि बसिलेक ध्याने * सकल वृत्तान्त मुनि क्षणेकेते जाने
चक्षु भासे नीरे करे कराघात शिरे * बले, राजा मारियाछे पुत्र एक तीरे
मुनि बले एस दशरथ नरपते * मृत पुत्र आनिले आमाके देखाइते
आर किवा दशरथ, शापिब तोमाके * एइ मत तोर प्राण जावे पुत्रशोके
पुत्रशोके मरिव आमरा दुइ प्राणी * पुत्रशोक ये यन्त्रणा जानिवे आपनि
मुनि शाप दिल यदि राजार उपरे * दशरथ कहिछेन प्रफुल्ल अन्तरे
'शुभमस्तु' मुनिवाक्य ना हइबे आन * देखिया पुत्रेर मुख जाय जावे प्राण
तोमा मुनि देखि येन विष्णुर समान * तोमार वचन सत्य होक नहे आन
तव शापे मुनि मम हरिष अन्तर * शाप नहे आमार हइल पुत्र-वर
अन्ध बले दशरथ वञ्चित सन्ताने * पुत्रशोके शाप दिनु वर करि माने
ध्यान करि जानिल अन्धक तपोधन * इहार घरेते जन्मिवेन नारायण

१ पुकार २ रहस्य ३ वियोग ४ वरदान के समान ५ सत्य ६ मनोकामना
७ पुत्र ८ घर।

मम वर[1] सत्य, गेह[2] तव भूपा ❋ चारि अंस हरि जनम अनूपा
पुनि सोइ वचन शाप होइ लागी ❋ पुत्र-बिछोह मरौ तन त्यागी
ग्यारह वर्ष बिलसि सुत चारी ❋ सुत-सूने[3] तन तजौ दुखारी
द्विज कर शाप अकारथ नाहीं ❋ लोचन तजेउँ कोप-मुनि माहीं
पूरुब[4] शाप-कथा मम राई ❋ सुनौ, नैन जिमि जोति गँवाई
श्लीपद-पग त्रिजटा मुनि आये ❋ पितु निकेत मम अलख जगाये[5]
पाद्य अर्घ्य पितु आसन दीना ❋ कस द्विजनाथ, आगमन कीना ?
भिक्षा हेतु, दिवस उपवासी ❋ मुनिवर, मैं भोजन अभिलासी
विधिवत असन[6] अतिथि पितु दीना ❋ सविनय विदा तपोधन कीना
कहेउ तात[7], हे सुत ! अनुसरहू ❋ मुनि-पद बंदि दण्डवत करहू
पग स्थूल, घृणा, लखि जागी ❋ लेउँ तासु रज किमि अनुरागी[8]
नयन मूँदि रज सीस चढ़ावा ❋ 'एवमस्तु'[9] मुनि वचन सुनावा
कथन महर्षि अमिट फल दीना ❋ भये अंध दृग जोति-विहीना
सोइ अपराध दीठि-लिय लीना§ ❋ गमन तपोधन कानन कीना

याह राजा तोमारे दिलाम आमि वर ❋ चारि पुत्र तोमार हवेन गदाधर
मम शापे पुत्रशोके तोमार मरण ❋ पुत्र हैले एकादश वत्सर जीवन
व्यर्थ नाहि हय कभु मुनिर वचन ❋ मुनिर शापेते अन्ध आमार लोचन
पूर्व्व कथा कहि राजा ताहे देह मन ❋ ये शापे हइल मम अन्ध ए लोचन
त्रिजटा मुनिर दुइ चरण डागर ❋ मागिते आइल भिक्षा मम पितृघर
मुनिरे देखिया पिता उठिल तखन ❋ पाद्य अर्घ्य देन तारे बसिते आसन
जिज्ञासा करेन ताँरे केन आगमन ❋ मुनि वले आइलाम भिक्षार कारण
गतकल्य हते आमि आछि उपवासी ❋ भोजन कराओ मोरे तुमि महाऋषि
अतिथि वलिया पिता करान भोजन ❋ विदाय हइया मुनि यान तपोवन
पिता आसि आमारे कहेन सेइ काले ❋ दण्डवत् करह मुनिर पद तले
गोदा पा देखिया ताँर घृणा हैल मने ❋ एमन पायेर धूला लइव केमने
लइलाम नयन मुदिया पद धूलि ❋ आशीर्वाद दिल मुनि एवमस्तु वलि
व्यर्थ ना हइल सेइ मुनिर वचन ❋ इहाते हइल अन्ध आमार लोचन
सेइमत करिलेक आमार गृहिणी ❋ दोंहारे करिया अन्ध घरे गेल मुनि

---

१ वरदान २ गृह ३ अनुपस्थिति में ४ पूर्व जन्म की ५ परमात्मा के नाम पर याचना करना ६ भोजन ७ पिता ८ प्रेम व भक्तिपूर्वक ९ ऐसा ही हो ।

§ यही अपराध पत्नी द्वारा करने पर मुनि ने उसे भी अंधी होने का शाप दिया ।

असिस[1] समान, शाप अनुकूला[2] ❋ नृप तव गेह जनम जगमूला[3]
सुफल सत्य पालन नरराई ❋ रचौ यज्ञ ऋषि 'शृंग' बुलाई

दो० श्रीफल पायेउँ बन फिरत, तव अर्पन नरनाथ।
चरु[4] दीन्हे फल दिव्य सों, प्रगटैं दीनानाथ ॥ ७२ ॥

करुन बैन पुनि अन्धक भाषा ❋ लावहु सुत-शव कित नृप राखा?
दसरथ धरी आनि मृत काया ❋ लोटत छिति बिलखत मुनिराया
नैन विहीन, न निरखत देहीं ❋ परसत कर, सुअंक भरि लेहीं
बहु तप किये, लहेउँ तोहिं ताता ❋ जनक-जननि घालक तव घाता
पुरवत फल-जल छुधा-पिपासा ❋ अंधक-नयन, अंधि कर आसा
सन्ध्या-त्याग न गुरु-अपमाना ❋ दधि-तन्दुल न असन मन आना[5]
पर धन हरेउँ न पाप अचारा ❋ निधन[6] अकाल सुवन कस डारा
कैधौं[7] बिगरि पुरातन करनी ❋ सुत-बिछोह भोगत पितु-जननी
'नारायण' कहि, सन्तति-सोकू ❋ तजि तन, मुनि गमनेउ हरिलोकू
जीवन दुसह, सती पतिहीना ❋ अन्धकि अन्ध-अनुगमन कीना
दसरथ लै पुनि मृतक सरीरा ❋ चन्दन अगरु चिता के तीरा

आमार शापेते राजा पाइले प्रमाण ❋ शापे वर हइल हइबे पुत्रवान
एइ सत्य दशरथ करिबे पालन ❋ ऋष्यश्रृङ्गे आनि कर यज्ञ आरम्भन
श्रीफल पेयेछि आमि भ्रमिते कानन ❋ एइ फल करिलाम तोमारे अर्पण
एइ फले जन्मिबेन देव चक्रपाणि ❋ चरुर भितरे एइ फल दिओ तुमि
पुनश्च कहेन मुनि तारे मृदु स्वरे ❋ कोथा आछे सिन्धुपुत्र आनि देह मोरे
मृतपुत्र दशरथ दिलेन आनिया ❋ पुत्र कोले करि मुनि कान्दे लोटाइया
नयन विहीन मुनि देखिते ना पाय ❋ कोलेते करिया हस्त शरीरे बुलाय
जन्मिला ये पुत्र तुमि तपेर सञ्चारे ❋ तोमार मरणे मृत्यु घटिल आमारे
अन्धेर नयन तुमि हये छिला जानि ❋ फल दिते क्षुधाय तृष्णाय दिते पानि
गुरुनिन्दा नाहि करि नहे सन्ध्यावाद ❋ दधिर संयोगे रात्रे नाहि खाइ भात
पूर्व्वजन्मे कार कि करेछि विघटन ❋ गुरुनिन्दा करेछि हरेछि स्थाप्यधन
एतेक बलिया मुनि नारायण डाके ❋ नारायण मन्त्र जपि मरे पुत्रशोके
पतिव्रता नाहि जीये पतिर मरणे ❋ अन्धकी छाड़िल प्राण अन्धकेर सने
तिन मृत ल'ये राजा गेल सरोवरे ❋ अगुरु चन्दन काष्ठ आनिल सादरे
करिलेन चिता राजा उत्तर शियरे ❋ तिनजने शोयाइल ताहार उपरे

---

१ आशीर्वाद २ माफ़िक ३ भगवान् ४ यज्ञ के हवन के लिए तैयार किया अन्न या खीर ५ दही-भात-जैसे उलटे भोजन पर रुचि नहीं की ६ मृत्यु ७ या, फिर।

आस-पास पितु जननि सोवाये ❋ बीच 'सिंधु'-शव भूपति लाये
उतर शीस-शव अनल लगाई ❋ परसि नीर सर, अस्थि बहाई
लिये कंध मुनि-घातक पापा ❋ गये अवध नृप, हिय संतापा
चले बहोरि वशिष्ठ-निकेता ❋ भेंट न, गुरु गमने तप-हेता
आश्रम, वामदेव गुरुनन्दन[1] ❋ सकल कथा भूपति किय बरनन

दो० मुनिकुमार-वध पाप सन, उबरौं कौन उपाय ?
गुरुनन्दन ! आयसु करौ, जासों पाप नसाय ॥ ७३ ॥

वध अकाल,[2] नृप पाप महाना ❋ यज्ञ-दान कीने नहिं त्राना
शास्त्र पुरान मनीषि विचारी ❋ वालमीकि जिन मंत्र उबारी[3]
राम नाम त्रय बार कहावा ❋ सकल पाप सोइ नाम नसावा
पाप-छीन, गृह भूप सिधाये ❋ साँझ वशिष्ठ तपोवन आये
फलाहार, सुस्थिर, मन मोदा ❋ सुत-पितु रत दोउ वाग्-विनोदा
वामदेव पुनि अवसर पाई ❋ कथा भूप-आगमन सुनाई
सुवन अंधमुनि सिन्धु बखाना ❋ शब्दबेध दसरथ संधाना
अबुझ घात द्विज, नृप अति दीना ❋ नसै पाप किमि, याचन कीना
याग, दान, तप, यतन न भावा ❋ तीनि बार नृप 'राम' कहावा

दुइजन दुइदिके पुत्र मध्यखाने ❋ शोयाइल तिन जने वेष्ठित आगुने
चिता प्रक्षालिया सेइ सरोवर तीरे ❋ कान्दिया फेरेन राजा अयोध्यानगरे
मुनि हत्या करि राजा अजेर नन्दन ❋ अमनि कान्दिया गेल वशिष्ठेर वन
गियाछेन वशिष्ठ तपस्या करिवारे ❋ वामदेव पुत्र ताँर आछेन आगारे
सकल वृत्तान्त राजा कहिलेन ताँरे ❋ मुनिहत्या करियाछि वनेर भितरे
प्रायश्चित्त इहार कराओ महाशय ❋ कि रूने हइव मुक्त किसे पाप क्षय
मुनि वले अकालेते नाहि यज्ञदान ❋ एइ पापे केमने पाइवे परित्राण
विचार करय मुनि आगम पुराण ❋ वालमीकि ये मंत्र जपि पाइलेन त्राण
तिन बार वलाइल सेइ राम-नाम ❋ पाइलेन भूपति से पापेर विराम
राजा मुक्त हइया गेलेन निज घर ❋ आइलेन संध्याय वशिष्ठ मुनिवर
फलमूल भक्षणे मुनिर सुस्थ मन ❋ पिता पुत्रे कथा वार्ता कन दुइजन
पितारे कहेन वामदेव नीतिक्रमे ❋ दशरथ आसिया छिलेन ए आश्रमे
अंधक मुनिर पुत्र सिन्धु वले यारे ❋ मारिलेन राज शब्दभेदि शरे ताँरे
दीनभावे कहिलेन राजा ए वचन ❋ मुनिहत्या पाप मोरा कर विमोचन
योगयाग स्नान दान नाहि करालाम ❋ तिन वार राजा के वलानु रामनाम

---

१ वशिष्ठ के पुत्र वामदेव २ आयुष्काल बिना पूरा हुए ३ उद्धार किया ।

तपत तैल उफनत लहि बारी[1] ❋ अनल-कोप मुनि गिरा उचारी
रसना[2] 'राम' एक पद लाई ❋ कोटि घात-द्विज पाप नसाई
सो त्रय बार भूप मुख आनी ❋ कस मम तनय? निपट अज्ञानी
तजि वन, अधम श्वपच गति जाई ❋ पितु-पग मुनिज[3] धरे अकुलाई
कहौ तात! किमि शाप विमोचन? ❋ थिर न रोष बहु, कहेउ तपोधन
दसरथ अनघ[4] मंत्र दिय नामा ❋ जनमैं अवध धाम सोइ रामा
सुरसरि - मग रघुनाथ विलोकी ❋ परसहु पद-पंकज पथ रोकी
दो० वामदेव, पितु सीख सुनि, श्वपच-योनि निस्तार[5]।
लियेउ जनम गुह-गेह, नित जोहत[6] अवधदुलार[7] ॥ ७४ ॥

संबर असुर का वध

तपत इन्द्र सम दसरथ वीरा ❋ संबर - असुर उतै सुर - पीरा
बैजयन्ति अमरावति जीती ❋ बसत न तहँ सुरवृन्द सभीती
यतन सोधि कछु कहौ विधाता ❋ कह सुरेस, किमि दनुज निपाता
जो आनहु दसरथ रनबंका ❋ सोइ कर[8] संबर-मरन न संका

जल फेलाइया येन दिल तप्त तैले ❋ कुपिया वशिष्ठ मुनि पुत्र प्रति बले
एक रामनामे कोटी ब्रह्महत्या हरे ❋ तिन बार रामनाम बलालि राजारे
मोर पुत्र हैया तोर अज्ञान विशाल ❋ दूर, हरे वामदेव हबिरे चण्डाल
लोटाइया धरिल से पितार चरण ❋ केमने हइव मुक्त कह विवरण
ना थाके मुनिर मने कोप बहुक्षण ❋ बलिलेन ताहारे वशिष्ठ तपोधन
येइ रामनाम तुमि वलाले राजारे ❋ तिनि जन्मिबेन दशरथेर आगारे
गङ्गास्नाने रघुनाथ याबेन यखन ❋ आगुलिओ पथ तुमि रामेर तखन
ताँहार चरणपद्म करिह स्पर्शन ❋ तखनि हइबे मुक्त चण्डाल जनम
बलिलेन एइ रूप बशिष्ठ महामुनि ❋ गुहक चण्डाल हैया रहिलेन तिनि
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व विचक्षण ❋ आदिकाण्डे गाहिलेन अंधकोपाख्यान

सम्बर असुर वध

राज्य करे दशरथ येन पुरन्दर ❋ हइल असुर स्वर्गे नामेते सम्बर
हइल सम्बर सर्व्व देवतार अरि ❋ जिनिल अमरावती वैजयंतीपुरी
तार भये स्वर्गे देव रहिते ना पारे ❋ महेन्द्र बलेन ब्रह्मा वाँचि कि प्रकारे
ब्रह्मा बलिलेन आन राजा दशरथे ❋ असुर सम्बर मरिबेक ताँर हाते

१ उबलते तेल में जल पड़ने पर उफान आने के समान क्रोध २ जीभ ३ मुनिपुत्र ४ निष्पाप ५ मोक्ष पाने के लिए ६ रास्ता देखता रहा ७ अयोध्या के लाड़ले राम ८ उन्हीं के हाथों।

स्वयं इन्द्र किय अवध पयाना ※ आसन - अर्घ्य भूप सन्माना
सुनौ अवधपति ! सुरगन त्रासा ※ सुरपुर संबर दैत्य प्रकासा
जीति स्वर्ग, संकट मोंहि डारी ※ तुम मम सुहृद सकौ सो टारी
तव सहाय, वध निसिचरनाथा ※ तव प्रसाद सुर होयँ सनाथा
सुरपति विदा, बजे रनबाजा ※ संबर-हित दसरथ दल साजा
साजु-साजु—चहुँ दिसि रणरंगा ※ मत्त - मतंग समीर - तुरंगा
मुद्गर मूषल कसत कमाना ※ स्यन्दन शूर सजत धनुबाना
ओर - छोर नहिं कटक अनन्ता ※ कटक धूरि नभ छुवत दिगन्ता
शिरस्त्राण[1] कञ्चुकि[2] हरि-मण्डा[3] ※ नृप साजे कर सर-कोदण्डा[4]
दिव्य तुरग सारथि रथ साजा ※ चलेउ पवनगति भूप-समाजा
चढ़े अवधपति संबर कारन ※ डगमग त्रिभुवन धीर न धारन
कौतुक चली अनी[5] चतुरंगा ※ गज पैदर रथ-रथी तुरंगा

दो० अमरावति उतरेउ कटक, दसरथ अवधमहीप ।
निरखि सैन कोपेउ अतुल, संबर दनुज-अधीप ।। ७५ ।।

बिन्धि सरीर, बान झरलाये ※ असुर, सैन सौं नृप बिलगाये[6]

आपनि आइल इन्द्र अयोध्या नगरे ※ पाद्य अर्घ्ये दशरथ पूजे पुरन्दरे
इन्द्र बले दशरथ तुमि मोर मित ※ ठेकेछि संकटे रक्षा कर एइ हित
असुर सम्बर नामे तारे आमि हारि ※ खेदाड़िया देवगणे निल स्वर्गपुरी
आमार सहाय हैया यदि कर रण ※ तोमार प्रसादे तबे बाँचे देवगण
एतेक बलिया इन्द्र गेलेन स्वर्गेते ※ सम्बर मारिते तबे साजे दशरथे
साज-साज बलिया पड़िया गेल साड़ा ※ राहुत माहुत[7] साजाइल हाथी घोड़ा
मुद्गर मूषल केह बान्धिल कामान ※ धानुकि साजिल रथे लये धनुर्व्वान
साजिछे कटक सब नाहि दिशपाश ※ कटकेर पदधूलि लागिल आकाश
गायेते परिल सोना माथाय टोपर ※ धनुर्व्वाण हाते राजा चलिल सत्वर
दिव्य अश्व योगाइल रथेरसारथि ※ रथे चड़ि दशरथ चले शीघ्र गति
सम्बरे जितिते राजा करिल गमन ※ दशरथे देखिया काँपिल त्रिभुवन
चतुर्द्दोले चड़ि राजा चले कुतुहले ※ रथ रथी पदाति तुरंग हाती चले
उत्तरिल गिया राजा इन्द्रेर नगरी ※ देखिया राजार साजे क्रोधे देवअरि
दशरथे बाणे विंधे करिया जर्ज्जर ※ भंग दिल सेना राजा रहे एकेश्वर

---

१ फौजी टोप २ कवच ३ सुवर्ण से मढ़ा हुआ ४ धनुष-वाण ५ सेना
६ दशरथ को उनकी सेना से अलग कर दिया ७ महावत ।

नृप असैन, सर कोपि चलावा ❋ दानव-दल हनि विपुल नसावा
आयुध विविध बुन्द झरिलाई ❋ गगन पाटि सर, पथ न लखाई
समर चटक दानव - दल - वीरा ❋ अवध - भटन किय बिद्ध सरीरा
लख-लख अस्त्र, असुर बरसाये ❋ सुरपुर नभ रञ्जित, चहुँ छाये
सर-गंधर्व भूप संधाना ❋ अतुल अस्त्र त्रिभुवन नहिं जाना
सर उपजे त्रिकोटि गंधर्वा ❋ मरहिं परस्पर कटि रिपु सर्वा
निसिचर सर निसिचर तकि मारी[1] ❋ सकल दनुज अेक बान सँहारी
राकस रुधिर-नदी उतराहीं ❋ त्राहि-त्राहि संबर-दल माहीं
दसरथ रन बिछाय रिपु दीना ❋ बचेउ दनुजपति सैनविहीना
तकि तकि बानवृष्टि दोउ करहीं ❋ सरन पाटि सुरपुर दोउ लरहीं
सरमण्डित नभ, तम चहुँ ओरा ❋ अलख[2] दैत्य गर्जन-रव घोरा
शब्दवेध परवीन विशेखा ❋ तिमिर-अलोप[3] दनुज नहिं देखा
भावी प्रबल काल तेंहि घेरा ❋ कछुक दूरि किय सोर घनेरा
शब्द ताकि नृप खैंचेउ चापा ❋ सायक चलेउ अगिनि सम तापा
गिरेउ धरनि कटि संबर - माथा ❋ कौतुक असुरघात नर-हाथा !

कोपे काँपे दशरथ पूरिल सन्धान ❋ अस्त्राघाते दैत्यसेना त्यजिल पराण
नाना अस्त्र वर्षण करेन दशरथ ❋ छाइल अमरावती पवनेर रथ
सम्बरेर सेनागण समरे प्रखर ❋ भूपतिर सेना बिन्धे करिल जर्ज्जर
लक्षलक्ष बाण पूरे सम्बरेर सेना ❋ पड़िलेक स्वर्गपुरी छाइया झञ्झना
पड़िल गन्धर्व्व अस्त्र भूपतिर मने ❋ एमत अस्त्रेर शिक्षा नाहि त्रिभुवने
एकबाणे प्रसवे गन्धर्व्व तिन कोटी ❋ आपना आपनी रिपु करे काटाकाटि
आपना आपनि करे बाण वरिषण ❋ एक बाणे पड़िलो सकल सेनागण
सम्वरेर सेना देय रक्ते ते साँतार ❋ त्राहि त्राहि डाक छाड़ि करे हाहाकार
पड़िल सकल सेना दैत्य एकेश्वर ❋ दशरथ बाणे सेना पड़िल विस्तर
दुहुजने बाणवृष्टि करे झाँके-झाँके ❋ उभयेर वाणेते अमरावती ढाके
हइल अमरावती बाणे अन्धकार ❋ दैत्येर रणेते राजा ना देखि निस्तार
देखिते ना पाय दैत्य थाके कोनाखने ❋ शब्दभेदी दशरथ शब्द शुने हाने
कालप्राप्ति दानवेर निकट मरण ❋ दूरे थाकि दशरथे करिछे तर्ज्जन
सम्बरेर पेये शब्द राजा पूरे बाण ❋ छुटिल राजार वाण अग्निर समान
एड़िलेक बाण राजा तार शुने कथा ❋ काटि पाड़े दशरथ सम्बरेर माथा

१ गंधर्व-वाण के प्रभाव से राक्षस स्वयं एक-दूसरे को मारने लगे २ अदृश्य
३ अँधेरे में गायब ।

दो० सुरन सहित सुरपति सरग, बोलत हिय हर्षाय।
झाँगहु वर मनवाञ्छित, नृप! तुम भयेउ सहाय ॥ ७६ ॥

आनि न वर चाहौं सहसानन * मेटौ पाप अन्ध - सुत - मारन
कहेउ इन्द्र हँसि, गवनहु देसू * सो अघ[1] तुमहिं न अब लवलेसू
अन्धक-कथा कुतूहल बरनी * जनक तासु द्विज, सूदिन जननी*

संबर के साथ युद्ध करने में हुए घावों को अच्छा कर देने पर
राजा का कैकेयी को वर देने की प्रतिज्ञा

मिटेउ छोभ सुनि, नृप गृह आये * सुहृद तात परिजनन सुहाये
प्रथम सर्वप्रिय कैकयि - धामा * अजसुत सुखद लीन विश्रामा
अस्त्र सजीवनि कला प्रवीना * कैकयि छत-सरीर[2] चित दीना
जल अभिमंत्रि भूप तन डारी * सुखद सकल सोइ व्यथा निवारी
सिथिल-गात पुनि जीवन आवा * कैकयि-जतन प्रान नृप पावा
तव समान प्रिय मोहिं न आनू[3] * मनवाञ्छित माँगहु वरदानू
नहिं अदेय, पूरन भण्डारू * धन सम्पदा अमित आगारू

नर हैया मारिलेक असुर सम्बर * देव सह सुखे राज्य पाले पुरन्दर
इन्द्र बले दशरथ रक्षा कैले मोरे * वर माग दिब याहा प्रार्थना अन्तरे
दशरथ वले इन्द्र देह एइ वर * येन मुनिहत्या नाहि थाके ममोपर
शुनिया राजार कथा इन्द्र देव हासे * से पाप तोमाते आर नाहि जाओ देशे
अन्धक मुनिर कथा अपूर्व्व काहिनी * ब्राह्मण ताँहार पिता शूद्राणी जननी
एतेक शुनिया दशरथ आसे देशे * आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिबासे

सम्बर-सह युद्धे क्षत हओयाय कैकेयीर आरोग्य करिते राजार वर दिबार अंगीकार

पात्र मित्रगणे राजा दिलेन मेलानि * अन्तःपुरे दशरथ चलिल अमनि
सवार अधिक भालवासे कैकेयीरे * सेइ हेतु आगे गेल कैकेयीर घरे
अस्त्र सञ्जीवनी विद्या जानेन कैकेयी * देखिल राजार तनु अस्त्र-क्षतमयी
मन्त्र पड़ि जल दिल भूपतिर गाय * ज्वाला व्यथा गेल दूरे शरीर जुड़ाय
मृतदेहे येन पुनः आइल जीवन * सुस्थ ह'ये दशरथ बलेन तखन
हे कैकेयी प्राणरक्षा करिले आमार * तोमार समान प्रिये केह नाहि आर
वर मागि लह येवा अभीष्ट तोमार * कोन धन भाण्डारेते नाहिक आमार

१ पाप २ घायल शरीर ३ अन्य।

* 'ब्राह्मण पर श्रद्धा' का यह अतिरेक है। अन्यथा शूद्रा से जन्मे अन्धमुनि का भी शाप दशरथ को भोगना ही पड़ा—व्यर्थ नही हुआ। (हिन्दीकार)

नाम मंथरा, कैकयि केरी ❊ कूबर भार पृष्ठ, सोइ चेरी
कूबर कुटिल बुद्धि कै रासी ❊ कहेउ बोलाय, रानि, सोइ दासी
मुदित भुआल वचन वर दीना ❊ मम हित सुमति कहौ परवीना[1]
वचन-बद्ध भूपति करि लेहू ❊ अवसर परे माँगि वर लेहू
दासि-वचन कैकयी प्रमाना ❊ पुलकि भूप-ढिग कीन पयाना
नाथ आजु वर मोहिं न हेतू ❊ देहु वचन इमि कृपानिकेतू

दो० करौं विनय अवसर परे, मन-उपजी अभिलाष।
तब लौं वर सञ्चित रहैं, नरपति-वचन न माष[2] ॥ ७७ ॥

सुमुखि! चहौ तब अवसर लागी ❊ पुरवौं वचन प्रान लौं त्यागी
व्याध-फन्द मृग फसत अजाना ❊ निरखि समाज-देव हरषाना
सोइ पितु-वर पालन वन जाई ❊ कह विधि[3], हनैं दनुज रघुराई
दसरथ-राज अनन्द घनेरा ❊ सुख प्रतिपाल प्रजागन केरा

दशरथ का नखव्रण अच्छा करने पर कैकेयी को दुबारा वर देने की प्रतिज्ञा

रिद्धि-सिद्धि भरपूर भुआला ❊ नखब्रन[4] विथा उपज अँक काला
कातर अतिव दुसह ब्रनपीरा ❊ कहेउ बोलाय सुहृदगन तीरा

एत यदि वलिलेन राजा दशरथ ❊ कैकेयी कुंजीके कहे वाक्य अभिमत
महाराज आमारे चाहेन दिते वर ❊ किवा वर मागि लव ताँहार गोचर
पृष्ठे भार कुंजेर नाड़िते नारे चेड़ि ❊ कुंज नहे ताहार से बुद्धिर चुपड़ि
कुंजी बले एक्षणे नाहिक प्रयोजन ❊ इच्छा हबे जबे वर बलिब तखन
कैकेयी कुंजीर वाक्य ना करिल आन ❊ हासिया कहिल राणी राजा विद्यमान
महाराज आजि वर नाहि प्रयोजन ❊ यखन वटिबे कार्य्य मागिब तखन
आमार सत्येते बन्दी रहिले गोसाँइ ❊ प्रयोजन अनुसारे वर येन पाइ
नृपति बलेन दिब याहा चावे दान ❊ आछुक अन्येर काज दिब निज प्राण
कैकेयीर कपटे अमरगण हासे ❊ ना जानिया मृग येन बन्दी हैल फासे
ए सत्य पालिते राम याइबेन वन ❊ विरिञ्चि बलेन तवे मरिबे रावण
राज्य करे दशरथ हरषित मन ❊ करेन पुत्रेर मत प्रजार पालन
यखन या हवे ताहा दैवे सव करे ❊ हइल राजार व्रण नखेर भितरे
कृत्तिवास कहे कथा अमृत समान ❊ राम-नाम विना तार मुखे नाहि आन

दशरथेर व्रण आरोग्य करिते कैकेयी के पुनर्ब्बार वर दिते अंगीकार

व्रणेर व्यथाय राजा हइल कातर ❊ पात्र मित्र आनि राजा वलिल सत्वर

---

१ हे चतुरा! २ वृथा, असत्य ३ ब्रह्मा ४ नाखून का घाव, बिषहरी।

यहि कलेस मम मरन समीपा ※ लखत भानुकुल रहित - महीपा
तबहिं सुवन - धन्वंतरि, नामा ※ 'पद्माकर' किय नृपहिं प्रनामा
मिटै व्यथा, नहिं संसय राऊ ※ बरनउँ ताकर युगुल उपाऊ
घृनारहित शामुक[1] - रसपाना ※ करइँ स्वयं साधन हित - प्राना
नतरु आनि जन कोउ नृप हेता ※ नखव्रन-रक्त पूय, रस, जेता
मुख सन चूसि हरै नृपपीरा ※ कैकइ सुनेउ, बसत नित तीरा
पति विषाद, सो सतत[2] निहारी ※ अहिनिसि[3] सेयि करत उपचारी
तिय-गति कतौं न पति बिन, नाथा ※ चूसौं मुखव्रन, होउँ सनाथा
मम अधिकार, भूप मम - धामा ※ नखव्रन मुख धरि पुलकित बामा
रानि - सुधामुख परसत पीरा ※ विगत व्यथा, नृप स्वस्थ सरीरा

दो० रुधिर-पूय तजि, सुमुखि ! लिय पान कपूर सुवास ।
रानि अन्य[4] तै ! माँगु वर, मनवाञ्छित अभिलास ।।

धरहु अमानत[5] युगुल वर, लेहुँ सुअवसर जानि ।
दसरथ अनुमति दीन हँसि, इमि कृतिवास बखानि ।। ७८ ।।

ए व्यथाय बुझि मम निकट मरण ※ सूर्य्यवंशे राजा हय नाहि कोन जन
धन्वन्तरि पुत्र एक पद्माकर नाम ※ आसिया राजार काछे करिल प्रणाम
कहिलेन शुन राजा पाइबे निस्तार ※ दुइमते आछये इहार प्रतिकार
शामुकेर झोल खाओ ना करिया घृणा ※ नहे नखद्वारे चुम्ब दिक एकजना
रक्त पूँये झरितेछे नखेर दुयारे ※ ताहाते चुम्बन दिते कोनजन पारे
कैकेयी राजार काछे दिवानिशि थाके ※ राजा यत दुःख पाये कैकेयी ता देखे
राजार शुश्रूषा राणी करे रात्रिदिने ※ कहिल कैकेयी राणी राजा विद्यमाने
स्वामी विना स्त्री लोकेर अन्य नाहि गति ※ व्रणे मुख दिव यदि पाओ अव्याहति
यार घरे थाके राजा तार दाय लागे ※ कैकेयी चुषिल गिया दशरथ आगे
पाकिया आछिल सेइ नखेर वरण ※ मुखेर अमृत लागि गलिल तखन
सुस्थ हइलेन राजा व्यथा गेल दूरे ※ रक्त पूँय फेलि देह बले कैकेयीरे
कर्पूर ताम्बूल प्रिये करह भक्षण ※ वर लह याहा चाह दिव एइक्षण
कैकेयी बलेन शुनि राजार वचन ※ यखन मागिव वर दिओ हे तखन
दुइ बारे दुइ वर थाक तव ठाँइ ※ पश्चाते मागिव वर एखन ना चाइ
शुनिया राणीर कथा दशरथ हासे ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

---

१ घोंघा २ सदैव ३ दिनरात ४ दूसरा वर ५ धरोहर ।

राजा दशरथ को पुत्र के लिए श्रृंगी ऋषि को बुलाकर यज्ञ करने की चिंता
तथा उक्त मुनि की उत्पत्ति-कथा

बहु वत्सर राजन - अधिराजू ※ एक छत्र सुरपति सम साजू
एक दिवस नृप सभा विराजा ※ परिजन[1] सुहृद सगोत समाजा
मुनि अमात्य चहुँ सचिव सुहाये ※ सर्वाधिप बशिष्ठ तहँ आये
भूपति तहँ हिय-छोभ प्रकासा ※ गत अतिकाल, न सन्तति आसा
तर्पन, पिण्ड न गति-परलोका ※ बाद बंस-रवि अस्त विलोका
नवम सहस मम आयु बितीता ※ तबहुँ न दरस तनय कर कीता
सुत - अभाव अतिशय उर शोका ※ भोर न तासु लखत मुख लोका
तर्पन करत सोंचु उर माहीं ※ मम सूने पितरन जल नाहीं
शाप-अंध[2] वर सरिस बताई ※ होय याग ऋषि श्रृंग बुलाई
तिन आगम पूरन मम कामा ※ कहौ कितै श्रृंगीऋषि - धामा
कह बशिष्ठ सुनु कोसलनाथा ※ सुनौ श्रृंगि ऋषि-उतपति गाथा
तपत विभाण्डक मुनि परतापा ※ तासु शाप-भय त्रिभुवन काँपा
मुनि तप अतुल, इन्द्र भय छावा ※ तप-विछेप[3] हित पवन पठावा

दशरथ पुत्रेर जन्य ऋष्यश्रृंग के आनिया यज्ञ करणेर चिन्ता ओ
उक्त मुनिर उत्पत्तिते काहिनी

राज्य करे दशरथ अनेक वत्सर ※ एकछत्र महाराज येन पुरन्दर
पात्र मित्र भाइवन्धु सबाकारे आनि ※ वशिष्ठादि आइलेन यत महामुनि
सभा करि बसे राजा अमात्य सहिते ※ अति खेद करि राजा लागिला कहिते
इहकाले ना हइल आमार सन्तति ※ परकाले कि रूपे पाइव अव्याहति
सन्तति थाकिले करे श्राद्धादि तर्पण ※ आमार मरणे वंशे नाहि एक जन
नवम हाजार वर्ष वयस हइल ※ एतकाले तबू मम पुत्र ना जन्मिल
अपुत्रक आमि पाइ मने बड़ दुख ※ प्रभाते ना देखे लोक अपुत्रेर मुख
अञ्जलि करिया देइ तर्पन सलिल ※ आमा हैते गेला वंश कोन दिवे जल
वर दियाछेन श्रीअन्धक महामुनि ※ यज्ञ कर तुमि ऋष्यश्रृङ्ग मुनि आनि
ऋष्यश्रृंग मुनिवर कोन देशे वसे ※ कार्य्य सिद्धि हय यदि शेइ मुनि आसे
कहिते लागिल ये वशिष्ठ महामुनि ※ शुनह ऋष्यश्रृंगेर उत्पत्ति काहिनी
विभाण्डक मुनि भये सर्व्वलोक काँपे ※ त्रिभुवन भस्म हय यदि मुनि शापे
ताँहार तपस्या देखि इन्द्र भावे मने ※ पाठाइया दिल इन्द्र देवता पवने

१ बन्धुगण २ अंधक मुनि का शाप ३ तप में विघ्न ।

छं० कुटी-विभाण्डक, पवनदेव रहि ओट, लखत मुनि-जीवन ।
फलाहार! फल सुधा-सार दै, कौतुक कीन समीरन[1] ।।
सने-सुधा-मधु खात नित्य फल निर्मल तपसी काया ।
बली अपरबल[2], वन तप करहीं, मन दुचित्त[3] मुनिराया ।।

नीर-नर्मदा मुनि तप-लीना ※ सोइ पथ गमन उर्वसी कीना
लखेउ गगन उर्वसी, समीरा ※ करि उर जतन उघारेउ[4] चीरा
दैवयोग मुनि सोइ तन देखी ※ लगेउ पञ्चसर मोह बिसेखी

दो० रेतपात[5], लिय बाम कर, तजेउ न सरिता-नीर ।
धरेउ कूल[6] ढिग रेत सोइ, आकुल सिथिल सरीर ।। ७९ ।।

शुचि आचमन विभाण्डक कीना ※ भये तपोधन पुनि तप-लीना
विधि रचना नहिं मिटै मिटाई ※ तृषित मृगी तहँ जलहित आई
पियत पानि, तट दूब हरेरी ※ लागि चरन, मन लोभेउ हेरी
तहँ मुनि-रेत घास लपिटानी ※ हरिनि-उदर सोइ चरत समानी[7]
रेत-अहार, मृगी ऋतुकाला ※ धरेउ गर्भ विधिगती विसाला
बढ़त गर्भ, पशुवत षटमासा ※ मृगी कियेउ मनु[8] प्रसवि प्रकासा
बन-बन फिरउँ मनुज-भय पाई ※ सो रिपु-जनम गर्भ मम आई

मुनिर निकटे वायु लुकाइया थाके ※ वृक्ष-फल खाय मुनि पवन ता देखे
फलेते अमृति माखि राखिल पवन ※ फल योगे सुधा मुनि करिल भक्षण
फलेर सहित सुधा खेये महामुनि ※ सातिशय बलवान हइला तखनि
शुद्ध देहे खेये सुधा महा बलवान ※ तपस्या करेन वने चारि दिके चान
तपस्या करेन मुनि नर्मदार जले ※ ऊर्व्वशी चलिया जाय गगनमण्डले
अंगेर वसन तार वातासेते उड़े ※ दैवयोगे ताँर दृष्टि तारे गिया पड़े
ताहाके देखिया मुनि कामे अचेतन ※ मुनिर हइल रेतः पतन तखन
आस्ते व्यस्ते मुनि ताहा धरे वाम हाते ※ जले ना फेलिया रेतः फेलाय कूलेते
पुनर्ब्बार महामुनि करि आचमन ※ तपस्या करेन विभाण्डक तपोधन
विधिर लिखन कभु ना हय खण्डन ※ तृष्णाय हरिणी जल खाय सेइ क्षण
जल खेये हरिणी कूलेते घास चाटे ※ घासेर सहित रेतः सान्धाइल पेटे
दैवयोगे हरिणी आछिल ऋतुमती ※ मुनि वीर्य्य खाइया हइल गर्भवती
दिने-दिने गर्भ तार बाड़िते लागिल ※ छयमासे पशुवत प्रसव हइल
मनुष्येर भये आमि भ्रमि वने वन ※ आमार गर्भेते हैल शतुर जनम

१ वायु २ अत्यन्त ३ डगमग ४ हटा दिया ५ वीर्यपात ६ किनारे
७ पेट में चली गयी ८ मनुष्य ।

गमनी वन, अनाथ सिसु डारी * चूसत अँगुरि रुदन पथ भारी
सोइ मग गमन विभाण्डक कीना * रोवत सुवन दीठि मुनि दीना
निर्जन वन, शिशु-गात निहारा * हरिनि-बदन[1] अरु मनुज अकारा
धरत ध्यान सब लखेउ तपोधन * आन[2] न हरिनि-गर्भ मम नन्दन
मुनि लै अंक गमन-वन कीना * सुत मधुपुहुप पोषि बल दीना
नूतन-कुस-कोमल सुत सयना * दिन-दिन बढ़त महामुनि-अयना
शास्त्रनिपुन, छबि अतुल कुमारा * शृंग गुल्म युग मस्तक धारा
शृंग, समय गति ! उभरे भाला[3] * सोइ विभूति ऋषि शृंग भुवाला
जासु शाप-वर अमिट प्रभाऊ * सोइ-वर पुत्रवान भव राऊ

लोमपाद के राज्य में अनावृष्टि-निवारण के लिए ऋष्यशृंग का लाया जाना

दो० कथन-वशिष्ठ सुमंत्र सुनि, बरनेउ अधिपति-अंग[4] ।
लोमपाद सन्मानि गृह, जिमि राखेउ ऋषि शृंग ।। ८० ।।

सचिव सुमन्त्र ! कहौ केहि हेता * गवन शृंगमुनि अंग-निकेता ?
कहेउ सुमंत्र अंगनृप-देसू * द्वादश वर्ष वृष्टि नहिं लेसू

पुत्र फेलाइया से हरिणी गेल वन * अंगुलि चुषिया शिशु युड़िल क्रन्दन
तपस्या करिया विभाण्डकेर गमन * कानने पड़िया शिशु करिछे क्रन्दन
बालके देखिया मुनि भावे मने मन * मनुष्य आकार देखि हरिणी वदन
ध्याने जानिनेक विभाण्डक तपोधन * हरिणीर गर्भ हैल आमार नन्दन
पुत्र कोले करि गेलेन निज घरे * पुष्पमधु दिया मुनि पोषेण ताहारे
नवीन कुशेर मूले करान शयन * दिने दिने बाड़े विभाण्डकेर नन्दन
परम सुन्दर से विभाण्डकेर बेटा * शास्त्रवेत्ता हय से कपाले शृंग फोंटा
किछु-दिन परे शृंग उठिल कपाले * ऋष्यशृंग वले नाम थुइल सकले
यारे वर शाप देन कभु नहे आन * ताँर आशीर्वादे राजा हबे पुत्रवान

लोमपादेर राज्ये अनावृष्टि निवारणार्थ ऋष्यशृंग के आनयन

वशिष्ठेर वचन हइल अवसान * सुमंत्र बलेन राजा कर अवधान
लोमपाद राजा अंग देशेर ईश्वर * ऋष्यशृंग आनिया छिलेन निज घर
दशरथ वले पात्र कह विवरण * लोमपाद आनालेन किसेर कारण
सुमंत्र बलेन दशरथ नृपवर * सेइ देशे अनावृष्टि द्वादस वत्सर

---

१ हरिणी के समान मुख ... ३ शिर का अग्रभाग ४ अंग नरेश ।

लोमपाद पण्डितन बुलावा ❋ अनावृष्टि कर हेतु बुझावा
बुध विचारि बोलत, सुनु राजन ! ❋ अनाचार किञ्चित तव सासन
बिन बिवाह ऋतुमती कुमारी ❋ तव छिति, भूप ! न बरसत बारी
आनहु सुवन-विभाण्डक श्रृंगा ❋ पाप-छीन, जल बरसै अंगा[1]
भूप ऐलान[2], नगर-नरनारी ❋ श्रृंगि आनि, जो काज सवाँरी
अर्ध राजु अर्पन सोइ-हेता ❋ बूढ़ि एक कह दर्प समेता
श्रृंगि न ज्ञान नारि-नर लेसू ! ❋ मुनि भरमाइ[3] बुलावहुँ देसू
फल-तरु रोपि[4] सजावहु तरनी ❋ वयस चतुर्दस मुनिसुत-हरनी
सुवरन नाव जरठि[5] हित साजा ❋ बीच जासु छबि ध्वजा विराजा
कनक-वितान भवन दुइ सोहा ❋ परम रम्य निरखत मन मोहा
गजमुकुतावलि सुबरन तारा ❋ मधु मिष्ठान्न रसाल सवाँरा
कर्पूरित गंगाजल झारी ❋ नाना पानक[6] फल रुचिकारी
बाछि लीन सुन्दरी अनूपा ❋ किन्नरि धौं अप्सरा सरूपा
तरुनि रुदन, मन मलिन बिचारी ❋ परि मुनि-साप जरहिं, भयकारी

लोमपाद ब्राह्मण पण्डिते जिज्ञासिल ❋ मम राज्ये अनावृष्टि कि हेतु हइल
कहिल पण्डितगण करिया विचार ❋ किंचित् तोमार राज्ये आछे दुराचार
तव राज्ये कुमारी हइल ऋतुमती ❋ एइ पापे वृष्टि नाहि हय नरपति
विभाण्डक पुत्र यदि ऋष्यश्रृंग आसे ❋ पाप दूर हय आर देवता वरषे
नगरेते लोमपाद दिलेन घोषणा ❋ ऋष्यश्रृग मुनिके आनिवे कोन जना
ताहारे आनिया मोरे येवा दिते पारे ❋ अर्द्धराज्य दिव आमि अवश्य ताहारे
डाकिया कहिल कथा बुड़ि एकजन ❋ आमि आनि दिव सेई मुनिर नन्दन
स्त्री-पुरुष भेद सेइ मुनि नाहि जाने ❋ भुलाइया आनिव से मुनिर नन्दने
नौका एक साजाइया देहत आमारे ❋ फलवान वृक्ष रोप ताहार उपरे
चौद्द वत्सरेर सेइ मुनिर सन्तति ❋ कौतुकेते भुलाइवे यतेक युवती
सुवर्णेर नौका राजा करिया गठन ❋ विचित्र पताका ताहे करिल साजन
नौकार उपरे करे स्वर्णे दुइ घर ❋ परम सुन्दर नौका अति मनोहर
उपरेते शोभा करे सुवर्णेर तारा ❋ चारिभिते शोभे गज मुकुतार झारा
संदेश दिलेन नाना खाइते रसाल ❋ नारिकेल कला आर काँठाल उताल
गंगाजल शीतल शर्करा मिश्र करि ❋ कर्पुर वासित जल दिल पात्र पूरि
वाछिया वाछिया निल परमा सुन्दरी ❋ चेना भार अप्सरा कि अमर किन्नरी
कान्दिते लागिल सबे मुखे नाहि हासि ❋ मुनि कोपानले आजि हव भस्मराशि

---

१ अंग देश में २ घोषणा ३ भटका कर ४ जमा कर ५ बूढ़ी ६ शरबत ।

दो० तिनि प्रबोधि वृद्धा कहै * चलहु त्यागि भय संग ।
मम नवयौवन कीन मैं * शत शत मुनि-मन भंग ।।
तरनि तरत जल-नर्मदा, लगी विभाण्डक देस ।
बाँधि तीर तरि[1], रूपसिन, उपवन कीन प्रवेस ।। ८१ ।।

मुनि-तप सोंचि सुन्दरिन त्रासा * जासु कोप परि छिनहिं विनासा
पितु-सूने[2] उपवन एकाकी[3] * रमनिन तहाँ शृंग सुत ताकी
बंसी धुनि कोउ क्रीड़ति बीना * ताल देत सब चलीं नवीना
बूढ़िहिं घेरि चतुर्दिसि छाई * बहु चोंचला रूप दरसाई
कामिनि - कण्ठ कोकिला - गाना * सामगान ऋषि-सुवन भुलाना
नर-तिय अबुझ, रूप सुनि भाये * जिमि सुर अवनि, स्वर्ग तजि आये
विह्वल शृंगि द्वार चलि जाई * गहे बूढ़ि - पद अंग नवाई
परति पाँय, कर धरति किशोरा * चूमि कञ्जमुख पुनि-पुनि भोरा[4]
'आव-आव' कहि, सबन बुलाई * गदगद रोम, न मोद समाई
उपवन एक मात्र कुस-आसन * बूढ़िहिं दीन सप्रीति बिछावन
कन्द - मूल - फल नीर समेता * धरेउ शृंगि सो सुमुखिन हेता
'विष्णु-विष्णु' कहि, कर धरि काना * हरि-पूजन बिन किमि जलपाना?

बुड़ि बले केन भय करिछ युवती * तोमरा सकले चल आमार संहति
यखन आमार छिल नवीन यौवन * कत शत भुलायेछि महामुनिगण
नर्म्मदा बहिया जाय परम हरिषे * उपस्थित हय ऋष्यशृङ्ग येइ देशे
येखाने तपस्या करे विभाण्डक मुनि * सेइ वने तरुणीरा राखिल तरणी
विभाण्डके देखिया सकले भये काँपे * भस्मराशि करे पाछे शाप दिया कोपे
तपोवने आछे यथा ऋष्यशृङ्ग मुनि * आसिया मिलिल तथा सकल रमणी
तरी हैते उत्तरिल सकल नवीना * केह वंशी पूरये वाजाय केह वीणा
बुड़ि के वेड़िया गान करे नारीगण * मुनिर निकटे गिया दिल दरशन
कामिनीर मुखे गीत कोकिलेर ध्वनि * शुनि मुनि वेदध्वनि छाड़िल अमनि
स्त्री-पुरुष-भेद सेइ मुनि नाहि जाने * स्वर्गेर अमरगण मुनि मने माने
व्याकुल हइया मुनिद्वार हइते उले * प्रणिपात करिले बुड़िर पदतले
मुनिपुत्र पाये पड़े धरि करे कोले * वार वार चुम्ब दिल वदन कमले
एस-एस बले मुनि ता सबाके बले * आनन्दे गदगद से आसन दिते चले
एकखानि कुशासन छिल मात्र घरे * वैस बलि आनिया दिलेन से बुड़ीरे
फल मूल जल घरे छिल ये सकल * बुड़िर भक्षण हेतु दिलेन सकल
श्रीविष्णु वलिया बुड़ि छूँइल दुइ कान * विष्णुपूजा विना नाहि करि जलपान

---

१ नाव २ पिता की अनुपस्थिति में ३ अकेला ४ भोला ।

दिव्य कुसासन सोइ-हित साजी ❊ उपरि जासु नायिका विराजी
नासा परसि, उलटि दृग-तारा ❊ मुनि प्रतच्छ[1] मनु विष्णु निहारा
कछुक काल बकध्यान[2] लगावा ❊ पुनि प्रसाद-हित सुतहिं बुलावा
अहह सफल जीवन मम आजा ❊ लै प्रसाद हरि स्वयं विराजा

दो० फल कहि मोदक, नीर मिस, मायाविनि मधु दीन ।
अमित स्वाद अमरित सरिस, मुनिसुत मोहित कीन ।। ८२ ।।

उपजत फल कित पूछत श्रृंगा ❊ चले मुग्ध पुनि युवतिन संगा
मोदक मदनानन्द खवावा ❊ मोदक-मद मुनिसुत तन छावा
दै संदेस[3], कहैं अतिरूपा ❊ सुखतर फल जहँ, चलिय अनूपा
जो कहुँ सुलभ अधिक रसपागी ❊ चलौं संग तव, उपवन त्यागी
मदन-विभोर निरखि मुनिनन्दन ❊ सरकत बसन अंग छबि-वनितन
कोउ मुनि-कक्ष गात अनुसरहीं ❊ पंकज मुख कोउ चुम्बन करहीं
पुनि गरेरि[4] बहु हास - विलासा ❊ मुनिसुत उपज अमित उल्लासा
परसि उरोज अबुझ कोउ नारी ❊ इकटक दीठि रहइ कोउ डारी
नैन - कटाछ रञ्ज[5] मन कोऊ ❊ करत प्रगाढ़ अलिंगन कोऊ

दिव्य कुशासन पाति दिलेन बुड़ीरे ❊ पूजा करिवारे वसे ताहार उपरे
चक्षु उलटिया बुड़ि नाके दिल हात ❊ मुनि वले विष्णु आजि करिव साक्षात्
कतक्षणे नासिकार हात घुचाइल ❊ ए प्रसाद लओ वलि मुनिरे डाकिल
मुनि वले आजि मोर सफल जीवन ❊ विष्णुर प्रसाद देह करिव भक्षण
फल वलि हाते दिल गङ्गाजल लाड़ू ❊ जल वलि खाओयाइल मधु गाड़ूगाड़ू
मुनि बले एइ फल कोथा गेले पाइ ❊ सङ्गे करि लये गेले तवे सङ्गे जाइ
खाओयाइल कामेश्वर खाइते सुस्वाद ❊ कामेश्वर खाइया से हइल उन्माद
कन्यागण बलिल खाइले ये संदेश ❊ इहार अधिक आछे चल सेइ देश
मुनि बले इहार अधिक यदि पाइ ❊ तोमरा चलह देशे आमि संगे जाइ
मदने भुलिल यदि मुनिर नन्दन ❊ अंगेर वसन खसाइल नारीगण
आसिया मुनिर पुत्र केह करे कोले ❊ केह केह चुम्ब देय बदन कमले
मुनि लैया सबे करे हास्य परिहास ❊ देखिया मुनिर पुत्र हइल उल्लास
कोन नारी भुलाइल स्तन परशने ❊ केह वा भुलाय ताके भक्ष्य द्रव्य दाने
केह वा हरिल मन चाहिया नयने ❊ केह वा करिल मत्त गाढ़ आलिङ्गने

१ साक्षात् २ वगुला के समान वनावटी ध्यान ३ एक बंगाली मिठाई ४ घेरकर ५ प्रसन्न करती थी ।

जो मुनिहरन करहिं तत्काला ※ बिनसैं सकल विभांडक-ज्वाला
उचित आजु, तजि चलहिं बराई[1] ※ कथा सकल सुत जनक[2] जनाई
सुवन-नेह मुनि रहइँ निकेतू ※ कालिह न बन गमनइँ तप-हेतू
जो तजि तनय श्रेय तप देहीं ※ कहत बूढ़ि, तब सुत हरि लेहीं
सोचि जुगुति[3] दिय मत मुनिनन्दन ※ बिलमहु[4] कछुक काल भल उपवन
शिष्य एक तव-सरिस सुहावन ※ निकट भेंटि लौटहुँ मनभावन
बिनयेउ श्रृंगि, नाथ तव दासा ※ सदा स्वामि-ढिग सेवक-बासा

सो० गमन अन्त कहुँ देस, करहु त्यागि मोहिं अमरगन ।
पावक करौं प्रवेस, ब्रह्मघात तव-सीस धरि ॥ ८३ ॥

नर-नारी कर भेद न जानी ※ मुनि-कौतुक! छलिनी मुसकानी
बोली, करहु बास यहि काला ※ सुनु, बोलाय तोहिं लेउँ सकाला[5]
मुनि तजि गेह, चलीं मृगनयनी ※ लागि नर्मदा-तट जहँ तरनी
अस्ताचल जब सूर्य सिधाये ※ बिकल श्रृंगि! सुरगन नहिं आये
करगत अञ्चल-निधी नसानी ※ मम बिपरीत दैव[6] ! मैं जानी
रुदन-थकित, तरुतर आसीना ※ तबहिं विभाण्डक उत पग दीना
शोकाकुल सुत लखि मुनिराई ※ कस मलीन? पूछत कुसलाई

बुड़ि बले आजि यदि लये जाइ हरे ※ पाछे विभाण्डक मुनि कोपे भस्म करे
आजि पिता पुत्रेते थाकुक एकस्थाने ※ कहिबे ए कथा मुनि पिता विद्यमाने
पुत्र प्रति यदि स्नेह कर तपोधन ※ तबे कालि तपस्याय ना यावे कखन
पुत्रे एड़ि जाय यदि तपस्यार तरे ※ तबे काल लैया याव मुनिर कुमारे
एइ युक्ति तबे बुड़ी भावे मने मने ※ कहिते लागिल सेइ मुनिर नन्दने
तपोवने बैस हे तोमारे भालबासि ※ अन्य एक शिष्येर आश्रम देखे आसि
वलिते लागिल तारे ऋष्यश्रृङ्ग ऋषि ※ तोमार सेवक हैया तव संगे आसि
आमारे एड़िया यदि जाबे कोन देशे ※ ब्रह्महत्या हवे तवे मरिव हुताशे
वुड़ी बले एइ क्षणे घरे थाक तुमि ※ संध्याकाले तोमारे लइया जाव आमि
एतेक बलिया ताँरे थुये निजघरे ※ सकल कामिनी चड़े नौकार ऊपरे
दिवाकर अस्तगत हइल यखन ※ मुनि बले ना आइल केन ऋषिगण
शिरोमणि हाराइल अञ्चलेर निधि ※ बुझिलाम आमारे वञ्चित कैल विधि
कान्दिते-कान्दिते मुनि बैसे वृक्षतले ※ विभाण्डक तप करि एल हेन काले
पुत्रेरे देखिया मुनि विचलित मन ※ जिज्ञासिल केन वापू करिछ क्रन्दन

१ टल जायँ २ पिता को ३ युक्ति, तरकीब ४ ठहर जाओ ५ सायंकाल ६ भाग्य ।

कीजिय तात प्रथम जलपाना * हाल सकल पुनि करउँ बखाना
फलाहार करि पितु सुख पावा * दिवस-कथा सुत ललकि[1] सुनावा
तपहित तुम पितु! बनहिं सिधाये * देव स्वर्ग तजि आश्रम आये
चखे न अस फल स्वाद अनूपा ! * दीख त्रिलोक न तिन सम रूपा
जटा सीस छबिमण्डित भाला[2] * तहँ साजे कोउ किंशुक-माला
कस मृतिका[3]! ललाट छबिसागर * नभमण्डल जिमि उदित प्रभाकर
कौन पुहुप! गर हार सुहावन * नीलम, पीत, धवल मनभावन
बलकल बसन लसत कस अंगा * लाल, पियर, सित, हरियर रंगा
लता कौन सब करन[4] सजीली * कोउ कर मानिक जोति छबीली

दो० लोम[5] न आनन, परम द्विज, मांस-पिण्ड उर दोय ।
कोमल कर परसत मनहुँ, सुरपुर करगत होय ॥ ८४ ॥

नर-नारी ऋषि शृंग न ज्ञाना * बूझेउ सकल धरत मुनि ध्याना
कहत विभाण्डक, सुत! ते नारी * कामुकि[6] फिरहिं दनुजि बनचारी
आजु पुन्य-मम बच तव प्राना * पुनि तिन-फन्द न सुत कल्याना
पिता न इमि भाखहु तिन हेता * ते अस कतहुँ न दयानिकेता

ऋष्यश्रृंग वले आगे खाओ फल जल * आजिकार विवरण कहिव सकल
फलजल खाइया हइबसुस्थ मन * पितापुत्रे कथावार्त्ता कन दुइजन
तुमि येइ गेले पिता तपस्यार तरे * स्वर्ग हैते देवगण आसे मम घरे
सेइ मत फल नाहि खाइ ए जीवने * एत रूप देखि नाइ ए तिन भुवने
कत वा छन्देते जटा धरेछे माथाय * कत कुसुमेर माला दियाछ ताहाय
कि जाति मृत्तिका आछे कपाले शोभित * गगनमण्डले येन भास्कर उदित
कि जाति वृक्षेरे माला सवार गलाय * श्वेत पीत नील कत शोभिछे ताहाय
तेमन ना देखि पाता गाछेर वाकल * श्वेत रक्त पीत नील वरण उज्जवल
कि जाति वृक्षेरे लया सबाकार हाते * कतेक माणिक गाँथा आछये ताहाते
परम ब्राह्मण कारो लोम नाहि मुखे * वेलेर समान दुटा मांसपिण्ड वुके
ताते यदि हस्तटि कराइ परशन * स्वर्गवास हाते पाइ हेन लय मन
मने भावे महामुनि पुत्रेर वचने * स्त्री-पुरुष ऋष्यश्रृंग कभु नाहि जाने
विभाण्डक वले बापू तारा नारीगण * कामाचारी राक्षसी वेड़ाय बने वन
मम पुण्ये प्राण आजि रेखेछे तोमार * पुनः गेले धरे खावे ना पावे निस्तार
ऋष्यश्रृंग बले पिता ना वल एमन * एमन दयालु नाइ ताहारा येमन

१ बड़े चाव से २ मस्तक ३ सकेशर चन्दन को भस्म समझा ४ हाथों में
५ वाल (दाढ़ी-मूँछ) ६ विलासिनी ।

सवन कालिह् विधि देइ मिलाई ※ सूचित करहुँ तात ढिग आई
निसि बितीत, मुनि बहु समुझावा ※ तदपि शृंग कछु बोध न आवा
भोर होत रवि किरन प्रकासी ※ सुवन-विषय सोचत गुनरासी
जो सुत साधि, आश्रमवासू ※ अतिव चूक, तप-धर्म विनासू
सकल वृथा—को केहि सुत-नारी ※ जग असार, सत् प्रभुहिं विचारी
बहुरि प्रबोधि[1] भाँति बहु शृंगा ※ हटकेउ[2] मुनि तिन बनितन-संगा
ताम्रपात्र, तुलसीदल लीना ※ तपहित गमन विभाण्डक कीना
सो लखि, बूढ़ि कहत हरषाई ※ चलौ सबै, मुनिसुत हरि लाई
बीना, बँसुरि, ताल, करताला ※ चलीं शृंग-ढिग चाल मराला
गई-द्रव्य मनु दारिद[3] पाई ※ पद-नायिका गहे लपिटाई
गयेउ कालिह् किल मोहिं बराई[4] ※ तव-हित रोवत निसा बिताई
सोइ मोदक रुचि सोइ जल पाना ※ देव ! संग तव करहुँ पयाना

शृंगी ऋषि का लोमपाद के राज्य में जाना और अनावृष्टि का निवारण

दो० फँसे फन्द, तिय कोल[5] करि, लिये नाव हरि शृंग ।
तरि[6] खेवत द्रुत बहि चली, काटत सरित-तरंग ।। ८५ ।।
तरनी तरति, न मुनि आभासा ※ भरमत बनितन सहित हुलासा

कालि यदि विधाता मिलाय ता सबारे ※ तखनि याइब आमि कहिनु तोमारे
सारा रात्रि छिल मुनि पुत्र ल'ये घरे ※ बुझाइते आपनि ना पारिल पुत्रेरे
प्रभात हइल रात्रि रविर किरण ※ पुत्रेर विषय मुनि भावे मने मन
यदि आमि घरे थाकि पुत्रे करि साध ※ धर्म्म नष्ट हबे मम हबे अपराध
कार पुत्र कार पत्नी सब अकारण ※ संसार असार सार सत्य नारायण
पुत्रेरे प्रवोध करिलेन महामुनि ※ कारो सगे कथा नाहि कहिओ आपनि
ताम्रघटी हाते निल तुलिल तुलसी ※ तपस्या करिते गेल विभाण्डक ऋषि
बुडी वले बुड़ा मुनि छाड़ि गेल घर ※ सबे चल आनि गिया मुनिर कोङर
ताल करताल वीणा केह पुरे बाँशी ※ आइल मुनिर काछे सकल रुपसी
दरिद्र पाइल येन हाराइया धन ※ व्यस्त मुनि करे धरि बुड़ीर चरण
आमारे एड़िया कालि गेल पलाइया ※ सारारात्रि कान्दियाछि तोमार लागिया
सेइ जल सेइ लाडू करिब भक्षण ※ संगे करि लैया चल करिब गमन
मर्म्म वुझ सवे कृत्तिवासेर सुवाणी ※ नारीर कथाय भुले ऋष्यशृंग मुनि

ऋष्यशृंगेर लोमपाद राज्ये गमन ओ अनावृष्टि निवारण

कोले करि बसाइल नौकार उपर ※ वाह वाह बलि बुड़ी डाकिछे सत्वर

१ समझाकर २ मना किया ३ निर्धन ४ टालकर ५ गोद ६ नाव ।

मुनि-पद अंगदेस जोइ परसा ❊ अनावृष्टि गत, पावस बरसा
लच्छन सुभ, आगम-मुनि जानी ❊ अर्घ्यपाद चलि नृप सन्मानी
लोमपाद नृप कन्याहीना ❊ दसरथ सुता§ दान पुनि दीना
यहि विधि मुनि रघुवंस-जमाई[1] ❊ बोलि अंगनृप, लेहु बुलाई
दसरथ पूछेउ सचिव सप्रीती ❊ कस सुत-सोक विभाण्डक बीती
उपाख्यान ऋषि शृंग सुपावन ❊ अनजल-हरन, नीर-सरसावन
कृत्तिवास इमि काव्य प्रकासा ❊ राम-नाम मुद-मंगल-बासा

श्रृंगी ऋषि को न देखकर विभाण्डक मुनि का खेद

पुनि सुमन्त्र दसरथहिं सुनावा ❊ बूढ़ी जिमि अंगपहिं[2] सिखावा
मुनिसुत-हरन फन्द पुनि बरनी ❊ दै चित भूप करहु इमि करनी
कुपित विभाण्डक, साप कराला ❊ सहित राजु बिनसहु मुनि-ज्वाला
तासु त्रान-हित[3] कहउँ उपाऊ ❊ रचना रचहु पन्थ सोइ राऊ
ठौर-ठौर गो-महिष तुरंता ❊ गीत वाद चहुँ नृत्य अनन्ता
उत्सव चहुँ लखि, मुनि-मन-रोषू ❊ मिटै सहज, उपजै सन्तोषू

तरणी वाहिया जाय मुनि नाहि जाने ❊ ऋष्यश्रृंगे वले वैस व्याघ्र आछे वने?
लोमपाद राज्ये मुनि दिल दरशन ❊ अनावृष्टि छिल वृष्टि हइल तखन
लोमपाद जानिल मुनिर आगमन ❊ पाद्य अर्घ्य दिया पूजे मुनिर नन्दन
कन्याहीन लोमपाद शान्ता अभिधान ❊ दशरथ-कन्याके मुनिरे दिल दान
सम्वन्धे से मुनि हय तोमार जामाइ ❊ ताहाके चाहिया आन लोमपाद ठाँइ
दशरथ बलिलेन कह हे नायक ❊ पुत्रशोके केमने वाँचिल विभाण्डक
येइ देशे हय ऋष्यश्रृंगे उपाख्यान ❊ अनावृष्टि घुचे हय से देशे कल्याण
कृत्तिवास पण्डितेर काव्य अनुपम ❊ सानन्दे वसिया सबे शुन राम नाम

ऋष्यश्रृंगेर अदर्शने विभाण्डक मुनिर खेद

सुमन्त्र बलेन शुन राजा दशरथ ❊ बुड़ी लोमपादे नीति कहे वाक्य यत
मन दिया स्थिरचित्ते शुनह वचन ❊ भुलाइया आनियाछि मुनिर नन्दन
यदि शाप देन कोपे विभाण्डक ऋषि ❊ राज्यसह आपनि हइबा भस्मराशि
तार ठाँइ यदि तुमि चाओ परित्राण ❊ पथेते करयिा राख विहित विधान
स्थाने स्थाने महिप गो राखह सत्वर ❊ गीतवाद्य नृत्योत्सव हउक विस्तर
गीतवाद्य देखिया तखनि तपोधन ❊ यत क्रोध जन्मे थाके हबे पासरण

---

१ रघुवंशी राजा दशरथ के जामाता २ लोमपाद को ३ रक्षा के लिए।

§ राजा दशरथ की कन्या 'शान्ता' जिसका पालन राजा लोमपाद ने अपनी कन्या मानकर किया था। शान्ता का नाम हेमलता भी पहले आ चुका है।

बूढ़ी - बचन महीप प्रमाना ※ जनपद कायम कीन महाना
ठौर-ठौर तहँ धाम ललामा ※ सोइ ऋषिश्रृंगि-ग्राम धरि नामा

दो० सकल धान्य-पूरित मही, दिव्य धाम, पुर, ग्राम ।
लोमपाद नृप, शृंग ऋषि, इमि राखे निज धाम ॥ ८६ ॥

तप करि कुटी विभाण्डक आये ※ सुत-श्रुतिगान न मुनि सुनि पाये
नित-विपरीत मौन[1]! मन चिंता ※ द्वार ससंक धरेउ पग सन्ता
दिवस ताप-तप, आश्रम आई ※ कासु बैनमधु बिथा मिटाई
तात! तात! कहि, कुटी प्रवेसू ※ लखेउ न सुत, मुनि दुसह कलेसू
छूट कमण्डल, मूर्छित गाता ※ तरु-तर धरनि तपसि-तन पाता
बीते छन, कछु चेतन आवा ※ कितै सुवन! पुनि-पुनि गोहरावा
सबन भेंटि पूछत सुत-बाता ※ सुवन-नेह जग अतुल विधाता
हे क्षुप,[2] बिटप, लता जे उपबन! ※ लखे जात कहुँ तुम मम नन्दन
हे खग, मृग, पसु कतहुँ बिलोका ※ तनय जात, इमि सोध[3] ससोका
हेरत चलत न मग विश्रामा ※ पहुँचे जहँ इक ग्राम ललामा
कवन ग्राम को धाम-निवासी ? ※ पूछत दुखित, सबन पुरबासी
विनय जोरि किय प्रजासमाजू ※ नाथ शृंगऋषि कर यहु राजू

बुड़ीर बचन राजा ना करिल आन ※ पथे पथे करे ग्राम बड़-बड़ स्थान
श्री ऋष्यश्रृंगेर ग्राम बलि तार नाम ※ सर्व्वशस्ययुता पुरी दिव्य-दिव्य ग्राम
ऋष्यश्रृंग रहिलेन लोमपाद घरे ※ विभाण्डक तप करि गेलेन कुटीरे
आर दिन दूर हइते शुने वेदध्वनि ※ से दिन ना शुने शब्द व्यस्त हैल मुनि
आकुल हइया मुनि दाण्डाइल तथा ※ काँदिया बलेन बाछा ऋष्यश्रृंग कोथा
तपस्याते श्रान्त ह'ये आइलाम घरे ※ हेथा आसि कह कथा दुःख याक् दूरे
बलिते वलिते गेल कुटीरेर द्वारे ※ पुत्र-पुत्र बलि डाके पुत्र नाहि घरे
कमण्डलु आछाड़िया फेले भूमितले ※ अज्ञान हइया मुनि पड़े वृक्षतले
क्षणेक रहिया ज्ञान पाइलेक मुनि ※ कोथा ऋष्यश्रृङ्ग बलि डाकये अमनि
अपत्येर स्नेह सम नाहिक संसारे ※ याहारे देखेन मुनि जिज्ञासेन तारे
मुनि वले आछ बने यत तरु लता ※ देखेछ तोमरा मम पुत्र गेल कोथा
मृग पशु पक्षीरे लागिल सुधाइते ※ तोमरा देखेछ ऋष्यश्रृंगेरे जाइते
कांदिया कांदिया जाय विभाण्डक मुनि ※ कत दूर गिया पान ग्राम एकखानि
सकल लोकेरे मुनि शोकेते शुधान ※ काहार ए ग्रामखानि कह विद्यमान
जोड़हात करे प्रजागण कहे बाणी ※ ऋष्यश्रृंग मुनिवर इथे राजा तिनि

१ सन्नाटा २ झाड़ी ३ खोज ।

लोमपाद तनया जिन अर्पी ❋ हय-गज-सुरभि, सुभूमि समर्पी
सुनत प्रजा-मुख मंगल-बानी ❋ शमन क्रोध, आतमा जुड़ानी
सकुसल सुवन बिलस संसारू ❋ मिटेउ छोभ, मुनि करत विचारू
संतति-हीन अवध अजनन्दन[1] ❋ करहिं शृंग सुत-याग अरंभन

दो० सोइ अवसर भेटउँ सुवन, भूप-निमंत्रन पाय।
अस विचारि, बन गमन किय, मुनिवर तप मन लाय ।। ८७ ।।

राजा दशरथ का पुत्रेष्टि-यज्ञ और नारायण का चार अंशों मे जन्म-ग्रहण

मंत्र-सुमंत्र भूप मन भावा ❋ अंग[2] हेत चतुरंग सजावा
चले लेन हित शृंग मुनीसा ❋ लोमपाद-ढिग अवध-महीसा
दसरथ-खबरि अंग नृप पाई ❋ पाद-अर्घ्य, मृदु असन[3] सजाई
पूजि राज-उपचार समेता ❋ पूछेउ अंग आगमन-हेता[4]
दसरथ कही अंधमुनि बानी ❋ समय पाय सुतजोग बखानी
अवध-पयान शृंग मुनि करहीं ❋ सफल याग संतति हित रचहीं
नृप, दसरथहिं शृंग ढिग लाये ❋ मुनिहिं जोरि कर माथ नवाये
लोमपाद परिचय पुनि दीन्हा ❋ रविकुलमणि दसरथ जग चीन्हा

लोमपाद ताँके कन्या दियाछे कौतुके ❋ ग्राम पशु अश्व गज दियाछे यौतुके
एइ कथा कहिलेक यत प्रजागण ❋ क्रोधमन गैल मुनि अति हृष्टमन
संसार करिते पुत्र करियाछे साध ❋ पुत्रेर कुशल शुनि खण्डिल विषाद
भावे अपुत्रक राजा अजेर नन्दन ❋ ऋष्यशृंग करिवेन यज्ञ आरम्भन
निमन्त्रण हइवेक मम से यज्ञेते ❋ सेइ काले हवे देखा पुत्रेर सहिते
एतेक भाविया मुनि गेल निज वास ❋ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

दशरथ राजार पुत्रेष्टि यज्ञ ओ नारायणेर चारि अंशे अवतार

दशरथ राजारे सुमन्त्र इहा वले ❋ मुनिके आनिते राजा दशरथ चले
दशरथ लोमपाद नृपतिर घरे ❋ चतुरंग संगे यान हरिष अन्तरे
राजार पाइया वार्त्ता लोमपाद राजा ❋ राज उपचारे यत्ने ताँरे करे पूजा
मिष्टान्न प्रभृति दिया कराय भोजन ❋ जिज्ञासिल कोन कार्य्ये तव आगमन
दशरथ वलिलेन मोर वाणी शुन ❋ अयोध्याय लये चल शृंग एइ छण
अन्धकेर उक्ति आछे ये अतीत काले ❋ पुत्रवान हव आमि ऋष्यशृंग गेले
एमत कहिले दशरथ नृपवर ❋ लोमपाद लये गेल मुनिर गोचर
प्रणाम करेन दशरथ जोड़ हाते ❋ लोमपाद परिचय लागिल कहिते

१ दशरथ २ अंगदेश ३ जलपान ४ आने का प्रयोजन।

सुता शान्ता मुनिहिं बिवाही ✻ जनक[1] तासु दसरथ नृप आही
श्वसुर भूप, मुनि तासु जमाई ✻ सुवन-अभाव ताप दुखदाई
सो तव कृपा होयँ सुतवन्ता ✻ अवध गमन कीजिय भगवन्ता
मुदित ध्यान लखि मुनि, गृहभूपा ✻ चारि अंस प्रभु प्रगट अनूपा
अंधक मुनि कर बचन प्रमाना ✻ अवध-पयान शृंग मन माना
चढ़ि रथ सहित सुता-जामाता ✻ चले अवध पुरजन - सुखदाता
लोमपाद नृप संग सुहाये ✻ दल-बल सहित नृपति-घर आये
लखि बशिष्ठ-मुनिगन, कह शृंगा ✻ करहु अरंभन याग-प्रसंगा

सो० आदि विष्णु आराधि, पुनि निमंत्रि मुनिगन सकल।
भूपति - मंगल साधि, अश्वमेध रचना रचहु ।। ८८ ।।

भूप निमंत्रण दिय दिग्देसा ✻ जुरे पाय, मुनिवृन्द असेसा
पुलह, पुलस्त्य, पुलोम प्रकासा ✻ गौतम, कौण्डिन्य, दुर्वासा
वैशम्पायन, भरत, पराशर ✻ पिप्पलाद, शरभंग, निशाकर
अष्टावक्र, पतञ्जलि, गर्गा ✻ गौतम, भरद्वाज तपवर्गा
कूर्म, मारकण्डेय तपोधन ✻ सनक सनन्दन, ऋषी सनातन

दशरथ राजा एइ शुनेछ आख्यान ✻ तुमि कृपाकर यदि, हन पुत्रवान
शान्ताकन्या विवाह ये दियाछि तोमारे ✻ सेइ कन्या जन्मेछिल इँहार आगारे
इहार जामाता तुमि तोमार श्वशुर ✻ अपुत्रक तापित से ताप कर दूर
ध्यानेते जानिल मुनि मनेते प्रशंसे ✻ एइ घरे जन्मिबेन विष्णु चारि अंशे
अन्धक मुनिर कथा कभु नहे आन ✻ एतेक जानिया मुनि करिल पयान
तनया जामाता सङ्गे चड़ि निज रथे ✻ अयोध्याय् आइल राजा लोमपाद साथे
बशिष्ठादि आइल सकल मुनिगण ✻ ऋष्यशृंग बले कर यज्ञ आरम्भन
अश्वमेध यज्ञ कर विष्णु आराधन ✻ यत मुनिगणे तुमि कर निमन्त्रण
दशरथ निमन्त्रण करे देशे देशे ✻ निमन्त्रण पाइया यतेक मुनि आसे
अगस्त्य आइल आर पौलस्त्य पुलोम ✻ आइलेन वैशंपायन दुर्व्वासा गौतम
जैमिनी गौतम पिप्पलाद पराशर ✻ पुलह कौण्डिन्य मुनि आइल निशाकर
मार्कण्डेय मरीचि भरत भरद्वाज ✻ अष्टावक्र मुनि भृगु कूर्म्म दक्षराज
गर्ग मुनि दधीचि आइल शरभंग ✻ पूजे राजा मुनिगणे बाड़े मने रंग
पातालेते आइल कपिल राजऋषि ✻ सगर सन्ताने ये करिल भस्मराशि
वेदवान चक्रवान आइल सावर्णि ✻ जल माझे आछे सेइ मुनि मत्स्यकर्णि
सनातन सनक से सनन्द-कुमार ✻ सौरभि आइल मुनि विष्णु अवतार

१ पिता ।

भृगु, अगस्त्य, जैमिनि किय वासा ❋ कपिल—सुतन जिन सगर विनासा
वेदवान, चक्रवान[1], मरीची ❋ दक्षराज, सार्वर्णि, दधीची
मत्स्यकर्णि जिन नीर निवासा ❋ सौरभि बिष्णु समान प्रकासा
वाल्मीकि तट - जमुन निवासू ❋ सबन पूजि, नृप हृदय हुलासू
कश्यप-सुवन विभाण्डक आये ❋ अगनित नाम बरनि जनि जाये
तीनि कोटि द्विज श्रुति उच्चारन ❋ सकल मुनिन-मुख प्रगट हुताशन
कोउ छिति एक पाद आधारा ❋ वर्ष सहस कोउ बिन आहारा
जटा सीस, तन बल्कल बसना ❋ बिष्णु-कथा तजि, आन न रसना
तीन कोटि इमि मुनिनि-समाजा ❋ विपुल शिष्यदल सहित बिराजा
दिय निवास सन्मानि मुनीसा ❋ आये अवध बहुल अवनीसा
मैथिल जनकराज-ऋषि आये ❋ काशिराज नृप मल्ल सुहाये

दो० लोमपाद अंगाधिपति बंग-महिप घनश्याम।
भोज पुरन्दर आगमन, नृप मरीचपुर धाम॥ ८९॥

अतुल तेज तैलंग - नरेसू ❋ चम्पेश्वर नृप अवध प्रवेसू
कोटि अठासि पछाँह-भुवाला ❋ निज पुर तजि लख-लख नरपाला
कर्नाटक, मागध, गंधारा ❋ जेतक नृप तिन अवध अखारा[2]
पाय निमंत्रन - दशरथराऊ ❋ समिटे अखिल भुवन-नरराऊ

आइल वाल्मीकि यमुनार कूले धाम ❋ कश्यपेर पुत्र एल विभाण्डक नाम
कतेक आइल मुनि नाम नाहि जानि ❋ राजार यज्ञेते एल तिन कोटि मुनि
तिन कोटि मुनि करे वेद उच्चारण ❋ सबाकार वदने निःसरे हुताशन
पृथिवीते केह आछे एक पदे भर ❋ केह अनाहारे आछे सहस्र वत्सर
माथाय कपिल जटा वाकल वसन ❋ नारायण कथा विना मुखे नहे आन
एमत आइल तथा तिन कोटि मुनि ❋ सङ्गे कत शिष्य तार सख्या नाहि जानि
मुनिगण वासार्थ दिलेन वासाघर ❋ पृथिवीर राजा आइल अयोध्या-नगर
मिथिलार आइल जनक राजा-ऋषि ❋ मल्ल महाराज एल राज्य यार काशी
अंगदेश अधिपति लोमपाद नाम ❋ राजा वंगदेशेर आइल घनश्याम
मरीचिपुरेर राजा भोज पुरन्दर ❋ चम्पापुर हइते आइल चम्पेश्वर
आइल तैलङ्ग राजा तेजेते असीम ❋ आइल आटाशी कोटि ये छिल पश्चिम
उत्कल मागध आइल गांधार कर्णाट ❋ लक्षलक्ष राजा एल छाड़ि राजपाट
उदयास्त गिरिते यतेक राजा बैसे ❋ दशरथ निमन्त्रणे सब राजा आसे
मेदिनी भुवने वैसे यत राजगण ❋ नाना रङ्गे आइलेन संगी अगणन

१ चक्रवान ऋषि २ जमाव।

राजन अकथ कहौं किमि रंगा ❋ अगनित सचिव-सखा तिन संगा
कोटि अठासी लख नरराई ❋ पृथक नाम को सकिय गिनाई
सारभौम दसरथ महराजा ❋ वार्षिक कर भेटै सब राजा
सो धन सकल राज - भण्डारा ❋ पृथक बास प्रति भूप सँवारा
रची यज्ञ नृप सरयू तीरा ❋ सोइ शुचि भूमि चले तपधीरा[1]
योजन लंब ऐकासी अवनी ❋ द्वादश इतर पक्ष लिय धरनी
चारि कोस मेखला बँधाई ❋ शत योजन छिति-यज्ञ सुहाई
यज्ञभूमि मुनिगन लिय आसन ❋ शुभ छन-लगन याग आरंभन
आदि स्वस्तयन मुनिगन गावा ❋ पुनि दशरथ संकल्प सुहावा
विनय जोरि कर मधुरस साने ❋ सकल तुल्य, बड़-छोट न जाने
कासु वरन ? मोहिं करहु अदेसू ❋ कहेउ श्रृंग ऋषि सुनहु नरेसू
कुलगुरु प्रथम सुवन-जगमूला[2] ❋ वरन बशिष्ठ शास्त्र अनुकूला

सो० तासु वरन न विवाद, उचित कहेउ ऋषिगन सकल ।
मुनि समान मर्याद[3], अमित द्रव्य नृप दिय हरषि ॥ ९० ॥

करहिं वेदध्वनि संग तपोधन ❋ भई प्रकट मुनि-वदन[4] हुतासन

प्रत्येक कहिते नाम नितान्त अशक्य ❋ राजा यत आइल आटाशी कोटि लक्ष
यत राजा गेल दशरथेर गोचरे ❋ राजचक्रवर्ती दशरथ सर्व्वोपरे
आसिया करिल दशरथ सह देखा ❋ दिलेन वार्षिक कर समुचित लेखा
यत धन एनेछिल राखिल भाण्डारे ❋ प्रत्येके प्रत्येक वास दिल सबाकारे
यज्ञ करिछेन राजा सरयूर तीरे ❋ मुनिगण गेलेन राजार यज्ञघरे
एकाशी योजन घर अति दीर्घतर ❋ द्वादश योजन तार आड़े परिसर
चारिक्रोश बांधियाछे यज्ञेर मेखला ❋ शतेक योजन उमे सेइ यज्ञशाला
मुनिगण वैसे गिया घरेर भितरे ❋ शुभक्षणे शुभलग्ने यज्ञारम्भ करे
स्वस्तिकादि अग्रेते करये मुनिगण ❋ सकल्प करिल तबे अजेर नन्दन
दाण्डाइल दशरथ जोड़ करि हात ❋ कहिते लागिल सव मुनिर साक्षात्
छोट बड़ नाहि जानि तुल्य सर्व्वजन ❋ आज्ञा कर कारे अग्रे करिब वरण
ऋष्यश्रृंग बलिलेन शुनह राजन ❋ अग्रेते करह गुरु वशिष्ठ वरण
ब्रह्मार तनय आर कुल-पुरोहित ❋ उँहार वरण आगे शास्त्रेते विहित
वशिष्ठेरे वरिया घुचाओ अभिमान ❋ बड़ छोट केह नहे सकलि समान
भाल-भाल बलिया सकल मुनि बले ❋ वस्त्र अलङ्कार राजा दिलेन सकले
सकले करिल एककाले वेदध्वनि ❋ मुनि मुखे निःसरिल पावक तखनि

---

१ तपस्वी लोग २ ब्रह्मा के पुत्र वशिष्ठ ३ प्रतिष्ठा ४ मुनियों के मुख से ।

करि शुचि अनल[1], याग सोइ थापा ※ अग्निकुण्ड, सोइ पावक व्यापा
आहुति यव-तिल-तण्डुल-रासी ※ घृत-घट सहस देयँ बनबासी
निरखि याग इमि हर्ष निरंतर ※ सुरगन सरग न थिर उर अन्तर
विश्वस्रवा - सुवन दससीसा ※ सुरन सूल नित लंक-अधीसा
कहत इन्द्र, किमि हे चतुरानन ※ यहि अवसर जन्महिं नारायन
सफल याग, दसरथ-गृह ताता ※ होय तबहिं दसकंध-निपाता
मत मिलाय गमने सुरवृन्दा ※ छीर-उदधि जहँ आनँदकन्दा
विनय विरंचि विविधि संलग्ना ※ प्रभु जगपति किमि नींद-निमग्ना
रमा[2] परसि तहँ प्रभुपद बंदति ※ शयन अनन्त-सेज[3] त्रिभुवनपति
गे समीप सुर सकल समाजा ※ पन्नग-बिछवनि[3] बिष्णु विराजा
आभा-मेघ सलिल कस सोहा ※ अहिफन सहस छत्र मन मोहा
तव निद्रा निद्रित जग जेता[4] ※ सकल विश्व तव चेतन चेता
कृपा-कोरि[5] सेवकन निहारी ※ विपति दूर कीजिय वनवारी
चौमुख-विनय[6] सुनत रस पागी ※ श्रीहरि क्षीर-सयन उठि त्यागी

सेइ अग्नि पवित्र करिया मुनिगण ※ अग्निर कुण्डेते लये करिल स्थापन
आतप तण्डुल यव तिल राशिराशि ※ एके एके दिल घृत सहस्र कलसी
एक वर्ष यज्ञ करे राजा दशरथे ※ देवतार भय हेथा हइल स्वर्गेते
विश्वश्रवार पुत्र हय राजा दशानन ※ हीन ज्ञाने लंकाते खाटाय देवगण
महेन्द्र बलेन ब्रह्मा कोन बुद्धि करि ※ एइ काले जन्म कि लवेन श्रीहरि
पुत्रेर लागिया दशरथ यज्ञ करे ※ ताँर पुत्र हैले तवे दशानन मरे
एइ युक्ति करिया यतेक देवगण ※ क्षीरोद समुद्रे गेला यथा नारायण
चारिमुखे ब्रह्मा गिया करेन स्तवन ※ कत निद्रा यान प्रभु देव नारायण
पदतले लक्ष्मीदेवी करिछेन स्तुति ※ अनन्तशय्याय शुये आछेन श्रीपति
सकल देवता गिया दाण्डाइल कूले ※ देखिल येमन मेघ भासिछे सलिले
शुइया आछेन हरि अनन्त उपरे ※ वासुकि सहस्र फना तदुपरि धरे
सेवकगणेर प्रति प्रभु देह मन ※ तोमार निद्राय निद्रा चेतने चेतन
विपत्ति करह दूर श्रीमधुसूदन ※ चारिमुखे ब्रह्मा यदि करेन स्तवन
क्षीरोदे उठिया बसिलेन नारायण ※ चारि दिके देखिलेन यत देवगण
वसिया श्रीहरि करिलेन एक शब्द ※ से शब्दे हइल श्लोक चारि पदबद्ध
हरि करिलेन चारिदिके निरीक्षण ※ म्लान देखिलेन सब देवेर वदन

---

१ यज्ञार्थ पवित्र अग्नि २ लक्ष्मी ३ शेषशय्या ४. जितना भी, समस्त
५ कृपादृष्टि ६ ब्रह्मा की प्रार्थना ।

जुरे सकल सुरगन चहुँ देखी * कहेउ शब्द अेक नाथ विसेखी

सो० प्रगट अनुष्टुप छन्द, मुख मलीन सुरवृन्द लखि।
पूछत आनँदकन्द, कहहु शत्रु को प्रगट तव ॥ ६१ ॥

विधि[1] सकोच कह सुनहु पुरन्दर * मम वर प्रबल दसानन निसिचर
सो तुम जाय सकल दुख-गाथा * वरनौ द्रवित[2] होयँ भवनाथा
जोरि पाणि, सुर-गुरु[3] प्रभु आगे * सविनय करन दण्डवत लागे
मंगल रूप परम भगवाना * सबन विदित, राखहु सुर-माना
नाथ-अनाथ, दीन कर त्राना * निगमागम[4] तुम सकल पुराना
विश्वस्रवा-तनय[5] दुर्दण्डा * विधि अराधि वर लहेउ प्रचण्डा
तेज-लंकपति, सुर श्रीहीना * सुरपुर त्रास दुसह तिन दीना
सविता-सोम न स्वर्ग प्रकासू * निसा-दिवस तम-निविड़[6] निवासू
दण्डहीन, हत यम-अधिकारा * बरुन न अधिपति जल-आगारा
पावक प्रबल तेज निर्वाना * कियो दरिद हरि धनद[7] खजाना
गतिविहीन भयभीत समीरा[8] * तजे मार्ग ग्रहगन, अति पीरा
सागर वेग न, मंद तरंगा * राग-रंग जनि कतहुँ प्रसंगा
वीना-नाद न नारद गीता * सुरपुर असुभ, सकल विपरीता

मलिन देखिया जिज्ञासेन नारायण * तोमा सबाकार शत्रु हैल कोन जन
विधाता वलेन शुन देव पुरन्दर * तुमि गिया कह कथा प्रभुर गोचर
आमि वर दियाछि दुर्द्दान्त रावणेरे * तुमि गिया कह दुःख प्रभुर गोचरे
देवगुरु बृहस्पति जोड़ करि हात * प्रभुर गोचरे करिलेन प्रणिपात
अवधान करह ठाकुर भगवान * आपनि जानह यत देवतार मान
आगम निगम तुमि भारत पुराण * अनाथेर नाथ तुमि कर परित्राण
विश्वश्रवा मुनि पुत्र राजा दशानन * पाइल ब्रह्मार वर करि आराधन
तार तेजे स्वर्गे देव रहिते ना पारे * देवेर देवत्व हरे दुष्ट वलात्कारे
घुचाइल यमेर यतेक अधिकार * सूर्य्येर उदय नाइ सदा अन्धकार
चन्द्रेर कतेक कब नाहि तार ज्योति * बहुकाल प्रभु स्वर्गे अन्धकार राति
वरुणेर घुचिल अगाध यत जल * निर्व्वाण हइल अग्नि नाहिक प्रबल
कुबेरेर हरे धन पाइल तरास * ग्रहगणेर अधिकार हइल विनाश
सम्वरिल पवन पाइया महाभय * समुद्रेर वेग अति मन्द मन्द बय
छाड़े वीणा नारद वीणाय छाड़े गीत * अमंगल स्वर्गे यत हैल विपरीत

---

१ ब्रह्मा २ करुणा से पिघलें ३ वृहस्पति ४ वेद-शास्त्र ५ विश्वस्रवा का पुत्र रावण ६ घोर अंधकार ७ कुबेर ८ पवन।

पावसादि षड्ऋतु कुसुमाकर ✻ तजे समय भय-बस दसकंधर
करि दुर्जय रावण जग माहीं ✻ दै वर अब विरंचि पछिताहीं
विधि-वर पाय, विधिहिं प्रतिकूला ✻ सुरपुर हरन दुसह दुखसूला
दो० छिनीं सुता, अपमान चहुँ, मलिन, न सुरपुर वास।
ठौर न त्रिभुवन सुरन कहुँ, जहाँ जायँ तहँ त्रास ॥ ९२ ॥
अहह सरन पग प्रभु तव पावन ✻ देव-देवि राखिय बधि रावन
सुनत, नाथ-उर क्रोध कराला ✻ जिमि घृत पाय प्रज्वलित ज्वाला
कर गहि चक्र सुदर्शनधारी ✻ सुरन प्रबोधि गरुड़ असवारी
अधिक न सुरगन त्रास प्रसंगा ✻ करौं मान-मद-रावन भंगा
अबहि बधौं, कह गरुड़-असीना ✻ विधि सोइ समय निवेदन कीना
मम वर अमर प्रथम दसकंधर ✻ बध न तासु बिन मानव-बन्दर
जो नर जनम लेयँ भगवाना ✻ निसिचर मारि, करैं सुर-त्राना
वर के वीर, विपति मोहिं टेरा ✻ सहज सुभाव सदा विधि केरा
भावी अमिट, चखौ निज करनी ✻ सकल स्वर्ग तजि गमनौ धरनी
सुनि विरंचि, हरि, विनय सुनावा ✻ दुर्जय दनुज दुसह दुख गावा
प्रहरी-लंक दण्डधर भानू[1] ✻ निज कर रंधति[2] पाक कृसानू[3]

वसन्तादि अधिकार छाड़े छय ऋतु ✻ नित्य भय पाइ सबे रावणेर हेतु
ब्रह्मार वरेते सेइ हइल दुर्ज्जय ✻ तारे वर दिया ब्रह्मा निजे पान भय
ताँर वर पेये लङ्के ताँहार वचन ✻ स्वर्ग हैते खेदाड़िया दिल देवगण
काड़िया लइल से देवेर कन्या यत ✻ देवेर शरीरे अपमान सहे कत
त्रिभुवने रहिते कोथाओ नाहि स्थान ✻ यथा जाइ तथा सेइ करे अपमान
निवेदन करि प्रभु तोमार चरणे ✻ रावणे वधिया राख देव देवीगणे
शुनिया प्रभुर क्रोध अन्तरे बाड़िल ✻ घृत पेये अग्नि येन प्रज्ज्वलित हैल
विनता-नन्दने हरि करेन स्मरण ✻ चक्र हाते पक्षिवेर करि आरोहण
कहिलेन देवगणे भय नाहि आर ✻ रावणे एखनि ये करिब संहार
गरुड़े चड़िया चलिलेन जगन्नाथ ✻ हेनकाले कहे ब्रह्मा प्रभुर साक्षात्
आमि वर दियाछि ये पूर्व्वे रावणेरे ✻ एखनि करिले रण रावण ना मरे
नरेर उदरे यदि लओ हे जनम ✻ नर वानरेर हाते ताहार मरण
प्रभुर साक्षाते ब्रह्मा कहेन ए कथा ✻ जन्मेर नामेते प्रभु हेंट करे माथा
वरेर समय ब्रह्मा हन आगुयान ✻ विपदे पड़िले वले रक्ष भगवान
कतबार दुःख पाव ललाटे लिखन ✻ पृथिवीते जाव स्वर्ग करिया त्यजन
पुनश्च हरिरे ब्रह्मा कहेन वचन ✻ दुष्ट रावणेर क्रीड़ा करह श्रवण

१ सूर्यदेव २ रसोई बनाते हैं ३ अग्निदेव।

सुरपति सुमन सँजोवत हारा * पवन करत नित मन्द बयारा[1]
छत्र छपाकर[2] छिति महरानी * मार्जन, वरुन पियावत पानी
घोटक घास काटि उपहासू * दीन विलोकि दसा यम-त्रासू
शनि-कुदीठ त्रैलोक विनासा * धोवत बसन लंकपति-बासा
दनुज-सुतन-चटसार[3] गुजारा * सकल सृष्टि मैं सिरजनहारा

दो० रावन मन रंजन करत, बीनापानि[4] मुनीस ।
भुवन-सिद्धि-सम्पति सकल, हित बिलास-दससीस ।। ९३ ।।

जो नर-जनम न भावै प्रभु-मन * हरि-रचना लीजै हरि-चरनन
रचउ विरंचि इतर सुरनाथा * तव जग तुमहिं समर्पित नाथा
सुनि विधि-विनय सुधा रससानी * भक्तविवस कह मंगल बानी
बरनउ युगुति[5] सकल चतुरानन * कासु उदर जनमउँ, केहि आँगन
कवन देस-कुल मम अवतारा * को मम जग परिजन-परिवारा
कह विधि, अवध भानुकुल-भूपा * कौशल्या पटरानि अनूपा
तासु गर्भ प्रभु पावन जन्मा * सुनि बोले मृदु बैन अजन्मा[6]
चिर परिचित मम ते दोउ प्रानी * भक्त पुरातन मम-वरदानी

हाते अस्त्र सूर्य्यदेव लकार दुयारी * इन्द्र माला गाँथि देन चन्द्र छत्रधारी
आपनि त अग्निदेव करेन रन्धन * मन्द मन्द वातास करेन समीरण
वरुण बहिया जल देन निति निति * करेन मार्ज्जन गृह निजे वसुमती
शुनिले यमेर कथा हइबेक हास * काटिया आनेन तार घोटकेर घास
शनि दृष्टे त्रिभुवन भस्म हैया उड़े * कापड़ धुइया देन शनि लङ्कापुरे
जगतेर कर्ता आमि ब्रह्मा महामुनि * पड़ाइ बालकगणे लङ्काते आपनि
रावणेर अग्रेते देव गायक नारद * रावण भुवन जिति करेछे सम्पद
जन्म निते हरि यदि हइला कातर * आपनार सृष्टि सब लह चक्रधर
आर इन्द्र आर ब्रह्मा करह सृजन * आपनार सृष्टि सब लह नारायण
एतेक वलिया ब्रह्मा करुण वचन * भकतवत्सल प्रभु ताहे देन मन
हे ब्रह्मन् इहार उपाय वल मोरे * कोन वंशे जन्म लव बल कार घरे
काहार उदरे आमि लइब जनम * आमारे वा अपत्य बलिबे कोन जन
ब्रह्मा बले जन्म लवे दशरथ घरे * सूर्य्यवंश पुण्येते कौशल्यार उदरे
विधातार वचने बलेन चक्रपाणि * दशरथ कौशल्या उभये आमि जानि
पूर्व्वेते आमार सेवा करिछे विस्तर * जन्मिब तोमार घरे दियाछि ए वर

---

१ पंखा झलना २ चन्द्रदेव ३ राक्षस-बालकों की पाठशाला ४ नारद
५ तरकीब ६ जन्म-मृत्यु-रहित परब्रह्म विष्णु ।

सो वर सफल जनमि तिन गेहा ❊ धरहुँ सुरन हित मानव-देहा
वानर-योनि जनमि सुरवृन्दा ❊ नर-वानर मिलि असुर निकन्दा[1]
जानत विष्णु-गमन छितिलोका ❊ कातर कमला[2] प्रभुहिं बिलोका
धरा जनम तव, नाथ वियोगू ❊ कतक काल पुनि दरस सँयोगू
दुसह व्यथा, मोंहि तजिय न कन्ता ❊ रमा रोय प्रनवति भगवन्ता
बोले हरि, विधि कहहु विचारी ❊ लोकजननि[3] किमि व्यथा निवारी
जगती जनम बिना जगमाता ❊ होय न प्रभु दसकंध निपाता
दिव्य जनम[4] छिति जहाँ विदेहा ❊ सुता प्रकट मिथिलापति गेहा

जनक ऋषि के हल जोतते समय लक्ष्मी का जन्म

दो० कथा हरिजनम बिलम्बि[5] कछु, पुनि वरनेउ कृतिवास ।
जगदम्बा जिमि जानकी, जनमी जनक-निवास ।।
वेदवती (कुश-ध्वजसुता), तजी जबै निज देह ।
बध निमित्त लंकेस, सिय प्रगटी धाम-विदेह ।। ६४ ।।

मिथिला-अधिप जनक ऋषिराजा ❊ यज्ञभूमि जोतत सुतकाजा
लै हर जोतत खेत भुवाला ❊ नभ उर्वसी गमन सोइ काला

नरेर गर्भेते आमि लइब जनम ❊ वानरीर गर्भे जन्म लह देवगण
आमि नर हइ हयो तोमरा वानर ❊ रावण मारिते येन हइओ दोसर
ब्रह्मा वाक्ये स्वीकार करेन नारायण ❊ पदतले पड़ि लक्ष्मी जूड़िल क्रन्दन
तव अवतार हबे पृथिवीमण्डले ❊ तोमा दरशन आमि पाव कत काले
आमारे छाड़िया कोथा जाइवे श्रीहरि ❊ विच्छेद-यन्त्रणा आमि सहिते ना पारि
लक्ष्मीर रोद न देखि कान्दे कम्बुग्रीव ❊ ब्रह्मारे जिज्ञासे कोथा लक्ष्मीरे राखिब
शुनिया से वाक्य ब्रह्मा निवेदन करे ❊ उनि नाहिं गेले कि रावण राजा मरे
अयोनि सम्भवा इनि जन्मिबेन चाषे ❊ जनकेर घरे जन्म मिथिला प्रदेशे
एतेक बलिल यदि ब्रह्मा तपोधन ❊ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास बिचक्षण

जनक ऋषिर चाषे लक्ष्मीर जन्म

श्री हरिर जन्म-कथा थाकुक एखन ❊ आगेते कहिव माता लक्ष्मीर जनम
येखानेते वेदवती छाड़िल जीवन ❊ सेखाने हइल दिव्य मिथिला भुवन
तार राजा हइल जनक नामे ऋषि ❊ पुत्रेर कारणे राजा यज्ञभूमि चषि
स्वहस्ते लाङ्गले राजा यज्ञभूमि चषे ❊ उर्व्वशी चलिया जाय उपर आकाशे

१ विनाश २ लक्ष्मी ३ जगदम्बा ४ अलौकिक (अयोनि) जन्म ५ रुककर ।

लखि अप्सरा कामसर घाता ※ छिति ऋतुमती, रेत नृप पाता
अवनि-गर्भ सो डिम्ब-सरूपा[1] ※ जोतत भूमि जहाँ नित भूपा
हर परसत, नृप डिम्ब निहारी ※ किये टूक दुइ, कौतुक भारी
सुता रतन छबि रमा सरूपा ※ चपला सरिस, रुदन सुनि भूपा
चकित देव, उत शब्द अकासा ※ सीरभूमि जो सुता प्रकासा
तव तनया ! पालौ गृह जाई ※ लै नृप अंक चले हरषाई
केहि दुख दीन हरन किय बाला ? ※ कहत रानि, नहिं उचित भुवाला
जोतत सीर लही यह सीता ※ पालहु रानि समोद सप्रीता
संततिहीन ! उमड़ असनेहा ※ सुता बढ़त दिन-दिन नृप-गेहा
केशपाश घन चवँर समाना ※ अधर ओष्ठ फल बिम्ब लुभाना
करगत सुकर सहज कटि अंगा ※ अँगुरि पदुमपग हिंगुल-रंगा
तनछबि सुबरनलता प्रतीता[2] ※ सीता[3]-जनम नाम सो सीता
अतुल अकथ इंदिरा सरूपा ※ जेहि छबि मुग्ध विष्णु नररूपा
लक्ष्मी-जनम-कथा सुनि काना ※ लहै सुतिय, सुत, संपति नाना

ताहाके देखिया कामे जनक मोहित ※ हठात् ऋषिर वीर्य्य हइल स्खलित
दैवयोगे पृथिवी आछिल ऋतुमती ※ ऋषिवीर्य्य पड़िया हइल गर्भवती
डिम्बरूपे भूमि मध्ये छिल बहुकाले ※ भासिया उठिल डिम्ब लाङ्गल शिराले
डिम्ब भङ्गि जनक करिल दुइ खान ※ कन्यारत्न देखि ताहे लक्ष्मीर समान
उङा-उङा करि कान्दे येन सौदामिनी ※ आचम्बिते आकाशेते हैल देववाणी
चाषभूमि हैते एइ कन्यार जनम ※ तव कन्या बटे एइ करिह पालन
शुनिया जनक बड़ हरिष अन्तरे ※ कन्या कोले करिया तखनि एल घरे
देखि कन्या राजराणी जिज्ञासे तखन ※ दुःख दिया काहारे आनिल कन्याधन
जनक बलेन क्षेत्रे कन्यार जनम ※ मम कन्या बटे तुमि करह पालन
अपत्य नाहिक स्नेह बाड़िल अन्तरे ※ दिने-दिने बाड़े लक्ष्मी जनकेर घरे
घन केशपाश ताँर येमन चामर ※ पाका बिम्बफल तुल्य ताँर ओष्ठाधर
मुष्टिते धरिते पारि ताँहार काँकालि ※ हिंगुले मण्डित पादपद्मेर अंगुलि
परमा सुन्दरी कन्या येन हेमलता ※ शिराले हइल जन्म नाम राखे सीता
लक्ष्मीर रूपेर किवा कहिब तुलन ※ याँर रूपे भुलिबे आपनि नारायण
येइ जन शुने एइ लक्ष्मीर जनम ※ धन पुत्र लक्ष्मी तारे देन नारायण
कृत्तिवास पण्डित कवित्व विचक्षण ※ गाइल ए आदिकाण्ड लक्ष्मीर जनम

१ अंडे के समान २ मालूम पड़ती थी ३ खेत जोतने के बाद की रेखा को सीता कहते हैं ।

पुत्रेष्टि-यज्ञ की समाप्ति पर यज्ञ का चरु राजा दशरथ की तीन रानियों द्वारा खाना और तीनों के गर्भ से चार अंशों में नारायण का जन्म

दो० जनकपुरी श्री-जनम उत, अवधपुरी श्रीकान्त।
असुर सूल, सुर सुखद, किय, लीला लीलाकान्त[1] ॥ ९५ ॥

यज्ञ, बर्ष लौं, दसरथ कीन्हा ※ यज्ञभूमि प्रभु दरसन दीन्हा
शंख चक्र कर पद्म गदाधर ※ वनमाला किरीट कुण्डलधर
शृंगिहिं केवल दरस सरूपा ※ लखत न आन[2] चतुर्भुज रूपा
कह मुनि, दसरथ-पुन्य महाना ※ जिन निकेत जन्मत भगवाना
कौतुक! सुरन कीन नभबानी ※ राम-जनम, रावन-बध जानी
अंधक सों नृप श्रीफल पावा ※ सो शृंगी चरु[3] सहित मिलावा
आहुति-पूर्न शृंगि ऋषि दीना ※ विष्णु-रूप चरु प्रगटित कीना
चरु सँजूति पुनि सुबरन थारी ※ सुभ छन मुनि दसरथहिं सवाँरी
महरानिन चरु दीजिय जाई ※ ते सुतवती होयँ सो पाई
चरु नृप लीन, कीन मुनि बंदन ※ शुचि पथ महल चले अजनन्दन
कैकइ कौशल्या पटरानी ※ यज्ञ-प्रसाद देन मन मानी

दशरथेर पुत्रेष्टि-यज्ञ ओ यज्ञेर चरु तिन रानी के भक्षण एवं तिनेर गर्भे नारायणेर चारि अंशे जन्म

मिथिलाय हैल यदि लक्ष्मीर उत्पत्ति ※ अयोध्याय जन्म निते यान लक्ष्मीपति
दशरथ यज्ञ करे एकइ वत्सर ※ यज्ञस्थले आसि देखा दिलेन श्रीधर
शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज कला ※ किरीट कुण्डल कर्णे हृदे बनमाला
एइरूपे आसि देखा दिल नारायण ※ केवल देखिल ऋष्यशृङ्ग तपोधन
ऋषि बले दशरथ तुमि पुण्यवान ※ तव घरे जन्मिते आइल भगवान
हेनकाले देववाणी हैल चमत्कार ※ विष्णु जन्मे रावणेर करिते संहार
ऋष्यशृङ्ग मुनि दिल यज्ञेते आहुति ※ यज्ञ हैते उठे चरु विष्णुर आकृति
विष्णुमंत्रे ऋष्यशृंग ताहे दिल काठि ※ ताते फेलि दिल अन्धकेर फलगुटि
तुलिलेन चरु मुनि सुवर्णेर थाले ※ दशरथ हाते दिया कहे शुभकाले
प्रथमा नारीके लये कराओ भक्षण ※ एइ चरु हैते हबे तोमार नन्दन
मुनि चरु हाते दिल राजा वन्दे माथे ※ अन्तःपुरे गेल राजा सुपवित्र पथे
कौशल्या कैकेयी ताँर मुख्य दुइराणी ※ एकभाग छिल चरु कैल दुइ खानि
अग्रभाग दिल राजा कौशल्या राणीरे ※ शेष भागखानि दिल कैकेयी देवीरे

१ रामचन्द्र २ अन्य किसी को ३ यज्ञ की आहुति के लिए हविष्यान्न।

दोउन, भाग दै भूप समाना * यज्ञभूमि दिसि कीन पयाना
रानि सुमित्रा सकल विलोका * भरत उसास, अतुल उर सोका
कवन द्रव्य मोंहि वञ्चित कीन्हा * हत्भागिन मोंहि भूप न चीन्हा
जीवन विफल, विलग मोंहि राखी * केहि विधि सुख, अकेल जो चाखी[1]
करुनामयी कौसिला रानी * कहेउ, सुमित्रा! सुनु मम बानी

दो० सहभामिनि तीनिउ भगिनि, अर्द्ध देहुँ तोंहि अंस ।
पै, मम सुत-सहचर सदा, रहै तोर अवतंस ॥ ९६ ॥

ममज[2] दास तव-तनय[3] जेठानी * दै वर मोंहि सनाथहु रानी
एक भाग निज हित धरि शेषा * दियेउ सुमित्रहिं चरु अवशेषा
कैकइ कौतुक सकल निहारी * अति सयानि, इमि गिरा उचारी
मम चरु-भाग रानि तव हेता * वचन देहु जो हर्ष समेता
मम चरु-अंस प्रगट तव नन्दन * मम-सुत-सखा सतत[4] मनरंजन
दीदी दया लहौं बड़भागी * ममज, दास तवसुत-अनुरागी
सुनि कैकई अंस निज दीन्हा * तीनिउ संग पान चरु कीन्हा
हरि, इक अंस, जनम तन चारी * शुभ छन तीनि कोखि अवतारी
दिय नृप सविधि दच्छिना-दाना * पूरन याग, द्विजन सन्माना

चरु दिया यज्ञशाले गेल दशरथे * हेन काले सुमित्रा से लागिल कान्दिते
ऊर्द्धश्वासे आसि कहे छाड़िया निश्वास * कोन द्रव्य खेते राजा ना कैल आश्वास
आमि त दुर्भागा नारी विफल जीवन * आमारे वञ्चिया खेये कत पाबे धन
शुयिया कौशल्या राणी ह'ये दयावती * बलिते लागिल राणी सुमित्रार प्रति
मने मानियाछि हेन तिनटि भगिनी * आपन भागेर तोमा दिव अर्द्धखानि
इहाते तोमार यदि जन्मये नन्दन * आमार पुत्रेर संगे रबेक से जन
सुमित्रा वलेन दिदि एइ देह वर * मम पुत्र हय तव पुत्रेर नफर
अग्रभाग कौशल्या राखिया निज तरे * शेषभाग दिल तबे सुमित्रा भग्निरे
ताहा देखि बसिया कैकेयी क्रूरमति * कपटे डाकिया कहे सुमित्रार प्रति
चरुर अर्द्धेक अंश तोमा दिब आमि * सुमित्रा भगिनी एइ सत्य कर तुमि
आमार चरुर अंशे हबे ये नन्दन * आमार पुत्रेर संगी क'रो सेइ जन
सुमित्रा बलेन दिदि करिलाम पण * तोमार पुत्रेर दास आमार नन्दन
एत शुनि शेषभाग दिलेन ताँहारे * तिनजन खाइलेन चरु एकबारे
एक अंशे नारायण चारि अंश हैया * तिन गर्भे जन्मिलेन शुभक्षण पाइया
हेथा यज्ञ सांग करि राजा दशरथ * ब्राह्मणेरे धन दान करे विधिमत

१ खायगा २ मुझसे उत्पन्न पुत्र ३ तुम्हारे पुत्र राम का ४ सदैव ।

'नृप सुतवान' सबन वर दीना * तृप्त गमन निज-निज गृह कीना

श्री राम का जन्म

इत, रानिन चरुपान प्रभावा * कोटिन भानु तेज तन छावा
असित[1] केस सित[2] वयस बुढ़ानी * सो तजि, चरुबल तरुनि लखानी
विधि-माया, तीनिउ इक काला * भई ऋतुवती, विदित भुवाला
धारेउ गर्भ, भूप अनुमाना * बढ़त सतत शशिकला समाना
शुभ लच्छन दुइ मास वितीता * चौथ मास, नृप भई प्रतीता
पञ्चम मास गर्भ पगुधारा * समाचार सुभ जग विस्तारा

दो० पुरुबारध[3], सुमुखिन बदन[4], जिमि प्रभात कर चंद ।
श्याम उरोज, सलज्ज मन, अहिनिसि[5] पुलक अनन्द ।। ९७ ।।

कछु बीते रुचि मृतिकापाना * उन्नत उदर, नयन अलसाना
फरकति कछु उठवनि लग भारी * अभरन[6] खसति, अंग पियरारी
असह बसन, तन-बल नित छीना * आभा श्याम उरोजन लीना
बढ़त गर्भ बीते नव मासा * लखि भूपति-हिय अमित हुलासा

ब्राह्मणे तुषिल करि नाना धन दान * सबे आशीर्व्वाद करे हओ पुत्रवान्
विदाय हइया सबे निज देशे जाय * आदिकाण्डे गाइल पुत्रेष्टि यज्ञ साय

श्री रामेर जन्म

हेथा तिन राणी चरु करिल भक्षण * कोटि सूर्य्य जिनि सेइ तिनेर वरण
हइया छिलेन वृद्धा शिरे पाका केश * चरुर भक्षणे येन प्रथम वयेस
विधाता सकल माया करेन घटन * एककाले ऋतुमती हैल तिनजन
दशरथ जानिलेन ए सब सन्दर्भ * ऋतुर लक्षणे जाना गेल सेइ गर्भ
एइमत तिन गर्भ बाड़े दिने दिने * दुइमास गर्भ जाना गेल सुलक्षणे
चारिमास गर्भेते प्रतीत हैल मन * पञ्चमास गर्भेते शुनिल त्रिभुवन
प्रथम गर्भेते लज्जायुक्ता अहर्निशि * बदन हइल येन प्रभातेर शशि
कुचाग्र हइले काल उदर डागर * मृत्तिकार भक्षणेते सदा समादर
घन घन हाइ उठे अलस नयन * पाण्डुवर्ण हैल अंग खसे आभरण
कृष्णवर्ण प्रकाश हइल स्तन बोंटे * शरीरे ना रहे वस्त्र नित्य बल टुटे
एइमत हइल से गर्भेर वर्द्धन * नयमास गर्भवती हैल तिनजन

---

१ काले २ सफ़ेद ३ गर्भकाल का पूर्वार्द्ध समय ४ मुख ५ रातदिन ६ गहने ।

पञ्चामृत कराय शुचि पाना ❋ पावन गर्भ कीन सबिधाना
पुन्य पुरातन, तरु फल आवा ❋ कौसिल्या हरि सपने पावा
शंख चक्र कर पद्म गदाधर ❋ दरस चतुर्भुज दिय सारंगधर
सुवन-भाव अंकहिं लिय रानी ❋ कहेउ 'मातु!' प्रभु मञ्जुल वानी
प्रथम कीन मम बहु सेवकाई ❋ सुफल, उदर तव प्रगटहुँ आई
मोहिं पालहु दै स्तन - पाना ❋ अस कहि पुनि अदरस भगवाना
भौंचक रानि निरखि सुख-सपना ❋ सकल समोद दसरथहिं बरना
'मातु-मातु' मोहिं नाथ पुकारी ❋ अन्धक-वर नृप सत्य विचारी
हरषि द्विजन बहु सुबरन दाना ❋ गत दस मास नृपति अनुमाना
जस-जस प्रसव-काल नियराई ❋ तस-तस भूप मोद अधिकाई
अब-तब[1] जनम, निकट, मन धरहीं ❋ मंगलगान प्रजागन करहीं
हरि आगमन-भूमि अनुमाना ❋ वसति गगन आतुर सुर नाना

दो० दस दिसि मंगल नखत चहुँ, शुभ ग्रह उदित अनन्द।
प्रथम पीर सुनि, प्रसवपुर[2] प्रविसीं[3] नारीवृन्द ॥ ९८ ॥

शुक्ला नवमि चैत मधुमासा ❋ शुभ छन जग जगनाथ प्रकासा

देखि दशरथ राजा आनन्दित मन ❋ पञ्चामृत दिया कैल गर्भेर शोधन
ये छिल प्राक्तन पुण्य ताहारि कारण ❋ कौशल्यारे देन देखा प्रभु नारायण
स्वप्ने शंख चक्र गदा पद्म शार्ङ्गधारी ❋ चतुर्भुज रूपे देखा दिलेन श्रीहरि
पुत्रभावे हरिके करिल राणी कोले ❋ कहिलेन कौशल्यारे डाकिया मा बले
पूर्व्वेते आमार सेवा करेछ आदरे ❋ सेइ पुण्ये जन्मिलाम तोमार उदरे
आपनि तोमार गर्भ लयेछि जनम ❋ पुत्र बलि स्तन दिया करह पालन
एत बलि अदर्शन हैला नारायण ❋ कौशल्या बलेन किवा देखिनु स्वपन
कहिल सकल कथा दशरथ प्रति ❋ मा बलिया आमारे ये डाकेन श्रीपति
शुनि दशरथ राजा हरषित मन ❋ भावे, बुझि सत्य हवे अन्धक वचन
दीन द्विजगणेरे दिलेन कत स्वर्ण ❋ एइरूपे दश मास हइल सम्पूर्ण
प्रसव समय यत निकट हइल ❋ दशरथ भूपतिर आनन्द बाड़ील
एखन तखन राणी हइब प्रसव ❋ प्रजागण गान करे सदा शुभ रव
जेइ दिन भूमिष्ठ हइवे नारायण ❋ आकाश जुड़िया बसिलेन देवगण
शुभ ग्रह सकल उदित स्थाने स्थाने ❋ दशदिक मंगल सकल तारागणे
प्रथमे प्रथमा स्त्रीर गर्भेर वेदन ❋ अन्तःपुरे प्रवेश करिल नारीगण
चैत्र मधुमास शुक्ला श्रीरामनवमी ❋ शुभक्षणे भूमिष्ठ ह'लेन जगत्स्वामी

---

१ शीघ्र ही, जिस क्षण भी २ सौर, सूतिकागृह ३ प्रवेश किया।

व्यथा न सोनित[१] गर्भ सुपावन * श्रीहरि जनम लीन मनभावन
दीपशिखा जिमि तिमिर विनासा * प्रभु-तन-दुति रवि कोटि प्रकासा
श्याम गात प्रभु कुञ्चित कुन्तल[२] * निखरित मुख, सुधांसु[३] छबि झलमल
लंब अजानुबाहु मन रञ्जा * श्रवन खचित दृग नीलमकंजा[४]
नूतन, अकथ, सुकोमल अंगा * अधर ओष्ठ कस बिंबित रंगा
जो छबि विश्व जुरै मिलि तीरा * अतुल, असम श्रीनाथ-सरीरा
पुर-बनितन जय-कलरव कीन्हा * सम्हरि नार-छेदन मन दीन्हा
शुभदूती[५] कौशिल्या - दासी * खुसखबरी नृप पाहिं प्रकासी
अष्टाभरन आदि सोइ पावा * दसरथ-उर उछाह अति छावा
बेसुध गात विभोर अनन्दा * अगनित धन पाये द्विजवृन्दा
पुनि तरंग पुलकावलि छाई * शत-शत सुरभि दान मन भाई
सुभ छन पूँछि सुवनमुख हेता * अवलोकन नृप चले निकेता
रोहनि-गेह चन्द्र जिमि गमना * सुरपति चले मनौ शचि-भवना
चले भूप छबि-सुत अवलोकन * जहँ कौसिला-कोलि[६] मनमोहन
बहु सम्हारि शिशु उर लपिटाई * पुनि-पुनि चुम्ब चंदमुख राई

गर्भव्यथा नाहि पाय नाहिक शोणित * शुभक्षणे श्रीहरि हइल उपनीत
अन्धकार घुचे येन ज्वलिलेक बाति * कोटि सूर्य्य जिनिया ताँहार देहद्युति
श्यामल शरीर प्रभु चाँचर कुन्तल * सुधांशु जिनिया मुख करे झलमल
आजानुलम्बित दीर्घ भुज सुललित * नीलोत्पल जिनि चक्षु आकर्ण पूरित
के वर्णिते हय शक्त रच ओष्ठाधर * नवनीत जिनिया कोमल कलेवर
संसारेर रूप यत एकत्र मिलन * किसे वा तुलना दिव नाहिक तेमन
जय जय हुलाहुलि दिल नारीगण * सावधाने करिलेन नाड़िका छेदन
कौशल्यार दासी सेइ शुभवार्त्ता नामे * शुभ समाचार दिल गिवा राजधामे
शुनि दशरथ पूर्ण पुलक शरीरे * अष्ट आभरण आरो दिलेन दासीरे
परम आनन्दे राजा पासरे आपना * कत धन दिल द्विजे के करे गणना
आनन्दसागरे राजा भासे सेइ ठाँइ * पुनरपि दिल दान कत शत गाइ
गणक आनिया करिलेन शुभकाल * पुत्रमुख देखिवारे यान महीपाल
इन्द्र येन चलिलेन शचीर मन्दिरे * चन्द्र येन आसिलेन रोहिणीर घरे
कौशल्या वसिया आछे नारायण कोले * पुत्र देखिवारे राजा गेल हेनकाले
धीरे धीरे दशरथ पुत्रे निल बुके * लक्ष लक्ष चुम्ब तार दिल चाँदमुखे

---

१ रक्त २ घुंघराले केश ३ चन्द्रमा ४ कानों तक पहुँचे नीलकमलवत् विशाल नेत्र ५ 'शुभसम्वादिनी' दासी ६ कौशल्या की गोद में।

दो० दरिद मोद निधि-कलस लहि, लोचन लोचनहीन।
ताहू सों नृप अधिक सुख, तनय विधाता दीन ।। ९९ ।।

भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न का जन्म

प्रथम अंश प्रगटत घनश्यामा ※ कैकइ छोभ जनम सुनि रामा
जनम कौसिला-सुत बड़भागी ※ विधि[1] न प्रथम मोहिं दीन, अभागी
नृप-सुत जेठ राज-अधिकारी ※ शास्त्र सकल अस नीति विचारी
पूछत मंत्र मंथरा तीरा ※ तब लौं बढ़ी प्रसव कै पीरा
मंगलघरी प्रगट पद्मासन ※ अंस द्वितीय जन्म नारायन
भरत सरूप सलोन अनूपा ※ नखसिख सकल राम अनुरूपा
गई मन्थरा जहँ अजनन्दन ※ कैकइ-उदर जनम तव नन्दन
मुदित भूप कैकई निकेता ※ चले सुवन-मुख दरसन हेता
आनन-सुत विलोकि महिपाला ※ बहु धन दान, द्विजन प्रतिपाला
पीर सुमित्रा प्रसव बहोरी ※ जन्मति जुगुल तनय कै जोरी
गौरवर्ण दोउ हरि-अवतारा ※ अनुपम छबि सौमित्रि-कुमारा

दरिद्र पाइल येन निधिर कलस ※ ततोधिक आनन्दित राजार मानस
अन्धजन येमन नयन-लाभे हय ※ ततोधिक दशरथ पाइया तनय
एतदिने दशरथ मनेते उल्लास ※ रामजन्म रचिल पण्डित कृत्तिवास

भरत, लक्ष्मण ओ शत्रुघ्नेर जन्म

एक अंशे चारि अंश हैल नारायण ※ शुनिया दुःखित बड़ कैकेयीर मन
आजि हैते कौशल्या जे बाड़िल सोहागे ※ मोरे पुत्र केन विधि नाहि दिल आगे
ज्येष्ठ पुत्र राजा हय सर्व्वशास्त्रे बले ※ मम पुत्र विधि आगे केन नाहि दिले
कैकेयी बलेन कुँजी गा करे केमन ※ बलिते बलिते हैल गर्भेर वेदन
छिलेन मायेर गर्भे करि पद्मासन ※ शुभक्षणे जन्मिलेन प्रभु नारायण
कौशल्या राणीर पुत्र जे रूप लावण्य ※ सेइ मुख सेइ नाक किछु नहे भिन्न
कुँजी गिया जानाइल भूपतिर घरे ※ हइल तोमार पुत्र कैकेयी उदरे
शुनि दशरथ राजा आपना पासरे ※ पुत्रमुख देखे गिया कैकेयीर घरे
पुत्र-मुख देखि राजा अति हृष्टमति ※ धन वितरण हेतु देन अनुमति
सुमित्रार हइलेक गर्भेर वेदन ※ यमज उभय पुत्र प्रसवे तखन
गौर वर्ण हैल दोंहे विष्णु अवतार ※ सुमित्रा प्रसव कैल यमज कुमार

1 विधाता ।

रूपसि-प्रसव जुगुल सुत देखी ※ बनितन जय-ध्वनि कीन विसेखी
दीन सगर्व खबरि पुनि चेरी ※ जोरी[1] नाथ जनम सुत केरी
सुनत अवधपति मोद अपारू ※ दीन लुटाय, द्विजन भण्डारू
निरखि सुतन मुख, भूप पयाना ※ करँ गनित[2] जहँ बुध-विद नाना
रविकुल धनि, नृप सुयस बखाना ※ सुभ ग्रह घरी अकथ भगवाना

दो० सारभौम[3] मंगल सुवन, रामजनम सुनि कान ।
हरन त्रास-यम, लहनसुख, सुत, श्री, संपति-खान ।।
चले दान लहि गनित-बुध[4] उत पुर अनँद-हिलोर ।
अवध, प्रजा—चारिउ बरन, मगन, अवध सुख-सोर ।। १०० ।।

श्रीराम-जन्म में सभी को आनन्द

छं० रघुनाथ-जनम सुनि, नाचत ऋषि-मुनि, दण्ड-कमण्डल हाथा ।
नाचत सुर सुरपुर, धरा नारि-नर, अवध नचत नरनाथा[5] ।।
नाचत विरंचि रँग, देवयानि सँग, इन्द्र नर्त्त शचि-साथा ।
जड़-जंगम जेते, नृत्य अचेते, बसुमति[6] नर्त्ति सनाथा ।।

यखन यमज पुत्र प्रसवे सुन्दरी ※ जय-जय हुलाहुलि दिल सब नारी
दासी गिया दशरथे कहिल गौरवे ※ आर दुइ पुत्र राजा सुमित्रा प्रसवे
शुनिया हइल ताँर आनन्द अपार ※ ब्राह्मणरे लुटाइल सकल भाण्डार
चलिलेन दशरथ परम कौतुक ※ तिन घरे देखिलेन चारि-पुत्र-मुख
तिन दण्ड बेला हैल गणकेर मेला ※ खड़िते गणिया देखे शुभ क्षण वेला
सूर्य्यवंशे आछे बहु राजार सुकीर्त्ति ※ सबा हैते सेइ पुत्र राजचक्रवर्ती
इहार कोष्ठिर किबा करिव गणन ※ एमन लक्षणे बुझि प्रभु नारायण
येइ जन शुने प्रभु रामेर जनम ※ धन पुत्र लक्ष्मी हय भय पाय यम
अयोध्याय हइल आनन्द कोलाहल ※ क्षत्रि वैश्य शूद्र सबे करिल मंगल
गणके तुषिल राजा दिया नाना धन ※ आदिकाण्ड गान कृत्तिवास विचक्षण

श्रीरामेर जन्मे सकलेर आनन्द

रामेर जनम शुनि, नाचिल सकल मुनि, दण्ड कमण्डलु करि हाते ।
स्वर्गे नाचे देवगण, मर्त्ये नाचे मर्त्यजन, हरिषे नाचिछे दशरथे ।।
श्री देवयानिर संगे, नाचिछेन ब्रह्मा रंगे, शची संगे नाचे शचीपति ।
स्थावर जंगम आर, सबे नाचे चमत्कार, उल्लासित नाचे वसुमती ।।

१ जोड़ी (दो) २ ज्योतिष-गणना ३ चक्रवर्ती ४ ज्योतिषी ५ दशरथ
६ पृथ्वी ।

दिवि अभरन-धारी, रूपसि नारी, चलीं दरस भगवन्ता ।
विद्याधरि-नर्तन, सकल नगर ध्वनि, रतन प्रदीप ज्वलंता ।।
कौशिला सुवन जनि[1], गगन सुरन ध्वनि, 'रघुपति जय श्रीकन्ता'।
जन्मे नारायन, बधैं दसानन, सुरन कलेस-भनन्ता[2] ।।
प्रभु-ध्यान लगावैं, चरित जो गावैं, धनि! भवसागर तरहीं ।
नर-पुन्य उदित, हरि देवलोक तजि! धराधाम अवतरहीं ।।
यम-त्रास नसावनि, कथा सुपावनि, सुनि, सुत-संपति लहहीं ।
पूरन अभिलासा, कवि कृतिवासा, बालमीकि अनुसरहीं ।।

श्रीराम-जन्म से रावण को आशंका एवं उसके निवारण का उपाय सोचना

अवध जनम जो प्रभु, तौ लंका * हित अतंक, रावन मन संका
अचरज. दनुज, सिंहासन हाला * गिरे मुकुट छिति, हाल बेहाला!
धरनि किरीट[4] खसकि किमि आये * कौतुक कस ? अपसकुन दिखाये
कित घननाद ! आनु कोदण्डा * करौं बसुमती[5]-बासुकि[6] खण्डा
कहेउ विभीषण धर्म सरूपा * तव वध, प्रभु प्रगटे हरि रूपा
धरनि-सहसफन[7] कोप अकारन * आन न केहु अपराध दसानन

दिव्य-दिव्य आभरण, परि यत नारीगण, चलि जाय अनेक सुन्दरी ।
चलि जाय राजपथे, श्रीरामेरे निरखिते, सम्मुखेते नाचे विद्याधरी ।।
रत्नेर प्रदीप ज्वले, पुरी पूर्ण कोलाहले कौशल्या हइल पुत्रवती ।
गगनमण्डले थाकि, देवगण बले डाकि, जय-जय-जय रघुपति ।।
जन्मिलेन नारायन, बधिवारे दशानन, देवेर करिते अव्याहति ।
इहा शुने येइ जन, किम्बा करे अध्ययन, भवे मुक्त हय सेइ कृती ।।
वैकुण्ठ करिया शून्य, प्रकाशिते नरपुण्य, अवतीर्ण प्रभु भगवान् ।
रचिल ये कृत्तिवास, पूर्ण करि अभिलाष, वन्दिया से वाल्मीकि पुराण ।।

श्रीरामेर जन्मे रावणेर अमंगल आशंका एवं तन्निवारणेर उपाय चिन्तन

अयोध्याते यदि जन्म निलेन श्रीपति * लङ्काय आतंक देखे सदा लङ्कापति
आचम्विते रावणेर सिंहासन दोले * माथार मुकुट खसि पड़े भूमितले
दशमुखे हाय-हाय करे दशानन * आचम्विते मुकुट खसिल कि कारण
कोथा गेल इन्द्रजित आन धनुर्व्वाण * पृथिवी वासुकि करि करि खान-खान
हेनकाले कहेन धार्म्मिक विभीषण * जन्मियाछे जे तोमार वधिवे जीवन
पृथिवीर प्रति क्रोध कर कि क[illegible] [illegible]ारे वधिते जन्म नि[illegible]
आर कारो अपराध नाहि द[illegible] [illegible]ुकि काटिते एवे [illegible]

---

१ जन्म देकर २ क्लेशहारी ३ [illegible] ६ शेषनाग ७ [illegible]

तबहिं सुरन नभबानी कीन्हा ✽ दसरथ-सदन जनम प्रभु लीन्हा
सो सुनि चिन्तित अतिव दसानन ✽ कहेउ बोलाय दूत शुक-सारन
लखहु अवनि पग-पग दोउ सोधी ✽ कितै जनम रिपु मोर विरोधी
अबहिं हनौं सोइ सैसव-काला[1] ✽ नतरु प्रबल पनपत जंजाला
बंदि लंकपति, आयसु धारी ✽ लंघि उदधि, चर करैं विचारी
वैष्णव परम दूत शुक-सारन ✽ त्रिभुवन प्रकट पुरंदर[2] कारन
कह शुक, सुनु सारन! अस भावै ✽ श्रीपति अवध जनम मन आवै
धन्य भाग! दोउ अवसर पाई ✽ लहैं दरस प्रभु चरनन जाई
लखत अवध छबि सुरपुर भासा ✽ घर-घर रतन प्रदीप प्रकासा
बिछलत पग, पथ चहुँ चिकनाई ✽ साँझ प्रवेस महल दोउ पाई

दो० तहँ कौशल्या-अंक प्रभु, राजत बाल सरूप।
जाकी जा विधि भावना, लहै दरस अनुरूप॥ १०१॥

युगुल बन्धु-चर भक्त महाना ✽ दरस चतुर्भुज दिय भगवाना
शंख चक्र कर पद्म गदाधर ✽ वनमाला, कुण्डल, किरीटधर
शत कोटिन विधि[3] अस्तुति करहीं ✽ हरि-तन तीनि लोक चर लखहीं

सेइकाले आकाशेते हैल दैववाणी ✽ दशरथ घरेते जन्मिल चक्रपाणि
शुनिया चिन्तित बड़ राजा दशानन ✽ डाक दिया बले शुन शुक ओ सारण
एके एके देखि एस पृथिवी भुवने ✽ आमार शत्रुर जन्म हैल कोनखाने
एखनि मारिब तारे अति शिशुकाले ✽ प्रबल हइवे बड़ घटिवे जञ्जाले
रावणेर आज्ञा चर बन्दिलेक माथे ✽ समुद्रेर पार हैया लागिल भाविते
परम वैष्णव दूत शुक ओ सारण ✽ बासवेर द्वारी तारा जाने त्रिभुवन
शुक बले शुन मोर भाइरे सारण ✽ अयोध्याय जन्मिलेन बुझि नारायण
आजि शुभदिन हैल आमा दोंहाकार ✽ भाग्यफले देखि गिया चरण ताँहार
एत बलि अयोध्याय दिल दरशन ✽ देखिल अयोध्या येन वैकुण्ठ भुवन
रतन प्रदीप ज्वले प्रति घरे घरे ✽ तैल हरिद्राय पथे चलिते ना पारे
अलक्षिते सान्धाइल कौशल्यार घरे ✽ बसेछेन कोशल्या श्रीराम कोले करे
याहार मानसे थाके जे रूप वासना ✽ सेइ रूपे प्रभुरे देखये सेइ जना
परम वैष्णव तारा भाइ दुइ जन ✽ चतुर्भुज रूपे देखिलेन नारायण
शंख चक्र गदा पद्म चतुर्भुज कला ✽ किरीट कुण्डल शोभे हृदि वनमाला
शत कोटि ब्रह्मा ताँरे करिछे स्तवन ✽ प्रभुर शरीरे देखे ए तिन भुवन

---

१ शिशु-अवस्था में। २ इन्द्र ३ ब्रह्मा।

सनक, सनातनादि प्रह्लादा ※ नारद निरखि, चरन[1] अह्लादा[2]
भक्ति भरे दोउ, लखि भवमोचन ※ लोटि मही प्रणवति भरि लोचन
जोरि हाथ अस्तुति सुख लहहीं ※ पुनि-पुनि सहस दण्डवत करहीं
राकस जाति अधम अज्ञानी ※ तव महिमा अपार किमि जानी
ब्रह्मादिक पद लहे न ध्याना ※ चरन[3] सों चरन[4] प्रतच्छ प्रमाना
कृपासिन्धु प्रभु गहन, गुनागर ※ दीजिय वर, निसिचर अति पामर
सदा रमन मन अंबुज-चरना ※ यहि विधि बंदि, लंक किय गमना
सुक-सारन मग मंत्र मिलावा ※ रावन सन सब कथा दुरावा
पलक निमेस अटे दोउ लंका ※ कहेउ, दनुजपति रहौ निसंका
तिल-तिल छानि, लखेउँ त्रैलोका ※ नाथ! न तव-रिपु कतौं विलोका
खसे किरीट अमंगल जानी ※ जल असनान तीरथन आनी
दीन-द्विजन दै सुबरन दाना ※ टरै विपति अपसकुन नसाना
खिली केतकी भादौं रंगा ※ कह ठठाय दसमुख इकसंगा

दो० अबुझ विभीषन! बन्धु करु, सुक-सारन विस्वास ।
धरनि सोधि आये, कतौं जनि मम रिपु आभास ॥ १०२ ॥
अबहिं कहा परिनाम लखाई ※ अवसर परे विलोकेउ भाई ![5]

प्रसंगेते देखिल ये सर्व्व पारिषद ※ सनक सनातन आदि प्रह्लाद नारद
एइ रूपे दुइ भाइ प्रभुरे देखिया ※ सहस्र प्रणाम करे भूमे लोटाइया
भक्तिभावे करये अनेक प्रणिपात ※ स्तवन करिछे तारा करि जोड़ हात
राक्षसेर जाति मारा बड़इ अधम ※ तोमार महिमा ज्ञाने आमरा अक्षम
जे पद ब्रह्मादि देव नाहि पाय ध्याने ※ हेन पाद-पद्म देखि प्रत्यक्ष प्रमाणे
एइ निवेदन करि शुन महाशय ※ तव पादपद्मे येन मोर मन रय
कृपार सागर तुमि प्रभु गुणधाम ※ एत बलि गेल तारा करिया प्रणाम
पथे येते दुइ भाइ भाविलेक मने ※ एकथा कहिब नाइ पापी दशानने
चक्षुर निमेषे तारा लङ्कापुरे गिया ※ रावणेरे कहे गिया आगे दाँड़ाइया
एके एके देखिलाम ए तिन भुवने ※ तोमार ये शत्रु आछे नाहि लय मने
मुकुट खसिल राजा हबे अपमान ※ सकल तीर्थेर जले कर तुमि स्नान
सुवर्ण करह दान द्विज दीन नरे ※ अमंगल घुचिबे आपद जाबे दूरे
दशमुख मेलिया रावण राजा हासे ※ केतकी कुसुम येन फुटे भाद्रमासे
ना बुझिया कथा कह भाइ विभीषण ※ आमार नाहिक शत्रु हेन लय मन
रावणेर कथा शुनि वले विभीषण ※ परिणामे एइ कथा करिबे स्मरण

१ दूतों को २ हर्ष ३ दूतों को ४ चरण ५ विभीषण ने रावण से कहा ।

आयसु पुनि पयोधि[1] दिय रावन * सकल तीर्थन सुचि जल लावन
तनिक न देर जोरि जुग-पानी[2] * प्रस्तुत सकल तीर्थन-पानी
सोंई सुचि सलिल कीन असनाना * दरिद दुखीजन सुवरन दाना
शत-शत सुरभि, शिला संकल्पा * अमित दान लंकेश सदर्पा
दान-पुन्य करि सकल विधाना * भयेउ अमर, दसकन्धर जाना

वानरों का जन्म

इत नररूप जनम जगदीसा * उत सुरगन प्रगटत तन-कीसा[3]
निज-निज तेज देवगन दीन्हा * गर्भ वानरिन धारन कीन्हा
'सुरपति' अंस 'बालि' बलवाना * 'भानु' तेज 'सुग्रीव' महाना
कन्द मूल फल खाय रसाला * किष्किधा तिन शौर्य विशाला
उद्गम धन बाढ़ति, धनरासी * तेज, तेज तहँ अवसि प्रकासी
सचिव 'जाम्ब' 'चतुरानन' धारा * 'हेमकूट' पुनि 'वरुण'-कुमारा
बाढ़ति दिन-दिन जिमि तरु-शाला * शंकर-सुत 'केसरी' विशाला

रावण समुद्र वलि लागिल डाकिते * आसिया समुद्र दाँड़ाइल जोड़ हाते
राजा बले पृथिवीते यत तीर्थ आछे * सकक तीर्थेर जल आन मोर काछे
वाक्य मात्र बलिते विलम्ब ना हइल * सकल तीर्थेर जल सम्मुखे आइल
तीर्थजले दशानन करिलेक असनान * दरिद्र दुःखीरे राजा करे स्वर्ण दान
यतेक काञ्चन दिल नाम कर कत * धेनु दान शिला दान करे शत-शत
दान पुण्य करिया वसिल दशानन * भाविल अमर आमि नाहिक मरण
कृत्तिवास पण्डितेर श्लोक विचक्षण * रामेर प्रीतिते हरि वल सर्व्वजन

वानरगणेर जन्म

नर - रूपे जन्मिलेन प्रभु नारायण * वानर - रूपेते जन्म निल देवगण
विधाता वलेन शुन यत देवगण * जे जथा वानरी पाओ कर आलिंगन
एक वानरीते रति इन्द्र सूर्य्य करे * दुइ पुत्र जन्मिलेक ताहार उदरे
हइल इन्द्रेर तेजे बालि कपिवर * सुग्रीव वीरेर जन्म दिलेन भास्कर
किष्किन्धार फल मूल खाइते रसाल * फलमूल खाय दोंहे विक्रमे विशाल
तेज हैते तेज वाड़े सम्पदे सम्पद् * हइल वालिर पुत्र कुमार अङ्गद
हइल ब्रह्मार तेजे मन्त्री जाम्बुवान * हइलेन पवनेर तेजे हनूमान
हेमकूट नामे कपि वरुणनन्दन * पञ्च पुत्र यमेर ये यम - दरशन
जन्मिल शिवेर तेजे केशरी वानर * दिने दिने वाड़े येन शाल तरुवर

१ समुद्र २ दोनों हाथ ३ वानर शरीर।

'यम' सुत पाँच तासु अनुहारा ❋ प्रबल 'प्रमाथि' 'कुबेर'-कुमारा
'चन्द्र'-तेज 'दधिमुख' बलसीला ❋ 'अग्नि' अंश सेनापति 'नीला'

सो० 'धन्वन्तरहिं' 'सुषेन', ज्ञान द्रव्य-गुन सकल जिन ।
कपि 'सुषेन' कर देन, सुत 'महेन्द्र' 'देवेन्द्र' दोउ ॥

दो० सुर जेते, निज तेज दै, जन्मे कपि बलवन्त ।
प्रथक-प्रथक, रसना अकथ, कोटिन कीस अनन्त ॥ १०३ ॥

दशरथ के चारों पुत्रों का अन्नप्राशन और नामकरण

आतुर नृप इत, गत दिन चारी ❋ पचयें प्रथम अशौच निवारी[1]
छठी पूजि पुनि राति-जागरन ❋ अठयें शिशुन कलाई-बन्धन
पुनि निमंत्रि पुर-बाल समाजा ❋ असन-वसन-अभरन दिय राजा
दिवस त्रयोदस असुचि निवारा ❋ कतक दान नृप नाहिं सम्हारा
चारिउ सुवन वयस षड्मासा ❋ सबन सुभघरी अन्नपरासा[2]
अवनि-महीप, निमंत्रन पाई ❋ दसरथ-सदन जुरे सब आई
गुरु बशिष्ठ शुभ साइत देखी ❋ दिय मुख अन्न समोद बिसेखी
भूपति मुदित अंक लै चारी ❋ मधु जल अन्न कञ्जमुख डारी

अग्नि तेजे हइलेन नील सेनापति ❋ कुबेरेर तेजे जन्मे वानर प्रमाथी
सुषेणेर जन्म हय धन्वन्तरि तेजे ❋ अहिविद्या वैद्यशास्त्र दिल तार माझे
महेन्द्र देवेन्द्र हइल सुषेण नन्दन ❋ चन्द्रतेजे दधिमुख हइल तखन
प्रतेक कहिले हय पुस्तक विस्तर ❋ एकैक देवेर तेजे एकैक वानर
कृत्तिवास पण्डित जे सुखी सर्वदण्डे ❋ वानरेर जन्म एवे गाय आदिकाण्डे

दशरथेर चारिपुत्रेर अन्नप्राशन ओ नामकरण

एकैक गणने जे हइल चारि दिन ❋ पाँचदिने पाँचुटी करिल सुप्रवीण
छयदिने षष्ठीपूजा निशि जागरणे ❋ दिल अष्ट कलाइ अष्टाहे शिशुगणे
डाक दिया आने राजा बालक गणेरे ❋ कापड़ पूरिया सोना दिल सबाकारे
त्रयोदशे राजार हइल अशौचान्त ❋ कतेक करिल दान नाहि तार अन्त
छय मास वयस्क हइल चारि जन ❋ कराइल सबाकार ओदन-प्राशन
आमन्त्रण करिया सकल क्षत्रगणे ❋ आनाइल दशरथ आपन भवने
आसिया वशिष्ठ मुनि महानन्द मने ❋ चारि-पुत्र-मुखे अन्न दिल शुभक्षणे
दशरथ चारि पुत्र ल'ये निज कोले ❋ मिष्ठ अन्न-जल दिल वदन कमले

---

१ पहला नहान पड़ा (सौर में) २ अन्नप्राशन, पसनी ।

सुमुख नन्दनन पुनि बैठारी ❋ कौतुक रत्न द्रव्य दिय भारी
सकल सतोष मुदित सब काहू ❋ नामकरन कर सबन उछाहू
निगमागम[1] जँह स्रोत पुराना[2] ❋ जासु जाप सों त्रिभुवन-त्राना
वालमीकि जोइ जप अविरामा ❋ नाम कौसिला-सुत सोइ 'रामा'
सहन भार-मेदिनी[3] समर्था ❋ राखेंउ 'भरत' नाम सोइ अर्था
पुनि जे युगुल सुमित्रानन्दन ❋ जेठ 'लखन' लघु सुत 'रिपुसूदन'
दसरथ सुनत चारि सुत नामा ❋ दीन भूसुरन[4] अगनित ग्रामा
रजतशिला, सुबरन अरु गाई ❋ शतविधि शत-शत बरनि न जाई

दो० सुरभि दुधारू सहस दिय, विविध दान सन्मान ।
सहित वशिष्ठ, असीसि नृप, मुनिगन कीन पयान ।। १०४ ।।

श्रीराम-लक्ष्मण आदि की वालक्रीड़ा

छठे मास हरि चलत बकाई ❋ बिहँसत चढ़त मातु करिहाँई
छिन पितु-अंक, मातु छिन गोदी ❋ तोतरि बोल, दोउन हिय मोदी
ससिमुख राम, सुधा सम बतियाँ ❋ हँसी मंद, दुति उघरें दतियाँ
वर्षगाँठ सुभघरी बहारा ❋ कटि करधनि, गर कञ्चन हारा

वसिलेन चारि भाइ सुचारु वदन ❋ कौतुके यौतुक दिल सबे रत्न धन
सकले यौतुक निले आसि राजधाम ❋ विचार करेन सबे राखेन कि नाम
विचारिया चारिवेद आगम पुराण ❋ जे मन्त्र हइते लोक पावे परित्राण
जेइ मन्त्र बाल्मीकि जपेन अविराम ❋ कौशल्या-पुत्रेर नाम राखिल श्रीराम
पृथिवीर भार सहिबेन अविरत ❋ तेइ हेतु ताँर नाम हइल भरत
सुमित्रार हइयाछे यमज नन्दन ❋ शत्रुघ्न कनिष्ठ ताँर ज्येष्ठ श्रीलक्ष्मण
राजा चारि नन्दनेर शुनिलेन नाम ❋ ब्राह्मणेरे दिल दान कत-शत ग्राम
रजत काञ्चन दिल नाम लब कत ❋ धेनु दान शिला दान करे शत-शत
नाना दान दिय करे वशिष्ठेर मान ❋ दुग्धवती गाभी दिल सहस्र प्रमान
आशीर्वाद करि घरे गेल मुनिगण ❋ आदिकाण्डे श्रीरामेर नाम सङ्कलन

श्रीराम-लक्ष्मणादिर वालक्रीड़ा

छयमास वयस्क राम देन हामागुड़ि ❋ हासिया मायेर कोले यान गड़ागड़ि
क्षणेक मायेर कोले क्षणे पितृकोले ❋ वदने ना आसे कथा आध आध वले
श्रीरामेर चन्द्रानने अमृत बचन ❋ प्रकाशित मन्द मन्द हासिते दशन
एक वर्ष वयस्क हइले भाइ कटि ❋ पीत-धड़ा परिधान गले स्वर्णकाँठि

१ वेद-शास्त्र २ पुराण ३ पृथ्वी का भार ४ ब्राह्मणों को ।

भाल मध्य सुबरन लटकनिया ※ पग झंकार रतन पैंजनिया
विविध बालक्रीड़ा बहु करहीं ※ नेह समान परस्पर धरहीं
राम चलत, लछिमन पग डारा ※ पुनि रिपुदमन भरत अनुसारा
लछिमन-राम, भरत-रिपुसूदन ※ निज चरु अंस लखे दोऊ जन
पल न राम बिन, नृप कोउ काला ※ तिल बिछोह दुख दुसह कराला
ध्यान न सुलभ चरन चतुरानन ※ पुनि-पुनि चुम्ब तासु मुख राजन
नित्य बढ़त शशिकला प्रमाना ※ सबन रूप लावण्य समाना
एक अंस हरि च्चारि सरूपा ※ माया-राम विलोकत भूपा
सदा निहाल राम पै वारैं ※ मन, मुनि अंधक-शाप विचारैं
मुनि-सराप मोंहि भा फलदाई ※ सुतन-दरस विन जीव नसाई
वर्ष सहस नव—कौतुक राजू ※ पायेउँ 'राम' पुन्यफल आजू
नेह सबन, पुनि राम बिसेखी ※ जीवन सफल सदा मुख देखी

दो० उठत मनोरथ विविध नित, लागेउ पञ्चम वर्ष ।
पाटी-पूजन धाम गुरु, पठयेउ भूप सहर्ष ॥ १०५ ॥

श्री राम को शास्त्र और शस्त्र-विद्या की शिक्षा

गुरुगृह पढ़न गये सब भाई ※ वरनाछरी बशिष्ठ सिखाई

काँठिर मध्येते दिल सोनार किङ्किणी ※ रतन नूपुर पाय रुणुरुणु ध्वनि
करेन श्रीराम खेला बालकेर सने ※ परस्पर सम्प्रीति हइल चारिजने
श्रीराम चलिते पथे चलेन लक्ष्मण ※ भरतेर चलने चलेन शत्रुघ्न
यार जेवे चरुर अंश जानिल ताहाते ※ श्रीराम लक्ष्मणे मिले शत्रुघ्न भरते
यथा तथा यान राजा राम यान साथे ※ एक तिल अदर्शने प्रमाद ताहाते
ब्रह्मा आदि याँर पद ना पाय मनने ※ पुनः पुनः चुम्ब देन ताँहार वदने
चन्द्रकला येमन वर्द्धित दिने दिने ※ रूप सेइ लावण्य बाड़िल चारिजने
एक विष्णु चारि भाइ मायार कारण ※ राम देखि दशरथ भावे मने मन
सर्व्व क्षण दशरथ रामेरे नेहाले ※ अन्धक मुनिर शाप मने मने बले
शाप दिल मुनि मोरे गौरव कारण ※ एइ पुत्र ना देखिले आमार मरण
नय हाजार वर्ष राज्य करि कुतूहले ※ राम हेन पुत्र पाइलाम पुण्यफले
पुत्र-मुख देखि सदा जीवन सफल ※ दशरथ - गृहे राम प्रथम प्रबल
एइ सब दशरथ करे अभिलाष ※ आदिकाण्ड गाहल पण्डित कृत्तिवास

श्रीरामेर शास्त्र ओ अस्त्र-विद्या-शिक्षा

पञ्च वर्ष गत हय हाते दिल खड़ि ※ पड़िते पाठान राजा वशिष्ठेर बाड़ी

विविध वर्ण, आकृति तिन नाना ※ अष्टशब्द+ हरि कुशल निधाना
काव्य, व्याकरण, श्रुति मन लाई ※ पारंगत इस्मृति रघुराई
चौसठ कला अल्प दिन जाना ※ कवन शास्त्र प्रभु जासु न ज्ञाना
शेष अध्ययन, गुरुहिं प्रनामा ※ अस्त्र शस्त्र सीखत पुनि रामा
भोर बन्धु सब जाइँ अखारा ※ करइँ जोर भिरि मल्ल जुझारा
डण्डा-गुलि अरु लाठी हाँथा ※ डटत न कोउ विक्रम रघुनाथा
अचल मेरु सम प्रभु कर हाला ※ लरजत भट न देत कोउ ताला
भानुवंस जनमत धनुधारी ※ चाप-सुमन धरि काननचारी
सायक राम जाहि संधाना ※ तीनिहु लोक न ताकर त्राना
जे नरेस दसरथ-प्रतिकूला ※ डरपत, राम-तेज तिन सूला
एक दिवस धनु-पुहुप सवाँरी ※ लखन सहित कानन पग धारी
मृगया हेतु फिरत दोउ कानन ※ असुर मरीच मिलेउ मनभावन
कहुँ अदृश्य कहुँ प्रगट सरूपा ※ आयो राम समुख मृगरूपा
निरखत मृग, प्रभु कौतुक छावा ※ बान अचूक सुचाप चढ़ावा
उल्कापात सरिस सर जाई ※ असुर भीत, भजि चलेउ बराई

क-ख ग आठार फला वानान प्रभृति ※ अष्टशब्द पाठ करिलेन रघुपति
व्याकरण काव्यशास्त्र पड़िले स्मृति ※ अवशेषे पड़िलेन राम चतुःश्रुति
कोन शास्त्र नाहि ताँर हय अगोचर ※ चौद्‌दिने चतुःषष्टि विद्याते तत्पर
विद्या पड़ि करिलेन गुरुके प्रणाम ※ अस्त्र-विद्या सेइ क्षणे शिखिलेन राम
प्रातःकाले चारि भाइ यान मालघरे ※ मल्लविद्या शिखिलेक सकले समादरे
गुलि दाँड़ा निया राम लाठरि खेलान ※ रामेर विक्रमे सब मालेर पयान
राम संगे कोन माल नाहि धरे ताल ※ सुमेरु पर्व्वते येन करिते साताल
सूर्य्यवंशो वालक धनुक भाल जाने ※ हाते फूलधनु राम वेड़ान कानने
धनु हाते करि राम यारे एड़े वाण ※ त्रिभुवने ताहार नाहिक परित्राण
दशरथ राजार विपक्ष यत छिल ※ रामेर विक्रम देखि सवे पलाइल
यतने खेलेन राम फूलधनु हाते ※ एक दिन वने गेल लक्ष्मण सहिते
मृग चाहि दुइ जन बेड़ान कानन ※ तखन मारीच संगे हइल मिलन
कोन खाने गेल से मारिच निशाचर ※ मृग रूप हैया गेल रामेर गोचर
मृग देखि रामेर कौतुक हइल मन ※ धनुके अव्यर्थ वाण जुड़िल तखन
छुटिल रामेर वाण तारा येन खसे ※ महाभीत मारीच पलाय महा त्रासे

+ 'अष्ट शब्द' से तात्पर्य कदाचित् शब्दों के आठों कारकों के रूपों से है ?

सो० सो पलाय मतिमंद, साँस लीन मिथिलापुरी।
सुरगन अमित अनन्द, निरखि राम विक्रम विपुल ॥ १०६ ॥

सब बिधि प्रभु समरथ मनभावन * निसचय मरन निकट अब रावन
अथये[1] रवि, छिति साँझ सवाँरी * थकित लखन-मुख मलिन निहारी
एक दिवस-श्रम दुसह, अधीरा * हनि रिपु ककस[2] मिटइ द्विजपीरा
आमलकी[3] निचोरि मुख डारी * छुधा - तृषा - मेटन सुखकारी
तौलौं सरवर[4] अनुपम लखहीं * नीर विविध खग कलरव करहीं
कहेउ विरञ्चि सुनहु सुरनाथा * दसरथ-गेह जनम जग-नाथा
नर-तन धरि प्रभु निज नहिं चीन्हा * रावन-हनन जनम जग लीन्हा
वन रन-असुर! असन फल-मूला! * वर्ष चतुर्दस किमि अनुकूला ?
अमिय[5] मृनाल[6] भरहु सुरराई * सुधापान श्रम-छुधा नसाई
सुरपति सुधा नाल सरसावा * सोइ छन श्रीपति लखन बुझावा
लखन मृनाल तोरि प्रभु दीना * सुधा मृनाल पान दोउ कीना
छुधा, तृषा, श्रम गत; दोउ भाई * शयन सेज-पल्लव सुखदाई
श्रम उपरांत, नींद अस आई * सोवत मातु-अंक मनु पाई

श्रीरामेर बाण शब्दे छाड़िल से वन * जनकेर देशे गेल मिथिला भुवन
रामेर विक्रम देखि देवगण भाषे * एत दिने रावण मरिबे अनायासे
सूर्य्य अस्त गेल यथा बेलार विराम * रण श्रान्त लक्ष्मणेरे देखिलेन राम
मलिन हइया गेल लक्ष्मणेर मुख * देखिया श्रीराम पान अन्तरेते दुःख
एक दिन दुःखे भाइ हइला एमन * केमने मारिया वैरी राखिवे ब्राह्मण
आमलकी फल पाड़ि देन तार मुखे * क्षुधा तृष्णा दूरे गेल खान मनोसुखे
हेन काले देखिल निकटे सरोवर * नाना पक्षी जले आछे करे कलस्वर
एमन समये ब्रह्मा कन पुरन्दरे * जन्मेछे आपनि हरि दशरथ घरे
नव रूपे आपनाके विस्मृत आपनि * रावण मारिते मात्र अवतीर्ण तिनि
चतुर्द्दश वर्ष तिनि थाकिबेन वने * फल-मूलाहारे युद्ध करिबे केमने
मृणाल भितर तुमि राख गिया सुधा * सुधापाने रामेर ना लागिवे क्षुधा
एइ आज्ञा पाइलेन देव पुरन्दर * राखिया गेलेन सुधा मृणाल भितर
हेनकाले लक्ष्मणेरे बलेन श्रीराम * मृणाल तुलिया आन करि जलपान
लक्ष्मण आनिया दिल श्रीरामेर हाते * दुइ भाइ सुधा खान मृणाल सहिते
क्षुधा तृष्णा दूरे गेल सुस्थ हैल मन * वृक्षपत्र पातिया ये करिल शयन
परिश्रमे सुनिद्रा हइल वृक्षतले * आछेन श्रीराम येन शुये मातृकोले

१ अस्त हुए २ किस प्रकार ३ आँवला ४ तालाब ५ अमृत ६ कमल का डण्ठल।

निरखि न राम, इतै महतारी ❋ अस्त-व्यस्त नृप निकट पधारी
उन अतिकाल, न सुत अवलोका ❋ सभा विदा करि, भूप ससोका
लखहिं सुवन, चलि मातु-निवासू ❋ भई भेंट दोउ मग-रनिवासू

दो० कौशल्या पूछत विकल, कहहु नाथ कित राम ?
भोजन विविध सेरात[1] मग जोहौं[2], तात न धाम ।। १०७ ।।

सुध-बुध दसरथ सुनत बिलानी[3] ❋ बूझत, सुत अलोप[4] कस रानी?
दोउ किय गमन कैकयी-धामा ❋ पूछत—कतौं लखे तुम रामा ?
सुवन-कञ्जमुख दिवस न देखा ❋ थिर न प्रान, उर त्रास बिसेखा
दरसन आजु राम गुनखानी ❋ लहे न प्रभु, कह कैकयि रानी
जहँ सौमित्र[5] तहाँ रघुनाथा ❋ सदा भरत रिपुसूदन साथा
नगर भ्रमत राजा अरु रानी ❋ राम-सखा खेलत जहँ जानी
पूछत ललकि—लखन-रघुबीरा? ❋ 'लखे न' सुनि उपजत पुनि पीरा
शावक[6]-हरन फुंकरति बाघिनि ❋ फिरैं तीनि तिमि दसरथ-भामिनि
धुनत कपाल फिरत नरनाथा ❋ मिलिहैं कवन गैल रघुनाथा

ना देखिया श्रीरामेर हइया कातर ❋ आस्ते व्यस्ते गेल राणी राजार गोचर
हेथा राजा बहुक्षण रामे ना देखिया ❋ मने सुख नाहि येन अज्ञान हइया
सबारे विदाय दिया गेलेन आवासे ❋ रामेरे देखिव वलि कौशल्यार पाशे
दुइ जने पथेते हइल दरशन ❋ चिन्तिता हइया राणी जिज्ञासे तखन
प्रस्तुत आछये घरे खाद्य नाना विधि ❋ वहुक्षण रामे केन ना देखि सन्निधि
दशरथ वले राणी कि कहिला कथा ❋ देखिते ना पाइ राम तारा गेल कोथा
बुझि राम रहियाछे कैकेयी आवासे ❋ धेये गिया कैकेयीरे उभये जिज्ञासे
आजि आमि नाहि देखि श्रीरामेर मुख ❋ प्राण नाहि रहे मोर विदरये बुक
कैकेयी बलेन आमि किछुइ ना जानि ❋ आजि हेथा नाहि देखि राम गुणमणि
आजि बुझि भुलिया रहिल कोनखाने ❋ लक्ष्मण ये स्थाने आछे राम सेइ स्थाने
भरत सहित हेथा मिलिल शत्रुघ्न ❋ अयोध्या-नगरे भ्रमे भाइ दुइ जन
जेइ जेइ बालक खेलाय ताँर मने ❋ ताहारे जिज्ञासे राम आछे कोनखाने
शुनिया सकले कहे शुन राजाराणी ❋ कोथा राम कोथाय लक्ष्मण नाहि जानि
कौशल्या सुमित्रा आर कैकेयी कामिनी ❋ डम्बुर हाराये येन फुकारे वाघिनी
हृदे दुःखे दशरथ भाले मारे हात ❋ कोथा गेले पाव आमि राम रघुनाथ

---

१ ठंढा हो रहा है २ रास्ता देख रही हूँ ३ गायब हो गयी ४ गायब, लोप
५ लक्ष्मण ६ बच्चा ।

शाप-अंधमुनि आजुइ फूला ❋ जीवन हत, वियोग-सुत सूला
सुवन-सोच रचि मीचु[1] विधाता ❋ राम-लखन बिन काय[2] निपाता
दिवस बीत, चहुँ दिसि तम छावा ❋ तात-दरस, नृप आस नसावा
बिलखति रानिन आस गवाँई ❋ प्रविसे तबहिं नगर रघुराई
वन्य कुसुम छबि, सारँग[3] हाथा ❋ ठुमुकि धरत पग लछिमन साथा
भरत-रिपुघ्न[4] कौशिला तीरा ❋ धाय कहत—आये रघुवीरा
सुनत रानि सोइ छन उठि धाई ❋ द्वार राम-मुख परेउ लखाई

दो० धाय मात-पितु, लाय उर, लख-लख चुम्बत चंद ।
अंक लेत भरि, सिथिल तन, हिय न समात अनन्द ॥ १०८ ॥

अंध-शाप हिय चोर नरेसू ❋ कब विधि वाम, न मिटत कलेसू
दारिद-निधि तुम लोचन-तारा ❋ पलक वियोग प्रलय तन धारा
भरत-रिपुघ्न बन्धु सिर नावा ❋ राम, मातु ढिग भोजन पावा
राजा, रानि, सकल पुरवृन्दा ❋ सुखी, अवध चहुँ दरस अनन्दा

सीता के विवाह के प्रण के लिए शिवजी का धनुष-प्रदान

सतई बरस राम पगु धारा ❋ लक्ष्मी जनक-गेह अवतारा

अन्धक मुनिर शाप घटिल एखन ❋ रामे ना देखिया मम ना रहे जीवन
पुत्रशोके मृत्यु आजि सृजिल विधाता ❋ रामे नाहि देखि यदि मरण सर्व्वथा
दिवसे सकल देखि घोर अन्धकार ❋ श्रीराम लक्ष्मणे बुझि ना देखिब आर
एइमत कान्दे राणी बेला अवशेषे ❋ हेन काले दुइ भाइ अयोध्या प्रवेशे
वनपुष्पे भूषित धनुक वाम हाते ❋ नाचिते नाचिते आसे लक्ष्मणेर साथे
भरत शत्रुघ्न गिया गृहे कौशल्यारे ❋ हेन माता आइलेन राम पुरद्वारे
तार मुखे एइ वाक्य शुनिते शुनिते ❋ वाहिर हइल राणी श्रीरामे देखिते
धेये राजा दशरथ रामे धरे बुके ❋ लक्ष-लक्ष चुम्ब दिल ताँर चाँदमुखे
अन्धकेर शाप मुनि करे धुक् धुक् ❋ कि जानिबा हन कबे बिधाता विमुख
कौशल्या धाइया गिया रामे कैल कोले ❋ एक लक्ष चुम्व दिले वदन कमले
दरिद्रेर निधि तुमि नयनेर तारा ❋ पलके प्रलय घटे हइ यदि हारा
भरत शत्रुघ्न तबे देखेन श्रीराम ❋ दुइ भाइ आसि रामे करिल प्रणाम
मायेर आलये राम करिल भोजन ❋ राजाराणी हइलेन सुस्थिर तखन
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर भणित ❋ श्रीरामेर अरण्य - विहार सुललित

सीतार विवाह पणजन्य हरेर धनुक प्रदान

सात वत्सरेर राम अयोध्या-नगरे ❋ लक्ष्मी हेथा जन्मिलेन जनकेर घरे

---

१ मृत्यु २ शरीर ३ धनुष ४ शत्रुघ्न ।

जोतत सीर[1], सुता नृप पाई ※ सीता[2] सोइ रूपसी कहाई
सीता अतुल रूप गुन-खानी ※ मिथिला प्रगट मनौ श्री[3] रानी
रम्भा, गौरि धौं सारद रूपा ※ जनक मुग्ध लखि सुता-सरूपा
कज्जल छबि मृगलोचन छाई ※ तिल-किंशुक[4] नासिका सुहाई
सुघर बाहु दोउ सुललित सोहा ※ इन्दु-सुधा सरसति छबि मोहा
करगत सुकर सहज कटि-अंगा[5] ※ अँगुरी सिय-पग हिंगुल-रंगा
अरुन कंज पद नूपुर बाजै ※ राजहंस गति गमनत लाजै
अमिय बैन मधु झरत सुबासा ※ तासु रूप दस दिसा प्रकासा
रोम-रोम लावण्य ललामा ※ वर सिय जोग लखिय कँहि धामा
सोइ अनुहार न वर जग चीन्हा ※ प्रोहित सन बिदेह मत कीन्हा
कवन देस, कित सिय वर जोगू? ※ इत चिंतित सुरपुर सुरलोगू

दो० कह विधि, सुरपति सुनहु मत, सात वर्ष रघुनाथ ।
सीता छबि निति बढ़त उत, चिंतित मिथिलानाथ ।। १०९ ।।

राम इतर वर[6] तजैं नरेसा ※ सोइ हित चलिय समीप महेसा
धरि विधि-वचन सकल सुरवृन्दा ※ चले, शंभु जहँ परमानन्दा

चापेर भूमिते कन्या पाय महाऋषि ※ मिथला हइल आलो परम रूपसी
अद्भुत सीतार रूप गुण मने मानि ※ ए सामान्य नहे कन्या कमला आपनि
कन्यारूप जनक देखेन दिने दिने ※ उमा कि कमला वाणी भ्रम हय मने
हरिणी नयने किबा शोभित कज्जल ※ तिल फुल जिनि ताँर नासिका उज्ज्वल
सुललित दुइ बाहु देखिते सुन्दर ※ सुधांशु जिनिया रूप अति मनोहर
मुष्टिते धरिते पारि सीतार काँकालि ※ हिंगुले मण्डित ताँर चरण अंगुली
अरुण वरण ताँर चरण कमल ※ ताहाते नूपुर वाजे शुनिते कोमल
राजहंसी भ्रम हय देखिले गमन ※ अमृत जिनिया ताँर मधुर वचन
दशदिक् आलो करे जानकीर रूपे ※ लावण्य निःसरे कत प्रति लोमकूपे
जनक भावेन मने सीता दिव कारे ※ सीता योग्य बर नाहि देखि ए संसारे
पुरोहित आनि राजा कहेन विशेषे ※ जानकीर योग्य वर पाव कोन देशे
जानकीरे विवाह करिबे कोन् जन ※ स्वर्गेते करेन चिन्ता यत देवगण
विधाता वलेन शुन देव पुरन्दर ※ रामेर वयस मात्र सप्तम वत्सर
दिने दिने जानकीर रूप वर्द्धमान ※ पाछे अन्य वरे राजा सीता करे दान
एइ युक्ति देवगण करिया मनन ※ कैलास पर्व्वते गेल यथा त्रिलोचन

१ हल २ जोत की रेखा अर्थात् 'सीता' से जन्म होने के कारण सीता नाम पड़ा ३ लक्ष्मी ४ तिल-पुष्प के समान सफ़ेद ५ कमर ६ राम के अलावा अन्य वर ।

कह बिरंचि—शिव अंतरयामी ! ※ जनक-गेह अस कीजिय स्वामी
तब सेवक आयसु सिर लेही ※ देय न इतर राम वैदेही
करि विधि बिनय,गमन उत कीन्हा ※ परशुराम ! शिव आयसु दीन्हा
मम धनु लै विदेहपुर धरहू ※ मम आदेस जनक प्रति कहहू
जो समरथ जग शिवधनु-भंगा ※ सिया-विवाह रचिय सोइ संगा
राम रमापति बिन त्रयलोका ※ भञ्जक चाप न कतहुँ बिलोका
आयसु-शंभु, चले भृगुवीरा ※ कर कोदण्ड[1] प्रचण्ड सरीरा
पीठ निषंग[2] जटा सिर धारा ※ धनु-प्रतञ्च[3] कर एक कुठारा
सुत-जमदग्नि[4] जनकपुर आये ※ नृप प्रनम्य आसन बैठाये
पाद अर्घ्य सों नृप सन्माना ※ भृगुपति निरखि, मुनिन भय माना

राजा जनक की धनुर्भंग-प्रतिज्ञा

सिया-विवाह प्रसंग चलावा ※ सुनि मुनि-बचन जनक सुख पावा
विनय वचन निज भाग सराहा ※ मुनि-मत इतर न रचउँ विवाहा
पुनि भृगुराम चले तप कानन ※ गहि पद युगुल विनय किय राजन
सिय-सौभाग्य सुअवसर पाई ※ बिन तव सीख न रचउँ सगाई

ब्रह्मा वलिलेन शुन शिव अन्तर्य्यामि ※ जनकेर घरे सीता रक्षा कर तुमि
से तव सेवक आज्ञा लंघिते ना पारे ※ येन राम विना अन्ये ना देन सीतारे
एतेक बलिया ब्रह्मा करिल गमन ※ भृगुरामे डाकिया कहेन त्रिलोचन
आमार धनुक निया करह पयान ※ जनकेर घरे राख करि सावधान
आमारए धनुर्भङ्ग करिते ये पारे ※ कह जनकेर येन सीता देय तारे
ए तिन भुवने इहा तूले कोन जन ※ सबे मात्र तुलिवेन प्रभु नारायण
पाइया शिवेर राज्ञा वीर भृगुपति ※ धनुक धरिया हाते करिलेन गति
माथाय जटार भार पृष्ठे दुइ तूण ※ एक हाते कुठार अन्येते धनुर्गुण
ब्रह्मारे येमन देवे करेन सम्भ्रम ※ जनक परशुरामे करेन से क्रम
प्रणाम करिया ताँरे दिलेन आसन ※ पाद्य अर्घ्य दिया ताँरे करेन पूजन
भृगुरामे देखि सब मुनिर तरास ※ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

जनक राजार धनुर्भंग पण

जिज्ञासिते लागिलेन जनक राजन ※ कोन कार्य्ये महाशय हेथा आगमन
बलेन परशुराम तोमार दुहिता ※ सीता देह यदि राजा करि विवाहिता
जनक बलेन शुन ए कि चमत्कार ※ एत कि सौभाग्य आछे कपाले सीतार
सीतार विवाह काले हइबे यखन ※ करा याबे युक्तिमत कहिबे येमन

१ धनुष २ तरकस ३ धनुष की डोरी ४ परशुराम ।

दो० तदपि तपोधन! दरस कर, कब सौभाग्य बहोरि ।
तव-सूने[1] केहि संग मुनि, करौं सिया गठजोरि ॥ ११० ॥

आयसु श्रवन धरहु मिथिलेसा ❋ निरखहु कौतुक चाप महेसा
धरि प्रतञ्च, धनु भंजइ वीरा ❋ सुता जोग वर सोइ रनधीरा
सो कहि, गमन कीन भृगुरामा ❋ शंभु-धनुष तजि मिथिलाधामा
सत्तर जोजन लंब प्रसारा ❋ जोजन दसक इतर[2] विस्तारा
नृप प्रन—चाप चढ़ावै डोरी ❋ करौं तासु सन सिय-गठजोरी
मन्दिर जोजन दीर्घ अेकासी ❋ तँह धनु धरेउ शंभु अविनासी
ग्यारह जोजन गृह चौड़ाई ❋ बिरद[3]-चाप दिग्देसन छाई

समस्त राजाओं एवं रावण का धनुप उठाने में असमर्थ होकर पलायन

सिया-वरन मन सबन उछाहा ❋ जुरे जनकपुर जग-नरनाहा
जे-जे नृप जुरि गाल बजावैं ❋ तिन धनु-मन्दिर जनक पठावैं
प्रन-विदेह—जो चाप चढ़ावैं ❋ यौतुक[4] अमित सहित सिय पावै

भृगु बले तपस्याय करिब गमन ❋ देखो येन अन्य मत ना हय राजन
एतेक बलिया यदि भृगुराम यान ❋ भृगुर चरण धरि जनक सुधान
तोमार साक्षात् आर पाव कत काले ❋ कारे दिव कन्या आमि तुमि ना आइले
बलेन परशुराम आमार धनुक ❋ राखि जाय तव स्थाने देखिवे कौतुक
धनुक तुलिया येवा गुण दिते पारे ❋ रहिल आमार आज्ञा कन्या दिओ तारे
एत बलि भार्गव गेलेन स्थानान्तरे ❋ पड़िया रहिक धनु जनकेर घरे
हरेर धनुक सेइ अपूर्व्व निर्म्माण ❋ सत्तर योजन उभे धनुक प्रमाण
योजन दशेक धनु आड़े परिसर ❋ करिलेन प्रतिज्ञा जनम ऋषिवर
ए धनुके गुण दिते ये जन पारिवे ❋ सेइ जन जानकीरे विवाह करिबे
यतन करिया कैल धनुकेर घर ❋ एकाशी योजन सेइ घर दीर्घतर
एगार योजन तार आड़े परिसर ❋ धनुक पड़िया आछे ताहार भितर
सेइ धनुकेर कथा गेल देशे देशे ❋ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवासे

सकल राजा ओ रावणेर धनुक तुलिते अपारग हइया पलायन

धनुकेर कथा यदि गेल देशे देशे ❋ जानकी विवाह हेतु राजा सब आसे
पृथिवीते आछे यत राजा महत्तर ❋ एके एके आसे सव जनकेर घर
आसिया सकल राजा अहंकार करे ❋ सबारे पाठाये देन धनुकेर घरे
जनक बलेन येबा तुलिबे धनुक ❋ ताँरे सीता कन्या दिब परम यौतुक

---

१ आप की अनुपस्थिति में २ लंबाई से इतर अर्थात् चौड़ाई ३ प्रसिद्धि ४ दहेज । -

जिन सूरन धनु ढिग डग डारी * दरस होत पग परत पछारी
बहुते हुमकि जायँ धनु पाहीं * परस न, दरस होत भजि जाहीं
पट कसि, चाप चढ़ावत साजू * भरहिं जोर नरपति-युवराजू
अभिरि प्रानपन, थकित बिचारे * चढ़ब दूर, धनु टरत न टारे
धनु-गुन[1] अडिग मेरु सम भारी * लाज विवस पुर तजि धनुधारी
डगर सबन निज गेह सम्हारी * बालक-जूथ हसैं दै तारी

दो० तिनहिं मिले मग भूप बहु, आवत सिय अभिलास ।
सुनत चाप-कौतुक, तहैं, तजी दरस-धनु-आस ॥ १११ ॥

उलटे पाँव फिरे निज देसा * दरस-परस कामना न सेसा
अगनित, अकथ अतिथि विस्तारा * तीन कोटि नृप पुर पग धारा
कोउ न समर्थ, अडिग धनु संकर * सजेउ लंकपति पुनि दसकंधर
लै मारीच, प्रहस्त, अकम्पन * सहित महोदर सजि निज स्यंदन
रावन मिथिला कीन पयाना * समाचार मिथिलापति जाना
पात्र मित्रगन सबन बुलाई * चढ़ेउ दनुजपति, खबरि जनाई
जो न हर्षि सिय ताहि विवाहू * हरइ जोर[2], किमि कहौ निबाहू

धनुक तुलिते यत राजपुत्र जाय * देखिया सकल लोक पश्चाते गोड़ाय
घरेर द्वारे ते गिया ऊँकि दिया चाय * तुलिबार शक्ति कोथा देखिया पलाय
कत राजा राजपुत्र उद्यत हइया * तुलिते धनुक जाय वस्त्र काछेटिया
प्राणपणे तार धनु टानाटानि करे * तुलिबार साध्य किवा नाड़िते ना पारे
सुमेरु पर्व्वत हेन धनुखान भारे * दिवे कि ताहाते गुण नाड़िते ना पारे
लज्जा पेये सव राजा पलाइया जाय * हात तालि दिया सब बालक गोड़ाय
पलाइया जाय सब आपनार देशे * विवाह करिते अन्य राजागण आसे
पथ मध्ये देखा हैय से सबार सने * धनुकेर पराक्रम तारा सब शुने
देखिबारे काज नाइ शुनिया डराय * शुनिया शुनिया पथे अमनि पलाय
एतेक कहिले हय पुस्तक विस्तार * राजा तिन कोटि गेल मिथिला नगर
धनुक तुलिते ना पारिल कोन जन * लंकाय थाकिया शुने लंकार रावण
अकम्पन प्रहस्त मारीच महोदर * चारि पात्र ल'ये रथे चड़े लंकेश्वर
आइल सकले तारा मिथिला भुवन * जनक शुनिल रावणेर आगमन
जनक बलेन शुन पात्र मित्रगण * रावण आइल आजि हइबे केमन
स्वेच्छाते विवाह यदि ना दिब रावणे * काड़िया लइवे सीता राखे कोन् जने

१ धनुप की डोरी २ वलपूर्वक ।

मग भेटे विदेह अगवानी ❊ हँसा ठठाय सुभट अभिमानी
कह प्रहस्त, सुनु लंक-जुझारा ❊ प्रस्तुत नृप तव शिष्टाचारा
रथ तजि, असुर जनक भरि लीन्हा ❊ बाहु पसारि अलिगन कीन्हा
रतन सिंहासन अतिथि सुहावा ❊ उभय मधुर संलाप चलावा
जीवन सफल दरस तव पाई ❊ कारन कवन दया दरसाई
कह दससीस, सुता तव सीता ❊ करहु दान, सोइ चहउँ ग्रहीता
धन्य भाग मम, निसिचर-नाहा! ❊ तव समान कित जोग बिवाहा
तदपि बचन-बन्धन कछु मोरा ❊ भृगुपति आनेउ धनुष कठोरा
भञ्जइ चाप वीर धनुधारी ❊ सोइ, लंकेस! सिया-अधिकारी

दो० अवनि[1] न अब लौं सफल कोउ, सुभट सुनहु दसभाल।
धनु चढ़ाइ, प्रन पूर करि, लेहु सुता-जयमाल ॥ ११२ ॥

आनन दसौ हँसा सुनि रावन ❊ धनुबल भल वरनेउ मोहिं राजन
गिरि मंदर कैलास उठावा ❊ चाप-भार लघु बात चलावा
भञ्जउँ सोइ, जब करउँ पयाना ❊ तब लौं सुता करौ मोहिं दाना
मैं प्रन-विवस, करहु धनुभंगा ❊ निरखैं सब तव भुजबल-रंगा
पुनि प्रहस्त दिय मंत्र विसेखा ❊ प्रन-विदेह कछु अहित[2] न देखा

चलिल जनक राजा रावणे आनिते ❊ देखिया रावण राजा लागिल हासिते
प्रहस्त डाकिया बले रावण राजारे ❊ जनक आइल देख लइते तोमारे
देखिया रावण तारे भूमितले उलि ❊ दुइ बाहु पसारिया करे कोलाकुलि
वसाइल रावणेरे रत्न सिंहासने ❊ मिष्टालाप करिलेन वसि दु'जने
जनक बलेन आजि सफल जीवन ❊ कोन कार्य्ये महाशय तव आगमन
दशानन बले राजा तव कन्या सीता ❊ आमारे करह दान आमि ये ग्रहीता
जनक वलेन इहा सौभाग्य लक्षण ❊ तोमा विना पात्र आर आछे कोन् जन
आनिलेन भृगुराम धनु एक खान ❊ हेन वीर नाहि ये ताहाते देय टान
तुलिया धनुकखान भांग गिया तुमि ❊ धनुकेर घरे सीता समर्पिव आमि
शुनिया से दशमुखे हासिल रावण ❊ आमार साक्षाते बल धनुक विक्रम
कैलास तुलेछि आमि पर्व्वत मन्दर ❊ ताहारे जिनिया कि धनुक हबे भार
आगे सीता आनिया आमारे कर दान ❊ यात्राकाले भांगिया जाइव धनुखान
जनक बलेन कर प्रतिज्ञा पूरन ❊ देखुक सकल लोक धनुक भंगन
प्रहस्त बलेन शुन राखा दशानन ❊ आर जे प्रतिज्ञा भंग ना कर कखन

१ पृथ्वी पर २ अमंगल, बुराई।

चढ़त चाप नृप अर्पहिं सीता ❋ नतरु जोर-बल करिय ग्रहीता
टूटै धनुष, न संशय येही ❋ मातुल[1] ! वरौं[2] अबै बैदेही
अभिमानी गमनेउ धनुगेहा ❋ संग लंकपति, चले विदेहा
धाई प्रजा, कूतूहल छावा ❋ जानकि-वर विधि आजु पठावा
युवा, वृद्ध, अरु बाल-समाजा ❋ धनुमंदिर पुर सकल विराजा
कौतुक जोजन दीर्घ अेकासी ❋ ग्यारह परिसर[3] तासु प्रकासी
गृह विशाल जहँ चाप-महेसा ❋ तासु द्वार लंकेस प्रवेसा
दुर्जय धनु निरखत रनबंका ❋ लंकापति उपजी मन संका
बल सुमिरत छिन, पुनि भयभीता ❋ असफल-सफल न हिय परतीता[4]
ताल प्रतच्छ[5], न अन्तस धीरा ❋ धनु ढिग गयेउ दसानन वीरा
कटि कसि फेंट, सुभट बलधारी ❋ चहेउ चाप भुजबीस उपारी[6]

दो० तमकि,हुमकि,उठि, बैठि बल,बिबिध करत दससीस।
सिथिल गात,हिय लाज अति, टरत न धनुष-गिरीस॥ ११३ ॥

मातुल! थकित भुजा मम बीसा ❋ सिखवति सुनि प्रहस्त, दससीसा

धनुक भांगिले राजा जानकीरे दिबे ❋ इच्छाधीने नाहि देय बले काड़ि लबे
दशमुख बले मामा राखि तव कथा ❋ धनुक भांगिले येन ना हय अन्यथा
अहंकार करिया चलिल लंकेश्वर ❋ देखाइते चलिल जनक नृपवर
शुनिया धाइल सब मिथिला नगर ❋ सबे वले जानकीर आजि एल वर
युवा वृद्ध शिशु एक नाहि रहे घरे ❋ कौतुक देखिते गेल राजार मन्दिरे
एकाशी योजन घर अति दीर्घतर ❋ एकादश योजन ताहार परिसर
धनुक पड़िया आछे ताहार भितरे ❋ आसिया रावण राजा दाण्डाइल द्वारे
दाण्डाय द्वारेते वीर डाँकि दिया चाय ❋ देखिया दुर्जय धनु अन्तर डराय
मने भावे आमार घुचिल भारिभुरि ❋ ये देखि धनुकखान पारि कि ना पारि
अन्तरे आतङ्क अति, मुखे आस्फालन ❋ तुलिते धनुक जाय वीर दशानन
आँटिया कापड़ परे वान्धिल काँकाले ❋ कुड़ि हाते धरिल से धनु महाबले
आँकाड़ि करिया तवे धनुखान टाने ❋ तुलिते ना पारे आर चाय चारिपाने
नाके हात दिया बले कि करि उपाय ❋ कि हइबे मामा धनु तोला नाहि जाय
प्रहस्त बलेन शुन राजा लङ्केश्वर ❋ लोक हासाइला आसि मिथिला नगर

---

१ मामा (प्रहस्त) २ विवाह लूंगा ३ प्रसार-फैलाव ४ प्रतीति, विश्वास
५ प्रकट में जोश ६ उठाना।

पुर उपहास असह, यहि कारन ❋ तन भरि जोर, करौ बल धारन
भय तजि, धनु भञ्जिय केहु भाँती ❋ साहस जोरि अड़ायेसि छाती
शिवगिरि मन्दर सहज उपारा ❋ सोइ भुजवल, तिल धनुष न टारा
प्रन-पुरवनि प्रानन पर छाई ❋ मातुल ! जुगुति एक मन भाई
सब मिलि जोर करहिं इकसंगा ❋ कह प्रहस्त, सियवर केहि संगा?
प्रान जाय पै राखिय माना ❋ करि बल, हित साधिय बलवाना
मातुल[1]! जतन करौं सिख मानी ❋ तदपि द्वार रथ राखहु आनी
हँसि प्रहस्त, रथ द्वार बुलावा ❋ रावन पुनि बल अमित लगावा
तजी आस, चितवत नभ ओरा ❋ सुरगन मनौ हँसत तेहि ओरा
रथ चढ़ि भजेउ लंक-अधिकारी ❋ बालक हँसत बजावत तारी
मन गलानि उत गमनेउ रावन ❋ इत सुरगन हिय ताप नसावन
बिन हरि, चाप चढ़ै केहि हाथा ❋ श्री-वर कौन बिना श्रीनाथा
दनुज-त्रास मिटि सीतल छाती ❋ चिंता-जनक मिटी यहि भाँती
अमा-ग्रहण[2]-रवि अवसर देखी ❋ नृप-मन सुत-कल्यान बिसेखी
हेमदान[3] सुरसरि असनाना ❋ नृप उमंग, कृत्तिवास बखाना

चिन्ता ना करिह तुमि ना करिह डर ❋ गाये वल करि आर एक बार धर
पुनश्च धनुकखान टानाटानि करे ❋ तथापि धनुकखान नाड़िते ना पारे
दशग्रीव वले आर नाड़िते ना पारि ❋ प्राण जाय मामा तवु तुलिते ना पारि
कैलास तुलिनु मामा पर्व्वत मन्दर ❋ ताहारे जिनिया मामा धनुकेर भार
एइयुक्ति मामा गो तोमार ठाँइ मागि ❋ सवाइ मिलिया तुले धनुखान भाङ्गि
प्रहस्त वलिल शुन वीर दशानन ❋ तवे त सीतार वर हवे कोन जन
पार वा ना पार आर एक वार टान ❋ जाय प्राण राख मान एइ वाक्य मान
रावण वलिल मामा शुन मोर वाणी ❋ तुलिते ना पारि शीघ्र रथ आन तुमि
ईषत् हासिया वले प्रहस्त ताहारे ❋ रथ लये एइ आमि रहिलाम द्वारे
आरवार रावण धनुकखान टाने ❋ तुलिते ना पारे चाय प्रहस्तेर पाने
काँकालेते हात दिया आकाशे निरखे ❋ मने भाव पाछे आसि इन्द्र वेटा देखे
वुझिया प्रहस्त रथ दिल योगाइया ❋ लाफ दिया रथे उठे धनुक एड़िया
पलाइया चलिल लङ्कार अधिकारी ❋ सकल वालक देय तारे टिटकारी
लंकाय शंकाय गेल लंकार रावण ❋ आकाशे थाकिया देखे यत देवगण
श्रीलक्ष्मीपतिर लक्ष्मी लवे कोनजन ❋ तुलिवेन धनुक केवल नारायण
कृत्तिवास पण्डितेर कि कहिव शिक्षा ❋ आदिकाण्ड गाइल सीतार हैल रक्षा

---

१ मामा २ अमावस्या पर सूर्य-ग्रहण ३ स्वर्णदान।

श्री राम का गंगा-स्नान और गुह के साथ मित्रता तथा भरद्वाज मुनि के घर राम का धनुर्बाण प्राप्त करना

दो० सहित चारि सुत, भूप रथ, शत-शत हय, गज संग ।
गगन तुमुल रव[1] ब्याप चहुँ, अमित[2] कटक चतुरंग ।। ११४ ।।

नृप-दशरथ रथ दिव्य सुहाये ※ पन्थ दरस नारद के पाये
पूछत हेतु गमन ? नृप भाषा ※ मुनि ! अस्नान-गंग अभिलाषा
भूप अजान ! राम मुख दरसन ※ पुनि क्षित हेतु जाह्नवी-परसन
भूतल पतितपावनी धारा ※ गंग, जासु पद-पदुम प्रसारा
गंगस्नान पुन्य सोइ नाना ※ सुवन-रूप निरखहु भगवाना
नारद बचन नरेस प्रतीता ※ चलहु राम गृह, कहेउ सप्रीता
सुनि पितु बचन, कहत रघुराई ※ विघिन धर्म-पथ, रीति सदाई
तिनहिं बराय, मातु-डग[3] धरहीं ※ सुरसरि-सुकृत[4] सफल तन करहीं
पितु मन दीन कथन-रघुनन्दन ※ सहित उछाह बढ़ेउ नृप-स्यंदन[5]

श्रीरामेर गंगास्नान ओ गुहकेर सहित मितालि ओ भरद्वाज मुनिर गृह रामेर धनुर्व्वाण प्राप्ति

एक दिन दशरथ पुण्य तिथि पेये ※ गङ्गास्नाने यान राजा चार पुत्र ल'ये
हइबेक अमावस्या तिथिते ग्रहण ※ रामेर कल्याणे राजा दिबेन काञ्चन
तुरंग मातंग चले संगे शते शते ※ चारिपुत्र सह राजा चापिलेन रथे
चलिल कटक सब नाहि दिक् पाश ※ कटकेर शब्दे पूर्ण हइल आकाश
चलेछेन दशरथ चड़ि दिव्य रथे ※ नारद मुनिर सगे देखा हय पथे
मुनि वले कोथा राजा करिछ पयान ※ भूपति कहेन साध करि गंगास्नान
मुनि कहे दशरथ तुमि त अज्ञान ※ राममुख देखिले के करे गंगास्नान
पतितपावनी गंगा अवनीमण्डले ※ सेइ गंगा जन्मिलेन याँर पदतले
सेइ दान सेइ पुण्य सेइ गंगास्नान ※ पुत्रभावे देख तुमि प्रभु भगवान
एत यदि नृपतिरे कहिलेन मुनि ※ राजा बले चल घरे राम रघुमणि
बापेर बचन सुनि वलेन श्रीराम ※ अनेक पाषण्ड आछे धर्म्मपथे बाम
गंगार महिमा आमि कि बलिते जानि ※ ना शुनिओ महाराज नारदेर वाणी
एत यदि बलिलेन कौशल्याकुमार ※ चलिलेन दशरथ राजा आर बार
चलिल राजारा सैन्य आनन्दित है'या ※ गुहक चण्डाल आछे रथ आगुलिया

१ शब्द २ असीम ३ गंगा माता की राह ४ गंगा के पुण्य द्वारा ५ दशरथ का रथ ।

तौ लौं पथ घेरेउ गुहराजू * कोटिक[1] तीन निषाद-समाजू
कहेउ, कटक इत कस अवधेसा? * नित गहि पंथ बिगारत देसा
जो सुरसरि-अस्नान उछाहू * तजि मम भूमि, आन पथ जाहू
सोइ मग गमन रुचिर यदि भूपा * प्रथम लखौं छबि राम अनूपा
राम-राम गुहपति मुख भाखा * रथ लुकाय रामहिं नृप राखा
सोचत धनु चढ़ाय नरनाथा * बध गुह हीन! कवन जस हाथा?
जीते सुजस न पौरुष लेसू * हारे त्रिभुवन अजस बिसेसू

दो० छाड़ेहू[2] पुनि पार नहिं, अभिरत उत चण्डाल ।
नृप बिमूढ़-मन, करिय कस? अरझेउ मग जंजाल ॥ ११५ ॥

बरसइँ बान, कोपि दोउ लरहीं * रिपु-सर निरखि, उभय मन डरहीं
तर्जहिं परस्पर बान कराला * यहि विधि ठनेउ युद्ध बहु काला
दसरथ पुनि पशुपति संधाना * गुहपति-हाथ बाँधि रथ आना
सोचत—दरस न कृपानिकेता * सफल न रन पथ रोकन हेता
पग धनु कसि, पग सों धरि बाना * बिन कर[3] कौतुक रन गुह ठाना
रामहिं अचरज भरत जनावा * पग सन धनुर्युद्ध-यश गावा
राम कुतूहल ! कला नवीना ! * देखन चले निषाद प्रवीना
गुहपति, निरखत छबि-रघुनाथा * नाय माथ, थिर भयेउ सनाथा

तिन कोटि चण्डालेते गुहक वेष्टित * हुड़ाहुड़ि बाधे दशरथेर सहित
गुहक चण्डाल वले शुन दशरथ * भाँगिया आमार देश करिले कि पथ
वारे बारे जाह तुमि एइ पथ दिया * सैन्येते आमार राज्य केलिल भांगिया
गंगास्नान करिते तोमार थाके मन * आर पथ दिया तुमि करह गमन
यदि इच्छा थाके हे जाइते एइ पथे * देखाओ तोमार आगे पुत्र रघुनाथे
राम राम वलिया से गुहक डाकिल * रथमध्ये रामेरे भूपति लुकाइल
निल दशरथ राजा धनुर्ब्बाण हाते * रथेर द्वारेते राजा लागिल भाविते
चण्डालेरे मारि किवा हइवेक यश * नीच जने जिनिले कि हइबे पौरुष
यदि पराजय हइ चण्डालेर बाणे * अपयश घुषिवेक ए तिन भुवने
आमि यदि छाड़ि नाहि छाड़िवे चण्डाल * कि करिब पथे ए कि घटिल जञ्जाल
दुइजने बाणवृष्टि करे महाकोपे * उभयेर बाणेते दोंहार प्राण काँपे
एइ मत बाणवृष्टि हइल विस्तर * उभयेर संग्राम हइल वहुतर
दशरथ राजा एड़े पाशुपत शर * हाते गले गुहके बान्धिल नरेश्वर
गुहके वान्धिया राजा तुलिलेन रथे * वन्धने पड़िया गुहक लागिल भाविते

१ करोड़ २ न लड़ने पर भी ३ बिना हाथ के ।

पूछत राम, कहहु रन-कारन ? ❊ सुनहु कथा प्रभु शाप-निवारन
पाप पुरबुले[1], अधम शरीरा ❊ लहि, अब लौं भुगतौं भव-पीरा
पितु बशिष्ठ-सुत जनम पुनीता ❊ वामदेव मम नाम अतीता[2]
सुत-विहीन दसरथ जेहि काला ❊ अंध-सुवन-बध-पाप बेहाला[3]
तप-उपवन पकरे मम चरना ❊ लोटत धरनि विकल मम सरना
राम नाम त्रय बार कहावा ❊ सोइ प्रताप नृप-ताप नसावा
सोइ कारन पितु शाप कराला ❊ जन्मेउँ अधम योनि चण्डाला
नाम एक, बध कोटि उबारन ❊ तीनि बार केहि हेतु उचारन ?

दो० पितु-प्रकोप लखि, गहे पग, शाप-मुक्ति किमि नाथ?
कहेउ, निवारन अधम गति, दरस राम रघुनाथ ॥ ११६ ॥

सोइ अब राम अवध अवतारा ❊ जासु चरन मम पाप निवारा
भक्तन प्रिय तुम नाथ-अनाथा ❊ दयासिंधु को अस रघुनाथा
श्वपच-शरीर घृना यदि करहू ❊ नाम पतितपावन, हरि ! तजहू
विनय-सनी आकुल गुहबानी ❊ सुनत राम दृग सरसत पानी

याहाँर लागिया आमि आगुलिनु पथ ❊ देखिते ना पाइलाम से राम किमत
एतेक भाविया गुह करे अनुमान ❊ पायेते धनुक टाने पाये एड़े बाण
भरत कहिल गिया रामेर गोचरे ❊ एमत अपूर्व्व शिक्षा नाहि चराचरे
पायेते धनुक टाने पाये एड़े बाण ❊ देखिते कौतुक राम गेलेन से-स्थान
येइ मात्र गुहक देखिल रघुनाथे ❊ दण्डवत् हइया रहिल जोड़ हाते
श्रीराम बलेन धनु टानह केमन ❊ गुह बले तोमारे कहिब से कारण
पूर्व्व जन्म कथा मम शुन नारायण ❊ ये पापे हइल मोर चण्डाल जनम
अपुत्रक छिलेन यखन दशरथ ❊ अन्धक मुनिर पुत्र करिलेन हत
मुनि हत्या करिया आसिल तपोवने ❊ लोटाइया धरिलेन आमार चरणे
वशिष्ठेर पुत्र आमि वामदेव नाम ❊ तिन बार राजारे बलानु राम नाम
शुनिया वशिष्ठ शाप दिलेन विशाल ❊ जाह वामदव पुत्र हओरे चण्डाल
एक रामनामे कोटि ब्रह्महत्या हरे ❊ तिन बार रामनाम बलालि राजारे
लोटाय पड़िनु आमि पितार चरणे ❊ चण्डाल हइते मुक्ति काहार दर्शने
पिता बलिल जबे पावे श्रीराम दर्शन ❊ तबेत हइबे मुक्त चण्डाल जनम
सेइ राम जन्मियाछे दशरथ घरे ❊ चरण परश दिया मुक्त कर मोरे
अनाथेर नाथ तुमि भकतवत्सल ❊ करुणासागर हरि तुमि हे केवल
चण्डाल बलिया यदि घृणा कर मने ❊ पतितपावन नाम तवे कि कारणे
एतेक बलिया गुह लागिल कान्दिते ❊ गुहेर क्रन्दने राम कान्दिलेन रथे

१ पूर्वजन्म के २ व्यतीत काल का ३ परेशान।

पितु सन विनय करत कर जोरी ❋ गुहपति-मुक्ति याचना मोरी
राम ! न कछु अदेय तव हेतू ❋ अर्पित गुह तव, हर्ष समेतू
पितु-अनुमति; आतुर रघुनन्दन ❋ काटे निजकर गुहपति-बन्धन
लखन ततच्छन अनल जराई ❋ साखी राम-निषाद मिताई
हीन न तात ! सुनहु गुहभूपा ❋ सब प्रकार तुम मम अनुरूपा
अधम अहौं, तुम अधम-सहाई ❋ जग चहुँ पुजै राम-ठकुराई
करि मित्रता, बिदा गुह कीन्हा ❋ सुरसरि-पथ दसरथ पुनि लीन्हा
फल अनन्त रविग्रहन पुनीता ❋ दान धर्म अस्नान सप्रीता
शत-शत सुरभि शिला किय दाना ❋ कञ्चन, रजत, रतन विधि नाना
दान-पुन्य करि नृप बहु भाँती ❋ सुतन सहित पुनि निरखि सँझाती[1]
भरद्वाज-उपवन चलि जाई ❋ बन्दि चरन-मुनि, विनय सुनाई
सरन तपोधन तव, सुत चारी ❋ अहह भाग तव चरन निहारी

दो० देहु असीस; विलोकि तिन, सोचत मनहिं मुनीस ।
तजि गोलोक प्रतच्छ लख[2] जग प्रगटे जगदीस ॥ ११७ ॥

तव सुत राम, जनक[3] जग केरा ❋ जीवन सफल अवधपति केरा

करपुटे दाण्डाइल पितार साक्षात् ❋ देह भिक्षा गुहके वलेन रघुनाथ
राजा बले प्राण चाह प्राण पारि दिते ❋ चण्डाले तोमाके दिव बाधा नाहि इथे
पाइया वापेर आज्ञा कौशल्यानन्दन ❋ खसालेन निज हस्ते गुहेर बन्धन
श्रीराम बलेन अग्नि ज़्वालह लक्ष्मण ❋ गुहकेर सह करि मित्रता बन्धन
लक्ष्मण ज्वालेन अग्नि रामेर साक्षात् ❋ गुह सहित मित्रता करेन रघुनाथ
जेइ आमि सेइ तुमि बलेन श्रीराम ❋ गुह बले घुचाइते नारि निज नाम
श्रीरामेर जगते हइल ठाकुरालि ❋ प्रथमे करेन राम चण्डाले मितालि
बिदाय करिया रामे गुह गेल घरे ❋ पुत्र लैया दशरथ गेल गङ्गातीरे
अपूर्व्व अनन्त फल भास्कर ग्रहण ❋ स्नान करि राजा दान करिल काञ्चन
धेनुदान शिलादान कैल शत शत ❋ रजत काञ्चन तार नाम लव कत
दान धर्म्म करिते हइल बेला क्षय ❋ प्रदोषे गेलेन राजा भरद्वाजेर आलय
बसिया आछेन मुनि आपनार घरे ❋ चारि पुत्र सह राजा नमस्कार करे
जोड़ हाते बले राजा मुनिर गोचर ❋ आनियाछि चारि पुत्रे देख मुनिवर
आशीर्व्वाद कर चारि पुत्रे तपोधन ❋ बहुभाग्ये देखिलाम तोमार चरण
देखिया रामेरे भावे भरद्वाज मुनि ❋ वैकुण्ठ हइते विष्णु आइला आपनि
मुनि वले राजा तव सकल जीविता ❋ राम तव पुत्र किन्तु जगतेर पिता

---

१ सायंकाल २ मालूम पड़ता है ३ पिता ।

छबि विराट दूर्वादल श्यामा ※ अतुलित तबहिं लखेउ मुनि रामा
अंकुश बज्र ध्वजा पद पंकज ※ शंख चक्र कर पद्म गदा सज
शिव, विरञ्चि जेते सुरलोका ※ भुवन राम-तन[1], सकल बिलोका
मुनि-आश्रम आतिथ नृप पावा ※ सहित सैन तहँ रैन बितावा
शयनकक्ष मुनि राम लेवाई ※ सोवत, अर्धनिसा जब आई
अक्षय कवच दिव्य धनु साथा ※ सिरहाने राखेउ सुरनाथा
मुनिहिं सकल सो सपन दिखाई ※ भोर, चाप निरखेउ रघुराई
आयुध दिव्य शचीपति[2] दीन्हा ※ सो निसि-कथा कथन मुनि कीन्हा
मुनि प्रणम्य, हरि पितु ढिग जाई ※ सम्मुख धरेउ चाप-सुरराई
दसरथ मुदित; सहित सुत चारी ※ आगम अवध सबन सुखकारी

राक्षसों द्वारा मुनियो के यज्ञों मे विघ्न और उसके निवारण का उपाय

राजभोग ऐश्वर्य प्रपन्ना[3] ※ सब विधि सुख समृद्धि संपन्ना
मिथिला मुनिन यज्ञ सोइ काला ※ करैं भंग नित दनुज कराला
जब-जब मुनिगन याग रचावा ※ तबहिं मरीच रक्त बरसावा

भरद्वाज एइकाले देखे चमत्कार ※ दूर्व्वादल श्याम तनु परम आकार
ध्वज-बज्रांकुशे शोभित पदाम्बुज ※ शङ्ख - चक्र - गदा - पद्मधारी चतुर्भुज
शंकर विरिञ्चि आदि यत देवगण ※ रामेर शरीरे आरो देखेन भुवन
समुचित आतिथ्य करेन भरद्वाज ※ सुखे रहिलेन सैन्यसह महाराज
रामेरे लइया मुनि अन्तःपुरे गिया ※ शयन करेन दोंहे एकत्र हइया
यखन हइल रात्रि द्वितीय प्रहर ※ शियरे राखेन देवराज धनुःशर
स्वप्ने उपदेश एइ करेन मुनिरे ※ अक्षय धनुक तूण देह श्रीरामेरे
एत बलि करिलेन वासन पयान ※ प्राते राम शियरे देखेन धनुर्ब्बाण
कहिलेन श्रीरामेरे मुनि भरद्वाज ※ तोमारे दिलेन धनुर्ब्बाण देवराज
मुनिर चरणे राम करे प्रणिपात ※ आनिलेन सेइ धनु पितार साक्षात्
शुनि राजा दशरथ आनन्द हइया ※ आइलेन देशे चारि कुमारे लइया
कृत्तिवास करे आश पाइ परित्राण ※ आदिकाण्ड गाइल रामेर गङ्गास्नान

राक्षसेर दौरात्म्ये मुनिदेर यज्ञपूर्ण व्याघात तन्निवारणेर उपाय

एइ रूपे दशरथ चारि पुत्र लैया ※ करेन साम्राज्य भोग सावधान हैया
हेथा मिथिलाय यज्ञ करे मुनिगण ※ यज्ञ पूर्ण नाहि हय राक्षस कारण
यज्ञ आरम्भन करे येइ मुनिवर ※ करे रक्त वर्षण मारीच निशाचर

१ राम के शरीर में विराट रूप के दर्शन २ इन्द्र ३ युक्त, प्राप्त ।

मिथिला चहुँ दिसि याग-विहीना ॥ मुनिन बोलाय जनक मत कीना
कौशिक-जुगुति सबन मन भाई ॥ अवध जाय आनहु रघुराई

दो० भयेउ जगत अवतार प्रभु, निसिचर नासन हेत ।
जनम राम बलधाम सोइ, दसरथ अवध निकेत ॥ ११८ ॥

कहेउ जनक, तुम बिन मुनिराई ॥ याग-सिद्धि नहिं जतन लखाई
सबन प्रबोधि अवध मुनि गयऊ ॥ राम-निवास उपस्थित भयऊ
प्रहरी-खबरि—भूप-मन चिन्तन ॥ विधि न सीध, कस गाधियनन्दन[1]!
रघुकुल कौशिक विषम प्रभावा ॥ बीतै कस ! दसरथ भय छावा
सुविदित सत्यसंध हरिचन्दा ॥ तिय-सुत बेचि कटे तिन फन्दा
संसय मन ! मुनि-चरन पखारी ॥ बन्दि, भूप मृदु गिरा उचारी
कीन गाधि-सुत पुष्कल[2] धामा ॥ अहो भाग्य! आवउँ मुनि-कामा
कौशिक कहेउ सुनहु अवधेसू ॥ मिथिला मुनिन अनन्त कलेसू
सफल न याग, दनुज-उत्पाता ॥ शोनित-स्रव, श्रुति-काज निपाता
जो मोहिं देव लखन-रघुराई ॥ कटै विपति तौ, असुर नसाई
आवइँ लौटि बितइ दिन चारी ॥ रघुकुल-सुयस भुवन विस्तारी
मन संसय सो आगे आवा ॥ धुनत सीस दसरथ भय छावा

यज्ञहीन हइलेक मिथिला भुवन ॥ करे जनक मुक्ति ल'ये ऋषि-मुनिगण
तार मध्ये वलिलेन विश्वामित्र मुनि ॥ अयोध्याय गिया रामचन्द्रे आमि आनि
राक्षस बधेर हेतु धरि राम वेश ॥ दशरथ गृहे अवतीर्ण हृषीकेश
वलिलेन जनक शुनह महाशय ॥ तुमि रक्षा करिले ए यज्ञ रक्षा हय
विश्वामित्र सकलेरे करिया आश्वास ॥ चलिलेन यथा राम अयोध्या निवास
उपस्थित हइलेन अयोध्यार द्वारे ॥ द्वारी गिया जानाइल तखनि राजारे
भूपति शुनिबा मात्र विश्वामित्र नाम ॥ चिन्तित कहेन बुझि आजि विधि बाम
विश्वामित्र मुनि एइ बड़इ विषम ॥ प्रमाद घटाय किम्बा करे कोन क्रम
सूर्य्यवंशे छिल हरिश्चन्द्र महाराज ॥ भार्या पुत्र बेचाइया ताँरे दिल लाज
आसि वन्दिलेन राजा मुनिर चरण ॥ शिष्टाचारपूर्व्वक करेन निवेदन
तव आगमने मम पवित्र आलय ॥ आज्ञा कर कोन कार्य्य करि महाशय
विश्वामित्र बलेन शुनह दशरथ ॥ श्रीरामेर देह यदि हय अभिमत
मुनिगण यज्ञ करे करिया प्रयास ॥ राक्षस आसिया सदा करे यज्ञनाश
मुनि-परित्राण हय, कहिनु तोमारे ॥ श्रीराम-लक्ष्मण देह यज्ञ राखिवारे
येइ मात्र विश्वामित्र कहेन ए कथा ॥ भूपति भावेन मने हेंट करि माथा

---

१ गाधि के पुत्र विश्वामित्र २ पवित्र ।

सुत-वियोग मम काल कपाला[1] ❋ अन्धक-शाप सतत[2] हिय साला[3]
बिन मुखचन्द्र-राम, छिन एका ❋ दूभर[4] जियब, न, मुनि! अतिरेका[5]
जीवन राम ध्यान सोइ ज्ञाना ❋ पल बिन-दरस अचेत समाना
मम तन-मन अर्पित तव काजू ❋ राम अदेय, छमहु मुनिराजू

दो० सोवहुँ निसि हिय राम धरि, सदा सचेत सभीत ।
स्वप्न विलग—जिय कण्ठगत, कतहुँ न काहु प्रतीत[6] ॥ ११६ ॥

श्रीराम को राक्षसों के साथ युद्ध के लिए भेजना दशरथ को अस्वीकार

छं० जिमि राम जनमे धाम मम, सो कथा-क्रम मुनि! श्रवन धरि ।
सर तीर, कानन, सिन्धु—सुत-मुनिअंध, जल जिहि काल भरि ॥
आखेट घूमत, शब्द-जलघट, शब्दबेधी सर हनेउँ ।
सो तौ न पसु! मुनि-सुवन हत! धरि कन्ध अन्धक-बन गयेउँ ॥
सन्तान बिन, मन ग्लानि निसिदिन, ताप मुनि-सुत-बध हृदै ।
तहँ अन्ध-दम्पति, कुपित बिलखत, सुत-वधिक—मोहि शाप दै ॥
'मृत्युयोग वियोग-सुत'—मुनि शाप दिय वरदान सम ।
यहि भाँति पाये चारि सुत, भयभीत हिय, मुनिनाथ! मम ॥

पुत्रशोके मृत्यु मम लिखन कपाले ❋ ना जानि हइबे मृत्यु मम कोन् काले
अन्धकेर शाप मने करे धुक् धुक् ❋ कखन मरिब नाहि देखे चाँदमुख
प्राण चाह यदि मुनि प्राण दिते पारि ❋ एक दण्ड रामचन्द्रे ना देखिले मरि
अतएव रामचन्द्रे ना दिव तोमारे ❋ एक दण्ड ना देखिले हृदय बिदरे
आदिकाण्ड गाय कृत्तिवास विचक्षण ❋ राम ध्यान राम ज्ञान राम से जीवन

श्रीरामके राक्षससह युद्धे प्रेरणे दशरथेर अस्वीकार

यखन शुइया थाकि, रामके हृदये राखि, भूमे राखि नाहिक प्रतीत ।
स्वप्ने ना देखिले ताय, प्राण ओष्ठागतप्राय, चमकिया चाहि चारि भित ॥
येमते पेयेछि रामे, कहि से सकल क्रमे, मृगया करिते गिया वने ।
सिन्धु नामे मुनिवरे, सरोवरे जल भरे, ताँरे मारि शब्दभेदी बाणे ॥
मृत मुनि कोले करि, गेलाम अन्धक-पुरी, देखि मुनि अग्निर समान ।
पुत्र-पुत्र बलि डाके, मरा पुत्र दिनु ताँके, पुत्रशोके से छाड़िल प्राण ॥
छिलाम सन्तान-हीन, मनोदुःखे रात्रिदिन, वधिलाम सिन्धुर जीवन ।
कुपिया सिन्धुर बाप, दिल मोरे अभिशाप, तेंइ पाइलाम एइ धन ॥

---

१ प्रारब्ध २ सदैव ३ खटकता रहा ४ कठिन ५ अत्योक्ति ६ विश्वास ।

स्वयं चलि, दलि दनुज, रच्छहुँ याग; सुनि मुनि कोप किय।
बिन लखन-राम न काम, चाहत कुसल कोसलनाथ हिय।।
दोउ सुवन दै, मुनिकाज करु, नतु शाप वंश बिनासिहौं।
कौशिक कुपित लखि, कहत नृप, मुनि! कछुक अर्ज सुनाइहौं।।

राजा दशरथ का विश्वामित्र मुनि के साथ छल करके भरत और शत्रुघ्न को भेजना और विश्वामित्र का कोप, फिर राम को भेजना स्वीकार

बारी बयस लटुरियाँ सीसा * रन न ज्ञान! किमि लरहिं, मुनीसा?
जेतक सैन चहहु तव हेतू * हनै दनुजगन कटक समेतू
रसद[1] कटक हित कित तपकानन? * एक राम समरथ खल नासन
नृप तव सैन न कारज लेसू * रविकुल, जहँ हरिचन्द नरेसू
दै छिति दान, बेचि सुत-दारा * सत्यसंध मम भार उतारा
तहँ लघु बात मुनिन-उपहासू! * प्रगट भानुकुल आजु विनासू
निरखि कोप, नृप युगुति बनाई * भरत-रिपुघ्न समीप बुलाई
करहु अनुगमन मुनि आदेसू * नृप-प्रवञ्च[2] मुनि ज्ञान न लेसू

अतएव तपोधन, शुन मम निवेदन, आमि जाव सहित तोमार।
विना श्रीराम लक्ष्मण, अन्य किछु प्रयोजन, जाहा चाह दिव शतवार।।
राजार वचन शुनि, कुपिलेन महामुनि, झाट देह तोमार कुमार।
आपन मङ्गल चाह, श्रीराम लक्ष्मणे देह, नहे वंश नाशिव तोमार।।

राजा दशरथ विश्वामित्र मुनिके प्रतारणा करिया भरत ओ शत्रुघ्न के प्रेरणा ओ विश्वामित्रेर कोप, तारपरे रामेर गमन स्वीकार

राजा बलिलेन मुनि करि निवेदन * धनुर्विद्या नाहि जाने कि करिबे रण
अत्यल्प वयस मम पुत्र चारि गुटि * शिरे चूल नाहि घुचे आछे पञ्चझुटि
अन्य सैन्य यत चाह लह तपोधन * ताहारा करिबे निशाचर-निवारण
शुनिया कहेन विश्वामित्र तपोधन * कटके खाइबे यत कोथा पाव धन
एका राम गेले हय कार्य्येर साधन * सहस्र कटके मम नाहि प्रयोजन
तव वंशे छिल ये हरिश्चन्द्र राजा * पृथिवी आमाके दिया करिलेक पूजा
तथापि ना पाइलेन मनेर सान्त्वना * भार्या-पुत्र बेचिया से दिलेन दक्षिणा
एका रामे तुमि दिते कर उपहास * सूर्य्यवंश बुझि आज हइल विनाश
चिन्तित हइया राजा भावे मने मने * डाकिलेन भरत शत्रुघ्न दुइ जने
दोंहे दाँड़ाइल आसि मुनिर साक्षाते * राजा वलिलेन जाह मुनिर सङ्गेते

१ फौज के लिए अन्न २ ठगई, छल।

लखन-राम तिन दोउ अनुमानी ※ कौशिक चले मोद मन मानी
सरयू तीर पहुँचि मुनिराई ※ युगुल सुतन दुइ पथ दिखराई
सुगम पंथ दिन तीन चलाई ※ पहर तीन दुर्गम पथ पाई
दुर्गम मग ताड़ुका[1] सुरारी ※ लगति, खाति मुनिगन नित मारी
मन भावै सोइ मग अनुसरहीं ※ 'कुपथ न हेतु'—भूप-सुत कहहीं
एक दनुजि ! डरपत रनबंका ! ※ राम-लखन कस? मुनि मन संका
बीतै कस अगनित खल पाई ? ※ किमि कोटिक दल-दनुज नसाई?
धरत ध्यान मुनि नृप-छल जाना ※ दीन न राम, भरत पहिचाना

दो० फिरे गाधिसुत, कुपित अति, दसरथ किय उपहास !
सहित अवध पुरजन सकल, भूपति करौं विनास ॥ १२० ॥

मुनि-दृग प्रगटी पावक-रासी[2] ※ जरत नगर आकुल पुरबासी
हाट-बाट चहुँ जरैं अटारी ※ राम समीप भजे नर-नारी
तुम तजि, दीन भरत नरनाहू ※ कौशिक-कोप अनल पुर दाहू
नगर त्रास लखि अति दुख पागे ※ धाय राम मुनि-चरनन लागे

भूपतिर वञ्चनाय भ्रान्त तपोधन ※ मने भाविलेन एइ श्रीराम लक्ष्मण
आगे यान महामुनि पाछे दुइजन ※ सरयू नदीर तीरे दिल दरशन
मुनि बलिलेन शुन भूपति कुमार ※ हेथा गमनेर पथ आछे द्विप्रकार
एइ पथे गेले जाइ तिन दिने घर ※ एइ पथे गेले लागे तृतीय प्रहर
तृतीय प्रहर पथे किन्तु आछे भय ※ सेइ पथे ताड़का राक्षसी नामे रय
ताड़िया धरिया खाय यत मुनिगणे ※ कोन् पथे जाइते तोमार लागे मने
वलिलेन भरत शुनह तपोधन ※ दुष्ट घाटाइया पथे कोन प्रयोजन
एकथा शुनिया मुनि भाविलेन मने ※ इनि कि हवेन योग्य राक्षस निधने
एक राक्षसेर नाम शुनि एत डर ※ मारिबेन किसे इनि कोटि निशाचर
राजार शठता मुनि भावेन अन्तरे ※ श्रीरामे ना दिया राजा दिल भरतेरे
आमार सहित राजा करे उपहास ※ अयोध्या सहित आजि करिब विनाश
क्रोधे फिरिलेन पुनः विश्वामित्र ऋषि ※ निर्गत हइल ताँर नेत्र अग्निराशि
सेइ अग्नि लागे गिया अयोध्या-नगरे ※ प्रजार तावत् घर द्वार दग्ध करे
कान्दिया चलिल प्रजा रामेर गोचरे ※ विश्वामित्र मुनि आसि सर्व्वनाश करे
तोमारे ना दिया राजा दिल भरतेरे ※ ते कारणे ए आपद अयोध्या-नगरे
प्रजार क्रन्दन शुनि रामेर तरास ※ धाइया गेलेन राम विश्वामित्र पाश
मुनिर चरण धरि वले रघुमणि ※ प्रजालोके रक्षा प्रभु करह आपनि

१ राक्षसी २ अग्नि की लपटें।

जेहि सिर पाप—दण्ड-अधिकारी! ❋ निरपराध कस संकट डारी
कोप अकारन, मुनि मन आवै ❋ सोइ छन पूरुब धर्म नसावै
पितु सनेहबस मोंहि न दीना ❋ करौं विदेह निसाचर-हीना
रच्छहु प्रजा, शमन! तपपुञ्जा! ❋ राम-बचन मृदु मुनि-मन रञ्जा
तप प्रभाव, अमरित मुनि-लोचन ❋ सरसि अवध किय संकट मोचन
ह्रास न त्रास विपति कहुँ लेसू ❋ मुनि-तप कौतुक राम बिसेसू

यज्ञरक्षा के लिए मिथिला मे श्रीराम-लक्ष्मण का जाना और मन्त्र-दीक्षा

पञ्चशिखा सिर हरि अवतारा ❋ मुग्ध राम-छबि मुनी निहारा
नभ शरदेन्दु[1] सरिस अभिरामा[2]! ❋ शोभाधाम चलहु मम ग्रामा
सुनी कथा नृप, लखि न उपाऊ ❋ सौंपेउ राम-लखन मुनिराऊ
रहु निचिन्त[3], दसरथ बड़भागी ❋ राम हेतु भय संका त्यागी
तुमंहि न बोध, असुर-बध हेता ❋ जनम राम-तन कृपानिकेता
नृप प्रबोधि, मुनि सुतन बुलावा ❋ सोइ छन रघुबर विनय सुनावा
दो० जो अनुमति, आयसु-जननि, लै, पुनि करौं पयान।
नतरु अनन्तर, रुदन-रत, तजैं अन्न-जल-पान ॥ १२१ ॥

अपराध जेइ करे दण्ड कर तार ❋ निरपराधीर दण्ड करा अविचार
मुनि हैया जेइ जन रागे देय मन ❋ पूर्व्व धर्म्म नष्ट तार हय सेइ क्षण
पुत्रे पाठाइते पिता हलेन कातर ❋ यज्ञ रक्षा करि गिया मिथिला नगर
हासिलेन मुनिराज रामेर वचने ❋ अयोध्यार पाने चान अमृत नयने
सकल करिते पारे तपेर कारण ❋ येमन अयोध्यापुरी हइल तेमन
मुनिर चरित्र देखि रामेर तरास ❋ आदिकाण्ड गाइल पण्डित कृत्तिवास

मिथिलाय यज्ञरक्षार्थे श्रीराम-लक्ष्मणेर गमन ओ मंत्र दीक्षा

शिरे पञ्च झुँटि राम विष्णु अवतार ❋ मुग्ध हइलेन मुनि रूपेते ताँहार
पूर्णिमार चन्द्र येन उदय आकाशे ❋ मुनि वलिलेन राम चल मोर देशे
जानिलेन महाराज रामेर गमन ❋ लक्ष्मण सहित रामे करेन अर्पण
वलिलेन विश्वामित्र राजार गोचर ❋ राम लागि चिन्ता ना करिह नरेश्वर
तुमि नाहि जानह रामेर गुण लेश ❋ राक्षस वधिते अवतीर्ण हृषीकेश
श्रीराम लक्ष्मणे ल'ये आमि देशे जाइ ❋ स्थिर हओ महाराज कोन चिन्ता नाइ
राजारे कहिया एइ प्रवोध वचन ❋ मुनि वलिलेन, चल श्रीराम लक्ष्मण
श्रीराम बलेन मुनि यदि वल तुमि ❋ मातृस्थाने विदाय लइया आसि आमि
माये ना कहिया जाव मिथिला नगर ❋ कान्दिबेन अन्नजल छाड़ि निरन्तर

---

१ शरत्पूनो का चन्द्र २ मनोहर ३ बेफ़िक्र (निश्चिंत)।

चले बहोरि कौशिलाधामा ❋ करि प्रनाम विनयेउ श्रीरामा
मिथिला असुर बिघिन[1] नित करहीं ❋ नित तिन कोप विपुल मुनि मरहीं
रच्छहुँ याग असुर संहारी ❋ कौशिक चहत मोहिं महतारी
मंगल मन मुद आसिस-माई ❋ लहि प्रसाद लौटउँ जय पाई
अवसर प्रथम, समर सुभ मोरा ❋ उचित न सोच जननि मम ओरा
उपजी सुनत वेदना भारी ❋ भीजे वसन, झरत दृग वारी
भरि सुअंक, कर फेरति सीसा ❋ कातर हिय, बहु भाँति असीसा
मातहिं बहु प्रबोधि रघुबीरा ❋ ढरकत, रुकत न लोचन नीरा
चरन धूरि पुनि सीस सवाँरी ❋ किय सुभ गमन राम धनुधारी
राम-लखन गमने मुनि साथा ❋ दृग जल, धरनि गिरे नरनाथा
ओझल राम न, तौ लौं दरसन ❋ छिति पलोटि, नृप कातर क्रन्दन
समुझावत बहु सचिव सनेही ❋ भावी[2] अमिट, न संशय येही
निरखि राम मुनि मोद-उछाहू ❋ रचेउ दैव रघुनाथ-विवाहू
विधि-अनुगत[3] अश्विनीकुमारा ❋ तिमि दोउ, मुनि-पाछे पग धारा
विकल अवध-जन लौटलि गेहा ❋ उत बन विश्वामित्र स-नेहा
कुअँरन-बदन[4] मलिन रवितापा ❋ अवलोकत मुनि संसय व्यापा

गेलेन श्रीरामचन्द्र मायेर गोचरे ❋ प्रणाम करिया पदे वलेन मायेरे
आइलेन विश्वामित्र लइते आमारे ❋ मिथिलाय जाइ आमि यज्ञ राखिवारे
शुद्ध मने मोरे माता आशीर्व्वाद कर ❋ युद्धे जयी हइ येन प्रसादे तोमार
प्रथम युद्धेते यात्रा करितेछे आमि ❋ आमार लागिया शोक ना करह तुमि
कौशल्या शुनिया तबे करिछे रोदन ❋ भिजिल नयन नीरे नेतेर बसन
कातरा कौशल्या कोले करिया रामेरे ❋ आशीर्व्वाद करिलेन कर दिया शिरे
मायेरे कहेन राम प्रवोध वचन ❋ नेत्र नीर नेत्रेते हइल निवारण
मातृ पदधूलि राम वन्दिलेन माथे ❋ शुभ यात्रा करिलेन धनुर्व्वाण हाते
श्रीराम लक्ष्मणे निया विश्वामित्र यान ❋ महाराज नेत्रनीरे धरणी भासान
कत दूर गिया राम हन अदर्शन ❋ भूमिते पड़िया राजा करेन क्रन्दन
राजाके प्रबोध करे यत पात्रगण ❋ के करे अन्यथा याहा विधिर घटन
रामे देखि मुनिवर आनन्दित मन ❋ रामेर विवाह हवे दैवेर घटन
आगे मुनिवर यान पाछे दुइजन ❋ ब्रह्मार पश्चाते येन अश्विनीनन्दन
कान्दिते कान्दिते सर्वगेल निज वासे ❋ राम निया विश्वामित्र वनेते प्रवेशे
आगे मुनि यान पाछे श्रीराम लक्ष्मण ❋ आतपे हइल म्लान दोंहार वदन

---

१ विघ्न २ होनी ३ ब्रह्म के पीछे मानों अश्विनीकुमार चल रहे है ४ मुख ।

सो० रामहिं बन सों काम, वर्ष चतुर्दस व्यथा नित।
दुसह एक दिन घाम, अवधि[1] पूरि किमि काटिहैं ॥ १२२ ॥

सोइ विचारि मुनि मत थिर कीन्हा ❋ रामहिं मंत्र-दीक्षा दीन्हा
रघुकुल जे पूर्वज, रघुवीरा! ❋ तजे प्रान शुचि सरयू तीरा
तीरथ पुन्य सलिल सोइ पावन ❋ मार्जन[2] करि आवहु मनभावन
लेहु सुमंत्र दीक्षा आई ❋ सकल शोक-भय-हेतु नसाई
सहस वर्ष नहिं छुधा-पिपासा ❋ सुनि, नहाय, आये मुनि पासा
युगुल बंधु दिवि[3] मंत्र सिखावा ❋ सुरगन निरखि अतुल सुख पावा
सोइ बल अनाहार बनबासा ❋ विक्रम लखन इन्द्रजित[4] नासा
दिव्य-मंत्र-दीक्षित शिर नाई ❋ मुनि-अनुगमन कीन रघुराई

श्रीराम द्वारा ताड़का राक्षसी का वध और अहल्या-उद्धार

बन- ताड़का जबहिं नियरावा ❋ प्रथम प्रश्न मुनि पुनि दोहरावा
फूटत युगुल पंथ इत लखहू ❋ मन भावै सोइ मग अनुसरहू
एक सुगम दिन तीनि चलाई ❋ पहर तीनि, दुर्गम पथ पाई

ताहा देखि विश्वामित्र अन्तरे चिन्तित ❋ एक दिने श्रीरामेर दुःख उपस्थित
रविर तापेते यदि मुखे आसे घाम ❋ बहुकाल किमते भ्रमिबे वने राम
विश्वामित्र एइ मत भाविया अन्तरे ❋ कराइल मन्त्रदीक्षा श्रीरामचन्द्रेरे
विश्वामित्र बलेन शुनह रघुवीर ❋ स्नान करि एस गिया सरयू नदीर
यत राजा पूर्व्व सूर्य्यवंशे हये छिल ❋ एइ स्थाने प्राण छाड़ि स्वर्गधामे गेल
एइ पुण्यतीर्थे राम स्नान कर तुमि ❋ तोमारे सुमन्त्र दीक्षा कराइब आमि
शोक दुःख कखन ना पाइबे अन्तरे ❋ क्षुधा तृष्णा ना हइबे सहस्र वत्सरे
करिलेन रामचन्द्र से मन्त्र ग्रहण ❋ रामेरे कहिते ताहा शिखिल लक्ष्मण
दृढ़ करि शिखिलेन भाई दुइजन ❋ आनन्दित हइया देखिल देवगण
बहुकाल अनाहारे थाकिबे लक्ष्मण ❋ ताहाते हइबे इन्द्रजितेर मरण
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्वेर शिक्षा ❋ आदिकाण्डे गाइल रामेर मन्त्र दीक्षा

श्रीराम कर्त्तृक ताड़का राक्षसी-वध ओ अहल्या उद्धार

गुरुर चरणे राम करिलेन नति ❋ रामे लैया विश्वामित्र करिलेन गति
ताड़कार वने आसि कहे अभिमत ❋ रामे चाहि बलिलेन एइ दुटि पथ
एइ पथे जाइ घर तृतीय प्रहरे ❋ एइ पथे तिन दिने जाइ मम घरे

१ मियाद २ स्नान ३ दिव्य, अलौकिक ४ मेघनाद।

दुर्गम पथ ताड़का मुरारी ❋ लगत, खात, मुनिगन नित मारी
भयंकरी दानवि जित लागा ❋ सो पथ, सुत! न उचित अनुरागा!
मग विलंब, गुरु! मोहिं न भावा ❋ पहर तीनि द्रुत[1] पंथ सुहावा
जो निसिचरी करइ भटभेरा[2] ❋ तौ न तासु बध पातक हेरा
कुपथ बिसूरि उपज मुनि तापा ❋ किमि उछाह रामहिं अस व्यापा?

सो० भाजहु पग धरि सीस, भेंट ताड़का कतहुँ जो।
सुनत कथन, जगदीस, बिहँसि धीर बोलत बचन ॥ १२३ ॥

राम न नाम, विफल धनुबाना ❋ हनउँ एक सर राकसि-प्राना
सर द्वितीय लौं गुरू-दोहाई ❋ तीज गहे मम धर्म नसाई
करि प्रन अटल, चले मुनि साथा ❋ कानन अनुज सहित रघुनाथा
युगुल बंधु बिच, मुनि छबि पावा ❋ ठिठकि दूर, गृह-असुरि दिखावा
विक्रम बरनि, मनहुँ भय पाई× ❋ कुअँरन तजि, मुनि चले बराई
लखन जाहु सँग, गुरु भयभीता ❋ तजब अकेल न उचित प्रतीता
लछिमन कहत विनय कर जोरी ❋ अनुचर बिलग न प्रभु, मति मोरी
विक्रम विपुल विकट गति जाकी ❋ तासन उचित न रन एकाकी

तिन प्रहरेर पथे किन्तु भय करि ❋ ताड़का राक्षसी आछे महा भयकरी
ताड़िया धरिया खाय यत जीवगण ❋ कोन पथे जाइ बल श्रीराम लक्ष्मण
करिलेन राम गुरु-वाक्येर उत्तर ❋ तिन दिन फेरे केन जाब मुनिवर
यदि से राक्षसी पथे आइसे खाइते ❋ विचारे नाहिक दोष ताहारे मारिते
रामेरे कहेन विश्वामित्र मुनिवर ❋ ओ पथेर नामे मोर गाये आसे ज्वर
तोमार वासना आमि ना पारि बुझिते ❋ मोरे निया जाह बुझि राक्षसेरे दिते
यखन राक्षसी मोरे आसिबे ताड़िया ❋ आमारे एड़िया दोंहे जाबे पलाइया
गुरुर वचने हासिलेन प्रभु राम ❋ विफल धनुक धरि व्यर्थ राम नाम
एक बाण बिना कि द्वितीय बाण धरि ❋ तोमार दोंहाइ यदि तिन बाण मारि
एइमत रघुवीर प्रतिज्ञा करिते ❋ चलिलेन मुनि सेइ ताड़का देखाते
उभय भ्रातार मध्ये थाकि मुनिवर ❋ दूर हैते देखाइल ताड़कार घर
कर बाड़ाइया तार घर देखाइया ❋ अति त्रासे मुनिवर जान पलाइया
श्रीराम बलेन भाई मुनिर सहित ❋ शीघ्र जाह गुरु एका जान अनुचित
लक्ष्मण बलेन रामे जोड़ करि हात ❋ थाकुक सेवक सगे प्रभु रघुनाथ
शुनिला ताहार कथा बड़इ विषम ❋ एकला केमने राम करिबे विक्रम

---

१ जल्दी वाला २ झुरमुट, झमेला।

× मुनि ने किशोरों की परीक्षार्थ भय का रूप दिखाया है।

सुनहु लखन प्रिय! सन भय त्यागी ※ कस समर्थ निसचरि हतभागी
जो मिलि सकल जुरहिं रन अर्था ※ अँगुरि न मम, सठ लंघ समर्था
गुरु-अनुगमन लखन पुनि कीन्हा ※ असुर-अरण्य राम पग दीन्हा
धनुर्दण्ड बिच धरि कर बामा ※ तानि तन्तु[१] दक्षिण कर रामा
फेंट-वसन कसि, सारंग[२] हाथा ※ दूर्बादल श्यामल रघुनाथा
धनुटंकार प्रथम, जग हाला ※ स्वर्ग, मर्त्य, पुनि चकित पताला
सुबरन - खाट ताड़का सोई ※ सुनि टंकार नींद तिन खोई
नयन पसारि सुरारि[३] निहारी ※ हरित दूबदल सम छबि प्यारी

दो० आसन-हेत विरञ्चि दिय, कोमल मानव-चाम ।
अबहिं हरौं तव प्रान, कहि, उठि धाई जित राम ॥ १२४ ॥

विप्रचर्म-पट खल तन धरहीं ※ झूर[४], चलत सो चरमर करहीं
कानन कुण्डल मुनिन-कपाला ※ मनुज-भाल उर झूलत माला
रक्त-मांस, मुनि जरठ,[५] विहीना ※ अस्थि-चर्म तिनकर रसहीना
कोमल सुरुचि मांस विधि दीना ※ दनुजि कथन रघुवर सुनि लीना
विपुल लोम[६]-युत ताम्र सरीरा ※ विकट दन्त जिमि लौह जँजीरा

बलेन श्रीराम भाइ भय नाहि मने ※ कि करिते पारे भाइ राक्षसीर गणे
सकल राक्षसी यदि हय एक मिलि ※ लङ्घिते ना पारे मम कनिष्ठ अंगुलि
गेलेन मुनिर सङ्गे लक्ष्मण तखन ※ ताड़कार प्रति राम करेन गमन
वाम हस्त दिया राम धनु मध्यखाने ※ दक्षिण हस्तेते गुण दिलेन से स्थाने
आँटिया सुपीत वस्त्र वान्धिलेन राम ※ वाम हाते धनुर्व्वाण दूर्व्वादल श्याम
प्रथमे दिलेन राम धनुके टङ्कार ※ स्वर्ग मर्त्त पाताले लागिल चमत्कार
शुयेछिल राक्षसी से सुवर्णेर खाटे ※ धनुक टङ्कार शुनि चमकिया उठे
बसिया राक्षसी सेइ एक दृष्टे चाय ※ दूर्व्वादल श्याम रूप देखिल तथाय
उठिया चलिल सेइ राम विद्यमान ※ डाकिया वलिल आजि लव तोर प्राण
ब्राह्मणेर चर्म्म तार गायेर कापड़ ※ चलिते ताहार वस्त्र करे खड़मड़
ब्राह्मणेर मुण्ड तार कर्णेर कुण्डल ※ मनुष्येर मुण्डमाला गलार उपर
वसिते आसन नाइ भावे मने मन ※ इहार चर्म्मेत हबे वसिते आसन
रक्त मांस मुनिर शरीरे नाहि पाइ ※ अस्थि चर्म्म सार मात्र शुधु हाड़ खाई
अपूर्व्व इहार मांस दिलेन विधाता ※ कहिलेन राम शुनि ताड़कार कथा
ताम्रवर्ण देखि तोर गाये लोमावली ※ दन्त गोटा देखि येन लोहार शिकलि

१ प्रत्यञ्चा २ धनुष ३ राक्षसी ४ सूखे हुए ५ बूढ़े ६ रोम ।

भञ्छन हित, मुख चली पसारे ※ लखि निसिचरि प्रभु वचन उचारे
केतिक मुनि हनि देस उजारे ※ तजेउ पंथ तव-त्रास बिचारे
पठवउँ आजु तोहि यमलोका ※ कुपित निसिचरी प्रभुहिं विलोका
गर्जति निडर, विकट तन धारी ※ चली राम तन, शाल उपारी
बालक ! सम्हरु, करौं तव पाना ※ नभ रव घोर, शाल संधाना
निरखि, राम सर एक चलावा ※ खण्ड-खण्ड, छिति विटप गिरावा
आयुध[1] विफल, कोप अधिकाई ※ शिशुपाल-तरु[2] लै पुनि धाई
तौलति कर, तकि प्रभु, रव घोरा ※ हरि-सर चलेउ दनुजि मुख ओरा
तदपि ताड़का अति रन ठाना ※ उत प्रभु तजत बान पर बाना
पावस घन जिमि दामिनि नादा ※ गर्ज तर्ज सर समर विवादा
सुर-वानी सुनि परी अकासा ※ बिन सर बज्र न दनुजि-विनासा

दो० राम बज्रसर मारि हिय, राकसि कीन अचेत ।
योजन दूरि पचास लौं, गिरी जाय सो खेत ॥ १२५ ॥

आर्त्तनाद करि त्यागेसि प्राना ※ सुनत दूरि, कौशिक हतज्ञाना
राम, पठयि राछसि यमगेहा ※ बन्देउ चलि मुनि चरन स-नेहा

वदन व्यादान करि आइलि खाइते ※ पाठाइब तोरे आजि यमेर घरेते
खाइया मनुष्य चेंड़ी देश कैलि वन ※ तोर डरे पथे नाहि चले साधुजन
शुनिया रामेर वाक्य कुपिया अन्तरे ※ निकटे आसिया से विकट मूर्त्ति धरे
रामके खाइते जाय डरे नाहि पारे ※ शालगाछ उपाड़िल घोर हुहुङ्कारे
शालगाछ उपाड़िया घन दिल पाक ※ दूर-दूर करिया ताड़का दिल डाक
ताहा देखि रघुनाथ एड़िलेन बाण ※ बाणाघाते करिलेन गाछ खान-खान
गाछ काटा देखि काँपिया गेल मने ※ शिशपार गाछ देखि घन-घन टाने
शिशपार गाछ तोले रामे मारिवारे ※ तार मुख भेदिलेन राम एक शरे
तथापि ताड़िया जाय रामे गिलिबारे ※ महावीर भय तभू नाहि करे तारे
वाणेर उपरे वाण शब्द ठन्ठनि ※ वर्षाकाले विद्युतेर येन झनझनि
श्रीरामेरे डाकिया बलेन देवगण ※ बज्रबाणे ताड़कार बधह जीवन
वज्रवाण एड़े राम जुड़िया धनुके ※ निर्घात बाजिल वाण ताड़कार बुके
बुके बाण वाजिते हइल अचेतन ※ ताड़का पड़िल गिया पञ्चाश योजन
डाक विपरीत छाड़ि छाड़िलेक प्राण ※ शब्द शुनि विश्वामित्र हैल हतज्ञान
पाठाइया ताड़कारे यमेर सदन ※ मुनिर चरण राम करिल वन्दन

१ अस्त्र २ शीशम का वृक्ष ।

मुनि सचेत, रघुवर उर लाई ❋ दुर्जय दनुजि तात जय पाई
विनयेउ राम, कहा बल मोरा? ❋ बिन गुरु-कृपा न कारज घोरा
कौशल्या-सुत ! सुनहु अनूपा ❋ कस ताड़का? लखिय चलि रूपा
निसिचरि निकट चले धरि धीरा ❋ यदपि मृतक, मुनि कम्प शरीरा
मुनि-मन सोच ! भयावह रूपा ❋ लखेउ न विकट तासु अनुरूपा
हनि ताड़का, राम दृगकञ्जा ❋ चले भूमि जहँ जन्म-प्रभञ्जा[1]
उद्गम इत उनचास प्रभञ्जन[2] ❋ कुअँर लखहु! कह गाधियनन्दन
पवन-भूमि तजि, पुनि पग डारा ❋ गौतमतिय - उपवन विस्तारा
मुनि अदेस, सुनु राजिवलोचन! ❋ उपल[3] परसि पग करु अघमोचन[4]
परसन सिला कहहु कस कारन? ❋ कौतूहल गुरु करिय निवारन
कौशिक कही पुरातन बाता ❋ सिर्जि सहस रूपसी विधाता
तिन छबि एक सवाँरि अहिल्या ❋ अतुल रूप जग तासु न तुल्या
रूपरासि सो गौतम-नारी ! ❋ दिवस एक, मुनि तप पग धारी
मुनि-प्रिय-शिष्य—इन्द्र, मुनिवेसा ❋ मुनि सूने, किय कुटी प्रवेसा

दो० कस अकाल प्रभु आगमन ? प्रश्न अहिल्या कीन ।
छम्मवेस सुरपति उतर, गौतम-तिय सों दीन ॥ १२६ ॥

चेतन पाइया वले गाधिर नन्दन ❋ ताड़का मारिला बाछा कौशल्या जीवन
श्रीराम बलेन गुरु कि शक्ति आमार ❋ ताड़कारे वधिलाम प्रसादे तोमार
मुनि वलिलेन शुन कौशल्यानन्दन ❋ ताड़कारे देखि गिया ताड़का केमन
ताड़कारे देखि मुनि करेन प्रस्थान ❋ मरेछे ताड़का तवू मुनि कम्पमान
ताड़कारे देखिया भावेन मुनि मने ❋ एमन विकट मूर्ति ना देखि नयने
ताड़कारे मारिया राम राजीवलोचन ❋ पवनेर जन्मभूमि करेन गमन
विश्वामित्र कहे देख श्रीरामलक्ष्मण ❋ एइ खाने हैल ऊनपञ्चाश पवन
पवनेर जन्मभूमि पश्चात् करिया ❋ अहल्यार तपोवने गेलेन चलिया
मुनि वलिलेन राम कमललोचन ❋ पाषाण उपरे पद करह अर्पण
शुनिया वलेन राम मुनिर वचन ❋ पाषाणेते दिब पद किसेर कारण
मुनि वलिलेन शुन पुरातन कथा ❋ सहस्र सुन्दरी सृष्टि करिलेन धाता
सृजिलेन ता सवार रूपेते अहल्या ❋ त्रिभुवने छिल ना सौन्दर्य्ये तार तुल्या
करिलेन अहल्याके विवाह गौतम ❋ शिष्य गौतमेर इन्द्र अति प्रियतम
एक दिन गौतम गेलेन तपस्याय ❋ गौतमेर वेशे इन्द्र प्रवेशे तथाय
अहल्या गौतम ज्ञाने करे सम्भाषण ❋ आजके सकाले केन घरे आगमन

---

१ पवन की जन्मभूमि २ उनचास वायु का उत्पत्ति-स्थान ३ पत्थर ४ पापमुक्त।

हिय, तव रूप प्रिये ! अस्मरना[1] ※ मदन-दग्ध! किमि तप-आचरना
गुरु-तिय-रति सुरपति मन डारा ※ सतवन्ती पति-आयसु धारा
छम्म वेस पति—शचिपति संगा ※ विवस अहिल्या-ब्रत इमि भंगा
तप-निवृत्त गौतम गृह आये ※ आसन-मान नारि सों पाये
अवसर बिन, शृंगार-प्रसंगा ※ प्रिय कस लखत चिह्न तव अंगा?
सुनि ससंक, विनयेउ मुनिनारी ※ स्वयं नाथ करनी-अधिकारी
गिरेउ टूटि नभ गौतम-सीसा ※ सकल कथा सुनि विकल मुनीसा
धरत ध्यान, कौतुक सब जाना ※ पापहेतु - सुरपति, पहिचाना
इन्द्र ! इन्द्र ! मुनि गर्जि पुकारा ※ दबकति[2] पाँव पुरन्दर डारा
अनाहार, धधकत हिय आगी ※ बोलत दुगुन कोप मुनि पागी
नाना शास्त्र ज्ञान तैं लीन्हा ※ गुरु-दक्षिणा तासु भल दीन्हा
गुरु-तिय-धर्म, नीच ! तैं भंगा ※ सठ ! तव होय योनिमय अंगा
पुनि, दिय शाप सुतिय अतिरूपा ※ बसइ तपोबन शिला-सरूपा
विकल चरन धरि रुदन अपारा ※ केहि विधि,नाथ! शाप-निस्तारा?
कातर तिय प्रबोधि अनुरागी ※ अमिट शाप मम सुनु हतभागी

इन्द्र बले तव रूप हइल स्मरण ※ केमने करिब प्रिये तपस्याचरण
मदन दहने दग्ध हय मम हिया ※ निर्व्वाण करह प्रिये आलिङ्गन दिया
पतिब्रता नाहि लङ्घे पतिर वचन ※ तखनि शयनगृहे करिल गमन
गुरुपत्नी बलिया ना करिल विचार ※ धर्म्मलोप करिल वासव अहल्यार
तपस्या करिया मुनि आइलेन घरे ※ अहल्या आसन दिल अति समादरे
गौतम बलेन प्रिये जिज्ञासि तोमारे ※ शृङ्गार लक्षण केन तोमार शरीरे
अहल्या बलेन प्रभु निवेदि तोमारे ※ आपनि करिया कर्म्म दोषह आमारे
ए कथा शुनिया मुनि हेंट कैल तुण्डे ※ आकाश भाङ्गिया पड़े गौतमेर मुण्डे
जानिलेन ध्यानेते गौतम मुनिवर ※ जाति नाश करिल आसिया पुरन्दर
इन्द्र इन्द्र बलिया डाकेन मुनिवर ※ पुँथि काँखे करिया आइल पुरन्दर
दिनान्ते अभुक्त मुनि कुपित अन्तरे ※ द्विगुण ज्वलिया कहिलेन पुरन्दरे
तोके पड़ाइलाम ये आमि शास्त्र नाना ※ एतदिने भाल दिलि गुरुर दक्षिणा
जाति नष्ट कैलि तुइ ओरे पुरन्दर ※ योनिमय होक तोर सर्व्व कलेवर
अहल्या के शापिलेन क्रोधे मुनिवर ※ कानेनेत तोर तनु हउक प्रस्तर
अहल्या चरणे धरि कहिल तखन ※ कत काले हवे मोर शाप विमोचन
अहल्यारे कातरा देखिया तपोधन ※ कहिलेन मम शाप ना हय खण्डन

---

१ याद आ रहा है २ भय से पैर दबाते हुए ।

दसरथ-गेह जनमि रघुनाथा ❋ याग-क्षेम हित, कौशिक साथा
दो० गमनकाल, मग, चरन-रज, तिन परसत तव सीस ।
लहै मनुज-तन, रुदन तजु, सुमिरु कृपा जगदीस ।। १२७ ।।
लक्ष्मण कहत विनय सुनि लीजै ❋ ब्राह्मणि-सीस, चरन किमि दीजै
कतहुँ न द्विज, प्रस्तर यहि काला ❋ सुनत पदुमदृग राम कृपाला
परसेउ चरन, सिला तजि रूपा ❋ शापमुक्त तिय भई अनूपा
अमित मोद, गौतम तहँ आये ❋ निरखि अहिल्यहिं सुख अति पाये
बिगत अतीत, मिली पुनि जोरी ❋ प्रभु-अस्तुती करैं कर जोरी
भक्तन हित तरुकल्प अनूपा ! ❋ दयासिन्धु! अगतिन-गति रूपा!
किय निस्तार, युगुल प्रभु-सरना ❋ नमन राम जय रघुपति-चरना
एक भाव मन प्रभु तल्लीना ❋ रचेउ चरित कृतिवास प्रवीना

श्रीरामचन्द्र द्वारा तीन कोटि राक्षसों का संहार एवं मिथिलागमन

मुनिहिं कहेउ पुनि राजिवलोचन ❋ भयेउ इन्द्र किमि शाप-विमोचन
विश्वामित्र कथा इमि बरनी ❋ सहसयोनि-युत वासव[1] करनी
सोचत सुरगन, सुरपति लाजा ❋ किमि निवरै[2] उपहास-समाजा

जन्मिवेन जवे राम दशरथ घरे ❋ विश्वामित्र लये जावे यज्ञ राखिवारे
तोमार माथाय पद दिवेन यखन ❋ तखनि हइवे मुक्त ना कर क्रन्दन
इहा शुनि लक्ष्मण वलेन शुन मुनि ❋ केमने दिवेन पद उनि ये ब्राह्मणी
विश्वामित्र कहिलेन शुन रघुवर ❋ ब्राह्मणी नहेन उनि एखन प्रस्तर
ए कथा शुनिया राम कमललोचन ❋ तदुपरे करिलेन चरण अर्पण
ताहाते हइल ताँर शाप विमोचन ❋ आह्लादित शुनिया गौतम तपोधन
अहल्याके देखिया सानन्द महामुनि ❋ पुनर्व्वार करिलेन पुष्पेर छाउनि
दोहे मिलि स्तव करे जुड़ि दुइ कर ❋ भक्तवाञ्छा कल्पतरु दयार सागर
जय-जय रामचन्द्र अगतिर गति ❋ निस्तार दुयेरे प्रभु पदे करि नति
शुन सबे परे भाइ हैया एकमन ❋ आदिकाण्ड गाइल अहल्या - विव्रण

श्रीरामचन्द्र कर्त्तृक तिनकोटि राक्षस-वध ओ मिथिलाय गमन

श्रीराम वलेन प्रभु करि निवेदन ❋ केमने हइल मुक्त सहस्रलोचन
मुनि वलिलेन शुन दशरथ सुत ❋ हइलेन वासव सहस्र योनियुत
लज्जायुक्त हइलेन देव पुरन्दर ❋ कि हवे उपाय सव भावेन अमर

१ इन्द्र २ निवारण हो ।

अश्वमेध करि पावन यागा * अमित नेम-जप-तप अनुरागा
कायाकल्प, चिह्न जे अंगा * लोचन सहस भये अंकसंगा
टोली[1] रत इमि कथा-प्रसंगा * पहुँची कछुक काल तट-गंगा
पाहन[2] पलटि भई मुनिगृहिनी * केवट सुनत लुकायेसि तरनी[3]
कौशिक डपटि लहेउ, कैवर्त्त[4]! * आयसु-लंघ, मिलावहुँ गर्त्त[5]

दो० उड़े प्रान, आयेउ निकट, कहेउ कोपि मुनिनाथ ।
सुरसरि पार उतारु मोंहि, युगुल किशोरन साथ ॥ १२८ ॥

केवट करुन कथा निज बरनी * छिद्र अनेक, जीर्न मम तरनी
उजुर न मुनि आयसु सिर धारौं * सबन कंध लै पार उतारौं
कित आनेउ छबि अतुल कुमारा * जिन पग छुअत शिला निस्तारा
सुनी कथा सोइ भय-उपजावन * इन रज-चरन तरत छुइ पाहन
पद-रज परसि तरुनि[6] भइ तरनी[7] * कित निवास ? गृह झुरमुट घरनी[8]
नौका-हरन, हरन सब काहू * मुनि कित मम परिवार निबाहू?
जो प्रभु, चरन-धूरि पखराई * तौ तरि[9]-परस[10] न भय अधिकाई
केवट-युक्ति विनय-रस पागी * अनुमति दीन राम अनुरागी

अश्वमेध करिलेन तखन वासव * योनि छिल घुचिया हइल नेत्र सब
एइ रूपे कथा वार्ता कहिते-कहिते * तिन जने चलिलेन गङ्गार कूलेते
पाषाण हइल मुक्त कैवर्त्त ता शुने * नौकाखानि लइया से पलाइल वने
कैवर्त्तके डाकिया कहेन तपोधन * ना आइले भस्म आमि करिब एखन
एत शुनि कैवर्त्तेर उड़िल जीवन * आसिया मुनिर काछे दिल दरशन
मुनि बलिलेन वलि कैवर्त्त तोमारे * गङ्गाय करह पार ए तिन जनारे
कातर कैवर्त्त कहे करिया विनय * नौकाखानि जीर्ण मम शतछिद्रमय
तवे यदि आज्ञा कर मोरे तपोधन * स्कन्धे करि करि पार जाह तिनजन
कोथा हैते आनिल ए पुरुष सुन्दर * पायेर परशे मुक्त करिल प्रस्तर
ए कथा शुनिया आमि सभय अन्तर * चरण धूलिते मुक्त हइल पाथर
नौका मुक्त हय यदि लागि पदधूलि * कि दिया पूषिव आमि मम पोष्यगुलि
करिवेक गृहिणी आमाके गालागालि * वलिवे मुनिर वोले नौका हाराइलि
यदि वल श्रीरामेर चरण धोयाइ * नतुवा लागिले धूला तरणी हाराइ
तरणीते त्वराय करिते आरोहण * धोयाइल कैवर्त्त श्रीरामेर चरण

१ मण्डली २ पत्थर ३ नाव ४ केवट ५ धूल में ६ तरुण स्त्री ७ नाव
८ गृहिणी (पत्नी) ९ नाव १० स्पर्श ।

पग पखारि कुअँरन मुनि संगा * तरनि चढ़ाय पार किय गंगा
कहेउ राम यहि सम जग माहीं * हे प्रिय लखन! अकिञ्चन नाहीं
परत दीठि शुभ राम कृपाला * तरनी कनकमयी तत्काला
सरिता उतरि लखन-श्रीरामा * पूछत कत, मुनि! मिथिलाधामा?
चलिय बेगि, मुनि कहत स-नेहा[१] * तीन कोस, सुत! अबहिं विदेहा
राम-लखन आगम तप-कानन * मुनि-तिय चकित चितैं मनभावन
द्वादस वयस पञ्च सिर चोटी * कौतुक! हनहिं दनुज त्रयकोटी!
शत-शत पुन्य-पूर्व केहि जागी ? * जन्मेसि जननि कवन बड़भागी ?

दो० नारी, अच्छत-दूब लै, पुनि-पुनि देयँ असीस।
अमुर-निकन्दन राम लखि, प्रमुदित सकल मुनीस ॥ १२६ ॥

प्रथम दिवस तपवन विश्रामा * भोर निवेदन किय श्रीरामा
युगुल बन्धु आये जेहि काजा * अनुमति सोइ दीजिय मुनिराजा
सुनहु तात हे रघुकुल-चन्दा * रचहिं याग अब द्विज-मुनि-वृन्दा
अब लौं जब-जब याग रचावा * ताड़क-सुत शोनित[२] बरसावा
विप्र-स्वभाव न समुचित क्रोधा * किये कोप, जप-तप अवरोधा[३]

श्रीराम लक्ष्मण विश्वामित्र एइ तिने * पाटनी करिया पार गेल भव जिने
श्रीराम वलेन शुन प्राणेर लक्ष्मण * इहार समान नाहि देखि अकिञ्चन
शुभदृष्टे श्रीराम चाहेन तार पाने * हइल सुवर्णमयी तरणी तत्क्षणे
हइलेन गङ्गापार श्रीराम लक्ष्मण * जिज्ञासेन कत दूरे मिथिला भुवन
मुनि वलिलेन राम चलह सत्वर * एखनो मिथिला आछे तिन क्रोशान्तर
पार ह'ये जान राम सहित लक्ष्मण * कहित लागिल देखि मुनिपत्नीगण
द्वादश वर्षेर राम शिरे पञ्चझुंटि * मारिवेन राक्षस केमने तिन कोटि
कोन भाग्यवती पुत्र धरियाछे गर्भे * कत शत पुण्य से ये करियाछे पूर्व्वे
आशीष करेन सवे हाते दूर्व्वाधान * मुनिगण आइलेन करिते कल्याण
श्रीरामेरे निरखिया यत मुनिगण * आनन्दसागरे मग्न सह तपोधन
से दिन वञ्चिया सुखे श्रीरामलक्ष्मण * प्रातःकाले मुनिरे करेन निवेदन
ये कार्य्य करिते आइलाम दुइ भाइ * सेइ कार्य्ये अनुमति करह गोसाँइ
मुनिरा वलेन शुन श्रीराम लक्ष्मण * एखनि करिव यज्ञ सकल ब्राह्मण
आमरा सकले करि यज्ञ आरम्भन * रक्तवृष्टि करे दुष्ट ताड़कानन्दन
ना पारि करिते क्रोध आमरा ब्राह्मण * यदि क्रोध करि हय धर्म्म उल्लङ्घन

१ नेह-सहित २ रक्त, खून ३ रुकावट।

यज्ञ-काज अविलंब अरम्भा ※ मुनि-प्रसाद मेटहुँ खल-दम्भा
राम-घोष, तपसी तत्काला ※ लै कुश चले यज्ञ शुचि शाला
कुश-आसन कोउ-कोउ मृगचर्मा ※ पूरुब मुख असीन तपकर्मा
करहिं वेदध्वनि बटु अनुरागी ※ स्वतः मंत्र-बल प्रगटति आगी
गगन धूम्र साकल्य[1] सुवासा ※ निरखि असुरगन किय उपहासा
निसिचर-रहत, न यज्ञ-अचारा ※ तीनि कोटि दल सजि हुंकारा
विपुल सैन मारीच सजावा ※ यज्ञस्थल समीप चढ़ि धावा
सैनन[2] मुनिगन राम चेतावा ※ होहु सचेत, दनुजदल आवा
रघुवर-दीठि जहाँ लौं जाई ※ अगनित असुर अनी छिति छाई
तत्पर लखन-राम धनुबाना ※ खैंचि श्रवन लौं सर संधाना
लिये विटप-पाषान विशाला ※ दानव समर, बदन विकराला

दो० निमिष माहिं रघुबर हने, तीखे बिशिख कराल ।
कोटि असुर आहत किये, धनि-धनि दसरथलाल ।। १३० ।।

जूझे कोटि दनुज रन हेता ※ जुरे कोटि धनुधर पुनि खेता
अति सुतीक्ष्ण सर हीरा-जीरा ※ इन्द्रबान छोड़ति रघुवीरा
पशुपति बान, क्षुरूप-सुरूपा ※ दलति असुर, ध्वनि मारु अनूपा

श्रीराम बलेन प्रभु करि निवेदन ※ अविलम्बे कर यज्ञक्रिया आरम्भन
शुनिया रामेर कथा तपस्वी सकले ※ खोला कुश लइया गेलेन यज्ञस्थले
केह व्याघ्रचर्म्म वैसे केह कुशासने ※ बसिलेन पूर्व्वमुख हइया आसने
लागिलेन वेदपाठ करिते सकले ※ मन्त्रेर प्रभावे अग्नि आपनि से ज्वले
यज्ञेर यतेक धूम उड़ये आकाशे ※ देखिया राक्षसगण मने-मने हासे
जीयन्ते थाकिते मोरा मुनि यज्ञ करे ※ तिन कोटि निशाचर साजिया चल रे
तिन कोटि लइया मारीच निशाचर ※ साजिया आइल तारा यज्ञेर भितर
सङ्केते श्रीरामेरे जानान मुनिगण ※ आसियाछे राक्षसगण कर निरीक्षण
देखिलेन रघुवीर निशाचर गण ※ व्यापियाछे वसुमति ना जाय गणन
श्रीराम लक्ष्मण करे धरि धनुर्व्वाण ※ आकर्ण पूरिया वाण करेन सन्धान
पादप पाथर लये आइल विस्तर ※ भयङ्कर कलेवर यत निशाचर
कटाक्षेते निक्षेप करेन राम शर ※ ताहात पड़िल एक कोटि निशाचर
एक कोटि पड़े यदि रणेर भितर ※ अन्य कोटि लइया आइल धनुःशर
हीरा वाण जीरा वाण अति खर धार ※ मारये इन्द्रेर वाण कौशल्या-कुमार
क्षुरूपा सुरूपा वाण पशुपत आर ※ राक्षस उपरे पड़े वलि मार-मार

---

१ हवनहेतु सामग्री २ इशारे से

गर झलमल मणि-माणिक-माला ❋ हनेउ असुर दुइ कोटि कृपाला
देयँ असीस, मुदित मुनिराई ❋ जीतइँ समर राम दोउ भाई
विप्र-बचन सत, कतहुँ न भंगा ❋ युगुल बन्धु खेलत रणरंगा
वरुण, पवन, कालानल पासा ❋ अटल राम सर विविध प्रकासा
मायासर गंधर्व विशेखा ❋ निज दल रिपुन राममय देखा
करहिं परस्पर मारामारी ❋ सुरगन निरखि मोद मन भारी
डोलत धरा राम सर-घाता ❋ तीन कोटि निसिचरन निपाता
सर तीखे तकि राम-सरीरा ❋ मारहिं यातुधान[1] बलबीरा
बरसत सतत[2] दानवी सायक ❋ अनुज सहित विचलित रघुनायक
जर्जर भयेउ गात-रघुबीरा ❋ रुधिर-लालरी श्याम शरीरा
'दनुज-पराभव' 'जय रघुनन्दन'[3] ❋ भाषत सुर-भूसुर जगबन्दन
स्वस्तिबचन-द्विज, बल अति प्रेरा ❋ भिरे कुअँर रन जूझ घनेरा
खचित कान प्रभु बान चलावा ❋ पावस घन जिमि झरी लगावा

दो० अर्द्धचन्द्र सायक कठिन, कौतुक बरनि न जाय ।
हनेउ प्रमुख दुइ सुभट रन, सोइ सर राम चलाय ॥ १३१ ॥

दोउ भट प्रमुख निरखि रनपाता ❋ कुपित मरीच ताड़ुका-ताता

गलाते लम्बित मणिमाणिक्येर काठि ❋ रामवाणे पड़िल राक्षस दुइ कोटि
श्रीरामेरे आशीर्वाद करे मुनिगण ❋ सबे बले जयी होक् श्रीराम लक्ष्मण
ब्राह्मणेर आशीषे ना हय हेन नाइ ❋ मार-मार करिया जुझेन दुइ भाइ
वरुणास्त्र पाश वायुबाण कालानल ❋ एड़िलेन बहु राम समरे अटल
मारिलेन श्रीराम गन्धर्व नामे शर ❋ राममय देखिल सकल निशाचर
आपना आपनि सब काटाकाटि करे ❋ सकल देवता देखि हासये अन्तरे
श्रीराम करेन युद्ध काँपाइया माटि ❋ राम वाणे पड़िल राक्षस तिन कोटि
तिन कोटि पड़े यदि रणेर भितर ❋ रामेन उपरे मारे चोख-चोख शर
निरन्तर बाण मारे निशाचर गण ❋ धरिवेन सहिष्णुता कत दुइ जन
हइलेन जर्ज्जर बाणेते रघुवीर ❋ शोणिते भासिया गेल श्यामल शरीर
आशीर्व्वाद करेन अमर द्विजचय ❋ हउक रामेर जय, राक्षसेर क्षय
ब्राह्मणेर आशीर्व्वादे बाड़िल ये बल ❋ मार-मार करिया गेलेन रणस्थल
आकर्ण पूरिया बाण मारेन राघव ❋ वरिषये वर्षार येमन मेघ सब
अर्द्धचन्द्र विशिखेर कि कहिव कथा ❋ ताहाते काटेन राम दुइ पात्र माथा
दुइ पात्र पड़े यदि रणेर भितर ❋ मारीच रुषिल तबे ताड़का कोङर

१ राक्षस २ लगातार ३ दानवों का नाश हो, राम की जय हो—नारा ।

अलख[1] राम कित? कहँ लघु भ्राता ※ तीन कोटि किन असुर निपाता?
मम सर प्रान ताड़का त्यागे ※ मम कर निधन[2] असुर हतभागे
सुनि हरि-बैन मरीच रिसाना ※ रामहिं सर पर सर संधाना
जिमि बैसाख धूसरित धूरी ※ राम देहँ सठ बानन पूरी
राम न कातर, वीर अपारा ※ बरसहिं सर जिमि जलधर धारा
मायामृग सिय हरन विचारी ※ देवन मीच-मरीच[3] निवारी[4]
बिशिष बज्र मन सुमिर कृपाला ※ प्रस्तुत प्रगटि भयेउ तत्काला
प्रभु सोइ कुलिश-बान संधाना ※ हिय-मरीच तकि हनेउ निसाना
घायल चपकि बज्रसर संगा ※ उड़त यथा परहीन बिहंगा
भरमत दिवस सात अति कातर ※ धरनि लाग जहँ लंक, निसाचर
लंकबास—बहु हिंसाचारा ※ तजेसि अन्त लखि जगत असारा
बालक-रन मम होत निपाता ※ कुधन कुवृत्ति फसत किमि गाता
जटा शीश बल्कल परिधाना[5] ※ सयन-स्वपन रत रघुपति-ध्याना
बटतर[6] तप मरीच मन लावा ※ इतर राम-रट आन न भावा
मिटे बिघिन, किय याग मुनीसा ※ अछत-दूब लै हरिहिं असीसा

राम कोथा गेल कोथा गेल वा लक्ष्मण ※ तिन कोटि राक्षस मारिल कोन जन
श्रीराम बलेन ताड़कार हन्ता जेइ ※ तिन कोटि राक्षस मारिल रणे सेइ
मारीच शुनिया ताहा कुपिल अन्तरे ※ घन-घन बाण मारे रामेर उपरे
रामेर उपरे बाण पड़ितेछे नाना ※ वैशाख मासेते येन पड़ये झञ्झना ?
महाबीर रामचन्द्र ना हय कातर ※ शरवृष्टि करेन येमन जलधर
मारीचेरे रक्षा करे भावि देवगण ※ मारीच मरिले नहे सीतार हरण
बज्रबाण वलि राम करिल स्मरण ※ आसिया से बज्रवाण दिल दरशन
श्रीरामेर बज्रबाण बज्रेर हुड़के ※ निर्घात पड़िल गिया मारीचेर बुके
बुके बाण बाजिया नाटाई येन घुरे ※ डाना-भाङ्गा पाखी येन उड़े जाय धीरे
भ्रमिते-भ्रमिते जाय मारीच कातर ※ सात दिने उत्तरिल लङ्कार भितर
वहु जीव खाइया मारीच लंकावासी ※ विवेक संसार त्यजि हइल संन्यासी
कहे यदि मरिताम बालकेर रणे ※ के करित दस्युवृत्ति कि करित धने?
शिरे जटा परिया वाकल परिधान ※ शयने स्वपने करे राममय ध्यान
वटवृक्ष तले तप कैल आरम्भन ※ राम विना मारीचेर अन्य नाहि मन
हेथा यज्ञ मुनिर करिल समाधान ※ आशीष करेन रामे दियां दुर्व्वाधान

१ छिपे हुए २ नाश ! ३ मारीच की मृत्यु ४ बचा ली ५ वस्त्र
६ बरगद के तले ।

दो० यज्ञ-शेष फल-मूल जे, सबन दीन रघुनाथ।
लखन सहित, निसि तपोवन, सोये करुनानाथ ॥ १३२ ॥

जुरी सभा ऋषिगनन प्रभाता ❊ चर्चहिं सकल राम कै बाता
सहज न मनुज, राम अवतारा ❊ दसरथ-पुन्य प्रगट तनु धारा
स्वतः यज्ञ-प्रभु[1] याग सम्हारी ❊ अब न हेतु भय असुर-सुरारी
हरि जन्मे दानव-बध अर्था ❊ सोइ प्रन-जनक निबाह समर्था
रामहिं कौशिक कहेउ सप्रीता ❊ वत्स ! विदेह स्वयंवर-सीता
सिय-पितु प्रन! शिवधनु जे भंगा ❊ सुता समर्पित सोइ भट संगा
अगनित भूप निरंतर आई ❊ सभय चाप लखि, गये बराई[2]
रघुवर तव बल विपुल प्रतापू ❊ मन प्रतीत[3] टूटइ शिवचापू
मुनि-आयसु-उलंघ अपकर्मा ? ❊ को समर्थ ? पालन मम धर्मा
सुधा-सने सुनि वचन विनीता ❊ चले विप्र, लै राम सप्रीता
धनुधर राम-लखन, चहुँ घेरी ❊ टोली चली सन्त-मुनि केरी
अनुमति-राम गाधिसुत पाई ❊ खबरि प्रथम चलि जनक जनाई
जनक, सभा मुनि-आगम देखी ❊ दिय आसन सन्मानि विसेखी

यज्ञ अवशेषे येइ फलमूल छिल ❊ खाइते से सब फल श्रीरामेरे दिल
से रात्रि वञ्चेन राम मुनिर आश्रमे ❊ प्रभाते एकत्र हन मुनिगण क्रमे
सभाते बसिया युक्ति करे सर्व्वजन ❊ सामान्य मनुष्य नहे राम नारायण
यिनि यज्ञेश्वर यज्ञ राखिलेन तिनि ❊ दशरथ पुन्यफले अवतीर्ण इनि
राक्षसेर भय कर कि कारण आर ❊ राक्षस बधार्थे हरि स्वयं अवतार
करिलेन येइ पण जनक भूपति ❊ राम बिना ताहाते ना हबे अन्ये कृति
विश्वामित्र वलेन शुनह रघुवर ❊ मिथिलाते हइबेक सीता-स्वयम्बर
करेछे प्रतिज्ञा एइ जानकीर पिता ❊ हरधनु भाङ्गिबे ये तारे दिबे सीता
कत शत भूपति आइसे आर जाय ❊ देखिया हरेर धनु सभये पलाय
देखिलाम ये तोमारे वीर बलवान ❊ मने बुझि धनुक करिबा दुइखान
श्रीराम बलेन आज्ञा कर ये एखन ❊ ताहा करि तव आज्ञा लङ्घे कोन्जन
ए कथा कहेन यदि कौशल्या-नन्दन ❊ रामेरे लइया यान सकल ब्राह्मण
हाते धनु करि यान श्रीराम लक्ष्मण ❊ आगे पाछे चलिलेन सकल ब्राह्मण
विश्वामित्र बलिलेन शुन रघुवर ❊ अग्रेते गमन करि जनकेर घर
ए कथा शुनिया राम बलेन ताँहारे ❊ आगे गिया वार्ता देह जनक राजारे
विश्वामित्र देखिया उठिल सर्व्वजन ❊ आइस बलिया दिल बसिते आसन

---

१ यज्ञ के स्वामी २ बचकर निकल गये ३ विश्वास।

कौशिक कहेउ, जनक तव-धामा ※ आये लखन सहित श्रीरामा
दुर्जय दनुजि ताड़ुका मारी ※ जिन गौतम-तिय शाप निवारी
जासु दरस सद्गति गुह पावा ※ जिन सर असुर त्रिकोटि नसावा

सो० द्वादस वर्ष ललाम, अनुज लखन, अनुपम युगुल ।
तव पाहुन[1] सोइ राम, अतुल वीर विक्रम प्रबल ।। १३३ ।।

राज समाज कथन-मुनि भावा ※ वर सिय जोग विरंचि पठावा
पुरजन सकल दरस हित धाये ※ धरि कर बन्धु[2] अन्ध लौं आये
राम-लखन-दरसन अति नेहा ※ उमड़ेउ नगर, काज तजि गेहा
सीस पञ्चलट केस सँवारे ※ मणि-माणिक-माला उर धारे
राम सहित मुनि जहँ नरनाहू ※ उर विदेहपति अमित उछाहू
सोचत मनहिं, सबन सन्मानी ※ सियवर विधि पठयेउ अब जानी
मुनि-आदेस, लखन-रघुराई ※ रहे जनक ढिग सीस नवाई
तिन मृदुबैन मोद अधिकाई ※ पुलकि भूप दोउ उर लपिटाई
योगी जनक ! ध्यान सब भासा ※ मिथिला जगपति स्वयं प्रकासा
दुर्जय शिवधनु जित आसीना ※ गमन स्वयंवर-थल नृप कीना
घोष कुतूहल प्रन दोहराई ※ सभा-सदस्य ! सुनहु मन लाई

मुनि बलिलेन शुन जनक राजन ※ तव घरे आइलेन श्रीराम-लक्ष्मण
ताड़कारे मारिलेन हेलाय ये जन ※ अहल्यार करिलेन शाप विमोचन
कैवर्त्तकें तारिलेन सुकृपा दर्शने ※ तिन कोटि राक्षस मरिल यॉर बाणे
सेइ राम द्वादश वत्सर वयःक्रम ※ लक्ष्मण ताँहार भाइ दुइ अनुपम
ए कथा शुनिया सबे राज सभाजन ※ कहिल सीतार वर आइल एखन
आइल समस्त लोक करिते दर्शन ※ बन्धु कर धरिया आइल अन्धजन
सबे वले देखिब लक्ष्मण आर राम ※ मिथिलार सब लोक छाणे गृहकाम
उभ करि बान्धियाछे शिरे पञ्चझुंटि ※ गलाते निर्म्मित मणि माणिक्येर काँठि
विश्वामित्र लइया यान जनकेर घरे ※ अनुब्रजि रामेरे लइल समादरे
उल्लासित कहेन जनक नृपवर ※ आइल सीतार वर एत दिन पर
कौशिक वलेन शुन श्रीराम-लक्ष्मण ※ जनकेर प्रणाम करह दुइजन
गुरुवाक्य अनुसारे श्रीराम-लक्ष्मण ※ करिलेन राजा के उभये सम्भाषण
आलिङ्गन दिलेन जनक दोंहाकारे ※ भासिलेन तखन आनन्द पारावारे
महायोगी जनक जानेन अभिप्राय ※ गोलोक छाड़िया हरि देखि मिथिलाय
धूर्ज्जटि दुर्ज्जय धनु आछे येइ खाने ※ सभा सह गेल सेइ स्वयम्वर स्थाने
हेनकाले जनक वलेन कुतूहले ※ सभाय वसिया कथा शुनेन सकले

१ अतिथि २ साथी का सहारा लेकर ।

जो समर्थ शंकरधनु भंगा ※ सिया समर्पन सोइ भट संगा
कमलनयन, सुनि बचन-महीपा ※ गवने प्रभु शिव-चाप समीपा
सखिन सहित सिय चढ़ी अटारी ※ पूछत सोइ छन, कहु अँखियारी[1]!
लखन,सजनि को? कहँ सखि रामा? ※ सियहिं सँकेत[2] बतावइँ भामा
श्याम दूबदल छबि रघुनाथा ※ निरखि, सुरन सिय नावइ माथा

सो० नलिनिविलोचन राम, पुरबइँ वाञ्छित देवगन ।
कतहुँ विरञ्चि न बाम, पुनि-पुनि सुमिरत जानकी ॥ १३४ ॥

देवताओं के निकट श्रीसीतादेवी की वर-याचना

छ० कर जोरि युग, मन विकल आतुर, सुरन ध्यावति जानकी ।
करि दासि, पुरवइँ आस, गुणनिधि राम रूपनिधान की ॥
वरुन, सुरपति, काल, सब दिक्पाल, गणपति, अग्नि जे ।
ते भूतनाथ सनाथ करि वर देंहि भगवति गौरिजे ॥
धरन-पालन, करनि-मंगल, जननि-जग माता, शिवा ।
बध-चण्ड-मुण्ड विलोकि निर्भय भजत सुरगन निशि-दिवा ॥

ये जन शिवेर धनु भाङ्गिवारे पारे ※ सीता नामे कन्या आमि समर्पिब ताँरे
ए कथा शुनिया राम कमल-लोचन ※ धनुकेर निकटेते करेन गमन
हेनकाले सीतादेवी सह सखीगण ※ अट्टालिका परे उठि करे निरीक्षण
जानकी बलेन सखि करि निवेदन ※ कोनजन राम वा लक्ष्मण कोनजन
सीतार देखाय सखिगण तुलि हात ※ दूर्व्वादल श्याम ओइ राम रघुनाथ
रामेरे देखिया सीता भाविलेन मने ※ पाछे से विरिञ्चि करे वञ्चित ए धने
देवगणे प्रार्थना करेन सीता मने ※ स्वामी करि देह राम कमललोचने

देवगणेर निकटे सीता देवीर वर-प्रार्थना

कृताञ्जलि सुचिन्तिता, प्रार्थना करेन सीता, शुनह सकल देवगण ।
यदि राम गुणनिधि, स्वामी करि देह विधि, तवे हय कामना पूरण ॥
शुनह देव हुताशन, आर शुन गजानन, शुनह आमार परिहार ।
महेन्द्र, वरुण, काल, शुन सवे दिक्पाल, महादेव करह निस्तार ॥
कात्यायनी भगवती, कर जोड़े करे स्तुति, पति देह राम गुणमणि ।
तुमि शिव, तुमि धाता, सकल देवेर माता, वेदमाता हरेर घरणी ॥
चण्ड, मुण्ड आदि यत, वधिले से कत शत, देवगणे करिला निस्तार ।
श्रीरामेरे पति देह, घुचाओ मनेर मोह, राम विना गति नाहि आर ॥

१ सुलोचनी २ इशारे से ।

मातु-पद प्रणिपात, रघुपति बिन न गति, जीवन वृथा।
पति मिलैं रघुकुलचन्द, आनँददायिनी मेटउ व्यथा ॥
कुलिश कठिन धनु टरत न टारे ❋ बल प्रयोग अगनित भट हारे
कोमल कमल राम इत अंगा ❋ पितु-प्रन दारुन, अहह प्रसंगा
सिय-ससपंज[1] सुरन अनुमानी ❋ सुखद प्रबोधि कीन नभबानी
सुमन-सरिस सिवसारँग, सीता ❋ सहज राम-कर भंग प्रतीता
तजहु सोक-भय, जे जगबन्दन ❋ सोइ तव पति रघुपति रघुनन्दन

शिवधनु भंग और श्रीराम-लक्ष्मण-भरत-शत्रुघ्न का विवाह तथा परशुराम-दर्प चूर्ण

धनुमंदिर धनु - धारन हेता ❋ चले जबहिं प्रभु, नृपदल जेता
विस्मित, निरत[2] विविध अनुमाना❋ किमि समर्थ शिशु धनु-संधाना?
कह सौमित्र, नाथ ! धरि चापा❋ मेटहु, सभा कुतूहल व्यापा
अनुज-विनय, मुनि-आयसु पाई ❋ बिहँसि, पिनाक[3] साधि रघुराई
सभा विलोकि कहेउ, सुनु भाई ❋ तोरत शिवधनु मन सकुचाई
पुनि प्रतंच धरि, सविनय हेरी ❋ चहेउ कुअँर अनुमति मुनि केरी

कमठ-कठोर धनु, श्रीराम कोमल तनु, केमने तुलिबे शरासन।
कत शत वीरगण, ना पारिल उत्तोलन, दारुण पितार एइ पण ॥
सीतार एमन मन, बुझिलेन देवगण आकाशे हइल दैववाणी।
शुन गो जनकसुता, ना हइओ दुःखयुता, स्वामी तव राम गुणमणि ॥
फूलेर धनुक प्राय, हेलाय तुलिया ताय, भाङ्गिबेन कौशल्यानन्दन।
देवतागणेर कथा, कभू ना हइबे वृथा, एइ कृत्तिवासेर वचन ॥

हरधनु भंग ओ श्रीराम-लक्ष्मण-भरत शत्रुघ्नेर विवाह ओ परशुराम-दर्प चूर्ण

धनुकेर घरे राम गेलेन यखन ❋ धनुक तोलह राम बले सर्व्वजन
यत राजा आछे तारा भाविल अन्तरे ❋ देखिब केमने शिशु धनुर्भङ्ग करे
विस्मित हइया सबे करे निरीक्षण ❋ धनुक तोलह राम बले सर्व्वजन
लक्ष्मण बलेन शुन ज्येष्ठ महाशय ❋ घुचाओ धनुक धरि सवार विस्मय
श्रीराम बलेन शुन गाधिर नन्दन ❋ आज्ञा कर करिव कि धनुक धारण
एतेक बलिया राम सहास्य बदने ❋ धनुक धारण करे, देखे सर्व्वजने
धनुके तुलिया राम बलेन लक्ष्मणे ❋ भाङ्गिव शिवेर धनु भय हय मने
धनुके अर्पिया गुण बलेन मुनिरे ❋ ताहा करि याहा आज्ञा करिवा आमारे

---

१ पशोपेश २ लीन ३ शिवधनुष।

भञ्जि चाप पुरवउ मनकामा ❋ कौतुक सबन देखावउ रामा !
क्षण टंकार—विपुल कोदण्डा ❋ तड़-तड़ निमिष, भयेउ दुइ खण्डा
सभा अचेत, कम्प त्रयलोका ❋ इत विदेह निवरेउ[1] सब सोका
बाजन बजत, बजत सहनाई ❋ चहुँ मिथिला आनन्द बधाई
सबन विदेह निमंत्रन दीन्हा ❋ गर धरि वसन समादर कीन्हा

दो० द्विज-सुमंत्र[2]-गृह राम इत, द्विज-तिय करत बखान ।
राममातु धनि! जनक ढिग, उत मुनि[3] कीन्ह पयान ॥
मुनि-पद बन्दे जानकी, पूछत पुनि नरनाह ।
सुभ साइति अनुमति चहौं, रघुबर-सिया विवाह ॥ १३५ ॥

नृप-प्रस्ताव पाय मुनि धाये ❋ लखन सहित जहँ राम सुहाये
सुनहु तात ! मम मंगल हेतू ❋ करि विवाह पुनि जाहु निकेतू
बहुत काल बीतेउ मुनि-चरनन ❋ आकुल अवसि मातु-पितु-परिजन
तासों अवध चलिय मुनिराई ❋ बात एक मन और समाई
जन्मे सकल अनुज सँग, ताकी[4] ❋ तिन तजि किमि विवाह एकाकी[5]
सुता चारि जहँ, तहँ मन माहीं ❋ चारिउ बंधु ब्याहि घर जाहीं

मुनि वलिलेन राम देखाओ कौतुक ❋ मनोरथ पूर्ण कर भाङ्गिया धनुक
आज्ञा पेये श्रीराम दिलेन गुणे टान ❋ मड़ मड़ शब्दे धनु हैल दुइखान
सभार सकल लोक हाराइल ज्ञान ❋ त्रिभुवन सघने हइल कम्पमान
हइलेन जनक भूपति हरषित ❋ वाद्य वाजे मिथिला नगरे अगणित
गले वस्त्र दिया राजा अति समादरे ❋ निमन्त्रण एके एके सवाकारे करे
सुमन्त्र ब्राह्मण रामे लये गेल घरे ❋ सुमन्त्रेर ब्राह्मणी कौशल्या नाम धरे
कौशल्यार तुल्य केह नाह भाग्यवती ❋ मा मा वलिया यार डाकेन श्रीपति
सुमन्त्र मुनिरे घरे राखिया रामेरे ❋ विश्वामित्र गेलेन से जनकेर पुरे
सीतादेवी बन्दिलेन मुनिर चरन ❋ आनन्दित हइलेन जनक यशोधन
जनक वलेन, प्रभु करि निवेदन ❋ सीतार विवाह जन्य कर शुभ क्षण
ए कथा शुनिया मुनि गाधिर नन्दन ❋ अमनि आइल यथा श्रीरामलक्ष्मण
मुनि वलिलेन, राम एइ आमि चाइ ❋ विवाह करिया घरे जाह दुइ भाइ
श्रीराम कहेन प्रभु निवेदि तोमारे ❋ आमा दोंहे लये चल अयोध्या-नगरे
वहुदिन आसियाछि तोमार सहित ❋ विलम्ब हइले पिता हवेन चिन्तित
चारि भाइ जन्म लइयाछि एक दिने ❋ से सवारे छाड़ि करि विवाह केमने
ए चारि भ्राताके जेइ कन्या दिवे चारि ❋ चारि भाइ विवाह करिव घरे तारि

१ मिट गया २ मिथिला का कोई सुमंत्र ब्राह्मण ३ विश्वामित्र ४ देखकर
५ अकेले ।

वचन राम सुनि उपजेउ त्रासा ❋ मुनि-कपार जिमि टूट अकासा
सुनहु बिदेह ! राम प्रतिकूला ❋ बरनत दुसह तपोधन सूला
तजे अवध बीतेउ बहु काला ❋ अवसि तहाँ पितु हाल बेहाला
अनुजन जनम लीन अेक संगा ❋ तिन तजि उचित न वरन-प्रसंगा
सुता चारि तहँ रचिय विवाहू ❋ सुनि मुनि-वचन विकल नरनाहू
शतानन्द प्रोहित सोइ काला ❋ दिय प्रबोध, थिर[1] होहु भुवाला
भ्रात कनिष्ठ कुशध्वज नामा ❋ सुता युगुल गुण-रूप ललामा
दुहिता दुइ रूपसि तव भूपा ❋ सुता चारि इमि अर्पि[2] अनूपा
करौ भूप ! जो रघुपति भावा ❋ सुनि प्रमुदित मुनि हाल जनावा
तात ! जनक-गृह कन्या चारी ❋ रघुकुल चारि कुअँर अनुहारी[3]

दो० मनचाही दसरथ-सुवन, मनभाई मिथिलेस ।
सुता चारि अर्पत, कुअँर! अब न विघिन लवलेस ॥ १३६ ॥

मुनिवर! अबहुँ अेटक[4] सुभकाजू ❋ बन्धु न पितु, किमि मंगल-साजू?

एइ वाक्य निःसरिल श्रीरामेर तुण्डे ❋ आकाश भाङ्गिया पड़े कौशिकेर मुण्डे
दुःखित हइया मुनि गेलेन तखन ❋ जनकेर निकटे दिलेन दरशन
जनक वलेन प्रभु करि निवेदन ❋ सीतार विवाह दिन कर शुभक्षण
विश्वामित्र बलिलेन शुन नरपते ❋ रामेर मतस्थ नहे विवाह करिते
कहिलेन बहुकाल छाड़ियाछि घर ❋ विलम्ब हइले पिता हवेन कातर
ये चारि भायेरे चारि कन्या समर्पिवे ❋ ताँर घरे रामचन्द्र विवाह करिबे
शुनिया भावेन राजा करि हेंट माथा ❋ सीता विना कन्या नाइ आर पाव कोथा
एतेक भाविया राजा विषण्ण वदन ❋ शतानन्द पुरोहित कहिछे तखन
केन राजा हइयाछ विचलित मन ❋ तव घरे चारि कन्या हइबे घटन
तोमार कनिष्ठ भाइ कुशध्वज नाम ❋ ताँर दुइ कन्या आछे रूप गुणधाम
तोमार दुहिता दुइ परमा सुन्दरी ❋ चारि भाये समर्पण कर कन्या चारि
श्रीरामेर ये वासना हवे सेइ मत ❋ ताँहार जानाओ गिया समाचार यत
हरषित हैया मुनि गाधिर कोडर ❋ वार्ता देन गिया तबे रामेर गोचर
शुन राम नाहि देखि इहाते वाधक ❋ चारि भाये चारि कन्या दिबेन जनक
राम वलिलेन प्रभु करि निवेदन ❋ सव भाइ हेथा नाइ करिब केमन
इहाते बाधक आरो आछे मुनिवर ❋ विवाह करिते नारि पितृ अगोचर

---

१ स्थिर २ अर्पण करके ३ अनुरूप ४ रुकावट ।

जो विदेह, मत, मुनि! मन भावै ※ अवध मनुज चलि पितु लै आवै
विश्वामित्र जनक ढिग जाई ※ बरनेउ सकल कथन-रघुराई
पठवौ अवध तुरत कोउ पायक[1] ※ शुचि-उन्नत विचार रघुनायक
रोम-रोम नृप पुलकित अंगा ※ मन-बच लहरति सुखद तरंगा
मुनिवर! आन[2] न जोग लखाई ※ लावहु नृपति अवधपुर जाई
गाधितनय हिय अमित उछाहू ※ चले लेन जस[3] राम-विवाहू
सिद्धाश्रम—जहँ मुनिन समाजू ※ पूछत भेंटि कुतूहल काजू ?
अजय चाप त्रिपुरारि कठोरा ※ सुनी अवधसुत छिन महँ तोरा
सिय-कल्याण हेतु सिवसायक ※ स्वतः[4] टूट, बोले मुनिनायक
सिद्धाश्रम तजि मुनि पग धारा ※ कछुक काल भे सुरसरि पारा
मुनि पहुँचे जहँ गौतम नारी ※ शिला परसि पग-रघुवर तारी
बहुरि चले जहँ जन्म प्रभञ्जन ※ सो तजि पार कीन ताड़कवन
चलि आये पुनि सरयू तीरा ※ परसेउ गाधि-तनय शुचि नीरा
कहत सुदूर अवध - पुरवासी ※ दरसत सोइ तपसी बनबासी
राम-लखन गमने जिन साथा ※ सो किमि आजु बिना रघुनाथा

आमारे विवाह दिते यदि आछे मन ※ अयोध्याते मनुष्य पाठाओ एकजन
एतेक शुनिया गेल गाधिर नन्दन ※ कहिलेन जनकेरे सब विवरण
शुनिया भावेन राजा भावे गद गद ※ वचन मनेर अगोचर ए सम्पद
मुनि बलिलेन शुन जनक राजन ※ दशरथे आनिते पाठाओ एकजन
राजा बलिलेन, मुनि, करि निवेदन ※ तोमा भिन्न के जाइबे अयोध्या-भुवन
ए कथा शुनिया मुनि भाविलेन मने ※ घटक[5] हइया जाइ अयोध्या-भुवने
एइ यश आमार घुषिवे त्रिभुवने ※ विवाह दिलाम आमि श्रीराम लक्ष्मणे
एतेक भाविया मुनि करिला गमन ※ सिद्धाश्रमे प्रथमतः दिल दरशन
सुधाय सकल मुनि कि शुनि कौतुक ※ राम नाकि भाङ्गियाछे हरेर धनुक
मुनि कन करिवारे सीतार कल्याण ※ शिवधनु आपनि हइला दुइखान
विश्वामित्र सिद्धाश्रम पश्चात् करिया ※ गङ्गार कूलेते मुनि उत्तरिल गिया
गंगापार हइया चलेन मुनिवर ※ अहल्या येखाने छिल हइया पाथर
अहल्यार तपोवन पश्चात करिया ※ पवनेर जन्मभूमि उत्तरिल गिया
पवनेर जन्मभूमि राखि कत दूर ※ ताड़कार वने जान पाछे सरयूर
करिलेन सरयूर नीर परशन ※ दूरेते थाकिया देखे अयोध्यार जन
आसिया ये मुनिराज रामे लये गेल ※ एका मुनि आसितेछे राम ना आइल

---

१ दूत-प्यादा २ दूसरा ३ यश ४ अपने आप ५ घटक—विवाह तै कराने वाले मध्यस्थ।

दो० खबरि दीन कोउ दसरथहिं, आवत मुनि बिन राम ।
वज्रपात, आकुल, रुदन, कहाँ राम घनश्याम ।। १३७ ।।

कस अकेल? कित मम सुत प्राना? ※ आजु अन्धमुनि-बचन प्रमाना
राम-लखन बिन—जल बिन मीना ※ दै निधि दीनहिं विधि हरि लीना
रच्छन याग, असुर-उत्पाता ※ मेटन हेतु, लीन मम ताता
ते अलोप[1], टूटी सब आसा ※ हरेउ प्रान, मुनि सर्व विनासा
शावक बिन बाघिन बिकराला ※ बिकल रानि, तहँ गये भुवाला
अन्तःपुर अपार दुख आवा ※ अवध, प्रमाद सकल दिसि छावा
द्वादस वयस नबोढ़[2] किशोरा ※ हतेउ कतहुँ बन निसिचर घोरा
बिलखत भूप, न गात सम्हारी ※ विश्वामित्र कुतूहल भारी
नेही[3] रहे प्रबोधि भुवाला ※ गुरु बशिष्ठ आगम सोइ काला
कौशिक कहौ कुअँर केहि भाँती ※ राम-कुसल कहि जुड़वउ छाती
परेउ न भल-अनभल[4] कछु काना ※ कह मुनि, रुदन अतुल कस ठाना?
कस न, गाधिसुत? अचरज कारन? ※ अलख राम किमि धीरज धारन!
ज्ञान, ध्यान, जीवन घनश्यामा ※ चहुँ तम[5] अवध-भुवन बिन रामा

ए कथा कहिल गिया दशरथ प्रति ※ वज्रपात सम ज्ञान करेन भूपति
कान्दिया बाहिरे आसि अजेर नन्दन ※ रामे ना देखिया कहे कातर वचन
एका ये आइले मुनि राम मोर कोथा ※ हइल प्रत्यक्ष आजि अन्धकेर कथा
कोथा राम कोथा वा लक्ष्मण गुणनिधि ※ दरिद्रेर दिया निधि हरिलेन विधि
यज्ञ रक्षा हेतु ल'ये गेला निजवास ※ छलेते करिले मुनि मम सर्व्वनाश
राक्षस-बधेर हेतु लइया कुमार ※ के जाने बधिबे मुनि पराण आमार
वार्ता पेये आइल राजार यत राणी ※ डम्बुर हाराये येन फुकारे वाघिनी
कौशल्या सुमित्रा राणी हाहाकार करे ※ प्रमाद पड़िल आजि अयोध्या-नगरे
द्वादश -वर्षेर राम तेर नाहि पुरे ※ हेन रामे खाइल कि वने निशाचरे
आकुल हइल राजा अजेर कुमार ※ विश्वामित्र भाविलेन ए कि चमत्कार
राजारे बुझाय कत पात्र मित्रगण ※ हेनकाले आइलेन वशिष्ठ ब्राह्मण
वशिष्ठ वलेन कह गाधिर नन्दन ※ रामेर मंगल शुनि जुड़ाक् जीवन
इइ कथा शुनिया कहेन तपोधन ※ भालमन्द न शुनिया कान्द कि कारण
वशिष्ठ वलेन मुनि कह कि आश्चर्य्य ※ रामे ना देखिया कार मने हय धैर्य्य
रामध्यान रामज्ञान राम से जीवन ※ राम विना अन्धकार अयोध्या भुवन

---

१ गायव २ नव-उम्र ३ स्नेही पात्र-मित्रगण ४ भला-बुरा ५ अन्धकार ।

लेहिं चरन-मुनि, भूप अधीरा ※ पूछत, कितै लखन रघुबीरा?
कहेउ गाधिसुत, सुनु नरनाथा! ※ विक्रम-सुवन, विरद-रघुनाथा
निसचरि प्रबल ताड़का मारी ※ शाप-रहित किय गौतम नारी

दो० केवट कीन सनाथ, पुनि, दनुज कटक हनि राम।
पुरये मुनिगन-याग सुचि, पहुँचे मिथिला धाम ॥ १३८ ॥

जहँ धनुभंग जनक प्रन ठाना ※ परसत[1] सोइ हारे नृप नाना
शिवधनु भंजि, राखि प्रन भूपा ※ लहेउ दान सिय राम-सरूपा
सुता चारि तहँ, सुत तव चारी ※ भूपति! चलिय बरात सँवारी
दसरथ सुनि मुद-मंगल-गाथा ※ पुनि-पुनि मुनिपद बंदहिं माथा
सजी बरात अवध सजि आवा ※ लख-लख हय-गज-रथ चहुँ छावा
भरत-रिपुदमन आयसु पाई ※ सबन निमंत्रि, दीन पहुनाई
प्रथम चलेउ रथ मुनिन-समाजू ※ पुनि सुत युगुल सहित नरराजू
तौलौं कहति कौशिला रानी ※ जननि-स्वभाव सुधा सरसानी
राघव-तन किमि हारिद[2]-परसन ※ वर-सरूप सुत-छवि किमि दरसन?
लखन-मातु कह मंजुल बानी ※ अमित उछाह सुधारस-सानी
दीदी! लै रघुवर कर नामा ※ करहु सकल सुचि मंगल कामा

लोटाये पड़ेन राजा मुनि पदतले ※ कोथाय लक्ष्मण कोथा राम एइ बले
विश्वामित्र बलेन शुनह यशोधन ※ पुत्रेर विक्रम कथा करह श्रवण
ताड़कारे मारिलेन कौशल्यानन्दन ※ अहल्या के करिलेन शाप-विमोचन
कैवर्त्तके करिलेन कृतार्थ श्रीराम ※ राक्षस मारिया पूर्ण करिलेन काम
जनक करियाछिल धनुर्भङ्ग पण ※ ताहाते हारिया गेल यत राजगण
शंकरेर धनुक करिया दुइखान ※ लक्ष्मीरूपा कन्या राम पाइलेन दान
चारि कन्या दिवेन जनक चारि भाये ※ चल महाराज शीघ्र दुइ पुत्र लये
ए कथा शुनिया राजा आनन्दे विह्वल ※ प्रणति करेन मुनि - चरण - कमल
अयोध्याते तखन पड़िया गेल साड़ा ※ लक्षलक्ष हस्ती साजे लक्षलक्ष घोड़ा
नाना रूपे रथ साजे अति सुशोभन ※ डाकिया आनिल राजा भरत शत्रुघ्न
त्वरा करि सवारे करिल निमन्त्रण ※ अयोध्यार लोक सव करिल साजन
अग्रे रथे चड़िलेन यतक ब्राह्मण ※ चड़िलेन रथे राजा सह पुत्रगण
बलेन कौशल्या देवी सुमित्रा देवीरे ※ ना पाइ हरिद्रा दिते रामेर शरीरे
सुमित्रा बलेन दिदि केन भाव आर ※ रामेर नामेते करि मङ्गल-आचार

1 छूते ही 2 हल्दी लगाना—एक मांगलिक कार्य।

लख-लख हय-गज-रथ-पद यूथा ❋ चली अनी चतुरंग वरूथा[1]
बिरदभाट, बटु[2] बेदन गावा ❋ उत बिदेह रच रंग, सुहावा
रिधि-सिधि! रमा जनम सिय केरा ❋ मिथिला सुख, धन, धाम घनेरा
मग, सुपेय घृत क्षीर तड़ागा ❋ आतिथि-भाव धारि तन जागा
अतुल राशि पकवान मिठाई ❋ चहुँ बरात हित, भूप सजाई
दो० अवध-सैन सुखदैन मग, ठौर-ठौर जनवास[3]।
असन-बसन-आमोद बहु, सब बिधि बिबिध सुपास[4] ॥ १३९ ॥
रघुकुल-कटक लिये अजनन्दन ❋ सरयू-सलिल परसि किय बन्दन
पुनि अस्नान, अमित करि दाना ❋ सुधा सरिस नृप किय जलपाना
सरिता उतरि अरण्य सोहावा ❋ गाधि-सुवन इमि बचन सुनावा
जहाँ राम ताड़ुका विनासी ❋ सोइ बन बिकट लखौ, गुनरासी
कस ताड़ुका दनुजि विकराला! ❋ लखिय, सोचि पग धरे भुवाला
बिकट बदन परतच्छ निहारी ❋ कौतुक! किमि मृदु राम पछारी[5]
पवन जन्म जहँ भूमि अनूपा ❋ पुनि गौतम-तिय-उपवन; भूपा
पावन दरस, हरत श्रम-पीरा ❋ पहुँचे शुचि सुरसरि के तीरा
जासु तरनि उतरे रघुनाथा ❋ भेंटेउ सोइ निषाद नरनाथा

लक्षलक्ष पदादिक चलिलेक सङ्गे ❋ चक्रवर्ती चलिलेन सैन्य चतुरंगे
रायबार पड़े भाट वेद विप्रगण ❋ मिथिलार एबे किछु शुन विवरण
सीतारूपे लक्ष्मी स्वयं तथाय जन्मिल ❋ मिथिला नगर धने पूर्णित हइल
घृते दुग्धे जनक करिल सरोवर ❋ स्थाने-स्थाने भाण्डार करिल मनोहर
चाल राशिराशि सुमिष्टान्न काँड़िकाँड़ि ❋ स्थाने-स्थाने राखे राजा लक्षलक्ष हाँड़ि
हेथा सैन्यगण लये अजेर नन्दन ❋ सरयू नदीर तीरे दिल दरशन
सरयू नदीते राजा करि स्नान-दान ❋ मिष्टान्न भोजन करे मिष्ट जलपान
त्वरिते सरयू नदी उत्तीर्ण हइया ❋ ताड़कार बनेते प्रवेश करे गिया
कौशिक बलेन शुन अजेर नन्दन ❋ एई बने ताड़का हइल निपातन
शुनिया बलेन राजा अजेर नन्दन ❋ ताड़का देखिब प्रभु सेइ वा केमन
ताड़कार निकटे गेलेन दशरथ ❋ देखेन पड़िया आछे आगुलिया पथ
ताड़का देखिया राजा भाविलेन मने ❋ इहारे बालक राम मारिल केमने
ताड़कार वन राजा पश्चात् करिया ❋ पवनेर जन्मभूमि देखिलेन गिया
पवनेर जन्मभूमि पश्चात् करिया ❋ अहल्यार आश्रमेते उत्तरिल गिया
अहल्यार तपोवन पश्चात् करिया ❋ गंगातीरे उपनीत हइलेन गिया
ये कैवर्त्त श्रीरामेरे पार क'रे छिल ❋ से राजार नाम शुनि नौका साजाइल

१ समूह २ ब्राह्मण ३ बारात के लिए निवास-गृह ४ आराम ५ पछाड़ा।

अवध-कटक तरि[1] साजि उतारा ❊ सिद्धाश्रम सुभ दरस[2] निहारा
बन-उपबन, मुनि! लखे ललामा ❊ कतक दूर अब मिथिला-धामा
गाधिसुवन कह, सुनहु नरेसा ❊ कोस तीनि मारग अवसेसा
मुनि-तिय कहइँ पूर मन-कामा ❊ नृप ! निकेत तव जन्मे रामा
चले बहोरि विदेह-समीपा ❊ प्रजा-सैन युत, अटे[3] महीपा
बाजन विविध बजत मन मोहा ❊ हास-हुलास सकल दिसि सोहा
कौतुक-अस्त्र, खेल, उल्लासा ❊ दूत जनक संवाद प्रकासा

दो० धाम जनक, सन्मानि बहु, भेंटि अवधपति लीन ।
समुचित शिष्टाचार पुनि, सविनय अस्तुति कीन ॥ १४० ॥

सुत तव चारि, चारि मम बाला ❊ लेहु दान, जो दया-भुवाला
बिहँसि अवधपति जनक प्रबोधा ❊ बनी बात, कित लेस[4] विरोधा?
जनक बंदि गवने निज धामा ❊ दशरथ पठइ, बास जहँ रामा
पितु-आगम लखि, आयसु पाई ❊ गहे तात-चरनन लपिटाई
पितु प्रनाम किय लखन, बन्दना ❊ भरत-रिपुदमन रघुपति चरना
भरतहिं लखन, लखन रिपुसूदन ❊ पद[5]-अनुसार करहिं पद-पूजन

नौकाते हइल पार यत सैन्यगण ❊ सिद्धाश्रम-दर्शन करेन यशोधन
भूपति बलेन मुनि निवेदन करि ❊ कत दूरे आछे आर मिथिला-नगरी
विश्वामित्र बलेन शुनह नृपवर ❊ आछे तार तिन क्रोश मिथिला-नगर
मुनिपत्नी सबे बले राजा पूर्णकाम ❊ याँहार औरसे जन्म लइलेन राम
सिद्धाश्रम दशरथ पश्चात् करिया ❊ मिथिलार सन्निकटे उत्तरिल गिया
आह्लादित प्रजा सब आरे सैन्यगण ❊ नानाजाति अस्त्र खेले वाजाय बाजन
दूत गिया वार्त्ता दिल जनक राजारे ❊ अनुव्रजि लह राजा अजेर कुमारे
रथ हैते नामिलेन अयोध्यार पति ❊ करिलेन जनक आदरे बहु स्तुति
जनक बलेन राजा यदि कर दया ❊ तव चारि पुत्रे देइ चारिटि तनया
दशरथ बलिलेन शुन हे जनक ❊ सम्बन्ध हइल ठिक तवे कि वाधक
उभये हइल शिष्टाचार सम्भाषण ❊ विदाय लइया राजा करेन गमन
येइ घरे बसिया आछेन रघुवीर ❊ सेइ घरे चलिलेन दशरथ धीर
पितार आदेश पाइया हइया वाहिर ❊ वन्दिलेन पितृ पदद्वय रघुवीर
लक्ष्मण बन्दिल गिया पितार चरण ❊ रामेर चरण बन्दे भरत शत्रुघ्न
लक्ष्मण बन्दिल गिया भरते तखन ❊ शत्रुघ्न आसिया बन्दे दोसर लक्ष्मण

१ नाव पर २ दृश्य ३ पहुँचे ४ अंश—जरा भी ५ मर्य्याद—छोटाई-वड़ाई ।

मिलहिं सनेह परस्पर चारी ※ तन-मन भूप, मोद लखि भारी
कोसल-दल सुपास बहु भाँती ※ मिथिला, सकल प्रफुल्ल बराती
व्यञ्जन बहु पकवान मिठाई ※ परसइँ, खाइँ, छटा छिति छाई
सोइ अवसर बशिष्ठ, नृपगेहा ※ चलि भेंटे जहँ सभा-विदेहा
उठि सन्मानि कीन मुनि-बन्दन ※ स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, अरु आसन
सिय-विवाह सुभ लगन विचारी ※ कहउ, तपोधन ! मंगलकारी
नखत पुनर्वसु कर्कट कन्या ※ अनुपम लगन, महीप! अनन्या[1]
दंपति-सुख, जनि कतहुँ बिछोहा[2] ※ सुनि मुनि-वचन सबन मन मोहा
उतै सुरन सुरपुर मन छोहा[3] ※ जो न होय सिय राम-बिछोहा
तौ बनगमन न बध-दसमाथा ※ देवन मिलि सोचत शचिनाथा[4]

दो० लगन सुकर्कट टरइ जिमि, कीजिय जतन विचारि ।
निरखि मयंक,[5] भरोस करि, बोले इमि असुरारि[6]।। १४१ ।।

नर्तकि[7]-भेष जनकपुर जाई ※ रचहु रंग, शशि! छबि निखराई
सुध-बुध तजइँ नर्त सब देखी ※ बीतइ कर्कट लगन बिसेखी
इत वशिष्ठ सुभ-लगन विचारी ※ दशरथ-हृदय मोद अति भारी
अभरन विविध भूप बहु साजी ※ अमित भार फल बहुल बिराजी

चारि भ्राता परस्परे करे आलिंगन ※ सुखे पुलकित अंग अजेर नन्दन
घाटेते नामिल केह उतरे वा माठे ※ केह पाक करि खाय सरोवर घाटे
खाओखाओ लओलओ एइमात्र शुनि ※ अन्न व्यञ्जनेते पूर्ण हइल मेदिनी
गेलेन वशिष्ठ मुनि जनकेर घर ※ सभा करि ब'सेछे जनक नृपवर
वशिष्ठे देखिया राजा करे अभ्यर्थन ※ पाद्य अर्घ्य दिल आर वसिते आसन
कहिते लागिल राजा जनक तखन ※ सीतार विवाह लग्न कर शुभक्षण
वशिष्ठ सभार मध्ये ज्योतिष मेलिल ※ पुनर्व्वसु कर्कटेते कन्या लग्न हैल
ताहाते विवाह विधि हइले घटन ※ स्त्री-पुरुषे विच्छेद ना हय कदाचन
सेइ लग्न करिल ये यत वन्धुजन ※ स्वर्गे थाकि युक्ति करे यत देवगण
स्त्री पुरुषे विच्छेद ना हय कालान्तरे ※ केमने मारिवे तवे लंकार ईश्वरे
करह मन्त्रणा एइ बलि सारोद्धार ※ लग्न भ्रष्ट कर गिया श्रीराम सीतार
नर्त्तकी हइया तवे जाओ शशधर ※ नृत्य कर गिया तुमि जनकेर घर
तव नृत्य देखिले भुलिबे सर्व्वजन ※ अतीत हइवे तवे कर्कट लगन
शुभ लग्न करिया वशिष्ठ मुनिवर ※ वार्त्ता गिया दिलेन भूपतिर गोचर
आनन्दित हइलेन अजेर नन्दन ※ आयोजन करिलेन सर्व्व आभरण

१ बेजोड़ २ वियोग ३ क्षोभ ४ इन्द्र ५ चन्द्रमा ६ इन्द्र ७ नाचनेवाली ।

खाँड, दूध, दधि, घृत-मधु भारा ❊ सेवक चले लदे तिन थारा
द्विजन सहित, अधिवास[1] विचारी ❊ जनक सभा वशिष्ठ पग धारी
आसन अर्घ्य पाय सन्मानू ❊ लगन-चढ़न मुनि कीन विधानू
दूर्वा - धान मंगलाचारा ❊ लगे होन, दोउ कुल अनुसारा
करइँ बेद-ध्वनि द्विज समुदायी ❊ कनकासन सिय चौक सुहायी
भूषण, वसन, भाल छबि चन्दन ❊ सुभ परिधान करावइँ परिजन
दै जलधार सुता तहँ लाये ❊ खरचि द्रव्य बहु, जनक सोहाये
सिय-अधिवास संपदा सारी ❊ पाय विप्रगन चले सुखारी
पुनि अधिवास-राम-आदेसू ❊ पुलकि वशिष्ठ दीन अवधेसू
चारिउ कुअँर बिना उपवीता[2] ❊ तिन अरंभ भअे काज पुनीता
क्षौर, सनान[3], गंध, कोपीना ❊ मेखल, दण्ड, मंत्र, मुनि दीना
यहि बिधि कुअँर चारि उपवीती ❊ अमित दान दिय भूप सप्रीती

दो० तिन अधिवास, समोद नृप, करहिं स्वकुल अनुरूप ।
बरन विविध अभरन सजे, मंगल मूरति रूप ।। १४२ ।।

नन्दीमुख सराध नृप कीन्हा ❊ अतुल दान पुनि विप्रन दीन्हा

भारे भारे दधि दुग्ध भारे भारे कला ❊ भारे भारे क्षीर घृत शर्करा उज्ज्वला
सन्देशेर भार लये गेल भारिगण ❊ अधिवास करिबारे चलेन ब्राह्मण
सभा करि ब'सेछेन जनक भूपति ❊ सेइखाने गेलेन वशिष्ठ महापति
द्रव्येर यतेक भार एड़िलेक गिया ❊ वसेन वशिष्ठ कुशासन पातिया
घट संस्थापन करे येमन विधान ❊ उपरेते आम्रशाखा नीचे दूर्व्वाधान
वेदध्वनि करिते लागिल ब्राह्मण ❊ सीतारे आनिया दिल नाना आभरण
वसिलेन सीतादेवी सुवर्णेर पाटे ❊ वेदमन्त्रे दिल गन्ध सीतार ललाटे
चारिजनेर अधिवास करिल तखन ❊ वस्त्र पराइल आर नाना आभरण
जलधारा दिया कन्या लइलेक घरे ❊ जनक भूपति सर्व्व द्रव्य व्यय करे
अधिवास द्रव्य लैया चलिल ब्राह्मण ❊ श्रीरामेर अधिवास करे सर्व्वजन
वशिष्ठ वलेन दशरथे सम्वोधिया ❊ चारि तनयेर कर अधिवास क्रिया
राजा वले शुनह वशिष्ठ तपोधन ❊ अयज्ञोपवीत एइ चारिटि नन्दन
क्षौरकर्म्म करालेन चारिटि नन्दने ❊ आर यज्ञोपवीत हइल चारि जने
रामचन्द्र बसिलेन वापेर निकटे ❊ चन्दन दिलेन चारि पुत्रेर ललाटे
चारिजनेर अधिवास करिल राजन ❊ वसन पराये दिल नाना आभरण
नान्दिमुख करिलेन येमन विधान ❊ नान्दीमुख उपलक्ष्ये करिलेन दान

---

१ हल्दी, तेल, उबटन, गीत आदि, प्रत्येक मांगलिक कार्य के पूर्व होनेवाले टेहले या रसमें, यहाँ पर लग्न चढ़ना २ यज्ञोपवीत ३ स्नान ।

जे ब्राह्मणी, साथ जे दासी ❊ निरखि राम अति हृदय हुलासी
मायन तैल हरिद्रा उबटन ❊ मंगल गीत सहित किय सखियन
पुनि अस्नान कलावा बन्धन ❊ कुअँरन-करन[1] सोह सुभ कंकन
निरखि चारि वर छबि अेकसंगा ❊ मनहु बिराजत चारि अनंगा
मुक्तावलि उर मंजुल सोहा ❊ पाग ललाट अतुल मन मोहा
बाजूबंद मुद्रिका कंकन ❊ कुण्डल कान अमित मनरञ्जन
बसन दिव्य आभरन सरीरा ❊ भाइन सहित सोह रघुबीरा
सुभ विवाह छत्रिय-कुल रीती ❊ सजै दोल[2], कह भूप सप्रीती
सजे चारि चंदोल सोहावन ❊ सोहत कनक-कलश जहँ पावन
चौदिक सुबरन-झालरि परहीं ❊ बिच गजमुक्ता झलमल करहीं
चवँर, निसान सुमंगलकारी ❊ ठौर-ठौर गंगाजल-झारी[3]
चारि वरन चन्दोल सजीले ❊ दसरथ-ठाठ अकथ रोबीले
अभिमत[4] अभरन बहु परिधाना[5] ❊ धारि, चढ़े रथ, कर धनुबाना
मन हुलास, सजि चली बराता ❊ चारन विरद कीन विख्याता
नार्चाहं नर्तक बाजन रोरा ❊ ढाक, ढोल, ढप, नभ अति सोरा

सो० बजे बयालिस साज, दोल अरोहन सुतन किय।
दगड़ दमामे बाज, बीना, बँसुरी माधुरी ॥ १४३ ॥

कौशल्या ब्राह्मणी आर यत दासी लैया ❊ आनन्द करेन सबे रामेरे देखिया
हरिद्रा माखान चारि वरे कुतूहले ❊ अंगेते पिठालि दिल सखीरा सकले
तोला जले स्नान कराइल चारि वरे ❊ मंगलसूता बान्धिलेक ताँहादेर करे
मंगल करिया वसिलेन चारिजन ❊ देखिया सकले भावे ए चारि मदन
बान्धिल अपूर्व्व पाग मस्तक मण्डले ❊ मनोहर मुक्ताहार शोभे वक्षःस्थले
अंगुले अंगुरी करे अंगद बलय ❊ कर्णेते कुण्डल दिल शोभा अतिशय
दिव्य वस्त्र परिधान भाइ चारिजन ❊ सकल अंगेते दिल नाना आभरण
क्षत्रिय विवाह करे चतुर्द्दोल परे ❊ साजाइते चतुर्द्दोल कहे नृपवरे
चारि दिके दिल नाना सुवर्णेर धारा ❊ झलमल करे गज मुकतार झारा
गङ्गाजल चामर दिलेक ठाँइ ठाँइ ❊ चतुर्द्दोल साजाइल हेन आर नाइ
आपनार सुसाज करेन दशरथ ❊ परिधान परिच्छद यत मनोमत
रथोपरि चड़िलेन हाते धनुःशर ❊ शुभयात्रा करिलेन सानन्द अन्तर
भाटे रायवार पड़े नाचे नट गण ❊ बाजना वाजाय कत ना जाय गणन
दामामा दगड़ वाजे वियाल्लिश बाजना ❊ चतुर्द्दोले आरोहण करे चारि जना

१ हाथों में २ चण्डोल, पालकी ३ गंगाजली ४ मनचाहे ५ वस्त्र ।

बजत बाजने पारी-पारी ❊ कछु न सुनात कोलाहल भारी
कहुँ असि[१]-ढाल सुभट चमकावैं ❊ तुरगसवार[२] कतक शत धावैं
कहुँ सूरमा लिये सर-चापा ❊ मस्त ! बरात मोद चहुँ व्यापा
नचत चन्द्र ! उत जुरी समाजा ❊ जनक-सभा रसरंग विराजा
सोइ अवसर कोसलपति आये ❊ धाय जनक सन्मानि लेवाये
रेल-पेल दोउ दलन मझारी ❊ अभिरत देत परस्पर गारी
सोम-नर्त[३]—मन मुग्ध लोभाना ❊ कब कस लगन? सबन बिसराना
सोइ छन राम-लखन तहँ आये ❊ शतानन्द इमि बचन सुनाये
'साधिय लगन', न केहु दिय काना ❊ मोहित, प्रबल विरञ्चि-विधाना
बीती लगन, होस[४] जनि काहू ❊ आये पुनि जहँ विहित विवाहू
कुअँर चारि मण्डप तर आये ❊ द्विज-समाज प्रति सीस नवाये
चन्दन चौक राम बैठाई ❊ बनितन कृत पैपुजी सोहाई
दूर्वाधान शीश श्रीरामा ❊ चरन परसि दधि हुलसहिं बामा
श्रीवर वरन कीन अनुरागी ❊ चलीं बहोरि गेह रसपागी
शाखोच्चार घरी पुनि जानी ❊ निज-निज उपरोहितन बखानी
शतानन्द किय विनय हुलासा ❊ रविकुल करहु बशिष्ठ प्रकासा

ढाक ढोल बाजाइछे डम्फ कोटि कोटि ❊ चारि दिके उठिल वीणार झटपटि
कत ठाँइ बाजाइछे जोड़ा जोड़ा सानि ❊ काँशि वाँशी यतवाजे संख्या ना जानि
ढालि पाइक जाय से खाँड़ार चिकिमिकि ❊ कत शत अश्वारोही कत वा धनुकी
चन्द्रनृत्य करिछेन जनक सभाय ❊ हेनकाले दशरथ गेलेन तथाय
अनुब्रजि लइलेन ताँहारे जनक ❊ द्वारे ठेलाठेलि करे उभय कटक
प्रथमेते उभयेते हैल ठेलाठेलि ❊ ठेलाठेलि हइते हइल गालागालि
चन्द्रनृत्य देखिते भुलिल सर्व्वजन ❊ ताहे मग्न, कोथा लग्न, के करे गणन
आगे आइलेन राम पश्चाते लक्ष्मण ❊ शतानन्द बले कन्या कर समर्पण
भाल मन्द केह कारो ना शुने वचन ❊ अतीत हइल लग्न, सबे बिस्मरण
ल'ये गेल सबाकारे विवाहेर स्थले ❊ चारि भाइ वैसे छाया मण्डपेर तले
प्रणाम करेन सबे सकल ब्राह्मणे ❊ वरण करिल रामे वसन चन्दने
नारीगण करिलेक वरण विधान ❊ पाये दधि दिल आर शिरे दूर्व्वाधान
वरण करिया गेल यत सखीगन ❊ दुइ पुरोहित करे कथोपकथन
शतानन्द वलेन वशिष्ठ महाशय ❊ सूर्य्यवंश कि प्रकार देह परिचय

---

१ तलवार २ घुड़सवार ३ चन्द्रमा का नाच ४ होश—सुधबुध ।

दो० रघुकुल-गुरु दीन्हेउ उतर, चन्द्रवंश विस्तारि।
कहहु प्रथम; सुनि तपोधन, बोले सभा निहारि ॥ १४४ ॥

चन्द्रवंश-वर्णन

चन्द्रवंश कर दिव्य प्रकासू ※ कहउँ, श्रवन मंगलमय जासू
उदधि सुरासुर मंथन करनी ※ जासों प्रगट 'रमा' जगजननी
सोइ मंथन जग जनम 'सुधाकर' ※ भूतल 'चन्द्र' नाम छबि-आगर
'बुध' मतिमान चन्द्रसुत जानी ※ तासु 'पुरुरवा' सुवन बखानी
पुनि 'पुरुकृष्ण' पुरुरवानन्दन ※ 'शतावर्त्त' तिनकर जगबन्दन
'आर्यावर्त्त' तनय पुनि तासू ※ 'सेपदि' जनम महाशय जासू
'बाण' बहोरि 'रेत' सुत जाही ※ जगत-विदित 'ध्रुव' प्रगटत ताही
तिनके 'स्वर्ग', 'सर्व' सुत-स्वर्गा ※ कीन प्रकास चराचर वर्गा
सर्व-तनय 'हैहय' छबिरूपा ※ अंगज 'अर्जुन' सुभट अनूपा
चिरजीवी तिन सुत 'निमि' धीरा ※ मथेउ सबन्ह मिलि तासु सरीरा
निमि-तन मथन, जनम 'मिथि' पावा ※ मिथिला जिन रमनीक बसावा
(जनक) 'सीरध्वज', 'कुशध्वज' नन्दन ※ मिथि के प्रगट युगुल जगबंदन

वशिष्ठ बलेन मुनि हबे बोझाबुझि ※ कहो देखि तुमि चन्द्रवंशेर कुलजि

चन्द्रवंश-कथन

शतानन्द मुनि बले सभार भितर ※ शुन चन्द्रवंशेर विस्तार मुनिवर
देवासुरे मन्थन करिल सिन्धुनीर ※ ताहे लक्ष्मी जगन्माया हइल बाहिर
सागर मन्थनेते जन्मिल शशधर ※ चन्द्र नाम हइल ताँहार मनोहर
हइल चन्द्रेर पुत्र बुध मतिमान ※ पुरूरवा नामे हैल ताँहार सन्तान
पुरुकृष्ण नामे हैल ताँहार कुमार ※ शतावर्त्त नामे पुत्र विदित संसार
आर्य्यावर्त्त नामे हैल ताँहार तनय ※ सेपदि नामेते ताँर पुत्र महाशय
बाण नामे पुत्र हैल जाने सर्व्वजन ※ रेतनामे ताँर पुत्र अति विचक्षण
ध्रुव नामे ताँर पुत्र विदित भूतले ※ स्वर्ग नामे पुत्र ताँर सर्व्वलोके बले
स्वर्ग भूपतिर पुत्र सर्व्व नाम धर ※ हैहय नामेते ताँर पुत्र मनोहर
हैहयेर नन्दन अर्जुन नाम धरे ※ निमि नामे ताँर पुत्र विदित अमरे
निमिर कीर्तिते व्याप्त सकल संसार ※ निमि नामे ताँहार ये हइल कुमार
सकले मिलिया ताँर मथिल शरीर ※ ताहाते जन्मिल पुत्र मिथि नामे वीर
सेइ बसाइल एइ मिथिला-नगर ※ जनक कुशध्वज हैल ताँहार कोङर

प्रमुदि वशिष्ठ कही, मुनि ज्ञानी! ※ सुनी चन्द्रकुल धन्य कहानी

सूर्यवंश-वर्णन

भानुवंश बरनउँ मनरंजन ※ जासु आदि कुलपुरुष निरञ्जन
'शिव' 'विधि' 'हरि' सुविदित तिनरूपा ※ सुता 'कंदिनी' एक अनूपा
सो किय 'जरत्कारु' मुनि-अर्पन ※ जरत्कारु कंदिनी समर्पन

सो० तिनकी सुता ललाम, 'भानु' नाम प्रगटी जगत ।
ऋषि 'जमदग्नि' सुधाम, मुनिबामा होइ, गई जहँ ॥ १४५ ॥

तासु गेह मंगल अवतंसा ※ हरि स्वरूप प्रगटेउ अेक अंसा[1]
सोइ अेक दिवस रेत-विधि पाई ※ जन्मेउ सुत 'मरीच' सुखदाई
'कश्यप' सुत-मरीच, जिन व्यापी ※ 'सूर्य' तासु अति प्रखर प्रतापी
सूर्यवंश 'मनु' जग-विख्याता ※ तासु 'सुषेन' सूनु[2], सुखदाता
पुनि 'प्रसेन' छिति कीरति पाये ※ नृप 'युवनाश्व' तनय तिन जाये
'मान्धाता' पुनि तासु बंसधर ※ तासु भूप 'मुचकुन्द' कीर्तिकर
'धुन्धुमार' आँगन तिन सोहा ※ 'इला' जासु नन्दन मन मोहा
'शतावर्त्त' क्रम रविकुल आई ※ 'आर्यावर्त्त' जन्म सुभ पाई

वशिष्ठ वलेन शुनिलाम विवरण ※ आमि कथा कहि तवे ताहे देह मन

सूर्यवंश-कथन

आदि पुरुषेर नाम हैल निरञ्जन ※ ब्रह्मा विष्णु महेश्वर पुत्र तिन जन
तिन पुत्र हइल तनया एक जानि ※ सकले ताँहार नाम राखिल कन्दिनी
जरत्कारु मुनिपुत्र नारद वीणापाणि ※ ताँहाके विवाह दिल कन्दिनी भगिनी
सबे गीत गाय नारद बाजाय बीणा ※ ताहाते जन्मिल भानु नामे ताँर कन्या
ताहाके विवाह दिल जमदग्नि वरे ※ एक अंशे नारायण जन्मिल ताँर घरे
ब्रह्मार काछेते ताँर पड़िलेक बीज ※ ताहाते जन्मिल पुत्र नामेते मारीच
मारीचेर पुत्र हैल नामेते कश्यप ※ ताँहार तनय सूर्य्य प्रचण्ड आतप
सूर्य्येर हइल पुत्र मनु नाम ताँर ※ मनुर नामेते सर्व्व व्यापिल संसार
मनुर हइल पुत्र सुषेण नामेते ※ प्रसेन ताँहार पुत्र विदित जगते
प्रसेनेर पुत्र युवनाश्व नाम धरे ※ राजा युवनाश्व हय अयोध्या-नगरे
युवनाश्व राजार कहिब किबा कथा ※ ताँहार जन्मिल पुत्र नामेते मान्धाता
मान्धातार पुत्र हैल मुचुकुन्द नाम ※ गुणवान धुन्धुमार ताँर पुत्र नाम
ताँहार हइल पुत्र इला नाम धरे ※ ताँर पुत्र शतावर्त्त अयोध्या-नगरे

१ परशुराम २ पुत्र ।

'भरत' धरा चहुँ यश पुनि छावा * भारत नाम हेतु सोइ पावा
भरत-तनय 'इक्ष्वाकु' धनुर्धर * प्रोहित-पद वशिष्ठ लिय जाकर
पुनि सुमंत्र सारथि जिन स्यन्दन * 'भूधर' सोइ महीप कर नन्दन
भूधर-'खाण्ड', खाण्ड-सुत 'दण्डा' * पुरनारी - हारी बरबण्डा[1]
दण्ड-सुवन 'हारीत' बखाना * तिन 'हरिबीज' प्रबल जग जाना
तनय तासु 'हरिचन्द' प्रतापी * सत्यसंध महिमा जग व्यापी
कौशिक सकल दान जिन अर्पो * काया, कञ्चन हेत समर्पो
चिरशासन पूरन अभिलासा * तासु बंसधर सुत 'रुहिदासा'

दो० 'मृत्युञ्जय' पुनि आगमन, तिन 'त्रिशंकु' तपरूप।
जिन जनमे 'रुक्मांगद', सील-धर्म-यश-रूप ॥ १४६ ॥

द्वादश वर्ष कीन उपवासा * धर्म सुवन तिन 'मरुत' प्रकासा
'अनारण्य' पुनि रविकुल-नाथा * तिन-बध कीन लंक-दसमाथा
'बाहु' अनारण्यक-तन जाता * तिन शिवभक्त 'सगर' विख्याता
सगर-सूनु 'असमंज' धर्मधर * 'अंशुमान' तिन धर्म-धुरंधर

आर्य्यावर्त्त नामे ताँर हइल नन्दन * भरत ताँहार पुत्र जाने सर्व्वजन
भरत राजार आर कि कब आख्यान * याँर नामे पृथिवीर भारत पुराण
ताँर पुत्र हइल इक्ष्वाकु नरपति * वशिष्ठ पुरोधा याँर सुमन्त्र सारथि
ताँहार भूधर नामे हइल नन्दन * खाण्ड नामे ताँर पुत्र अयोध्या-भूषण
हइल खाण्डेर बेटा दण्ड नाम धरे * से प्रजार कामिनी के बलात्कार करे
ताँर पुत्र हइल हारीत नाम धरे * हरिबीज ताँर पुत्र विदित संसारे
हरिवीज राज्य करे परम आनन्द * हइल ताँहार पुत्र नाम हरिश्चन्द्र
याँर दान लइलेन गाधिर नन्दन * बिकाइया आपनि ये शुधिला काञ्चन
हरिश्चन्द्र राज्य करे पूर्ण अभिलाष * ताँहार हइल पुत्र नाम रुहिदास
से रुहिदासेर पुत्र नाम मृत्युञ्जय * त्रिशंकु ताँहार पुत्र यिनि तपोमय
ताँर पुत्र रुक्माङ्गद्र अयोध्या निवासी * द्वादश वत्सर काल करे एकादशी
रुक्माङ्गद जन्माइल धार्म्मिक तनय * ताँर पुत्र हइल मरुत महाशय
अनरण्य ताँर बेटा जाने सर्व्वजन * ताँहाके मारिया गेल लङ्कार रावण
हइल ताँहार पुत्र बाहु नृपवर * शिवभक्त पुत्र ताँर हइल सगर
असमञ्ज नामे ताँर हइल नन्दन * ताँर बेटा अंशुमान धर्म्मपेरायण
अंशुमान राजा राज्य करिल कौतुके * मरिल ताँहार वंश आर नाहि थाके

---

१ उद्दण्ड।

जिनके प्रगट 'भगीरथ' भूपा[1] ❋ जिन-तप सुरसरि बही अनूपा
सुर, नर, असुर—सृष्टि जिन तारी ❋ भागीरथी भुवन विस्तारी
'वितपत' प्रगट बंसधर तासू ❋ अवध-रतन 'विवरन' सुत जासू
पुनि 'अमर्षि', जिन सुवन 'दिलीपा' ❋ तिन-'रघु' प्रबल प्रचण्ड महीपा
साका जिन रघुबंस चलावा ❋ जासु नाम, रविकुल जस पावा
सब विधि 'अज' पितु सम रघुनन्दन ❋ तासु तनय प्रस्तुत जगबंदन
'दसरथ' शौर्य्य-वीर्य्य गुणधामा ❋ धार्मिक लखौ सुवन 'श्रीरामा'
वंशावलि वशिष्ठ जस गाई ❋ प्रोहित सहित सभा मन भाई
गर[2] धरि बसन दसरथहिं पेखी ❋ बिनती करइँ बिदेह बिसेखी
कोशलपति तव सुत बलधारी ❋ शरण, समर्पित तनया चारी
बोले दशरथ, सुनउ विदेहा ❋ सुवन चारि अर्पित तव-नेहा
समधी उभय निरत[3]-संभाषन ❋ सोइ छन बटुरीं[4] सकल सखीगन

दो० विविध भाँति लाईं सकल, भूषन बसन ललाम ।
अस बानक[5] सिय साजिए, मुग्ध होयँ लखि राम ॥ १४७ ॥

आमलकी[6] मलि सिर असनाना ❋ पुनि तन सोह दिव्य परिधाना

भगीरथ ताँर बेटा अयोध्या-नगरे ❋ गङ्गा आनि उद्धारिल देव दैत्य नरे
वितपत नामे ताँर हइल नन्दन ❋ विवर्ण ताँहार पुत्र अयोध्या-भूषण
ताँहार हइल बेटा अमर्षि राजन ❋ दिलीप ताँहार पुत्र जाने सर्व्वजन
दिलीपेर सुत रघु बड़ बलवान ❋ रघुवंश बलि यार वंशेते आख्यान
रघुर तनय अज पितार समान ❋ ताँर पुत्र दशरथ देख विद्यमान
दशरथ राजा शौर्य्यवीर्य्य गुणधाम ❋ ताँर ज्येष्ठ पुत्र एइ धार्म्मिक श्रीराम
एतेक वशिष्ठ मुनि बलिल सबाके ❋ शुनि शतानन्द मुनि हात दिल नाके
गले वस्त्र दिया बले जनक राजन ❋ तव पुत्रे कन्या दिया लइनु शरण
दशरथ बलिलेन जनक राजारे ❋ शरण लइनु दिया ए चारि कुमारे
दुइ राजा उठि तबे कैल सम्भाषण ❋ कन्या आन आन बले यत बन्धुगण
हेन वेश भूषण पराय सखीगण ❋ याहाते मोहित हय श्रीरामेर मन
सखी देय सीतार मस्तके आमलकी ❋ तोलाजले स्नान कराइल चन्द्रमुखी

---

१ पृष्ठ ७२ पर सूर्यवंश के वर्णन मे अंशुमान का पुत्र दिलीप, दिलीप के भगीरथ—ऐसा वर्णन है। यहाँ अंशुमान के पुत्र भगीरथ हैं। यह पाठभेद संग्रहकर्ता की भूल है। कदाचित प्रथम विवरण अशुद्ध है। २ गले में पट लपेटकर—विनय-सूचक ३ लीन, तन्मय ४ जमा हुई ५ सजधज ६ आँवला।

रुचि-रुचि आलिन केस सँवारी ※ लटन लसी वेणी मनहारी
बिन्दी कुंकुम भाल सोहाई ※ जिमि नभ, प्रभा-बालरवि छाई
मुक्ता सहित सोह नकबेसर ※ तन सुवास शुचि सलिल सकेसर
चञ्चल नयन सुकज्जल धारी ※ लोचन लचत मनोज निहारी
झिलमिल हार कण्ठ अति शोभा ※ उर कञ्चुकी जरी[1] मन लोभा
करनफूल कनकावलि न्यारी ※ भुज भुजबन्द छटा अति प्यारी
दोउ कर चूरी शंख बिराजी ※ तापर कञ्चन कंकन साजी
पग-अँगुरिन नूपुर बजनारे ※ प्रचुर बसन-भूषन छबि धारे
कनकचौक छबि जुड़वति छाती ※ चहुँ दिक् दीप्ति जोति-अवहाती[2]
दुहितन सविधि सहचरिन साजी ※ मण्डप-तर पुनि लाइ बिराजी
पुष्पाञ्जलि दै सिय-कर जोरी ※ राम सहित सत भाँवरि फेरी
अवसर, ओट भई जब सखियाँ ※ मिलीं राम-सिय सकुचित अँखियाँ
सलिल-धार दै, राम लेवाई ※ चलीं, कछुक पुनि सिय लै जाई
राखिन जहँ पटनई[3] अँधेरी ※ आली कहैं राम-तन हेरी
'षष्ठी'[4] कर पूजन मन लाई ※ करहु कुअँर इत मंगलदायी

चिरुणीते केश आँचड़िया सखीगण ※ चुल बान्धि पराइल अङ्गे आभरण
कपाले तिलक दिल निर्म्मल सिन्दूर ※ बालसूर्य्य सम तेज देखिते प्रचुर
नाकेते बेसर दिला मुक्ता सहकारे ※ पाटेर आछड़ा दिल सकल शरीरे
चञ्चल नयने किबा कज्जलेर रेखा ※ कामेर कामना येन गुणे जाय देखा
गलाय ताहार दिल हार झिलमिलि ※ बुके पराइया दिल सोनार काँचुलि
उपर हातेते दिल ताड़ स्वर्णमय ※ सुवर्णेर कर्णफुले शोभे कर्णद्वय
दुइ बाहु शङ्खेते शोभित विलक्षण ※ शङ्खेर उपरे साजे सोनार कङ्कण
वसन पराये तारे सुन्दर प्रचुर ※ दुइ पाये दिल तारे बाजन नूपुर
सुवर्ण आसने बसिलेन रूपवती ※ चारिदिके ज्वालि दिल सोहागेर बाति
चारि भगिनीते वेश करि निलक्षण ※ तखन मण्डपे गिया दिल दरशन
पुष्पाञ्जलि दिया सीता नमस्कार करे ※ प्रदक्षिण सातवार करिल रामेरे
अन्तःपट घुचाइल यत बन्धुगण ※ सीता रामे परस्पर हैल दरशन
जलधारा दिया तारा कन्या दिल परे ※ शोयाइल जानकीरे अन्धकार घरे
वरेरे आनिते आज्ञा करे सखीगण ※ आसिया करुन राम षष्ठीर पूजन

१ जरी के काम २ सोहाग-बाती (दीपक) ३ नी कोठरी ४ षष्ठी

दो० चहुँ अँधेर, सिय-पग चहेंउ, देन सखिन हरि-हाथ ।
सिया-सकुच, चुरियन खनक, सजग भये रघुनाथ ॥ १४८ ॥

सिय-कर मञ्जु राम गहि लीन्हा ❋ सुमुखिन निरखि ठठोली[1] कीन्हा
कोउ कह सियहिं लीन धरि हाथा ❋ कोउ कह पग परसे रघुनाथा
षष्ठी-पूजन, सिय-पग-परसन ❋ सो मसखरी[1] विफल भइ बनितन
वर-कन्या आगमन बहोरी ❋ रोहिनि-चन्द्र गगन जिमि जोरी
सबिधि सुभग संपन्न विवाहू ❋ कन्यादान दीन नरनाहू
यौतुक[2] अमित दास अरु दासी ❋ विविध सुपास दीन सुखरासी
दम्पति लिये, देत जलधारा ❋ चलि रनिवास जनक पग धारा
राजा - रानी पाक बनावा ❋ दोऊ परसि जेवनार करावा
सखियन सेज सुहाग सजाई ❋ सिया सहित शोभित रघुराई
भरत निवास माण्डवी संगा ❋ लखन-उर्मिला रत रसरंगा
श्रुतिकीरति-रिपुसूदन रमना ❋ निज-निज वास प्रमोद निमगना
हास-हुलास सुमिथिला-धामा ❋ बनिता करैं चुहल[3] तकि रामा
हँसि-हँसि करैं रञ्जना[4] एही ❋ तुम न राम, सरवरि[5] बैदेही
रूपसि अतुल सिया, तुम कारे ❋ बिहँसि, राम बोलत ढिठियारे[6]

हाते धरि आनाइल रामेरे तखन ❋ सीतार हात धरि तोल वले सखीगण
तखन भावेन मने सीता ठाकुरानी ❋ पाये हात देन पाछे राम गुणमणि
करिलेन सीता वाम हस्ते शङ्खध्वनि ❋ हाते धरि सीतारे तोलेन रघुमणि
स्त्री लोकेरा परिहास करे छल पेये ❋ केह वले हाते धरे केह वले पाये
पूर्व्वापर वर-कन्या आइले दुजने ❋ रोहिणीर सह चन्द्र येमन गगने
कन्यादान करे राजा विविध प्रकारे ❋ पञ्च हरीतकी दिया परिहास करे
वहु दास दासी राजा दिल कन्या वरे ❋ जलधारा दिया कन्या वर लैल घरे
राजराणी गिया परे करिल रन्धन ❋ वरकन्या दुइ जने करिल भोजन
साजाय वासर घर यत सखीगण ❋ राम सीता ताहाते वञ्चेन दुइजन
उर्मिला सहित सुखे वञ्चेन लक्ष्मण ❋ माण्डवीर सहित भरत विचक्षण
श्रुतकीर्त्ति सहित आछेन शत्रुघ्न ❋ एइरूपे वासरेते वञ्चे चरिजन
सानन्द हइल सव मिथिला भुवन ❋ रामके देखिते जाय यत नारीगण
परिहास करे सबे रामेर सहित ❋ तुमि ये जानकी पति ए नहे उचित
एइ कथा राम हे तोमाके वलि भाल ❋ सीता बड़ सुन्दरी तुमि हे वड़ काल

१ मजाक २ दहेज ३ छेड़खानी, मनोरंजन ४ बातें बनाना ५ समान
६ ढीठ वचन ।

अब सहवास सुन्दरी पाई ❊ धन्य होहुँ छबि सों छबि पाई
अति खिसियई[1], सकल हतज्ञाना ❊ मुग्ध, राम-पद तजि मन-प्राना

दो० लखनलाल ढिग गई पुनि, ठगीं चितइ तिन ओर ।
अनुज न कहुँ घट बन्धु सों, अनुपम रूप-किशोर ।।
लखन गुनी, गर वसन धरि, वनितन दीन लजाय ।
करैं मसखरी राम सन, लखौं सरिस तिन माय ।। १४६ ।।

कोशल-कुअँर चारि छबिखानी ❊ लोचन करहिं सनाथ सयानी
निज अनुरूप कामिनिन पाई ❊ रंग रसाल रमत सब भाई

परशुराम का दर्प-चूर्ण

भोर उदित रविकिरन-समाजा ❊ सभा सपरिजन भूप विराजा
बजत जनक-घर अनँद बधाई ❊ किय बशिष्ठ याचना-बिदाई
कातर जनक, अतुल पितु-मोहा ❊ कहत, दुसह तत्काल बिछोहा[2]
वर्ष एक आयसु पहुनाई ❊ रहैं जनकपुर सिय-रघुराई
बिहँसि प्रबोधि कहेउ अजनन्दन ❊ प्रान छाड़ि तन तुमहिं समर्पन
तौ अरदास[3] करिय स्वीकारू ❊ मम गृह सकल लहैं जेंवनारू

हासिया बलेन राम सबार गोचर ❊ सुन्दरीर सहवासे हइव सुन्दर
परिहास करिबे कि हाराइल ज्ञान ❊ श्रीरामेर चरणे मजाय मन प्राण
जेखाने बसिया आछे अनुज लक्ष्मण ❊ सेखाने चलिया जाय यत सखीगण
अग्रज येमन ताँर अनुज लक्ष्मण ❊ भुलिल रामेरे तारा हेरिया लक्ष्मण
गले वस्त्र दिया ब'ले लक्ष्मण गुणमणि ❊ रामे परिहास करे से मोर जननि
लज्जायुक्त हये तबे यत सखीगन ❊ पुनर्व्वार जाय यथा नर नारायन
एइ रूपे चारि स्थाने करि दरशन ❊ मानिल कामिनीगण सफल नयन
चारि भाइ तुल्य चारि लइया सुन्दरी ❊ नाना सुखे कौतुके वञ्चेन विभावरी

परशुरामेर दर्प-चूर्ण

प्रभात हइले रात्रि उदित तपन ❊ सभा करि वसिलेन यत बन्धुगण
वाजिन आनन्द वाद्य जनक भवने ❊ बिदाय मागेन गिया वशिष्ठ ब्राह्मणे
जनक बलेन अति हइया कातर ❊ राम सीता राखि जाओ एकटि वत्सर
हासिया बलेन तबे अजेर नन्दन ❊ शरीर लइया जाब राखिया जीवन
वलेन जनक राजा शुन हे वचन ❊ सकले आमार घरे करिबे भोजन

१ लज्जावश संकोच २ वियोग ३ निवेदन ।

दसरथ पुलकि अनुमती दीनी ※ उतै विदेह व्यवस्था कीनी
रानी कुशल रसोई - रंधन ※ एक द्रव्य सों शत-शत व्यञ्जन
करि असनान जनात-बराती ※ परिजन-पुरजन, जाति-बिजाती
पंगत-क्रम[1], पारुस रुचिकारी ※ भोजन लहि सुतृप्त नर-नारी
रामलला जेंवनार बिराजे ※ षटरस, दूध, दही सब साजे
भोजन तदुपरि कीन आचमन ※ सादर पान सुगंधित अर्पन
विगत-निसावत[2] पुनि श्रीरामा ※ मिथिलाधाम कीन विश्रामा
भोर होत नृप लीन बिदाई ※ सजा अवध-दल, आयसु पाई

दो० दान अपरिमित दुखिन दै, दीन अयाचक कीन।
चारि दोल[3] चढ़ि, चले सब, कुअँर-बधू आसीन ॥ १५० ॥

माथे मौर, दिव्य परिधाना ※ तेज सरूप, सोह धनुबाना
भाइन सहित दूबदल श्यामा ※ चंदोलन अरूढ़ श्रीरामा
मुदित, अवध तन, नृप पग दीना ※ स्यंदन दिव्य वशिष्ठ असीना
सोइ छन चहुँ अपसकुन निहारी ※ द्विजवर! कस विपरीत बयारी[4]
कस होनी? कस विपति-विरोधा? ※ सुनि वशिष्ठ भूपतिहिं प्रबोधा
हे कोशलपति! तव सुत चारी ※ राजत कुशल समुख[5] सुखकारी

भाल-भाल वलिया दिलेन अनुमति ※ आयोजन करिलेन जनक भूपति
राजराणी घरे गिया करेन रन्धन ※ एक अन्न सह आर पञ्चास व्यञ्जन
स्नान करि आसिया सकल प्रजागण ※ आनन्दित हैया सबे करेन भोजन
भोजन करेन राम परम हरिषे ※ दधि दुग्ध दिल राजा भोजन विशेषे
सुतृप्त हइया सबे करे आचमन ※ कर्पूर ताम्बूले करे मुखेर शोधन
से रात्रि थाकेन राम तथा पूर्व्ववत् ※ प्रातःकाले विदाय मांगेन दशरथ
राम सीता चतुर्द्दोले करि आरोहण ※ दीन द्विजगणे धन किय वितरण
दिव्य वस्त्र परिधान माथाय टोपर ※ दुर्व्वादलश्याम राम हाते धनुःशर
परे तिन भ्राता चापिलेन चतुर्द्दोले ※ परम आनन्द राजा अयोध्याय चले
दिव्य रथे चड़िलेन वशिष्ठ ब्राह्मण ※ किन्तु चतुर्द्दिके राजा देखे अलक्षण
राजा वलिलेन शुन वशिष्ठ ब्राह्मण ※ चारिदके देखि केन एत अलक्षण
कि जानि केमने हवे विपद घटन ※ वशिष्ठ वलेन शुन अजेर नन्दन
चारि दिके चारि पुत्र देख विद्यमान ※ के करिते पारे तव अशुभ विधान

---

१ ज्योनार में बैठने की व्यवस्था २ पिछली रात के समान ही ३ वर-वधू योग्य सवारी, पालकी, (डोला शायद इसी का अपभ्रंश है?) ४ उलटी हवा ५ साक्षात्।

का सक तव अपसकुन बिचारे ※ सुनत, बजे पुनि कटक नगारे
बाजत तुमुल घोष नभ छावा ※ परशुराम-हिय कंपन आवा
बाजन-रव मिथिलापुर एही ※ वरन कीन कोउ नृप वैदेही
कवन भूप ? सोचत भृगुराई ※ जनक व्यस्त इत बागबिदाई[1]
वर-कन्या-विछोह, गर भरहीं ※ लख-लख चुंब भूप मुख करहीं
कहत, सिया भरि अंक, भुवाला ※ लली! कीन अब लौं प्रतिपाला
कबौं-कबौं पितुपुरी बिसूरी[2] ※ सास-ससुर सेइय पगधूरी
कोउ प्रति ईर्षा, राग न द्वेषू ※ सुख-दुख सम, अदृष्ट[3] संतोषू
सतत स्वामिपद सेइय सीता ※ करुन, सीख पितु दीन सप्रीता
तब लौं आइ सखी, सहबोली ※ परिचारिका करुन रस घोली

सो० चली सबन तजि सीय, दरस चन्द्रमुख होय कब?
सकल-दसा दयनीय, सिसकि-सिसकि रोदन करहिं ॥ १५१ ॥

जनक बिदा सिय-रघुवर कीना ※ शत सहस्र धन विप्रन दीना
सोइ अवसर कर कठिन कुठारा ※जामदग्न्य[4], 'रहु! रहु!' ललकारा
खड्ग, चर्म[5] तन, सर-कोदण्डा ※ महा भयानक वेष प्रचण्डा
भीमवेग धावत करि गर्जन ※ प्रस्तुत रुद्ररूप भृगुनन्दन
गात विकंपित कोसलराई ※ राम-लखन मुनि चरनन लाई[6]

बाजनार महाशब्द उठिल आकाश ※ परशुरामेर चित्ते लागिल तरास
मिथिलाते शुनि केन वाद्येर बाजना ※ सीता के विवाह वुझि करे कोन जना
मने मने युक्ति करे सेथा मुनिवर ※ हेथा राजा विदाय करेन कन्यावर
लक्ष लक्ष चुम्ब दिया वदन कमले ※ जनक करिया कोले जानकीरे बले
करिलाम बहु:दुखे तोमारे पालन ※ बारेक मिथिला बलि करिओ स्मरण
श्वशुर श्वाशुड़ि प्रति राखह सुमति ※ राग द्वेष असूया ना कर कार प्रति
सुख दु:ख ना भाविओ यआछे कपाले ※स्वामीसेवा सीता ना छाड़िओ कोन काले
झियारी वहुड़ी सव आसिया तखन ※ गलाय धरिया सब जुड़िल क्रन्दन
आमा सवा छाड़िया कि चलिला जानकी ※ आर कि हइबे देखा सीता चन्द्रमुखी
राम सीता विदाय करिलेन जनक ※ द्विजेर दिलेन धन सहस्र सख्यक
हेन काले जामदग्न्य हातेते कुठार ※ रह रह बलिया डाकिछे बार बार
खड्ग चर्म्म धनु शर शरीरे ग्रथित ※ भीमवेषे भार्गव हइल उपस्थित
महा-भयानक वेश देखिया मुनिर ※ दशरथ भूपतिर कम्पित शरीर

---

१ बारात विदा होने पर, ग्राम की सीमा तक सम्बन्धी को विदा करने जाने की रस्म २ याद करते हुए ३ भाग्य पर ४ परशुराम ५ मृगचर्म ६ पैरों पर झुकाकर।

सविनय मौन; निरखि सोइ काला ※ परशुराम कह, सुनिय भुआला!
जनक-गेह शिवधनु केहि भंगा ※ को तुम? वरनउ सकल प्रसंगा
मम सुत राम, नाथ! तव दासा ※ सोइ-कर छुवत प्रतञ्च विनासा
अग्निपुञ्ज कोपे भृगुरामा ※ मम समता[1] राखेसि सुत-नामा
परशुराम भूतल मोहिं जानी ※ आन[2] राम किमि नाम बखानी
सो सुनि, नरपति विनय सुनाई ※ छमहु दोस तपसी द्विजराई
रक्तनयन कह, सुनु अज्ञानी! ※ निपट विप्र-तपसी अनुमानी
बोलत मन्द, अबुझ मम करनी ※ क्षत्रिय-हीन कीन यत[3] धरनी
मम कुठार कृत इकइस बारा ※ बही मही चहुँ शोनित-धारा
कश्यप सौंपि धरा नित दीनी ※ 'तापस द्विज' कहि, ताकर हीनी
मम गुरु-चाप, मूढ़ जोइ भंगा ※ मस्तक-रहित करौं सोइ अंगा

सो० कहेउ भूप, भय मानि, महाबीर विक्रम विपुल !
छमहु सुबालक जानि, तबहिं लखन बोले बचन ॥ १५२ ॥

वीरन विरद-बखान न हेतू ※ सो गावत निज मुख भृगुकेतू
क्षत्रि विनास सराहेउ जो बल ※ सोइ जुग राम-लखन-बिन भूतल
सुनि कटु गिरा-लखन विषसानी ※ भृगुपति कोपि कहेउ इमि बानी

एक हाते रामे धरि अपरे लक्ष्मणे ※ मुनिर चरणे राजा दिल सेइ क्षणे
मुनि बले दशरथ वलि हे तोमारे ※ धनुक भाङ्गिल केवा जनकेर घरे
दशरथ कहेन आमार पुत्र राम ※ गुण दिते धनुके हइल दुइखान
महाकोपे ज्वलिया बलेन भृगुराम ※ मम सम करि राखियाछ पुत्र नाम
आमि त परशुराम विदित भूतले ※ हेन जन आछे के ये राम नाम बले
ए कथा शुनिया राजा बलेन वचन ※ दोष क्षमा कर प्रभु तपस्वी ब्राह्मण
बलेन परशुराम आरक्त नयन ※ तुच्छ ज्ञान कर देखि तपस्वी ब्राह्मण
निःक्षत्रिया भूमि करि तिन-सप्तबार ※ रक्ते नदी बहाइल आमार कुठार
समस्त पृथिवी करि कश्यपेर दान ※ तपस्वी ब्राह्मण बलि कर अपमान
आमार गुरुर धनु भाङ्गिलेक जेइ ※ ताहाके बधिया आजि प्रतिफल देइ
भूपति बलेन भये कम्पित शरीर ※ बालकेर अपराध क्षम महावीर
रुषिया कहेन तबे सुमित्रा-कुमार ※ कथाय कि फल कर वीरेर आचार
क्षत्रिय विनाश तुमि करेछ यखन ※ तखन ना जन्मेछिल श्रीराम लक्ष्मण
एतेक बलिल यदि सुमित्रानन्दन ※ कुपित परशुराम कहेन वचन

---

१ समान २ अन्य व्यक्ति को ३ जितनी भी, समस्त ।

जीरन[1] चाप भञ्जि नहिं पारा * मम धनु-गुन[2] चढ़ये निस्तारा
अस कहि धनुष दीन रघुराई * सिय मन उपज सोच अधिकाई
राम सुयोग[3] एक धनु तोरा * पितु-प्रन राखि वरन किय मोरा
पुनि भृगु आनि धरेउ धनु शूला * सौतिन सरिस किधौं[4] प्रतिकूला
दीन सदर्प चाप भृगुरामा * तासु भार बिनसइँ श्रीरामा
सो हँसि बाम-पानि[5] रघुबीरा * सहज लीन, अति पुलक सरीरा
कौतुक लखहु लखन ! धनुधारी * यहि धनुही गरिमा मुनि भारी
हे मुनिवीर ! धनुष किय अर्पन * तौ सर कीजिय नाथ समर्पन
खोई सुमति, कुमति भृगु छाई * निज-सर दीन पाणि[6]-रघुराई
बल-आहत, मुनि सायक दीना * सर-बिलगत[7] मुनि तेज-विहीना
दै भृगुपति निजकर हरि-अंसा * रहे सहज द्विजकुल-अवतंसा
बोले बचन भानुकुलकेतू * धनु-प्रतंच-धारन कहु हेतू !
जो तव चाप तजै तव सायक * तो मुनि तव पंचत्व-विधायक[8]

दो० हेरि, लखन-मन जानिबे, मन कीन्हेउ भगवंत ।
कहेउ अनुज, प्रत्यंच धरि, कीजिय संसय अंत ॥ १५३ ॥

जीर्ण धनु भाङ्गिया ये देखाइल गुण * आमार धनुके राम देह देखि गुण
एतेक कहिया धनु दिलेन तखन * जानकी भावेन नम्र करिया बदन
एक बार धनुक भाङ्गिया अकस्मात् * करिलेन विवाह आमारे रघुनाथ
आर बार धनुक आनिल भृगुमनि * ना जानि हइबे मोर कतेक सतिनी
धनुखान भृगुराम दिल बड़ दापे * मरे त मरुक राम धनुकेर चापे
धनुक देखिया अति प्रसन्न अन्तरे * हासिया धरेन राम धनु वाम करे
श्रीराम बलेन हे लक्ष्मण धनुर्द्धर * ए धनुर गरिमा करेन मुनिवर
श्रीराम बलेन शुन ओहे वीरवर * धनु यदि दिले तवे देह एक शर
सुवुद्धि परशुरामे कुवुद्धि लागिल * तखनि रामेर हाते शर योगाइल
जेइ श्रीरामेर हाते मुनि शर दिल * आपनार तेज राम सकल हरिल
आपनार तेज राम लइल यखन * हइल मुनिर पुत्र सामान्य ब्राह्मण
श्रीराम वलेन शुन मुनिर नन्दन * धनुकेते गुण दिब किसेर कारण
तोमार धनुके यदि गुण दिते पारि * तोमार धनुकबाणे तोमारे संहारि
लक्ष्मणेरे जिज्ञासा करेन राम शेषे * धनुकेते गुण दिइ मुनिर आदेशे
लक्ष्मण बलेन शुन ज्येष्ठ महाशय * धनुकेते गुण दिया दूर कर भय

---

१ जीर्ण, पुराना २ धनुप की डोरी ३ संयोग से ४ अथवा ५ वायें हाथ में ६ हाथ में ७ अलग होते ही ८ मृत्यु का हेतु ।

पुलकि सकौतुक, सुनि, रघुराई ※ दिय प्रतंच-भृगुधनुष नवाई
धनुटंकार गगन लौं हाला ※ स्वर्ग देवगन, शेष पताला
त्राहि-त्राहि रघुपति ! रघुवीरा! ※ विकल सहसफन थिर न सरीरा
चाप निवारि हरौ उर-शूला ※ सो सुनि लखन कहेउ अनुकूला
करौ तात बासुकि कर त्राना ※ अनुज-बैन बिहँसे भगवाना
चाप उठाय, सबन प्रभु आगे ※ मुनि सों वचन कहन इमि लागे
हे मुनि ! बचेउ विप्रवध-अर्था ※ तदपि मोर सायक अव्यर्था[1]
रोध[2]-पताल, स्वर्ग-अवरोधू ※ कस कीजिय? मुनिवर अनुरोधू
परशुराम-मन उपजेउ ज्ञाना ※ चीन्हेउ दयासिन्धु भगवाना
विना धर्म-पथ, आन उपाऊ ※ रोधिय स्वर्ग, सुलभ जनि काऊ
सायक तजेउ राम करि क्रोधा ※ भार्गव-स्वर्गपंथ अवरोधा ?
विनयेउ परशुराम श्रीरामा ※ पुनि तप हेतु गये नितधामा
पुलकित मनौ गवा धन पाई ※ दसरथ मन प्रमोद अधिकाई
हे सुत! तात! अंक गहि लीन्हा ※ राम कमल मुख चुम्बन कीन्हा
गुरु सों बचन कहन इमि लागे ※ बाजन अब न प्रयोजन आगे
रामादिक चंदोल सुहाये ※ अवध ओर पुनि भूप सिधाये

ए कथा शुनिया राम हासिया कौतुके ※ धनु नोयाइया गुण दिलेन धनुके
धनुक टङ्कार गिया उठिल गगन ※ पाताले वासुकी काँपे स्वर्गे देवगण
पाताले वासुकी वले देव रघुवीर ※ धनुखान तोल मोर बुक होक स्थिर
लक्ष्मण वलेन शुन अग्रज श्रीराम ※ धनुखान तोल ये वासुकि पाय त्राण
एइ कथा शुनिया हासिया रघुनाथ ※ तुलिलेन सेइ धनु सवार साक्षात्
श्रीराम वलेन शुन मुनिर नन्दन ※ तोमारे ना मारि ब्रह्मवधेर कारण
अव्यर्थ आमार बाण कि हवे एखन ※ स्वर्ग रोध करि किम्वा पाताल भुवन
ये आज्ञा वलिया वले मुनिर नन्दन ※ चिनिलाम तोमारे ये तुमि नारायण
धर्म्मद्वारा स्वर्ग पाय नाहि हय आन ※ स्वर्गपथ रुद्ध कर देव भगवान
एक शर मारिलेन ना करिया क्रोध ※ परशुरामेर करे स्वर्ग - पथ रोध
श्रीरामेर स्तुति करे श्री परशुराम ※ तपस्या करिते मुनि यान नित्यधाम
दशरथ पाइलेन येन हारा धन ※ आनन्दित तेमनि हइल ताँर मन
पुत्र पुत्र बलिया करेन रामे कोले ※ लक्ष लक्ष चुम्ब देन वदन कमले
भूपति वलेन शुन वशिष्ठ ब्राह्मण ※ वाजनाय आर किछु नाहि प्रयोजन
चतुर्द्दोले श्रीराम करेन आरोहण ※ अयोध्याते द्रुतगति करेन गमन

१ अचूक २ रुद्ध कर दे—रोक दे।

दो० कटक सहित पहुँचे तबै, सिद्धाश्रम श्रीराम।
सकल मुनिन-पद बंदि प्रभु, सविनय कीन प्रनाम ॥ १५४ ॥

मुनिवनितन रघुपति-सिय देखी ❋ उर अन्तस तिन हर्ष बिसेखी
राम सरिस, सिय सब गुनखानी ❋ धन्य पिता, धनि जननि बखानी
आगे चलि सरयू करि पारा ❋ नगर अयोध्या नृप पग धारा
शोभा अकथ, अवध-छबि न्यारी ❋ प्रमुदित बाल, वृद्ध, नर-नारी
नभ चँदवा छबि देत विताना[1] ❋ ध्वजा-पताका रंजित नाना
सुता-कुलबधुन, निज-निज द्वारे ❋ घृत प्रदीप दीपहिं सँझियारे
कनककलस, बंदन अमरारी[2] ❋ नरियल रंभा[3] सगुन सुपारी
ग्राम प्रदच्छिन करि अजनन्दन ❋ नगर समीप बजाये बाजन
कौशल्यादिक तीनिउ रानी ❋ परछन बधुन चलीं सुखसानी
चलीं पुरबधू तिन सँग धाई ❋ घर-घर पुरी बजत सहनाई
जय-जय ! सुमनवृष्टि सुरवृन्दा ❋ नाचैं, उर उल्लास अनन्दा
बहुअन बगल सोबरन-कलसी ❋ दै सुभ सबन आतमा हुलसी
हरा-भरा तिन सीस धराई ❋ केला खील तहाँ छिटकाई
कुल अनुरूप सुमंगल रीती ❋ सबिधि सबै पुरवइँ अति प्रीती

सिद्धाश्रमे श्रीराम दिलेन दरशन ❋ प्रणाम करेन सबे मुनिर चरण
मुनिपत्नी आइल श्रीरामे देखिवारे ❋ राम सीता देखे तारा हरषि अन्तरे
इँहार जननी धन्या, धन्य एर पिता ❋ येमन गुणेर राम तेमनि ए सीता
तथा हैते चलिलेन परम हरिषे ❋ उत्तरिल गिया सवे आपनार देशे
अयोध्यार ये शोभा ता वर्णिते ना पारि ❋ आनन्द-सागरे मग्न बाल वृद्ध नारी
नाना वर्ण पताका उड़िछे नाना-स्थल ❋ उपरे चाँदोया शोभे गगन मण्डल
कुलबधू आर यत प्रजार कुमारी ❋ घृतेर प्रदीप ज्वाले द्वारे सारि सारि
सुवर्णेर पूर्ण कुम्भे दिल आम्रसार ❋ गुवाक कदली नारीकेल राखे आर
ग्राम प्रदक्षिण करे अजेर नन्दन ❋ ग्रामेर निकटे गिया वाजाय बाजन
कौशल्या कैकेयी आर सुमित्रा रमणी ❋ चारिवधू आनिते चलिल तिन राणी
सङ्गेते चलिल रङ्गे पुरवासी नारी ❋ सानन्द सकल पुरी वाजे तुरी भेरी
देवगण वरिषण करे पुष्पराशि ❋ जय दिया नाचे सवे आनन्द उल्लासि
चारि वधू कक्षे दिल सुवर्ण कलसी ❋ व्यवहार मत कर्म्म करे पुरवासी
कक्षे दिल कलसी मस्तके दिल डाला ❋ छड़ाइया फेले सेइ खाने खइ कला

१ तम्बू २ आम के पत्तों की वन्दनवार ३ केला।

सुभ साइति, रानिन मुँह देखा ❋ चन्द्रमुखिन लखि जूड़[1] विसेखा
अभरन, बसन, रतनमय भूषन ❋ नाना यौतुक[2] दीन सर्वजन

दो० यौतुक रघपति लहेउ जो, अतुलित विविध प्रकार ।
तासों परिपूरन भयेउ, अमित राम-भण्डार ।।
लहेउ सिया यौतुक यतक, निरखि रमा[3] सकुचाय ।
चारि कुअँर उत परसि पग, जननिन बन्देउ जाय ।।
रानिन दीन असीस बहु, धन सुत, आयु बखानि ।
सुतन लिये दसरथ अवध, मगन पाय सुखखानि ।।
सुख संपति सासन सकल, सुरपुर-स्वर्ग समान ।
सलिल सरिस कृतिवास इमि, ललित कीन हरिगान ।।
आदिकाण्ड गाथा परम, पावन इतै विराम ।
रचौं अयोध्याकाण्ड पुनि, बन्दि सियावर राम ।। १५५ ।।

।। आदिकाण्ड समाप्त ।।

वधूमुख शुभक्षणे राणीरा देखिल ❋ निरखिया चन्द्रमुख बुक जुड़ाइल
नाना विधि यौतुक दिलेन सर्व्वजन ❋ मणिमय आभरण वसन भूषण
यौतुकेते पान राम यत अलङ्कार ❋ ताहाते हइल पूर्ण ताँहार भाण्डार
पाइलेन सीतादेवी यतेक यौतुक ❋ निजे लक्ष्मी तिनि ताँर ए नहे कौतुक
श्रीराम लक्ष्मण आर भरत शत्रुघ्न ❋ वन्दिलेन गिया सबे मायेर चरण
चारि पुत्रे आशीर्व्वाद करे राणीगण ❋ चिरजीवी हओ पाओ बहु पुत्र धन
चारि पुत्र ल'ये राजा सुखी बहुतर ❋ सुखे राज्य करे येन स्वर्गे पुरन्दर
कृत्तिवास रचे गीत अमृत - समान ❋ एत दूरे आदिकाण्ड हैल समाधान

।। आदिकाण्ड समाप्त ।।

---

१ शीतल २ दहेज ३ लक्ष्मी ।

* श्रीगणेशाय नमः *

अयोध्या काण्ड

श्लोक—वामांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके,
भाले वालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट् ।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्व्वाधिपः सर्व्वदा,
सर्व्वः सर्व्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥ १ ॥
प्रसन्नतां यो न गतोऽभिषेकतस्तथा न मम्लौ वनवासदुःखतः ।
मुखाम्बुजं श्रीरघुनन्दनस्य मे सदास्तु तन्मञ्जुलमंगलप्रदम् ॥ २ ॥
नीलम्बुजश्यामलकोमलांगम् सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महाशायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥ ३ ॥

दो० आदिकाण्ड स्वागत निरखि, हिय न समात हुलास ।
अवधकाण्ड प्रस्तुत करहुँ, ज्यों बरनेउ कृतिवास ॥

श्रीरामचन्द्र के राजा होने का प्रस्ताव

अथ शुचि काण्ड-अयोध्या श्रवणम् * कैकयि-वचन राम-वनगमनम्
विमलासन पट निर्मल भूपा * वृद्ध, धवल छबि केश अनूपा
सिंहासन दसरथ जहँ सोहा * भूपन जुरि मधुबैनन मोहा
राम-बिवाह, देहिं नजराना * हय, गज, रतन, आभरन नाना
जोरि जुगुल कर, नावहिं माथा * धन्य! धन्य! दसरथ नरनाथा
हे नृप-मुकुट! विनय सुनि लीजै * उचित, रामपद रामहिं दीजै

श्रीरामचन्द्रेर राजा हइवार प्रस्ताव

द्वितीय अयोध्याकाण्ड शुन सर्व्वजन * कैकेयीर वाक्ये राम जाइबेन बन
वृद्ध राजा दशरथ, शिरे शुभ्रकेश * आसन वसन शुभ्र, शुभ्र सर्व्ववेश
राजत्व करेन राजा बसि सिंहासने * आइल सकल राजा राज-सम्भाषणे
हस्ती अश्व नाना रत्न नाना आभरण * विवाह-यौतुक रामे देन राजगण
नमस्कार करि बले जोड़ करि हाथ * महाराज दशरथ तुमि लोकनाथ
एक निवेदन करि शुन नृपवर * श्रीरामेरे राजा कर सर्व्व गुणाकर

बारी वयस, जासु भय पाई ※ चलेउ दनुज मारीच बराई
त्रिभुवन, अतुल वीर गुनसागर ※ लखि तिन नृप! सुख लहै चराचर
सुनि सिख, उर न अनन्द समाई ※ सो दबाय, नृप करि चतुराई
रूखे रुख भूपति इमि भाषा ※ 'रामहिं राजु' सबन अभिलाषा
खल दलि[1], प्रजा सुवन सम तोषा ※ वृद्धहिं राज-हरन केहि दोषा?
अन्तस[2] मोद, प्रकट अति कोपा ※ लखि, भूपन हिय-धीरज लोपा
तिन-भय बिहँसि, भूप समुझावा ※ लखि मसखरी[3], नृपन बल आवा
तजि भय, लेहु बशिष्ठ बुलाई ※ 'रामहिं-राजु' सबन सुखदाई
आयसु सुनि, उर अमित अनन्दा ※ दसरथ-पद बन्दत नृप-वृन्दा
सुहृदन टेरि, कहेउ नृप वचना ※ राम-तिलक शुभ कीजिय रचना

दो० फूले विविध प्रसून, छबि, चहुँ बसन्त मधुमास ।
भोर होत रघुबर-तिलक, आजु साज अधिवास ॥ १ ॥

सोइ-हित, सकल द्रव्य यहिलागे[4] ※ लाय, सँजूति, धरहु गुरु-आगे
स्यन्दन बेगि, सुमन्त्र! सजाई ※ आनहु मम गोचर रघुराई
सारथि धाय चलेउ सोइ काला ※ आनेउ राम, जहाँ महिपाला

बालक श्रीराम चुले पञ्चझुंटि धरे ※ मारीच राक्षस पलाइल याँर डरे
रामतुल्य वीर आर नाहि त्रिभुवने ※ राम राजा हइले सानन्द सर्व्वजने
अन्तरे सानन्द राजा शुनिया वचन ※ वाक्यच्छले सवार बुझेन राजा मन
श्रीराम हइले राजा सबार सन्तोष ※ आमि वृद्धकाले करिलाम किवा दोष
पुत्रवत् पालि प्रजा, करि दुष्टे दण्ड ※ कोनदोषे आमार घुचाओ राजदण्ड
आनन्दित अन्तरे, वाहिरे उष्ठ चापे ※ भूपतिर कोप देखि सर्व्वराजा काँपे
सवारे सभय देखि दशरथ कय ※ परिहास करिलाम, ना करिह भय
वशिष्ठेरे डाकि आनि कुलपुरोहित ※ रामे राजा कर सबे ह'ये हरषित
भूपतिर अनुज्ञा पाइया सर्व्वजन ※ करिल सकले ताँर चरण वन्दन
भूपति वलेन शुन पात्रमित्रगण ※ रामे राजा करिव, करह आयोजन
नानापुष्प - विकाश वसन्त चैत्रमास ※ कालि राजा हवे राम, आजि अधिवास
अधिवास करिते यतेक द्रव्य लागे ※ से सकल द्रव्य आहरण कर आगे
श्रीरामेर अधिवासे यत द्रव्य चाइ ※ से सकल आनि देह वशिष्ठेर ठाँइ
सुमन्त्र सारथि, तुमि चलह सत्वर ※ रथे करि आन रामे आमार गोचर
आज्ञामात्र सुमंत्र चलिल शीघ्रगति ※ श्रीरामेरे आनिल जेखाने महीपति

---

१ दमन करके २ मन में ३ मजाक ४ इसी समय ।

रथ तजि दूरि, उतरि भुइँ आये ❊ बन्दि चरन-पितु सीस नवाये
दै असीस, रघुबरहिं महीपा ❊ बैठारेउ हिय-हरषि समीपा
सिंहासन सुत-पितु छबि पाये ❊ सचिव-सभासद सकल सुहाये
तारावलि बिच पूनमचन्दा ❊ सो छबि सभा सच्चिदानन्दा
सुवनहिं संसद-समुख सिखावा ❊ विविध नीति-नृपधर्म बुझावा
प्रथमरानि-सुत तुम युवराजू ❊ पालहु प्रजा, सम्हारहु काजू
सुनि अरदास[1], सबन हित धारी ❊ सासन सदा भुवन जसकारी
राजनीति - पटु धर्मधुरीना ❊ नित्य कीर्ति, सुत! लहहु नवीना
यदपि परम रूपसि परनारी ❊ तदपि तासु तन दीठि[2] न डारी
बिलसति जो परबधू नरेसू ❊ बिनसति स्वयं, बिनासति देसू
पर-पीड़न, पर-हिंसाचारा ❊ कबहुँ न पर-धन-हरन विचारा
सरनागत-रिपु अभय प्रमाना ❊ विन अपराध हरन जनि प्राना
पूजि देव-द्विज पालहु धर्मा ❊ जप-तप-यज्ञ विहित शुभकर्मा
दो० नित इन-सुफल सुहावनी, कीरति लहहु ललाम ।
सज्जन-चित, सब-जनन प्रति, दया राखि, हे राम! ॥ २ ॥
दुखदायी नर रत-परनारी ❊ करनी सरिस दण्ड अधिकारी

कतदूरे रथ हैते नामिलेन राम ❊ पितार चरणे पड़ि करिल प्रणाम
आशीर्व्वाद करिलेन राजा श्रीरामेरे ❊ सिंहासने बसालेन हरिष अन्तरे
पिता-पुत्र वसिलेन सिंहासनोपरे ❊ पात्र मित्र सकले वेष्टित नृपवरे
नक्षत्र-वेष्टित येन पूर्ण शशधर ❊ सेइमत शोभित हइल रघुवर
पुत्रेरे शिखान पिता सभा-विद्यमान ❊ राजनीति धर्म्म आर विविध विधान
प्रथमा रानीर तुमि प्रथम नन्दन ❊ भूपति हइया कर प्रजार पालन
लोकेर आद्दाश तुमि शुनिवे जतने ❊ तोमार महिमा जेन सर्व्वत्र बाखाने
राजनीति-धर्म्म तुमि शिख सावधाने ❊ याहाते महिमा तव बाड़े दिने दिने
देखह परेर यदि परम सुन्दरी ❊ ना देखिह से सबारे ऊर्द्धदृष्टि करि
राजा यदि परदार करे व्यवहार ❊ आपनि से मजे पापे, मजाय संसार
राजा ह'ये पीड़ा दिले हय महापाप ❊ परलोके नरकेते पाय महाताप
परहिंसा परपीड़ा ना करिह मने ❊ कभू ना करिह राम लोभ परधने
शरण लइले शत्रु कर परित्राण ❊ अपराध बिना कारो ना लइओ प्राण
तप-जप धर्म-कर्म्म करिवे बिहित ❊ ना हइओ देव द्विज-भक्तिते रहित
यज्ञादिते वहु यश करिबे सञ्चय ❊ सर्व्वजने दयालु हइओ सदाशय
परदार परपीड़ा करे जेइ जन ❊ शास्त्र अनुसारे तारे करिबे शासन

---

१ फ़र्याद, नालिश २ दृष्टि ।

लखि अपराध, दण्ड सुविचारा ※ नृपहिं न दोष शास्त्र अनुसारा
दुखियन दया, सनेह अनाथा ※ सरिस न पुन्य अन्य रघुनाथा!
गुरु-द्विज-देव भक्ति परितोषू ※ रत सब-हित, कहुँ दुःख न रोषू
धर्म-नीति-सिख भूप बखानी ※ इत, हिय मुदित कौशलारानी
सुत-कल्यान हेतु बहु दाना ※ अन्न-वस्त्र-धन वितरन नाना
विप्र, ब्रह्मचारी, मुनि, चारन ※ सबन विविध सन्मान सुहावन
जेते लोक रानि जँह पाये ※ दियेउ बुलाय दान मनभाये
जमघट-सबन; जहाँ नरनाहा ※ रामतिलक सुनि भाग सराहा
कोउ गावत, कोउ नृत्य-विभोरा ※ 'क्लेश न रामराज', चहुँ सोरा[1]
राम-दरस हित, हुलसत आये ※ तिन सब अवध मान-सुख पाये
मातु-दरस हित, जननी-धामा ※ चले ललकि हिय पुनि श्रीरामा

श्रीरामराज्याभिषेक का अधिवास

गत सुखरैनि अरुन-छबि छाई ※ पितुढिग मुदित चले रघुराई
भक्तिभाव बन्देउ पितु-चरना ※ दशरथ-मुख पुनि आशिष-वचना

अपराध-मत दण्ड क'रो सावधाने ※ दोष नाहि राजार से शास्त्रेर विधाने
दुःखित अनाथ राम, यदि केह हय ※ ताहारे पालिले पुण्य, सर्व्व शास्त्रे कय
देव - गुरु - ब्राह्मणे तुषिबे भक्तिमने ※ देख, सर्व्वजन येन दुःख नाहि जाने
राजनीति-धर्म्म राजा शिखान रामेरे ※ शुनिया कौशल्या रानी हरिष अन्तरे
रामेर कल्याणे रानी करे नानादान ※ स्वर्ण-रौप्य अन्न-वस्त्र सहस्र प्रमाण
मुनि ब्रह्मचारी यत भट्ट-विप्रगण ※ सबाकारे देन रानी नानाविध धन
यत-यत लोक आछे यत-यत स्थाने ※ सबारे आनिया रानी तोषे नानाधने
आइल यतेक लोक राज-विद्यमाने ※ रामचन्द्र राजा हबे, शुनि भाग्य माने
केह नाचे केह गाय आनन्द विशेष ※ राम राजा हइले ना हबे कारो क्लेश
यत यत लोग आछे अयोध्या नगरे ※ रामेर निकटे जाय हरिष अन्तरे
सकलेर समादर करिया समान ※ जननी - दर्शने राम करेन पयान
मातृगृहे उपस्थित मने कुतूहली ※ अयोध्याकाण्डेते गान प्रथम शिकलि

श्रीरामेर राज्याभिषेके उद्योग ओ अधिवास

सुखेते वञ्चिया रात्रि उदित अरुणे ※ आनन्दे गेलेन राम पितृ-सम्भाषणे
भक्तिभरे पितार वन्देन श्रीचरण ※ रामेरे कहिल राजा शुभाशीर्व्वचन

---

१ शोर, कुलाहल।

लीन बिठाय सिंहासन भूपा ※ दोउ-हिय हर्ष-उमंग अनूपा
दशरथ कहेउ, ध्यान, सुत! दीजै ※ धर्म-कर्म चित दै, सुनि लीजै

दो० यज्ञ-श्राद्ध-तर्पन विहित, देव-पितर-ऋन हेत ।
छत्र धारि, पुनि प्रजागन, पालहु नेह समेत ॥ ३ ॥

सुफल यज्ञ, तुम सम सुत पाये ※ राजनीति, नृपधर्म निभाये
जीवन साँझ, वृद्ध मम गाता ※ कखन[1] मरन? कहि जात न ताता
तुमहिं राजपद देन सुहावा ※ पालहु प्रजा, मनहिं अति भावा
आजु घरी, सासन तव माथा ※ करहु दमन-रिपु, मित्र-सनाथा
पै, निसि सपन लखेउँ उतपाता ※ उदित धूम[2] नभ उल्कापाता
पूनम चन्द-ग्रहण जगरीती ※अमा-ग्रास-ससि[3], कस विपरीती?
असगुन बहु जंजाल कुसपना ※ गर्दभ चढ़ि, दच्छिन दिसि गमना
मृत्यु निकट जनु, असुभ बिसेखी ※ जीवन सफल तिलक तव देखी
अनुज भरत-हिय मर्म न जाना ※ तिन न राजपद तदपि विधाना
जेठ बराय[4], न लघु-अधिकारा ※ ताते राम सम्हारहु भारा[5]
इत-उत रिपु तव, राम! अनेका ※ अपन-बिरान, न सहज विवेका
को कँहि घरी बवण्डर-कारन ※ भल, मम-रहत छत्र करु धारन

सिंहासने बसाइल राजा श्रीरामेरे ※ पित पुत्र उभयेर आनन्द अन्तरे
राजा बलिलेन, राम कर अवधान ※ यत कर्म्म करियाछि, कहि तव स्थान
यज्ञ करि तुषिलाम यत देव गणे ※ तुषिलाम पितृलोके श्राद्ध ओ तर्पणे
राजा ह'ये करिलाम लोकेर पालन ※ पुत्र तोमा हेन पाइ यज्ञेर कारन
पालिलाम राजनीतिधर्म्म अनिवार ※ तोमारे करिब राजा भावियाछि सार
वृद्ध हइलाम आमि, मरिब कखन ※ तोमारे करिब राजा पाल सर्व्वजन
आजि हैते तोमारे दिलाम राज्यभार ※ स्वपक्ष पालन कर, विपक्ष संहार
किन्तु आजि कुस्वपने देखेछि उत्पात ※ आकाश हइते भूमे हय उल्कापात
पूर्णिमाय चन्द्रग्रास शास्त्रेते विहित ※ देखि अमावस्याय ए अति विपरीत
इत्यादि जञ्जाल आमि देखिनु स्वपने ※ गर्द्दभेर पृष्ठे चड़ि गेलाम दक्षिणे
कुस्वप्न देखिनु आजि, निकट मरन ※ राजा तुमि हओ तवे सफल जीवन
कनिष्ठ भरत, तार ना जानि आशय ※ तारे राज्य दिते कभु उपयुक्त नय
ज्येष्ठ-सत्त्वे कनिष्ठेर नाहि अधिकार ※ तुमि राजा हओ राम कर अंगीकार
कत-शत शत्रु तव आछे केतस्थाने ※ केवा शत्रु केवा मित्र, केवा ताहा जाने
आमि विद्यमाने धर छत्र नव-दण्ड ※ कि जानि आसिया पाछे के हय पाषण्ड

१ किस क्षण २ धूम्रकेतु ३ अमावस्या में चन्द्रग्रहण ४ टालकर ५ राज्यभार ।

भोर 'पुष्य', तव सासन-साजू ※ सुभ अधिवास 'पुनर्वसु' आजू
पितु सिख सुनि, पुनि पाय बिदाई ※ अन्तःपुर गमने रघुराई
कौशल्या सह-सखिन बिराजा ※ मुदित सातशत रानिसमाजा
सविधि देव-पूजन-रत रानी ※ राम-प्रवेस निरखि हुलसानी

दो० बन्दि मातु-पद, जोरि कर, बहुरि दण्डवत कीन।
कहेउ कथा रघुबर सकल, अखिल राजु पितु दीन ॥ ४ ॥

तिलक बिहान[1], आजु अधिवासू ※ मोहिं देन पद, सबन हुलासू
सुभ संबाद देन तव तीरा ※ आयेउँ मातु, कहेउ रघुबीरा
पूजहु देवि सकल विधि, जननी! ※ रहैं सदा मम-मंगल-करनी
सुनि उर मुदित, मातु अनुरागी ※ बहु सुत-कुशल मनावन लागी
चिरञ्जीव सुत, सब सुख-खानी ※ लहहु अनुग्रह - शंभुभवानी
तप अति कठिन महेस, मनावा ※ उदर सरिस तव सुत मैं पावा
सुभ छन तव जनमत मम धामा ※ राजमातु पद पायेउँ, रामा !
रानि सुमित्रा मम रसपागी ※ लखन तासु तव अति अनुरागी
तव कल्यान, सदा तव चिन्तन ※ सुहृद अनन्य सुमित्रानन्दन

आजि अधिवास पुनर्व्वसु सुनक्षत्र ※ पुष्य कल्य हइबे, धरिबे दण्ड-छत्र
एतेक बलिया रामे दिलेन विदाय ※ अन्तःपुरे रामचन्द्र गेलेन तथाय
बसेछेन कौशल्या वेष्टिता सखी वृन्दे ※ सातशत रानी तथा आछेन आनन्दे
देवपूजा करे रानी नाना उपहारे ※ हेनकाले श्रीराम गेलेन तथाकारे
रामेर देखेन रानी सहास्य - वदन ※ मायेर चरण राम करेन वन्दन
मायेर सम्मुखे दाँड़ाइया रघुनाथ ※ कहेन सकल कथा करि जोड़ हाथ
आमारे दिलेन पिता सर्व्व राज्यखण्ड ※ आजि अधिवास कालि पाव छत्रदण्ड
मोरे राजा करिते सबार अभिलाष ※ शुभ वार्त्ता कहिते आइनु तवपाश
नाना उपहार माता, कर इष्टपूजा ※ मम प्रति तुष्टा येन हन दशभुजा
एतेक शुनिया रानी हरषित - मन ※ रामेर कल्याण करिलेन अगनन
कौशल्या वलेन, राम, हओ चिरजीव ※ तोमारसहाय हौन पार्व्वती ओ शिव
अनेक कठोरे आमि पूजिया शंकरे ※ तोमा हेन पुत्र राम, धरिनु उदरे
शुभक्षणे जन्म निला आमार भवने ※ राजमाता हइलाम तोमार कारने
सुमित्रा सपत्नी से आमाते अनुरक्त ※ तार पुत्र लक्ष्मण तोमार वड़ भक्त
तोमार कुशल वहु चाहे सर्व्वक्षन ※ अति हितकारी तव सुमित्रानन्दन

---

१ कल सुबह।

कौशल्या बखान[1] लवलीना ❋ अन्तःपुर लछिमन पग दीना
मातहिं किय कर जोरि प्रनामा ❋ हेरि अनुज तन बिहँसे रामा
समुद सप्रेम अनुज लपिटाने ❋ बोले बचन सुधारस-साने
मन प्रति नेह अतुल तव धीरा ❋ बिलग न कोउ, दोउ एक शरीरा
परम सखा! मम सिर जदि राजू ❋ दोउ मिलि तासु सम्हारहिं काजू
कहि इमि वचन, विदा पुनि लीन्हा ❋ रानिन सकल सुभासिस दीन्हा
राम-लखन पितु ढिग; लखि भूपा ❋ कहेउ आजु सुभघरी अनूपा

दो० नारद आदि बशिष्ठ जे, सबै राज-रुख पाय।
आयोजन रघुवर-तिलक, करैं विविध हरषाय ॥ ५ ॥

अवध निमंत्रित बहु नृप-वृन्दा ❋ राम-राज सुनि, सबन अनन्दा
विद्याधरी, यूथ - गंधर्वा ❋ गीत - वाद्य - नर्तन - रत सर्वा
ललित घोष 'जय' चहुँ इकसंगा ❋ उड़ैं ध्वजा लख-लख बहुरंगा
हय, गज, रथ, सारथि, बहु बाजा ❋ सदल नृपन बहुरंग समाजा
अथ अधिवास मुनिन मन दीन्हा ❋ रामहिं सुमिरि वेद-ध्वनि कीन्हा
ढिग-ढिग नरियल सगुन सुपारी ❋ पुरबालन[2] घृत-दीप सवाँरी
विमल रतन चहुँ झलमलकारी ❋ ध्वजा-विरञ्जित सजीं अँटारी

एतेक कौशिल्यादेवी कहिलेन कथा ❋ हेनकाले श्रीलक्ष्मण आइलेन तथा
लक्ष्मणेरे देखिया हासेन रघुनाथ ❋ कौशल्यारे वन्देन लक्ष्मण जोड़ हाथ
लक्ष्मणेरे प्रेमभरे दिया राम कोल ❋ कहेन सहास्य मुखे कत मिष्ट बोल
मम भक्त भाइ तुमि परम सुस्थिर ❋ तुमि आमि भिन्न नहि, एकइ शरीर
आमार हितैषी तुमि, यदि पाइ राज्य ❋ उभयेते मिलिया करिब राजकार्य्य
एतेक बलिया राम हइला विदाय ❋ आशीर्व्वाद करिल सकल रानी ताँय
गेलेन पितार काछे श्रीराम-लक्ष्मण ❋ राजा बले, आइस राम, हैल शुभक्षण
बशिष्ठ नारद आदि आइल सेस्थाने ❋ आज्ञा पेये आयोजन करे सर्व्व जने
निमन्त्रण करिया आनिल राजगन ❋ रामराजा हबेन सकल हृष्टमन
विद्याधरी नाचे, गाय गन्धर्व्वे संगीत ❋ चतुर्भिते जयध्वनि शुनि सुललित
लक्ष-लक्ष पताका उड़िछे नानारंगे ❋ नाना देश हैते राजा आसे सैन्यसंगे
नाना रंगे रथ-रथी हस्ती घोड़ा साजे ❋ नानाजाति वाद्य शुनि नानादिके बाजे
अधिवास करिते आइल ऋषिमुनि ❋ रामजय बलिया करिछे वेदध्वनि
नारिकेल-गुवाक रोपिल सारि-सारि ❋ घृतेर प्रदीप ज्वाले प्रजार कुमारी
नानारत्ने निर्म्माइल लक्ष-लक्ष घर ❋ विविध पताका उड़े चालेर उपर

१ प्रशंसा में २ नगर की कुमारियाँ।

रतन-जटित शोभित परिधाना ❊ अवध-प्रजा उल्लास महाना
रत-रसरंग लोक दिग्देसा ❊ जुरे अवध, हिय हर्ष बिसेसा
उत्सव-दरस सुरन मन कीना ❊ निज-निज बाहन नभ-आसीना
शिव, विरञ्चि, सुरगन, सुरराजू ❊ अखिल भगवती देवि-समाजू
ते अधिवास सकौतुक लखहीं ❊ वर्षन-सुमन गगन सों करहीं
देखि मुनिन मन नायेउ माथा ❊ पाद-अर्घ्य पूजेउ रघुनाथा
कहेउ बशिष्ठ, राम-अधिवासा ❊ होय उचित जिमि शास्त्र प्रकासा
छत्र-दण्ड पितु-रहत[1] सम्हारी ❊ सुवन ययाति नहुष[2] अनुसारी
पुनि स्वस्तयन बशिष्ठ उचारा ❊ भुवन राम-जयघोष प्रसारा

सो० निरखि पूर्ण अधिवास, पुलकि, चले सुरगन सरग।
नर्त-गीत-रत-रास, अवध अखिल बनिता सकल ॥ ६ ॥

राम सिया उपवास, हुलासा ❊ चन्दन चर्चित अंग सुवासा
धन-संपदा सबन लहि दाना ❊ कौतुक लखि गृह कीन्ह पयाना
शुभ सुहूर्त पूरन अधिवासा ❊ नृप सन हरषि बशिष्ठ प्रकासा
सुनि बिहँसे, हिय प्रमुदित भूपा ❊ द्विजन तृप्त किय, दान अनूपा

पृथ्वीते आछे यत नाना उपहार ❊ ताहा आनि लक्ष-लक्ष भरिल भाण्डार
नाना रत्ने शोभित वसन परिहित ❊ अयोध्यार यत लोक सबे आनन्दित
आइल देशेर लोक अयोध्यानगरे ❊ केह नाचे केह गाय सानन्द अन्तरे
अधिवास देखिते आइल देवगन ❊ अन्तरीक्षे रहे सबे चापिया बाहन
ब्रह्मा-शिव-शक्र आदि यत देवगन ❊ भगवती आदि करि देवी अगनन
अधिवास देखिते आसिया सर्व्वजन ❊ कौतुकेते पुष्पवृष्टि करेन तखन
ऋषिगणे देखिया उठिया रघुनाथ ❊ पाद्य अर्घ्य दिया पूजे करि प्रनिपात
बशिष्ठ वलेन, राम, शास्त्रेर विहित ❊ तव अधिवास आमि करि जे उचित
पितृ विद्यमाने धर दण्ड आर छाति ❊ नहुष राजार येन तनय ययाति
वशिष्ठ करेन सुमंगल वेदध्वनि ❊ अखिल भुवने रामजय-शब्द शुनि
अधिवास रामेर हइल समापन ❊ आनन्दे देखिया स्वर्गे गेल देवगन
जय-जय हुलाहुलि करे रामागन ❊ नृत्य-गीते आनन्दित अयोध्याभुवन
राम-सीता उपवासी रहे दुइजन ❊ चन्दने चर्च्चित अंग सकौतुक मन
नाना रत्न धन सबे दिलेक यौतुक ❊ निजालये गेल सबे देखिया कौतुक
बलेन बशिष्ठमुनि राजार सदने ❊ अधिवास रामेर हइल शुभक्षने
शुनिया हासेन राजा आनन्दित मने ❊ नानारत्न दाने राजा तुषित ब्राह्मणे

१ पिता की मौजूदगी में २ नहुष राजा के पुत्र ययाति के समान।

सन्ध्या विगत नखत नभ छाये ❋ लखि अधिवास, सकल गृह आये
तन पट दिव्य, गंध चहुँ छाई ❋ सुरभि-सुमन, सुख निद्रा आई
निसा छीन, रवि-वैभव जागा ❋ मन अति मोद, शयन सब त्यागा
सुनि अभिषेक-राम सुखकारी ❋ विह्वल अति सुर-मुनि, नर-नारी

श्रीरामचन्द्र की राज्यप्राप्ति पर सब प्रफुल्लित

छ० हय-गज-रथ साजन, बहु बिधि बाजन, मुनिगन जय-जय करहीं।
धनवन्त-भिखारी, चहुँ जयकारी, उर लावत, सुख लहहीं॥
शिशु-नारि सुहासिन, सुमन सुबासिन, घर-घर लखत प्रमोदा।
सुरवसन सवाँरी, पुरनरनारी, नाच-गान रत-मोदा॥
दुख-क्लेश नसावन, सबन सुहावन, राम-तिलक सुखकारी।
त्रिभुवन-प्रिय रामा, पावन नामा, मुक्तिदैन भयहारी॥
बैकुण्ठ निवासी, भार विनासी, राम विष्णु अवतारा।
सब जन सुख पावैं, अस मन आवैं, चिदानन्द तन धारा॥
सब सोक भुलाने, आनँद साने, अखिल अवधपुर वासी।
सुर-पट-आभूषन, दिव्य सोह तन, विह्वल चहुँ सुखरासी॥

हइल बेलार शेष नक्षत्र गगने ❋ अधिवास देखि घरे गेल सर्व्वजने
सुगन्धि - पुष्पेर गन्ध बहे चतुर्भित ❋ देव तुल्य वेश परि सबाइ निद्रित
रात्रि अवसान हय, सूर्येर उदय ❋ शयन त्यजिल सबे सानन्द हृदय

श्रीरामचन्द्रेर राज्य-प्राप्तिते सकलेर आनन्द

रथ रथी घोड़ा साजे, नाना रंगे बाद्य बाजे, मुनि सब करे जयध्वनि।
जय-जय हुलाहुलि, करे सबे कोलाकुली, सर्व्वलोक कि दुःखी कि धनी॥
सब लोक आनन्दित, गन्ध - पुष्पे सुशोभित, आमोद प्रमोद सब घरे।
स्वर्गपुरी तुल्य वेष, अयोध्यार सर्व्वदेश; नाचे - गाय हरिष अन्तरे॥
सबे भावे रघुपति, हइबेन महीपति, घुचिल सबार आजि क्लेश।
ना हइबे दुःख शोक, आनन्दित सर्व्वलोक, निस्तार पाइल सर्व्व देश॥
घुचिल सकल भय, सबाइ आनन्दमय, राम नाम पाइबे निष्कृति।
राम विष्णु अवतार; लवेन सबार भार, वैकुण्ठेते करिबे बसति॥
एतेक भाविया मने, आनन्दित सर्व्वजने; आनन्देते पासरे आपना।
अयोध्यार यत लोक, भुलिल सकल शोक, आनन्दे पूरित सर्व्वजना॥
नाना वस्त्र अलंकार, परिधान सबाकार, रूपे-वेशे देव अवतार।
आनन्दे विह्वलप्राय, रामगुण सबे गाय, जय - जय करे वार बार॥

पुनि-पुनि गुन गावा, जय-जय छावा, बनितन उपज उमंगा ।
बनि रघुपति-दासी, सब दुख नासी, लहैं विविध सुखसंगा ।।
अमरित घट तुल्या, काण्ड अयुध्या, श्रवन न पातक-योगू ।
कृत्तिवास बखाना मानस गाना, अन्त स्वर्ग-सुख-भोगू ।।

भरत को राज्य और राम को वनवास दिलाने की मन्थरा की सलाह

आम्रसार युत सुबरन झारी * यथा शास्त्र सब विधि शुभकारी
मञ्चन रतन-झालरी सोहा * पथ बहुरंग पताकन मोहा
घर-घर कनक-कलश मन लोभा * रत्नावली चौतरन शोभा
रत्न - जटित सुरपुरी सरूपा * रम्य सकल छबि सुभग अनूपा
सुरपुर यथा सकल छबिखानी * मंगलपुरी अवध दरसानी
भावी अमिट, न मेटनहारा * कब खसि परैं विपत्ति-पहारा
शाप अप्सरा दुन्दुभि पाई * लै भुइँ जनम मन्थरा आई
कूबर तासु काँस-घट रूपा * कुटिल, क्रूर - कर्मिणी अनूपा
दो० कैकयि-दासी मंथरा, कुअँर भरत कै धाय ।
राम-विपति कर मूल सो, रची विरञ्चि बनाय ।। ७ ।।
नृपति, विवाह, लही यह दासी * राम-तिलक जिन ऊबासाँसी

अयोध्या नगरवासी, वले सब दास - दासी, मने ह'ये अति हरषित ।
घूचिबे सवार दुख, भुञ्जिबे विविध सुख, एत बलि सबे आनन्दित ।।
मधुर अयोध्याकाण्ड, शुनिते अमृतभाण्ड, याते हय पापेर विनाश ।
रामायण जेइ शुने, कृत्तिवास ओझा भने, हय अन्तकाले स्वर्गवास ।।

भारत के राजा करिया राम के वने पाठाइते कैकेयीर प्रति कुब्जीर मन्त्रणादान

पूर्ण स्वर्ण कुम्भेर उपरे आम्रसार * शास्त्रेर विहित सब मंगल आचार
नाना रत्ने निर्म्माइल टुंगी शते-शते * नाना वर्ण पताका उड़िछे प्रतिपथे
प्रति घरे शोभा करे सुवर्णेर झारा * नाना रत्न लक्ष-लक्ष निर्मित चौतरा
नानारत्ने निर्मित आगार सारि-सारि * जिनिया अमरावती रम्यवेशधारी
इन्द्रपुरे येमन सबार रम्य वेश * तेमनि मंगलयुक्त अयोध्यार देश
दैवेर निर्ब्बन्ध कभु ना हय खण्डन * के जाने पड़िबे आसि प्रमाद कखन
पूर्व्वे जन्मेछिल ये दुन्दुभि अप्सरा * जन्मिल से कुब्जी ह'ये नामेते मन्थरा
तार पृष्ठे कुब्ज येन भरन्त डाबरी * कुटिला कुरूपा कुब्जी क्रूरकर्मकारी
कैकेयीर चेड़ी भरतेर धात्रीमाता * रामेर दुःखेर हेतु सृजिल विधाता
दशरथ पेयेछिल विवाहे से चेड़ी * राम राजा हन देखि करे धड़फड़ि

कुत्सित रूप स्वभाव कराला ※ कूबरि-बास, तासु घर घाला
जनम तासु रघुपति-दुख हेतू ※ कैकयि कुयश, मरन-नृपकेतू
जेहि मारग दसकंध निपाता ※ जानि मन्थरहिं रचेउ विधाता
चकित मंथरा बाहेर आई ※ लखेउ मुदित पुरजन समुदाई
राम-राजु सुनि पुलकित लोका ※ अण्टा चढ़ि सो चेरि विलोका
पुनि तँह दासिन-जमघट हेरी ※ चेरिन टेरि, बुझावत चेरी
कस उल्लसित नगर जनवृन्दा ※ कौशल्या हिय अमित अनन्दा
राम-मातु कर दान महाना ※ संगिनि! सकल करौ अनुमाना
कहेउ चेरि तव मति बौरानी ※ राम-तिलक सुभघरी न जानी
आयु समीप निरखि, नृप भावा ※ तुरत राम-अभिषेक सुहावा
दासी - बचन मंथरहिं शूला ※ बज्रघात सम हिय-प्रतिकूला
झनकि कैकयिहिं कोसि[1] कुदासी ※ लपकी, विधि अच्छर अविनासी
कोहि संकोच, कुबुद्धि अबूझी ※ भल-अनभल निज सुत नहिं सूझी
भरत बराय, राम हित राजू ※ दुख, अपमान, मरन तव साजू
राम वनगमन, भरतहिं राजू ※ नृप वर माँगि सफल करु आजू

आकृति-प्रकृतिते कुत्सित देखि तारे ※ सर्व्वनाश करे कुब्जी, थाके जार घरे
रामेर दुःखेर हेतु तार उपादान ※ राजार मरण, कैकेयीर अपमान
मरिबे रावन जाते, विधाता से जाने ※ विधाता सृजिल तारे एइ से कारणे
आचंबिते कुंजी चेड़ी आइल बाहिरे ※ आनन्दित प्रजा सब देखिल नगरे
टंगेर उपरे उठि कुंजी ताहा देखे ※ राम राजा हबे, महा हरषित लोके
चेड़ी - चेड़ी एकठाँइ टुँगीर उपरे ※ कुंजी-चेड़ी जिज्ञासिल इतर चेड़ीरे
क़िकारणे हरषित अयोध्या नगर ※ किहेतु कौशिल्या रानी हरिष अन्तर
किजन्य रामेर माता करे बहुदान ※ सवे मिलि तोमारा कि कर अनुमान
आर चेड़ी बले, तुमि ना जान मन्थरा ※ रामेरे करिते राजा भूपतिर त्वरा
राजार निकट-मृत्यु गनिया असार ※ एइ हेतु रामेरे दिलेन राज्यभार
एमत शुनिल कुन्जी से चेड़ीर मुखे ※ बज्राघात हय येन मन्थरार बुके
विधातार वाजि केवा करये खण्डन ※ कैकेयीरे गालि दिते करिल गमन
कैकेयी आपन घरे छिलेन शयने ※ सत्वर मंथरा गिया कहिल सेखाने
निर्बुद्धि कैकेयि शुये आछ कोन् लाजे ※ तोमार भरत आजि मनोदुःखे मजे
अपमाने मरिबि तुइ शोकेर सागरे ※ भरते एड़िया राजा रामे राजा करे
भरतेरे राजा कर राख निज पन ※ राजारे कहिया रामे पाठाओ कानन
राम राजा हइले किसेर अधिकार ※ भरत हइले राजा सकलि तोमार

---

१ दुर्वचन कह कर।

सो० बञ्चित रघुपति-राज, निज सुत सासन सकल तव।
सकल रानि-सरताज, राजमातु-पद लहहु पुनि ॥ ८ ॥

कैकइ कहइ— धर्मसुत रामा ❋ बिन अपराध आचरण बामा
राम सदा मम आदर करहीं ❋ तिन अनहित केहि विधि अनुसरहीं
राम जेठ सुत, ज्ञानगुनागर ❋ सासन उचित सबन सुखसागर
सब बिधि राम छत्र-अधिकारी ❋ तोष, बिपुल धन-मंगलकारी
राम-राज सुख भरत समाना ❋ राममातु मम रखिहैं माना
खुसखबरी, मम गौरव जागा ❋ देहुँ इनाम, चेरि ! मुँहमाँगा
रामहिं राजु सबन मुदकारी ❋ सो तजि कस विषाद तैं धारी
अमित रामगुन रानि बखाना ❋ सोचति किमि चेरिहिं सन्माना
तन - भूषन निकारि कैकेई ❋ कर-मन्थरहिं नेह भरि देई
निरखि मौन, पुनि दील दिलासा ❋ रामराज तव पुरवउँ आसा
फरकत ओंठ कम्प उत चेरी ❋ कुवचन कहत कैकयिहिं हेरी
अभरन झटकि निहारति रानी ❋ कोपपुञ्ज दृग बोलत बानी
अहित दुखी, तव हित मम प्रीती ❋ मम सिख तवहुँ तुमहिं विपरीती
सौति-सुवन नृप ! लखि हर्षानी ❋ तुमसों सनु कौशिला सयानी[1]

एके त राजार तुमि हओ मुख्यरानी ❋ भरत हइले राजा, राजार जननी
कैकेयी बलेन, राम धार्म्मिक तनय ❋ कोन् दोषे रामेर करिव अपचय
आमार गौरव राम राखे अतिशय ❋ करिते रामेर मन्द उपयुक्त नय
गुणेर सागर राम विचारे पण्डित ❋ पितृराज्य ज्येष्ठ पुत्र पाइते उचित
राम राजा हइले सन्तुष्ट सर्व्वजने ❋ सवाकारे तुषिवेन राम वहु धने
भरतेरे राज्य राम दिवेन आपनि ❋ राखिबेन आमार गौरव वड़रानी
राम राजा हइले आमार बहुमान ❋ शुभ वार्त्ता कहिलि, कि दिब तोरे दान
राम राजा हइबेन, हृष्ट सर्व्वजन ❋ हरिषे विषाद कुंजी कर कि कारन
यत गुन रामेर, कैकेयी ताहा जाने ❋ मन्थराके दान दिते चिन्ते मने-मने
अंग हैते अलंकार खुलि शशव्यस्ते ❋ आदरे कैकेयी देन मन्थरार हस्ते
कैकेयी कहेन, कुंजी, ना कर उत्तर ❋ राम राजा हैले धन दिव त विस्तर
कुपिता मंथरा चेड़ी, दुइ ओष्ठ काँपे ❋ कैकेयीरे गालि पाड़े अतुल प्रतापे
हाथ हैते अलंकार छड़ाइया फेले ❋ दुइ चक्षु रांगा करि कैकेयीरे बले
कैकेयि, तोमार दुःख आमार अन्तरे ❋ बलि हित, 'विपरीत बुझाओ आमारे
सपत्नी तनय राजा तुमि आनन्दिता ❋ कौशल्या तोमार चेये बुझिते पण्डिता

1 चतुर।

सुतहिं रहत पति, राजु दिवावा ※ दासी सौति— योग तव आवा
सिय रानी ! बड़िरानि सुपासा ※ बनि पछिलगू[1] कैकयिहि बासा

दो० यदपि रानि-सरताज तुम, रामहिं राजु दिवाय ।
रामममातु-पतिदर्प लखि, उर सालत अधिकाय ॥ ६ ॥

भरत ओट[2] नृप मातुलगेहा ※ नृपहिं न दोष समान सनेहा
सौति-विभव-सुख सौतिनि भावा ※ अनहोनी ! सुनि निरखि न पावा
लालि-पालि किय भरत सयाने ※ सो सुत आजु विमातु-बिकाने
विलग न राम लखन दोउ भाई ※ करइँ राजु-सुख, भरत बिहाई[3]
लखि तव तनय-पराभव, रानी! ※ मम हितवानि न तुमहिं सुहानी
भरतहिं राजु न अवधनिवासू ※ दुर्लभ तव मुख, सतत प्रवासू
रुचिर रानि ! तौ बाँधहु साजू ※ राम गमन वन, भरतहिं राजू
कूबरि-बचन सुबुद्धि बिनासा ※ सुनि कुमंत्र मन उपजी आसा
सबन-सुरासुर राम पियारे ※ अकथ विघिन कूबरि तहँ डारे
मैं अबोध, मम कण्टक रामा ※ सुहृदि ! सदा तैं आवति कामा
भरत विदेश, राम अभिषेकू ※ करि कछु जतन मिटावइ सोकू
गुननिधान रघुपति पितुप्राना ※ तिन वनगमन न जोग लखाना

निज पुत्रे राजा करे स्वामीर सोहागे ※ थाकिवा दासीर न्याय कौशल्यार आगे
थाकिल कौशल्यारानी सीतार सम्पदे ※ दाँड़ाइते नारिवि सीतार परिच्छदे
कौशल्या जिनिले तुमि सोहागेर दापे ※ निज पुत्रे राजा करे सेइ मनस्तापे
भरत थाकिल गिया मातामह घरे ※ राजार कि दोष दिब ना देखे ताहारे
सतिनेर आनन्देते स्नानन्दा सतिनी ※ हेन अपरूप कभु ना देखि ना शुनि
लालिया पालिया बड़ करिनु भरते ※ मातापुत्रे पड़िलासे कौशल्यार हाते
श्रीराम-लक्ष्मण दुइ एकइ शरीर ※ उभये करिबे राज्य, भरत बाहिर
तवे त भरत तोर हइल वञ्चित ※ हितकथा वलिलाम, बुझिस् अहित
भरत ना पेये राज्य ना आसिबे देशे ※ ना देखिबे तव मुख, थाकिवे प्रवासे
मन्त्रणा करिया रामे पाठाओ कानन ※ भरतेरे राज्य देह, यदि लय मन
शुनिया कुञ्जीर कथा कैकेयीर आश ※ कुञ्जीर बचने तार हैल बुद्धिनाश
राम हेतु देव दैत्य आदि लोक सुखी ※ प्रमाद पाड़िल चेड़ी, कोथाओ ना देखि
कैकेयी बलेन कुंजी तुमि हितैषिनी ※ राम मम मन्दकारी, किछुइ ना जानि
भरत प्रवासे, राम राजा हबे आजि ※ केमने अन्यथा करि युक्ति बल कुञ्जी
नृपतिर प्राण राम गुणेर सागर ※ केमने पाठाव तारे बनेर भितर

---

१ पिछलगू २ निगाह से दूर ३ त्याग कर ।

भल न राम पावइँ अधिकारू ※ निरपराध किमि देस-निकारू
भरत विदेस, सुवन-नृप चारी ※ बाटहिं राजु अंस-अनुसारी
राम जेठ ! जनि भूलु सयानी ※ किमि तव मति सोचति बौरानी
राम गिरा-मधु सवन सुखारी ※ नृप किमि तिन्हहिं करइँ बनचारी

दो० सहज न सासन भरत हित, बहुरि राम बनबास ! ।
केहि बिधि? दासी! जतन कछु करि पुरवइ मम आस ॥ १० ॥

कहहुँ उपाय, रानि सुनि लीजै ※ भरतहिं सुलभ राजपद कीजै
कथा पुरातन सुनु धरि ध्याना ※ अजहुँ याद भल, करहुँ बखाना
संबर असुर युद्ध जेहि काला ※ क्षत-विक्षत तन विषम भुवाला
परिचर्या तव सुखद निहारी ※ हरषि भूप वर-वाचा हारी
पुनि विषहरी[1] गृसित नरपाला ※ मुख वृण चूसि मिटायेउ ज्वाला
रक्त-पूयमय तव मुख देखी ※ सहन-शक्ति तव निरखि विशेषी
तव सेवा नृप-रोग नसावा ※ पुनि वर देन भूप मन भावा
जब जब घरी देन वर आई ※ तुम नरपतिहिं कहेउ समुझाई
नाथ ! मंथरा जब मन लावै ※ मम वर उभय धरोहरि[2] पावै

घरेते राखिव वरं राज्य नाहि दिव ※ कोन् दोषे श्रीरामेरे वने पाठाइव
चारि पुत्र आछे ताँर भरत विदेशे ※ अश अनुसारे भाग हइवेक शेषे
ज्येष्ठ भाइ आछे तार कर विवेचना ※ कह देखि कुंजी तुमि, करि कि मंत्रणा
सबे तुष्ट श्रीरामेर मधुर वचने ※ हेन रामे केमने पाठाबे राजा वने
भरत पाइवे राज्य ना देखि उपाय ※ युक्ति बल भरत कि रूपे राज्य पाय
कि प्रकारे रामेर हइबे वनबास ※ भरतेरे राज्य दिया पुराइब आश
कुञ्जी वले युक्ति चाह, युक्ति दिते पारि ※ हेन युक्ति दिब ये, भरते राजा करि
पूर्व्वकथा सकल आमार आछे मने ※ से सकल कथा कहि, शुनि सावधाने
पूर्व्वे युद्ध करलि ये दानव सम्वर ※ सेइ युद्धे महाराज क्षत कलेवर
ताहाते करिले ताँर तुमि सेवा-पूजा ※ सुस्थ हये वर दिते चाहिलेन राजा
आर वार राजार ये हइल विस्फोट ※ ताप दिते मुखेर ठेकिल दुइ ठोंट
रक्त पूँय यतेक लागिल तव मुखे ※ तव यत दुःख राजा देखिल सम्मुखे
तोमार सेवाय राजा पाइल निस्तार ※ वर दिते चाहिल तोमारे पुनर्व्वार
तखन बलिला तुमि राजार गोचर ※ कुञ्जी जबे वर चाहे तबे दिओ वर
दुइवारे दुइ वर थाक् तव ठाँइ ※ कुञ्जी जबे वर चाहे तबे येन पाइ

१ जहरीला अँगूठा का फोड़ा २ धरोहर (अमानत) ।

पुनि बरनेउ मोहिं सकल कहानी ※ अजहुँ याद, तुम भले भुलानी
राम-राज-पद घरी समीपा ※ तव गृह आवन चहत महीपा
निराभरन भूषन बिथराई ※ तजि पट, वसन मलिन तन लाई
अस्त-व्यस्त चहुँ, बिन आहारा ※ अवनि पलोटहु[1] कोपागारा
यहि विधि निरखि विकट तव रूपा ※ जस-जस आतुर पूँछहिं भूपा
तस-तस मौन, रुदन करु रानी ※ धीरज देहिं नृपति भय मानी
कोप-हेतु पूँछहिं बहु भाँती ※ अवसर ताकि वसूलहु थाती[2]

दो० कथा पुरातन अस्मरन, नृपहिं न कछु सन्देहु।
बचन बाँधि, प्रन सत्य करि, माँगि युगुल वर लेहु ॥ ११ ॥

भरतहिं राज, राम वनवासू ※ यहि विधि दोउ वर करहु प्रकासू
चौदह वर्ष राम वनचारी ※ छिति चहुँ भरत विभव-विस्तारी
रुख लखि नृप तव, प्रान गवावैं ※ राम-गमन-वन दुलुखि[3] न पावैं
अति अनुराग अतुल तव प्रीती ※ फिरहिं वचन प्रन करि, न प्रतीती[4]
मंत्र-मंथरा कुमति जगावा ※ अयश अधर्म न भय मन आवा
ब्रह्मशाप-हत कैकयि रानी ※ जेहिं कारन इमि भरम भुलानी
पितुगृह कतहुँ विप्र इक आवा ※ बालापन, कछु व्यंग्य सुनावा

एइ कथा कहिला आसिया मोर स्थाने ※ तुमि पासरिले, मोर सब आछे मन
आजि राम राजा हबे बेला अवशेषे ※ आगे आसिबेन राजा तोमार संभाषे
पट्ट वस्त्र एड़ि पर मलिन बसन ※ खसाइया फेल यत गायेर भूषन
भूमिते पाड़ियाथाक त्यजिया आहार ※ राजा जिज्ञासिबे तव देखिया आकार
जिज्ञासा करिबे राजा कोपेर कारन ※ ना दिया उत्तर तुमि करिओ रोदन
बिबिध प्रकारे तोमा करिबे सांत्वना ※ याचिबे तोमारे वस्त्र अलंकार नाना
तवे पूर्व्व निर्ब्बन्ध कहिबे ताँर स्थान ※ आगे सत्य कराइया पिछे मांग दान
पूर्व्वकथा राजार अवश्य हबे मने ※ दुइ वर मागिओ राजार विद्यमाने
एक वरे कराइबे राजा भरतेरे ※ आर वरे पाठाइबे अरण्ये रामेरे
चतुर्द्दश वर्ष राम थाके यदि वने ※ पृथिवी पुराबे तुमि भरतेर धने
तुमि यदि प्रान चाह, राजा प्रान देय ※ राम हेन प्रिय पुत्र बनेते पाठाय
एमनि आसक्त राजा तोमार उपर ※ सत्ये वद्ध आछे, केन नाहि दिबे वर
फिरिल कैकेयी रानी कुब्जीर बचने ※ अधर्म्म अयश किछु नाहि करे मने
घोर ब्रह्मशाप आछे कैकेयीर तरे ※ सेइ दोषे कैकेयी प्रमाद एत करे
पित्रालये कैकेयी छिलेन शिशुकाले ※ करियाछिलेन व्यंग ब्राह्मणेरे छले

---

१ भूमि पर लोटो २ धरोहर ३ टाल न सकैं ४ विश्वास नहीं होता।

सुनि कटु व्यंग्य विप्र मन तापा ❋ कोपि कैकयिहिं दीन्हेउ शापा
जेंहि विधि तैं कृत मम उपहासू ❋ अखिल भुवन तव कुयस प्रकासू
ब्रह्मशाप कर अमिट प्रभावा ❋ कुफल तासु इमि आगे आवा
कैकयि अतिव मोद मन छावा ❋ कर-कूबरि धरि उर लपिटावा
पुलकि कहेउ तुम सम गुनखानी ❋ चहुँ दिसि मोहिं न कतौं लखानी
कथन न अनुचित, मन अति भावा ❋ तैं हित परम, अहित चहुँ छावा
तव तन चन्द्रकला उजियारी ❋ कहि गर सुमनमाल तिन डारी
कूबर रतन हार कर साजा ❋ करहु अजाच्य[1] भरत लखि राजा
मम हित तव अपार सेवकाई ❋ तासु एवज[2] पुरवहुँ दिन पाई

दो० आजु राम बन-गमन हित आयुसु देहिं नरेस।
मुख मज्जन जलपान तब, तबहि तजहुँ यह बेस ॥ १२ ॥

तव सम्मुख मम प्रन यह दासी ❋ आजुहि राम लखहुँ बनवासी

दशरथ से कैकेयी की वर-याचना

सुनि कूबरी कहइ हुलसानी ❋ अब विलंब कर काज न रानी
रामहिं राज मिलत, पछिताऊ ❋ बहुरि न कछु अवशेष उपाऊ

ताहाते जन्मिल ब्राह्मणेर मने ताप ❋ कुपिया ब्राह्मण तारे दिल अभिशाप
देखिया करिस् व्यंग कहिस कर्कश ❋ सर्व्वलोके गाय येन तव अपयश
कैकेयीर ब्रह्मशाप ना हय खण्डन ❋ सेइ हेतु घटिलेक ए सव घटन
अनंतर कैकेयीर प्रसन्नवदन ❋ करे धरि कुब्जीरे करिल आलिंगन
कुब्जीरे कैकेयी कहे अति हृष्टमने ❋ तव तुल्य गुणवती ना देखि भुवने
यत बल, सकलि से नहे त कुत्सित ❋ सकलि अहित मम तुमि मात्र हित
गौर वर्ण धर तुमि येन चन्द्रकला ❋ गलाय तुलिया देह दिव्य पुष्पमाला
रत्नहार लओ, पर कुब्जेर उपर ❋ भरत हइले राजा दिव त विस्तर
येमन विस्तर सेवा करिले आमार ❋ यतदिने पारि तव शुधिब से धार
यदि राजा रामेरे पाठाय आजि वन ❋ तवे से करिव स्नान करिव भोजन
प्रतिज्ञा करिनु आमि तव विद्यमाने ❋ वने पाठाइव रामे, देखह एक्षणे
कैकेयीर कथा शुनि कुब्जीर उल्लास ❋ रचिल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

दशरथेर निकट कैकेयीर वर-प्रार्थना

कुब्जी वले कैकेयि विलंब नाहि साजे ❋ राम राजा हइले नहिबे कोन काजे
यावत् न देय राजा रामे सिंहासन ❋ तावत् राजार ठाँइ कर निवेदन

१ जिसको माँगने की जरूरत न रहे २ बदले में।

तासों प्रथम बनावहु काजा ※ धरहु रूप[1], आवत अब राजा
सुनत, फेंकि अभरन तत्काला ※ अवनि विलोटत हाल बेहाला
इत कैकेयी-मिलन उछाहू ※ आतुर चले मुदित नरनाहू
कछु बतलाय लौटि पुनि आवौं ※ तुरत राम शिर छत्र धरावौं
जो न जाहिं, बहु गिला-गुजारी ※ धन जन राजु न कुछ सुखकारी
दशरथ मृत्यु सीस मँडरानी ※ हेरत कक्ष-कक्ष कहँ रानी
कोपभवन जँह लोटति धरनी ※ पहुँचे भूप, लखउ विधि करनी
सहज स्वभाव न कछु अनुमाना ※ कस छरछंद[2] कैकयी ठाना
नृप हत्बुद्ध, मर्म नहिं जानी ※ जिमि अजगरी, फुंकरति रानी
युवा रानि, अति बृद्ध नरेसू ※ तिय तजि नृपहिं न गति अवसेसू
पति जहँ जरठ[3], तरुनि अति नारी ※ सो वृद्धहिं प्रानन ते प्यारी
कैकइ रूप निछावर प्राना ※ तासु दुःख नृप तजहिं पराना
पूँछेउ मृदु स्वर लर्जति अंगा ※ बाघिनि-भय बन कम्प कुरंगा[4]

दो० कहा क्रोध? कारन कवन? कहेसि कोऊ कटु बानि ।
अंग व्याधि, केहि वेदना, धरनि विलोटति रानि ॥ १३ ॥

जो कछु रोग-कलेस शरीरा ※ वैद्य बुलाय हरौं तव पीरा

एक्षणि आसिबे राजा तोमा संभाषणे ※ जे रूपे कहिवा, ताहा चिन्ता कर मने
शुनिया कुब्जीर वाक्य कैकेयी सेकाले ※ आभरन फेलाइया लुटे भूमि तले
हेथा राजा दशरथ हरषित मने ※ चलिलेन कौतुके कैकेयी संभाषणे
भाषिलेन संभाषिया आसिया सत्वर ※ श्रीरामे करिब आमि छत्र-दण्डधर
नाहि गेले कैकेयी करिवे अनुयोग ※ धन-जन विफल आमार राज्यभोग
दशरथ नृपतिर निकट मरण ※ घरे घरे कैकेयीरे करे अन्वेषण
जे घरे कैकेयी देवी लोटे भूमि परे ※ विधिर निर्व्वन्ध राजा गेल सेइ घरे
पूर्व्वज्ञाने गेल राजा, ना जाने प्रमाद ※ गड़ागड़ि जाय रानी करिछे विषाद
सरल हृदय राजा एत नाहि बुझे ※ अजगर सर्प येन कैकेयी गरजे
दशरथ अति वृद्ध कैकेयी युवती ※ कैकेयी बिहने ताँर नाहि आर गति
कैकेयी युवती नारी, दशरथ बुड़ा ※ बुड़ार युवती नारी प्राण हेते बाड़ा
प्राणेर अधिक राजा कैकेयीरे देखे ※ उड़िल राजार प्रान कैकेयीर दुखे
धीरे-धीरे जिज्ञासेन कम्पित अन्तरे ※ वने मृग डरे येन बाघिनीर डरे
कि हेतु करिला क्रोध वल कार बोले ※ कोन् ब्याधि शरीरे लोटाओ भूमि तले
ब्याधि पीड़ा यदि हय तोमार शरीरे ※ वैद्य आनि सुस्थ करि बलह आमारे

१ स्वांग २ मक्कर ३ बूढ़ा ४ हरिन ।

सारभौम - नृपतिन नरपाला ※ मम सम अवनि न अन्य भुवाला
नाम प्रताप भीत सुर लोका ※ सदा द्वार प्रस्तुत त्रय-लोका
अखिल धरा अधिकार प्रसारा ※ धन जन सकल चरन तव हारा
कवन हेतु प्रिय साधेउ माना ※ सुनत सुमुखि पुरवहुँ अरमाना
सुनि नृप-वचन भरोस सयानी ※ लगी कहन पुनि कथा पुरानी
रोग न तन, कलेश अपमाना ※ पाय वचन पुनि माँगहुँ दाना
भूप रानि-छलछंद न बाँचा ※ देन युगुल वर हारी बाचा
ब्याध फंद मृग फसत अबूझा ※ नृप मतिमन्द न मारग सूझा
सुमुखि! प्रगट करु निज अभ्यंतर[1] ※ करहुँ सत्य, मम वचन न अंतर
जो भावै सो पावै दाना ※ कहँ लग कहौं, समर्पन प्राना
कहेउ रानि, भूपति-प्रन भाषी ※ अष्टलोकपालन[2] करि साखी
रवि,शशि,नखत,योग,तिथि,वारा ※ निसि, दिन साखी सब संसारा
रुद्र अेकादश, द्वादश भानू ※अखिल चराचर, मरुत,[3] कृशानू[4]
नृप-प्रन, वर-याचन मम आजू ※ लखहु लोक त्रय, स्वजन, समाजू
गये दिनन थाती[5] वर दोऊ ※ दै मोहिं आजु उरिन नृप होऊ

पृथिवीमण्डले आमि वसुमती-पति ※ आमार समान राजा नाहि गुणवति
शुनिया आमार नाम देव डरे काँपे ※ त्रिभुवन द्वारे खाटे आमार प्रतापे
समस्त पृथिवी मध्ये मम अधिकार ※ धन - जन यत आछे सकलि तोमार
कोन् कार्य्ये कैकेयि करह अभिमान ※ आज्ञा कर, ताहाइ तोमार करि दान
एत यदि कैकेयी राजार पाय आश ※ पूर्व्वकथा ताँर आगे करिल प्रकाश
रोग, पीड़ा नहे मोर पाइ अपमान ※ आगे सत्य कर पिछे मागि आमि दान
कैकेयी प्रमाद पाड़े राजा नाहि जाने ※ सत्य करे दशरथ त्रियार वचने
महापाश लागि येन वने मृग ठेके ※ प्रमाद घटिबे पाछु राजा नाहि देखे
भूपति बलेन, प्रिये, निज कथा बल ※ सत्य करि यद्यपि तोमारे करि छल
जेइ द्रव्य चाह तुमि, ताहा दिव दान ※ आछुक अन्येर काज, दिते तारि प्रान
कैकेयी बलेन सत्य करिला आपनि ※ अष्टलोकपाल साक्षी, सुनु सत्यवानी
नक्षत्र भास्कर चन्द्र योग तिथि वार ※ रात्रि दिन साक्षी हओ सकल संसार
एकादश रुद्र साक्षी द्वादश आदित्य ※ स्थावर-जंगम साक्षी, यारा आछे नित्य
स्वर्ग मर्त्य पाताल शुनह बाप भाइ ※ सबे साक्षी, राजार निकटे वर चाइ
अवधान कर राजा, धार मोर धार ※ मोर धार शोधि तुमि सत्ये हओ पार

---

१ मन की बात २ शिव, कुवेर, इन्द्र, वरुण, अग्नि, वायु, यम, नैऋत—ये आठ लोकपाल हैं ३ पवन ४ अग्नि ५ धरोहर।

दो० रन घायल तन सेयि तव, विष-वृण पुनि उपचार ।
अति प्रसन्न वर दीन चह, मोहिं नृपति दोउ बार ॥ १४ ॥

कहेउँ, मंथरा जब मन लावै ❊ मम वर उभय धरोहर पावै
अजहु अमानत दोउ तव तीरा ❊ पूरन आस करहु, प्रनवीरा
प्रथमहिं भरत समर्पन सासन ❊ दूजे राम पठावहु कानन
चौदह वर्ष राम बनचारी ❊ भरत रहैं इत राजु सम्हारी
कस दुरन्त[1] ! सुनि कम्प शरीरा ❊ नृपहिं न चेत, सम्हार न धीरा
कैकइ-वचन-सेल हिय घाला ❊ घसिलि उठे, लहि चेत भुवाला
हिय लर्जत विमूढ़ मुख धूरी ❊ कहेउ मन्द स्वर कछुक बिसूरी
पापिनि ! तैं मम घात विचारी ❊ देहैं कुयश जगत नरनारी
बिना राम मैं जीवनहीना ❊ मम कुघात-दुर्मति केहिं दीना
गवनहिं वन रघुपति पुर त्यागी ❊ तबहिं घरी मम मरन, अभागी !
पति-जीवन पतिनिहिं सुखरासी ❊ पति कर वध कुल तीनि विनासी
पति करि हनन, सुवन कहँ राजू ❊ चण्डालिन, तव कस अपकाजू
भरत खबर सुनि जीवन तजहीं ❊ निश्चय नतरु प्रान तव हरहीं

युद्धे ह'येछिल तव क्षत कलेवर ❊ सेविलाम ताहे दिते चेयेछिले वर
करिलाम पुनर्व्वार विस्फोटे तारन ❊ तुष्ट ह'ये वर दिते चाहिला राजन
तबे आमि बलिलाम तोमार गोचर ❊ कुञ्जी जबे वर चाहे तबे दिओ वर
दु'बारेर दुइ वर आछे तव ठाँइ ❊ दुइ वर सेइ राजा, एइ क्षणे चाइ
एक वरे भरतेरे देह सिंहासन ❊ आर वरे श्रीरामेरे पाठाओ कानन
चतुर्द्दश वत्सर थाकुक राम बने ❊ तत्काल भरत बसुक सिंहासने
दुरन्त वचने राजा हइल कम्पित ❊ अचेतन हइलेन नाहिक संवित
कैकेयी-वचन येन शेल बुके फुटे ❊ चेतन पाइया राजा धीरे - धीरे उठे
मुखे धूला उठे राजा काँपिछे अन्तरे ❊ हतज्ञान दशरथ बले धीरे धीरे
पापीयसि, आमार वधिते तव आश ❊ स्त्री-पुरुष यत लोक कहिबे कुभाष
राम विना आमार नाहिक अन्यगति ❊ आमारे वधिते तोरे के दिल दुर्म्मति
राज्य छाड़ि यखन श्रीराम जाबे वन ❊ सेइ दिने सेइ क्षणे आमार मरण
स्वामी यदि थाके तबे नारीर सम्पद ❊ तिन कुल मजाइलि स्वामी करि बध
स्वामी-बध करिया पुत्रेरे दिवि राज्य ❊ चण्डाल-हृदया तुइ करिलि कि कार्य्य
यद्यपि भरत आसि एइ कथा शुने ❊ आपनि मरिबे, कि मारिबे सेइ क्षणे

---

1 घोर कष्टकारक ।

जो पातक लखि जीवनदाना ❊ तबहुँ न पार विविधि अपमाना
डसेसि भुजंगिनि, विष तव घोरा ❊ गृह-तव चरन, मरन मनु मोरा

दो० कवन भूप अस नारि-बस, को कामिनि-लवलीन ।
कमनीया के कथन परि, निज नन्दन तजि दीन ॥ १५ ॥

मानुष-आयु सहस दस त्रेता ❊ नौ हजार बिलसेहुँ सुख जेता
एक हजार शेष मम आयू ❊ तव हित मरन विना परमायू
उमिर न पूरि, लीन तैं प्राना ❊ चहउँ बन्दि पग जीवनदाना
कैकइ-पद नृप लोटति धरनी ❊ शिथिल अंग नयनन निर्झरनी
भोरहिं राजसभा कर साजा ❊ भुवन-नृपन-दल जहाँ विराजा
लगन चढ़ी लखि, तिलक न दूरी ❊ किमि तिन नयन झोंकिए धूरी
रच्छिय प्रान, क्षमा मोहिं कीजै ❊ निज सोहाग सों खेल न कीजै
रहेउ न कुल कोउ नारि-अधीना ❊ निज कर मरन मोल मैं लीना
कामिनि बस जन—सकल विनासा ❊ अवधकाण्ड कृतिवास प्रकासा

पिता-प्राणरक्षार्थ राम-वन-गमन-उद्योग

प्रन करि, वचन भूप तुम दीन्हा ❊ करत पूर्ण, हिय कातर कीन्हा
सत्य-धर्म-तप कठिन कमाई ❊ मिटे तासु किमि राम सहाई

मातृ-बध-भये यदि ना लये परान ❊ करिबे तथाति तोर बहु अपमान
विषदन्ते दंशिलि रे काल भुजंगिनि ❊ तोरे घरे आनि शेषे मजिनु आपनि
कोन् राजा आछे एन कामिनीर वश ❊ कामिनीर कथाय के त्यजेछे औरस
दश हाजार वर्ष लोक जीये त्रेतायुगे ❊ नय हाजार वर्ष राज्य करि नाना भोगे
आर एक हाजार वत्सर आयु आछे ❊ परमायु थाकिते मजिनु तोर काछे
प्रमाइ थाकिते एत बधिब परान ❊ पाये पड़ि कैकेइ, करह प्राणदान
कैकेयीर पाये राजा लोटे भूमि-तले ❊ सर्व्वाग तितिल ताँर नयनेर जले
प्रभाते बसिब कल्य सभा विद्यमाने ❊ पृथिवीर यत राजा आसिबे से-स्थाने
अधिवास रामेर हइल सबे जाने ❊ बलिया कि भाण्डाइब से सकलजने
क्षमा कर कैकेयि करह प्रानरक्षा ❊ निज सोहागेर तुमि वुझिला परीक्षा
स्त्रीबाध्य ना हय केह अमार ए वंशे ❊ तोर दोष नहे आमि मजि निज दोषे
स्त्री-वश ये जन तार हय सर्व्वनाश ❊ गाइल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

पितृ-सत्य-पालनार्थ श्रीरामचन्द्रेर वन-गमनोद्योग

कैकेइ वलेन, सत्य आपनि करिला ❊ सत्य करि वर दिते कातर हइला
सत्य धर्म्म तप राजा करे वहु श्रमे ❊ सत्य नष्ट करिले कि करिवेक रामे

तजत सत्य तव सर्व विनासू ❋ पालन-सत्य स्वर्गपुर वासू
अब लौं रवि-शशि-कुल नरनाथा ❋ तिन यश विरद भुवन गुनगाथा
नृप ययाति शर्मिष्ठा रानी ❋ देवयानि पुनि नृप-पटरानी
सबन छोट शर्मिष्ठा-नन्दन ❋ रानिवचन तिन राजु समर्पन
'शिवि' महिपाल भुवन विख्याता ❋ विक्रम अतुल बीर बड़ दाता

दो० लचर[1] दीन अति विप्र इक, देखे लोचन-हीन।
काढ़ि नैन दोउ द्विजहिं दै, तासु विपति हरि लीन ॥ १६ ॥

द्विज-दुख-हरन बचन नरराई ❋ पालन हित निज डीठि गवाँई
सत्य पालि गवने सुरलोका ❋ रविकुल पुनि इक्ष्वाकु विलोका
चहुँ इक्ष्वाकुवंश जग नामा ❋ तासु नाम तव-कुल सरनामा
पितु कर धर्म निबाहन हेतू ❋ अनुजहिं नृपति कीन कुलकेतू
सत्य-धर्म जग होत न करनी ❋ अगम सिन्धु तौ बोरत धरनी
दोउ वर देन वचन, नृप ! हारी ❋ कस कातर, कस पाँव पछारी
माया-नारि-मर्म को जाना ❋ रानि-फंद दसरथ हत ज्ञाना
लोटत अवनि छोभ नरनाहू ❋ यहु भरभण्ड[2] विदित जनि काहू

सत्य लंघे जेइ तार हय सर्व्वनाश ❋ जे सत्य पालन करे, स्वर्ग तार बास
यत राजा हइले चन्द्र - सूर्य - वंशे ❋ से सबार यशोगुण सकले प्रशंसे
ययाति नामेते राजा पालिल पृथिवि ❋ देवयानि नामे तार मुख्य महादेवी
शर्मिष्ठार पुत्र हएल सबार कनिष्ठ ❋ पत्नीर बचने राजा तारे दिल राष्ट्र
शिवि नामे राजा छिल पृथिवीरपाता ❋ असम साहसी वीर, नहे अल्प दाता
द्विज एक छिल तार दुइ आँखि शून्य ❋ अत्यत दरिद्र तार नाहि मिले अन्य
सेइ अन्ध शिवि राजे सत्य कराइल ❋ निज दुइ चक्षु शिवि तारे दान दिले
आपनि हइल अन्ध चक्षे नाहि देखे ❋ सत्य पालि सेइ राजा गेल स्वर्गलोके
इक्ष्वाकु नामेते राजा छिल सूर्य्यवंशे ❋ इक्ष्वाकुर वंश वलि सकले प्रशंसे
पितृ-सत्य करिलेन इक्ष्वाकु पालन ❋ कनिष्ठ भ्रातार तरे दिल राज्य धन
पृथिवी डुबाते पारे सागरेर नीरे ❋ सागर न बाड़े पूर्व्व-सत्य पालिवारे
आमारे करिया सत्य दिले दुइ वर ❋ एखन कातर केन हओ नृप वर
नारीर मायार सन्धि पुरुषे कि पाय ❋ दशरथ पड़िलेन कैकेयी मायाय
भूमे गड़ागड़ि राजा देय अभिमाने ❋ एतेक प्रमाद-कथा केह नहि जाने
हइयाछे अधिवास जाने सर्व्वजन ❋ सबे वले वशिष्ठ, हइल शुभक्षण

---

१ लाचार २ विनाशकारी विघ्न।

कालिह व्यतीत राम-अधिवासू ❋ आजु सबन अभिषेक हुलासू
शुभ मुहूर्त, केहि कारन देरी ❋ पूँछत सकल बशिष्ठहिं घेरी
अतुल तेज चहुँ नृप अस छावा ❋ अन्तःपुर कोउ पग न बढ़ावा
लखहु सुमंत्र कितै अवधेसू ❋ तुम बिन आन न सदन प्रवेसू
अगनित भूप अवध जुरि आये ❋ सुरगन मुनि अभिषेक सुहाये
अवगत करहु, सुमंत्र ! महीपा ❋ कस बिलंब, शुभ घरी समीपा
लखेउ सुमंत्र, भवन महिपाला ❋ लोटत धरनि अचेत बेहाला
कस विवर्न[1] आकुल नरराई ❋ राम-तिलक सुघरी नियराई

दो० समारोह हित, रहे पुर, अगनित भूप बिराज ।
राजसभा पग धारिए, अब बिलंब केहि काज ॥ १७ ॥

हा, सुमंत्र ! तुम मर्म न जाना ❋ मम बध यतन कैकई ठाना
अशुभ बैन हिय हूलेसि गाँसी ❋ तासु बचन बँधि स्वयं बिनासी
धरि मम कथन, राम द्रुत[2] लावौ ❋ बैठि अबहिं कछु जुगुति बनावौ
कैकइ कहेउ न देर लगावौ ❋ सारथि! अबहिं रघुपतिहिं लावौ
सुनि, रथ लै सुमंत्र, जहँ रामा ❋ द्वार त्यागि रथ प्रविशेउ धामा
करि प्रणाम, पुनि दीन सँदेसू ❋ मत कछु किय कैकई-नरेसू[3]

कालि श्रीरामेर हइयाछे अधिवास ❋ आजि केन विलंब ना जानि से आभास
राजार प्रतापे हय त्रिभुवन वश ❋ भितरे जाइते केह ना करे साहस
पात्र-मित्र वले शुन सुमंत्र सारथि ❋ तोमा बिना अन्तःपुरे कारो नाहि गति
झट जाह सुमंत्र सारथि अन्तःपुरे ❋ सकल देशेर राजा आसिआछे द्वारे
राम अभिषेके आसियाछे देवगण ❋ एतक्षण विलंव राजार कि कारण
सुमंत्र सारथि गेल सकलेर बोले ❋ देखे, राजा अज्ञान लोटाय भूमितले
वलिछे सुमंत्र केन लोटाओ राजन् ❋ रामे राजा करिते हइल शुभक्षण
त्रिलोकेर राजा सब आसियाछे द्वारे ❋ विलंव ना कर राजा चलह बाहिरे
राजा बलिलेन, पात्र ना जान कारण ❋ मोरे बध करिवारे कैकेयीर मन
वुके शेल मारियाछे बलिया कुवाणी ❋ तार सत्ये बन्दी आमि ह'येछि आपनि
रामे शीघ्र आन गिया आमार वचने ❋ तुमि आमि राम युक्ति करि तिनजने
कैकेयी वलेन जाह सुमंत्र त्वरित ❋ शीघ्र रामे आन नहे बिलंब उचित
शुनिया लइया रथ सारथि चलिल ❋ उपस्थित रघुपति जेखाने हइल
वाहिरे खुइया रथ गेल अन्तःपुरे ❋ जोड़ हाते कहे गिया रामेर गोचरे

---

१ विकृत २ शीघ्र ३ राजा और कैकई ने ।

पठयेउ लेन, तुमहिं निज साथा ❋ आयसु चलहु बेगि रघुनाथा
प्रियजन-प्रमुख सुमंत्रहि जानी ❋ आसन दै रघुपति सनमानी
बोले, पितु-आयसु मम माथा ❋ अबहिं सुमंत्र चलहुँ तव साथा
पुनि-सीतहिं श्रीराम बुझावा ❋ मम अभिषेक विमातु न भावा
विदित न, छल मंथरा सुझावा ❋ रचना कवन विमातु रचावा
पितहिं साधि कस जुगुति, न जाना ❋ किमि पितु मम हित करहिं विधाना
यहि विधि विदा लीन रघुराई ❋ सिय बरोठ लौं पठवन आई
बाहेर निरखि लोक[1] रघुनाथा ❋ धाय-धाय चहुँ जोरत हाँथा
राम-लखन रथ युगुल विराजा ❋ दरसन हित चहुँ जुरेउ समाजा
हाँफति गर्भवती लौं आई ❋ तजि भय-हिचक कुलबधू धाई

दो० धन परिजन पतिसुख सकल, तिनसों उपज विराग ।
पाप नसावन चलि परीं, राम-दरस अनुराग ॥ १८ ॥

पुरजन चहुँ बंदहिं रघुनाथा ❋ गावहिं सकल, राम-गुनगाथा
बड़भागी लहि राम रजाई[2] ❋ जन्म जन्म तव करि सेवकाई
तव मुख दरस सदा सब करहीं ❋ लखि तव पद भवसागर तरहीं
नारि मुग्ध लखि रूप ललामा ❋ सील लचे, तर चितवहिं रामा

कैकेयीर संगे राजा युक्ति करे घरे ❋ मोरे पाठाइला तिनि लइते तोमारे
मुख्यपात्र सुमंत्र श्रीराम तहा जानि ❋ गौरवे दिलेन ताँरे आसन आपनि
बलेन श्रीराम, पित्र आज्ञा शिरे धरि ❋ बिलंब न करि आर, चल यात्रा करि
यात्राकाले श्रीराम बलेन शुन सीता ❋ आमि राज्य पाइब, बिमाता चिंतान्विता
कोन् युक्ति कुंजी दिल विमातार तरे ❋ ना जानि विमाता आजि कोन् युक्ति करे
राजा सह कैकेयी कि करे अनुमान ❋ जानि आसि पिता कि करेन संविधान
सीता स्थाने लइलेन श्रीराम बिदाय ❋ प्रकोष्ठे तिनेक सीता अनुव्रजि जाय
बाटीर वाहिर हइलेन रघुनाथ ❋ चारि भिते धाय लोक करि जोड़हाथ
श्रीराम-लक्ष्मण दोंहे चड़िलेन रथे ❋ देखिते सकल लोक धाय चारिभिते
ऊर्ध्व-श्वाशे धाइलेक नारी गर्भवती ❋ लज्जा-भय नाहि माने कुलेर युवती
कि करिबे स्वामी, कि करिबे धने-जने ❋ घुचिबे सकल पाप राम - दरशने
सारि-सारि लोक सबे दाण्डाइया चाय ❋ यतगुण श्रीरामेर, सर्व्वलोके गाय
बहु भाग्ये पाइलाम तोमा हेन राजा ❋ जन्मे-जन्मे राम येन करि तव पूजा
सर्व्वक्षण देखि येन तोमार वदन ❋ सर्व्वलोक मुक्त हवे देखिया चरन
राम-रूपे मजाइल नारीगन चित ❋ नयने ना चान राम परनारी भित

१ जनता २ राज्य ।

दरस विभोर, तजत पछिताहीं ❋ चलीं गेह, थिर कोउ-मन नाहीं
वहिर्सदन[1], तजि लछिमन, रामा ❋ कीन प्रवेश कैकयी - धामा
कैकेई जहँ, नृप नत धरनी ❋ लोटत, लखी राम यह करनी
रघुपति विनय कीन, कहु जननी ❋ केहि बिषाद पितु लोटति धरनी
लखत मोहिं रिस[2] तजि हर्षाहीं ❋ पूछेउ, आजु बचन मुख नाहीं
मम अपराध कुपित कछु ताता ❋ कवन चूक पितु करत न बाता
भरत - रिपुदमन मातुल - देसू ❋ चिरवियोग-तिन, मलिन नरेसू
कै अपराध आन कोउ कीन्हा ❋ छिति लोटति, दारुन दुख दीन्हा
कै तुम कछुक कहेउ कटु बाता ❋ सत्य सत्य वरनउ मोहिं माता
पितु विन व्यर्थ राज-सुख नाना ❋ सुनहुँ सत्य तो पावहुँ प्राना
पितु आयसु पालन सुखकारी ❋ मातु! सकल वरनउ विस्तारी
तात-कथन तव-मुख सुनि काना ❋ तजहुँ राजु-तन, छार समाना

दो० सरल हृदय, इमि कैकई, पायेउ अवधकिशोर ।
कथा पुरातन कहि चली, कस हिय तासु कठोर ॥ १९ ॥

संबर-रन तन जर्जर भूपा ❋ मम सेवा लखि मुदित अनूपा

रूप देखि नारी सब मने पुड़े मरे ❋ कपाल निंदिया सवे गेल निज घरे
घरे गिया स्त्री सवार मन नहे स्थिर ❋ पितृ - पार्श्वे गमन करेन रघुवीर
एक वृहन्देर वहिः रहेन लक्ष्मन ❋ भितर आवासे राम करेन गमन
राजा दशरथ भूमे लोटे अभिमाने ❋ कैकेयी राजार काछे आछे सेई खाने
श्रीराम वलेन, माता कह त कारन ❋ केन पिता विपादित भूमिते शयन
कोप जदि करेन, हासेन मोरे देखे ❋ आजि जिज्ञासिले केन कथा नाहि मुखे
कोन् दोषे करिलाम पितार चरणे ❋ उत्तर ना देन पिता किसेर कारणे
भरत शत्रुघ्न दुइ भाइ नाहि देशे ❋ मातुलेर आलयेते रहिल प्रवासे
बहुदिन गत, न पाइल दुइ जन ❋ सेइ मनोदुःखे बुझि विरस वदन
कोन जन किंवा करियाछे अपराध ❋ भूमे लोटाइया तेंइ करेन विपाद
तुमि बुझि पितारे कहिला कटु वाणी ❋ सत्य करि कह गो विमाता ठाकुरानि
करिवे कि राज्य भोगे पितार अभावे ❋ आमारे कह गो सत्य, प्राण पाइ तवे
किआज्ञा पितार आमि करिव पालन ❋ सेइ कथा माता मोरे करह वर्णन
आछुक पितार कार्य्य तोमार वचने ❋ राज्यछाड़ि, प्रानछाड़ि, कि छार जीवने
श्रीराम सरल, से कैकेयी पाप-हिया ❋ कहिते लागिल कथा निष्ठुर हइया
दैत्य-युद्धे महाराज घायेते जर्ज्जर ❋ ताहे सेविलाम, दिते चाहिलेन वर

---

१ घर के वाहर २ क्रोध ।

विष-वृण पुनि सेयेउँ नरनाहा ※ अवसर युगुल देन वर चाहा
प्रथमहिं भरत राज-अधिकारी ※ दूजे वर रघुपति बनचारी
लहउँ धरोहर अब दोउ बाचा ※ नृपहिं याद, पुरवइँ प्रन साँचा
चौदह वर्ष मूल-फल खाई ※ रहहु जटा तन बल्कल लाई
सुनत राम हँसि बोले बयना ※ आयसु सीस, अबहिं वनगमना
पितहिं न त्रास-प्रयोजन माता ※ तव बानी मोहिं वचन-विधाता
आज्ञा करहु न संशय लेसू ※ सर्वोपरि मोहिं तव आदेसू
पिता-वचन, तव प्रीति, निहारी ※ चौदह वर्ष रहौं वनचारी
भरतहिं तुरत बुलावहु देसू ※ भरत राज मोहिं हर्ष असेसू[1]
बिमल भरत, तिल दोष न गाता ※ धन-जन-राज देहु तिन माता
कैकइ कहेउ, प्रथम बनवासू ※ तबहिं भरत यहि धाम निवासू
मोरे कथन रोष जनि कीजै ※ जटा धारि कानन पथ लीजै
शीश लचाय सुनत नृप वानी ※ भय न लाज, कस बोलत रानी
राम विमातहि दीन दिलासा ※ देर न, गमन आजु बनबासा
जै छन सिय सौंपहुँ महतारी ※ तै छन रहहु धीर तन धारी

विस्फोट हइल पुनः करि सेवा-पूजा ※ ताहे अन्यवर दिते चाहिलेन राजा
एक वरे भरते करिब दण्डधारी ※ आर वरे राम, तुमि हओ वनचारी
दुइवारे दुइ वरे आछे मम धार ※ मम धार शुधि ताँरे सत्ये कर पार
शिरे जटा धरि तुमि परिवा बाकल ※ बने चौद्द वत्सर खाइबा मूल-फल
शुनिया कहेन राम सहास्य - बदने ※ तोमार आज्ञाय माता एइ जाइ बने
करियाछ कोन् काजे पितारे मूर्च्छित ※ लंघिते तोमार आज्ञा नहे त उचित
आछुक पितार काज्, तुमि आज्ञा कर ※ तव आज्ञा सकल हइते महत्तर
तव प्रीति हबे, रबे पितार वचन ※ चतुर्द्दश वत्सर थाकिब गिया बन
भरतेरे त्वरिते आनाओ माता, देश ※ भरत हइले राजा आनंद अशेष
कोन् गुण नाहि माता, ताहार शरीरे ※ धन - जन - राज्य - भोग देह भरतेरे
कैकेयी बलेन, राम आगे जाह बन ※ भरत आसिबे तबे एइ निकेतन
आमार कथाय कोप न करिह मने ※ शिरे जटा धरि तुमि आजि जाह बने
हेंटमाथा करिया शुनेन महाराज ※ कि कहिब, कैकेयीर मुखे नाहि लाज
कैकेयीर प्रति राम करेन आश्वास ※ विलंब नाहिक आजि जाब वनबास
यावत् मायेरे सीता करि समर्पण ※ तावत् विलंव माता, सहिबा एखन

1 अपार ।

दो० धरा विलोटत अवधपति, छावा विपुल विषाद।
स्वप्न सरिस श्रवनन परत, रानि-राम संवाद ॥ २० ॥

पिता चरन बंदेउ रघुनन्दन ❋ दुसह पीर! भूपति किय क्रन्दन
चले परसि पग जब रघुराई ❋ 'हाय-राम!' कहि मूर्छा आई
मुख न बोल, नहिं चेत सरीरा ❋ बाहेर भये लखन - रघुवीरा
प्रान समान लखन तजि आना[1] ❋ कोऊ कतहुँ भेद नहिं जाना
हवन धूप देवन घृतबाती ❋ कौशिल्या पूजहि बहुभाँती
बहु विधि भरा - सजा रनिवासू ❋ रानि सात शत जहाँ निवासू
रानि सात सौ, औ बहुनारी ❋ कैकइ एक न परत निहारी
ढिग-कौशिला रानि-समुदाई ❋ चरचा रामतिलक चहुँ छाई
आय राम बन्देउ पुनि माई ❋ आशिष दीन मोद अधिकाई
तुमहिं राज निज पितु किय दाना ❋ रमा प्रसीदि[2] करइ कल्याना
राज अनन्त, अवनि प्रतिपाला ❋ सुख बिलसहु बहुबिधि बहुकाला
पदपंकज शिव - गौरि मनावा ❋ उदित पुन्य, सुत नृपपद पावा
कहेउ राम, सुख हेतु न जननी ❋ करगत निधि छीनेउ विधि-करनी
आजु, लखन, हम, तुम, सिय चारी ❋ मरन योग दुख सिंधु मझारी

भूमे लोटाइया राजा आछेन विषादे ❋ शुनेन दोंहार वाक्य स्वप्न सम बोधे
रामचन्द्र पितार चरण द्वय बन्दे ❋ दशरथ क्रन्दन करेन निरानन्दे
पितारे प्रणामि राम चलेन त्वरित ❋ 'हा राम' बलिया राजा ह'लेन मूर्च्छित
मुखे नाहि शब्द राजा नाहिक चेतन ❋ हइलेन वाहिर जे श्रीराम लक्ष्मन
रामेर ए सब कथा केह नाहि शुने ❋ प्राणेर दोसर मात्र लक्ष्मण से जाने
करेन कोशल्या देवी देवता पूजन ❋ धूप-धूना-घृतदीप ज्वालिया तखन
नाना उपचारे रानी पूरियाछे घर ❋ सात शत सपत्नी से घरेर भितर
सबे मात्र कैकेयी नाहिक एक जन ❋ सात शतरानी आर बहु नारीगन
कौशल्यार काछे थाके सातशत रानी ❋ 'राम जय' एइ मात्र शब्द सदा शुनि
हेन काले श्रीराम मायेर पद वन्दे ❋ आशीर्वाद करे रानी परम आनन्दे
तोमारे दिलेन राजा निज राज्य दान ❋ सुप्रसन्ना राजलक्ष्मी करुन कल्यान
नानाविध सुख भुञ्ज हओ चिरजीवी ❋ चिरकाल राज्यकर पालह पृथिवी
सेविलाम शिव - शिवा - चरनकमले ❋ तुमि पुत्र राजा हओ सेइ पुण्य फले
श्रीराम बलेन, माता, हर्ष कर किसे ❋ हातेते आइल निधि गेल दैव दोषे
तुमि आमि सीता आर अनुज लक्ष्मण ❋ शोक-सिन्धु-नीरे आजि मजि चारिजन

---

१ अन्य किसी ने २ प्रसन्न होकर।

तुमसन प्रगट करत भय माता * रचेउ विघ्न कैकई विमाता
भरतहिं राजु मोहिं बनबासू * मत, विमातु निज कोन प्रकासू
दो० सुनि अचेत धरनी गिरी, निरखि, विकल रघुनाथ।
हाय मातुवध पाप मनु, लिखी नरक-गति माथ॥ २१॥
जननि, बन्धु दोउ सम्हरि उठावा * बहु छन जतन चेत पुनि आवा
बानी छीन, कहेउ महरानी * कहहु सकल सुत सत्य कहानी
मम सौगंध दुराव[1] न ताता * कौन दोष बन दीन बिमाता
दोष विमातु न कछु प्रिय जननी * भावी अमिट, अटल विधि-करनी
परिचर्या-पति पुनि-पुनि कीन्हा * हरषि युगुल वर भूपति दीन्हा
मम अभिषेक निरखि यहि लागे * नृप सन बर विमातु दोउ माँगे
भरतहिं प्रथम राज अधिकारू * दूजे वर मम देस निकारू
पति बिन गति न, सदा करि सेवा * भल विमात जीतेउ पितुदेवा
पितु-पद, मातु! होत तव प्रीती * तो न होत अस आजु अनीती
तनय - वचन दारुन दुखदाई * कौशिल्या - उर सेल समाई
कदली कटत विलोटत धरनी * 'तात! तात!' कहि विलपत जननी
गुननिधान नन्दन वनचारी * लखि किमि सकउँ प्रान तन धारी

भीत हइ तोमारे कहिते आमि कथा * प्रमादे पाड़िल माता कैकेयी विमाता
विमातार चरणे जाइते एल वन * भरतेरे राज्य दिते विमातार मन
शुनिया पड़िल रानी हइया मूर्च्छित * 'मा मा बलि' रामचन्द्र डाकेन त्वरित
'मा मा' बलिया राम उच्चैःस्वरे डाके * 'मातृवध करि' बुझि डुबिनु नरके
कौशल्यारे धरि तोले श्रीराम-लक्ष्मन * बहुक्षणे कौशल्यार हइल चेतन
चैतन्य पाइया रानी बले धीरे-धीरे * सकल वृत्तान्त सत्य कह त आमारे
मोर दिव्य लागे जदि ताँड़ाह आमाय * कि दोषे कैकेयी वने तोमारे पठाय
श्रीराम बलेन माता दैवेर घटन * विमातार दोष नाहि, विधिर लिखन
पितृसेवा विमाता करिल वार-बार * दुइ वर दिते छिल पितार स्वीकार
आजि आमि राजा हव सकलेर आगे * शुनिया बिमाता सेइ दुइवर मागे
एक वरे भरते करिते दण्डधर * आर वरे आमि जाइ वनेर भितर
स्वामि बिना स्त्रीलोकेर नाहि आर गति * विमातार सेवाय पितार प्रीति अति
तुमि यदि सेवा माता करिते पितारे * तवे केन एत ताप घटिबे तोमारे
एत यदि कहिलेन श्रीराम मायेरे * फुटिल दारुण शेल कौशल्या-अन्तरे
काटिले कदली लेन लोटाय भूतले * 'हा पुत्र' बलिया रानी राम प्रति बले
गुणेर सागर पुत्र यार जाय बन * से नारी केमने आर राखिबे जीवन

[1] छिपाव।

प्रथम वरन[1], मैं नृप-पटरानी ※ सौति कैकई पातक - खानी
राजहिं छलि, मम सुत वनवासा ※ करि पापिनि मम सकल विनासा
मरन अकाल न रविकुल राजू ※ सो न प्रान मम निकसत आजू
देव - देवि बहु पूजे चरना ※ अहह! तासु फल सुत-वनगमना

दो० अखिल भूप रविकुल कबहुँ, रहे न नारि अधीन।
आजु सवति[2] के फंद फँसि, नृपति अजस जग लीन ॥ २२ ॥

नारि-कथन सुत पठवइ कानन ※ तेहि पितु आयसु उचित न पालन
कहेउ लखन, तिय-बस पितु कहहीं ※ तौ कस राजु बिसर्जन करहीं
जेठहिं राजु सदा चहुँ गावा ※ केहि अपराध अरण्य पठावा
राजु प्रथम दै, पुनि वनवासू ※ अमिट भुवन पितु-अजस-प्रकासू
खबरि न जब लौं होय प्रचारा ※ करहुँ राम शासन अधिकारा
नृप उन्मत्त कुमति सठियानो ※ सदा बिवस, वस-कैकइरानी
आयसु; भरत हनउँ यहि लागे ※ शासन लाय धरउँ प्रभु आगे
मैं सेवक, अनुमति तव पावौं ※ भरत-कटक छिन धूरि मिलावौं
जो कहुँ स्वयं गहउ धनु-सायक ※ को समर्थ समुहै[3] रघुनायक

राजार प्रथमा जाया आमि महारानी ※ चण्डाली हइल मोर कैकेयी सतिनी
घटाइल प्रमाद कैकेयी पापीयसी ※ राजारे कहिया रामे करे वनवासी
सूर्य्यवंश-राज्ये नाहि आकाल मरन ※ एई से कारने मम ना जाय जीवन
पूजिलाम कत-शत देव-देवीगणे ※ तार की ए फल वाछा तुमि जाह वने
सूर्य्यवंशे यत-यत राजा जन्मेछिल ※ वल देखि, स्त्रीर वाक्ये के हेन करिल
अयश राखिल राजा नारीर वचने ※ स्त्रीवाध्य-पितार वाक्ये केन जावे वने
स्त्रीर वाक्ये जिनि पुत्रे पाठान कानने ※ तेमन पितार कथा ना शुनिओ काने
लक्ष्मण बलेन-सत्य तव कथा पूजि ※ स्त्रीवश-पितार वाक्ये केन राज्य त्यजि
ज्येष्ठपुत्र राज्य पाय इहा सवे घोषे ※ हेन पुत्रे वने राजा पाठान कि दोषे
आगे राज्य दिया परे पाठान कानने ※ हेन अपयश पिता राखेन भुवने
यावत् ए सब कथा ना हय प्रचार ※ तावत् श्रीरामचन्द्र लह राज्य भार
वार्द्धक्य दुर्बुद्धि राजा नितान्त पागल ※ करियाछे वाध्य ताँरे कैकेयी केवल
यदि रघुनाथ, आमि तव आज्ञा पाइ ※ भरते खण्डिया राज्य तोमारे देवाइ
आमि एइ आछि राम, तोमार सेवक ※ आज्ञा कर भरतेर काटिव कटक
तुमि यदि हस्ते प्रभु धर धनुर्व्वाण ※ तव रामे कोन् जन हवे आगुयान

१ पाणिग्रहण २ सौत पत्नी ३ सामना कर सके।

कौशल्या पुनि कीन समर्थन ❋ वचन-विमातु उचित नहिं कानन
करि निबाह इक पितु-प्रन पालन ❋ भरतहिं सकल समर्पहु सासन
दूजे प्रन पालन जनि हेतू ❋ बन तजि, अवध रहौ रघुकेतू
तजि मम कथन, वचन-पितु धारी ❋ पितु सों श्रेष्ठ सदा महतारी
दुसह गर्भ दुख, पुनि तव पालन ❋ दुलखत[1] सोइ जननी केहि कारन
बहु पितु-वचन ! तुच्छ मम वानी ❋ कौन शास्त्र मत ? सुनी न जानी
कथा राम पुनि सविनय वरनी ❋ पितु पद परम, पूज्य तव जननी

दो० परशुराम पितु-वचन धरि, काटेउ जननी-शीस ।
पितु आयसु गोबध कियेउ, अष्टावक्र मुनीस ॥ २३ ॥

सन्तति-सगर कलेसन गाथा ❋ मातहिं पुनि वरनेउ रघुनाथा
यदपि विकल मम-दुख अति ताता ❋ सतपथ अटल तबहुँ लखु माता
सो पितु-वचन करौं जनि पालन ❋ जीवन वृथा, वृथा सुख-सासन
तजैं विमातु, लखत[2] पितुदेवा ❋ निसि दिन, मातु ! करेउ तिन सेवा
कौशिल्या हटकेउ रघुराई ❋ तव वनगमन प्रान मम जाई
जननी-वध-समान नहिं पापा ❋ पातक, जासु विपुल संतापा
जनक-उलंघन[3], जननी-घाता ❋ गुरुतर[4] कवन ? विचारहु ताता

कौशल्या बलेन राम कि वले लक्ष्मण ❋ विमातार वाक्ये तुमि केन जाबे वन
पालह पितार एक - सत्य अंगीकार ❋ भरतेर देहे तुमि सब राज्य भार
अन्य सत्य पालिते नाहिक प्रयोजन ❋ देशे थाक राम, तुमि ना जाइओ वन
मायेर वचन लंघि पितृ वाक्य धर ❋ पिता हैते माता तव अति महत्तर
गर्भे धरि दुःख पाय, स्तन दिया पोषे ❋ हेन मातृ-आज्ञा राम, लंघ तुमि किसे
बापेर वचन राख, लंघ मातृवाणी ❋ कोन शास्त्रे हैन कथा, कोथाओ ना शुनि
श्रीराम बलेन, माता, शुन एक कथा ❋ पिता से परम गुरु तोमार देवता
देखह परशुराम पितार कथाय ❋ अस्त्राघात करिलेन मायेर माथाय
पितार आज्ञाय अष्टाबक्रेर गोवध ❋ सगर जन्माय पुत्रगणेर आपद
सत्य ना लंघेन पिता, सत्येते तत्पर ❋ मम दुःखे पिता कत हवेन कातर
पितृ-सत्य यदि आमि ना करि पालन ❋ वृथा राज्य-भोग मम, वृथा इ जीवन
बर्ज्जिवेन विमातार पिता, लय मने ❋ करिह ताँहार सेवा तुमि रात्रि दिने
कौशल्या बलेन, राम, सत्य जाह बन ❋ तुमि वने गेले आमि त्याजिब जीवन
मातृवध करिले हइवे तव पाप ❋ मातृवध-पापे राम, पाबे बड़ ताप
पितृसत्य पालिवे जे माथेर मरणे ❋ कोन् पाप वड़ राम, भाव देखि मने

१ बात टालते हो २ ऐसा मालूम पड़ता है ३ अवज्ञा ४ अधिक बड़ा (पाप)।

ताल देहिं, लछिमन रिसि पाई ❊ मति-भ्रम तुमहिं, कहेउ रघुराई

छं० राजपाट अनुराग, तात ! तव उत्कण्ठा जस भारी ।
तस वनगमन लगन मनमोहन मोहि रुचिर मुदकारी ॥
कूबरि दोष न दोष विमातहिं, घातें चलीं विधाता ।
नेह-सनी, इमि नतरु होत किमि मम विपरीत विमाता ॥
तनय भरत सों, लखत मोर मुख, तेहिं अपराध न लेसू ।
विधि की गति विधि जानत नीके, छमहु बन्धु, तजि रोषू ॥
सुख-दुख लिखा ललार, भोग बिन अमिट कर्म के बन्धन ।
तोष-वचन सुनि रोष फुंकरत गर्जि सुमित्रानन्दन ॥

धनु प्रतञ्च धरि डग चहुँ धरई ❊ लछिमन सुभट कोपि पुनि कहई
सासन तजहिं, होयँ वनचारी ❊ राज भोग तजि साकाहारी
तप संन्यास आदि द्विज - कर्मा ❊ युद्ध सदा प्रिय क्षत्रिय-धर्मा
कबहुँ न क्षत्रिय कानन काजू ❊ परि रिपु-वचन तजै निज राजू
रिपु सम जगत विमातहिं ख्याती ❊ सो हित राजु तजिय केहि भाँती
पितु मन सदा रमत तुम रामा ❊ पितु कर मरन, तजत तव धामा
तुम विन, पितु पयान परलोकू ❊ जननि दुसह घातक सुत-सोकू

आस्फालन लक्ष्मण करेन अतिशय ❊ श्रीराम वलेन, तव वुद्धि भाल नय
यत यत्न कर तुमि राज्य लइवारे ❊ तत यत्न करि आमि जाइते कान्तारे
विमातार दोप नहे, दोपी नहे कुब्जी ❊ सकलि देखिवे भाइ, विधातार वाजी
विमाता जानेन भाल आमार चरित्र ❊ जानिया शुनिया करिलेन विपरीत
भरथ हइते ताँर आमा प्रति आशा ❊ विमातार दोप नाइ, आमार दुर्द्दशा
जे दिन जा हवे ताहा विधि सव जाने ❊ दुःख ना भाविओ भाइ, क्षमा देह मने
दुःख ना भुञ्जिले कर्म्म ना हय खण्डन ❊ सुख-दुःख देख भाइ ललाट लिखन
प्रवोध ना माने, कालसर्प येन गर्ज्जे ❊ सुमित्राकुमार वीर घन-घन तर्ज्जे
धनुकेते गुन दिया चाहे चारि भिते ❊ कुपिया लक्ष्मण वीर लागिल कहिते
राज्यखण्ड छाड़िया हइव वनवासी ❊ राज्यभोग त्यजि फल-मूल अभिलाषी
संन्यास तपस्या यत ब्राह्मणेर कर्म्म ❊ क्षत्रियेर सदा युद्ध, सेइ तार धर्म्म
क्षत्रिय कोथाय के करेछे वनवास ❊ शत्रुर वचने केन छाड़ि राज्य आश
सवे जने विमाता शत्रुर मध्ये गणि ❊ तार वाक्ये राज्य छाड़े, कोथाओ ना शुनि
तोमा विना पितार मनेते नाइ आन ❊ तुमि वने गेले पिता त्याजिवेन प्रान
तोमा विना पिता जाइवेन परलोके ❊ प्रान त्यजिवेन माता तोमार पुत्र-शोके

तव बिछोह पितु-मातु नसावन ❋ तिन बध हेतु बनहु केहि कारन

दो० धिक् अजानु भुजदण्ड मम, खड्ग चर्म्म धनु शूल ।
रघुपति आयसु मिलत छन, करउँ भरत निर्मूल ।। २४ ।।

हेतु न सम्पति, सकल असारा ❋ दास रहत प्रभु विपति पहारा !
रघुपति कहेउ, न भरतहिं दोषू ❋ निपट अजान, अकारन रोषू
भरत अबुझ, अभिसन्धि[1] न ज्ञाना❋अमिट,अनुज! विधिरचित विधाना
बहु कौशिल्या-लखन बुझावा ❋ राम दयामय तनिक न भावा
मातहिं पुनि प्रबोधि कह वचना ❋ आयसु मिलै आजु वन-गमना
दृग जल, कहेउ जननि इमि रोई ❋ अब धौं मिलन सुवन ! कब होई
बहु आराधि मंत्र जो पाये ❋ राम-स्त्रवन[2] कौशिला सुनाये
चौदह वर्ष कुशल वन करहीं ❋ अष्टलोकपति छाया धरहीं
विधि, हरि, गौरि, गनेश, कुमारा[3]❋ रमा, सरस्वति, रुद्र अँगारा[4]
द्वादश भानु छत्र शिर धरहीं ❋ छिति-जल-थल सुत-मंगल करहीं
चौदह वर्ष रहै मम जीवन ❋ तौ सुत ! लौटि होय तव दरसन
बन्दि मातु पद, लीन बिदाई ❋ सिय ढिग चले लखन-रघुराई

एइ शोके पिता-माता मरिबे दु'जने ❋ पिता-माता वध तुमि कर कि कारने
अकारणे हेर ए आजानु-बाहु-दण्ड ❋ अकारणे धरि आमि धनुक प्रचण्ड
अकारणे धरि खड्ग चर्म्म भल्ल शूल ❋ आज्ञा कर भरतेरे करिब निर्म्मूल
सकलि हइल व्यर्थ ए सब सम्पद ❋ आमि दास थाकिते प्रभुर ए आपद
श्रीराम बलेन, तार नाहि अपराध ❋ भरत ना जाने किछु ए सब प्रमाद
अकारणे भरतेरे केन कर रोष ❋ विधिर निर्ब्बन्ध इहा ताहार कि दोष
रामेरे प्रबोध देन कौशल्या लक्ष्मण ❋ दयामय राम नाहि शुनेन वचन
मायेरे कहेन राम प्रबोध-वचन ❋आज्ञा कर माता, आजि जाइ आमि वन
कौशल्या कहेन रामे सजल नयने ❋ ना जानि हइबे कबे देखा तव सने
जे मंत्र कौशल्या पेयेछिल आराधने ❋ सेइ मंत्र दिल रानी श्रीरामेर काने
चतुर्द्दश वर्ष वने थाकिबे कुशले ❋ अष्टलोकपाल राख आमार छाओयाले
ब्रह्मा विष्णु राखुन कार्त्तिक गणपति ❋ लक्ष्मी सरस्वती रक्षा करुन पार्व्वती
एकादश रुद्र आर द्वादश जे रवि ❋ जले-स्थले रक्षा तोमा करुन पृथिवी
चौद्द वर्ष रहे यदि आमार जीवन ❋ तबे तोमा सने पुनः हबे दरशन
विदाय लइया राम मायेर चरणे ❋ गेलेन लक्ष्मण सह सीता संभाषणे

---

१ पड्यंत्र २ कानों में ३ स्वामिकार्तिक ४ एकादश रुद्र ।

उदित कर्म मम सिय ! कछु आजू ❋ वचन-विमातु मिलेउ वनसाजू
बीतेउ वर्ष ब्याहि घर आई ❋ रचेउ फन्द बिच कैकइ माई
भरतहिं राजु तासु अभिलासा ❋ सोइ कारन मम-हित वनबासा
चौदह वर्ष रहउँ बनचारी ❋ निसि दिन प्रिय सेवहु महतारी

दो० जनकनन्दिनी बैन-पति, सुनि अति भई निरास ।
कहेउ चरन-श्रीनाथ विन, केहि बिधि अवध निवास ॥ २५ ॥

नाथ ! परम गुरु तुम मम देवा ❋ करि अनुगमन करउँ प्रभु सेवा
जियब संग पति, पति सहमरना ❋ स्वामिन्! गति-नारी विन पति ना
प्रियतम ! कस अकेल बनबासी ❋ प्रस्तुत मग-सेवा-हित दासी
भरमत विविध दुःख वनदेसू ❋ कछु चलि संग बटावउँ क्लेसू
कहौ जु,'सिय! वन विपति महाना' ❋ प्रभु मुख दरस मिटैं दुख नाना
प्रभु हित रोग शोक नहिं जाना ❋ प्रभु सेवा दुख सुखद महाना
उचित न संग चलब प्रिय ! तोरा ❋ दण्डक वन दारुण अति घोरा
सिंह व्याघ्र निसिचर-दल फिरई ❋ वयस बारि[1] साहस किमि करई
राजसदन बहु सुख बहु भोगू ❋ दण्डक भ्रमन मूल-फल-योगू
इत पर्यक[2] सुखद सुखसयना ❋ उत कुस-काँस चरन दुखदयना

श्रीराम वलेन, सीता निज कर्म्म दोषे ❋ विमातार वाक्ये आमि जाइ वनवासे
विवाह करिया एक वर्ष आछि घरे ❋ हेन काले विमाता फेलिल महाफेरे
ताँहार वचने आमि जाइ वनवास ❋ भरतेरे राज्य दिते विमातार आश
चतुर्द्दश वर्ष आमि थाकि गिया वने ❋ तावत् मायेर सेवा कर रात्रि दिने
जानकी वलेन सुखे हइया निराश ❋ स्वामि विना आमार किसेर गृहवास
तुमि से परम गुरु तुमि से देवता ❋ तुमि यथा जाओ प्रभु, आमि जाइ तथा
स्वामि विना स्त्रीलोकेर नाहि आर गति ❋ स्वामीर जीवने जीये-मरणे संहति
प्राणनाथ, एकाकेन हवे वनवासी ❋ पथेर दोसर हव सगे लह दासी
वने प्रभु, भ्रमण करिबे नाना क्लेशे ❋ दुःख पासरिवे यदि दासी थाके पाशे
यदि वल, सीता वने पावे नाना दुःख ❋ शत दुःख घुचे यदि देखि तव मुख
तोमार कारणे रोग-शोक नाहि गनि ❋ तोमार सेवाय दुःख-सुख सम मानि
श्रीराम वलेन शुन जनक-दुहिते ❋ विषम दण्डक वन न जाइओ साथे
सिंह-व्याघ्र आछे तथा राक्षसी-राक्षस ❋ वालिका हइवा केन कर ए साहस
अन्तःपुरे नाना भोगे थाक मनःसुखे ❋ फल मूल खेये केन भ्रमिबे दण्डके
तोमार सुसज्जा शय्या पालंक कोमल ❋ कुशांकुरे विद्ध हबे चरणकमल

१ कम उम्र २ पलँग ।

दोउ विरूप हम-तुम छबि-हीना * होयँ निरखि दोउ प्रीति-विहीना
चौदह वर्ष अवधि करि पूरी * दोउ सुख करहिं, न कछु अति दूरी
तजि मन सोच, शांति करु धारन * फिरत विषम वन दनुज हजारन
काँपत अधर, कोप सुनि व्यापा * रामहिं कहेउ सहित संतापा
कवन हेतु पितु दिय श्रीचरना * पण्डित कहत अबुझ सम वचना
भय मानत राखत तिय तीरा * तिनहिं सराहिय किमि बलबीरा

दो० जेठ बंधु - सासन गहत, भरत न कीन बिलंब।
तहाँ, नारि तव, बोलिए, रहै कवन अवलंब ॥ २६ ॥

करगत राजु हरन छिन माहीं * नारि-हरन तहँ अचरज नाहीं
वन अनुगमन कष्ट कुस-घाता * प्रभु संगति, तृन सम, सुखदाता
वन भरमत तन लागै धूरी * लखौं अगरु-चन्दन सम रूरी[1]
तव सह जो निवास तरु-छाहीं * सो सुख सुलभ स्वर्ग मोंहि नाहीं
दुख, सुख सकल अहार, विहारा * मोंहि अनुभूति नाथ अनुसारा
उपजै छुधा तृषा श्रम कारन * निरखि श्याम छबि करौं निवारन
तप-उपवन बहु तीरथ पावन * दरस, भ्रमन गिरि विविध सुहावन
शैशव, जब पितुधाम निवासा * मुनिजन कीन्ह भविष्य प्रकासा

तुमि-आमि दोंहे हब विकृत आकृति * दोंहे दोंहाकारे देखि ना पाइब प्रीति
चतुर्द्दश वर्ष गेले देख बुझि मने * एइ काल गेले सुखे थाकिव दुजने
चिन्ता ना करिओ कान्ते,क्षान्त हओ मने * विषम राक्षसगुला आछे सेइ बने
श्रीरामेर वचने सीतार ओष्ठ काँपे * कहेन रामेर प्रति कुपित सन्तापे
पण्डित हइया वल निर्ब्बोधेर प्राय * केन हेनजने पिता दिलेन आमाय
निज नारी राखिते जे करे भय मने * देख ताय वीर बले कोन वीरजने
राज्य निते भरत ना करिल अपेक्षा * तार राज्ये स्त्री तोमार किसे पारे रक्षा
जे जन ग्रहण करे राजत्व तोमार * लइबे तोमार नारी बिलंव कि तार
तव संघे बेड़ाइते कुश-काँटा फुटे * तृणहेन वासि तुमि थाकिले निकटे
तव संगे थाकि जदि लागे धूलि गाय * अगरु-चन्दन-चुया[2] ज्ञान करि ताय
तव संगे थाकि यदि पाइ तरुमूल * स्वर्गधाम नहे कभु तार सम तुल्य
तव दुःखे दुःख मम, सुखे सुखभार * आहारे आहार आर विहारे विहार
क्षुधा-तृषा लागे यदि भ्रमिया कानन * श्याम रूप निरखिया करिब वारण
वहुतीर्थ देखिब अनेक तपोवन * नाना विध पर्व्वते करिव आरोहण
लखन पितार घरे छिलाम शैशवे * बलितेन आमाके देखिया मुनि सबे

---

१ सचमुच २ चोया (चोभा)।

सुनहु जनक ! सिय सुता तुम्हारी ※ पति सहचरी होय बनचारी
विप्र वचन, प्रभु ! कबहुँ न व्यर्था ※ विधि वनवास रचेउ मम अर्था
जो मोहिं तजौ, तजउँ मैं प्राना ※ कतहुँ न तियवध-पातक त्राना
कहेउ राम, बहु बिधि मैं जाँचा ※ सिय ! संकल्प अटल तव साँचा
प्रिय ! बनबास हेतु तव प्रीती ※ अभरन[1] तजहु, चलहु बनरीती
उपजेउ मोद सुनत वैदेही ※ भूषन विविध सकल तजि देही
सम्मुख जे सुपात्र द्विजवृन्दा ※ सौंपि कहेउ, उर अमित अनन्दा
द्विज-वनितन अर्पन परिधाना ※ द्विजगन ! सफल करहु मम दाना

दो० निज संपति-धन-बसन बहु, सिय वितरित सब कीन ।
चितइ लखन तन राम पुनि, मधुर सिखावन दीन ॥ २७ ॥

पालहु प्रजा, देस रहि, नीके ※ दासी दास राखि मन सबके
राजलोभ मन कबहुँ न लेसू ※ पुरजन परिजन हरहु कलेसू
जब पितु-जननि शोक मम करहीं ※ तव मुख निरखि शांति कछु लहहीं
हम तुम विलग, अनुज ! कहुँ नाहीं ※ मम वियोग, लखि तुमहिं भुलाहीं
लखन कहेउ, चलिहौं प्रभु साथा ※ अनुचर जानि, लेहु रघुनाथा
मैं तुम एक, विदित विधि पाहीं ※ विन मम, नाथ ! काज बन नाहीं

शुन हे जनकराज, तोमार दुहिता ※ करिवेन वनवास पतिर सहिता
ब्राह्मणेर-कथा कभु ना हय खण्डन ※ वनवास आछे मम ललारे लिखन
तुमि छाड़ि गेले आमि त्याजिव जीवन ※ स्त्रीवध हइले नाहि पाप - विमोचन
श्रीराम वलेन बुझिलाम तव मन ※ तोमाय परीक्षा करिलाम एतक्षण
हइयाछे वनवास हेतु तव मन ※ खुलिया फेलह तव गाय आभरण
एतेक शुनिया सीता हरिष अंतरे ※ खुलिलेन अलंकार या छिल शरीरे
सम्मुखे देखेन यत ब्राह्मण सज्जन ※ ता सवारे देन तिनि निज आभरण
आभरण समर्पिया कन सीता वाणी ※ भूखन परेन जेन तोमार ब्राह्मणी
सीतार भाण्डारे छिल वहु वस्त्र-धन ※ से सकल करिलेन तिनि वितरण
श्रीराम वलेन शुन अनुज लक्ष्मण ※ देशेते थाकिया करि सवार पालन
दास-दासी सवाकारे करिओ जिज्ञासा ※ राज्य लइवारे भाइ, ना करिह आशा
पिता-माता कातर हवेन मम शोके ※ कतक हवेन शान्त तव मुख देखे
जेइ तुमि सेइ आमि, शुनह लक्ष्मण ※ एकेरे देखिले हय शोक निवारण
लक्ष्मण वलेन, आमि हइ अग्रसर ※ संगे आमि थाकिव हइया अनुचर
जेइ तुमि सेइ आमि, विधि ताह जाने ※ आमि यदि ग्रह थाकि, कि करिबे वने

१ आभूषण ।

संग मातु सिय, वन-वन फिरहीं ❋ बिन सेवक अपार दुख लहहीं
राजलली दुख कबहुँ न जाना ❋ विना दास, वन विपति महाना
जो वन-गमन—कहेउ रघुनायक ❋ बाँधहु लखन! विषम धनुसायक
विकट दनुज दल, बन रन घोरा ❋ जीतिय, धरि धनुवान कठोरा
आयसु पाय बिलंब न लाये ❋ अतुल तीक्ष्ण सर लखन जुटाये
धन भण्डार यतक[1] यहि लागे[2] ❋ आनहु अनुज! धरहु मम आगे
धन मम कछु न प्रयोजन आना[3] ❋ करहु सकल विप्रन हित दाना
कुलप्रोहित ऋषि मुनिन समाजू ❋ दै धन तृप्त करहु तिन आजू
द्विज कुलीन जहँ लगि जहँ पावौ ❋ मन वाञ्छित तिन आस पुरावौ
दुखो दरिद्र अपंग[4] भिखारी ❋ जस चाहना, करौ अनुसारी

दो० मम वियोग जिन वेदना, विकल जहाँ जे लोक।
वर्ष चतुर्दश हेतु धन, दै मेटहु तिन शोक ॥ २८ ॥

आयसु पाय राम रघुराई ❋ धरेउ विपुल धन संपति लाई
अमित दान! धन बचेउ न कोषा ❋ राम सबन मृदु बैनन तोषा
करि मम याद सोक नहिं काजा ❋ भरत करइँ प्रतिपाल समाजा
भरत विमल तन-मन नहिं दोषू ❋ तिन आचरन सदा संतोषू

सीता संगे केमने भ्रमिबे वने-बने ❋ सेवके छाड़िले दुःख पावे दुइ जने
राजार कुमारी सीता दुःख नाहि जाने ❋ सेवक बिहने दुःख पावेन कानने
श्रीराम बलेन, भाइ, जाबे जदि वन ❋ वाछिया धनुक-वाण लह रे लक्ष्मण
विषम राक्षस सब आछे सेइ वने ❋ धनुर्व्वाण लह, येन जयी हइ रणे
पाइया रामेर आज्ञा लक्ष्मण सत्वर ❋ भाल-भाल वाण सब बाँधिला विस्तर
श्रीराम बलेन, शुन लक्ष्मण सत्वरे ❋ तल्लास करह धन, कि आछे भाण्डारे
धने आर आमार नाहिक प्रयोजन ❋ ब्राह्मण सज्जने देह, आछे यत धन
मुनि-ऋिष आदि करि कुलपुरोहित ❋ से सबारे धन दिया तोषह त्वरित
वाछिया-बाछिया आनि कुलीन ब्राह्मण ❋ येवा यत चाहे तारे देह तत धन
जतेक दरिद्र आछे, भिक्षा मागि खाय ❋ से सबारे देह धन येवा यत चाय
मम दुःखे यत लोक हइवेक दुःखी ❋ चतुर्द्दश वर्ष येन हय तारा सुखी
पाइला लक्ष्मण यदि श्रीराम-आदेश ❋ ताँहार सम्मुखे धन आनेन अशेष
भाण्डार करेन शून्य धन वितरणे ❋ सवारे तोषेन राम मधुर वचने
आमालागि तोमरा न कारिओ क्रन्दन ❋ करिबे भरत - भाइ सवारे पालन
कोन दोषे नाहि भाइ भरत-शरीरे ❋ बड़ तुष्ट आछि आमि तार व्यवहारे

---

१ जितना भी २ इसी समय ३ अन्य, इतर ४ लाचार।

करि उत्सर्ग[1] रत्न बहु नाना ※ कोष न शेष, अखिल[2] किय दाना
बचेउ न कछु, सब दृव्य लुटावा ※ त्रिजटा नाम विप्र सुनि पावा
निपट दीन, सुनि विरद महाना ※ मति न धीर सुनि अतुलित दाना
गति असमर्थ, विलोचन-हीना ※ गृहनी[3] टेरि सिखावन दीना
याचक राम अयाच्य बनावा ※ हम दोउ जरठ[4] मरन नगिचावा
तुम अशक्त मैं नारि बिचारी ※ उदर चलै किमि ? संकट भारी
गिरत-परत द्विज लकुटि[5] सहारे ※ कीन गोहार राम के द्वारे
त्रिजटा नाम, शिथिल मम-गाता ※ द्विज दरिद्र मोंहि रचेउ विधाता
गृह ब्राह्मणी, जरठ सुतहीना ※ मरत दोऊ नित अन्न-विहीना
चलेउँ लकुटि बल, करहु सनाथा ※ दीनहिं गति न बिना रघुनाथा
कहेउ राम, धन शेष न लेसू ※ लक्ष धेनु लै गमनौ देसू
लहि गोदान मोद अधिकाई ※ चलि गोसदन समेटत गाई

दो० शिखा बाँधि पुनि छड़ी लै, गिरत परत पग दीन ।
वसन धेनु पकरत विफल, लखेउ सबन द्विज दीन ।। २९ ।।

सुरभिन[6] द्विज झुरमुट भयकारी ※ हसत कोऊ, कोउ निरखि दुखारी
ब्रह्मघात पातक शिर जानी ※ रघुपति कहेउ सुकोमल बानी

नाना रत्न करिलेन राम परिहार ※ दाने शून्य करिलेन यतेक भाण्डार
सकल भाण्डार शून्य, नाहि आर धन ※ हेन काले वार्त्ता पाय त्रिजट ब्राह्मण
बड़इ दरिद्र से, त्रिजट नाम धरे ※ दान-कथा शुनिआ से धड़ फड़ करे
चलिते शकति नाइ, चक्षु क्षीण हय ※ ब्राह्मणी ताहाके हित उपदेश कय
दीनेरे करेन धनी, दिया राम धन ※ तुमि आमि बुड़ा-बुड़ी मरि दुइजन
तुमि वृद्ध, आमि वृद्धा, दुःखये अपार ※ के आर पुषिवे, कोथा मिलिबे आहार
शुनिया ब्राह्मण तवे नड़ि-भर करे ※ अति कष्टे गिया कहे रामेर गोचरे
आमि द्विज दरिद्र त्रिजट नाम धरि ※ वृद्धकाले ब्राह्मणीके पुषिते ना पारि
पुत्रहीन आमरा के करिवे पालन ※ अनाहारे बुड़ा-बुड़ी मरि दुइ जन
नड़ि-भर करिया ये आहेनु संप्रति ※ तोमा बिना दरिद्रेर नाहि आर गति
श्रीराम वलेन, द्विज, आसियाछ शेषे ※ धन नाइ, लक्ष धेनु ल'ये जाह देशे
धेनु-दान पेये द्विज हरिष अन्तरे ※ कापड़ आँटिया जाय पालेर भितरे
दृढ़ करि चुल बाँधि नड़ि करि हाते ※ पालेते प्रवेश करे उठिते-पड़िते
बुड़ार विक्रम देखि भावे सर्व्व जने ※ धेनुते मारिबे आजि ए वृद्ध ब्राह्मणे
हासिया विह्वल केह, कारो वा विषाद ※ ब्राह्मणेर वध हेतु घटाल प्रमाद

---

१ त्याग २ सर्वस्व ३ पत्नी ने ४ वृद्ध ५ लाठी ६ गायों के साथ ।

कहत सकोच, एक लख गाई ※ कठिन सम्हारब हे द्विजराई !
संकट एक धेनु बस कीन्हे ※ जियहु न धेनु लात हनि[1] दीन्हे
गैयन सहित देहुँ मैं ग्वाला ※ करै सदा सुरभिन[2] प्रतिपाला
निर्धन अति द्विज, मोहिं प्रतीती ※ लेहु इतर धन जो तव प्रीती
अस अभिलाष न कछु रघुनन्दन ※ गोधन आन[3] न नाथ प्रयोजन
अमित क्षीर सुख दोउ नित लहहीं ※ कतक बेंचि धन संग्रह करहीं
सब की गति तुम नाथ-अनाथा ※ वरनि सकै को तव गुनगाथा
गो-लख लै द्विज चलेउ निवासा ※ अवधकाण्ड वरनेउ कृतिवासा

श्रीराम-लक्ष्मण-सीता की वन-यात्रा और शृंगवेरपुर-गमन

रघुपति सबन विभव विस्तारे ※ कौतुक ! दरिद धनी भये सारे
तजि प्रभु राज चले बनबासा ※ शिर धुनि विकल सकल निज बासा
पुर तजि चले अतुल दोउ वीरा ※ युगुल मध्य छबि सीय सरीरा
अवध प्रजा विलाप अति भारी ※ सिय पाछे धाई पुरनारी
सकी न जेहि रवि-किरन निहारी ※ सो सिय आजु प्रकट बनचारी
चतुर्दोल सुबरन असवारी ※ सो रघुपति भूतल पदचारी

श्रीराम बलेन, द्विज, कहिते डराइ ※ ना पारिवे लइवारे एक लक्ष गाइ
एक धेनु लइते तोमार ए संकट ※ मरिवारे जाह केन धेनुर निकट
धेनुर सहित दान दिलाम गोयाल ※ गोयाले राखिबे धेनु, थाके यतकाल
अनुमाने बुझि तुमि बड़इ निर्धन ※ आज्ञा कर, दिते पारि अन्य किछु धन
द्विज बले प्रभु, नाहि चाहि आर धन ※ धेनु-धन बिना नाहि अन्य प्रयोजन
बुड़ा-बुड़ी धेनु-दुग्ध खाइब अपार ※ कत दुग्ध बिकि दिया पूरिब भांडार
अनाथेर नाथ तुमि सकलेर गति ※ कहिते तोमार गुण काहार शकति
एक लक्ष धेनु लये द्विज गेल देशे ※ रचिल अयोध्याकांड कवि कृत्तिवासे

श्रीराम, सीता ओ लक्ष्मणेर वनवास-यात्रा ओ शृंगवेरपुरे गमन

रामेर प्रसादे बाड़े सबार ऐश्वर्य्य ※ दरिद्र हइल धनी शुनिते आश्चर्य्य
राज्यखण्ड छाड़ि राम जान वनवासे ※ शिरे हाथ दिया काँदे सबे निजवासे
माझे सीता आगे-पाछे दुइ महावीर ※ तिन जन हइलेन पुरीर वाहिर
स्त्री-पुरुष काँदे यत अयोध्या-नगरी ※ जानकीर पिछे जाय अयोध्यार नारी
जे सीता ना देखितेन सूर्य्यार किरण ※ सेइ सीता बने जान, देखे सर्व्वजन
जेइ राम भ्रमितेन स्वर्ण चतुर्द्दोले ※ सेइ प्रभु राम पथ वाहेन भूतले

१ लात-प्रहार २ गायों का ३ अन्य ।

दो० देखी अस अनरीति जनि, कबहुँ न सुनेउ प्रसंग ।
बाल बृद्ध बनिता सकल, रोय उठे इकसंग ॥ ३० ॥

तपवन-गमन राम जग-नाथा ❊ पितुपद चले नवावन माथा
बुद्धि लोप दसरथ हत ज्ञाना ❊ सुत-वनगमन ! बचैं किमि प्राना
नृप-मति कुमति कैकई नासी ❊ राम सरिस सुत किय बनबासी
निकट मरन-नृप होत प्रतीती ❊ सोइ कारन मति अस विपरीती
कानन चले सहित सिय स्वामी ❊ तजि सुख सकल लखन अनुगामी
सब जन करइँ अनुगमन रामा ❊ वर्ष चतुर्दश वन विश्रामा
पुर अरु धाम अखिल तजि देई ❊ बिलसइँ भरत-सहित कैकेई
निवसइँ भालु श्रगाल अगाधा[1] ❊ राजहिं माय-पूत बिन बाधा
रसना सबन विरद[2] रघुवीरा ❊ तीनिउ[3] चले, उतै नृप तीरा
पहुँचे जब बरोठ रघुनन्दन ❊ विलपत सुनेउ सदन अजनन्दन
अहह कैकई तव विष मारन ❊ सब बिधि मिटेउँ, कुटिल ! तव कारन
कीन्ह निसिचरी रघुकुल नासा ❊ हाय ! राम सम सुत बनबासा
किमि बनगमन निरखिहौं नन्दन ❊ लखि पयान मम प्रान बिसर्जन
मोह न प्रान, एक मोहिं शोकू ❊ परवस नारि, अजस चहुँ लोकू

कोथाओ ना देखि हेन कोथाओ ना शुनि ❊ हाहाकार करे वृद्ध-बालक-रमणी
जगतेर नाथ राम जान तपोवने ❊ विदाय लइते जान पितार चरणे
बुद्धि नाहि भूपतिर हरियाछे ज्ञान ❊ राम बने गेले ताँर किसे बाँचे प्रान
राजारे पागल कैल कैकेयी राक्षसी ❊ रामहेन पुत्रे हाय कैल वनवासी
मने बुझि राजार ये निकट मरण ❊ विपरीत बुद्धि हय, एइ से कारण
जानकी सहित राम जान तपोवन ❊ राज्य-सुखभोग छाड़ि चलिल लक्ष्मण
पुरी शुद्ध सबे जाइ श्रीरामेर सने ❊ चौद्दावर्ष एक ठाँइ थाकि गिया वने
अयोध्यार घर-द्वार फेलाइ भांगिया ❊ कैकेयी करुक राज्य भरते लइया
श्रृगाल-गर्द्दभ थाक् अयोध्या नगरे ❊ माये-पोये राजत्व करुक एकेश्वरे
एइ रूपे श्रीरामेरे सकले बाखाने ❊ राजार निकटे द्रुत जान तिन जने
प्रकोष्ठेर बाहिरेते रहे तिन जन ❊ आवास भितरे राजा करेन क्रन्दन
भूपति बलेन, रे कैकेयि भुजंगिनि ❊ तोरे आनि मजिलाम सवंशे आपनि
रघुवंश-क्षय - हेतु आइलि राक्षसि ❊ राम हेन पुत्रके करिलि वनवासी
केमने देखिब आमि राम जाय वन ❊ राम वने गेले आमि त्यजिब जीवन
प्रान जाक, ताहे मम नाहि कोन शोक ❊ आमारे स्त्रीवश बनि घुषिवेक लोक

१ अगणित २ प्रशंसा ३ राम-सीता-लक्ष्मण ।

जीते विषद[1] भूप रन सर्वा ※ काँपत देव दनुज गन्धर्वा
जीतेउँ समर असुर-पति संबर ※ अर्द्धासन मोंहि देत पुरंदर
दो० नारि-वचन निर्बन्ध फँसि, दसरथ तजे परान।
रहै चिरंतन अमर यह, जग अपकीर्ति महान ॥ ३१ ॥
लखि मम अन्त, सिखै नर नीके ※ रहै अधीन कबहुँ जनि तिय के
तव पातक तव सुतहिं उतारा ※ तुम दोउ सन मम आजु किनारा[2]
तजउँ तुमहिं अरु भरतकुमारा ※ तर्पन श्राद्ध न कछु स्वीकारा
सुनहिं बरोठ तीनि बन-चारी ※ विलपत नृप जिमि गिरा उचारी
पितु की व्यथा-व्यथित दोउ भाई ※ उठे रोय लखि तात - रोवाई
अन्तर्सदन भूप दुखलीना ※ पहुँचि सुमंत्र दण्डवत कीना
नाथ! राम, सिय-लखन समेतू ※ आयसु चहत बनगमन हेतू
सचिव! मूढ़ मैं, बुद्धि गवाँई ※ रानि सात शत आनहु जाई
चलेउ सुमंत्र मानि नृपबानी ※ आनेउ वेगि सात शत रानी
सोहैं सकल भूप चहुँ घेरी ※ चारु चन्द्र चहुँ नखतन ढेरी
पुनि सुमंत्र नृप - आज्ञा पाई ※ आनेउ सीय, लखन, रघुराई
पितु पद बन्देउ रघुकुलकेतू ※ आयसु चहेउ गमन बन-हेतू

बड़-बड़ राजा आमि जिनिलाम रणे ※ देव-दैत्य-गन्धर्व्व काँपये मोर बाणे
जेइ राजा जिनिलेक दानव सम्बर ※ जार अर्द्धासने स्थान देन पुरन्दर
सेइ राजा दशरथ स्त्री लागिया मरे ※ एइ अपकीर्त्ति मोर थाकिल संसारे
स्त्रीर वश ना हइबे अन्य कोन नर ※ आमार मरणे लोक शिखिल विस्तर
बर्जिबे भरत तोरे एइ अनाचारे ※ आमि बर्जिलाम तोरे आर भरतेरे
आजि हैते तोर आमि करिनु बर्ज्जन ※ ना लइब भरतेर श्राद्ध वा तर्पण
थाकि अन्य प्रकोष्ठते ताँरा तिनजन ※ शुनेन राजार सर्व्व-विलाप-वचन
राजार दुःखेते दुखी श्रीराम-लक्ष्मण ※ राजार क्रन्दने कान्दे भाइ दुइजन
आवास भितरे देखे, कान्देन भूपति ※ हेन काले उपनीत सुमंत्र-सारथि
जोड़ हाते वार्त्ता कहे राजार गोचर ※ निवेदन, अवधान कर नृपवर
श्रीराम लक्ष्मण सीता जान आजि वने ※ बिदाय लइते आसिलेन तिन जने
भूपति बलेन, मंत्र, नाहि मम ज्ञान ※ सातशत महाराणी आन मोरे स्थान
पाइया राजार आज्ञा सुमंत्र सारथि ※ सातशत महाराणी आने शीघ्रगति
सातशत महाराणी चारिदिके बैसे ※ तारागण-मध्ये येन चन्द्रमा प्रकाशे
सुमंत्र राजाज्ञा मते चलिल तखन ※ श्रीराम-लक्ष्मण-सीता आने तिनजन
जोड़ हाते बन्दे राम पितार चरणे ※ आज्ञा कर, बने जाइ एइ तिन जने

१ बड़े-बड़े २ कोई सम्बन्ध नहीं।

सुनत न थिर, नृप रुदन अपारा ❋ सुलभ न सुत अब मिलन हमारा
इत निवास तौ प्रान नसावौं ❋ तुम सँग चलि कानन सुख पावौं
सुनि समुझाय कही रघुनाथा ❋ पितु अरण्य अनुचित सुत-साथा
तौ इक रैन रहौ रघुवीरा ❋ निसि निवास कीजिय इक-तीरा

दो० निरखि तात! भरि नयन छबि, रैन[1] लहउँ आनन्द ।
आजु बाद प्रिय सुवन! मोंहि, दुर्लभ तव मुखचन्द ॥ ३२ ॥

रुकहिं रैन, पितु तदपि बिछोहा ❋ निसि-हित सत्य-उलंघ न सोहा
तिथि वनगमन सुनिश्चित आजू ❋ तजि, विमातु-मन-मलिन न काजू
तपसिन अन्न न उचित लखाई ❋ सेवहिं कन्द मूल वन जाई
सत्य पालि, पितु ऋन उद्धारी ❋ कुल-भूषन सोइ सुत जसकारी
कह नृप, हे सुमंत्र ! मन दीजै ❋ हय-गज-रतन बहुल धन लीजै
वन - प्रदेश बहु पुण्यस्थाना ❋ द्विज-तपसिन लखि करहु प्रदाना
जस - जस आयसु देहिं नरेसू ❋ तस उपजत कैकइहिं कलेसू
मुख मलीन काया कुम्हिलानी ❋ नृप तन हेरि कहेउ कटुबानी
भरतहिं राज देन तुम हारी ❋ कुटिल हृदय, कस पाँव पछारी
तवकुल सगर सुकीर्ति प्रकासा ❋ सुवन-जेठ असमञ्ज निकासा

शिरे घात हाने राजा करे हाहाकार ❋ मम संगे देखा वाछा, ना हइबे आर
हेथा ना रहिब आमि, ना रबे जीवन ❋ तोमार सहित राम, जाव तपोवन
श्रीराम बलेन, पिता, ए नहे बिहित ❋ पुत्रसंगे पिता जाय, ए नहे उचित
भूपति बलेन, राम, थाक एक राति ❋ एक रात्रि तव सने करिव वसति
भालमते देखिब तोमार सुवदन ❋ पुनर्व्वार मुखचन्द्र ना हवे दर्शन
श्रीराम वलेन, यदि निश्चित गमन ❋ एक रात्रि लागि केन सत्य उल्लंघन
आजि आमि बने जाब, आछे ए निर्व्वंध ❋ ना गेले विमाता मने भाविबेन मन्द
आजि हैते अन्न आमि करिनु बर्ज्जन ❋ बने गिया फल-मूल करिव भक्षण
तारे पुत्र बलि, ये कुलेर अलंकार ❋ पितृसत्य पालिया शोधये पितृधार
भूपति बलेन, शुन, सुमंत्र वचन ❋ अश्व हस्ती संगे देह आर बहुधन
अरण्येर मध्ये आछे बहु पुण्यस्थान ❋ ब्राह्मण तपस्वी देखि करिबे प्रदान
धन दिते राजा यदि करेन आश्वास ❋ कैकेयी अन्तरे दुःखी, छाड़िल निःश्वास
सर्व्वांग हइल शुष्क, म्लान हैल मुख ❋ राजारे निन्दिल बहु पेये मन दुख
भरतेरे राज्य दिते करि अंगीकार ❋ कुटिल-हृदल, कर अन्यथा ताहार
तव वंशे छिलेन सगर महाशय ❋ असमञ्ज-पुत्रे बर्ज्जे प्रधान तनय

---

१ रात्रिभर ।

तुमहिं व्यथा त्यागत रघुराई * पालन - सत्य तुमहिं दुखदाई
सुनि कटुवचन कहेउ नृप बानी * पापमयी सुनु कैकयिरानी !
दुराचार असमञ्ज कुमारा * गर धरि बहु बालकन सँहारा
आय सगर ढिग, तिन पितु-जननी * दुखियन कही भूप-सुत करनी
तजि तव राजु, अन्त कहुँ जाहीं * तव सुत-जुलुम सहन अब नाहीं
जो पुनि तुमहिं प्रजा-अनुरागा * करौ कुअँर असमंजस त्यागा

दो० सुनत तजेउ असमञ्ज खल, सगर लोकमत मानि ।
तिल न दोष, केहि विधि तजौं, रघुनन्दन, कहु रानि ! ॥ ३३ ॥

जगजीवन जगहित मम रामा * केहि विधि कहउँ, तजौ सुत! धामा
सुनि पितु-वचन कहेउ रघुराई * उचित विमातु-वचन अधिकाई
राज-पाट तजि बन पथ धारन * तेहि हय-गज-धन सकल अकारन
दण्ड पाणि[1] बल्कल बस अंगा * केवल सिया-लखन मम संगा
चर्चा परत कैकई काना * तुरत दीन बल्कल परिधाना[2]
देखेउ गहत बसन रघुनाथा * रुकेउ न रुदन अयुध्यानाथा[3]
लखन राम सिय बल्कल धारा * रुदन सात शत रानि अपारा
सिय-तन पट-तरु[4] जबहिं निहारा * चहुँ लोचनन, बही जलधारा

रामेरे बर्ज्जिते आजि मने लागे व्यथा * आपनि करिया सत्य करिले अन्यथा
एत यदि भूपतिरे कहिल कैकेयी * नृपति कहेन, शोन् पापीयसि, कहि
सगरेर पुत्र असमञ्ज दुराचार * गला चापि बालकेरे करित संहार
तार माता-पिता पाय दुःख पुत्रशोके * जानाइल सगर - राजाय प्रजालोके
तव राज्य छाड़ि राजा, जाब अन्य देश * असमञ्ज प्रजागणे देय बड़ क्लेश
केमने थाकिवे प्रजा, ये देशे एमन * प्रजा यदि चाह, पुत्रे करह ब्रज्जन
असमञ्जे बर्ज्जे राजा लोक-अनुरोधे * श्रीरामेरे बर्ज्जि आमि कोन् अपराधे
जगतेर हित राम जगत - जीवन * हेन रामे के कहिबे, जाओ तुमि वन
तखन बलेन राम पितृ विद्यमाने * भाल युक्ति बलिलेन माता तव स्थाने
राज्य छाड़ि जाहार जाइते हय वन * अश्व-हस्ति-धने तार कोन् प्रयोजन
गाछेर बाकल परि दण्ड करि हाते * जानकी लक्ष्मण मात्र जाइबेक साथे
बाकल परिबे राम, कैकेयी ता शुने * बाकल राखियाछिल, दिल ततक्षणे
बाकल आनिया दिल श्रीरामेर हाते * कानदेन बाकल देखि राजा दशरथे
लक्ष्मणेर सीतार बाकल तिन खानि * रोदन करेन देखि सातशत रानी
अश्रुजल सबाकार करे छल - छल * केमने परिबे सीता गाछेर बाकल

---

१ हाथ में २ भोजपत्र के वस्त्र ३ दशरथ ४ वृक्ष की छाल के वस्त्र ।

हे हरि! बसन-गाछ सिय केरे ❊ पीर सूल सम हिय नृप केरे
दया न लखि रघुवंश-किशोरा ❊ शिला सरिस हिय कैकयि! तोरा
डसेसि एक! विष तीनिहुँ व्यापा ❊ लखन-सिया किमि वन-संतापा?
पितु कर वचन राम शिर भारा ❊ लछिमन-सिय कस देस निकारा
विकल, बसन लखि वधू, नरेसू ❊ किय निषेध परिजन सियवेसू
पतिब्रत हेतु चली पति संगा ❊ पितु-प्रन भार न कहुँ सिय-अंगा
सुनत सुमंत्र सदन तन धाये ❊ अभरन रतन दिव्य बहु लाये
पग नूपुर, कंकन कर सोहा ❊ मकराकित कुण्डल मन मोहा

दो० रत्नावलि, कटि करधनी, अनुपम बाजूबंद।
अँगुरिन हीरक मुद्रिका, सिय-छबि करत दुचंद ॥ ३४ ॥

चुरियाँ शंख सुरम्य सुहावन ❊ भूषन विविधि विचित्र लुभावन
अनुपम वसन सजी इमि सीता ❊ मनहुँ सकल लोकन छबि जीता
अभरन-छबि, सिय-छबि अनुरूपा ❊ कीन प्रणाम जाय ढिग भूपा
बन्दि ससुर-पद, लीन बिदाई ❊ सास समीप जोरि कर आई
मन धरि सुनु सिय सीख हमारी ❊ निसिदिन पति-सेवा सुखकारी
राजबधू पुनि राजकुमारी ❊ तव आचरन अनुसरइँ नारी

हरि - हरि स्मरण करये सर्व्वलोके ❊ बज्राघात हय येन भूपतिर बुके
सबे बले कैकेयि, पाषाण तोर हिया ❊ तिलेक ना हय दया श्रीरामे देखिया
एक जने दंशिया दंशिल तिनजने ❊ लक्ष्मण - सीतारे केन पाठाइलि वने
पितृसत्य पालिते श्रीराम जान बन ❊ जानकी-लक्ष्मण जान किसेर कारण
बधूर बाकल देखि राजार क्रन्दन ❊ पातृ-मितृ वले, सीता परुन बसन
पितृसत्य पुत्र पाले, बधूर कि दाय ❊ पतिव्रता सीतादेवी पश्चात गोड़ाय
नानारत्ने परिपूर्ण राजार भाण्डार ❊ सुमंत्र शुनिया आने दिव्य अलंकार
जानकी परेन ताड़ तोड़न नूपुर ❊ मकर - कुण्डल हार अपूर्व्व केयूर
मणिमय माला आर विचित्र पाशुलि ❊ हीरार अंगुरी परि शोभिल अंगुली
दुइ हाते शंख तार अद्भुत निर्म्माण ❊ एइरूपे करिल भूषण परिधान
पट्ट वस्त्र परिलेन अति मनोहर ❊ त्रैलोक्य जिनिया रूप धरिल सुन्दर
येमन भूषण ताँर तेमनि आकार ❊ श्वशुर जानकीदेवी करे नमस्कार
विदाय लइया सीता श्वशुर - चरणे ❊ जोड़हात करि रहे श्वश्रु विद्यमाने
कौशल्या कहेन, सीता, शुनु सावधाने ❊ स्वामि-सेवा सतत करिबे रात्रि दिने
नृपतिर बहुयारी, राजार कुमारी ❊ तोमार आचारे आचरिबे अन्य नारी

पति निर्धन धनवन्त समाना ❋ वनितन[1] उचित अन्त नहिं ध्याना
मातु! सीख तव भल पतिसेवा ❋ पूजउँ सदा चरन - पतिदेवा
सोइ लालसा, न मन कछु ध्याना ❋ कारन सोइ वन, मातु! पयाना
धर्म-सीख बहु पितुगृह पावा ❋ इतर नारि सम मोर न भावा[2]
मम-हित-रत सर्वोपरि माता ❋ दिय उपदेस सदा सुभ-दाता
भाग सराहेउ सुनि कौशिल्या ❋ लहेउँ धन्य बहुअरि[3] तव तुल्या
सियहिं प्रबोधि, राम सों कहेऊ ❋ तप-उपवन सचेत सुत! रहेऊ
त्रिभुवन चहुँ सिय छबि उजियारी ❋ सावधान! भय कानन भारी!
कहेउ सुमित्रा पुनि निज-नन्दन ❋ पितु सम जेठ बन्धु रघुनन्दन
सदा देव सम सेवहु भ्राता ❋ मों सन अधिक जानकी माता

दो० लखन-मातु तन हेरि पुनि, कहेउ कोसलाधीस।
करहिं तीनि जन वन-गमन, मातु चहौं आसीस ॥ ३५ ॥

कानन तीनि समोद निवासू ❋ त्रिभुवन तिनहिं न कहुँ भय-त्रासू
पुनि बन्दना मात शत माई ❋ रघुपति याचत सबन बिदाई
बहुरि प्रणाम कैकयी - चरना ❋ अनुमति मातु मिलै बन-गमना
भली-बुरी निकसी कछु बानी ❋ क्षमहु, मातु! मन गिला न मानी

निर्धन हउक स्वामी अथवा सधन ❋ स्वामि-विन स्त्रीलोकेर अन्ये नहे मन
जानकी बलेन, गो कौशल्या ठाकुरानि ❋ स्वामि-सेवा करिते जे आमि भालजानि
स्वामि-सेवा करि मात्र, एइ आमि चाइ ❋ से कारणे ठाकुरानि, वनवासे जाइ
धर्म्म-कर्म्म यत करियाछि पितृघरे ❋ इतर स्त्रीलोक-प्राय ना भाव आमारे
मायेर अधिक जे आमार भाव व्यथा ❋ हित उपदेश ताइ शिखाइला माता
ताँर कथा शुनिया कहेन महाराणी ❋ तोमा हेन वधू आमि भाग्य बलि मानि
बधूर प्रबोध दिया बुझान श्रीरामे ❋ सतर्क थाकिओ राम, मुनिर आश्रमे
जानकीर रूपे चमत्कृत त्रिभुवन ❋ सावधाने रवे राम, भयानक वन
सुमित्रा बलेन शुन तनय लक्ष्मण ❋ देवज्ञाने श्रीरामे देखिबे सर्व्वक्षण
ज्येष्ठभ्राता पितृ-तुल्य सर्व्वशास्त्रे जानि ❋ आमार अधिक तव सीता ठाकुरानी
श्रीराम बलेन, शुन सुमित्रा सताइ ❋ आशीर्व्वाद कर, आमि वनवासे जाइ
वनेते तिनेर तिन थाकिब दोसर ❋ त्रिभुवने काहारेओ नाहि मोर डर
बन्देन सबारे राम, यत राजरानी ❋ सबाकार ठाँइ राम मागेन मेलानि
नमस्कार करिलेन कैकेयी - चरणे ❋ अनुमति कर माता, जाइ आमि वने
भालमन्द बलियाछि दुरक्षर वानी ❋ मने किछु ना करिह, देह गो मेलानि

---

१ स्त्रियों को २ विचार ३ वहू।

कुपित पापरति मौन सुहावा ※ राम हेतु मुख शब्द न आवा
जब लौं बन, सौंपहुँ पितु, माता[1] ※ सब विधि जतन करहु सुख ताता
आस न प्रान, कहेँउ पितुदेवा ※ किमि तव जननि करै मम सेवा
तात! एक अनुरोध न टारौ ※ रथ चढ़ि दिवस-तीनि पग धारौ
रुख भूपति—अनुमति रघुनन्दन ※ निरखि सुमंत्र सजायेउ स्यन्दन
सहित अनुज-सिय रथ, भगवाना ※ लखन सवाँरेउ आयुध नाना
तजेउ राजु, वन-पथ प्रभु लीन्हा ※ बहु नर-नारि अनुगमन कीन्हा
धाये असित, अवधपुर वासी ※ राज-सदन के सकल निवासी
हे सुमंत्र! रोकहु कछु स्यंदन ※ लखइँ चन्द्रमुख-छबि-रघुनन्दन
अरझत काँट, हँफत, नृप धावहिं ※ सुतन-सीय-तन दीठि जमावहिं
सुनहु सुमंत्र कहेँउ रघुराई ※ पितु-दुर्दसा दुसह दुखदायी
रथ-गति वेग करउ यहि रूपा ※ सुलभ होय जनि दरसन-भूपा

दो० सुनि सुमंत्र बोले बचन, तव आयसु मम सीस।
तदपि याचना कछु करौं, सुनउ विनय जगदीस॥ ३६॥

पुरजन परिजन सहित नरेसू ※ रथ अनुसरत अखिल, तजि देसू
तव निति दरसन तिन्हिं सुखारी ※ कोउ न देन पग चहत पछारी

पापिष्ठा कैकेयी ताहे अति क्रूरमति ※ भालमन्द ना वलिल श्रीरामेर प्रति
मायेरे सँपेन राम नृपतिर पाय ※ यावत् ना आसि, पिता, पालिह माताय
राजा वलिलेन यदि रहे ए जीवन ※ तवे त तोमार माये करवि पालन
आमार ए आज्ञा राम, ना कर लंघन ※ तिन दिन रथे चढ़ि करह गमन
राजाज्ञाय रथ आने सुमंत्र सारथि ※ जाइवेन तिनदिन रथे रघुपति
श्रीराम लक्ष्मण सीता उठिलेन रथे ※ तोलेन आयुध नाना लक्ष्मण ताहाते
राज्यखण्ड छाड़िया श्रीराम जान वने ※ पाछे-पाछे धाय कत स्त्री-पुरुषगणे
भांगिल सकल राज्य अयोध्या नगरी ※ श्रीरामेर पाछे धाय सव अन्तःपुरी
डाक दिया सुमंत्रे वलिछे सर्व्वजन ※ रथ राख श्रीरामेर देखि चन्द्रानन
काँटा-खोंचा भांगि राजा ऊर्द्धश्वासे धाय ※ श्रीराम लक्ष्मण सीता कत दूरे जाय
श्रीराम बलेन, शुन सुमंत्र सारथि ※ देखिते ना पारि आमि पितार दुर्गति
रथेर कराओ तुमि त्वरित गमन ※ पितार सहित येन ना हय दर्शन
सुमंत्र बलेन, आज्ञा ना करिब आन ※ एक वाक्य वलि आमि कर अवधान
भांगिल राजार संगे अयोध्या नगरी ※ रथेर पश्चाते ओइ देख सर्व्वपुरी
राजार सहित यदि हय दरशन ※ तबे ना देशेते लोके करिबे गमन

---

1 कौशल्या के प्रति।

राज, प्रजा, परिवार न कामा ※ मानहु कथन, कहेउ श्रीरामा
रथ गतिवान करौ यहि रूपा ※ झलक न पाय सकैं मम भूपा
आयसु धारि तुरंग बढ़ावा ※ पवन-वेग स्यन्दन गति पावा
ओझल भयेउ दरस कछु काला ※ गिरे अचेत अवनि नरपाला
सबन सम्हारि महीप उठावा ※ धूरि पोंछि मुख जल सरसावा
गत दिन एक तदपि अति म्लाना ※ जीवन कठिन सबन अनुमाना
ग्रसित-चन्द्र[1] सम असित[2] नरेसू ※ केहु विधि लै, किय सदन प्रवेसू
सधत न अंग, गिरे नृप धरनी ※ लीन उठाय भरत कै जननी
चण्डालिन! मम छुवइ न गाता ※ पापिनि! तैं कीन्हेसि पतिघाता
प्रथम जबहिं युवती कैकेई ※ अहिनिसि मम संगति मन देई
प्रगटेउ कुफल रूप सोइ मोहा ※ सर्वनाश, हा! राम-विछोहा
कौशिल्यागृह पुनि नृप गयऊ ※ दोउ दुख समिटि एकरस भयऊ
रुदन चारि दिन थिर कोउ नाहीं ※ दोउ जन दुखी एक दुख माहीं
मुनिगन वेद, योगिजन योगू ※ तजेउ, प्रजा रुचि रही न भोगू

दो० हय-गज-मृग आहार विन, आहुति अगिनि न लेय।
प्रजा अन्न तज, निसि तिया पति-सुख ध्यान न देय॥

श्रीराम बलेन, बलि सुमंत्र तोमारे ※ प्रयोजन नाहि मोर राज्य परिवारे
मन वाक्य आपनि ना पार लंघिवारे ※ झाट रथ चलाओ, ना देखा दिब कारे
श्रीरामेर आज्ञा मते सुमंत्र - सारथि ※ चालाइल रथखान पवनेर गति
कत दूरे गिया रथ हैल अदर्शन ※ भूमिते पड़ेन राजा ह'येे अचेतन
राजारे धरिया तोले अमात्य सकल ※ शरीरेर धूलि झाड़े, मुखे देय जल
एकदिन-शोके ताँर मूर्त्ति हैल म्लान ※ राजार जीवन नाइ, करे अनुमान
राहुते गिलिले चन्द्रे हय जे मूरति ※ कृष्णवर्ण हैल राजार आकृति प्रकृति
राजारे धरिया सबे ल'ये गेल देश ※ अन्तःपुर - मध्ये ताँरे कराय प्रवेश
गड़ागड़ि जान दशरथ भूमितले ※ हेनकाले कैकेयी राजारे धरि तोले
नरपति वले, नाहि छुँस रे पातकिनि ※ स्त्री हइया स्वामी के बधिलि चंडालिनी
कैकेयि, यखन छिलि प्रथम - युवती ※ रात्रिदिन थाकितिस् आमार संहति
ताहार कारण एइ हइल प्रकाश ※ राम-छाड़ा करिया करिलि सर्व्वनाश
गेलेन शोकार्त्त राजा कौशल्यार घर ※ दोंहार हइल शोक एकइ सोसर
रात्रिदिन नाहि घुचे दोंहार क्रन्दन ※ एकशोके कातर ह'लेन दुइ जन
मुनि वेद छाड़िलेन, योगी छाड़े योग ※ पावक आहुति छाड़े, प्रजा छाड़े भोग
मातंग आहार छाड़े, घोड़ा छाड़े घास ※ रंधन-भोजन नाहि, लोके उपवास

---

१ राहुग्रस्त चन्द्रमा २ कालिमा छायी थी।

रुदन अहिर्निशि, शयन विन, चहुँ जग शून्य उदास ।
राम लखन पहुँचे उतै, तट-तमसा के पास ।। ३७ ।।

कूल विविध वन किंशुक फूले ❋ राजहंस जल - कलरव भूले
तमसा - तीर आजु विश्रामा ❋ आयसु दीन सुमंत्रहिं रामा
घोरन छोरि सरित हनवाये ❋ बाँधि, रुचिर जलपान कराये
अस्ताचल रवि, संध्या आई ❋ तमसा स्नान कीन रघुराई
तरुतर लखन सेज-तृन साजा ❋ सुख-शय्या सिय-राम विराजा
लछिमन नीर-कमण्डल लीन्हा ❋ पै-पखार रघुपति-सिय कीन्हा
निसि जागरन लखन धनुधारी ❋ मुग्ध अनुज-गुन राम निहारी
तमसा-तट निसि सकल बिराजे ❋ भोर सुमंत्र तुरग रथ साजे
प्रातस्नान नियम आचारा ❋ करि उतरे हरि तमसा पारा
जहँ-जहँ स्यंदन करत विरामा ❋ लोक लेयँ जुरि परिचय-रामा
नारि अधीन वृद्ध अवधेसा ❋ सुत, सुतवधू निकारेउ देसा
परत जहाँ पितु-निन्दा काना ❋ प्रभु तजि अन्त करत प्रस्थाना
कछुक दूर गोमती सुहाई ❋ सरिता पार कीन रघुराई
हंसन केलि सलिल अति सोभा ❋ सो लखि राम-लखन-मन लोभा

यामिनीते कामिनी ना जाय पतिपास ❋ संसार हइल शून्य, सकले निराश
रात्रि-दिन कान्दि लोक करे जागरण ❋ गेलेन तमसा कूले श्रीराम - लक्ष्मण
नाना वनफूल फोटे से नदीर कूले ❋ राजहंस क्रीड़ा करे तमसार जले
सुमंत्रेर प्रति आज्ञा करिलेन राम ❋ तमसार कूले आजि करिव विश्राम
रथ-अश्व स्नान कराइल तार जले ❋ जलपान कराइया वान्धे तार कूले
अस्तगिरि गत रवि, वेलार विराम ❋ तमसार जले स्नान करेन श्रीराम
कमण्डलु भरि जल आनिया लक्ष्मण ❋ राम-सीता दु'जनार पाखाले चरण
लक्ष्मण वृक्षेर तले विछाइल पाता ❋ करिलेन ताहाते शयन राम-सीता
हाते धनु लक्ष्मण रहिल जागरणे ❋ प्रीति पाइलेन राम लक्ष्मणेर गुणे
तमसार कूलेते वञ्चेन एक राति ❋ प्रभाते योगाय रथ सुमंत्र - सारथि
प्रातःस्नान-आदि करि नियम-आचार ❋ हइलेन श्रीराम तमसा नदी पार
जेखाने - जेखाने श्रीरामेर रथ रय ❋ तथाकार लोक आसि लय परिचय
वृद्धकाले दशरथ वाध्य वनितार ❋ हेन पुत्र - पुत्रवधू पाठाय कान्तार
शुनेन जेखाने राम पितार निन्दन ❋ करेन से स्नान ह'ते त्वरित गमन
तमसा छाड़िया आर गोमती प्रभृति ❋ नदी पार हइलेन राम महामति
ले हंस केलि करे अति सुशोभन ❋ सेइ नदी पार हैला श्रीराम-लक्ष्मण

सिय! इक्ष्वाकु-अवनि[1] लखु प्यारी ❊ सर्वविदित शोभा अति न्यारी
धरेउ दण्ड इक्ष्वाकु नरेसा ❊ मम पुरिखन पुनीत यहु देसा
दो० सहित लखन, सिय, मुदित मन, चिदानंद जहँ जाहिं।
जुरत तहाँ, जन, विविध मत, विनय करत प्रभु पाहिं ।। ३८ ।।
तुम तजि अब न राज-कल्याना ❊ कस विधि रचेउ अरण्य-विधाना
तुम सम सुहृद न मम जग कोऊ ❊ कहि पितु-अयस[2] विदा सब होऊ
पितु-निन्दा सुनि राम दुखारी ❊ तजत देस, पग देत अगारी
गति-विहंग[3] लाँघत बहु देसू ❊ कौशलपुर रथ कीन प्रवेसू
सिय सुन्दरी! निरखु छबि न्यारी ❊ मम मातुल[4] नगरी यह प्यारी
दान द्विजन किय गंग-प्रदेसू ❊ सुत सम पालत प्रजा नरेसू
पुर बिच अतुल-गंग छबि रूपा ❊ यज्ञ-कुण्ड तट पाँति अनूपा
कदली नरियर आम सुपारी ❊ तरु कूलन अनुपम हरियारी
कूलन[5] ऋषि-मुनि शुचि[6] अस्नाना ❊ विप्र वेद-ध्वनि मगन महाना
आयसु दीन सुमंत्रहिं रामा ❊ भागीरथी आजु विश्रामा
प्रभु के बचन सबन मन भाये ❊ रथ सों उतरि अवनि सब आये
तट तुरंग सारथि लै जाई ❊ तरु-तर सिया लखन रघुराई

श्रीराम बलेन, सीते, सर्वत्र विदित ❊ इक्ष्वाकुर राज्य एइ देखे सुशोभित
एइ देशे इक्ष्वाकु धरिल छत्र - दण्ड ❊ मम पूर्व्व - पुरुषेर देख राज्यखण्ड
यथा - यथा जान राम प्रसन्न - हृदय ❊ से-देशेर यत लोक आसि निवेदय
तोमार विहने राम, राज्येर विनाश ❊ कोन् विधि सजिल तोमार वनवास
सवाकारे रामचन्द्र दिलेन मेलानि ❊ भालवास आमारे तोमारा, भालजानि
करिया राजार निन्दा सबे जाय घरे ❊ पितृनिन्दा शुनि राम गेलेन अन्तरे
पक्षि हेन उड़े रथ, जाय नाना देश ❊ कोशलेर राज्ये राम करेन प्रवेश
श्रीराम बलेन, शुन जानकि सुन्दरि ❊ मम मातामहेर आछिल एइ पुरी
पुत्रवत् करिलेन प्रजार पालन ❊ गंगातीरे दियाछेन ब्राह्मण - शासन
नगरेर मध्ये गंगा शोभे कुतूहले ❊ सारि-सारि यज्ञकुण्ड तार दुइकूले
कदली गुवाक नारिकेल आम्रसार ❊ दुइतीरे रोपियाछे शोभित अपार
दुइ कूले विप्रगण करे वेदध्वनि ❊ दुइ कूले स्नान करे यत ऋषिमुनि
सुमंत्रेर प्रति तबे बलेन श्रीराम ❊ गंगातीरे रहि आजि करिव विश्राम
सुमंत्र - लक्ष्मण दोंहे दिला अनुमति ❊ रथ हैते उलिलेन चारि महामति
राम-सीता-लक्ष्मण वसेन वृक्षमूले ❊ सुमंत्र चालाय अश्व जाह्नवीर कूले

१ महाराज इक्ष्वाकु की धरती (राज्य) २ पिता की अपकीर्ति ३ पक्षियों जैसी तेज चाल से ४ मामा की ५ गंगा के दोनों किनारों पर ६ पवित्र।

अथये[1] भानु साँझ नगिचानी ❊ श्रृंगवेर[2] नगरी दरसानी
श्रृंगवेर लखि हुलसे रामा ❊ लखन लखौ, प्रिय केवट-धामा
मम प्रिय अंग बिलग जनि कोई ❊ लहि मम दरस सुखी अति होई
तासु निकेत, संग बतलाई ❊ पुरवहिं मन, अभिन्न प्रिय पाई

दो० रंग विरंगे, रस भरे, मधुर, विविध फल स्वाद ।
पथ-विवरन बहु मिलै पुनि, करहिं विविध संवाद ।।
कहि सुमंत्र सों राम इमि, निवसे केवट-धाम ।
कृत्तिवास पण्डित कियेउ, रचना अमित ललाम ।। ३९ ।।

श्रीराम-द्वारा सुमंत्र को विदा

विनय कीन सारथि सिर नाई ❊ आयसु कवन मोहिं रघुराई
कमलनयन मुख मञ्जुल वयना ❊ लै रथ अवध करउ तुम गमना
रहेउ रथी[3] पितु-आयसु धारी ❊ गत दिन तीन, न काज-सवारी[4]
पथ दिन तीन, अयुध्या जाई ❊ पितु सन सकल कहेउ समुझाई
बृद्ध पितहिं तजि कानन आये ❊ दारुन दुख जनि मिटत मिटाये
रहि पितु तीर न सेयेउँ चरना ❊ अनहोनी किमि अस विधि-रचना

भास्कर पश्चिमे जान वेला अवशेषे ❊ तखन गेलेन राम श्रृंगवेर - देशे
श्रृंगवेर - देश देख राम हृष्टमति ❊ वलिते लागिला तवे लक्ष्मणेर प्रति
गुहक चण्डाल हेथा आछे मम मित ❊ आमारे पाइले मिता हवे हरषित
श्रीराम बलेन, शुन सुमंत्र सारथि ❊ मितार वाटीते आमि थाकि एकराति
कहिब शुनिब वाक्य दोंहे दोंहाकार ❊ विशेषतः जानिव पथेर समाचार
नानाविध फल खाव कदली काँटाल ❊ सुरंग नारंगी आदि खाइव रसाल
राम वने जाइते रहेन सेइ देशे ❊ गाहिल अयोध्याकाण्ड कवि कृत्तिवासे

श्रीरामेर निकट हइते सुमन्त्रेर विदाय

जोड़ हाथ करि वले सुमंत्र सारथि ❊ आमारे कि आज्ञा कर, करि अवगति
वलेन शुनिया राम कमललोचन ❊ रथ लये देशे तुमि करह गमन
तिन दिन रथे आसि पितार आदेशे ❊ तिन दिन अतीत हइल, जाओ देशे
आर तिनदिने जावे अयोध्या नगर ❊ सकल कहिवे गिया पितार गोचर
वृद्ध पिता छाड़िया आसिनु देशान्तरे ❊ एमन दारुण शोक किमते पासरे
पितृसेवा ना करिनु थाकिया निकटे ❊ कोथाओ ना देखि, हेन कोनजने घटे

१ अस्त हुए २ चण्डालगढ़-चुनार ३ रथ पर सवार ४ रथ का प्रयोजन ।

भरत प्रानप्रिय मातुल - देसा ❊ बिन आगमन मिटइ जनि क्लेसा
आवइँ सुनत, विलंब न काजू ❊ सेवइँ पिता, सम्हारहिं राजू
बन्दि जननि बरनेउ यहि भाँती ❊ नृप कर जतन करइँ दिन राती
पीरा हरइँ, लखइँ गृहलोकू ❊ मम सुधि तजइँ, बिसारइँ सोकू
पग बन्देउ पुनि कैकइ जननी ❊ तासु न दोस अमिट विधि करनी
कहि संबाद पितुहिं दै धीरा ❊ नतरु विकल होइ तजइँ सरीरा
मम कुल तव सुमंत्र ! अति आदर ❊ हेतिन[1] विनय कहेउ मम सादर
लोचन जल, सारथि के वयना ❊ लहौं दरस कब पंकजनयना
चले सुमंत्र अतुल दुख - साने ❊ रथ-तुरंग-गति पवन पयाने
इत विचार रघुपति मन आवा ❊ संसय सो सिय-लखन सुनावा

जयंत काक का नेत्र-वेधन

दो० अवधपुरी सों दूर नहिं, शृंगवेरपुर वास ।
सुनि सुमंत्र सों भरत नित, जब-तब[2] आवहिं पास ।। ४० ।।

जब लौं खबरि भरत मम लहहीं ❊ सुरसरि उतरि गहन बन गहहीं
गुह सन पुनि मन्तव्य प्रकासा ❊ चित्रकूट गिरि कीन्ह निवासा

प्रानेर भरत भाइ, थाके से विदेशे ❊ भरत आनिया राज्य करिबे हरिषे
यतदिन भरत ए कथा नाहि शुने ❊ ततदिन रवे मातामहेर भवने
मायेर - चरणे जानाइबे नमस्कार ❊ आमाहेतु शोक येन ना करेन आर
रात्रि-दिन सेवा येन करेन पितार ❊ मोरे पासरिबे माता देखिया संसार
परिहार जानाइवे कैकेयीर प्रति ❊ ताँर किछु दोष नाइ, इहा दैवगति
पितार चरणे जानाइबे समाचार ❊ अस्थिर हइले तिनि, मजिबे संसार
तुमि हेन महापात्र सुमंत्र-सारथि ❊ इष्ट कुटुम्बेर ठाँइ जानाबे मिनति
सुमंत्र श्रीरामे कहे करिया क्रन्दन ❊ आर कतदिने राम, पाब दरशन
विदाय लइया जाय सुमन्त्र कान्दिया ❊ अति शीघ्रगति गेल रथ चालाइया

राम लक्ष्मणादिर पर्य्यटन ओ जयन्त काकेर नेत्र-वेधन

सुमंत्र विदाय दिया श्रीराम चिन्तित ❊ मन्त्रणा करेन सीता-लक्ष्मण-सहित
हेथा हैते अयोध्या निकट बड़ पथ ❊ एखाने थाकिले निते आसिबे भरत
सुमंत्र कहिबे, आछि शृंगवेर-पुरे ❊ शुनिले भरत निते आसिबे सत्वरे
यावत सुमंत्र पात्र नाहि जाय देशे ❊ गंगापार ह'ये चल जाइ वनवासे
गुहकेरे प्रति तवे वलेन श्रीराम ❊ चित्रकूट शैल गिया करिव विश्राम

१ हितू (हित चाहने वालों से) २ आये दिन ।

गंग तरंग कठिन उतराई ❋ करि सहाय प्रन राखहु भाई
कोटिन नाव निषाद-अधीना ❋ सुवरन-तरनि[1] सुसज्जित कीना
विनय, एक निसि अधिक विरामा ❋ करहु राम ! पावन मम धामा
निसि प्रभुसंग वास सुखदाई ❋ उचित न तात ! कहेँउ रघुराई
जो यहि बीच भरत कहुँ आवैं ❋ तौ पितु-वचन विघिन बहु लावैं
बेगि, सुहृद ! करु सुरसरि पारा ❋ सुनि गुहपति आयसु सिर धारा
शृंगवेर - पुर लेन बिदाई ❋ तत्पर लखन सिया रघुराई
भोर नाव गुहराज सजावा ❋ सुर-सलिला[2] पुनि पार करावा
सिय छबि मध्य अतुल दोउ वीरा ❋ चले कोस दुइ सुरसरि तीरा
भरद्वाज पुनि आश्रम आवा ❋ रैन-निवास तहाँ मन भावा
नखतन बिच नभ चन्द्र विराजा ❋ भरद्वाज तिमि मुनिन-समाजा
जनकसुता, लछिमन, रघुराई ❋ मुनि-चरनन बन्देउ सिर नाई
दसरथ-तनय राम मम नामा ❋ लछिमन अनुज, सहित सिय वामा
मुनि ! पितु-बचन हेतु प्रतिपालन ❋ वर्ष चतुर्द्दस सेवहिं कानन

दो० राम कथा सुनि, धाय मुनि, प्रभुहिं विष्णु सम लीन ।
पाद्य अर्घ्य पूजन अतिथि, विविध समादर दीन ।। ४१ ।।

देखिया आतंक हय गंगार तरंग ❋ झाट पार कर, येन नहे सत्य भंग
सातकोटि नौका तार, गुहक चण्डाल ❋ आनिल सोनार नौका, सोनार केराल
गुह बले, करिलाम तरणी-साजन ❋ एक रात्रि राम, हेथा वञ्च तिनजन
एक रात्रि थाकि राम, तोमार सहित ❋ श्रीराम बलेन, मित्र, ए नहे उचित
एखाने रहिते आजि मन शंका पाय ❋ भरत आसिया पाछे प्रमाद घटाय
विलम्ब न कर वन्धु, झाट कर पार ❋ गुह बले झटिति करिव तोमा पार
गुहेर बाड़ीते राम थाकि एक राति ❋ विदाय लइया परे जान शीघ्रगति
प्रातःकाले नौका गुह करिल साजन ❋ पार हैया कूलेते उठेन तिनजन
माझे सीता, आगे पाछे दुइ महावीर ❋ दुइ क्रोश पथ वहि जान गंगातीर
श्रीराम बलेन भरद्वाजेर निकटे ❋ आजि गिया करि वास थाके निःसंकटे
मुनिगणे वेष्टित बसिया भरद्वाज ❋ तारागण मध्ये येन शोभे द्विजराज
हेनकाले सेखाने गेलेन तिनजन ❋ तिनजन वन्दिलेन मुनिर चरन
श्रीराम बलेन, शुन मुनि महाशय ❋ तिनजन तव ठाँइ दिह परिचय
दशरथ - तनय आमरा दुइ जन ❋ श्रीराम आमार नाम, कनिष्ट लक्ष्मण
पितृ-सत्य पालिते ह'येछि वनचारी ❋ संगेते प्रेयसी मोर जनककुमारी
राम-कथा सुनि मुनि उठेन सम्भ्रमे ❋ पाद्य अर्घ्य दिया पूजा करेन श्रीरामे

१ सोने की नौकाएँ २ गंगा ।

राम प्रतच्छ विष्णु अवतारा ❋ ध्यावत जिनहिं सकल संसारा
जिन तप-पूजन रत मुनि-वृन्दा ❋ आये धाम सच्चिदानन्दा
सानुज राम-रमा छबि देखी ❋ धनि जीवन धनि दिवस बिसेखी
गंग-यमुन बिच भोर सुवासू ❋ बन न हेतु, इत करहु निवासू
अवध निकट नित पुर-नरनारी ❋ घेरहिं आय, विपति मुनि ! भारी
यमुनापार गहन वन-देसू ❋ निर्जन कतहुँ करहु निर्देसू
जहँ निवास निर्विघ्न सुहावन ❋ सुनि हरि-वचन कहेउ मुनिपावन
मुनिगन बसत जहाँ बट-छाहीं ❋ तप उपवन सम जग सुख नाहीं
करत केलि बन खग-मृग-वृन्दा ❋ सुमधुर विविध मूल फल कन्दा
दरस तपोवन ताप नसाई ❋ मुनिन सहित निवसउ रघुराई
भरत शोध तव लहइँ न लेसू ❋ तरनि[1]-हीन दुर्गम यहु देसू
भेला[2] बाँधि जाहु सुत ! पारा ❋ हाथ तीस जल-जमुन अपारा
पर्नकुटी[3] निसि कीजिय पावन ❋ होत बिहान[4] जाहु मनभावन
दुइ योजन दुइ पहर चलाई ❋ दरस तपोवन तहँ सुखदाई
मुनि-आश्रम, मुनि-आयसु पाई ❋ निसि रुकि, भोर चले रघुराई
दोउ लँग[5] बन्धु युगुल धनुधारी ❋ मध्य मञ्जु छबि जनकदुलारी

मुनि बलिलेन, तुमि विष्णु अवतार ❋ विष्णु आराधने तप करये संसार
याँर तप-आराधन करे मुनिगणे ❋ सेइ विष्णु आइलेन आमार भवने
श्रीराम-लक्ष्मण-लक्ष्मी देखि तिनजने ❋ आपनारे धन्य बलि मान एतदिने
गंगा-यमुनार मध्ये आमार वसति ❋ वनवास वञ्च एथा, थाकह संहति
श्रीराम बलेन, मुनि, अयोध्या सन्निधि ❋ अयोध्यार लोकेरा आसिबे निरवधि
एथा हैते कोन स्थान आछये निर्ज्जन ❋ यमुनार पारे हय अपूर्व्व-कानन
कह मुनि, कोथाय करिब निवसति ❋ शुनि भरद्वाज कहे श्रीरामेर प्रति
चित्रकूटे मुनिगण बैसे वृक्षतले ❋ मृग-पक्षी-बनजन्तु रहे कुतूहले
नाना फल-मूल पावे वड़इ सुस्वाद ❋ तपोबन देखि राम घुचिबे विषाद
मुनि सकलेर संगे थाक सेइ देश ❋ भरत तोमार तथा ना पावे उद्देश
एइ देशे नाहि राम, नौकार सञ्चार ❋ भेला बाँधि यमुनाय ह'यो तुमि पार
त्रिश हस्त यमुनार आड़े परिसर ❋ निम्नता ना जाने लोक, गभीर विस्तर
एक रात्रि हेथा राम, बञ्च तिनजन ❋ कालि तुमि जाइओ मुनिर तपोवन
हेथा हैते तपोवन दुइटि योजन ❋ दुइ प्रहरेर मध्ये जाबे तिन जन
भरद्वाजाश्रमे राम वञ्चि एक राति ❋ प्रभाते विदाय लये जान शीघ्रगति
उभय वीरेर हाते दिव्य धनुःशर ❋ मध्ये सीता, दुइ-पार्श्वे दुइ सहोदर

---

१ नाव २ काठ का पुल ३ मड़ैया ४ भोर ५ दोनो तरफ।

दो० सिय पग परत सुहावने, आगे सीतानाथ।
सोहत मानौ जलद घन, सौदामिनि[1] के साथ ॥ ४२ ॥
काक जयंत[2] गगन मड़रावा ※ सिय छबि निरखि उतरि ढिग आवा
तन-मन अबुध न रुकत सम्हारे ※ अस्तन[3] तकि वायस[4] नख मारे
पुनि भय-बिवस उड़त षटमासा ※ लै परान पहुँचेउ कैलासा
इत मैथिली त्रस्त, रव कीन्हा ※ रघुपति कुशल अनुज सों लीन्हा
कहेउ लखन अस को जगजाता[5] ※ सकइ निहारि जानकी माता
अधिक सुमित्रा सों सिय जननी ※ गयेउ काक कित करि अपकरनी[6]
लखत, बिधि सर लेउँ पराना ※ इत सीता सुमिरेउ भगवाना
वायस गयेउ, अंग नख मारी ※ तन प्रभु! तासु वेदना भारी
सुनि रघुपति सायक संधाना ※ जहँ खग चलत अनुसरत बाना
तजि कैलास सुरपुरहिं धावा ※ तबहुं राम-सर बिलग न पावा
लीन्ह जयंत सरन-सुरनायक[7] ※ द्विज-तन धरि प्रगटेउ रघुसायक
सुरपति! कथन मोर अनुसरहू ※ काक जयंत समर्पन करहू
वध के योग अधम अपकारी ※ तिन रच्छहि निज-मरन बिचारी
इन्द्र न काक सरन दै पाये ※ सर, सम्मुख बिहंग धरि लाये

आगे राम जान, पाछे श्रीराम-रमणी ※ सजल जलद सह येन सौदामिनी
जयंत नामेते काक छिल से आकाशे ※ देखिया सीतार रूप आसे सीता पाशे
सहसा सीतार गाये पड़िल उड़िया ※ सुतीक्ष्ण नखरे वक्षः दिल आँचड़िया
उड़िया चलिल काक पाइया तरास ※ छ'मासेर पथ गेल पर्व्वत कैलास
डाकेन जनकसुता भये उच्चैःस्वरे ※ श्रीराम बलेन, भाइ, सीतारे के मारे
शुनिया रामेर कथा कहेन लक्ष्मण ※ सीतारे प्रहारे, हेन आछे कोन् जन
सुमित्रा-अधिक माता सीता ठाकुरानी ※ आँचड़िया गेल काक कोथा नाहि जानि
देखिते ना पाइ काक, गेल कोन्खाने ※ बानेते बिन्धिया तारे मारिब पराने
हेनकाले श्रीरामे बलेन देवी सीता ※ आँचड़िया गेल काक, ह'येछि व्यथिता
काके मारिबारे राम पुरेन सन्धान ※ जेथे-जेथे चलिल काक, तथा जाय बान
कैलास छाड़िया काक स्वर्गपुरे जाय ※ मारिते रामेर बान पाछू-पाछू धाय
इन्द्रेर निकटे काक लइल शरण ※ रामेर ऐषिक वाण हइल ब्राह्मण
ब्राह्मण वेषेते सेइ गेल इन्द्र ठाँइ ※ लहिलेन, आमि ये जयन्त काके चाइ
करियाछे मन्द-कर्म वधिब जीवन ※ राखिवे जे जन काक, ताहारि मरण
राखिते नारिल काके देव पुरन्दर ※ आनिया दिलेन काके बाणेर गोचर

१ बिजली २ इन्द्र का पुत्र काक के रूप में ३ स्तन ४ कौआ रूपी जयंत ५ संसार में उत्पन्न ६ पातक ७ इन्द्र की शरण।

खग के दरस कोप सर कीना ❊ बिन्धि कियेउ इक नयन विहीना
पुनि लायेउ जयंत जहँ रामा ❊ अभय कीन लखि करुनाधामा

दो० लखि कुदीठ लोचन तजेउ, लखु, सिय! खल उपहास।
चलेउ जयंत निकेत निज, वरनि कही कृतिवास ॥ ४३ ॥

श्रीराम का चित्रकूट में अवस्थान और दशरथ-मृत्यु

प्रखर किरन मग भानु प्रतापा ❊ जनकलली सहि सकत न तापा
हिंगुल छलकि पदंगुलि आवा ❊ आतप छबि-नवनीत[1] बहावा
मुनि-प्रदेश गमनत पथ रामा ❊ जुरि आई देखन मुनि-भामा[2]
सिय लखि मुनि-तिय पूछहिं बानी ❊ विपिन-रमन कस रूपसि रानी!
लखत, मनौ तुम राजदुलारी ❊ वरनउ सत्य सकल सुकुमारी
बिम्ब[3] अधर दूर्वादल श्यामा ❊ भुज अजानु[4] शोभा अभिरामा
मञ्जुल मुख, सोहत धनुवाना ❊ सुमुखि! संग को रूपनिधाना
सकुच, नयन नत, बोलि न आवा ❊ 'मम प्रियतम'! सिय सैन[5] बुझावा
मृदु गति सिय पदपंकज परहीं ❊ चलि तट-यमुन दरस सब करहीं

जयन्तेरे देखि रोषे श्रीरामेर बाण ❊ बिन्धिया करिल तार एक चक्षु काण
श्रीरामेर काछे दिल बिन्धि एक आँखि ❊ करुणासागर राम ना मारेन पाखी
श्रीराम बलेन, सीता, देख अपमान ❊ जे चक्षे देखिल सेइ चक्षु हैल काण
अपमान पेये काक गेल निज देशे ❊ रचिल अयोध्याकाण्ड कबि कृत्तिवासे

श्रीरामेर चित्रकूटे अवस्थान ओ दशरथेर मृत्यु

दिवाकर-किरण-उत्तापे उत्तापिता ❊ चलिला कातरा अति जनक-दुहिता
हिंगुलमण्डित ताँर पायेर अंगुलि ❊ आतपे मिलाय येन ननीर पुत्तली
मुनिर नगर दिया जान तिन जन ❊ देखिते पाइल पथे मुनि-पत्नी-गन
जिज्ञासा करिल सबे जानकीर प्रति ❊ पदब्रजे जाओ केन तुमि रूपवती
अनुभव करि तुमि राजार नन्दिनी ❊ सत्यपरिचय देह, के वट आपनि
दूर्व्वादल श्याम-तनु अति मनोहर ❊ आजानु-लम्बित-भुज, रक्त-ओष्ठधर
सुन्दर वदन देखि अति चमत्कार ❊ करे धनुर्व्वाण, उनि के हन तोमार
लाजे अधोमुखी सीता, न बलेन आर ❊ इंगिते बुझान, हनि स्वामी ये आमार
कमलिनी-सीता पथे जान धीरे-धीरे ❊ उपस्थित हन शेषे यमुनार तीरे

१ नैनू की पुतली २ मुनि-पत्नियाँ ३ लाल ४ घुटनों तक भुजाएँ ५ संकेत द्वारा।

गहन अतल तल, राम प्रभावा ※ घुटनन सुगम यमुन-जल आवा
नौकादिक न बाँध विस्तारा ※ पग चलि गये कलिन्दी[1] पारा
तहँ मुनि - पद बन्दे रघुराई ※ निरखि मोद मुनि मन न समाई
तुम अवतार राम अविनासी ※ कस तपवेस अरण्य - निवासी
मुनिवर! तात-वचन शिर धारी ※ तापस तन जीवन वनचारी
समुद लखन-सिय-राम विरामा ※ उत सुमंत्र गवने निज धामा
चलि दिन तीन अवध पुनि आये ※ नृपहिं दण्डवत शीश नवाये

दो० तीन दिवस पथ, नृपतिवर! श्रृंगवेरपुर ग्राम।
मुनि-प्रदेश पावन जहाँ, तजेउँ लखन-सिय-राम ॥ ४४ ॥

बिदा समय कहि बहु मधुबयना ※ तव पद बन्देउ पंकजनयना
सील[2] सरिस प्रभु-बचन सुखारी ※ लछिमन-कथन कोप अधिकारी
धनु दुर्दण्ड शेष सम गर्जन ※ मौन, शान्त रस सिय-छबि दर्शन
सुनि सुमंत्र-मुख करुन कहानी ※ सहित समाज पुरी बिलखानी
रानि सात शत विकल अपारा ※ रुदन अखिल निसि, नाहिं सम्हारा
तब लौं नृप, अतीत-सुधि आई ※ कौशिल्यहिं सो कथा सुनाई

ताहार गभीर जल पाताल प्रमान ※ रामेर प्रभाव हय हाँटुर समान
ना जानिया भेला ताहे वान्धेन लक्ष्मण ※ हाँटुजल पार ह'ये करेन गमन
मुनिर चरण राम बन्देन तखन ※ देखिया रामेरे मुनि हरषित मन
मुनि बलिलेन, राम, तुमि नारायण ※ तपस्वीर वेषे केन वने आगमन
श्रीराम बलेन, मुनि, पितार आदेशे ※ विपिने करिव वास तपस्वीर वेशे
तिन जन चित्रकूटे रहेन अक्लेशे ※ एदिके सुमंत्र गिया उत्तरिल देशे
छयदिन उत्तरिल अयोध्या नगरे ※ जोड़हाते दाण्डाइल राजार गोचरे
कहिते लागिल पात्र नमस्कार करे ※ रामे राखि आइलाम श्रृंगवेरपुरे
सेथा हैते आइलाम राजा, तिन दिने ※ राम सीता लक्ष्मण रहेन सेइस्थाने
विदाय दिलेन राम मधुर-वचने ※ प्रणिपात करिलेन तव श्रीचरणे
रामेर येमन शील, तेमनि वचन ※ गर्ज्जन करिया किछु वलिल लक्ष्मण
प्रचण्ड कोदण्ड धरि गर्ज्जे येन फणी ※ किछु मात्र ना बलिल सीता ठाकुराणी
एतेक सुमन्त्र यदि वलिल बचन ※ पुरीर सहित सवे जुड़िल क्रन्दन
सातशत महादेवी राजार रमणी ※ कान्दिया विकल भावे पोहाय रजनी
केह कारे ना शान्ताय, सवे अचेतन ※ पूर्व्वकथा राजार ये हइल स्मरण

---

१ यमुना २ स्वभाव।

अमिट वचन-द्विज, सत्य कहानी ❊ मृगया[1] हेतु फिरहुँ वन, रानी !
सुवन-अन्धमुनि श्रवनकुमारा ❊ सरयू नीर लेन पग धारा
घट जल भरत शब्द सुनि काना ❊ मृग अनुमानि बान सन्धाना
सर उर लगत, 'हाय!' द्विज कीन्हा ❊ केहि अपराध प्रान को लीन्हा
सुनि विमूढ़ गवनेउँ तेहि तीरा ❊ मुनि-सुत आहत लखेउँ सरीरा
हे नृप कवन दोष मोहिं मारा ❊ मम परिवार बज्र सम डारा
अंध मातु पितु निसि-दिन सेवा ❊ मरन मोर तिनकर जिउ-लेवा[2]
श्रीफल वन पितु-जननि निवासा ❊ लै मोहिं अंक चलहु तिन पासा
नतरु शाप-पितु पावहु राऊ ❊ भावी अमिट, न आन उपाऊ
मुनि-नन्दन पुनि तजे पराना ❊ भरि सुअंक, मैं कीन पयाना

दो० श्रवन-मातपितु अन्ध जहँ, बसत विल्ववन माहिं ।
धरेउँ जाय शव, जानि दोउ, अति बिलपहिं बिलखाहिं ॥ ४५ ॥

हे महीप ! निर्मम[3] अपघाती ❊ कवन दोष बिन्धेउ सुत-छाती
चलहु बेगि लै सरयू तीरा ❊ तर्पन-सुवन करउँ सोइ नीरा
चलेउँ टेकाय कथन अनुसारा ❊ करि तर्पन मुनि शाप उचारा
सुत वियोग दोउ स्वर्ग सिधाये ❊ उर अति विकल धाम हम आये

कौशल्यार ठाँइ राजा कहे पूर्व-कथा ❊ महाजन वाक्य कभू ना हय अन्यथा
मृगयाते जाइलाम सरयूर तीरे ❊ अन्धमुनि-पुत्र कलसीते जल भरे
मम ज्ञान मृग-सब करे जलपान ❊ बाण-त्याग करिलाम पुरिया सन्धान
भरिते सलिल तार फुटे वाण बुके ❊ प्राण गेल वलिया मुनिर पुत्र डाके
कोन् अपराधे प्राण निल कोन् जने ❊ एतेक शुनिया आमि गेलान से स्थाने
मुनिपुत्र बले, राजा, पाड़िला प्रमाद ❊ आमारे मारिला केन, किवा अपराध
अन्धमाता-पिता आमि पुषि रात्रिदिने ❊ बुड़ा-बुड़ि मरिबेक आमार मरणे
अन्धमाता-पिता आछे श्रीफलेर बने ❊ करि मोरे कोले राजा चल सेइ स्थाने
यावत् आमार पिता नाहि देन शाप ❊ मोरे लये चल तुमि यथा वृद्ध बाप
इहा विना आर तव नाहि प्रतिकार ❊ एतेक बलिला मोरे मुनिर कुमार
अन्ध बुड़ा-बुड़ि बसि आछे जेइ खाने ❊ मुनिपुत्रे कोले करि गेलाम से स्थाने
मुनि बलिलेन, राजा, बड़इ निर्दय ❊ कि दोषे मारिले वल आमार तनय
आमारे लइया जाइ सरयूर कूले ❊ पुत्रेर तर्पण आमि करि सेइ जले
मुनिरे लइया जाइ सरयूर तीरे ❊ पुत्रेर तर्पण करि शापिल आमारे
'पुत्रशोके मृत्यु' वलि गेला स्वर्गवास ❊ देशे आइलाम आमि पाइया तारास

---

१ शिकार २ प्राण हरनेवाला ३ निर्दय ।

रानी! अमिट अंध मुनि-शापू ※ निश्चय आजु मरन संतापू
तिलछत[1], करि विलाप तन हारा ※ बोल बंद, तन सीतल सारा
लखि नृप मौन, सबन मन भाई ※ भूपति नींद मनहुँ कछु आई
भोर, दण्ड दुइ दिन चढ़ि आवा ※ रानिन चहेउ महीप जगावा
गात छुवत भ्रम सबन नसाना ※ नारी[2] लोप, अंग बिन प्राना
खाय पछार गिरीं सब धरनी ※ पकरि चरन-नृप, रोवहिं रमनी
पुत्र - वियोग कौशिला पागी ※ लखि पति-शोक चेतना त्यागी
सत्पथ सदा सत्-वचन धारे ※ सत्य पालि नृप स्वर्ग सिधारे
अचल सत्य नृप पुण्यश्लोकू[3] ※ सुरपुर-गमन हरेउ तव शोकू
सुत-वनगमन स्वामि-सुरलोका ※ तदपि जियउँ सहि दारुन शोका
दुसह ताप छिति बिलखत रानी ※ मुनि बशिष्ठ बोले मधु बानी
कहा सीख! तुम स्वयं सयानी[4] ※ मृत-हित रुदन न समुचित रानी

दो० अवनि पालि, नृपधर्म करि, गमने स्वर्ग नरेस ।
महरानी प्रतिपालिये, धर्म-कर्म जे शेस ॥ ४६ ॥

धरिय तैल बिच शव-नरनाहू ※ भरत बोलाय कराइय दाहू

से मुनिर वाक्य कभू ना हय खण्डन ※ आजिकार रात्रे रानि, आमार मरण
से अन्ध-मुनिर शाप फले अतःपरे ※ छट्-फट् करे राजा, वाक्य नाहि सरे
'हा राम' बलिया राजा त्यजिल जीवन ※ निद्रा जाय दशरथ, हेन लय मन
पुरी शुद्ध सवे कान्दि पोहाय रजनी ※ राजारे चियाते गेल सातशत राणी
दुइ दण्ड वेला हय, सूर्य्येर उदय ※ एतक्षण निद्रा जाय राजा महाशय
अनन्तर राजारे करिल मृत ज्ञान ※ नाड़िया चाड़िया देखे नाहि ताँर प्राण
आछाड़ खाइया पड़े कदली जेमनि ※ राजार चरण धरि कान्दे सव राणी
एके पुत्र-शोके राणी परम दुःखिता ※ पतिशोके ततोधिक, हइला मूर्च्छिता
सत्यवादी राजा तुमि, सत्ये वड़ स्थिर ※ सत्य पालि स्वर्गे गेले त्यजिया शरीर
सत्य, ना लंघिले तुमि, वड़ पुण्यश्लोक ※ स्वर्गवासी ह'ये एड़ाइले पुत्र-शोक
स्वर्ग गेल राजा, आर राम गेल वन ※ दुइ शोके प्राण मोर थाके कि कारण
भूमि गड़ागड़ि जाय कौशल्या तापिनी ※ कौशल्यारे बुझान वशिष्ठ महामुनि
तोमारे बुझाव कत, नहे न उचित ※ मृत हेतु कान्द यत, सव अनुचित
स्वर्गेते गेलेन राजा पालिया पृथिवी ※ ताँर धर्म्म-कर्म्म कर, तुमि महादेवी
राजारे राखह करि तैल-मध्यगत ※ देशे आसि अग्निकार्य्य करिवे भरत

---

१ कलपते थे २ नाड़ी ३ पवित्र चरित्र वाले ४ बुद्धिमती ।

भूप-देह धरि जतन, बिहानू[1] * उचित सचिवगन करइँ विधानू
सत्य पालि नृप सुरपुर पाई * बिन नृप राजु अतुल दुखदाई
शासन रहित कुशल जनि लेसू * पावस कबहुँ न बरसइ देसू
तरु फल-हीन, विफल सब धर्मा * जागत चहुँ दिसि विविध कुकर्मा
अनुशासन सेवक जनि रहहीं * तस्कर[2] दस्यु[3] उपद्रव करहीं
छत्रहीन-छिति, प्रजा दुखारी * हय गज घटत संपदा सारी
लूट-पाट पुरजन धनहारी * चहुँदिसि सन्न[4]! अतुल भयकारी
नृपसूने रिपु करै चढ़ाई * जंजालन[5] परि प्रजा नसाई
गगन न घन, सुरपति प्रतिकूला * चौमुख फलत अशुभ दुख-शूला
जहँ न राजु, तिय पति बिपरीती * करैं पुरुष पर-वनितन प्रीती
हित विपरीत, सकल अनरीती * विन नृप धर्म न कर्म न नीती
अनुभव-पके[6] भुवाल-प्रतापा * सुखी प्रजा, जनि संशय व्यापा
तिन अतंक[7] व्यापत त्रयलोका * तिन सन्मान कुशल चहुँ लोका
अस्थिर राजु जहाँ नृप नाहीं * जहँ नृप, कुशल, प्रजा सुख माहीं
लाय भरत, शासन अधिकारू * दै, सब जन कीजिय स्वीकारू

वासिमड़ा हइया आछेन महाराज * प्रातःकाले युक्ति करे अमात्य-समाज
सत्य पालि भूपति गेलेन स्वर्गवास * अराजक हैल राज्य, पाइ बड़ त्रास
अराजक राज्येर सर्व्वदा अकुशल * अराजक प्रथिवीते नाहि हय जल
अराजक राज्ये वृक्ष नाहि धरे फल * अराजक राज्ये धर्म्म सकल विफल
अराजक राज्ये भृत्य वश नाहि हय * अराजक राज्ये सर्व्वक्षण दस्युभय
अराजक राज्येते तुरंग हस्ती छोटे * अराजक राज्येते प्रचार धन लोटे
अराजक राज्ये सदा हय डाका-चुरी * अराजक राज्ये देखि वड़ भय करि
अराजक राज्ये अन्य नृपति गरजे * अराजक राज्ये प्रजा-लोके दुःखे मजे
अराजक राज्ये ना वरिषे पुरन्दर * अराजक राज्येते अशुभ बहुतर
अराजक राज्ये नारी नाहि रहे पाशे * अराजक राज्ये स्वामी अन्यनारी तोषे
अराजक राज्ये सदा हिते विपरीत * अराजक राज्ये थाका अति अनुचित
राज्य करिलेन वृद्ध-राजा महाशय * ताँहार प्रतापे लोक थाकित निर्भय
स्वर्ग-मर्त्य-पाताल काँपित ताँर डरे * राज्येर कुशल छिल बुड़ार आदरे
हेन-राजा-विना राज्य करे टलमल * राजा हैले राज्यरक्षा, प्रजार कुशल
राज्य दिते भरतेरे सर्व्व-अंगीकार * भरतेर आनि देशे देह राज्यभार

---

१ प्रातः २ चोर ३ डाकू ४ सुनसान ५ झमेलों में ६ महान् अनुभव वाले ७ आतंक।

दो० बन्धु-गमन बन, पितु-मरन, दुख न जताविंह लेस ।
लावइँ भरत तुरंत चलि, धावन[1] मातुल देस ।। ४७ ।।

सुनि उर भरत अनन्त कलेसू ※ मन विराग लौटहिं जनि देसू
कैकयि-दोष कान सुनि पावैं ※ तौ पुनि भरत अवध नहिं आवैं
भरत दूर जहँ केकयनाहा[2] ※ तनय चारि ! पितु तवहुँ न दाहा
लावइँ भरत शीघ्र गति जाई ※ स्वजन-वशिष्ठ सलाह मिलाई
सम्मत सब, आयसु-गुरु धारा ※ चले लेन जहँ भरतकुमारा
चलि हस्तिनापुरी दिन तीना ※ भोर कुरंग देस पग दीना
चले नगर नीहार[3] तुरंता ※ रमा[4] वसति जहँ ज्ञान अनन्ता
चलि दिन-रैन सुरम्य लखानी ※ छवि मनहरन पुरी दरसानी
सुरपुर सरिस लखेंउ इक देसू ※ प्रचुर सुकर्म, कुकर्म न लेसू
सलिला वेणु पार अवतरहीं ※ दोउ तट, विप्र जहाँ तप करहीं
विविध नदी-नद, गुहा मँझाई ※ देस-देस दिन-रैन चलाई
पँचये दिन गिरिनगर विरामू ※ जहँ कैकय नरेस कर धामू
लस्त-पस्त तन श्रम अधिकाई ※ करि भोजन सुख निद्रा आई

भरत आछेन मातामहेर वसति ※ दूत पाठाइया ताँर आन शीघ्रगति
राजा स्वर्गगत, राम चलिलेन वने ※ एत घोर प्रमाद भरत नाहिं जाने
भरतेरे ना कहिवे ए सव घटन ※ तवे ना करिवे सेइ देशे आगमन
मातृ-दोप शुनिले भरत ना आसिवे ※ पितृ-शोके मनोदुःखे देशांतरी हवे
भरत मातुल-गृहे अयोध्या पासरा ※ चारिपुत्र-सत्त्वे दशरथ वासिमड़ा
वुद्धिर सागर पात्र मंत्रणा विशेपे ※ चलिलेन भरतेरे आनिवारे देशे
करिलेन अनुज्ञा वशिष्ठ पुरोहित ※ भरतेरे आनिवारे चलिल त्वरित
हस्तिनानगरे गेल तृतीय दिवसे ※ परदिन गेल तारा कुरंगेर देशे
नीहारेर राज्ये गेल त्वरित-गमने ※ लक्ष्मी-अधिष्ठान सदा ज्ञान हय मने
रात्रिदिन सवे पथे चलिल सत्वर ※ पुनवेर राज्ये गेल देखे मनोहर
आड़ि-कूलदेशे गेले येन सुरपुर ※ कुकर्म्म वर्ज्जित लोक, सुकर्म्म प्रचुर
वह वेणु नदी पार हैल सर्व्वजन ※ जार दुइ कूले वैसे अनेक ब्राह्मण
नद-नदी-कन्दर हइल बहु पार ※ वहु देशे देशान्तरे एड़ाय अपार
गिरिराज देशेते केकय राजा वैसे ※ उत्तरिल गिय पात्र पंचम दिवसे
रात्रिदिन पथश्रमे हइया विकल ※ रन्धन भोजन करे पेये रम्यस्थल
भरतेर संगे नाहि हय दरशन ※ पथश्रमे निद्रा जाय ह'ये अचेतन

---

१ दूत २ कैकय देश के राजा ३ वर्फ से मण्डित नगर ४ लक्ष्मी ।

भरत भेंट अवसर जनि आवा ❋ सुधागान कृतिवास सुनावा

भरत का अयोध्या-आगमन

सदन भरत सोवत पर्यंका ❋ लखि कुस्वप्न उपजी उर संका
भोर, सभा बिच भरत बिराजा ❋ सचिव सनेहिन जुरा समाजा

दो० यथा-योग मिलि परस्पर, करैं बन्दनाशीष ।
कुशल-भरत, पूछहिं सकल, द्विज गन देहिं असीस ।।
मुख न बोल, जड़, विरस मन, पुनि-पुनि लेत उसास ।
पूछत परिजन कुशल, तब कीन्हेउ भरत प्रकास ।। ४८ ।।

वरनेउ भरत अमंगल सपना ❋अवनिपात[1] रवि-ससि खसि[2] गगना
आय खबरि इक बृद्ध प्रकासी ❋ लखन राम सिय काननवासी
संचित तैल मनो शव-ताता ❋ लखि कुस्वप्न कंपित मम गाता
बंधु चारि बिच पितु-निर्वाना[3] ❋ इतर[4] न मोहिं कोउ सपन लखाना
अशुभ सपन सब-जन दुखदाई ❋ भरतहिं तदपि कहेउ समुझाई
मिटइ विसेख[5] असुभ नृपनन्दन ❋ सविधि देवि-देवन-पद बंदन
दीनन दान, द्विजन सत्कारू ❋ सुत! न धरनि यहि सम प्रतिकारू

कृत्तिवास-पण्डितेर बाणी अधिष्ठान ❋ रचिल अयोध्याकांड अमृत समान

भरतेर अयोध्याय आगमन

निद्रागत भरत से पालंक-उपर ❋ उठेन कुस्वप्न देखि सशंक-अन्तर
प्रभाते भरत आसि बलेन देओयाने ❋ आइल अमात्यगण ताँर संभाषणे
यथायोग्य नमस्कार करे पात्रगण ❋ ब्राह्मण-पण्डित करे शुभाशीर्व्वचन
मित्रगण आसिया आलाप करे कत ❋ इतरे सम्भाषे करे व्यवहारमत
भरत विषण्ण अति, मुखे नाहि शब्द ❋ निश्वास प्रबल वहे, रहे अति स्तब्ध
भरतेरे जिज्ञासा करेन पात्रगण ❋ शुनिया भरत वाक्य बलेन तखन
कुस्वप्न देखेछि आजि रात्रि अवशेषे ❋ चन्द्र-सूर्य खसि येन पड़िल आकाशे
स्वप्ने एक वृद्ध आसि कहिल वचन ❋ श्रीराम-लक्ष्मण-सीता गियाछेन वन
देखिलाम मृत पिता तैलेर भितर ❋ एइ स्वप्न देखि आमि कम्पित अंतर
चारि भाइ आर पिता, एइ पाँचजन ❋ पाचेर मध्येते देखि पितार मरण
भरतेर कथा शुनि सबाकार त्रास ❋ पात्र-मित्र भरतेरे करिछे आश्वास
देखियाछ कुस्वप्न नृपतिकुमार ❋ शुनह भरत, कहि तार प्रतिकार
देवतार पूजा तुमि कर सावधाने ❋ ब्राह्मण-दरिद्र तुष्ट कर नाना दाने

१ धरती पर टूट पड़े २ खिसक कर ३ मोक्ष ४ कोई दूसरा ५ दोप ।

दान-प्रभाव हरन सब क्लेसू ※ स्वजन, सचिव-गन इमि उपदेसू
करि असनान अमित धन नाना ※ पूजे देव, कीन बहु दाना
धन अशेष, अस दान अपारा ※ तहुँ न तृप्त मन-भरत उदारा
संसद[1] केकयराज प्रतापा ※ सुरगन बिच सुरपति सम थापा
शोभित भरत समीप नरेसू ※ अवध-दूत सोइ घरी प्रवेसू
पायक[2] प्रथम नृपहिं शिर नावा ※ भरतहिं पुनि संवाद सुनावा
यह मुद्रिका राज - संकेतू ※ अवध तुरंत चलहु कुलकेतू !
पल विराम सों विपुल अकाजू ※ पठवहु कुअँर अवध, नृप! आजू
देखन भरत, अवधपति आतुर ※ कहहिं प्रवञ्च विविध, चर[3] चातुर

दो० कथन पायकन, सपन उत, असुभ दोऊ विपरीत ।
भरत कुतूहल! सकल सुनि, उर जनि होय प्रतीत ॥
पितु मंगल, जननिन कुशल, कुशल लखन-सिय-राम ।
कहि उर संशय हरहु चर ! सुखी सकल मम धाम ॥
वेगि अवध चलि कुशल सब, लखहु, चरन[4] मत दीन ।
मातामह-पद बन्दि द्रुत[5], कुअँर बिदाई लीन ॥ ४९ ॥

इहा बिना भरत, नाहिक उपदेश ※ दान द्वारा तोमार घुचिबे सर्व्वक्लेश
पात्र-मित्रगण दिला एतेक मन्त्रणा ※ स्नान करि भरत आनेन द्रव्य नाना
पूजिलेन आगे देवे दिया उपचार ※ करेन भरत दान सकल भाण्डार
भरतेर छिल यत धनेर भाण्डार ※ दिलेन सकल द्विजे, सीमा नाहि तार
सकल भाण्डार शून्य, नाहि आर धन ※ तथापि ताँहार किन्तु स्थिर नहे मन
प्रबल प्रतापशाली कैकय भूपति ※ देयाने वसिल गिया येन सुरपति
भरत बसेन गिया भूपतिर पाशे ※ अयोध्यार दूत गिया तखन प्रवेशे
केकयराजेर प्रति नोयाइया माथा ※ भरतेर आगे दूत कहे सब कथा
आइलाम तोमाके लइते सर्व्वजन ※ भरत, झटिति देशे कर आगमन
राजार निशान देख हातेर अंगुरी ※ झाट चल, आमरा रहिते नाहि पारि
एकदण्ड ना रहिब, आछे बड़ काज ※ भरतेरे पाठाओ केकय महाराज
कथार प्रबन्धे तारा कहिल विशेष ※ देखिते तोमाय वाञ्छा राजार अशेष
शुनिया भरत किछु ना हन प्रतीत ※ यत स्वप्न देखिलाम, सब बिपरीत
भरत बलेन, बल पितार मंगल ※ श्रीराम-लक्ष्मण भाइ आछेन कुशल
कैकेयी, कौशल्या आर सुमित्रा जननी ※ सकलेर मंगल बल हे दूत, शुनि
दूत बले, राजपुत्र ! सबार कुशल ※ सबारे देखिबे यदि शीघ्र देशे चल
प्रणाम करिया मातामहेर चरणे ※ लइलेन भरत विदाय सेइ क्षणे

---

१ राज्यसभा २ दूत ३ पायक, संवाददाता ४ दूतों ने ५ अति शीघ्र ।

नृपति विपुल धन, हय-गज नाना ❋ असन वसन अभरन सन्माना
भरत रिपुदमन रथ आसीना ❋ कत शत सैन अनुगमन कीना
भानु विगत संध्या नियराई ❋ अवधपुरी पहुँचे सब जाई
राम-सोक चहुँ रुदन अपारा ❋ नगरी चहुँ बिषाद बिस्तारा
बिकल भरत पूछहिं केहि कारन ❋ कस दुखरूप प्रजा किय धारन
आगम मम, दिन गये निहारी ❋ मिलत, न बोलत कोउ नर-नरी
पायक रहे मौन सिर नाई ❋ भल-अनभल मुख बात न आई
अवध-नारि-नर सहज सुभावा ❋ कबहुँ न कोउ कहिं असुभ सुनावा

भरत-विलाप

अति संसय ! चलि जनक-निकेतू[1] ❋ तात न तँह लखि विस्मय-हेतू
मरनकाल तजि कैकइ-धामा ❋ कौशिल्या-गृह नृपति विरामा
तहँ शव-भूप तैल बिच धारी ❋ भरत न ज्ञात कथा यह सारी
पिता-हीन पितु-मंदिर देखी ❋ चले जननि ढिग, क्लेस विसेखी
रत्नासन बिराज कैकेई ❋ मन न विषाद, मोद उर लेई
तनय-राजसुख-भरम भुलानी ❋ लखेउ भरत चलि कैकइरानी

हाती-घोड़ा दिल राजा वहुमूल्य धन ❋ असन-वसन आर नाना आभरण
शत्रुघ्न-भरत दोंहे चड़िलेन रथे ❋ कत शत सैन्य चले ताँदेर सहिते
सूर्य्य जान अस्तगिरि, बेला अवशेषे ❋ हेनकाले सबे तारा अयोध्या प्रवेशे
श्रीरामेरे शोके लोक करिछे क्रन्दन ❋ अयोध्यार सर्व्वलोक बिरसवदन
जिज्ञासेन भरत हइया विषादित ❋ प्रजालोके कान्दे केन, नहे हरषित
अनेक दिनेर परे आइलाम देशे ❋ काछे ना आइसे केह, केह ना सम्भाषे
एत शुनि दूतगण हेंट करे माथा ❋ केहि नाहि कहे कोन भाल-मन्द-कथा
अयोध्यार सर्व्वलोक आछे ए नियमे ❋ अशुभ संवाद नाहि कहे कोनक्रमे

पितार मृत्यु एवं श्रीराम प्रभृतिर वनगमन-संवादे भरतेर विलाप

भरप भावित अति मानिया विस्मय ❋ प्रथमे गेलेन तिनि पितार आलय
देखिल, नाहिक पिता, शून्य निकेतन ❋ भरत भाविया किछु ना पान कारण
मृत्युकाले दशरथ कौशल्यार घरे ❋ तथा ताँर मृत देह तैलेर भितरे
भरत पितार गृह शून्यमय देखि ❋ मायेर आवासे जान ह'ये मनोदुःखी
कैकेयी वसिया आछे रत्न-सिंहासने ❋ पड़ियाछे प्रमाद, मनेते नाहि, गणे
पुत्रेर राजत्व लोभे आछे मनःसुखे ❋ भरत गेलेन तवे मायेर सम्मुखे

1 पिता के निवास पर।

बन्देउ मातुचरन शिर नाई ❊ सुत लखि सिंहासन तजि धाई
भरि सुअंक चुम्बति सुत-आनन ❊ कहेउ कुशल-ननिहार बतावन

दो० बन्धु, जननि, पितु तव कुशल, मंगल कैकय-गेह।
उत्कण्ठा तजि, प्रथम मम, हरहु मातु! सन्देह ॥ ५० ॥

अवध सकल विपरीत निहारी ❊ कोउ न मुदित, सब लखत दुखारी
लोक उदास सोक चहुँ घोरा ❊ लखि अपवाद करैं मम ओरा
पितु-मंदिर पितु-दरस न पावा ❊ हाराकार अवध कस छावा
कहेउ न कोउ अबलौं अपकरनी ❊ पुलकि कैकई निज मुख वरनी
अचल सत्यवादी सत्वीरा ❊ तव पितु सत्-पथ तजेउ सरीरा
नृप-वियोग दुख नगर मँझारा ❊ गिरे भरत सुनि खाय पछारा

छं० कदली सम अचेत गिरि धरनी, धूल-धूसरित काया।
पितहि बिसूरि विलाप-भरत लखि बिलखत जन-समुदाया॥
सुवन शास्त्रविद्! कहति कैकयी, तव दुख हिया-बिदारन।
केहि पितु-मातु अमर? सुत! सासन करु धीरज हिय धारन॥

भरतेरे देखिया त्यजिल सिंहासन ❊ भरत करेन ताँर चरण वन्दन
मुखे चुम्ब दिया राणी पुत्रे लैल कोले ❊ कुशल जिज्ञासा करे ताँरे कुतूहले
केकय-भूपति पिता आछेन कुशले ❊ कुशले आछेन मम सोदर सकले
मंगले आछेन माता-विमाता-सकल ❊ पितृराज्य राजगिरि-देशेर मंगल
भरत बलेन, माता, ना हओ विकल ❊ माता-पिता-भ्राता तव सबार कुशल
तोमार वान्धव यत, केह नाहि मरे ❊ सकल मंगल तव जनकेर घरे
तुमि यत जिज्ञासिले, दिलाम उत्तर ❊ आमि ये जिज्ञासा, ताहा कह त सत्वर
अयोध्यार राज्य केन देखि विपरीत ❊ सकले विषण्ण, केह नहे हरषित
चतुर्द्दिके लोक केन करिछे क्रन्दन ❊ आमरे देखिया केन करिछे निन्दन
पितार आलये केन ना देखि पितारे ❊ अयोध्यानगर केन पूर्ण हाहाकारे
ये कथा कहिते कारो मुख ना आइसे ❊ हैन कथा कहे राणी परम हरिषे
सत्यवादी तव पिता, सत्ये बड़ स्थिर ❊ सत्य पालि स्वर्गेते गेलेन सत्यवीर
शून्य राज्य आछे तव पितार मरणे ❊ भरत आछाड़ खेये पड़ेन से क्षणे
काटिले कदली येन भूमिते लोटाय ❊ धूलाय पड़िया वीर गड़ागड़ि जाय
मूर्च्छागत भरत ह'लेन पितृशोके ❊ देखि ताँरे कान्दिया विकल अन्यलोके
कैकेयी बलिल, पुत्र कर अवधान ❊ तोमारे क्रन्दने मोर बिदरे परान
सर्व्वशास्त्र जान तुमि भरत अन्तरे ❊ पिता-माता ल'ये केवा कोथा राज्य करे

सुरपुर-गमन-तात सुनि पाई ॥ बरनउ कहाँ लखन-रघुराई
रामहिं राजभार पितु दीन्हा ॥ बानप्रस्थ निज कहँ मन कीन्हा
बिदित योजना बनी बनाई ॥ किमि अन्यथा भई कहु माई
अयुत वर्ष[1] निश्चित पितु-आयू ॥ स्वर्ग-गमन किमि बिन परमायू
पति-बिछोह कर तुमहिं न सूला ॥ मन उपजत, तुम अनरथ-मूला[2]
सुख न समात, रानि जस भावा ॥ नाना बिधि सो सुतहिं सुनावा
लखन सहित रघुपति बनबासी ॥ अनुगामिन सिय भई प्रवासी
कानन राम गये केहि कारन ॥ मातु! कथन तव हृदय-विदारन
परतिय-हरन न पर-धनहारी ॥ कवन दोष रघुपति बनचारी
सुतहिं कैकई सकल सुनावा ॥ प्रथम अपार राम-गुन गावा

दो० धर्म-धुरीन, अनन्त गुन, जनक-जननि के प्रान।
राम भक्तप्रिय कर तिलक, सुनि सुख सबन समान ॥ ५१ ॥

तिलक बिहान[3] आजु अधिवासू ॥ राम-राज सुख सबन हुलासू
पठयेउँ तबहिं राम वन-देसू ॥ सुत! तव-हित पद लहेउँ नरेसू
राम-वियोग दुसह नरराई ॥ हाय राम! कहि सद्गति पाई
करगत[4] राम राजु अब तोरा ॥ सदा मातु-ऋन-ऋनी किशोरा

भरत बलेन शुनि पितार मरण ॥ श्रीराम-लक्ष्मण ताँरा कोथा दुइजन
महाराज रामेरे अर्पिया राज्यभार ॥ करिबेन आपनि केवल सदाचार
एइ सब युक्ति पूर्व्वे छिल, आमि जानि ॥ ताहार अन्यथा केन, कह ठाकुराणी
अयुत-वत्सर[1] जानि पितार जीवन ॥ न'हाजार वर्षे ताँर मृत्यु कि कारण
राजार मरणे तव नाहिक विषाद ॥ अनुमाने बुझि तुमि करेछ प्रमाद
राजकन्या कैकेयी बाड़िछे नानासुखे ॥ कतमत कथा बले यत आसे मुखे
राम बने गेलेन, लक्ष्मण ताँर साथे ॥ मने कि भाविया सीता गेलेन पश्चाते
भरत बलेन, केन राम यान वने ॥ परान विदरे माता, तोमार वचने
हरिलेन कार धन कार वा सुन्दरी ॥ कोन् दोषे हइलेन राम वनचारी
कैकेयी सकल कहे भरतेर स्थाने ॥ रामेर अशेष गुण प्रथमे वाखाने
भकतवत्सल राम धर्म्मेते तत्पर ॥ जनक-जननी-प्राण, गुणेर सागर
श्रीराम हइले राजा सबार कौतुक ॥ रामेर प्रसादे लोक पाय नानासुख
कालि रामराजा हबे, आजि अधिवास ॥ हेनकाले रामेरे दिलाम बनवास
तोमारे राजत्व दिया, राम जान वन ॥ 'हा राम' वलिया राजा त्यजिल जीवन
मातृऋण पुत्र कभु शुधिते ना पारे ॥ राम ल'ये छिल राज्य, दिलाम तोमारे

---

१ दस हजार वर्ष २ विष की जड़ ३ दूसरे दिन (कल) ४ हाथ में आया।

करहु राज सासन पद साजी ❋ राज्यश्री तव भाल बिराजी

भरत-शत्रुघ्न द्वारा कैकेयी-मंथरा की भर्त्सना

घाव छुवत सम भरतहिं तापा ❋ दहकति कहेउ, अतुल संतापा
निज मुख पाप कथा जस वरनी ❋ पावहु नरक अधम गति जननी
नृप-कुल जनमि सुनेउ केहि काला ❋ जेठ रहत, कब अनुज भुवाला ?
पिता, पितामह धर्म सरूपा ❋ तिन गृह निसिचरि जनम अनूपा
प्रकटी दनुजि मनुज-तन धारी ❋ मन रघुवंश-विनास विचारी
राम-शोक पितु प्रान गवाँवा ❋ तैं कस राम अरण्य पठावा
पति-प्रसाद संपति सुखरासी ❋ पति-वध तव कुल तीनि विनासी
पाप पुरबुले[1] कछु मम जागे ❋ लहे जनम तव गर्भ अभागे
दीन्ह मातु होइ दारुन शोकू ❋ काटि शीस पठवहुँ यमलोकू
अस निसिचरि-तन जगत न व्यापा ❋ भले मातु-वध तासु न तापा
जिमि निज जननि बधे भृगुरामा[2] ❋ उर उपजत पठवउँ सुरधामा

दो० अनल सरिस दहकत भरत, अँग न कोप समात ।
निरखि चली हटि कैकई, मनही मन पछितात ॥ ५२ ॥

राजा ह'ये राज्य कर, बैस राजपाटे ❋ राजलक्ष्मी आछे पुत्र तोमार ललाटे

भरत-शत्रुघ्न कर्तृक कैकेयी ओ कुब्जीर प्रति भर्त्सना

घायेते लागिले घा ज्वलये जेमन ❋ तेमनि भरत वले ह'ये ज्वालातन
निज गुण कह माता आपनार मुखे ❋ आपनि मजिले माता, डुविले नरके
राजकुले जन्मिया शुनिले कोन् खाने ❋ कनिष्ठ हइवे राजा ज्येष्ठ विद्यमाने
तोर पिता-पितामह करे धर्म्म कर्म्म ❋ से वंशेते हइल केन राक्षसीर जन्म
निशाचरी ह'ये तुइ हइलि मानुषी ❋ रघुवंश-क्षय-हेतु आइलि राक्षसी
श्रीरामेर शोके राजा त्यजेन जीवन ❋ तुइ केन श्रीरामेरे पाठाइलि वन
राजार प्रसादे तोर एतेक सम्पद ❋ तिन कुल मजाइलि स्वामी करि वध
पूर्व्वजन्मे करियाछि कत कदाचार ❋ सेइ पापे तोर गर्भे जनम आमार
मा हइया तनयेरे दिलि एत शोक ❋ इच्छा हय काटिया पाठाइ परलोक
एमन राक्षसी तुइ, नाहि देखि कोथा ❋ तो हेन मातार वधे नाहि कोन व्यथा
जेमन परशुराम काटिल मायेरे ❋ तेमनि करिते वाञ्छा, किन्तु मरि डरे
राम पाछे बर्ज्जेन वलिया मातृघाती ❋ तबे त नरके मम हबे निवसति
भरत ज्वलंत-अग्नि-तुल्य क्रोधे ज्वले ❋ देखिया कैकेयी तबे जाय अन्यस्थले

---

१ पूर्व जन्म के २ परशुराम ।

वृथा अनर्थ! सोच उर छावा ❋ परि केंहि कुमति प्रसाद रचावा
भरत समीप रिपुदमन आये ❋ रुदन करहिं दोउ अति बिलखाये
तात! तात! कहि अंक लगावा ❋ दोउ तन, दुहुन नयन जल छावा
दोष मंथरा मन अनुमानी ❋ कहैं सकोपि बन्धु दोउ बानी
रामहिं राजु भूप-रुचिकारी ❋ कूबरि कस प्रपञ्च विस्तारी!
मिलत मंथरा जियत न जाई ❋ विधिगति! चेरि नजर-तर आई
अभरन छबि पट रंग बिरंगा ❋ चन्दन वास सुवासित अंगा
कूबर-मुक्तावलि छबि खानी ❋ राम - प्रवास चेरि हुलसानी
अबुझ, प्रफुल्ल भरत ढिग आई ❋ प्रहरी तब लौं खबरि जनाई
नृपति-मरन रघुपति वनवासी ❋ सकल-विनास-हेतु यह दासी
तासु मरन बिनसइ दुख सारा ❋ सुनि रिपुघ्न बध-चेरि विचारा
कुपित, केस धरि, रगरि घुमावा ❋ चाक - कुम्हार समान नचावा
सिथिल केस कछु भाजत आई ❋ कैकयि - सदन गोहार मचाई
भरत-रिपुदमन लीन्हे प्राना ❋ अहह रानि! मम कीजिय त्राना
पुनि शत्रुघ्न केस धरि लाये ❋ भीषम मार-प्रहार मचाये

जाइते-जाइते रानी करेन विषाद ❋ कार लागि करिलाम एतेक प्रमाद
आइलेन शत्रुघ्न करिते संभाषण ❋ भरतेर क्रन्दने कान्देन शत्रुघ्न
'भाइ-भाइ' बलिया भरत निल कोले ❋ दु'जनार अंग तिते नयनेर जले
अनुमाने बुझिलेन, कुञ्जीर ए क्रिया ❋ कहिते लागिल दोंहे कुपित हइया
रामेरे दिलेन राजा निज छत्र दण्ड ❋ कोथा हैते कुञ्जी पाड़े प्रमाद प्रचण्ड
पाइले कुञ्जीर देखा वधिब जीवन ❋ विधिर निर्व्वंध कुञ्जी आइल तखन
शोभा पाय पट्ट वस्त्र आर आभरणे ❋ सर्व्वांग-भूषिता कुञ्जी सुगंधि चन्दने
मुक्ताहार शोभे तार कुञ्जेर उपर ❋ श्रीरामेर बनवासे प्रफुल्ल अन्तर
एतेक प्रमाद हबे, कुञ्जी नाहि जाने ❋ भरतेर निकटे आइसे हृष्ट-मने
हेन काले द्वारी वले, शुन शत्रुघन ❋ एइ कुञ्जी-हेतु वृद्ध राजार मरण
एइ कुञ्जी रामे पाठाइल वनबास ❋ एइ कुञ्जी करिलेक सकल विनास
एइ कुञ्जी मजाइल अयोध्या नगरी ❋ एइ कुंजी मरिले सकल दुःखे तरि
शत्रुघ्न वलेन, भाइ, इच्छा करे मन ❋ एखन कुंजीर आमि वधिव जीवन
शत्रुघ्न कुपित ह'ये धरे तार चुले ❋ चुले धरि कुंजीरे से फेले भूमि तले
हिंचड़िया ल'ये जाय ताहारे भूतले ❋ कुमारेर चाक येन घुराइया फेले
'मरि-मरि' वले कुंजी परित्राहि डाके ❋ चुले छिंड़े गेल, से कैकेयी घरे ढोके
कुंजी वले, कैकेयि, करह परित्राण ❋ भरथ-शत्रुघ्न मोर लइल परान
शत्रुघ्न प्रवेशे क्रोधे कैकेयीर घरे ❋ चुल धरि कुंजीरे से आइल वाहिरे

कूबर - मुक्तावलि इमि टूटी ❋ नभ तजि धरनि नखत-छबि फूटी

दो० भरत-धाय, पुनि मुँहलगी, कैकेयी कै दासि।
रक्तसनी लोटति अधम, विधि गति! सकल विनासि ॥
चेरी-दुर्गति निरखि, बढ़ि, पुनि हटि रानि पछार।
लेयँ प्रान कहुँ, रिपुदमन, उर अति भय-सञ्चार ॥ ५३ ॥

कह शत्रुघ्न सुनहु मम बाता ❋ भजे[1] न गति, जनि मुकुति विमाता
तुम सिरमौर सातसत रानी ❋ पितु न कबहुँ दुलखी[2] तव बानी
नृपनन्दिनी, नृपति - प्रियरानी ❋ जात न तव दुर्भाग्य बखानी
तव सुख-सरिस न सुख शचि[3] पावा ❋ दासी - कुमति पताल पठावा
तव बध किये न दुख मम जाई ❋ वृथा मातु-बध पाप कमाई
तव सम्मुख बध तव प्रिय चेरी ❋ सुलगहु, मरहु विषम दुख हेरी
पकरि केस रगरत मुख धरनी ❋ लखि हिय कम्प भरत कै जननी
हिये टिहुन[4] गर चापि बहोरी ❋ मुद्‌गर-घात दीन पग तोरी
कूबरि पंगु रक्त चहुँ छावा ❋ तन विरूप[5] रिपुदमन बनावा
चेरि अचेत प्रान अवसेसू ❋ नारि-हनन भय भरत बिसेसू

तबु तार कुंजे हार करिछे शोभन ❋ प्रहारे छिड़िया पड़े जेन तारागण
कैकेयीर मुख्यदासी, धात्री भरतेर ❋ सर्व्वांग भिजिल रक्ते, एइ कर्म्मफेर
चुले ध'रे ल'ये जाय, कुंजे लागे छड़ ❋ शत्रुघ्नेरे देखिया कैकेयी दिल वड़
चेड़िरे मारिल, पाछे प्रहारे आमाय ❋ एइ मने करि त्रासे कैकेयी पलाय
शत्रुघ्न बलेन, शुन कैकेयि विमाता ❋ पलाइया नाहि जाह, कहि एक कथा
सात शत रानी जिनि तोमार प्रताप ❋ बलिते तुमि'या, ताइ करितेन वाप
राजार महिषी तुमि राजार नन्दिनी ❋ तोमा सम दुर्भगा स्त्री ना देखि ना शुनि
शचीर अधिक सुख, बले सर्व्वलोके ❋ आमी कि मारिया मात, डुबिब नरके
दासीर कथाय वुझि गेल रसातल ❋ दोष अनुरूप आमि की बलिब बल
यदि तोमा बधि पाड़े, दुःख नाहि घुचे ❋ मातृबध करिया नरके डुबि पाछे
तोमार चेड़ीरे मारि तोमार सम्मुखे ❋ पुड़िया ज्वलिया येन मर एइ शोके
चुले धरि चेड़ीरे माटीते मुख घसे ❋ देखिया कैकेयीरानी काँपिछे तरासे
बुके हाँटु दिया से कुंजीर धरे गला ❋ मुद्‌गरेर आघाते भांगिलि पा'र नला
एके त कुत्सिता कुंजी, तार हएल खोड़ा ❋ सर्व्वंगाए छड़ गेल, येन रक्तबोड़ा
अचेतन हएल कुंजी, श्वासमात्र आछे ❋ भरत भावेन, नारीहत्या हय पाछे

---

१ भागकर २ बात काटी ३ इन्द्राणी ४ घुटना ५ भद्दा, कुरूप।

पुनि-पुनि अनुजहिं करि परितोषू ❋ नारि - घात समुझावहिं दोषू
अस्थि सेस तन रक्त न चर्मा ❋ तजहु न अब, तो होय अधर्मा
आयसु-राम तात ! हिय धारी ❋ लेहु न पाप सीस बध-नारी
रघुपति आन[1] समादर कीन्हा ❋ प्रान बकसि रिपुसूदन दीन्हा
रहत कैकई दुर्गति नाना ❋ मार-प्रहार ! बचे बस प्राना
सुर तजि भला मनुज किमि जानैं ❋ होनहार अस किमि पहिचानैं

दो० राम सिँहासन दीन पितु, जननि भई प्रतिकूल ।
बिधि-गति केहि बिधि जानिए, यहै भरत-उर सूल ।। ५४ ।।

तृप्त न बिलसि अतुल सुखखानी ❋ दासी - कुमति रानि बौरानी
भयेउँ कलंकित जननी-काजा ❋ पहुँचत राम-मातु पहँ लाजा
कहेउ रिपुघ्न, न मातहिं रोषू ❋ भल जानहिं केहि-कर कस दोषू
इत बिलखत यहि विधि दोउ भाई ❋ कौशिल्या - गृह सकल सुनाई

कौशल्या, बशिष्ठ-सहित भरत की मंत्रणा और दशरथ-अन्त्येष्ठि

राम-मातु पहँ चलि शिरनावा ❋ कहि सुत, भरतहिं अंक लगावा
दोउ-तन भीज दुहुन दृग वारी ❋ बोली मातु दुसह-दुख-मारी

धीरे-धीरे भरत बलेन सुबचन ❋ नारीहत्या हव पाछे, शुन शत्रुघन
रक्तचर्म्म नाहि आर, अस्थिमात्र सार ❋ नारी-वध हय पाछे ना मारिह आर
नारीहत्या महापाप, शुन शत्रुघन ❋ यदि एइ पापे राम करेन बर्ज्जन
नाहि करि मातृहत्या श्रीरामेर डरे ❋ एत शुनि शत्रुघ्न से छाड़िल कुञ्जीरे
लइलेन कुञ्जीरे कैकेयी विद्यमान ❋ एतेक प्रहारे तबु रहिल पराण
भरत वलेन, भाइ, सब देव जाने ❋ एतेक घटिबे भाइ, जानिब केमने
श्रीरामे दिलेन पिता राजसिंहासन ❋ के जाने, करिबे माता अन्यथाचरण
स्वर्गेर भोग भुञ्जे, तबु नाहि आँटे ❋ राजार महिषी कि चेड़ीर वाक्ये खाटे
आमि दुष्ट हइलाम जननीर दोषे ❋ कौशल्यार काछे जाब केमन साहसे
शत्रुघ्न बलेन, ताँर ना हइबे रोष ❋ आपनि जानेन माता, यार यत दोष
भरत-शत्रुघ्न हेथा करेन रोदन ❋ कौशल्या वसिया घरे करेन श्रवण

कौशल्या-वशिष्ठेर सहित भरतेर मन्त्रणा ओ दशरथेर अन्त्येष्ठि

भरत शत्रुघ्न गिया भाइ दुइ जन ❋ करिलेन कौशल्यार चरण वन्दन
'पुत्र' बलि कौशल्या भरते निल कोले ❋ उभयेर सर्व्वांग तितिल नेत्र-जले

[1] सौगंध ।

तिलक बिहान[1], आजु अधिवासू[2] ❋ कैकइ दीन जबहिं बनवासू
परतिय-हरन न परधन-हारी ❋ केहि अपराध राम बनचारी
मैं कण्टक, मोहिं तापस वेसू ❋ दै पठवहु जहँ सुत अवधेसू
दुख ललार[3], तिन कहँ दुख काजू ❋ माय-पूत बिलसहु[4] सुख-राजू
ब्यंग-बोल सुनि भरत उदासा ❋ मैं तो मातु! राम कर दासा
राम वन-गमन, मोर न दोषू ❋ चरन सौंह[5] तव, करहु न रोषू
नृपति प्रजा-पीड़क दुखकारी ❋ तासु पाप परि होहुँ दुखारी
नेह न नृप प्रति, सासन-द्रोही ❋ अधम प्रजा सम गति मम होही
गुरु दच्छिना न, विद्या पाई ❋ श्रम लइ मूल्य देत सकुचाई
निज बखान पर - निन्दाकारी ❋ हरइँ धरोहर पर-धन-हारी

दो० गहौं राजु रघुनाथ छलि, मन मोरे अभिसन्धि[6]।
नसैं लोक दोउ, गति लहउँ नरक, शंभु सौगन्धि[7] ॥ ५५ ॥

भरत-शपथ सुनि बोली माता ❋ भल मोहिं ज्ञात हृदय तव ताता!
राम सरिस तुम धर्म सरूपा ❋ सदा धर्म रुचि दोउ अनुरूपा
चौदह वर्ष बितइ जब आवैं ❋ राम न धाम जियत मोहिं पावैं

कालि राजा हवे राम, आजि अधिवास ❋ हेनकाले तव माता दिल बनवास
हरिल काहार धन, राम कार नारी ❋ कोन दोपे पुत्रे मोर करे देशान्तरी
आमारे करिया दूर घुचाओ ए काँटा ❋ पाठाओ रामेर काछे, शिरे धरि जटा
कौशल्या बलेन, शुन कैकेयी-नन्दन ❋ माये-पोये राज्य कर आनन्दे एमन
दुःखभागी एइजन, सेइ पाय दुःख ❋ माये पोये भरत, भुञ्जह राज्यसुख
भरत कातर अति कौशल्या-बचने ❋ रामेर सेवक आमि, तुमि जान मने
मम मते यदि राम गियाछेन वने ❋ दिव्य करि माता आमि तोमार चरणे
राजा यदि प्रजा पीड़े, ना करे पालन ❋ आमारे करुन विधि से पाप-भाजन
प्रजा ह'ये राज्यद्रोह करे जेइ लोके ❋ सेइ पापे पापी ह'ये डुबिब नरके
विद्या पेये जे ना करे गुरुर सेवन ❋ कर्म्म करि दक्षिणा ना देय जेइ जन
आपना वाखाने जेवा परनिन्दा करे ❋ सेइ महापाप-राशि घटुक आमारे
स्थाप्य धन हरणेते हय जे पातक ❋ सेइ पापे पापी ह'ये भुञ्जिब नरक
रामेरे वञ्चिया राज्य यदि आमि चाइ ❋ इह-परकाल नष्ट, शिवेर दोहाइ
शपथ करेन हेन भरत तखन ❋ कौशल्या बलेन, पुत्र जानि तव मन
रामेर हृदय धर्म्मे जेमन तत्पर ❋ तोमार हृदय पुत्र, एकइ सोसर
चौद्दवर्ष गेले राम आसिवेन देश ❋ ततदिने मम प्राण हइबे निःशेष

१ कल (दूसरे दिन) २ मंगलाचार ३ भाग्य ४ मौज करो ५ सौगंध ६ खड्‌यंत्र ७ कसम।

पितु बिन-दाह अबहुँ, अति लाजा ❋ भरत करहु तिन अंतिम काजा
अजस मातु, पुनि पितु परलोकू ❋ बंधु-बिछोह अहिर्निसि[1] सोकू
मम हित पितु रामहिं वन दीन्हा ❋ तबहुँ प्रवेस अवध मैं कीन्हा

छं० कह बशिष्ठ, सर्वज्ञ भरत तुम, सीख तुम्हिं किमि दीजै।
गमन स्वर्ग नृप सत्पथ, रोदन! सकल पुण्य सुत! छीजै॥
तनय राम गुणधाम तासु पितु अमर, मरण के भावैं।
गुरु प्रबोध, जनि बोध, भरत मन छोभ, बचन सम्भाषैं॥
बन्धु-बिछोह, मरन पितु दारुन, ककस[2] धीर उर धारौं।
थिर न प्रान, दुख दोउ महान, किमि जीवन, काहि निहारौं॥
मेघमुँदी-छबि छीन-चन्द्र-सम मलिन-बदन कुम्हिलाने।
सचिव-सखा-गुरु सहित भरत पितु-मंदिर ओर पयाने॥
शोक निरत तिन रानि सात शत, चलीं कुअँर सब घेरे।
'अहह तात! तव गति, न बात मुख' कहइँ भरत पितु नेरे[3]॥
सने सोक इत लोक दरस-हित, तिन दीजिय संतोषू।
जननि-दोष, पितु! मैं निदोष, जनि रोष, छमहु मम दोषू॥

आछे मृतदेह घरे, पाइ बड़ लाज ❋ शीघ्र कर भरत, पितार अग्निकाज
पितृ-शोक भ्रातृशोक मायेर अयश ❋ भरत करेन खेद रजनी-दिवस
आमाहेतु पिता मरे भ्राता बनबासी ❋ जानिले एत कि आमि देशे फिरे आसि
बशिष्ठ बलेन, तुमि भरत, पण्डित ❋ तोमारे बुझान आमि, ए नहे उचित
सत्य पालि भूपति गेलेन स्वर्गवास ❋ ताँहार कारणे कान्दे, हय पुण्यनाश
राम-हेन पुत्र याँर गुणेर निधान ❋ के बले मरिल राजा, आछे विद्यमान
एइ रूपे बुझान वशिष्ठ महामुनि ❋ भरत ना कहे किछु, कहे खेदवाणी
किमते धरिव प्राण पितार मरणे ❋ किमते धरिब प्राण रामेर बिहने
किरूपे हइव स्थिर काहारे निरखि ❋ दुइ शोके प्राण रहे, कोथाओ ना देखि
शशधर जेमन हइले मेघाच्छन्न ❋ विवर्ण भरत अति, तेमनि विषण्ण
पात्र-मित्र-संगेते बशिष्ठ पुरोहित ❋ पितार निवासे जान लोकेते वेष्टित
सातशत राणी तारा शोकेते निराश ❋ भरतेरे संगे गेल राजार निवास
भरत बलेन, पिता, एइ तव गति ❋ उठिया सम्भाष कर भरतेर प्रति
तोमारे देखिते आसियाछे पुरजन ❋ उठिया सवारे कह प्रबोध-वचन
मातृदोषे आमासह ना कह वचन ❋ यदि थाके अपराध, कर विमोचन

---

१ दिनरात २ किस प्रकार ३ पिता के शव के समीप।

कहेउ बशिष्ठ छोह सुल तजहू * दाह, श्राद्ध-तर्पन-पितु करहू
यहु सब जेठ सुवन अधिकारा * सूने राम, सीस तव भारा
चन्दन अगुरु काष्ठ लदवाये * घृत मधु कलश पूर्ण मँगवाये
रतन प्रवाल मौक्तिक नाना * चतुर्दोल भल सजेउ विमाना
सुमन सुवासित हार सुहाये * नृप-तन सहित विमान सजाये
जेते अवध नगर नर-नारी * कर धरि शीश भरत अनुसारी[1]
प्रजा बंधु-जन सरयू तीरा * काढ़ि तैल सों नृपति-शरीरा
सरयू - जल असनान कराई * सबन निरखि मन करुना आई
शुभ्र बसन सुन्दर परिधाना * मृगमद[2] लेप सुगंध महाना
मंजुल माल सुमन बहुरंगा * सोहत गर आदिक नृप अंगा

दो० चिता अगुरु चन्दन सजी शयन करायेउ भूप।
तीन लक्ष गो-दान करि, यथा शास्त्र अनुरूप ॥
पितु सम्मुख घृत अनल लै, दाह भरत तहँ कीन।
तर्पन करि सरयू-सलिल, पिण्ड पितहिं पुनि दीन ॥ ५६ ॥

अवनि अचेत भरत दुख दारुन * कहेउ बहोरि हेरि नर-नारिन
करौं तात सह अनल प्रवेसू * पुरजन सकल जायँ निज देसू

बशिष्ठ वलेन, त्यज भरत, क्रन्दन * पितृ अग्निकार्य्य श्राद्ध करह तर्पण
पितृकार्य्ये ज्येष्ठ तनयेर अधिकार * राम देशे नाहि, तुमि करह सत्कार
अगुरु-चन्दन-काष्ठ आने भारे-भारे * घृत मधु कुम्भ पूरि आनिल सत्वरे
मुक्ता प्रवाल आने बहुमूल्य धन * चतुर्द्दोल आनिल विचित्र सिंहासन
सुगन्धि पुष्पेर माल्य, गन्ध मनोहर * चतुर्द्दोले चड़ाइल राजारे सत्वर
अयोध्यानगरे यत स्त्री पुरुष आछे * शिरे हात दिया जाय भरतेर पाछे
तैलेर भितरे आछिलेन महाराजा * सरयूर तीरे ल'ये जाय वन्धु-प्रजा
स्नान कराइल ताँरे सरयूर जले * देखिया कातर अति हइल सकले
शुक्ल-वस्त्र पराइल, सुन्दर उत्तरी * सर्व्वांग भरिया दिल सुगन्धि-कस्तूरी
नानाविध कुसुमेर माल्य-मनोहर * यथास्थाने दिल ताँर गलार उपर
चितार उपरे ल'ये कराय शयन * हेंटे ऊर्द्ध्व काष्ठ दिल अगुरु-चन्दन
तिन लक्ष धेनु दान करेन भरत * राजार सम्मुखे आनि यथा शास्त्रमत
पितारे करेन दाह घृतेर अनले * करिलेन तर्पणादि सरयूर जले
तर्पण करिया पिण्ड दिया नदी-पाड़े * भरत मूर्च्छित ह'ये मृत्तिकाते पड़े
भरत वलेन, सबे जाह निज देश * पितार अग्निते आमि करिब प्रवेश

१ पीछे चले २ कस्तूरी।

पितु परलोक, बंधु बन माहीं ※ मम अब देस प्रयोजन नाहीं
कहेउ बशिष्ठ अकारन शोकू ※ निश्चय मरन, जनमि यहि लोकू
सकेउ न जग कोउ मृत्यु निवारी ※ मरि पुनि जीव जन्म-अधिकारी
अमर न कोउ, नित जीवन-मरना ※ तजहु विषाद, चलहु सुत! अयना[1]
अवध उजार[2] शून्य तन धारे ※ लिये भरत, गुरु पुरी पधारे
भरत अखिल निसि रोय बिताई ※ बिलपत सदा, कहाँ रघुराई?
तेरहीं श्राद्ध पिण्ड करि दाना ※ बिधिवत अमित दान किय नाना
हय गज, धरनि, नगर, बहु ग्रामा ※ तरु, उपवन, परिधान[3] ललामा
सोन सात लख बिप्रन अर्पा ※ सुरभी[4] सुबरन सजी समर्पा
लक्ष तिरासी कञ्चन भारा ※ अतुल दान-जस चहुँ बिस्तारा
कीन अठासी लख गोदाना ※ भुवन न दाता भरत समाना
जेते रवि-शशि-कुल-नरनाथा ※ धरा न काहु दान अस गाथा

भरत से राज्यभार-ग्रहण की प्रार्थना

निबटत नृप के अंतिम काजा ※ जुरेउ भरत ढिग हितुन-समाजा
सागर लौं सासन विस्तारे ※ तुमहिं सौंपि नृप स्वर्ग सिधारे

पिता परलोके गत, भ्राता गेल वने ※ देशेते जाइब आमि कोन् प्रयोजने
बशिष्ठ भरते वले, इहा युक्ति नय ※ जन्मिले मरण आछे, ए कथा निश्चय
मरणेरे एड़ाइते ना पारे संसार ※ मरिले सवार जन्म हय आर वार
सकले मरेन, केह नहे त अमर ※ क्रन्दन संवर, हे भरत, चल घर
शून्य रहियाछे अद्य अयोध्यानगरी ※ भरतेरे वशिष्ठ निलेन राजपुरी
कान्दिया भरत पोहाइलेन रजनी ※ विलाप करेन सदा, कोथा रघुमणी
त्रयोदश दिवसे करेन श्राद्ध-दान ※ नानादान करेन, जे शास्त्रेर विधान
मातंग तुरंग आर पुरी भूमि ग्राम ※ विविध वसन शाल आर शालग्राम
विप्रे दान देन सोना सात लक्ष तोला ※ धेनु-दान करिलेन सोनार मेखला
त्रि-अशीति लक्ष भर सोनार भाण्डार ※ वितरण करिलेन, धन नाहि आर
अष्टाशीति लक्ष धेनु करिलेन दान ※ पृथिवीते दाता नाहि भरत समान
यत-यत राजा हैल चन्द्र-सूर्य्य कुले ※ हेन दान केह कोथा ना करे भूतले

पात्र-मित्र-सह भरतेर राज्यशासन-मन्त्रणा

समाप्त हइल श्राद्ध, निवारिल दान ※ पात्र-मित्र कहे गिया भरतेर स्थान
आसमुद्र राज्य आर अयोध्यानगरी ※ तोमारे अर्पिया राजा गेला स्वर्गपुरी

१ घर २ उजड़ा हुआ ३ वस्त्र ४ गाय।

दो० अवधभूप-पद भरत लै, करहु प्रजा-प्रतिपाल।
होइ सुपात्र सासन तजौ, विनसै राज-भुवाल ॥ ५७ ॥

बर्जेउ भरत, न रघुकुल रीती ※ लघुहिं राजु तजि जेठ, अनीती
सासन गहत लगावहिं लोगू ※ मम सिर सकल जननि-अभियोगू
रामहिं राज उचित सब रूपा ※ चलि तिन लाइ बनावइँ भूपा
छत्र दण्ड रघुनाथहिं अर्पन ※ तिलक उचित तिन राज समर्पन
सविनय लाय बनाय नरेसू ※ राम अेवज[1] गमनउँ बनदेसू
ऊँच-नीच पथ सुगम कराई ※ हय-गज-कटक चलै जिमि धाई
आयसु-भरत बिलंब न काजा ※ कहेउ जोरि कर[2] सकल समाजा
अजस कैकई देस प्रसारा ※ तव जस अखिल भुवन विस्तारा
भल-अनभल[3] प्रस्तुत दोउ रूपा ※ मातु-अजस[4] सुत-सुजस[5] अनूपा

श्रीराम को लाने के लिए भरत की वन-यात्रा

कहेउ भरत जनि समय गवाँवौ ※ हय-गज-कटक सहित सब धावौ
रथ सारथी तुरंग मतंगा ※ चले राम हित भरतहिं संगा
छोट बड़े अन्तःपुर - बासी ※ रानि समाज, दास अरु दासी

पितृदण्ड-राज्य तुमि छाड़ कि कारण ※ राजा ह'ये कर तुमि प्रजार पालन
तोमा बिना राज्यधर्म्म अन्ये नाहि साजे ※ तुमि राजा ना हइले पितृराज्य मजे
भरत बलेन, पात्र, ना वलिह आर ※ ज्येष्ठ सत्त्वे कनिष्ठेर नाहि अधिकार
राजा ह'ये यदि आमि वसि राजपाटे ※ मायेर यतेक दोष आमाते से घटे
राज्येर उचित राजा रामचन्द्र भाइ ※ रामेरे करिव राजा, चल तथा जाइ
यत अभिषेक द्रव्य लह राज्यखण्ड ※ तथा गिया श्रीरामे अर्पिव छत्रदंड
रामे राजा करिया पाठाब निज देशे ※ रामेर वदले आमि जाव बनबासे
समान करह यत उच्चनीच बाट ※ सुखे पथे जाय येन घोड़ा हाती-ठाट
भरतेर आज्ञाय सकले पड़े ताड़ा ※ भरते वलेन सबे करि हात जोड़ा
तोमार जतेक यश घुषिवे संसारे ※ कैकेयीर अपयश भारत-भितरे
भाल मन्द सकलि हेथाय बिद्यमान ※ मायेर हइल निन्दा, पुत्रेर वाखान

श्रीराम के आनिवार जन्य भरतेर वनयात्रा

भरत वलेन, आर तोमरा ना बल ※ हाती-घोड़ा-कटक समेत सबे चल
घोड़ा-हाती चले, रथ माजाये सारथि ※ भरत आनिते रामे जाय शीघ्रगति
दास-दासी चलिल राजार यत नारी ※ छोट-बड़ सकले चलिल अन्तःपुरी

---

१ बदले में २ हाथ ३ भले-बुरे दोनों पक्ष ४ अपकीर्ति ५ सुकीर्ति।

दल-बल चलेउ रघुपतिहिं आनै ❋ छोट-बड़ा कोउ रोक न मानै
बहु रथ-रथी बिपुल सामन्ता ❋ बृद्ध सैनपति सैन अनन्ता
कौशल्यादि सुमित्रा रानी ❋ रानि सात शत सकल पयानी[1]
लीन बशिष्ठ जतक[2] मुनि यूथा ❋ अखिल राज नर-नारि-वरूथा[3]

दो० कुटिल चेरि सँग कैकई, रुकी भरत-भय मानि ।
कछु मंजिल करि, सभा बिच, कह बशिष्ठ, इमि बानि ॥
स्वयं जतन जो बिधि करैं, धाम न लौटइँ राम ।
दुखद अकारथ परिसरम[4], भरत विफल तव काम ॥ ५८ ॥

राम वचन-पितु गमने कानन ❋ पितु-दिय-राजु, तजहु केहि कारन
गुरु, प्रोहित-पद परम पुनीता ❋ कहेउ भरत, कस कथन अनीता ?
शत-शत मम बन्दन तव चरना ❋ बहुरि न कहेउ अमंगल वचना
गति न मोर बिन रघुपति-चरनन ❋ करहुँ आनि प्रभु, राजु समर्पन

भरत द्वारा श्रीराम की खोज

गुरु की सीख न भरतहिं भाई[5] ❋ चले सवेग सुमिरि रघुराई
यमुना - पार राम बनदेसू ❋ श्रृंगवेर - पुर भरत प्रवेसू

श्रीरामे आनिते जाय सकल कटक ❋ बाल-वृद्ध, केह कारो ना माने आटक
अनन्त सामन्त चले बृद्ध-सेनापति ❋ भरतेर साथे चले बहु रथ-रथी
कौशल्या सुमित्रा जान उभय सतिनी ❋ आर सबे चलिल राजार यत राणी
वशिष्ठादि करिया यतेक मुनिगण ❋ राज्य-शुद्ध चलिल सकल पुरजन
कैक्रेयी ना जान मात्र भरतेर डरे ❋ कुटिला कुंजीर सह रहिलेन घरे
कतदूर गिया पथे हइल देओयान ❋ बलिलेन बशिष्ठ भरत-विद्यमान
यत्न करि आपनि बिधाता यदि आसे ❋ रामेरे आनिते तबु ना पारिबे देशे
रामेरे आनिते केन करिला उद्योग ❋ ना पारिबे आनिते, केवल दुःखभोग
पितृ सत्य पालिते गेलेन राम वन ❋ पिता दिल राज्य, तुमि छाड़ कि कारण
भरत वलेन, मुनि, तुमि पुरोहित ❋ ह'ये पुरोहित केन करह अहित
तोमार चरणे मोर शत-नमस्कार ❋ हेन अमंगल वाक्य ना कहिओ आर
रामेर चरण विना गति नाहि आर ❋ रामेरे आनिया आमि दिब राज्यभार

भरतेर श्रीरामान्वेषण

युक्ति दिया नाहि पारे भरते राखिते ❋ श्रीरामे स्मरिया जान भरत त्वरिते
आछेन यमुना-पारे राम बनवासे ❋ भरत गेलेन तथा श्रृंगवेर देशे

१ प्रस्थान किया २ जितने भी ३ झुण्ड के झुण्ड ४ परिश्रम ५ पसन्द आई ।

निरखि अखिल दल जुरेउ महाना ❋ सुरसरि तट, गुहपति अनुमाना
कोउ नृप समर करन मन लावा ❋ निज बल[1] सकल निषाद सजावा
बढ़ि, लखि अवध-कटक, मन चेता ❋ आगम - भरत राम - रन - हेता
बलकल बसन पठइ बन आजू ❋ भरत न चैन, हरन करि राजू
सर्जहिं, विषम सर-धनु धरि संगा ❋ दलहिं अवध दल, तुरग, मतंगा
करि खरिहान[2], न बहुरहिं[3] देसू ❋ बजत दमाम, सबन रन-बेसू
कहेउ भरत, गुहगन ! जनि चिन्ता ❋ करहु, अनुज मैं श्रीभगवन्ता
कलसिन दधि, मधु, घृत अरु क्षीरा ❋ आनेउ अमित अमिय फल तीरा
केला, गरी, अँगूर, सुपारी ❋ कटहल, आम, अरम्ब[4] सवाँरी
रोहित-चितल मत्स्य बहु भारा ❋ आनि धरेउ जहँ कटक अपारा

सो० भरत राम-अनुकूल, तौ भल विधि सनमानिये ।
जो मन कछु प्रतिकूल, सरित मिलावौं हनि सकल ॥ ५९ ॥

मन - निषाद ससपञ्ज[5] घनेरे ❋ सुवचन कहि सुमन्त्र तब टेरे
आये भरत लेन रघुराई ❋ केहि पथ गये राम, कहु भाई

पृथिवी जुड़िया ठाट एक चापे जाय ❋ गंगातीरे वलि गुह करे अभिप्राय
कोन् राजा आइसे समर करिवारे ❋ आपनार ठाट गुह एक ठाँइ करे
चिनिलेक विलम्बे से अयोध्यार ठाट ❋ आपन कटके गुह आगुलिल वाट
गुह वले, देखि भरतेर सेनागण ❋ श्रीरामेर सहित करिते आसे रण
पराइया बाकल से पाठाइल वने ❋ राज्यखण्ड निल, तबु क्षमा नाहि मने
साज रे चण्डाल-ठाट चापे दिया चाड़ा ❋ विषम शरेते आजि काटि हाती घोड़ा
सर्व्व सैन्य काटिया करिव भूमिगत ❋ देशे वाहुड़िया येन ना जाय भरत
मार-मार बलिया दगड़े दिल काठि ❋ हेन काले गुह वले भरतेरे भेटि
शुन रे चण्डालगण व्यस्त हओ नाइ ❋ आसियाछे भरत रामेर छोटभाइ
दधि दुग्ध घृत मधु कलसी-कलसी ❋ अमृत समान फल आन राशि-राशि
नारिकेल गुवाक कदली आम्रसार ❋ द्राक्षा फल पनस आनह भारे-भार
भाल मत्स्य आन सवे रोहित-चितल ❋ शिरे बोझा, कान्धे भार बह रे सकल
यद्यपि भरत करे श्रीरामेरे राजा ❋ भाल मते कर तबे भरतेर पूजा
भरत आसिया थाके शत्रुभावे यदि ❋ भरतेर ठाट काटि बहाइव नदी
सात-पाँच गुहक भाविछे मने-मन ❋ हेनकाले सुमन्त्र कहेन सुवचन
आइलेन श्रीरामेरे लइते भरत ❋ बल गुह, श्रीराम गेलेन कोन् पथ

---

१ सेना २ काट कर खलिहान कर दें ३ लौट न सकें ४ ढेर के ढेर
५ संशय ।

राम-लखन-सिय गत अति दूरी ※ दरस - लालसा इतै न पूरी
कहि, पुनि भरतहिं नायसि माथा ※ वरनी कथा सकल गुहनाथा
वन तव सैन, अनुज्ञा पाई ※ देहुँ सुपास[1] करौं पहुनाई
जब लग सुलभ न रघुपति-दरसन ※ अनशन सबन, न जल लौं परसन[2]
गंग - तरंग बिपति अधिकाई ※ होयँ पार तव पाय सहाई
मग भल विदित, कहेउ गुहनाथा ※ चलहु ससैन कुअँर ! तव साथा
संसय मन, जनि होत प्रतीती ※ लच्छन निरखि कछुक विपरीती
बन्धु-मिलन कर साज अनूपा ※ दल-बल बिपुल अतुल भयरूपा
केवट ! मम मन-मर्म न जाना ※ राम-चरन तजि अन्त न ध्याना
एक राम हम सबन - नरेसू[3] ※ आये सकल लेवावन देसू
कह केवट, धनि कैकयि-नन्दन ※ तव जस गान करै जग बन्दन
राम-सुहृद रघुपति-मनभावन ※ रघुकुल धन्य कीन तुम पावन
कै दिन कियेउ बास प्रभु साथा ? ※ गुहपति ! पद बंदेउ रघुनाथा ?
मातु कलंक सीस मम छावा ※ कहु निषाद ! कहँ राम पठावा

दो० दुइ निसि नाथ सनाथ किय, रहे संग मम धाम ।
लखन धनुर्धर भक्तियुत, प्रभु सेवत अविराम ।। ६० ।।

गुह बले, हेथा देखा ना पावे भरत ※ श्रीराम लक्ष्मण सीता बहुदूर गत
भरतेरे गुह तबे नोङाइल माथा ※ मेट दिया गुह ताँरे कहे सब कथा
गुह बले, ठाट तब वनेर भितरे ※ आज्ञा कर, थाकुक अतिथि-व्यवहारे
भरत बलेन, ठाट रबे अनशन ※ यावत् श्रीराम-सह नहे दरशन
जे देखि गंगार टेउ, पड़िब प्रमादे ※ तुमि यदि पार कर, जाइ निरापदे
गुह बले, आमार कटक पथे जाने ※ कटक सहित आमि जाइ तव सने
तोमार बचने आमि ना जाइ प्रतीत ※ मने तोलापाड़ा करे, देखि विपरीत
कोन् रूप धरि एले भ्रातृ-दरशने ※ कटक साजन देखि भय हय मने
भरत बलेन, मन ना जान आमार ※ रामेर चरण-विना गति नाहि आर
राम विना राजत्व लइते अन्ये नारे ※ राज्य सह आइलाम रामे लइवारे
बले गुह, धन्यवाद तोमारे आमार ※ तव यश घुषिवेक सकल संसार
तोमा-भाइ-हेतु धन्य रघुनाथ मित्र ※ रघुवंश धन्य तुमि करिले पवित्र
शुन चण्डालेर राजा, भरत बलेन ※ श्रीरामेर करिले पूजा हे कतदिन
आमि दोषी हइलाम जननीर दोषे ※ बल गुह, श्रीराम गेलेन कोन् देशे
गुह बले एखाने छिलेन एकराति ※ एकरात्रि एक ठाँइ छिलाम संहति
लक्ष्मण रामेर भक्त सेबे रात्रि दिने ※ धनु:शर हाते करि थाके सर्व्वक्षणे

---

१ सुविधा, आराम २ स्पर्श ३ हम सबों के राजा ।

पठइ सुमंत, सोच उर गाढ़े ※ नेरे[1] भरत रहइँ नित ठाढ़े
चलि निवास कहुँ अंत बनावैं ※ जहँ प्रिय भरत शोध जनि पावैं
राम महाबन पथ यहु धारा ※ सबन, गंग मैं पार उतारा
सकल शोध केवट सों पाई ※ अवध-कटक सोइ मारग जाई
चले भरत जनि दूर बिसेखी ※ तृण-शय्या तरु-तर इक देखी
शय्या वसन-अंश[2] लपिटाना ※ लखि प्रभु-शयन तहाँ अनुमाना
बसन गिरेउ खसि गहन[3] अगारी ※ प्रभु-तन-दुति[4] सम झलमलकारी
कहँ तृणसेज ! कहाँ रघुराई ! ※ लखि उर भरत सोच अधिकाई
केहि बिधि लखन सिया केहि रूपा ※ भल चीन्हेउ आवरण अनूपा
भरत गिरे छिति खाय पछारा ※ धाय सुमंत्र सुअंक सम्हारा
दुख पर दुख, सुधि-बुधि सब खोई ※ सुनत बिलाप शिला द्रव[5] होई
अहिनिसि, बंधु-बिछोह-सताए ※ उठे भरत बहु बिधि समुझाए
हय, गज, कटक, रानि-महरानी ※ बितई निसा अन्न बिन पानी
भरत बिहान[6] जाह्नवी[7] तीरा ※ सदल जुरे चहुँ सूर गँभीरा
कोटिन केवट, अगनित तरनी ※ सुरसरि-तट कहुँ लखत न धरनी

सुमन्त्रे विदाय दिया चिन्तिलेन मने ※ हेथा भरतेर हात एड़ाव केमने
हेथा हैते जाइ आमि अन्य कोन स्थले ※ भरत ना देखा पावे ये खाने थाकिले
एइपथे ताँहारा गेलेन महावने ※ गंगापार करिया राखिनु तिनजने
गुह-स्थाने पाइया सकल समाचार ※ सेइ पथे गमन हइल सबाकार
ताहा एड़ि भरत कतक दूरे गेले ※ तृण-शय्या देखिलेन एकबृक्षतले
तदुपरि शुये छिला राम वनबासी ※ तृण लग्न आछे पट्ट कापड़ेर दशी
कापड़ेर दशीते स्खलित आभरण ※ करे झिकिमिकि, येन सूर्य्येर किरण
ताहा देखि भरत चिन्तेन सकातरे ※ केमने शुइल प्रभु खड़ेर उपरे
केमने लक्ष्मड़ छिल, केमने जानकी ※ चिनिलाम आभरण, करे झिकिमिकि
आछाड़ खाइया पड़े भरत भूतले ※ सुमन्त्र धरिया तारे लइलेक कोले
भरत उभय शोके हइल अज्ञान ※ भरतेर क्रन्दनेते विदरे पाषाण
अनेक प्रबोध-वाक्ये उठेन भरत ※ श्रीरामेर शोके दुःख पान अविरत
घोड़ा-हाती-पदातिक सातशत राणी ※ उपवासे सेइखाने बञ्चिल रजनी
प्रभाते भरत जान महाकोलाहले ※ कटक समेत रहे जाह्नवीर कूले
गुहक चण्डाल आछे भरतेर संगे ※ नौका आनि पार करे गंगार तरंगे
बहुकोटि नौकार गुहक अधिपति ※ आनाइया तरणी छाइल भागीरथी

१ नजदीक २ वस्त्र का टुकड़ा ३ गहना ४ प्रकाश ५ पिघलती ६ प्रातः दूसरे दिन ७ गंगा ।

भरत सहित दल-अवध अपारा ❋ छिन महँ गुहपति पार उतारा

छं० हय गज सैन अनंत सहित सामंत रानि-महरानी।
तरनि साजि, सुरसरि उतारि, गुहराज कहेँउ मधुबानी॥
चलहुँ देस, कारज न सेस, अरदास-दास[1] मन धारौ।
लेहु टेरि लउटत बहोरि, जनि सेवक हिये बिसारौ॥
कहेँउ भरत, हे रामसखा! तैं मम-बन्दन-अधिकारी।
भरि सुअंक रघुपति जिन मेले[2], तिन-पूजन सुखकारी॥
चंदन अगुरु रतन धन अर्पन करि लीन्हेँउ लपिटाई।
लहि प्रसाद गुह गवनेँउ देसू, भरत जितैं रघुराई॥

दो० दहिने माधव तीर्थ-पथ, तजि निज कटक महान।
कछुक जनन लै, तपोवन, कीन्हेँउ भरत पयान॥ ६१॥

भरद्वाज मुनि आश्रम जाई ❋ बंदेँउ भरत चरन सिर नाई
दशरथ-तनय भरत मम नामा ❋ अनुज लखन अग्रज मम रामा
हे मुनि! बन आयेँउँ तव सरना ❋ दरस मिलै किमि रघुपति-चरना
राखि पंथ बिच कटक अपारा ❋ इत अकेल कस भरतकुमारा

तरणी मानुषे गंगा पूर्ण दुइकुले ❋ हइल कटक गंगा पार एकतिले
जाइल सामन्त सैन्य शीघ्रनदी पार ❋ घोड़ा हाती कटक हइल परे पार
साजन नौकाय पार हन यत राणी ❋ परे पार हइलेक सात अक्षौहिणी
गुह बले, आमार सेखाने नाहि कार्य्य ❋ विदाय करह आमि जाइ निजराज्य
फिरिया यखन देशे करिबे गमन ❋ आमारे आपन-ज्ञाने करिबे स्मरण
भरत बलेन, गुह, श्रीरामेर मित ❋ करिते तोमार पूजा आमार उचित
जाँरे कोल दियाछेन आपनि श्रीराम ❋ आमार उचित ताँरे करिते प्रणाम
आपनि भरत ताँरे देन आलिगन ❋ सुगन्ध चन्दन देन वहुमूल्य धन
प्रसाद पाइया गुह गेल निज देशे ❋ चलिलेन भरत श्रीरामेर उद्देशे
माधव तीर्थेर काछे आछे जेइ पथ ❋ ताहारे दक्षिण करि चलेन भरत
हस्ती-अश्व प्रभृति राखिया सेइ स्थाने ❋ अल्पलोके भरत गेलेन तपोवने
महामुनि भरद्वाज आछेन बसिया ❋ भरत बलेन ताँर चरण बन्दिया
दशरथ-तनय, भरत मम नाम ❋ लक्ष्मण कनिष्ठ मम ज्येष्ठ हन राम
रामेर उद्देशे आमि आसियाछ बन ❋ कह मुनि, कोथा ताँर पाव दरशन
जिज्ञासेन मुनि ताँरे, कोथा आगमन ❋ एकेश्वर आसियाछ ना बुझि कारण
कटक-सकल तुमि राखियाछ पथे ❋ कोन् भावे आसियाछ, ना पारि बुझिते

१ दास की प्रार्थना २ मिलन किया।

हेतु-आगमन जानि न पावा ❋ निज संसय मुनि कुवँर सुनावा
मुनि ! तुम कहँ अजान कछु नाहीं ❋ छल प्रपंच जनि मम मन माहीं
सात अछोहिनि[1] कटक अनंता ❋ तिनि निबाह किमि उपवन-संता[2]
भार विपुल दल, मुनिन कलेसू ❋ यहि भय सबन तजेउँ बन-देसू
आयेउँ एक राम अनुरागा ❋ सहज भाव दल मारग त्यागा

छं० बस रामहिं देस लिवाइ चलइँ, लौ[3] एक धरे समिटी नगरी ।
दिन-रैन रुकी जनि, सैन थकी, न समाय तपोवन सो सिगरी ॥
बिहँसे मुनि, तात ! इतै, सुख-वास सुपास[4] सबै-सुरनाथपुरी ।
सुत-कैकइ के न समात हिये किमि सिन्धु समाय इतै गगरी ॥

भरद्वाज-आश्रम में साक्षात् स्वर्गपुरी-आगमन

कहेउ बिहँसि मुनि, तजि सुत! चिंता❋आनहु सकल समाज अनंता
तप-उपवन दुर्लभ कछु नाहीं ❋ मुनि सिरजेउ कौतुक छिन माहीं
मुनि जब जेहि अभिमंत्रि बुलावा ❋ यज्ञ-भूमि ततछन सोइ आवा
प्रथम विश्वकर्महिं आदेसू ❋ रचहु सुरपुरी-सरिस प्रदेसू

भरत बलेन, आमि कपट ना जानि ❋ ध्यान करि मुनि, सब जानह आपनि
सकल कटक मम सात अक्षौहिणी ❋ कोन् खाने रवे ठाट, भय करि मुनि
सर्व्वशुद्ध आइले आश्रमे हवे क्लेश ❋ ते कारणे सैन्य मम बाहिर अशेष
आश्रम पीड़ने मुनि, करि बड़ भय ❋ अन्य सब बाहिरे आछये महाशय
राज्यशुद्ध आसियाछे अयोध्यानगरी ❋ रामेरे लइया जाव, एइ बाञ्छा करि
सातिशय श्रान्त सैन्य पथ परिश्रमे ❋ कोन् खाने रबे ठाट तोमार आश्रमे
भरतेर कथा शुनि, आज्ञा देन मुनि ❋ आपन इच्छाय आन यत अक्षौहिणी
दिव्यपुरी दिब आमि, दिब दिव्यवासा ❋ अतिथि सवारे आमि करिब सुश्रुषा
भरत वलेन, देखि खानकत घर ❋ केमने रहिवे ठाट, कटक विस्तर

भरद्वाज आश्रमे स्वर्गपुरी-आगमन

भरतेर कथाय कहेन हासि मुनि ❋ प्रयोजन-मत घर पाइवे एखनि
कटक आनिते जान भरत आपनि ❋ हेथा चमत्कार करे भरद्वाज मुनि
यज्ञशाले गिया मुनि ध्यान करि वैसे ❋ जखन जाहारे डाके, तखनि से आइसे
विश्वकर्म्मा प्रथमतः हन आगुयान ❋ आश्रमे अपूर्व्व पुरी करिते निर्म्माण
मुनि बले, विश्वकर्म्मा, शुनह वचन ❋ निर्म्माण करह, येन महेन्द्र-भुवन

१ अक्षौहणी २ संत के आश्रम में ३ लौ, लगन ४ सुविधा ।

अस्सी जोजन पुरी प्रसारा * रचहु, बिबिधि-सुबरन आगारा
छत-प्राचीर-कनक सब भाँती * घाट बिसाल सोबरन पाँती
दिव्य सरोवर नगर मझारा * नील धवल नित कमल-बहारा

दो० कनक-पात्र, कंचन-पलँग, रत्नासन, इमि सैन[1]।
कस्तूरी कुंकुम सुरभि सुर-वनितन सह सैन[2] ॥ ६२ ॥

जे नद-नदी धरातल छाई * मुनि बल योग तपोबल आई
विपुल स्रोत जल सरित घनेरी[3] * यमुन, प्रभास, सिन्धु, कावेरी
कृष्णा, प्रबल नर्मदा धारा * गोदावरि, गोमती प्रसारा
भैरव, महानदी जल पावन * सरयू-तरपन मुकुति-दिवावन
गंडक, कौशिकि, पुष्कर संगा * मंदाकिनि अरु धवलतरंगा
सुरभित सुरुच ईख मधुसानी * विविध सरित लखि थकन नसानी
घृत-सलिला, पुनि दधि अरु क्षीरा * घृत विशुद्ध प्रवहति जिमि नीरा
नदी सात शत, बेग तरंगा * आई पतितपावनी गंगा
भरद्वाज तप-पुंज विशाला * सकल देव पुनि दश दिक्पाला
सुरपति सहित अप्सरा आई * जिनि छबि-किरनि धरनि चहुँ छाई

अशीति योजन करे पुरीर पत्तन * सोनार आवास-घर करिल गठन
सोनार प्राचीर आर सोनार आवारी * सोनार बान्धिल दीर्घ घाट सारि-सारि
पुरीर भितर करे दिव्य-सरोवर * श्वेत-नील-पद्म ताहे शोभे निरंतर
सुवर्ण पालंक करे रत्न-सिंहासन * देवकन्या ल'ये ठाट करिबे शयन
करिल सोनार बाटा, सोनार डाबर * कस्तूरी कुंकुम राखे गन्ध मनोहर
यत-यत नदी आछे पृथिवी-मण्डले * योग बले मुनि आनाइल सेइ स्थले
सातशत नद आर नदी यत छिल * यमुना प्रभास आदि सेखाने आइल
आइल नर्म्मदा नदी, कृष्णा गोदावरी * आइल भैरव सिन्धु गोमती कावेरी
सरयू तनया नदी आर महानद * तर्पण जाहार जले पाय मोक्षपद
कालिन्दी, पुष्कर, नदी आइल गण्डकी * श्वेतगंगा स्वर्णगंगा आइल कौशिकी
इक्षुरस-नदी आइल, सुगन्धि सुस्वाद * मधुरस-नदी आइल, घुचे अवसाद
दधि-दुग्ध-घृत आदि रहे चारिभिते * घृतनदी बहिया आइसे शुधु घृते
सातशत नदी तथा अति वेगवती * आइलेन आश्रमे आपनि भागीरथी
भरद्वाज ठाकुरेर तपस्या विशाल * आइलेन सर्व्वदेव, दश दिक्पाल
देवकन्यागण ल'ये आइल पुरन्दरे * याहादेर रूपेते पृथिवी आलो करे

---

१ सेना २ शयन करना ३ बहुत सी।

रवि-छबि छुवत हेमगिरि-शृंगा ※ बिसरे काज, न सुधि-बुधि अंगा
उपवन धनद कुबेर पधारे ※ चहुँ दिसि कनकमयी विस्तारे
मलय-पवन आगम तजि मेरू ※ सुरभित मन मोहत सब केरू
इन्दु[1] अमियरस चहुँ दिसि पानू ※ रवि, शनि, नव-गृह, वरुण, कृशानू[2]
वसुगण, मरुत समिटि उनचासा[3] ※ मुनि-उपवन जुरि कीन प्रकासा
नारद, तुम्बुरादि[4] गंधर्वा ※ समिटे नर्त - नर्तकी सर्वा

दो० आवत भरत, निमेष[5] बिच, रचना कीन ललाम ।
बसी सुरपुरी तपोवन, उजरि गयेउ सुरधाम ॥
कटक सहित मोहे भरत, नगरी रम्य बिलोक ।
शंकाकुल सुरगन सकल सोचत उर सुरलोक ॥ ६३ ॥

भरत-नेह-बस तजि बनवासू ※ जो प्रभु लौटहिं अवध निवासू
सुर मुनि संत मिटै जनि त्रासा ※ कतहुँ न पुनि दसकंध-विनासा
सुरगन-हिय यह पीर समाई ※ सोचि सतर्क रहे चहुँ छाई
भरद्वाज इत कौतुक कीन्हा ※ अवध-समाज मोहि मन लीन्हा
यथायोग चहुँ सुखद निवासू ※ ध्यान करत सब सुलभ सुपासू[6]

हेमकूटे देखि जेन सूर्य्येर किरण ※ आछुक अन्येर काज, भुले मुनिगण
आइलेन कुबेर धनेर अधिकारी ※ सोनार वासन थाले आलो करे पुरी
सुमेरु पर्व्वत हैते आइल पवन ※ मलयेर वायुते सबार हरे मन
आइलेन सुधाकर सुधार निधान ※ परम कौतुके सबे करे सुधापान
आइलेन अग्नि आर जलेर ईश्वर ※ शनि आदि नवग्रह, संगे दिवाकर
मरुद्गण वसुगण येवा यथा रय ※ आइल सकल देव मुनिर आलय
तुम्बुरु-नारद आदि स्वर्गेर गायक ※ आइल नर्त्तकी कत, कत व नर्त्तक
देवशून्य हइलेक इन्द्रेर नगरी ※ भरद्वाज-आश्रम हइल स्वर्गपुरी
हेनकाले सैन्य सह भरत आइसे ※ एतेक करिल मुनि चक्षुर निमिषे
निरखिया भरतेर लागिल विस्मय ※ तखन मन्त्रणा करे स्वर्गे देव चय
भरतेर संगे जदि राम जान देशे ※ देवगण मुनिगण मरिवेन क्लेशे
राम देशे गेले, नाहि मरिवे रावण ※ साधुलोके सकलेर नितान्त मरण
जे रूपे ना जान राम अयोध्या भुवन ※ तेमन करह युक्ति, मरुक रावण
देवगण मुनिगण करेन मंत्रणा ※ भुवन-मण्डल घिरि रहे सर्व्वजना
जार जोग्य जे आवास, जाय सेइ जन ※ जेदिके जे चाहे, तार ताहे रहे मन

---

१ चन्द्रमा २ अग्नि ३ उन्चास प्रकार के पवन ४ तुम्बुरु गंधर्व आदिक
५ पलक मारते ६ सुविधाएँ, आराम ।

तन फुलेल पुनि मज्जन करहीं ※ कोउ सर, कोउ सलिला-पथ गहहीं
अवसर प्रथम! गंग अस्नाना ※ तरपनादि तिन मोद महाना
सरन[1] असंख्य तुरंग-मतंगा ※ करत केलि क्रीड़ति जल-रंगा
उपवन मुनि-प्रभाव अतिरेका[2] ※ नव सरिता बहि चलीं अनेका
करि अस्नान बसन बहुरंगा ※ चंदन लेप सुवासित अंगा
अखिल सैन जेहि जस रुचिकारी ※ भूखन-बसन विविध तिन धारी
सबकर भूखन-बसन समाना ※ प्रभु-सेवक न जात पहिचाना
जेवन[3] हित, पंगतिन[4] पधारी ※ कनक-पट्टि चहुँ कंचन-थारी
स्वर्ण-पात्र अरु सुबरन-धामा ※ स्वर्णमयी दिसि सकल ललामा
सुरवनितन पारुस सुखकारी ※ अलख! न दरसन परसनहारी[5]
बरा पिठबरा, बरी, मुँगौरी ※ गरी-भरी अमरित दुधपूरी

दो० चन्द्रकला व्यञ्जन विविध, सोभित सुमन लवंग।
दधि, मधु, घृत, पायस[6] मधुर, को सक वरनि प्रसंग ॥ ६४ ॥

चौबिधि[7] सुरभि[8] सुरस मन माने ※ सकल खाय जनि तबहुँ अघाने
तनि-तनि उदर कंठ लौं आए ※ दुसह! अचम्य[9] शयन-ग्रह धाए

माखिया सुगन्ध-तैल स्नान करिवारे ※ केह जाय नदीते, केह वा सरोवरे
कोन पुरुषेते गंगा जे जन न देखे ※ करे स्नान-तर्पण से परम कौतुके
हस्ती अश्व कटक चलिल सुविस्तर ※ जलकेलि करे सबे गिया सरोवर
भरद्वाज मुनिर कि अपूर्व्व प्रभाव ※ कत नदी आश्रमे आपनि आविर्भाव
स्नान करि परे सवे विचित्र बसन ※ सर्व्वांग लेपिया दिल सुगंधिचन्दन
वहुबिध परिच्छद परे सैन्यगण ※ यार याते वासना, परिल आभरण
सबार समान वेश, समान भूषण ※ केवा प्रभु, केवा दास, नाहि निरूपण
भोजने बसिल सैन्य बन्धु परिपाटी ※ स्वर्णपीठ स्वर्णथाल स्वर्णमय बाटि
स्वर्णेर डाबर आर स्वर्णमय झारि ※ स्वर्णमय घरेते बसिल सारि सारि
देवकन्या अन्न देय, सैन्यगण खाय ※ के परिवेषण करे जानिते ना पाय
चन्द्रपुलि बड़ा पिठा मुगेर सामुली ※ सुधामय दुग्धे फेले नारिकेल पुलि
निर्म्मल कोमल अन्न येन यूँथिफुल ※ खाइल व्यञ्जन कत, नाम हैल भुल
घृत दधि दुग्ध मधु मधुर पायस ※ नानाविध मिष्ठान्न खाइल नानारस
चर्व्य-चूष्य-लेह्य-पेय सुगन्धि सुस्वाद ※ यत पाय, तत खाय, नाहि अवसाद
कण्ठावधि पूर्ण हैल, पेट पाछे फाटे ※ आचमन करि ठाट कष्टे उठे खाटे

---

१ तालावों में २ अत्यन्त ३ भोजन के लिए ४ पंक्तियों में ५ परोसनेवाली ६ दूध ७ चवाने, चूसने, चाटने और पीने योग्य चार प्रकार के दृव्य ८ सुगंध ९ आचमन करके।

शयन पर्यंक, भामिनी संगा * सुर-वनिता सुखचापहिं अंगा
मंजुल मंद सुगंध बयारी[1] * पंचम स्वर पिक कूजति प्यारी
अलि-अलिनी[2]-गुंजन चहुँ छावा * नर्त्त - अप्सरा मदन[3] जगावा
रितु बसंत सुख रैन अनंता * रमनिन रमत सैन, सामन्ता
रसना सबन एक रट लागी * साध[4] न देस, स्वर्ग-सुख त्यागी
दुर्लभ जोग अतुल सुख पाई * धाम न काम, जाय सो जाई
सकल समाज अनंद-विभोरा * भरत एक लौं[5] प्रभु पद ओरा
भरत हेतु मुनि कीन्ही रचना * तिन न नेह, तजि रघुपति-चरना
भोर भरत बन्देउ मुनि जाई * सुख सों निसि तव धाम बिताई
अब करि दया मिटावहु पीरा * कहँ मुनि! दरस मिलै रघुबीरा
साधु! साधु! मुनि वचन उचारा * भक्त न भरत सरिस संसारा
माँगु माँगु मनु-वाँछित ताता * अमिट वचन मम जग विख्याता
एक मात्र अनुनय मुनि पाहीं * लहौं दरस चलि रघुपति पाहीं
बोले मुनि, सुनु कैकयि-नंदन * निवसति चित्रकूट रघुनंदन

छं० जदपि न लौटहिं धाम, राम के दरस मिलै तहँ जाये।
मुनिन सलाहन, चित्रकूट तन, भरत ससैन सिधाये॥

खाटे गिया प्रिया ल'ये करिले शयन * देवीरा आसिया करे शरीर मर्द्दन
मन्द मन्द गन्ध बहे अति सुललित * कोकिल पञ्चम स्वरे गाय बहु गीत
मधुकर-मधुकरी झंकारे कानने * अप्सरीरा नृत्य करे मातिया मदने
अनन्त सामन्त सैन्य लइया रमणी * परम आनन्दे वञ्चे वसन्त रजनी
सबे बले, देशे जाइ, हेन साध नाइ * अनायासे स्वर्ग मोरा पाइनु हेथाइ
एत सुख ए-संसारे केह नाहि करे * जे जाय से जाक्, आमि ना जाइब घरे
हेन सुखे भुञ्जे ठाट, भरत ना जाने * रामेर चरण विना नाहि ताँर ज्ञाने
एतेक करेन मुनि भरत-कारण * भरत भावेन मात्र रामेर चरण
प्रभाते भरत गिया मुनिरे जिज्ञासे * छिलाम परम सुखे तोमार निवासे
कह मुनि, कोथा गेले पाइव श्रीराम * उपदेश करिया पुराओ मनस्काम
मुनि बले, जानिलाम भरत, तोमारे * तव तुल्य भ्रातृ-भक्त ना देखि संसारे
वर माग भरत, आमि हे भरद्वाज * जारे जेइ वर दिइ, सिद्ध हय काज
भरत वलेन, मुनि अन्ये नाहि मन * वर देह, श्रीरामेर पाइ दरशन
वले मुनि, श्रीरामेर जानि सविशेष * देखा पावे, किन्तु राम ना जावेन देश
चित्रकूट पर्व्वते आछेन रघुवीर * तथा गेले देखा हवे, एक जान स्थिर
अन्य अन्य मुनिगण दिल ताहे साथ * भरतेर सैन्यगण चित्रकूटे जाय

---

१ हवा २ भ्रमर-भ्रमरी ३ कामदेव ४ लालसा ५ लगन।

दस दिसि धूरि धुंध चहुँ छायी, जमुन कीन्ह उतराई।
कटक प्रफुल्लित राम-खबर सुनि चलेउ पवन-गति धाई ॥

सो० पाय राम सहवास, गिरिबासी-मुनि पुलक अति।
सैन-सोर सुनि त्रास, राम! राम! रक्षा करहु ॥ ६५ ॥

भरत, रिपुदमन, कटक असेसू ❋ सबन अतुल छबि तापस बेसू
राम-लखन-सिय उपबन बासू ❋ पर्णकुटी रचि करहिं निवासू
द्वार राम, सिय कुटी बिराजी ❋ बाहेर लखन सरासन साजी

श्रीरामचन्द्र से भरतादिक का मिलन

सानुज भरत, दीन अति वेसू ❋ तब लौं आस्रम कीन प्रवेसू
गरे वसन अरु लोचन नीरा ❋ मारग स्रम कुम्हिलान सरीरा
प्रभु-पद-कमल दण्डवत कीन्हा ❋ पुलकित राम अंक भरि लीन्हा
मिला-भेंटि आसिस-सत्कारू ❋ समुचित करत अवध परिवारू
गहि पद कहेउ, कवन मुँह लागी ❋ वन-आगमन राज-पद त्यागी
सहज नारि-मति कुमति निवासू ❋ उचित न परि तिन-कथन प्रवासू[1]

दशदिक् हइल धूलाय अन्धकार ❋ जाइल भरत-सैन्य यमुनार पार
रामेर सन्धान पेये प्रफुल्ल कटक ❋ वायुवेगे चले सबे, ना माने आटक
यत हय चित्रकूट पर्व्वत निकट ❋ तत तथाकार लोक भावये विकट
चित्रकूट-पर्व्वत-निवासी मुनिगण ❋ श्रीरामेर सहवासे सदा हृष्टमन
सैन्य-कोलाहल शुनि सभय अन्तरे ❋ 'रक्षा कर रामचन्द्र' वले उच्चैःस्वरे
हेनकाले भरत-शत्रुघ्न उपनीत ❋ सवार तपस्वि-वेश अयोध्या सहित
श्रीराम लक्ष्मण आर जनकेर बाला ❋ बसति करेन निर्म्माइया पर्णशाला
तार द्वार बसिया आछेन रघुवीर ❋ जानकी ताहार मध्ये, लक्ष्मण बाहिर

श्रीरामचन्द्रेर सहित भरत प्रभृतिर मिलन

हेनकाले भरत-शत्रुघ्न दीनवेशे ❋ श्रीरामेर आश्रमेते आसिया प्रवेशे
गल-वस्त्र भरत, नयने वहे नीर ❋ पथ-पर्य्यटने अति मलिन शरीर
पड़िलेन श्रीरामेर चरण-कमले ❋ आनन्दे श्रीराम ताँरे लइलेन कोले
परस्पर सम्भाषण करे सर्व्वजन ❋ यथायोग्य आलिंगन पदादि बन्दन
भरत कहेन धरि रामेर चरण ❋ कार वाक्ये राज्य छाड़ि बने आगमन
वामाजाति स्वभावतः वामा बुद्धि धरे ❋ तार वाक्ये के कोथा गियाछे देशान्तरे

१ परदेश निवास।

छमहु नाथ सत्वर[1] चलि देसू ❋ करहु राज उर मिटइ कलेसू
अवध-मुकुट तुम अवध सरूपा ❋ तुम बिन अवध दिवस निसिरूपा
चलि प्रभु! राज सम्हारहु भारा ❋ सेवहुँ पद पायक[2] अनुसारा
रघुपति कहेउ भरत! तुम ज्ञानी ❋ तबहुँ कहत कस अनुचित बानी
वन आयेउँ पितु-आयसु धारी ❋ उचित न दोष बिमातु बिचारी
चौदह बर्ष बचन-पितु धारी ❋ अवधपुरी चलि निरखहिं प्यारी
तजहु प्रसंग न करहु अबेरी[3] ❋ बरनौ प्रथम कुशल पितु केरी
दो० नृप गोलोक पयान किय, सुनि बशिष्ठ सों बैन।
सहित लखन-सिय मूर्छित, बिलपत करुना-ऐन[4] ॥ ६६ ॥
कहेउ बशिष्ठ, धीर धरि रामा ❋ करहु शास्त्र-सम्मत पितु-कामा
अशुचि[5] तीन दिन, श्राद्ध सवाँरी ❋ तुम सुत जेठ पिण्ड-अधिकारी
भरत संग बहु दृव्य अपारा ❋ लै बैपरहु सुरुचि अनुसारा
विज्ञ[6]! धरहु धीरज उर माहीं ❋ तुम्हहिं सीख-समरथ जग नाहीं
भूप सत्य पथ सुरपुर वासा ❋ रुदन किये लिन पुण्य विनासा
संचित तेल गात नरनाहू ❋ भरत आय कीन्हेउ मृत दाहू
पुनि कर्त्तव्य कर्म किय नाना ❋ अगनित अमित निरंतर दाना

अपराध क्षमा कर, चल प्रभु, देश ❋ सिंहासने वसिया घुचाओ मनःक्लेश
अयोध्या-भूषण तुमि, अयोध्यार सार ❋ तोमा विना अयोध्या दिवसे अन्धकार
चल प्रभु अयोध्याय, लह राज्यभार ❋ दासवत् कर्म्म करि आज्ञा अनुसार
श्रीराम बलेन, तुमि भरत, पण्डित ❋ ना बुझिया केन वल, ए नहे उचित
मिथ्या अनुयोग केन कर विमाताय ❋ वने आइलाम आमि पितार आज्ञाय
चतुर्द्दश वत्सर पालिया पितृवाक्य ❋ अयोध्या जाइव आमि देखिवे प्रत्यक्ष
थाकुक से सब कथा, शुनिव सकल ❋ वलह भरत, आगे पितार कुशल
वशिष्ठ कहेन, राम, ना कहिले नय ❋ स्वर्गवासे गियाछेन राजा महाशय
शुनि मूर्च्छागत राम-जानकी-लक्ष्मण ❋ भूमिते लोटाय वहु करेन रोदन
बशिष्ठ वलेन बलि व्यवस्था इहाते ❋ तिन दिन तोमार अशौच शास्त्र-मते
पितृश्राद करिते ज्येष्ठेर अधिकार ❋ तिनदिन गेले श्राद्ध करिबे राजार
सकल भाण्डार आछे भरतेर साथे ❋ लह धन, कर व्यय प्रयोजन मते
संवर संवर शोक राम महामति ❋ तोमारे बुझाते पारे, आछे कोन कृती
सत्यहेतु भूपति गेलेन स्वर्गवास ❋ रोदन करिया केन पुण्य कर नाश
छिलेन तैलेर मध्ये मृत महाराज ❋ भरत आसिया करिलेन अग्निकाज
आरो जे कर्त्तव्य-कर्म्म करिया भरत ❋ करिलेन कत शत दान अविरत

---

१ शीघ्र २ सेवक ३ विलम्ब ४ करुणाधाम ५ सूतक ६ ज्ञानवान्।

भरत दान-गति बरनि न जाई ॐ कोटि-कोटि धन विप्रन पाई
उपजेउ भुवन न कोउ नरनाथा ॐ भरत समान दान जिन गाथा

श्रीराम द्वारा पितृ-श्राद्ध

गुरु सों राम अनुज्ञा लेहीं ॐ तर्पन श्राद्ध करन मन देहीं
द्रुति चलि फलगु नदी के तीरा ॐ आये लखन सीय रघुबीरा
सलिल नहाय ध्यान पितु धरहीं ॐ नाम गोत्र लै तर्पन करहीं
बैठे राम लखन बैदेही ॐ संग सकल दायाद[1] सनेही
अवध-समाज राम अनुसरही ॐ प्रभुहिं घेरि चहुँ आसन लहही
संका धरी राम गुरु आगे ॐ बिन परमायु[2] प्रान पितु त्यागे?
अयुत वर्ष मुनि! रविकुल-आयू ॐ कस पितु स्वर्ग गमन अल्पायू[3]

दो० कहेउ बशिष्ठ भुवाल तजि देहँ गये परलोक।
लही शांति, यहि विधि मिटेउ, दुसह ताप सुत-शोक ॥ ६७ ॥

कहेउ सुमंत्र, इतै तुम आये ॐ 'हाय राम!' कहि भूप सिधाये
पितु-गति सुनत दिये सब रोई ॐ श्राद्ध द्रव्य उत संचित होई
तप-उपवन निवसत मुनि-वृन्दा ॐ नेउतेउ सबन सच्चिदानन्दा

ताहार दानेर कथा शुन परिपाटि ॐ एकैक ब्राह्मणे देन धन एक कोटि
यत यत राजा हइलेन चराचरे ॐ भरत समान दान केह नाहि करे

श्रीराम-कर्त्तृक दशरथेर श्राद्धादि-सम्पादन

श्रीराम बलेन, हे बशिष्ठ पुरोहित ॐ आज्ञा कर, पितृश्राद्ध करि जे विहित
श्रीराम लक्ष्मण सीता चलेन त्वरित ॐ हइलेन फल्गु नदी तीरे उपनीत
सकले सलिले स्नान करिया तखन ॐ करिलेन नाम-गोत्र लइया तर्पण
स्नान करि तीरेते बसेन तिनजन ॐ तखन वसिल सबे आत्म बन्धुगन
यथा राम तथा हय अयोध्यानगरी ॐ रामचन्द्रे बेड़िया सब वसिल पुरी
श्रीराम बलेन, मुनि, जिज्ञासि कारण ॐ आयु सत्वे मरिलेन पिता कि कारण
अयुत वत्सर लोक सूर्य्यवंशे जिये ॐ काल पूर्ण ना हइते मृत्यु कि लागिये
वशिष्ठ बलेन, राजा गिया परलोके ॐ रक्षा पाइलेन राम, तोमा पुत्रशोके
सुमन्त्र कहिल गिया, तुमि गेला वन ॐ 'हा राम' बलिया राजा त्यजिल जीवन
पितृकथा शुनिया कान्देन तिनजन ॐ एदिके श्राद्धेर दृव्य हय आयोजन
तपोवने छिलेन जतेक मुनिगण ॐ पितृ-श्राद्धे श्रीराम करेन निमंत्रण

१ कुटुम्बी २ पूरी उम्र ३ अकाल मृत्यु।

कीन श्राद्ध पुनि फल्गू तीरा * पिण्ड समर्पन किय शुचि[1] नीरा
भोजन-वसन दान विधि नाना * मुनिन-द्विजन सब विधि सन्माना
मुनि परितृप्त वचन शुभ कहहीं * पिण्ड पाय नृप सुरपुर लहहीं
कहेउ बशिष्ठ, पुरइ पितु-कामा * भरतहिं करउ अनुज्ञा रामा!
तुम बिन भरत न गति, रघुराई! * होयँ सुखी तव अनुमति पाई
मुनि! मोहिं भरत प्रान ते प्यारे * भरत भेंटि उर सुख बिस्तारे
बिलग न भाव, एक दोउ भाई * भरत-राजु, गुरु! मोर रजाई[2]
गवनैं अवध करैं तत्काला * सचिवन सहित प्रजा-प्रतिपाला
पुरी नृपति बिन, भय मन आवैं * कब को रिपु सूने[3] चढ़ि धावै
तुम सर्वज्ञ, सिखावन नाहीं * भल-अनभल-विवेक तव पाहीं
वर्ष चतुर्दस अवधि बिताई * सुख सों रहइँ अवध सब भाई

श्रीराम-पादुका सिंहासनासीन कर भरत द्वारा राज्य

विनय जोरि कर भरत सुनाई * मम सिर राज न शोभा पाई
प्रभु-पादुका सिंहासन धारी * दास प्रजा-पालन अधिकारी
दो० जहाँ पादुका नाथ की, त्रिभुवन-भय कस कास? ।
अर्पन करि पुनि भरत सों, पुलकि कहेउ इमि राम ॥ ६८ ॥

पितृश्राद्ध करिलेन फल्गुनदी तीरे * पितृ पिण्ड समर्पण करेन से नीरे
मुनिगण कहे, कि राजार परिणाम * पिण्ड तिनि देन, जिनि निजे मोक्षधाम
श्रीरामेरे बलेन वशिष्ठ महाशय * भरतेर प्रति राम कि अनुज्ञा हय
तोमा बिना भरतेर नाहि आर गति * बुझिया भरते राम, कर अनुमति
श्रीराम बलेन मुनि, हइलाम सुखी * प्राणेर अधिक आमि भरतेरे देखि
भरते आमाते नाहि करि अन्य भाव * भरतेर राजत्वे आमार राज्य-लाभ
जाओ भाइ भरत, त्वरित अयोध्याय * मन्त्रिगणे ल'ये राज्य करह तथाय
सिंहासन शून्य आछे, भय करि मने * कोन् शत्रु विपद् घटावे कोन् क्षणे
तोमारे जानाब कत, आछ ये विदित * विवेचना करिबे सर्व्वदा हिताहित
चतुर्द्दश वत्सर जानह गतप्राय * चारिभाइ एकत्र हइब अयोध्याय

सिंहासने श्रीरामेर पादुका राखिया भरतेर राज्यशासन

जोड़हाते भरत बलेन सविनय * केमने राखिब राज्य, मम कार्य्य नय
तोमार पादुका देह, करि गिया राजा * तबे से पारिब राम, पालिबारे प्रजा
तोमार पादुका राम, थाके यदि घरे * त्रिभुवने भरत काहारे नाहि डरे

---

१ पवित्र २ शासन, हुकूमत ३ राजा की अनुपस्थिति मे ।

नन्दिग्राम थापहु रजधानी * तहँ बसि तात! काय-मन-बानी
देखहु राज सम्हारहु काजू * सावधान पालहु पितु-राजू
प्रभु-पादुका भरत सिर धारी * अतिव विभोर मोद उर भारी
करि अभिषेक बन्धु-पदत्राना[1] * हरि-आयसु लहि कीन पयाना
बिछुरत रुदन कुलाहल भारी * सुनत न कोउ केहु सकत सम्हारी
राम अंक भरि बिलखत जननी * भिजये बसन नयन-निर्झरनी
लखन-मातु लखनहिं उर लाई * करत बिलाप दुसह दुख पाई
सीतहिं सकल समाज बिलोकी * आकुल रुदन सकेउ जनि रोकी
राम-बिछोह सबन दुखदायी * भरतहिं बिदा कीन रघुराई
चित्रकूट गिरि रम्य सुहावा * कछु दिन तहँ निवास मन भावा
तीन दिवस चलि पन्थ बिताये * भरत ससैन अवध पुनि आये
विश्कर्महिं[2] भगवन्त पठाये * नन्दिग्राम बहु धाम रचाये
रत्न सिंहासन आसन साजी * पदत्रान-प्रभु युगुल बिराजी
राज-छत्र छबि उपर सुहाई * नीचे पुनि मृगचर्म बिछाई
भरत चलावत सासन काजू * सहित सनेहिन सचिव-समाजू
राम नाम सब पाप बिनासा * मुक्ति दैन बैकुण्ठ निवासा

श्रीराम वलेन, हे भरत प्राणाधिक * पादुका लइया जाह, कि कव अधिक
नन्दिग्रामे पाट करि कर राज-कार्य्य * सावधान हइया पालिह पितृराज्य
श्रीरामेर पादुका भरत शिरे धरे * भावे पुलकित अंग, प्रफुल्ल अन्तरे
पादुकार अभिषेक करिया तथाय * चलिलेन भरत श्रीरामेर आज्ञाय
यात्राकाले उठे महाक्रन्दनेर रोल * कोनजन शुनिते ना पाय कारो वोल
कान्देन कौशल्यारानी रामे करि कोले * वसन भिजिल ताँर नयनेर जले
सुमित्रा कान्देन कोले करिया लक्ष्मणे * सकले क्रन्दन करे सीतार कारणे
भरतेरे विदाय करिया रघुवीर * चित्रकूटे किछु दिन रहिलेन स्थिर
सैन्यगण-सहित भरत अतःपरे * तिन दिने आइलेन अयोध्या-नगरे
विश्वकर्म्मा पाठाइया देन भगवान * नन्दिग्रामे अट्टालिका करेन निर्म्माण
रत्नसिंहासनेते भरत पटु पाति * तदुपरि पादुका राखिया धरे छाति
तार निम्ने श्रीभरत कृष्णसार चर्म्मे * पात्र-मित्र-सहित थाकेन राजकर्म्मे
राम नाम लइते जे करे अभिलाष * सर्व्व पापे मुक्ति तार, बैकुण्ठे निवास

---

१ खड़ाऊँ २ विश्वकर्मा को।

दो० अवध काण्ड गाथा रुचिर कृत्तिवास किय गान ।
सुधा-कलश संगीतमय सुललित सुखद बखान ॥ ६९ ॥

दशरथ-हेतु सीता द्वारा पिण्डदान

गिरि, सिय सहित राम दोउ भाई ※ बर्षी-श्राद्ध-भूप-तिथि आई
लखन-सिया लखि सोचत रामा ※ किमि पितु-श्राद्ध सवाँरहिं कामा
तब लौं जुगुति एक मन आई ※ नजर मुद्रिका मानिक आई
सुँदरी[1] लै सानुज पग धारे ※ रमत इतै सिय फल्गु-किनारे
कौतुक! रेनु[2] रमत बैदेही ※ दरस दीन मृत श्वसुर[3] सनेही
हे सिय, करु मम कथन प्रमाना ※ छुधा अगिनि, मम निकसत प्राना
तैं मम बधू! श्वसुर सत्कारै ※ रेनु-पिण्ड दै छुधा निवारै
कह सिय, पितु! न मोंहिं इन्कारी ※ पति बिन तदपि न मैं अधिकारी
राम सरिस मोंहिं सब बिधि सीता ※ मम अधिकारिनि, करउ प्रतीता[4]
तजि ससपञ्ज[5] करहु जस भाषी ※ चन्द्रबदनि! समुहे करि साखी
सुनि सिय चन्द्रमुखी सुख पाई ※ प्रभु-प्रिय 'तुलसी' आदि बुलाई
पुनि बट, फल्गु नदी, द्विजराई ※ साखी देन सत्रन सखराई[6]

कृत्तिवास कविर संगीत सुधाभाण्ड ※ किवा मनोहर गीत ए अयोध्याकाण्ड

दशरथेर उद्देशे सीतार पिण्डदान

राम सीता रहिलेन पर्व्वत-उपर ※ दशरथ मृत्यु पूर्ण हैल संवत्सर
कहिला श्रीरामचन्द्र सीता-लक्ष्मणेरे ※ कि दिया करिव श्राद्ध पितृ संवत्सरे
तखन करेन युक्ति श्रीराम दैत्यारि ※ भञ्जित करिया आन माणिक्य अंगुरी
अंगुरी लइया गेला दुइ सहोदरे ※ सीता आरम्भिला खेला फल्गुनदी तीरे
खेलेन लइया वालि सीता वहुमते ※ आसिलेन दशरथ सीतार साक्षाते
दशरथ कहिलेन, शुन ओ मा सीते ※ क्षुधार ज्वालाय आमि ना पारि तिष्ठिते
तुमि वधु, आमि तव श्वसुर ठाकुर ※ अर्पिया वालिर पिण्ड क्षुधा कर दूर
सीता कहिलेन, देव कहि जे तोमारे ※ किमते अर्पिव पिण्ड राम अगोचरे
राजा कन, सीतादेवि, कहि तवस्थान ※ आमार निकटे तुमि रामेर समान
मने किछु ना करिह, ओ मा चन्द्रमुखि ※ लोकजन डाकि आनि क'रे राखि साक्षी
'भाल-भाल' वलि कहे सीता चन्द्रमुखी ※ आद्येर तुलसी तुमि ह'ये थाक साक्षी
जिज्ञासा करेन राम फिरि आसि यदि ※ कहिवेन वटवृक्ष आर फल्गु नदी

---

१ अँगूठी २ बालू ३ श्वसुर स्व० दशरथ ४ विश्वास कर ५ संशय
६ यह गवाही देने का वचन ले लिया कि दशरथ ने सीता से पिण्ड ग्रहण किया ।

पूछहिं आय यदा रघुनाथा * कहेउ श्वसुर कै पावन गाथा
सिकता-पिण्ड[1] ग्रहण मुदि[2] कीन्हा * दसरथ रथ सुरपुर-पथ लीन्हा
सिय कहँ विपति पिण्ड नृप हेता * कृत्तिवास कह क्षोभ समेता

ब्राह्मण, तुलसी, फलगुनदी-प्रति सीता-शाप और वटवृक्षहेतु आशीष

सामग्री - सराध उत लीन्हे * तबहिं सबेग राम पग दीन्हे

दो० रामहिं देखि समोद मन कहेउ कुतूहल ! नाथ ।
इत प्रतच्छ दरसन दिये श्वसुर पूज्य नरनाथ ।। ७० ।।

मोहिं दिय श्राद्ध करन आदेसू * गये पिण्ड लहि, स्वर्ग नरेसू
हे सिय ! जे साखी तिन लावौ * अघटन[3] घटित प्रमान करावौ
साखी विप्र, बिनय किय सीता * तिन्हहिं पूछि, प्रभु ! करहु प्रतीता
पुनर्श्राद्ध, द्विज लोभ बिचारी[4] * वचन असत्य कहन मन धारी
हे द्विजश्रेष्ठ ! कहेंउ रघुनन्दन * मम पितु लहे इतै तुम दरसन?
कह द्विज, वचन सत्य रघुनाथा * दरस न मोहिं दसरथ नरनाथा

ब्राह्मण देखिया सीता करेन ज्ञापन * दशरथ-कथा सब कहिबे ब्राह्मण
इहा शुनि दशरथ हर्षे उठि रथे * लइया वालिर पिण्ड गेला स्वर्गपथे
कृत्तिवास पण्डितेर रहिल विषाद * श्वशुरेर पिण्डदाने बधूर प्रमाद

ब्राह्मण, तुलसी ओ फलगुनदीर प्रति सीतार अभिशाप एवं
वटवृक्षेर प्रति ताँहार आशीर्व्वाद

हेथा प्रभु रामचन्द्र अति-त्वरापर * श्राद्धेर सामग्री ल'ये आइला सत्वर
श्रीरामे देखिया सीता हरिष अन्तरे * निवेदन करिलेन रामेर गोचरे
सीता कहिलेन, शुन प्रभु रघुवर * आश्रमे आसियाछिल अजेर कोङर
आमारे करिते श्राद्ध कन दशरथ * लइया बालिर पिण्ड गेला स्वर्गपथ
राम कहिलेन, किसे प्रत्य हय कथा * साक्षी करि राखियाछि, कन देवी सीता
साक्षीरे आनिया सीता, वलाओ एखन * साक्षी पाइलेइ मोर प्रत्यय हय मन
सीता कहिलेन, प्रभु करि निवेदन * जिज्ञासा करह तुमि डाकिया ब्राह्मण
ब्राह्मण बलेन खर्व्व करिब सीतारे * मिथ्यावाक्य कव आजि रामेर गोचरे
डाकिया ब्राह्मणे जिज्ञासेन रघुनाथे * तोमारा देखेछे मोर पिता दशरथे
ब्राह्मण कहेन तवे रामेर साक्षाते * आमरा ना देखियाछि राजा दशरथे

---

१ नदी की वालू के पिण्ड २ प्रसन्न होकर ३ अनहोनी ४ दुबारा राम द्वारा श्राद्ध होने पर दान-दक्षिणा-प्राप्ति का लोभ ।

सुनि घट-घट-व्यापी मुसकाने * सियसुन्दरी-नयन सकुचाने
असत् वचन द्विज, अति संतापू * सिय अति कोप, दीन्ह तेंहि शापू
जदपि लखपती, दृव्य असेसू * भिक्षा-वृत्ति करहु दिग्देसू
रघुपति कह भरोस केंहि बानी * चन्द्रवदनि ! तेंहि आनहु रानी!
आदिप्रिया तव, तुलसी, नाथा ! * तिन मुख सकल सुनौ प्रभु! गाथा
तुलसी प्रति हरि बोलत बानी * बरनउ पिण्ड-प्रदान-कहानी
राम रिझाय सिया-विपरीती * तुलसी-मन इमि उपज अनीती
कहहु सत्य, बोले रघुवीरा * लखे पिता मम फल्गू तीरा
विप्रवचन तुलसी दुहरावा * तव पितु-दरस न प्रभु ! मैं पावा
सुनि मन अतुल ताप सिय व्यापा * सुनु तुलसी ! तव प्रति मम शापा

छं० हरि सीस लसी तुलसी, मम रीस, पचीसन ठौर जमै धरनी ।
दुखदायिनि ! श्वान-शृगालन के मल-मूत्र अपावन माँहि सनी ।।
सिय-कोप कराल नितै तुलसी, जु जुरै, उजरै, भुगतै करनी ।
मुसकाय कहैं रघुनाथ, सिया ! अब कौन गवाह कि है बरनी[1] ।।

ए कथा शुनिया राम कन हासि-हासि * लज्जाय मलिन हैल सीता सुरूपसी
मिथ्या कहि ब्राह्मण, एतेक दिले ताप * क्रोधे तनु थर-थर, दिनु तोमा शाप
लक्ष-लंकार दृव्य यदि थाके तव घरे * भिक्षार लागिया जेओ देश-देशान्तरे
राम कन कान्द केन सीता चन्द्रमुखी * आर केह थाके त, वलाओ देखि साक्षी
एतेक शुनिया कन सीता सुरूपसी * आनिया वलान् प्रभु आद्येर तुलसी
अतः पर तुलसी कानन तथा हेरि * कहिलेन रघुनाथ, कह द्रुति करि
पिण्ड-प्रदानेर तुमि जान विवरण * तुलसी कहेन, यथा कहेन ब्राह्मण
तुलसी भावेन, राम मोरे निबे हाते * मिथ्या कथा कब आमि रामेर साक्षाते
राम वले तुलसि शुनह मोर कथा * साक्षाते देखेछे मोर दशरथ पिता
तुलसी वलेन तवे प्रभु रघुवरे * आमरा ना देखियाछि तोमार पितारे
कथा शुनि जानकीर जन्मे मनस्ताप * जा रे जा तुलसि, आमि दिनु तोरे शाप
एत दुःख दिलि तुइ आमार अन्तरे * आभूमि जन्मिओ तुमि लैया सर्व्व ओरे
क्रोधभरे सीतादेवी कहेन एमन * तोर पत्र श्रीहरिर आदरेर धन
अपवित्र स्थाने तोर अवस्थित हवे * शृगाल कुक्कुर मूत्र-पुरीष त्यजिवे
हासिया वलेन राम, शुनह जानकि * आर केह थाकेत, वलाओ तारे साक्षी

---

१ पारी, नम्बर ।

दो० साखी[1] मम फल्गू सरित, कीन सिया संकेत।
सरित तजेउ सत, लोभ-बस, राम-द्रव्य के हेत ॥ ७१ ॥

नलिनिविलोचन पूछत बानी ※ मम पितु लखेउ फल्गु महरानी
फल्गु असत्य बचन§ दुहरावा ※ मैं अजनन्दन - दरस न पावा
धीरज छूट, सिया अति रोदन ※ फल्गु ! न गति तव शाप-विमोचन
अन्तःसलिल[2] बहै सब काला ※ लंघ छीन-जल श्वान-शृगाला
हे सिय सुमुखि ! कहेउ रघुवीरा ※ साखी और कौन तव-तीरा
कह सिय, अतिव लाज मन माहीं ※ पूछहु तदपि नाथ ! बट[3] पाहीं
पुरवहु एक साध[4]; तरु भाषी ※ वरनउँ कथा, नाथ मैं साखी
राम-रमा छबि युगुल निहारी ※ वरनउँ सकल सत्य मन धारी
सुनि तरु-वचन मोद अधिकाई ※ राम-बाम सिय जाय सोहाई
अनुपम निरखि जुगुल छबि प्यारी ※ बट कर-जोरि बिनय बिस्तारी
प्रभु-पद विनय एक रघुकेतू ※ 'चिन्तामणि' तव नाम न हेतू
जग बिख्यात 'दयामय' नामा ※ उबरत पतित, लहत तव-धामा

सीता कहिलेन शुन प्रभु गुणनिधि ※ आर साक्षी आछे सेइ फल्गु महानदी
फल्गु भावे, मिथ्या कर श्रीरामेरस्थले ※ दिबेन कतइ द्रव्य राम मोर जले
फल्गुरे सुधान राम कमललोचन ※ तुमि देखियाछ किवा अजेर नन्दन
फल्गुनदी कहे, शुन प्रभु रघुनाथे ※ आमि नाहि देखियाछि राजा दशरथे
एतेक शुनिया सीता कान्दे उच्चैःस्वरे ※ आजि आमि दिव शाप ए फल्गु नदीरे
अन्तःशीला ह'ये तुमि बह सर्व्वकाल ※ तोमारे डिंगिया जाबे कुक्कुरे-शृगाल
श्रीराम बलेन शुन सीता चन्द्रमुखि ※ आर केह थाके त, बलाओ आनि साक्षी
सीता कहिलेन, राम, लज्जा बोध करि ※ बटवृक्ष आनि साक्षी बलाओ दैत्यारि
बटवृक्ष आसि कहे प्रभु रघुवर ※ साक्षी दिब, यदि मोर जुड़ाओ अन्तर
राम-सीता युग्म-रूप हेरिब नयने ※ तबे आमि साक्ष्य दिब तव विद्यमाने
बृक्ष कथा शुनि सीता आनन्दित मन ※ रामेर बामेते सीता दाँड़ान तखन
हेरिया युगल रूप निजेर नयाने ※ जोड़ हस्ते, बले बृक्ष राम-विद्यमाने
तोमार चरणे प्रभु एइ निवेदन ※ 'चिन्तामणि' नाम तुमि धर कि कारण
दयामय-नाम तव सर्व्वलोके कय ※ पतिते तराओ ताइ नाम 'दयामय'

---

१ साक्षी, गवाह २ जल-प्रवाह प्रगट न होकर क्षीण रहे ३ बरगद ४ अभिलाषा।

§ विष्णुप्रिया तुलसी ने सौत सीता के प्रति ईर्ष्या के कारण और ब्राह्मण तथा फल्गु नदी ने राम के द्वारा पुनः पिण्डदान होने पर क्रमशः पुनः दान-दक्षिणा और पिण्ड पाने के लोभ में झूठी गवाही दी।

जड़ जंगम जे चेतन नाना * घट-घट नित व्यापत भगवाना
चिन्तामणि निमग्न जग-चिन्ता * किमि पितु-पिण्ड अबुध भगवन्ता
महिमा नाम वृथा इमि होई * कहै न 'चिन्तामणि' जग कोई
निजहिं भूलि संसार-सनेही * परे भरम लहि मानव-देही

दो० तुलसी, सरिता फल्गु दोउ, विप्र अनुसरन कीन।
लोभ-बिबस बानी असत, हे प्रभु! साखी दीन ।। ७२ ।।

मिथ्या कथन रुचिर जनि स्वामी * उचित प्रवञ्च[1] न अन्तर्यामी
शत-शत कोटि जनम तप करई * समता-सतवादी जन लहई
सिकता-पिण्ड[2] गहे सिय हाता * निजकर पुलकि लीन नरनाथा
सो करि पान, तृप्त, सुखलाने * मम नैननतर[3] स्वर्ग पयाने

छं० तुलसी, द्विज, फल्गुनदी-विपरीत, सुनी बट की प्रभु सत्य-कथा।
अश्वत्थ सदा चिरजीव अमर, तव बानि नसवानि सीय-ब्यथा ।।
अति जेठ जलाक म' सीतलता, अरु माह म' सीत अलोप[4] तथा।
सुनि सीय असीस सियापति की, सिय बोलति, बानि न मोर वृथा।।
पतझार न पल्लव-हीन[5] कबौं, तरु-डारिन पात नये लहरैं।
अति मञ्जुल सीतल छाँह सदा, श्रम-ताप हरैं, मन-मोद भरैं ।।

स्थावर-जंगम आदि यत जीवगण * सर्व्वजीवे सर्व्वक्षण आछ नारायण
संसारेर चिन्ता कर नाम 'चिन्तामणि' * सीता पिण्ड दिया किना, ना जान आपनि
चिन्तामणि नामे तव कलंक रहिल * आजि हैते चिन्तामणि-नामटि डुबिल
चिन्ताय व्यकुल ह'ये भुलेछ आपना * मायाय मानुष हैले, किछु नाहि जाना
वट वृक्ष कहे, शुन कमललोचन * मिथ्या साक्ष्य इहारा दिलेक सर्व्वजन
धनलोभे मिथ्या कथा कहिल ब्राह्मण * ब्राह्मणेर अनुरोधे अन्य दुइजन
आमि यदि मिथ्या बलि, एके हवे आर * अंतर्य्यामी नारायणे फाँकि देवा भार
शतकोटि जन्म तप करे जेइ जन * सत्यवादि-सम किन्तु ना हय कखन
बालिपिण्ड ल'ये छिला सीता डान हाथे * आपनि लइला ताहा राजा दशरथे
खाइया सीतार पिण्ड प्रफुल्ल अन्तरे * देखिते देखिते राजा गेला स्वर्गपुरे
शुनिया वृक्षेर कथा कन् रघुवर * चिरजीवी हओ वट, अक्षय अमर
पिण्डदान करि मने भावेन जानकी * बारे बारे सबाकारे करियाछि साक्षी
तुष्ट ह'ये वर दिव तोमाय केवल * शीतकाले उष्ण हवे, ग्रीष्मते शीतल
पुनर्व्वार सीता तारे दिला एइ वर * डाले डाले हवे नव पल्लव विस्तर
मनोहर सुशीतल रवे अनिबार * निष्पत्र ना हबे शाखा कदापि तोमार

---

१ छल २ वालू के पिण्ड ३ मेरे देखते-देखते ४ लुप्त ५ विना पत्तों के।

गदिया[1] बहु पात-जटान लदे, तहँ नित्य बिहंग[2] बिहार करैं ।
तरु-पुंगव हे! तव-संग लहे, सब क्लेश बटोहिन[3] के निवरैं ॥

पुनि - पुनि तरुहिं असीसत जाई * रामप्रिया सिय दीन बिदाई
लखन - राम - सिय पर्व्वत वासू * गयाधाम कछु कथा प्रकासू

गया-माहात्म्य

चित्रकूट सानुज - सिय रामा * निवसि, चले पुनि गया सुधामा
वरनहु कथा पुरातन, नाथा * उत्पति - धाम सुपावन गाथा
पिण्ड पितर पठवत प्रभु - धामा * श्रवन लालसा कथा ललामा
सुनु सिय! अति प्राचीन कहानी * दनुज एक दुर्जय अभिमानी
सुरपति-रन सुरगनन पछारी * प्रबल 'गयासुर' अति बलधारी
अश्वमेध, करि जज्ञ अनन्ता * भयेउ अमर अक्षय बलवंता
कँहु न गिनत जग, तन विकराला * जीते अखिल देव - दिक्पाला
सुरगन बिकल बिरञ्चहिं टेरी * 'गति न', कहत दुर्गति सब केरी
असुर अतंक, न कहुँ निस्तारा * करहु प्रजापति! सबन उबारा[4]

सुशीतल राखिबे, जे जाबे तव तले * सर्व्वदा आनन्दे रबे निजपत्र - फले
एइ रूपे बटवृक्षे आशीर्व्वाद करि * बिदाय दिलेन तारे रामेर सुन्दरी
पर्व्वत उपरे रन् राम लक्ष्मण सीता * एखन कहिब किछु गयाधाम कथा
कृत्तिवास पण्डितेर कथा सुधाभाण्ड * परम पवित्र एइ अयोध्यार काण्ड

गया-माहात्म्य

चित्रकूट छाड़ि राम, सीता ओ लक्ष्मण * गयाधामे गिया शेषे दिला दरशन
सीता बले, शुन प्रभु करि निवेदन * पूर्व्वकथा कह आमि करिब श्रवण
कि निमित्त गयाधाम हइल एखाने * इथे पिण्ड दिले जाय बैकुण्ठभुवने
राम वले शुन सीता आमार बचन * पूर्व्वकथा कहि आमि ताहे देह मन
पूर्व्वे हेथा छिल दैत्य गयासुर नाम * तार सने करे इन्द्र भीषण संग्राम
गयासुर दैत्य तार महाशक्ति छिल * इन्द्रादि यतेक देव, सबारे जिनिल
अश्वमेध आदि करि नाना यज्ञ करे * अक्षय अमर ह'ये रहे कलेवरे
प्रकाण्ड शरीर तार कारेओ ना माने * एके एके जिनिल यतेक देवगणे
तार भये देवगण तिष्ठिते ना पारे * ब्रह्मार निकटे गिया सवे स्वत करे
गोसाइँ, असुर भये नाहि अव्याहति * एइबार रक्षा कर ओहे प्रजापति

---

१ बरगद के फल २ पक्षी ३ यात्रियों ४ उद्धार।

कातर देव - समूह निहारी * चले बिरञ्चि सहित त्रिपुरारी

दो० विधि-महेस रन विषम करि, सक न जीति संग्राम ।
कह बिरञ्चि, तुम सम, दनुज! जग न पुण्य-बल-धाम ॥ ७३ ॥

प्रबल दनुजपति! तव तन थापी[1] * रचना - यज्ञ - कामना व्यापी
कहेउ गयासुर, शिव-चतुरानन * दोउ मम तन ऊपर लहि आसन
करहु याग पुरवहु निज आसा * तबहुँ न सम्भव मोर विनासा
कहि, उतान[2] भुइँ परा सुरारी[3] * शिव-विरञ्चि तहँ यज्ञ सवाँरी
गिरि-पाषान अवनि बहु भाँती * देवन सकल धरेउ तेहि छाती
वेदी रची दनुजपति - गाता[4] * करत याग जहँ शंभु-विधाता[5]
सुरगन अखिल, विरञ्चि महेश्वर * सुरन सहित सुर-अधिप पुरन्दर[6]
तन विराट् ! तिन भार अपारा * गय-तन अतुल बोझ विस्तारा
करहिं जज्ञ पशुपति-चतुरानन[5] * तहँ प्रतच्छ[7] भइ प्रगट हुतासन[8]
कलसन घृत आहुति लहि आगी * नभ लौं लपट प्रज्वलित लागी
तन - वेदी जहँ यज्ञ प्रकासा * तबहुँ गयासुर - अंग न त्रासा
दनुज न लेस, असेस पराना * पूरन याग, सुरन अनुमाना

समस्त देवेर ब्रह्मा देखिया काकूति * आपनि आइला संगे ल'ये पशुपति
करिला भीषण रण दोंहे तारसने * तथापि जिनिते नारे ब्रह्मा-त्रिलोचने
ब्रह्मा बले दैत्य, तुमि वड़ वलवान * तोमार समान केह नाहि पुण्यवान
सेइ हेतु गयासुर, शुनह वचन * तोमार उपर यज्ञ करिव एखन
शुनिया ब्रह्मार कथा कहे गयासुरे * दोंहे मिलि यज्ञ कर आमार उपरे
आमार उपर यज्ञ कर दुइ जन * तथापि इहाते मोर ना हवे मरण
चित् ह'ये गयासुर पड़िल सेखाने * वसिला करिते यज्ञ ब्रह्मा त्रिलोचने
पृथिवीते पाषाण - पर्व्वत यत छिल * गयासुर उपरे सकलि चापाइल
यज्ञ सज्जा आनि देय यत देवगण * आरम्भिला यज्ञ तवे ब्रह्मा त्रिलोचन
यतेक देवता सह ब्रह्मा - महेश्वर * एकमन ह'ये सबे हैला गुरुभर
विराट् मूरति धरि गयेर उपर * वसिलेन देवगण - सह पुरन्दर
अग्नि ज्वालि यज्ञ करे ब्रह्मा, त्रिलोचन * मूर्त्तिमान ह'ये अग्नि उठे सेइ क्षण
अग्निमध्ये घृत ढाले कलसे-कलसे * प्रदीप्त हइया अग्नि अम्बर परशे
असुर उपरे यज्ञ यद्यपि करिल * तथापि असुर ताहे भय ना पाइल
सबे बले गयासुर परान - त्यजिल * यज्ञ सांग करि फोंटा सकले परिल

१ शरीर पर वेदी स्थापित करके २ चित लेट गया ३ दैत्य गयासुर ४ दैत्य के शरीर पर ५ शिव और ब्रह्मा ६ इन्द्र ७ प्रत्यक्ष ८ यज्ञ-अग्नि ।

उठेंउ झारि, तन विकट सम्हारा * गिरे दूरि तरु - उपल - पहारा[1]
मम विनास देवन - बस नाहीं * सुनि सभीत सुरगन मन माहीं
सुर - संकट लखि कृपानिधाना * चलि रन घोर असुर सन ठाना
विक्रम - विपुल - गयासुर देखी * श्रीपति - उर सन्तोष बिसेषी

दो० दनुज-पछारेउ, ताहि सिर, हरि पद-पंकज दीन ।
पिण्ड विष्णु-पद पितर लहि, होत परम-पद लीन ।।
गया-धाम पावन कथा, अवधकाण्ड इति गान ।
कृत्तिवास अनुरूप पुनि, अथ अरण्य - सोपान ।। ७४ ।।

।। अयोध्याकाण्ड समाप्त ।।

गयासुर बले सबे यज्ञ सांग हैल * गाल झाड़ा दिय वीर तखनि उठिल
पाहाड़ पर्वत वृक्ष पड़े वहु दूरे * देखि यत देवगण पड़िव फाँफरे
गयासुर बले, शुन ओहे देवगण * तोमादेर हाते मोर ना हबे मरण
एतेक शुनिया देवगणे लागे त्रास * देवगण - त्रास देखि आसि श्रीनिवास
गयासुर सह आरम्भिला घोर रण * गयासुर - पराक्रमे तुष्ट नारायण
पराजिया गयासुरे देव दामोदर * स्थापिलेन पादपद्म तार शिरोपर
विष्णुपदे गय-शिरे जेवा पिण्ड येय * पितृगण मुक्त ह'ये मोक्षधामे जाय
सेइ हेतु गयाधाम नामिते प्रकाश * समाप्त अयोध्याकाण्ड, कहे कृत्तिवास

।। अयोध्याकाण्ड समाप्त ।।

---

१ वृक्ष-पत्थर-पहाड़ ।

* श्रीगणेशाय नमः

अरण्यकाण्ड

श्लोक—मूलं धर्म्मतरोर्विवेकजलधेः पूर्णेन्दुमानन्ददं
वैराग्याम्बुजभास्करं कलुषहं ध्वान्तापहं तापहम् ।
मोहाम्भोधरपुञ्ज - पाटनविधौ भीमानिलं शङ्करं
वन्दे ब्रह्मकुलं कलङ्कशमनं श्रीरामचन्द्रप्रियम् ॥ १ ॥
सान्द्रानन्द - पयोदशोभनतनुं पीताम्बरं तारकं
पाणौ लग्नशरासनं कटिलसत्तूणीरभारं वरम् ।
राजीवायतलोचनं धृतजटाजूटेन संशोभितं
सीतालक्ष्मणसंयुतं पथिगतं श्रीरामचन्द्रं भजे ॥ २ ॥

चित्रकूट में श्रीरामादि का निवास

दो० अवधपुरी निवसत भरत, विनय-सील-गुन-धाम ।
चित्रकूट गिरि रमत उत, सहित लखन-सिय राम ॥
सोइ पावन गिरि बसत पुनि, बहु तपसी-मुनि-वृन्द ।
भल-अनभल, सुख-दुख सदा लखैं राम-मुख-चन्द ॥

दिवस एक, श्रवनन[1] कछु कहहीं * मुनि, लखि राम, मौन ह्वै रहहीं
निरखि मुनिन पूछत रघुबीरा * कहि निज सोच ? हरौ मम पीरा
सुख-दुख बिलग[2] न, संग बसेरा * संकट परे अहित सब केरा
हे मुनि, जो विपत्ति कहुँ हेरी * सुनत निवारन करौं, न देरी

चित्रकूटे श्रीरामादिर अवस्थान ओ राक्षसभये मुनिगणेर प्रस्थान

करिलेन अयोध्याय भरत गमन * चित्रकूट पर्व्वते रहेन तिन जन
चित्रकूट पर्व्वते अनेक मुनि वैसे * भाल-मन्द जखन जे, रामेरे जिज्ञासे
एक दिन मुनिगण करे कानाकानि * जिज्ञासा करेन राम धनुर्व्वाण पाणि
कह-कह मुनिगण, कि करे मंत्रणा * आमारे ना कहि केन बाड़ाओ यंत्रणा
आमरा सकले करि एकत्र वसति * एकेर छतिते हय सबाकार क्षति
यदि कोन् विपद् ह'येछे उपस्थित * आमारे जानाओ, आमि करिब विहित

1 कान में 2 अलग ।

राम-वचन मुनिगन सकुचाने ❋ वृद्ध एक बोलत रस-साने
बरनउँ व्यथा सकल रघुबीरा ❋ जेहि कारन मुनि-वृन्द अधीरा
खर-दूषन पुनि, अनुज-दशानन ❋ दुष्ट दनुज, तिन सुभट हजारन
चहुँदिसि यातुधान[1] बन फिरहीं ❋ उपवन प्रविसि उपद्रव करहीं
यज्ञ अरंभ-गंध खल पाई ❋ करत ध्वंस, द्विज चलत बराई
तोरत भाण्ड, मूल फल खाहीं ❋ द्विजगन भय-बस कुटिन लुकाहीं
तजि वन इतर[2] तपोवन गमना ❋ मुनि-मत गोप,[3] राम! मैं बरना
निर्जन वन निवसउ कँहि रूपा ❋ सहित बन्धु, तिय लिये सुरूपा
वन जहँ ऋषि-मुनि नजर न कोई ❋ चहुँ दल-दनुज! गुजर किमि होई
विक्रम विपुल अतुल बल-धामा ❋ तदपि निवास दुसह वन रामा
तजि वन अन्य तपोवन जाहीं ❋ रघुपति-दरस सुलभ तहँ नाहीं
जेहि जहँ स्वजन सुठौर लखाने ❋ सतिय वृन्द-मुनि वेगि पयाने

दो० राम निहारत सघन वन, मुनि-विहीन जन-हीन।
सोचत पुनि रघुनाथ जिमि, कृत्तिवास रचि दीन ॥१॥

राम-वाक्ये मुनिगण पड़िलेन लाजे ❋ वृद्ध एक मुनि उठि बले तार माझे
ये मंत्रणा करिनेछि मोरा रघुवर ❋ ताहार वृत्तांत कहि तोमार गोचर
रावणेर दुइ-भाइ दुष्ट निशाचर ❋ तार मध्ये ज्येष्ठ खर, दूषण अपर
ताहार सामन्तगण चतुर्द्दिके भ्रमे ❋ कत उपद्रव करे प्रवेशि आश्रमे
यज्ञ आरंभन मात्र आसिया निकटे ❋ यज्ञ नष्ट करे, द्विज पलाय संकटे
राक्षसेर डरे लुकाइया घरे आसि ❋ फलमूल काड़ि खाय भांगेय कलसी
एइ वन छाड़िया जाइवे अन्य वन ❋ कानाकानि करिलाम एइ से कारन
छाड़े मुनिगण यदि, शून्य हवे वन ❋ शून्य वने केमने रहिवे तिन जन
सीता अति रूपवती, एइ वन माझे ❋ केमने राखिबा राम, राक्षस-समाजे
विक्रमे विशाल तुमि जानि मोरा मने ❋ कत संवरिया राम, थाकिवे कानने
आमरा ए वन छाँड़ि अन्य वने जाइ ❋ तोमार सहित आर देखा हवे नाइ
स्त्री-पुरुषे मुनिगण चलेन सत्वर ❋ यार यथा छिल स्थान कुटुम्बेर घर
उठि गेल मुनिगण शून्य देखा जाय ❋ श्रीराम भावेन तवे ताहार उपाय
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पाञ्चाली ❋ गाइल अरण्य-काण्डे प्रथम शिकलि

---

१ राक्षस २ अन्य ३ मन की बात।

अत्रि-आश्रम में अनुसूया-सीता-मिलन

जो कहुँ भरत लेन पुनि आवैं ❋ किमि तिन वचन वृथा करि पावैं
चित्रकूट सों अवध न दूरी ❋ भरत - भक्ति मोरे प्रति पूरी[1]
मत विचारि मन स्थिर कीन्हा ❋ दच्छिन दिसि रघुपति पग दीन्हा
श्रम करि चलत चले रघुराई ❋ अत्रि - तपोवन दरस सुहाई
जहँ मुनि अत्रि-धाम अति पावन ❋ सतिय - बन्धु[2] बन्देउ मनभावन
निरखि राम, मुनि आनँद-साने ❋ पाद - अर्घ्य - आसन सनमाने
मुनि निज तियहिं समर्पेउ सीता ❋ राखहु तनया - सरिस सप्रीता
करुणा धौं श्रद्धा तन धारी ❋ सोचत सिय, मनु स्वयं पधारी
धवल वसन सब धवलित वेसा ❋ आजीवन तप पकए केसा
कै[3] तपलीन तपस्या रूपा ❋ गायत्री जग - बन्द्य अनूपा
युगुल पाणि प्रणवति वैदेही ❋ मुनि-वनिता मुदि आशिष देही
पुनि सीतहिं आसन सनमानी ❋ उर प्रफुल्ल बोलीं मधुबानी
नृपनन्दिनी नृपति - गृह आई ❋ दोउ कुल, प्रभा-शील-गुन छाई
तजि सुख विपुल भई वन-गामिनि ❋ सुफल राम-तप लहि सिय भामिनि

अत्रि-आश्रमे श्रीरामगमन एवं अनुसूया-निकटे सीतार परिचय

आमा निते भरत आइले पुनर्व्वार ❋ केमने अन्यथा करि वचन ताहार
चित्रकूट अयोध्या नहे त बहु दूर ❋ भरत भ्रातार भक्ति आमाते प्रचुर
रघुनाथ एमत चिन्तिया मने-मने ❋ चलिलेन चित्रकूट छाड़िया दक्षिणे
कत दूर जाय ताँर करि परिश्रम ❋ सम्मुखे देखेन अत्रि मुनिर आश्रम
प्रवेशिया तिन जन पुण्य - तपोवन ❋ बन्दना करेन अत्रि मुनिर चरण
रामे देखि मुनिवर उठिया यतने ❋ पाद्य अर्घ्य दिया ताँर बसान आसने
आपनार पत्नी ठाँइ समर्पिया सीता ❋ बलेन पालह येन आपन दुहिता
देखि मुनि पत्नीके भावेन मने सीता ❋ मूर्तिमति करुणा कि श्रद्धा उपस्थिता
शुक्ल वस्त्र परिधान शुक्ल सर्व्ववेश ❋ करिते - करिते तप पाकियाछे केश
तपस्या धरिया मूर्ति करेन तपस्या ❋ ज्ञान हय गायत्री कि सवार नमस्या
कृताञ्जलि नमस्कार करिलेन सीता ❋ आशीर्व्वाद करिलेन अत्रिर बनिता
मुनिपत्नी बसाइया सम्मुखे सीतारे ❋ कहेन मधुर वाक्य प्रफुल्ल अन्तरे
राजकुले जन्मिया पड़िला राजकुले ❋ दुइ कुल उज्ज्वल करिला गुणे शीले
ए सब सम्पदा छाड़ि पति संगे जाय ❋ हेन स्त्री पाइला राम बहु तपस्याय

---

१ पूर्ण २ सीता-लक्ष्मण सहित ३ या तो।

कह सिय, मातु! न सम्पद-हेतू ❋ मम निधि दूर्व्वादल रघुकेतू
पति बिन नारि बृथा सुख-भोगू ❋ पति तजि जग न अन्य धन-जोगू

दो० सकल ज्ञान-गुनधाम जे, मम जितेन्द्रिय नाथ।
कस न सेयि तिन चरन रज, जननी! होउँ सनाथ॥ २॥

धन-जन-सम्पद, देवि! न कामा ❋ चहौं असीस रमन-पद-रामा
अनुसूया लखि निज अनुसारी ❋ तृप्त दैन-सिय सुनि सुखकारी
सिय उर लाइ कीन सत्कारू ❋ भूषन दिव्य विविध उपहारू
तव सत्-सील मुग्ध मैं सीता ❋ निज मुख वरनउ कथा-अतीता[1]
सुनु भगवती! कहति वैदेही ❋ जनम-कथा मम अद्भुत एही
नभ उर्वसी उड़त लखि चीरा ❋ हर-जोतत-नृप जनक अधीरा
जनक-रेत[2] गिरि धरनि अनूपा ❋ जनम दीन छबि सुता सुरूपा
दिव्य अयोनि जन्म इमि पावा ❋ हर[3] तजि भूप मोहिं उर लावा
निज तनया सम मन अनुमानी ❋ तौ लौं सुरन कीन नभबानी
जन्म - अयोनि रूपसी काया ❋ हे नृप! तव औरस यह जाया
सीता-जनम[4] नाम धरु सीता ❋ भूप कुतूहल सुनेउ सप्रीता
दुखी-दीन-द्विज दिय बहु दाना ❋ नृप अर्पेउ मोहिं रानि-प्रधाना[5]

सीता कहिलेन मा सम्पदे किवा काम ❋ सकल सम्पद मम दूर्व्वादल श्याम
स्वामी विना स्त्रीलोकेर कार्य्ये किवा धने ❋ अन्य धने कि करिबे पतिर बिहने
जितेन्द्रिय प्रभु मम सर्व्व-गुण-गुणी ❋ हेन पति सेवा करि भाग्यये न मानि
धन जन सम्पद ना चाहि भगवति ❋ आशीर्व्वाद कर, येन रामे थाके मति
शुनिया सीतार वाक्य तुष्ट मुनिदारा ❋ आपनार येमन तिनि, सीता सेइ धारा।
समादरे सीतारे दिलेन आलिगन ❋ दिबा अलंकार आर बहुमूल्य धन
तुष्टा ह'ये सीतारे कहेन भगवति ❋ तव पूर्व्व वृत्तांत कह गो सीते सती
जानकी बलेन देवी कर अवधान ❋ आमार जन्मेर कथा अपूर्व्व आख्यान
एक दिन उर्व्वशी जाइते वस्त्र उड़े ❋ ताहा देखि जनक राजार वीर्य्य पड़े
सेइ वीर्य्ये जन्म मोर हइल-भूमिते ❋ उठिल आमार तनु लांगल चषिते
अयोनि-सम्भवा आमि, जन्म महीतले ❋ लांगल छाड़िया राजा मोरे निल कोले
निज कन्या वलि राजा मने अनुमानि ❋ हेन काले आकाशे हइल देववाणी
देवगण डाकि बले, जनक भूपति ❋ जन्मिल तोमार वीर्य्ये कन्या रूपवती
अयोनि-सम्भवा एइ तोमार दुहिता ❋ लांगलेर मुखे जन्म, नाम राख सीता
एतेक शुनिया राजा हरषित मन ❋ दीन द्विज दुःखीरे दिलेन बहुधन

१ वीती हुई २ वीर्य ३ हल ४ हल से जन्म होने के कारण ५ पटरानी को।

नेह पली सब विधि बहु नीके * दिन-दिन बढ़हुँ अंक जननी के
सो लखि नृप-मन कौतुक व्यापा * भट, जो शंभु चढ़ावै चापा
सोइ कर ग्रहन करै वैदेही * प्रकट भुवन प्रन दारुन एही
नृप - नन्दन तेरह लख वीरा * लखि पिनाक[1] हिय सकल अधीरा

दो० बिन भेटे पितु, विकल मन, ते सब चले पराय ।
मम-विवाह-प्रन विफल लखि, व्यथा-भूप अधिकाय ।। ३ ।।

छं० तहँ सानुज राम तबै प्रगटे, विहँसे धनु हेरि कै टेरि कह्यो ।
जनि बेर, धरौं गुन[2] चाप अभै, कर वाम पिनाकहिं राम गह्यौ।।
छुवतै धनुभंग, सबै लखि दंग, तिलोक झनाझन सोर छयो ।
छिति-स्वर्ग-पताल मची भुविचाल चहूँ दिसि कम्प कराल भयो।।

सिर लट जासु उसिर गभुवारी * विक्रम भुवन कुतूहल भारी
मोहिं पद-राम[3] देन पितु-वानी[4] * पितु-सूने[5] मन राम न मानी
सुत-बिवाह सुनि अमित उछाहू * आये साजि अवध - नरनाहू
यहि विधि मैं पाये रघुनन्दन * लखन-उर्मिला पुनि गठबन्धन
युगुल भतीजिन भूप विदेहा * भरत-रिपुघ्नहिं दीन स-नेहा

प्रधान देवीर ठाँइ दिलेन आमारे * आमारे पालेन देवी विविध प्रकारे
दिने-दिने वाड़ि आमि मायेर पालने * आमा देखि जनक चिन्तेन मने मने
जेइ जन गुणे दिवे शिवेर धनुके * ताँरे समर्पिव सीता परम कौतुके
दारुण प्रतिज्ञा एइ भुवने प्रचार * तेर लक्ष वर एल राजार कुमार
धनुक देखिया सवाकार प्रान काँपे * ना सम्भाषि पितारे पलाय मनस्तापे
प्रतिज्ञा करिया आगे ना पान भाविया * केमने सम्पन्न हवे जानकीर विया
हेनकाले उपस्थित श्रीराम - लक्ष्मण * धनुक देखिया हास्य करेन तखन
धनुकेते गुण दिते सर्व्वलोके वले * धनुखान धरि राम वाम हाते तोले
गुण-योग करिते से धनुखान भांगे * सवे स्तब्ध तार शव्द त्रिभुवने लागे
धनुकेर शव्दे येन वड़िल झंझना * स्वर्ग-मर्त्त-पाताले काँपिल सर्व्वजना
शिरे पंचझूटि राम विक्रमे विस्तर * चूड़ा कर्णवेध हय लोके चमत्कार
विवाह करिते पिता वलिल आमारे * ना करेन स्वीकार पितार अगोचरे
राज्यसह दशरथ आसिया सम्भाषे * रामेर विवाह देन परम सन्तोषे
श्रीराम करिलेन आमार पाणिग्रह * लक्ष्मणेर दार-कर्म ऊर्मिलार सह
कुशध्वज खुड़ार जे दुइ कन्या छिल * भरत शत्रुघ्न दोंहे विवाह करिल

१ शिव-धनुष २ धनुष की डोरी, प्रत्यंचा ३ राम के चरणों में ४ जनक का कथन ५ दशरथ की अनुपस्थिति में ।

पूरुब कथा, मातु ! मैं वरना * जेहि बिधि लहे,राम प्रभु-चरना
सिय-वृतांत मुनि-तियहिं सुहावा * सेंदुर भाल सुहाग चढ़ावा
कण्ठ हार-मणि, भुज भुजबंधन * कुण्डल श्रवन, हैंस कर-कंकन
नकबेसर गजमुक्ता भाई * पदपंकज बिछुवन छबि छाई
गौर-वरन श्री-वसन अनूपा * मुनितिय साजेउ सिया सुरूपा
संध्या विगत, निसा पुनि आई * सीतापति - पद सिया सुहाई
लखि सिय, उमा-रमा सकुचाहीं * समता रूप चराचर नाहीं
सिय - सोभा - विमुग्ध रघुराई * मुनि - उपवन सुखरैन बिताई

रामादिक का दण्डकारण्य-दर्शन

करि अस्नान भोर, पुनि तर्पन * मुनि-पद सीस धरे तीनिउ जन
अत्रि महामुनि आशिष दीन्हा * समुचित सीख राम बहु लीन्हा
सुनहु तात ! यहु निसिचर-देसू * दनुज त्रास चहुँ विविधि कलेसू

दो० कछु आगे, रमणीक अति, सुवन ! दण्डकारण्य ।
तहँ निवास चलि कीजिए, उपवन सुखद सुरम्य ॥ ४ ॥

मुनि-पद बन्दि चले अवधेसू * दण्डक वन विच कीन प्रवेसू
आगे राम, लखन अनुसारी * मध्य सोह छबि जनकदुलारी

भगवति - पूर्व्वकथा एइ कहिलाम * हेनमते मिलिलेन मम स्वामी राम
एत यदि सीतादेवी कहेन काहिनी * परितुष्ट हइलेन मुनिर गृहिणी
ब्राह्मणी सीतार भाले दिलेन सिन्दूर * कण्ठे मणिमय हार वाहुते केयूर
कर्णेते कुण्डल करे कञ्चन - कंकण * नूपुर शोभित हय कमल - चरण
नासाय बेसर देन गजमुक्ता ताय * वस्त्र पटु अधिक शोभित गोर-गाय
प्रदोष हइल गत प्रवेशे रजनी * रामेर निकटे जाय श्रीराम-रमणी
उमा-रमा नाहि पान सीतार उपमा * चराचरे जनक - दुहिता निरुपमा
देखिया सीतार रूप हृष्ट रघुमणि * मुनिर आश्रमे सुखे वञ्चेन रजनी

श्रीरामादिर दण्डकारण्य-दर्शन

प्रभाते करिया स्नान आर तर्पण * तिनजन वन्दिलेन मुनिर चरण
आशीर्व्वाद करिले अत्रि महामुनि * कहिलेन उपयुक्त उपदेश - वाणी
शुन राम, राक्षस-प्रधान एइ देश * सदा उपद्रव करे वहु देय क्लेश
अग्रेते दण्डकारण्य अतिरम्य स्थान * तथा गिया रघुवीर कर अवस्थान
मुनिर चरणे राम करिया प्रणति * दण्डक कानन मध्ये करिलेन गति
आगे जान रघुनाथ पश्चात् लक्ष्मण * जनक-तनया मध्ये कि शोभ तखन

सुरभित फल - प्रसून बहुरंगा ※ मुग्ध ! मोर-ध्वनि, गुञ्जत भृङ्गा
नाना खग मधु कलरव करहीं ※ सरन[1] प्रचुर[2] पंकज[3] मन हरहीं
रामहिं लखि मुनिगन बनबासी ※ अस्तुति करहिं जानि अविनासी
राजभोग बनबास समाना ※ घट-घट तुम व्यापक भगवाना
सुधा-सलिल-फल राम अहारा ※ मधुसेवन श्रम-पन्थ निवारा[4]
देखहिं दण्डक - दृश्य सुहावन ※ चले सतिय सानुज मनभावन
लखन, सिया पुनि आगे रामा ※ जहँ-तहँ छवि निरखत अभिरामा

विराध राक्षस-वध

दुर्जय दनुज विकट विकराला ※ कौतुक प्रकट भयो तेहि काला
हिय कठोर शोनित[5] सम नयना ※ हनत वन्य-पसु मानत भय ना
गिरि सम गात अजेय अनन्ता ※ रक्तिम[6] मुख मनु अगिनि ज्वलंता
सघन जटा शिर, तन अति विस्तर ※ चमकत शिराजाल लम्बोदर
सिंहनाद, घन - गर्जन ! भारी ※ मूर्ति 'विराध' दनुज भयकारी
सियहिं दाबि दानव नभचारी ※ करत तर्ज-गर्जन बहु भारी
सिय-भच्छन, मुख दनुज पसारा ※ लखि रामहिं कटु बैन उचारा

फल पुष्प देखन गन्धेते आमोदित ※ मयूरेर केकाध्वनि भ्रमरेर गीत
नाना पक्षी कलरव शुनिते मधुर ※ सरोवरे कत शत कमल प्रचुर
वन - मध्ये अनेक मुनिर निवसति ※ श्रीरामेरे देखिया हरिषे करे स्तुति
राज्ये थाक, वने थाक, तोमार समान ※ यथा तथा थाक राम, तुमि भगवान
रम्य जल रम्य फल मधुर सुस्वाद ※ आहार करिया दूर गेल अवसाद
देखिते हइल इच्छा दण्डक कानन ※ तिन जन मनःसुखे करेन भ्रमण
आगे राम मध्ये सीता पश्चात् लक्ष्मण ※ नाना स्थले कौतुक करेन निरीक्षण

विराध राक्षस-वध

हेनकाले दुर्ज्जय राक्षस आचम्वित ※ विकट आकारेते सम्मुखे उपस्थित
रांगा दुइ-आंखि तार खोंखर हृदय ※ वनजन्तु धरि मारे, कारे नाहि भय
दुर्जय शरीर धरे पर्व्वत समान ※ ज्वलंत आगुन येन रांगा मुख खान
शिरे कटा दीर्घ जटा, दीर्घ सर्व्वकाय ※ लम्बोदर अस्थिसार, शिरा गणा जाय
मेघेर गर्ज्जन न्याय छाड़े सिंहनाद ※ महाभयंकर मूर्त्ति राक्षस विराध
सीतार राक्षस गिया लइलेक कक्षे ※ तर्ज्जन गर्ज्जन करे थाकि अन्तरीक्षे
सीतार खाइते चाय मेलिया बदन ※ श्रीरामे कहये कटु करिया तर्ज्जन

---

१ तालावों में २ बहुत अधिक ३ कमल ४ थकन मिटाई ५ रक्त ६ लाल।

दो० तापस तन, बन-बन फिरत, संग सलोनी नारि।
बनबासी मुनिगन भ्रमित-मोहित रूप निहारि ॥ ५ ॥

सबन अहार करौं यहि लागे * तव परिचय, किमि? कहु हतभागे!
क्षत्रिय-कुल रघुपति मम नामा * लखन अनुज, तिय सिया ललामा
पुनि विरूप तन संसयकारी * को तुम वन भरमत वनचारी?
कहेउ दनुज, बकवाद न काजू * भच्छहुँ सबन, उबार न आजू
नाम 'विराध' निरंकुस[1] बासू * 'कालनाम' पितु जगत-प्रकासू
तन अभेद्य वर पाय विधाता * निर्भय मुनिन असंख्य निपाता
कहेउ राम सुनि असुर-प्रलापा * मन मन, लखन! कुसंसय व्यापा
विपति विदेस, देस तजि एही * दुर्जय दनुज ग्रसयि वैदेही
कहेउ लखन, प्रभु! संसयहारी * हरहु क्लेश निसिचर संहारी
अनुज विनय, रघुबर बल पाये * असुर-हिये, सर सात चलाये
तन-विराध जनि बिशिख[2] प्रभावा * लौह-दण्ड शठ विपुल[3] चलावा
सो लखि, राम हनेउ सर एका * दण्ड विफल किय खण्ड अनेका
अस्त्र-विहीन दनुज-उर त्रासा * मायावी उड़ि चलेउ अकासा
दिव्य वाण तब प्रभु संधाना * गिरेउ धरनि यमदूत समाना

तपस्वीर वेशे राम, भ्रमिस् कानने * देखाइया कामिनी भुलास् मुनिगणे
तोदेर सवारे आजि करिब भक्षन * झाट परिचय देह, तोरा कोन् जन
श्रीराम बलेन आमि क्षत्रियकुमार * लक्ष्मण अनुज, जाया जानकी आमार
देखि हे तोमार केन विकृति आकृति * वनेते वेड़ाउ तुमि, हउ कोन जाति
राक्षस बलिल आमि ये हइ से हइ * सवार खाइब आजि छाड़िबार नइ
'विराध' आमार नाम थाकि यथा-तथा * कालनामे मम पिता विदित सर्व्वथा
कत मुनि वधिलाम विधातार वरे * अभेद्य शरीर मोर, भय करि कारे
लक्ष्मणेरे श्रीराम कहेन पेये भय * जानकीरे खाय बुझि राक्षस दुर्ज्जय
आसिलाम निजदेश छाड़िया विदेशे * सीतारे खाइल आजि दारुण राक्षशे
लक्ष्मण वलेन, दादा, ना भाविह ताप * राक्षसेरे मारिया घुचाउ मनस्ताप
लक्ष्मणेर वाक्येते रामेर वल बाड़े * मारिलेन सात वाण राम तार घाड़े
सात वान खाइया से किछु नाहि जाने * हाते छिल जाठागाछ मारिल सेक्षणे
ताहा देखि श्रीराम छाड़ेन एक वान * जाठागाछ तखनि हइल खान-खान
जाठागाछ काटा गेल, राक्षसेर त्रास * अस्त्र नाहि, निशाचर उठिल आकाश
छाड़ेन ऐषिक वाण दशरथ-सुत * पड़िल विराध, येन कृतान्तेर दूत

१ स्वच्छंद २ बाण ३ वृहत्।

आहत तर्जेसि सबेग सभीता * अवनि[1] अचेत गिरी तहँ सीता
गात 'विराध' रक्त चहुँ सरही * जोरि जुगुल कर अस्तुति करही

छं० शाप-ग्रस्त मम गात अधम, तव बान परसि जिन मुक्ति मिली।
शरण, नाथ! कीजिय सनाथ, हे प्रणतपाल रघुवंशवली॥
स्वामि जासु अभिराम राम, धनि! छबि-ललाम सो जनकलली।
चरन बन्दि गति लहौं, कहौं प्रभु! दनुज-देह जेहि भाँति मिली॥

दो० नाम 'किशोर'—कुबेर-चर, सवविधि मो-पर प्रीत।
तिन प्रकोप पाई कुगति, वरनउँ कथा अतीत॥ ६॥

लिये धनद[2] बहु संग नवेली * मदन-केलि बिहरत रँगरेली
तहँ दुर्दैव परेउँ मैं जाई * लखि मोहिं सबन ग्लानि अति छाई
शाप-कुबेर, असुर-तन पावौं * दण्डक-वन गति अधम बितावौं
पुनि करि दया कहेउ धननायक[2] * मुक्तिदैन-तव रघुपति-सायक
तव सर परसि आजु निस्तारा * लहि शव अगिनि, होहुँ भव-पारा
लखन-रचित करि चिता प्रवेसू * स्यन्दन[3] दिव्य, दिव्य तन-वेसू
गमनेउ स्वर्ग दरस-प्रभु पाई * कृत्तिवास कृत कथा सुहाई

आघाते कातर आछाड़िया फेले सीता * भूमिते पड़ेन सीता हइया मूर्च्छिता
वाणाघाते विराधेर देह रक्ते भासे * जोड़ हात करि जाय श्रीरामेर पाशे
जोड़ हाते राक्षस श्रीरामे करे स्तुति * तव वाण स्पर्श राम, पाइ अव्याहति
शापे मुक्त करिला आमार ए-शरीर * लइलाम शरण चरणे रघुवीर
धन्य-धन्य सीतादेवी, राम याँर पति * तोमा परशिया पाइ शापे अव्याहति
पूर्व्वकथा आमार शुनह रघुपति * कुवेरेर शापे मोर एहेन दुर्गति
किशोर आमार नाम, कुवेरेर चर * आमाते सर्व्वदा तुष्ट धनेर ईश्वर
एक दिन कुवेर लइया नारीगने * रंगस्थले केलि करे मातिया मदने
कर्म्मदोषे आमि तथा हइ उपनीत * आमारे देखिया तारा हइल लज्जित
कोपे शाप आमारे दिलेन धनेश्वर * दण्डककानने गिया हओ निशाचर
पश्चाते करुणा करि वलेन वचन * श्रीरामेर शरे हवे शाप-विमोचन
पाइलाम तव वाण-स्पर्श अव्याहति * मृत देह पोड़ाइले पाइव निष्कृति
लक्ष्मणेर उद्योगे राक्षस देह पुड़े * दिव्य देह धरिया से दिव्य रथे चड़े
राम दरशने चर गेल स्वर्गवास * रचिल अरण्यकाण्ड द्विज कृत्तिवास

१ पृथ्वी पर २ कुबेर ३ रथ।

शरभंग मुनि के आश्रम में राम-गमन

हेरि लखन-सिय-तन, रघुनन्दन * कहेउ, चलिय शरभंग-तपोवन
गोमति-पार[1] अलौकिक धामा * द्वादश योजन दूरि ललामा
तप-प्रभाव जिमि अनल ज्वलन्ता * तहाँ ख्याति-शरभंग अनन्ता
बन बसि रैन, भोर-छबि छाई * हित मुनि-दरस, चले रघुराई
तब लौं तहँ सुरनाथ सुहाए * मुनि शरभंग-मिलन हित आये
स्यन्दन दिव्य, दिव्य परिधाना * सुरपति सोह सहित सुर नाना
रथ झालरि मनि-मुक्ता रंगा[2] * चपल सारथी, पवन तुरंगा
नील-पीत चहुँ विविध पताका * दूर मञ्जु छबि रघुपति ताका
बिलमि, लखन ! निरखहु यहि देसू * मुनि-उपवन को करति प्रवेसू

दो० रथ तजि मुनि शरभंग पहँ, जाय नवायेउ माथ ।
पुनि आगम-मन्तव्य निज, विनय कीन सुरनाथ ॥ ७ ॥

मुनि ! तिहुँलोक-ईश प्रभु रामा * दरसन हित आये तव धामा
तुम सर्वज्ञ, न कथन प्रयोजन * दनुज-दलन प्रगटे रघुनन्दन
धरहु तीर मम यहु धनु-बाना * मिलहिं राम, तब करिय प्रदाना
पुनि सुरपति सुरपुरी सिधाये * मुनि समीप रघुपति इत आये

श्रीरामेर शरभंग मुनिर आश्रमे गमन

श्रीराम बलेन, चल जानकि लक्ष्मण * गोमतीर पारे शरभंग तपोवन
हेथा हैते सेइ स्थान द्वादश योजन * अद्‌भुत देखिबे से सुनिर तपोवन
तपेर प्रभावे येन ज्वलन्त अनल * शरभंग मुनिर विख्यात सेइ स्थल
सेइ दिन श्रीराम रहेन सेइ वने * प्रभाते उठिया जान मुनि-दरशने
हेन काले उपनीत तथा शचीनाथ * शरभंग मुनि सह करिते साक्षात्
रथोपरि पुरन्दर आसे शुद्धवेशे * देवगण वेष्टित ताँहार चारि पाशे
रथ शोभा करे मणि-मुक्तार झारा * वायुवेगे चले घोड़ा सारथिर त्वरा
चारि दिक् शोभे नील-पीत-पताकाय * दूरे थाकि रामचन्द्र देखिलेन ताँय
अनुजेरे बलेन, थाकह एइ क्षण * जानि आगे, आश्रमे प्रवेशे कोनजन
इन्द्र आसि मुनिवरे करि नमस्कार * निवेदन करिलेन कार्य्य आपनार
शुन मुनि रामरूपी त्रिलोकेर नाथ * आसिवेन तव सह करिते साक्षात्
राक्षस वधेर हेतु ताँर अवतार * आपनि त त्रिकालज्ञ जानाब कि आर
तवस्थाने राखिलाम एइ धनुर्व्वान * आइले ताहारे तुमि करिबा प्रदान
एत वलि स्वर्गपुरी जान पुरन्दर * प्रवेश करेन राम, यथा मुनिवर

---

१ गोदावरी के पार २ सौंदर्य ।

करि प्रणाम, सुनि-आशिष पावा ❋ प्रभु-अस्तुति मुनीस पुनि गावा
जोगिन - दुर्लभ दरस दिखाई ❋ कीन्ह सनाथ अनाथहिं आई
कुटी पुनीत कीन भगवन्ता ❋ लखि छबि लहौं धाम-श्रीकन्ता
अर्पन दिव्य इन्द्र - धनुबाना ❋ शत बत्सर-तप करि पुनि दाना
यहु तन जीर्ण विसर्जहुँ आजू ❋ धरेउँ सँजूति[1] दरस-प्रभु काजू
लखन सहित कछु रुकिय निमेसू[2] ❋ करउँ सम्मुख तव अगिनि प्रवेसू
मुनि रचि कुण्ड अनल दहकाई ❋ तासु लपट नभ-मण्डल छाई
कौतुक सानुज सतिय विलोका ❋ मुनि-साहस लखि विस्मित लोका
ऊर्ध्वतुण्ड, रट राम, न शेसू ❋ अगिन प्रदच्छिन, कुण्ड प्रवेसू
अनल जरेउ तन, जीव प्रकासा ❋ मनहुँ पुरुष उठि चलेउ अकासा
लहि प्रभु-दरस, गमन गोलोका ❋ सुफल पुण्य-मुनि, सबन विलोका
मानस मुग्ध कुतूहल करनी ❋ मुनि शरभंग-कथा इमि वरनी

श्रीराम का वनभ्रमण

छं० अहा! राम-सत्संग हेतु, मुनि-संघ जुरे ज्ञानी-तपसी।
फलाहार कोउ बिन अहार, ब्रत चतुर्मास के अतुल जसी ॥

प्रणाम करेन शरभंग मुनिवरे ❋ आशीर्व्वाद करिया कहेन मुनि ताँरे
अनाथ छिलाम वने, हइले हे नाथ ❋ योगे याँरे देखा भार, तिनिइ साक्षात्
आइला आपनि विष्णु आमार निवास ❋ तोमा दरशने मम हवे स्वर्गवास
शत वत्सरेर तप करिलाम दान ❋ एइ लह इन्द्रदण्ड दिव्य धनुर्व्वान
शरीर छाड़िव आमि अति पुरातन ❋ प्रान राखियाछि राम तोमार कारन
क्षणेक लक्ष्मण-सह वैस एइखाने ❋ अग्निते शरीर त्यजि तव विद्यमाने
शरभंग कुण्ड काटि ज्वालेन अनल ❋ ज्वलिया उठिल अग्नि गगनमण्डल
कौतुक देखेन सीता श्रीराम लक्ष्मण ❋ मुनिर साहस देखि विस्मित भुवन
राम-राम उच्चारिया मुनि ऊर्द्ध्वतुण्ड ❋ अग्नि प्रदक्षिण करि झाँप देन कुण्ड
पुड़िया मुनिर देह हइल अंगार ❋ अग्नि हैते उठे एक पुरुष आकार
गोलोके गेलेन मुनि निज पुण्यफले ❋ देखिया सवार मन पूर्ण कुतूहले
राम दरशने मुनि जान स्वर्गवास ❋ रचिल अरण्यकाण्ड कवि कृत्तिवास

श्रीरामचन्द्रेर वन-भ्रमण

सम्भाषिते श्रीराम आइल मुनि-ऋषि ❋ केह-केह फल खाइ, केह उपवासी
अनाहारी केह वा वर्षिया चारिमास ❋ केह - केह सर्व्वकाल करे उपवास

---

१ यत्नपूर्वक २ निमेष, क्षण।

गाछ-बसन मृगचर्म कमण्डल सीस जटान भभूति लसी।
मुनिवृन्दन के अभिनन्दन कहँ प्रभु धाय उठे रघुवंस-ससी ॥

दो० जोरि जुगुल कर, मुनिन पँह, रघुपति कीन प्रनाम ।
पुनि मुनीस अस्तुति करहिं, अभय कियेउ तिनि, राम ॥ ८ ॥

उपवन, अब न दनुज-सञ्चारू ❊ हे मुनि! निकट असुर-संहारू
राम-लखन तपसिन अनुसरहीं ❊ दरसन घूमि तपोवन करहीं
धनु टंकार कीन रघुबीरा ❊ वैदेही सुनि अमित अधीरा
वन-जीवन! अरु आयुध हाथा ❊ कस विपरीत! असंगति नाथा
केहि कारन निसिचरन-विवादा ❊ हिंसा कर परिनाम प्रमादा
बरनउँ कथा पुरातन, रामा ❊ सुनिय नाथ दूर्वादल श्यामा
बारी वयस, यदा पितु-गेहा ❊ बरनेउ पूरुब-कथा विदेहा
कोउ मुनि 'दक्ष' तपोवन रहही ❊ तासु समीप खड्ग कोउ धरही
पातक जो हेराय[1] पर-थाती[2] ❊ सोचि जतन राखेउ सब भाँती
तब लौं वृद्ध, न समरथ अंगा ❊ लखेउ दक्ष तहँ दीन-बिहंगा[3]
भावी प्रबल कुबुद्धि विकासा ❊ लै मुनि खड्ग बिहंग बिनासा
अस्त्र-कुसंग कुमति उपजावा ❊ अस्त्र-हेतु पातक मुनि छावा

गाछेर वाकल परे, शिरे जटा धरे ❊ मृगचर्म्म परे केह, कमण्डलु करे
मुनिगणे देखिया उठिला रघुनाथ ❊ करेन प्रणति स्तुति करि जोड़ हाथ
मुनिगण करे स्तुति रामेर गोचर ❊ श्रीराम बलेन, प्रभु, ना करिह डर
तपोवने ना थूइव राक्षस-संचार ❊ अविलम्ब हइवेक राक्षस-संहार
मुनिगण-संगे-संगे श्रीराम-लक्ष्मण ❊ तपोवन - दरशने करेन गमन
धनुके टंकार दिला राम रघुवीर ❊ देखिया सीतार मन हइल अस्थिर
वने प्रवेशेन राम, हाते धनुर्व्वान ❊ निषेध करेन सीता राम विद्यमान
राक्षसेर सने केन करह विवाद ❊ अकारण प्राणिवधे घटिबे प्रमाद
पूर्व्वेर वृत्तान्त एक कहि तव स्थान ❊ दूर्व्वादल श्याम राम, कर अवधान
शिशुकाले यखन छिलाम पितृघरे ❊ कहिलेन पिता पूर्व्व आख्यान आमारे
दक्ष नामे एक मुनि छिला तपोवने ❊ ताँर स्थाने खड्ग स्थाप्य राखे एकजने
पाप हय हरिले परेर स्थाप्य-धन ❊ यत्ने खड्गखानि ताइ राखेन ब्राह्मण
एक वृद्ध पाखी सेइ तपोवने वैसे ❊ नड़िते चड़िते नारे प्राचीन-वयसे
मुनिरे कुबुद्धि पाय, दैवेर लिखन ❊ सेइ खड्गाघाते वधे पाखीर जीवन
हाते अस्त्र थाकिले लोकेर ज्ञान नाशे ❊ हइल मुनिर पाप से अस्त्रेर दोषे

---

१ खो जाय २ धरोहर ३ सामान्य पक्षी ।

पालन सत्य भये वनचारी ॐ कवन प्रयोजन असुर सँहारी
सुनि सिय-सरल-वचन रघुराई ॐ दिय प्रबोध बहु बिधि समुझाई
स्वर्ण-सरोज-सुमुखि सुनु सीता ॐ मैं असंक, प्रिय किमि भयभीता
तेजपुञ्ज मुनिवृन्द सहाई ॐ तिन सिय! किमि कहु भय दुखदाई?

दो० रमत पंथ, मारग लखेंउ, सरवर दिव्य सरूप।
जेहि भीतर सों सुनि परत, धुनि-संगीत अनूप ॥ ६ ॥

लखि बिस्मित पूछत रघुकेतू ॐ सर-बिच गान! कहौ मुनि! हेतू
सुनहु राम, यहि देस अनूपा ॐ कीन कठिन तप मुनि तपरूपा
मुनि तपभंग - हेतु सुरराई[1] ॐ तप - उपवन अप्सरन पठाई
देवांगना अलौकिक सोभा ॐ मदनदग्ध मुनि-मन तिनि लोभा
'पञ्च - अप्सरा' नाम प्रदेसू ॐ अबहुँ बसति ते लुकि यहि देसू
अलख नयन, पुरान अस कहहीं ॐ गीत - नर्त्त, कानन सुनि परहीं
लीलापति सुनि कथा ललामा ॐ लखि उपवन गमने मुनि-धामा
तहँ सन्मान पाय पहुनाई ॐ तीनिहुँ जन सुखरैन बिताई
कहुँ दस-पाँच, कहूँ षट-मासा ॐ वन-उपवन प्रभु कीन निवासा
दिवस मास कहुँ पाख अतीते ॐ अवधि - प्रवास वर्ष दस बीते

सत्य पालि देशे चल, एइ मात्र पन ॐ राक्षस मारिया तव कोन प्रयोजन
सरला जनकबाला कहिले एमति ॐ बुझान प्रबोधवाक्य ताँर सीतापति
कनक- कमलमुखि जनककुमारि ॐ आमार नाहिक भय, कि भय तोमारि
महातेजा मुनिगण यादेर सहिते ॐ तादेर किसेर भय, चल देखि सीते
जाइते देखेन ताँरा दिव्य सरोवर ॐ शुनेन अपूर्व्व गीत ताहार भितर
विस्मित हइया जिज्ञासेन रघुमणि ॐ जलेर भितर गीत केन शुनि मुनि
मुनि वलिलेन हेथा छिल एक मुनि ॐ करित कठोर तप दिवस - रजनी
तपोभंग करिते ताँहार पुरन्दर ॐ पाठाय अप्सरागणे, यथा मुनिवर
आइल अप्सरागण मुनिर निकटे ॐ देखिया पड़िल मुनि मदन-संकटे
एस्थानेर ख्याति पञ्च-अप्सरा बलिया ॐ अद्यापि आछये तारा हेथा लुकाइया
नृत्य गीत करे तारा, नाहि जाय देखा ॐ एमन अपूर्व्व कथा पुराणेते लेखा
शुनिया मुनिर कथा कौतुकी श्रीराम ॐ तपोवन देखिया गेलेन मुनिधाम
आतिथ्य करेन मुनि समादर करि ॐ तिन जन वञ्चिलेन सुखे विभावरी
कोथा पाँच-सात-मास कोथा दशमास ॐ कोथा वार-मास राम करेन प्रवास
एइ रूपे वने - वने करेन भ्रमण ॐ अतीत हइल दश वत्सर तखन

---

१ इन्द्र।

सानुज सतिय एक दिन रामा ❊ मुनि सुतीक्षण-पद कीन प्रनामा
सीतापति मधुवैन प्रकासा ❊ पद-अगस्त्य बंदन अभिलासा
कहेउ सुतीक्षण पूर्ण तव कामा ❊ करहु सुफल चलि कुम्भज[1]-धामा
पिप्पलवन तिन अनुज-निवासू ❊ आजु रैन तहँ कीजिय वासू
भोर जाहु सुत जहाँ तपागर ❊ मुनि अगस्त्य मनु अवर-प्रभाकर[2]
लीन बिदा, दच्छिन दिसि जाई ❊ पिप्पलवन पहुँचे रघुराई

दो० निज आश्रम रघुवीर लखि, मुनिवर-उर अति प्रीत ।
राम-लखन-सिय समुद मन, तहँ, निसि कीन बितीत ॥ ३० ॥

अगस्त्य एवं वातापि-इल्वल आख्यान

मारग गहेउ भोर पुनि रामा ❊ लखहु लखन! इत कुंभज-धामा
यहि वन दुष्ट दनुज इक भारी ❊ निज आलय[3] मुनि तेहि संहारी
सुनि सौमित्र कुतूहल छावा ❊ मुनि किमि यमपुर असुर पठावा!
अनुज! कथा सुनु, दनुज प्रतापी ❊ युगुल-बन्धु 'इल्वल'-'वातापी'
मायावी माया बहु करहीं ❊ छल-करि द्विजन-प्रान चहुँ हरहीं
पटु संगीत सुविज्ञ अनूपा ❊ अनुज संग तन मेष - सरूपा

एक दिन सीता-सह श्रीराम-लक्ष्मर्ण ❊ कर-पुटे बन्दे मुनि - सुतीक्ष्ण - चरण
सुतीक्ष्ण मुनिरे राम कहेन सुभाष ❊ अगस्त्येरे प्रणाम करिते करि आश
मुनि बले, जाह राम अगस्त्येर धाम ❊ ताथा गिया ताँहार पूराउ मनस्काम
ताँहार कनिष्ठ आछे पिप्पलीर वने ❊ अद्य गिया वासा कर ताँर तपोवने
कल्य गिया पाइबे अगस्त्य-तपोवन ❊ ताहाते आछेन मुनि द्वितीय तपन
विदाय लइया राम चलेन दक्षिणे ❊ उपनीत हइलेन पिप्पलीर वने
श्रीराम पाइया मुनि पाइलेन प्रीति ❊ सेइ रात्रि तथा राम करिलेन स्थिति

अगस्त्य मुनि कर्त्तृक वातापि ओ इल्वलेर वृत्तान्त

प्रभाते उठिया राम करेन गमन ❊ लक्ष्मणे देखान राम अगस्त्येर वन
एइ वने छिल एक दानव दुर्ज्जन ❊ तार वध मुनिवर करिला आश्रम
शुनिया लागिल लक्ष्मणेर चमत्कार ❊ मुनि ह'ये असुरे मारेन कि प्रकार
श्रीराम बलेन, भाइ, शुन अवान्तर ❊ इल्वल-वातापि छिल दुइ सहोदर
मायावी असुर तारा, नाना माया धरे ❊ वातापि हइया मेष ब्रह्मवध करे
तार भाइ इल्वल, से जानिते संगीत ❊ लोक मध्ये भ्रमे, येन अद्भुत पण्डित

---

१ अगस्त्य ऋषि २ दूसरे सूर्य ३ आश्रम में ।

इल्वल फिरत द्विजन जहँ पावै ❊ सादर तिनहिं निमंत्रि बुलावै
मेष - मांस भोजन रुचिकारी ❊ जेहि छन विप्र उदर निज धारी
इल्वल - हाँक[1] सुनत वातापी ❊ उदर चीरि प्रगटल संतापी
विप्र-घात यहि विधि नित करहीं ❊ वन-वन असुर सहोदर फिरहीं
उर अति छोभ, दनुज ढिग जाई ❊ मुनि अगस्त्य कामना सुनाई
अतिथि-विप्र आयेउँ चलि दूरी ❊ मेष - मांस - मंसा करु पूरी
अनाहार अतिकाल उपासू ❊ रुचिभर मांस चहौं तव पासू
सुनि अति मोद असुर उर माहीं ❊ मास-अभाव इतै मुनि नाहीं
माया - मेष अनुज वातापी ❊ रंधति तासु मांस आतापी[2]
इत समोद जेंवत[3] मुनिराई ❊ पुनि-पुनि खल परसत पुलकाई

दो० सुरसरि[4] आवाहन कियो, कौतुक कीन अगस्त्य ।
भागीरथी अलक्षिता[5], वसीं कमण्डल - मध्य ॥ ११ ॥

छं० मेष-रूप वातापि-मांस कै रुचिर पाक आयेउ आगे ।
कुंभज[6]-कोप कराल ज्वाल नयनन सों अनल-बान त्यागे ॥
गंगोदक[7] प्रति ग्रास पान करि, उदर विपाक करन लागे ।
ब्रह्मायुध कर जाप, शाप मुनि, मायावी छल-बल भागे ॥

आदर करिया द्विज करे निमंत्रण ❊ ऐ मेष-मांसे दिया कराय भोजन
ब्राह्मणेर उदरे मेषेर मांस थाके ❊ वातापि वाहिर हय इल्वलेर डाके
पेट चिरि वाहिराय विप्रगण मरे ❊ एइ रूप करि भ्रमे दुइ सहोदरे
ब्रह्मवध शुनिया अगस्त्य महामुनि ❊ इल्वलेर ठाँइ दान माँगिला आपनि
दूर हैते आइलाम पथिक ब्राह्मण ❊ मेषमांस मोरे आजि कराओ भोजन
मुनि वले बहुदिन आछि उपवास ❊ भोजन करिब आजि गाड़लेर मास
मुनिर वचन शुनि इल्वल उल्लास ❊ कहिल, खाइवे मुनि कत मेष-मास
वातापि गाड़ल हय मायार प्रवन्धे ❊ गाड़ल काटिया मांस रान्धिल आनन्दे
वड़ आशा करि मुनि भोजनेते वैसे ❊ हाते थाला करिया इल्वल आसेपाशे
'गंगादेवी' वलि मुनि मने-मने डाके ❊ अलक्षिते गंगादेवी कमण्डलु ढोके
मुनि बले, बहुदिन मम उपवास ❊ भोजन करिव आमि गाड़लेर मास
गंगाजल पिया मुनि ब्रह्ममंत्र जपे ❊ मुष्टि-मुष्टि मांस से भोजन करे कोपे
मुनिर उदरे मांस प्राय हय पाक ❊ वाहिर इल्वल डाके, घन-घन डाक
इल्वल वलिल, एस वातापि, बाहिरे ❊ मुनि वले कोथा तुमि पावे वातापिरे

---

१ पुकार २ इल्वल ३ भोजन करते थे ४ गंगा ५ ओझल ६ अगस्त्य ऋषि ७ गंगाजल ।

'निकरु बन्धु बातापि! उदर-मुनि चीरि' पुकार करै इल्वल ।
गज पै सिंह समान गर्जि मुनि दनुज-विनास किये कौशल ।।
अट्टहास मुनिनाथ कियो, शठ ! बुद्धि-आसुरी तव निष्फल ! ।
उदर विपाक भयो हे दानव! पुनि-पुनि अनुज गोहार[1] विफल।।

अनुज वियोग, दनुज भरमाना * मुनि त्यागेउ उत प्रबल अपाना
अगिनि बिषम तेहि इल्वल जारा * असुर-जुगुल इमि मुनि संहारा
दनुज पराभव, मुनिन सनाथा * अभय तपोवन किय मुनिनाथा
दरसन सकल सिद्धि-सुखदाई * सोइ अगस्त्य-उपवन यहु भाई
पहुँचे आश्रम दीनदयाला * शिष्य एक भेंटेउ तेहि काला
कहेउ लखन, मुनि-दरसन हेतू * आये द्वार राम रघुकेतू
कहेउ शिष्य पुनि चलि मुनिधामा * प्रस्तुत द्वार लखन-सिय-रामा
सुनि संवाद पुलकि मुनि कहहीं * आनहु बेगि ! भुवनपति अबहीं
सदा योगिजन ध्यान लगावैं * सबन-पुण्य ! ते उपवन आवैं
मुनि-आयसु, प्रवेश रघुनाथा * दरस, कीन मुनि, मनहिं सनाथा
तीनिउ जन अगस्त्य-पद बन्दे * निरखत छबि मुनि अमित अनन्दे
तजि बैकुण्ठ भये वनवासी * को जानै मनगति-अविनासी

गर्ज्जिया येमन धरे सिंह भक्ष्य हाती * इल्वले मारिते युक्ति करे महामति
पण्डित हइया तव बुझि नाहि घटे * तोमार वातापि एइ आछे मम पेटे
से कथाय पासरिल असुर आपना * बातकर्म्म करे मुनि येमन झंझना
वातकर्म्म अग्निते इल्वल पुड़ि मरे * एइ मते मुनि दुइ दानवेरे मारे
ए रूप मारिया सेइ दानव दुर्ज्जय * तपोवन रक्षा कैला मुनि महाशय
उपनीत मोरा से अगस्त्य-तपोवने * सर्व्व कार्य्य सिद्ध हय जाँर दरशने
प्रवेशिते जान राम अगस्त्येर द्वारेरे * हेनकाले शिष्य एक आइल बाहिरे
ताँहारे देखिया तबे वलेन लक्ष्मण * आसिलेन राम मुनि-सम्भाष-कारन
एइ वाक्य शुनि शिष्य गेल अभ्यंतरे * कहिल रामेर कथा मुनिर गोचरे
श्रीराम लक्ष्यण सीता द्वारे तिनजन * आज्ञा विना केमने करेन आगमन
रामेर संवादे मुनि ह'ये आनन्दित * आज्ञा करिलेन शिष्य, आनह त्वरित
सवाकार पूज्य राम आइलेन द्वारे * योगिगण अनुक्षण ध्यान करे जाँरे
सबारे लइया गेल मुनिर आज्ञाय * देखिया मुनिर मनोभ्रम दूरे जाय
अगस्त्येर चरण वन्देन तिनजन * अगस्त्य बलेन, किवा अपूर्व्व दर्शन
गोलोक छाड़िया प्रभु, एले वनवास * ना जानि तोमार आछे किवा अभिलाष

---

१ पुकार ।

लखन अलौलिक अनुज न दूजा ❋ सदा निरत सुख-दुख तव पूजा
तात! श्रान्त, लीजिय सत्कारू ❋ जुरे जतन वटु[1], विविध प्रकारू
राम लखन सिय आयसु पाई ❋ करि भोजन तहँ रैन बिताई
भोर कृत्य, पुनि चलि मुनि तीरा ❋ विविध वारता - रत रघुबीरा

दो० मुनिवर! पितु के सत्य हित, कानन कीन प्रवास।
मुनि आयसु, मुनि-सीख धरि, चलि तहँ करइँ निवास॥ १२॥

पचवटी में श्रीराम-जटायु मिलन

कह मुनीश, हे पुण्यश्लोकू ❋ जहँ तव चरन तहाँ सुरलोकू
तट-गौतमी[2] दिव्य वन जाई ❋ निवसहु पञ्चवटी सुखदाई
बिसकर्मा-निर्मित धनुबाना ❋ कुंभज[3] रामहिं कीन प्रदाना
लै मुनि विदा लखन-सिय साथा ❋ दच्छिन दिसि गमने रघुनाथा
तेहि प्रदेस खग रहत जटाई ❋ दसरथ-सुवन-खबरि सुनि पाई
धाय उपस्थित जहँ सियनाथा ❋ दीन यथोचित परिचय गाथा
गरुड़-सुवन, मोंहि कहत जटाई ❋ तव पितु-मम प्राचीन मिताई[4]
जेठ बन्धु खगपति सम्पाती ❋ रामहिं कही कथा सब भाँती
कबहुँ भयेउँ दसरथहिं सहाई ❋ जिमि अवधेस - मित्रता पाई

लक्ष्मणेर चरित्रे आमार चमत्कार ❋ दुःखे-दुखी, सुखे-सुखी लक्ष्मण तोमार
पथश्रान्त आछ राम, करह भोजन ❋ आज्ञामते शिष्यगण कैल आयोजन
मुनिर आदरे राम करेन भोजन ❋ निशीथिनी तथाय वञ्चेन तिनजन
समापिया प्रातःकृत्य श्रीरघुनन्दन ❋ अगस्त्येर सहित करेन आलापन
पितृ-सत्य पालिवारे आसियाछे वने ❋ आज्ञा कर मुनिवर, थाकि कोन स्थाने

श्री रामेर पंचवटीते अवस्थान ओ जटायूर-परिचय

अगस्त्य बलेन शुनि रामेर वचन ❋ येखाने थाकिवे, सेइ महेन्द्र भुवन
गोदावरी तीरे राम पञ्चवटी वन ❋ सेइ स्थाने गिया सुखे थाक तिनजन
दिव्य धनुर्व्वाण विश्वकर्म्मार निर्म्माण ❋ श्रीरामे अगस्त्य ताहा करिलेन दान
अगस्त्येर स्थाने राम लइया विदाय ❋ चलेन दक्षिणे सीता - लक्ष्मण - सहाय
जटायु नामेते पक्षी, से देशे वसति ❋ पाइया रामेर वार्त्ता आसे शीघ्रगति
श्रीरामेर सम्मुखे हइया उपस्थित ❋ आपनार परिचय देन यथोचित
'जटायु' आमार नाम गरुड़नन्दन ❋ तोमार बापेर मित्र आमि पुरातन
पक्षिराज सम्पाति आमार वड़ भाइ ❋ आरो परिचय राम, तोमारे जानाइ
पूर्व्वे दशरथेर क'रेछि उपकार ❋ तोंइ से ताँहार संगे मित्रता आमार

---

१ ब्रह्मचारी गण २ गोदावरी के किनारे ३ अगस्त्य ४ मित्रता।

अहा राम धनि लछिमन सीता * कीजिय चलि मम धाम पुनीता
चले विहंग - विनय अनुसारी * पञ्चवटी लखि उर सुख भारी
लखन! रचहु इत कुटी ललामा * नित अस्नान गौतमी धामा
पल्लव - बाँस कुटी निर्माना * कही लखन, प्रभु कृपानिधाना
जेंहि थल रुचिर सुआयसु पावौं * पर्न - कुटी रमनीक बनावौं
गोदावरि - सुतीर छबि पूरी * धवल पीत बहु शिला सिँदूरी
घाट प्रसून[1] खिले जहँ नाना * गुञ्जत भृङ्ग[2] मत्त मधु - पाना
लखन! रचहु इति कुटी सुहावन * मञ्जुमयी सीतहिं मनभावन

सो० लखन जानि रुचि-राम, दिवस एक बिच निरमयेउ ।
रम्य अलौकिक धाम, लता, पता, तृन, सुमन-युत ।।

दो० द्वार कलश परिपूर्ण, पुनि, अगिनि पूजि रघुनाथ ।
गृह-प्रवेश सानन्द शुभ, कीन बन्धु-तिय साथ ।। १३ ।।

वन्य कुटी छबि आनँद - साने * अवध - महल - ऐश्वर्य भुलाने
आयसु मिलत, सदा प्रभु पासा * कहि खगपति उड़ि चलेउ अकासा
पंख पसारि गयेउ छिन[3] देसू * इत विश्राम रैन अवधेसू
गोदावरि प्रभात अस्नाना * हेतु चले पुनि कृपानिधाना
सुरभित सुमन सुदर्शन राशी * सेवहिं देव नित्य अविनाशी

आइस आइस राम-सीता, मोर घरे * इहा कहि वासादिल अति समादरे
तिनजने अनुव्रजि ल'ये गेल पाखी * पञ्चवटी देखिया श्रीराम बड़ सुखी
लक्ष्मणे बलेन राम, वाँध वासा घर * गोदावरी जले स्नान करि निरन्तर
लक्ष्मण बलेन, देव, आपनि प्रधान * कोन् स्थाने बाँधि घर, कर संविधान
देखेन श्रीराम स्थान गोदावरी तीरे * सुशोभित श्वेत-पीत-लोहित प्रस्तरे
निकटे प्रसर घाट ताहे नाना फूल * मधुपाने मातिया गुंजरे अलिकुल
श्रीराम बलेन, हेथा बाँधे वासा-घर * जानकीर मनोमत करह सुन्दर
श्रीरामेर आज्ञाय लक्ष्मण बाँधे घर * एक दिने निर्म्माइल अति मनोहर
पूर्ण कुम्भ द्वारे स्थापि आनि पुष्पराशि * अग्निपूजा करिया हइला गृहवासी
लता-पाता निर्म्मित से कुटी पाइया * अयोध्यार अट्टालिका गेलेन भूलिया
जटायु बलेन, राम, आसि हे एखन * यखन करिबे आज्ञा, आसिब तखन
एत बलि पक्षिराज उड़िल आकाशे * दुइ पाखा सारि गेल आपनार देशे
रजनी वञ्चिया राम उठि प्रातःकाले * स्नान करिबारे जान गोदावरी जले
सुगन्धि सुदृश्य माना कुसुम तुलिया * नित्य-नित्य श्रीराम करेन नित्य-क्रिया

१ पुष्प २ भौंरे ३ क्षण भर में ।

सुलभ सुस्वादु कंद फल मूला ※ सुखद, सीत गोदावरि - कूला
सुखमय सदा सन्त - सत्संगा ※ करत केलि मिलि वृन्द-कुरंगा
सीय कबहुँ कुछ मनहिं बिसूरति[1] ※ भूलति निरखि मञ्जु प्रभु-मूरति
रामहिं देस, विदेस समाना ※ आतमसरूप सदा भगवाना
अद्भुत लखन-चरित मनहारी ※ बन सेवत रामहिं अनुसारी

शूर्पनखा के नासा-कर्ण छेदन

पञ्चबटी गत दिवस अनेका ※ घटना घटित भई तहँ एका
शूर्पनखा भगिनी - दसकंधर ※ भ्रमत परी छवि मञ्जु नयन-तर
निरखि राम-लावण्य ललामा ※ मदमाती लागे सर-कामा
जिन छबि शत कन्दर्प[2] लजाहीं ※ सम-समान[3] अति सुख तिन पाहीं
छलिनि दुष्ट निसिचरी विरूपा ※ तजि निज रूप भई रति-रूपा
धर्म-किरीट जितेन्द्रिय रामा ※ पापिनि-फन्द न अंकुर जामा

दो० दुर्बल दुःसाहस करत आरोहन गिरिशृंग।
चहति रिझावन, करति छल विपुल, सियापति संग ॥ १४ ॥

बहु करि हाव-भाव मृगनयनी ※ मुख प्रफुल्ल, पूछत मधुवयनी
क्षत्रिय-कुल पुनि तापस वेसू ※ कस विचरत इत कानन-देसू

फल मूल आहरण करेन भक्खन ※ सुमिष्ट शीतल गोदावरीर जीवन
ऋषिगण - सह सदा करेन निवास ※ करेन कुरंगगन - सह परिहास
सीतार कखन यदि दुःख हय मने ※ पासरेन तखनि श्रीराम दरशने
रामेर येमन देश, तेमनि विदेश ※ आत्माराम श्रीराम नाहिक कोन क्लेश
लक्ष्मणेर चरित्र विचित्र मने वासि ※ श्रीरामेर वनवासे जिनि वनवासी

(शूर्पनखार नासा-कर्ण-छेदन)

एरूपे रहेन पञ्चवटी तिनजन ※ हेन काले घटे एक अपूर्व्व घटन
रावणेर भग्नी, तार नाम शूर्पनखा ※ अकस्मात् रामेर सम्मुखे दिल देखा
भ्रमिते भ्रमिते गेल रामेर सदने ※ श्रीरामेरे देखिया से मातिल मदने
शतकाम जिनिया श्रीराम रूपवान ※ सुख हय, यदि मिले समाने समान
एत भावि मायाविनी दुष्टा निशाचरी ※ रति रूप धरे निज रूप परिहरि
जितेन्द्रिय श्रीराम धार्म्मिक शिरोमणि ※ रामे भुलाइवे किसे अधर्म्माचारिणी
पर्व्वत नाड़िते चाहे हइया दुर्व्वला ※ भ्रमाइते श्रीरामे पातिल नाना छला
हाव-भाव आविर्भाव करिया कामिनी ※ श्रीराम जिज्ञासा करे सहास्य वदनी
राजपुत्र वट किन्तु तपस्वीर वेश ※ एमन कानने केन करिले प्रवेश

---

१ याद करती थी २ कामदेव ३ बराबर की जोड़ी।

दण्डक बसत दनुज अति घोरा * फिरहु निसंक, न साहस थोरा
जो कहुँ मिलैं, दूर ते नाहीं[1] * परहु सुदर्शन ! संकट माहीं
चन्द्रबदनि को संग अनूपा * तुम सम को यहु पुरुष सुरूपा
सरल हृदय, परिचय दिय रामा * दसरथ-सुवन, अवध मम धामा
अनुज लखन, तिय सिया पियारी * पालन - सत्य भये वनचारी
इति मम कथा, कहौ निज धामा * को तुम हे सुन्दरी ललामा
तिलोत्तमा, उर्वसि धौं आई * अनुपम छबि मेनका सुहाई
सहज सुभाव कहेउ प्रभु एही * सूर्पनखा सुनि परिचय देही
रावन-भगिनि बास मम लंका * एकाकिनि[2] चहुँ फिरहुँ निसंका
देस-विदेस रमहुँ, भय नाहीं * बनौं नारि तव, रुचि मन माहीं
बन्धु लंकपति, तेज महाना * सोवत कुम्भकर्ण बलवाना
भ्रात सुशील सुधर्म विभीषन * बन्धु जुगुल इति खर अरु दूषन
अनुजा मैं इन सबन-दुलारी * होहुँ धन्य लहि कृपा तुम्हारी
गिरि सुमेरु पर्वत कैलासू * करहिं भ्रमन चहुँ तव सहवासू

दो० प्रियतम ! चलिय सुदूर जहँ, नहिं मानव-सञ्चार ।
केलि सकौतुक दोउ करैं, अहि-निसि सदा बिहार ॥ १५ ॥

दण्डक कानने आछे दारुण राक्षस * हेन वने भ्रम तुमि, ए बड़ साहस
वहुदूर नहे, तारा आछये निकटे * हेन रूपवान तुमि, पड़िले संकटे
संगे देखि चन्द्रमुखी, इनि के तोमार * केवा ए पुरुष तव समान आकार
सरल हृदय राम देन परिचय * मम पिता राजा दशरथ महाशय
इनि भ्राता लक्ष्मण, प्रेयसी सीता इनि * सत्यहेतु वने भ्रमि, शुनलो भामिनि
शुनिले आमार, देह निज परिचय * कि बट आपनि, कोथा तोमार आलय
परम सुन्दरी तुमि लोके निरुपमा * मेनका उर्व्वशी किंवा हवे तिलोत्तमा
जिज्ञासा करिल राम सरल हृदय * शूर्पनखा आपनार देय परिचय
लंकाय वसति, आमि रावण-भगिनी * नाना देशे भ्रमि आमि ह'ये एकाकिनी
देशे देशे भ्रमि आमि, कार नाहि भय * तोमार कामिनी हइ, हेन वांछा हय
लंकापुरे बैसे भाइ दशानन राजा * निद्रा जाय कुम्भकर्ण भ्राता महातेजा
अन्य भ्राता सुशील धार्म्मिक विभीषण * भाइ खर-दूषन एखाने दुइ जन
अति आदरेर आमि कनिष्ठा भगिनी * तोमार हइले कृपा, धन्य बलि मानि
सुमेरु-पर्व्वत आर कैलास-मन्दर * तोमा सह बेड़ाइब, देखिब बिस्तर
तथा जाव यथा नाहि मनुष्य संचार * तुमि आमि कौतुकेते करिव बिहार

---

१ वे दूर नही हैं २ अकेली ।

मन भावै, चलि गगन उड़ाहीं ❊ तव सीता एते गुन नाहीं
जो प्रतिरोध लखन-सिय करहीं ❊ मम भचछन अकाल ते मरहीं
लखहु राम मम रूप अनूपा ❊ सिय-तुलना, मैं अति अतिरूपा
अति कुत्सित विरूप तव सीता ❊ सम तिय लहि उर उपजहि प्रीता
मन-विहंग-रुचि जब जहँ देखी ❊ दिन बिहार, निसि रंग बिसेखी
सियहिं सचेत राम पुनि कीन्हा ❊ निसचरि-प्रति विनोद मन दीन्हा
तासु रूप-गुन-विरद बखानी ❊ पुनि बोले रघुपति मृदु बानी
मम कर गहे सौति-सन्तापू ❊ वरहु लखन गुन प्रबल प्रतापू
मञ्जुल छबि बिलसहु मम भाई ❊ तरुण किशोर, सीख मम पाई
कनक-गौर, अब लौं तिय नाहीं ❊ सुखद निवास करहु तिन पाहीं
सुलभ न जग तुम सम छबि-खानी ❊ लखनहिं कहेउ, सत्य सब मानी
युवा अकेल ! राग नहिं रंगा ❊ लहहु संग मम रैन-तरंगा
कहेउ लखन, मैं रघुपति-दासा ❊ उचित न अनुचर-प्रति अभिलासा
भुवन अनन्य अवध के राजा ❊ पुजहु रानि बनि सकल-समाजा
सिय सों तुम सब भाँति बिसेसू ❊ तव-तुलना गुन-रूप न लेसू
सिय मानुषी विफल तव आगे ❊ रघुपति पाँय धरहु यहि लागे

मन:सुखे वेड़ाइव अन्तरीक्ष-गति ❊ एत गुण नाहि धरे तव सीता सती
प्रतिवादी हय यदि जानकी - लक्ष्मण ❊ राखिया नाहिक कार्य्य करिव भक्षण
आमारे देखह राम, केमन सुवेश ❊ सीताय आमाय रूप अनेक विशेष
कुवेश तोमार सीता, वड़ह घृणित ❊ हेन भार्य्या सने थाक, मने हय प्रीत
यखन येखाने इच्छा, सेखाने तखनि ❊ विहार करिव गिया दिवस-रजनी
श्रीराम वलेन, सीता, न करिह त्रास ❊ राक्षसीर सहित करिव परिहास
परिहास करेन श्रीराम सुचतुर ❊ राक्षसीरे भाँड़ाइते वलेन मधुर
आमार हइले जाया पावे से सतिनी ❊ लक्ष्मणेर भार्य्या हओ, एइ वड़गुनी
सुन्दर लक्ष्मण भाइ, मनोहर वेश ❊ यौवन सफल कर, कहि उपदेश
लक्ष्मण कनकवर्ण परम सुन्दर ❊ लक्ष्मणेर भार्य्या नाहि, तुमि कर वर
तोमा हेन रूपवती पावे कोन स्थले ❊ सत्य ज्ञाने निशाचरी लक्ष्मणेरे वले
तुमि युवा हइया एकाकी वञ्च राति ❊ रसक्रीड़ा भुञ्ज तुमि आमार संहित
लक्ष्मण वलेन, आमि श्रीरामेर दास ❊ सेवकेर प्रति केन कर अभिलाप
भुवनेर सार राम, अयोध्यार राजा ❊ रानी तुमि हइले करिवे सवे पूजा
गुण कि धरेन सीता, तोमार गोचर ❊ तोमाय सीताय देखि अनेक अन्तर
रामेरे भजह तुमि ह'ये सावधान ❊ मानुषी कि करिवेक तोमा विद्यमान

दो० वचनमात्र सुनि, लखन तजि, बिन जाने उपहास ।
मदमाती पुनि धाय उत, गई राम के पास ॥ १६ ॥

पुनि अभिराम राम ! मैं आई ❋ भच्छहुँ सिय, मग-काँट नसाई
ग्रसन हेत, मुख दनुजि पसारा ❋ हेरि बिकल सिय भय बिस्तारा
दच्छिन ओट[1] बाम कहुँ लेही ❋ लखे राम आकुल बैदेही
सूर्पनखा धावै जित सीता ❋ काँपति कदली-सरिस सभीता
बोले रघुपति, तजि उपहासू ❋ लखन करहु दानवी बिनासू
लखन प्रकोपि बान सन्धाना ❋ काटे तासु नासिका - काना
कुत्सित ! नासा-श्रवन नसाने ❋ अधर-चिबुक[2]-मुख शोनित-साने[3]

चौदह राक्षस सेनापतियों का वध

गात रक्त, नासिका छिपाई ❋ खर-दूषन ढिग बिलपत जाई
टेरि सैनपति कह खर-दूषन ❋ केहि मम भगिनी कीन कुरूपन
सिंह-भाग जम्बुक किमि ताका ❋ निज-हित मूढ़ कीन विष-पाका
बनहिं सिन्धु-तट दनुजन-थाना[4] ❋ सहस चतुर्दस भट बलवाना
भय न लंकपति ! हमहिं न जानै ❋ गरल सँजूति मृत्यु सन्मानै

उपहास नाहि बुझे वाक्यमात्रे धाय ❋ लक्ष्मणेरे छाड़िया रामेरे काछे जाय
पुनर्व्वार आइलाम राम, तव पाशे ❋ घुचाइब व्याघात सीतारे गिलि ग्रासे
बदन मेलिया जाय सीता गिलिवारे ❋ त्रासेते विकल सीता राक्षसीर डरे
क्षणे वामे, क्षणेते दक्षिणे जान सीता ❋ देखिलेन रघुनाथ सीतारे व्यथिता
जेइ दिके जान सीता, से दिके राक्षसी ❋ राक्षसीर डरे काँपे जानकी रूपसी
श्रीराम बलेन, भाइ, छाड़ उपहास ❋ इंगिते बलेन, कर इहार विनाश
क्रोधेते लक्ष्मण वीर मारिलेन वाण ❋ एक बाणे ताहार काटिल नाककान
खान्दा नाक धान्दा लागे, भासे रक्त स्रोते ❋ राक्षसीर ओष्ठाधर भासिल शोणिते

शूर्पनखार रक्षक चतुर्द्दश राक्षससेनापति-वध

शूर्पनखा जाय खर-दूषनेरे पाशे ❋ नाके हात दिया काँदे, रक्ते मात्र भासे
कहे खर-दूषन राक्षस सेनापति ❋ कोन् वेटा कैल हेन भगिनी दुर्गति
ए देखि वाघेर घरे घोगेरे वसति ❋ मारिवार औषध के बाँधिल दुर्म्मति
सागरेर कूले थाना वनेर भितरे ❋ उखाड़िया कोन् बेटा एल मरिवारे
खर-दूषनेर थाना यमेर समान ❋ योद्धा चौद्द हाजार जाहाते बलवान
रावणेरे नाहि माने, आमारे ना जाने ❋ मरिवार उपाय सृजिल कोन् जने

१ आड़ लेती २ ओंठ-ठोढ़ी ३ रक्तभरे ४ राक्षसों की चौकी।

बोली बैठि[1], छीन अति बानी * तात! लखे वन दुइ नर प्रानी
ते मुनिवेस जदपि मुनि नाहीं * फिरत, नारि सुन्दरि तिन पाहीं
अधम वासना परि जेहि काजा * भई कुगति बरनत मोंहि लाजा
मानुस-मास साध उर लाई * श्रवन-नासिका जाय नसाई

दो० प्रमुख चतुर्दस सैनपति, तिन खर कहेउ बोलाय।
राम-लखन हनि, देहु पुनि, गृद्ध-वायसन[2] आय ॥ १७ ॥

जे नर हेतु भगिनि-अपमाना * करहु माँस तिन शोनित पाना
मूसल मुद्गर सैल सुहाये * जिमि यमदूत, सैनपति धाये
मारु-मारु पुनि हाँक लगावा * चहुँ दिसि असुर-कुलाहल छावा
जहँ अवधेस, जुरे सब वीरा * सविनय निकसि कहेउ रघुवीरा
वन फल-मूल गुजर! केहि कारन? * विन अपराध करौ रन धारन
दानव दुष्ट, विनय-रघुनन्दन * सुनि सकोप बोले करि गर्जन
तापस जीवन, हमहिं न रोषू * भगिनि विरूप कीन केहि दोषू
ए तव कर्म, न जीवन-साधा * केहि मुख पूछत निज अपराधा
दुइ मानुष, इत कटक अपारा * तिन आयुध छिन तव संहारा
सकल निसाचर यहि विधि कहहीं * वर्षन अस्त्र उपक्रम[3] करहीं

वसिया त शूर्पनखा कहे धीरे धीरे * आसियाछे दुइ नर वनेर भितरे
मुनि तुल्य वेश धरे किन्तु नहे मुनि * संगे ल'ये भ्रमे एक सुन्दरी कामिनी
एक कार्य्ये गिया भ्रष्टा कहे आर काज * मनेर वासना से कहिते वासे लाज
गेलाम मनुष्य मांस खाइवार साधे * नाक कान काटे मोर एइ अपराधे
छिल चौद्दजन जे प्रधान सेनापति * जूझिवारे खर सवे दिल अनुमति
रामेरे मारिया आन लक्ष्मण सहित * गृध्र आर काके खाक् तादेर शोणित
जार ठाँइ भगिनी पाइल अपमान * तार रक्त-मांस सवे कर गिया पान
लइया झकड़ा शेल मुषल मुद्गर * सेनापति सवे धाय यमेर किंकर
मार मार वलिया धाइल निशाचर * कोलाहले पूरित हइल दिगंतर
सकले आइल, यथा श्रीराम-लक्ष्मण * वाहिरे आसिया राम कहेन तखन
फल-मूल खाइ मात्र, वास करि वने * विना अपराधे आसि युद्ध कर केने
एइमत विनये कहिले रघुवर * रामेरे डाकिया वले दुष्ट निशाचर
तपस्वीर मत थाक, कि करे वारण * भगिनीर नाक-कान काट कि कारण
जेइ कर्म्म करिलि जीवने नाहि साध * कोन् मुखे वलिस्, ना करि अपराध
तोरा दुइ मनुष्य आमरा वहुजन * आमादेर अस्त्राघाते मरिवि एखन
एइमत कहिया से सकल राक्षस * करे अस्त्र-वरिषन करिया साहस

---

१ आवाज़ बैठी हुई २ गीध-कौओं को ३ पुरुषार्थ।

तजेउ विशिष[1] रघुपति-कोदण्डा ❋ मूसल मुद्गर अगनित खण्डा
चौदह बान हने पुनि रामा ❋ दनुज चतुर्दस गे. यमधामा
लौटि निषंग[2] .राम-सर आये ❋ प्रभु-प्रताप खल सकल नसाये
कृत्तिवास पण्डित कृत गाथा ❋ यश पुराण-सम्मत रघुनाथा

श्रीराम के साथ खर और दूषण का युद्ध

निरखि चतुर्दस सुभट विनासा ❋ सूर्पनखा-उर अतुलित त्रासा
खरहिं कहेउ, दानव-दल जेता ❋ निष्फल कुजस लीन रन खेता

सो० राम-वान निष्प्रान, किय नायक जे चतुर्दस ।
सुनि खर असुर-प्रधान, भगिनि दीन सन्तोष बहु ॥

दो० छिन मेटहुँ उर-ताप तव, लखु मम तेज अनन्त ।
तीक्ष्ण अस्त्र पुनि लिय सहस-चौदह भट बलवन्त ॥ १८ ॥

मणि, प्रवाल-बहु साज समेतू ❋ 'खर' विचित्र रथ अद्भुत केतू
इत-उत[3] रवि-शशि सम उजियारा ❋ द्युति दमकति मणि-मुक्ता-हारा
अद्भुत स्यन्दन सुबरन साजी ❋ जोरे आठ पवनगति बाजी[4]
अगनित अस्त्र-शस्त्र पुनि लीना ❋ विजय-खंभ गहि खर आसीना

एक बाणे रामचन्द्र काटेन सकल ❋ खण्ड खण्ड हइल से मुद्गर मुषल
चतुर्द्दश बाणे राम पूरेन सन्धान ❋ चतुर्द्दश निशाचर त्यजिल परान
नेउटिया आसे वाण श्रीरामेर तूणे ❋ राक्षस विनाश हय श्रीरामेर गुणे
कृत्तिवास पण्डित विदित सर्व्वदिके ❋ पुराण शुनिया गीत रचिल कौतुके

श्रीरामेर सहित खर ओ दूषणेर युद्ध

चौद्दजन युद्धे पड़े शूर्पनखा देखे ❋ त्रास पेये कहे गिया खरेर सम्मुखे
जुझिवारे पाठाइला भाइ, चौद्दजन ❋ अपयश करिल न साधि प्रयोजन
जेइ चौद्द राक्षसे पाठाले रणस्थान ❋ रामेर बाणेते तारा हाराइल प्रान
खर बले देख तुमि आमार प्रताप ❋ घुचाइव एखनि तोमार मनस्ताप
लइया चलिल निज अस्त्र खरशान ❋ निशाचर चतुर्द्दश-सहस प्रधान
प्रवाल-प्रस्तर-छटा ताहे नानामणि ❋ विचित्र पताका-ध्वज रथेर साजनि
रथगुला चन्द्र-सूर्य्य जिनिया उज्ज्वल ❋ प्रवाल - मुकुता - हार करे झलमल
कनक रचिल रथ विचित्र निर्म्माण ❋ वायुवेगे अष्टघोड़ा रथेरे योगान
अस्त्र शस्त्र तावत् तुलिया रथोपर ❋ रथ-स्तंभ धरि उठे महाबली खर

१ वाण २ तरकस ३ इधर-उधर ४ घोड़े ।

ध्वज गृद्धिनि गिरि[1] असगुन कीना ❋ रथ गति मन्द, तुरग गति-हीना
घन सम दूषन-गर्जन घोरा ❋ हनौं राम पुनि लखनकिशोरा
असुर अपार कटक छबि छाई ❋ लखन हेरि बोले रघुराई

श्रीराम के साथ युद्ध मे दूषण का पतन

सैन-सोर श्रवनन नियराई ❋ सियहिं अन्त कहुँ राखहु जाई
मम बल दुगुन रहे तुम पासा ❋ किन्तु रनस्थल सिय अति त्रासा
बेगि गुफा राखहु सिय जाई ❋ मानि लखन आयसु-रघुराई
गये सुदूर; लखैं इत सर्वा ❋ जुरे सुरासुर नभ गन्धर्वा
कौतुक राम पराक्रम एका ❋ सहस चतुर्दस दनुज अनेका
'दूषन' डपटि कही रघुनाथा ❋ चहत मनुज, रन दानव-साथा
'दूषन' बचन मोद 'खर' पावा ❋ 'खर' षट-सहस सेन लै धावा
बल[2] समान, 'दूषन' रनरंगा ❋ युगुल सहस भट 'त्रिशिरा' संगा
चौदह सहस दनुज चहुँ सोरा[3] ❋ 'खर' सकोप, हुमकेउ प्रभु ओरा

दो० यथा सुशोभित सिंह परि, बिपुल शृगालन-वृन्द ।
सोहत निसिचर-निकर बिच, रघुपति रघुकुल-चंद ॥ १६ ॥

आचम्बिते गृधिनी पड़िल रथध्वजे ❋ ना चले रथेर घोड़ा चले मन्द-तेजे
मेघेर गर्ज्जने गर्ज्जे राक्षस दूषण ❋ रामेरे मारिबे आगे, पश्चाते लक्ष्मण
राक्षस धाइल यत परम कौतुके ❋ कृत्तिवास रामायण रचे मनःसुखे

श्रीरामेर सह युद्धे दूषणेर मृत्यु

श्रीराम बलेन, शुन सैन्य कलकलि ❋ सीता ल'ये लक्ष्मण, त्यजह रणस्थली
थाकिले आमार काछे हइते दोसर ❋ किन्तु हेथा थाकिले पावेक सीता डर
विलम्ब ना कर भाइ, चलह सत्वर ❋ सीताके राखह गिया गृहार भितर
एत यदि लक्ष्मणेरे वलिलेन रामे ❋ दूरेते लक्ष्मण सीता गेलेन सम्भ्रमे
देव-दैत्य-गन्धर्व्व आइल सर्व्वजन ❋ अन्तरीक्ष थाकिया सकले देखे रन
एका राम चतुर्द्दश सहस राक्षस ❋ केमने जिनिवे राम, बड़ह साहस
डाकिया श्रीराम, वले दूषन तखन ❋ मनुष्य हइया तोर मोर सने रण
दूषनेर वचन शुनिया खर हासे ❋ राक्षस हाजार-छय सहित आइसे
त्रिशिरार संगे दुइ हाजार राक्षस ❋ खर सैन्य यत, तत दूषनेर वश
चतुर्द्दश सहस्र राक्षस - कलकलि ❋ श्रीरामे रुषिया जाय खर महाबली
वेष्टित-राक्षसगण-मध्ये राम एका ❋ शृगाल-वेष्टित येन सिंह जाय देखा

१ गिर कर २ सेना ३ शोर, कुलाहल ।

अष्ट तुरग-रथ सारथि प्रेरे ❊ हने विषम 'खर' बान घनेरे
प्रभु सर साधि कीन सन्धाना ❊ खंड-खंड किय निसिचर-बाना
बरसावत सर दोउ धनु-वीरा ❊ अतिसय जर्जर दुहुन-सरीरा
आहत कीन परस्पर गाता ❊ युगुल गात चहुँ रक्त प्रपाता
जोरे चाप सहस पुनि सायक ❊ दनुजन्ह हने कोपि रघुनायक
मरे-मरे चहुँ परी पुकारा ❊ भगदर[1] निसिचर-कटक-मँझारा
सहस असुर पठये यमधामा ❊ सर-गन्धर्व गहेउ पुनि रामा
अखिल निसाचर रक्त नहाये ❊ भ्रमित[2], परस्पर रारि मचाये
एकहि एक घात प्रतिघाता ❊ षट-सहस्र खर-सैन निपाता
सैन-विहीन, शेष 'खर' धीरा ❊ 'दूषन', कुगति निहारति तीरा
लीन कमान, कीन रन घोरा ❊ महाशूल प्रेरेउ प्रभु ओरा
बहु सर राम तजैं तकि शूला ❊ छुवत शूल ते सब प्रतिकूला
अक्षय शूल, पूजि विधि, पावा ❊ वर-बिरञ्चि जग अमिट प्रभावा
राम निपुन-रन, युक्ति नवीना ❊ शूल सहित भुज खंडित कीना
चन्दन - युत दूषन - भुजदंडा ❊ भयेउ अचेत, गिरत भुइँ खंडा
दुसह पीर दूषन निष्प्राना ❊ देवन रघुपति-बिरद बखाना

सारथि चालाय रथ, ताहे अष्टघोड़ा ❊ रामेर उपरि फेले मारिल झकड़ा
सन्धान पूरिया राम छाड़िलेन बान ❊ काटिया खरेर वान कैला खान-खान
दुइ जने वाण वर्षे, दोंहे धनुर्द्धर ❊ दोंहेदोंहा विन्धि वाणे करिल जर्ज्जर
उभयेर गा रहिया रक्त पड़े स्रोते ❊ निज निज गात्र रक्त दुइ-वीर तिते
श्रीराम सहस्र वाण जूड़िया धनुके ❊ अति क्रोधे मारिलेन राक्षसेर बुके
निशाचरगण-मध्ये उठे कलकलि ❊ मरि मरि बलिया पलाय कतगुलि
सहस्र राक्षस पड़े श्रीरामेर वाणे ❊ जोड़ेन गन्धर्व अस्त्र राम धनुर्गुणे
सकल राक्षस वाणे हैल रक्तमय ❊ आपना आपनि कारो नाहि परिचय
आपना-आपनि करे निर्घात प्रहार ❊ खरेर हाजार छय राक्षस संहार
पड़िल सकल वीर, खर मात्र आछे ❊ सेनापति दूषण आइल तार काछे
आगु ह'ये प्रवेशिल आपनि संग्रामे ❊ महाशूल निक्षेप से करिल श्रीरामे
ये वाण छाड़ेन राम शूल काटिवारे ❊ शूले ठेकि पड़े, किछु करिते न पारे
पेयेछे अक्षय शूल बिधातार वरे ❊ त्रिभुवने सेइ वर अन्यथा के करे
वाणेते पण्डित राम, नाना बुद्धि घटे ❊ शूल सह दूषणेर दुइ हात काटे
दूषणेर दुइ हात चन्दने भूषित ❊ काटा गेल, पड़िल से हइया मूर्च्छित
ज्वालाय दूषण वीर त्यजिल परान ❊ देवगण श्रीरामेर करिछे बाखान

---

१ भगदड़ मची २ गंधर्व वाण के प्रभाव से भ्रम में विमूढ़।

दो० सुमन-वृष्टि सुरगन करहिं, जय दुन्दुभी बजाय।
कृत्तिवास, दूषन-मरन रहे राम-जय गाय ॥ २० ॥

श्रीराम के साथ युद्ध मे 'खर' की मृत्यु

छं० रन-खेतन दूषन जूझतही, खर कातर, नैनन नीर झरै।
'विन नायक सैन कियो रघुनायक', धाय के वीर प्रहार करै॥
कस राम न विक्रमधाम असुर, भट सों भट कोपि लरै अभिरै।
नभ अर्बुद-खर्बुद बान, चहूँ अँधियार, नहीं जग सूझि परै॥
ललकारि कहै 'खर', आजु लखौं तव बान-प्रताप कहा गिनती।
मम हाथ विनास ललार लिखेउ, इत आवन की उपजी कुमती॥
जहँ देव लुकान फिरैं भय सों, तहँ मानव-दर्प की काह गती।
सुनु दानव! प्रान हरौं तव आजु, सरोष कहेउ पुनि सीयपती॥

जो धनु-चाप दीन शरभंगा ※ सो सठ! अक्षय दिव्य निषंगा[1]
राम-कथन सुनि चाप-प्रतापा ※ 'खर' खल-हृदय कुसंसय ब्यापा
तासु त्रास लखि, प्रभु सर मारे ※ खर कोदण्ड[2] खण्ड करि डारे
टूट चाप, उपजी उर चिन्ता ※ अवर लीन धनु दनुज तुरंता
पुनि तकि बान-बुन्द झरिलाये ※ जल-थल-गगन बिपुल चहुँ छाये

कृत्तिवास रामायण गाहिल कौतुके ※ दूषणादि सेनानी पड़िल अरण्यके

श्रीरामेर सहित युद्धे खरेर मृत्यु

दूषण पड़िल, खर लागिल भाविते ※ कातर हइया वीर नेत्र जले तिते
हाते अस्त्र करिया धाइया आगुसारे ※ एत सेनापति मोर एका राम मारे
रामे देखि खर वीर अग्निर आकार ※ दशदिक् जलस्थल वाणे अन्धकार
अर्व्वुद खर्व्वुद वाण एड़िया से खर ※ डाक पाड़ि रामे वीर करिछे उत्तर
मानुष हइया तोर एत अहंकार ※ देवगण नाहि पारे, तुई कोन् छार
कत वाण मारिस्, अग्रेते याक् देखा ※ आमार हस्तेते तोर मृत्यु आछे लेखा
श्रीराम वलेन, खर, लव तोर प्राण ※ मुनिस्थाने पेयेछि अजेय धनुर्व्वाण
शरभंग दियाछेन ए अक्षय तूण ※ यत चाइ तत पाइ, नाहि हय न्यून
श्रीरामेर वचनेते लागे चमत्कार ※ त्रासे खर चिन्तिल संशय आपनार
त्रासित देखिया खरे राम एड़े वाण ※ काटिया खरेर धनु करे खान खान
काटा गेल धनुक, चिन्तित ह'ये खर ※ लइल धनुक आर अति शीघ्रतर
रामेर उपर करे वाण - वरिषन ※ जल - स्थल चतुर्दिक छाइल गगन

१ तरकश २ धनुप।

नाना अस्त्र अनन्त प्रकासा * 'जीतहुँ राम' अमित उल्लासा
भंजेउ दनुज चाप-भगवाना * धनु-अगस्त्य पुनि प्रभु संधाना[1]
आयुध दिव्य अलौकिक करनी * निसिचर-चाप गिरेउ कटि धरनी
स्वयं विष्णु लीन्हे कर बाना * खण्ड-खण्ड रथ-ध्वजा-निसाना
धरनि बिलोटत सारथि-सीसा * अनल बान छाँड़ेउ जगदीसा
हने प्रान तिन अष्ट तुरंगा * पुनि-पुनि असुर-चाप किय भंगा
'खर' अभिमंत्रि गदा हनि मारी * चलत तहाँ बरसत अगियारी
उगिलत अनल, बिटप सब जारे * गगन प्रकाश गुर्ज बिस्तारे
अगिनि शमन[2] जनि, गदा अनूपा * त्रिभुवन मानहुँ अनल-स्वरूपा
सो लखि 'आग्नेय' सर धारा * अन्तरिक्ष प्रति रघुपति मारा
विशिख[3] तजै गिरि सरिस अँगारा * कौतुक-गदा भई जरि छारा

दो० लखि अवसर तजि विपुल सर, खर-तन जर्जर कीन ।
दनुज-कलेवर, राम सर, बिन्धि रक्त रँगि दीन ॥ २१ ॥

खर निरस्त्र, हिय धरकत[4], धाई * चहेउ कुपित रघुपतिहिं चबाई
लीलहिं राम, हेतु 'खर' धावा * दिव्य बान रघुनाथ चलावा

नाना अस्त्रे दशदिक करिल प्रकाश * रामे जिनिलाम बलि मनेमने हास
ये धनुके रघुनाथ करिछेन रन * राक्षसेर वाणे ताहा हइल छेदन
ये धनुक दिलेन अगस्त्य मुनिवर * से धनुके सन्धान पूरेन रघुवर
स्ययं विष्णु रघुवीर पूरिला संधान * काटिलेन खरेर हातेर धनुर्व्वान
रथ-ध्वज-पताका करेन खण्ड-खण्ड * भूमिते लोटाय रणे सारथिर मुण्ड
अग्निवाण एड़ेन धनुके दिया चाड़ा * काटिलेन श्रीराम-रथेर अष्ट घोड़ा
रामेर दुर्ज्जय वाण तारा हेन छाटे * आरवार खरेर हातेर धनु काटे
मंत्र पड़ि खर वीर महागदा एड़े * यतदूर जाय गदा ततदूर पोड़े
गाछेर निकटे गेले गाछ सब ज्वले * आलो करि आसे गदा गगनमण्डले
अग्नि जले गदाते, नाहय शान्त वाणे * त्रिभुवन एकाकार, छाइल आगुने
आर वाण छाड़ेन श्रीराम मंत्र प'ड़े * पृथिवी छाड़िया वाण अन्तरीक्ष जोड़े
वाण मुखे ज्वले अग्नि पर्व्वत आकार * अग्निवाणे गदा तार हइल संहार
पाइलेन श्रीराम तखन अवसर * खरेर शरीर वाणे करेन जर्ज्जर
सर्व्व कलेवर तार तितिल शोणिते * रक्ते राँगा ह'ये वीर चाहे चारभिते
हाते अस्त्र नाहि आर, रथ हैते उले * रुषिया श्रीरामे वीर गिलिवारे चले
रामे गिलिवारे खर धाय महारोषे * श्रीराम ऐषिक वाण जूड़िलेन त्रासे

---

१ निशाना मारा २ शान्त ३ बाण ४ धड़कता था ।

गिरत बज्र जिमि पर्बत फारी ❋ तिमि सर निसिचर-अंग बिदारी[1]
निसिचर चौदह सहस-निकंदन ❋ सुरगन, जस गावत रघुनन्दन
वचन विरञ्चि, राम सन् कहहीं ❋ देव सदा तव मंगल करहीं
तव रन निरखि शिवहिं संतोषू ❋ सुरनाथहिं सब बिधि परितोषू[2]
वरुण कुबेर अष्ट - दिक्‌पाला ❋ प्रस्तुत प्रणवत दीनदयाला
तव प्रसाद स्वच्छन्द बिहारू ❋ सुरगन सुखी सहित परिवारू
चलि सिय-लखन राम-पद बन्दे ❋ सुखद वार्ता सकल अनन्दे
विक्षत गात-नाथ, सिय देखी ❋ नयन नीर, उर छोभ बिसेखी
रन, कौतुक बरनहिं रघुवीरा ❋ सुमिरि कैकयी, सीतहिं पीरा

रावण-शूर्पनखा संवाद

लखि रन-राम बिकल उर संका ❋ सूपनखा गवनी पुनि लंका
कुगति कहत, जहँ निसिचर-भूपा ❋ कुत्सित, नाक न कान, विरूपा
कहत निरखि जन, यह कुल-नासन ❋ खर-दूषन ग्रसि, ग्रसै दसानन
सोहत सभा भूप दसमाथा ❋ सुरन विराजत जिमि सुरनाथा
आसन निहित सचिव आसीना ❋ सूपनखा, तहँ दरसन दीना

बज्राघाते पर्व्वत येमन दुइ - चिर ❋ गाये प्रवेशिले वाण पड़े खर - वीर
चतुर्दश सहस्र राक्षस पड़े रणे ❋ श्रीरामेरे वाखाने आसिया देवगणे
विरिञ्चि वलेन, राम, कर अवधान ❋ सकल देवता करे तोमार कल्यान
हइलेन शंकर तोमार रणे सुखी ❋ महेन्द्र तोमाते तुष्ट तव रण देखि
कुवेर - वरुण आदि यत देवगण ❋ अष्टलोकपाल आदि करेन स्तवन
तोमार प्रसादे एवे बेड़ावे स्वच्छन्द ❋ यथा-तथा देव-देवी रहिवे आनन्द
श्रीरामे वन्देन गिया जानकी-लक्ष्मण ❋ करेन सकले वीर इष्ट संभाषण
अस्त्रक्षत देखिया रामेर कलेवरे ❋ जानकीर नेत्रनीर झरझर झरे
ताँहारे कहेन राम रण विवरण ❋ शुनि सीता कैकयीके करिल स्मरण

रावण-शूर्पनखा संवाद

रामेर संग्राम यत शूर्पनखा देखे ❋ शंकाकुला लंकाय चलिल मनोदुःखे
रावणे कहिते जाय आत्म-समाचार ❋ नाक-कान काटा तार वीभत्स आकार
जार काछे जाय खाँड़ी, सेइ भय पाय ❋ खेये खर-दूषणे रावणे खाइते जाय
सभा करि बसियाछे रावण भूपति ❋ सुरगण सहित जेमन सुरपति
वसियाछे निजनिज स्थाने मंत्रिगण ❋ हेनकाले शूर्पनखा दिल दर्शन

---

१ फाड़ दिया २ तृप्ति ।

दो० नाक न कान भयंकरी, जहँ लंकेस भुआल।
कहत सभा बिच दुर्बचन, सुख सोवत दसभाल ॥ २२ ॥

अहि-निसि रत कौतुक-शृंगारू ❋ दण्डक अखिल असुर संहारू
राम अकेल, कामिनी संगा ❋ साथ न सैन तुरंग - मतंगा[1]
एक राम सब दनुज निपाते ❋ सुनि बिबरन मुख-सूपनखा ते
कटक-वेष किमि बनहिं प्रवेसू[2]? ❋ अहह! बरनु, पूछत लंकेसू
को पितु? पुनि कहु तासु प्रतापू ❋ कस बिक्रम बल सायक-चापू
सुनु रावन, ते दसरथ-नन्दन ❋ बन भरमत पितु-सत्य निबाहन
तापस बेस, जदपि मुनि नाहीं ❋ अति कमनीय नारि तिन पाहीं
सहस चतुर्दस निसिचर कानन ❋ एक राम-सर सकल विदारन
राम-अनुज बल-लखन अपारा ❋ तिन सों समर न केहु निस्तारा
भामिनि - राम पद्मिनी रूपा ❋ विश्वमुग्ध कमनीय अनूपा
सिय छबि अतुल, रूप जग नाहीं ❋ रम्भादिक उर्वसी लजाहीं
नरपुंगव तुम पुरुष - समाजू ❋ तव अनुरूप तासु छबि साजू
करि छल राम-लखन भरमाई[3] ❋ हरहु बेगि, राखहु सिय लाई
जिमि कुल-दनुज दीन सन्तापू ❋ तिय-बिछोह परि बिनसहि आपू

नाक कान काटा तार मूर्त्ति खानि कालि ❋ सभा मध्ये रावणेरे देय गालागालि
शृंगार-कौतुके राजा, थाक रात्रि दिने ❋ राक्षस करिते नाश राम आइल वने
स्त्री-मात्र ताहार संगे, केह नाहि आर ❋ यत छिल दण्डकेते करिल संहार
हाती-घोड़ा नाहि तार, जानकी दोसर ❋ यतेक राक्षस मारे राम एकेश्वर
शुनि शूर्पनखार दुःखेर विवरण ❋ हाहाकार करिया जिज्ञासे दशानन
कतेक कटक तार, कि प्रकार वेश ❋ भयंकर वने केन करिल प्रवेश
काहार नन्दन राम, केमन सम्मान ❋ केमन विक्रमी से, केमन धनुर्व्वान
शूर्पनखा वले दशरथेर नन्दन ❋ पितृसत्य पालिया वेड़ाय वने - वन
तपस्वीर वेश धरे, नहे त तपस्वी ❋ संगे करि ल'ये भ्रमे परम रूपसी
चतुर्दश सहस्र राक्षस वने छिल ❋ एका राम सकलेरे संहार करिल
रामेर कनिष्ठ से लक्ष्मण महावीर ❋ तार सह समरे हइबे केवा स्थिर
रामेर महिषी सीता, साक्षात् पद्मिनी ❋ त्रैलोक्यमोहिनी-रूप नारी-शिरोमणि
सीतार रूपेर सम नाइ आर नारी ❋ ऊर्व्वशी, मेनका, रंभा हारे रूपे तारी
येमन महत् तुमि पुरुष समाजे ❋ तार रूप केवल तोमाते मात्र साजे
रामेरे भाँड़ाओ, आर भाँड़ाओ लक्ष्मणे ❋ आनह रमणीरत्न यत्ने एइ क्षणे
येमन सन्ताप दिल से राक्षस - कुले ❋ तेमन से मरुक सीतार शोकानले

१ घोड़े-हाथी २ कितनी सेना, कैसा वेष, वन क्यों आये ? ३ भटक कर।

सूपनखा - मुख सुनी कहानी ❋ सिय छबि उर-लंकेस समानी
सभा-सदन मन जुगुति बनावै ❋ किमि छलि राम, सिया हरि लावै

दो० शूर्पनखा रोदन मनौ, सीस मृत्यु दसकंध।
बिधि अच्छर भावी प्रबल, अकथ भाग्य निर्बन्ध ॥

सो० कोउ मन-मन मुसकान, सूपनखा विलपत निरखि।
भगिनि-कुगति धरि ध्यान, लंकापति समुझावहीं ॥ २३ ॥

रावण-मारीच परामर्श

दिवस एक दसमुख-रुख पावा ❋ सारथि तुरत बिमान सजावा
पुष्पक रथ बिज्ञान - प्रकासू ❋ स्वयं समीर[1] सारथी जासू
हीरा मुक्ता मानिक रत्ना ❋ सुबरन-साज खचित बहु यत्ना
रथ-छबि पुरत मनोरथ सारे ❋ अष्ट-तुरग कौतुक बिस्तारे
लंकेश्वर रथ दिब्य सुहावा ❋ विद्युत गति समान रथ धावा
देस, नदी - नद बहु उतराई ❋ सिन्धु पार शत योजन जाई
तहाँ श्याम-बट[2] बिटप विशाला ❋ अस्सी योजन मूल पताला
पद प्रकाण्ड[3] सत्तर, तरु-डारी[4] ❋ शत योजन चहुँ दिसि बिस्तारी
शाखा चारि सरिस गिरि-शृंगा ❋ जहँ ऋषि बालखिल्य मुनि संगा

शूर्पनखा यत बले, राजा सब शुने ❋ सुन्दरी सीतार कथा भावे मने-मने
युक्ति करे रावण वसिया सभास्थले ❋ रामे भाँड़ाइया सीता आनिव कि छले
विधातार माया नर बूझिते के पारे ❋ शूर्पनखा कान्दिल रावण बधिवारे
केह शूर्पनखार कथाय मन्द हासे ❋ गाइल अरण्य-काण्ड गीत कृत्तिवासे

रावण का मारीच से परामर्श

आर दिन दशानन आइल बाहिरे ❋ बुझिया राजार मन सारथि सत्वरे
आनिल पुष्पक रथ अपूर्व्व गठन ❋ से रथेर सारथि आपनि समीरन
हीरा-मुक्ता-माणिक्य प्रभृति रत्नगणे ❋ खचित, रचित कत संचित काँचने
मनोरथे ना आइसे रथेर सौन्दर्य्य ❋ अष्ट अश्व बद्ध ताहे, देखिते आश्चर्य्य
सेइ रथे आरोहण करे लंकेश्वर ❋ विद्युतेर प्राय रथ चलिल सत्वर
नाना देश नद-नदी छाड़िया रावन ❋ सागर लंघिया जाय शतेक योजन
श्यामवट-पादप योजन-शत डाल ❋ अशीति योजन मूल गियाछे पाताल
चारि डाल देखि येन पर्व्वतेर चूड़ा ❋ सत्तर योजन हय से गाछेर गोड़ा
तप करे वालखिल्य आदि मुनिगण ❋ मारीच उद्देशे तथा चलिल रावण

---

१ पवन २ श्याम पत्तों वाला वरगद ३ तना ४ शाखाएँ।

तप रत, तप-उपवन मारीचा ❋ निवसि करत तप मुनिगन बीचा
रावन रथी तपोवन आवा ❋ लखि मारीच त्रास उर छावा
काँपति सर्प दरस-उरगारी[1] ❋ जग जम-दरसन जिमि भयकारी
कह दसमुख, तुम दनुज-प्रधाना ❋ लंक न समरथ तुमहिं समाना
दस सहस्र गज हे बल-धारन ❋ सुर-गन्धर्व सदा भय-कारन
सिन्धु नाँघि इत तव बनदेसू ❋ आयेहुँ मम सिर कठिन कलेसू
दण्डकवन रजनीचर सारे ❋ राम अकेल ! सबन संहारे

दो० खर दूषन त्रिशिरा सुहृद, हा ! अपजस कर धाम ।
मम-तव जीवन रहत धिक्, सकल बिनासे राम ।। २४ ।।

सुपनेखहिं न नाक नहिं काना ❋ मनुज कीट कृत अस अपमाना
मानव छुद्र उपद्रव घोरा ❋ मैं पुनि मेघनाद सुत मोरा
लेहुँ न रिपु-करनी प्रतिकारू[2] ❋ तौ धिक् मम त्रिलोक-अधिकारू
सुहृद सुयोग्य ! शरन तव आजू ❋ सुनहु व्यथा, पुरवहु मम काजू
सुनी एक लेहि सुन्दरि नारी ❋ अकथ रूप-गुन छबि-उजियारी
तासु हरन, तव पाय सहाई ❋ दसन[3] जीभ मारीच दबाई
कस दुर्मति उपजी दसभाला ❋ कोहि कुमंत्र दीन्हेउ यहि काला

यथा तप करे से मारीच निशाचर ❋ रथे चापि गेल तथा राजा लंकेश्वर
मारीच पाइल भय रावनेरे देखि ❋ सर्प येन भीत हय गरुड़े निरखि
त्रास पाय लोक यथा यम दरशने ❋ मारीचेर त्रास तथा देखिया रावने
रावण मारीचे बले, तुमइ प्रधान ❋ लंकाय ना देखि पात्र तोमार समान
अयुत हस्तीर बल तोमार शरीरे ❋ देवता गन्धर्व्व सदा भीत तव डरे
बड़ दुःखे आइलाम तोमार गोचरे ❋ सागर लंघिया आसि वनेर भितरे
दण्डकारण्येते छिल यत निशाचर ❋ सबाकारे संहारिल राम एकेश्वर
त्रिशिरा-दूषन-खर आदि यत भाइ ❋ सबारे मारिल राम केह आर नाइ
धिक् धिक् आमारे, तोमारे धिक् धिक् ❋ तुमि आमि थाकिते ए कलंक अधिक
शूर्पनखा भगिनीर काटे नाक कान ❋ हइया मनुष्य-कीट करे अपमान
आपनि रावण आमि, पुत्र मेघनाद ❋ घटाइल क्षुद्र राम एतेक प्रमाद
ना करि इहार यदि आमि प्रतीकार ❋ त्रिलोकेर आधिपत्य विफल आमार
आजि लइलाम आमि तोमार शरण ❋ पात्रकार्य्य कर पात्र, करह श्रवण
सुनि तार परम सुन्दरी एक नारी ❋ रूप-गुण-कथा तार कहिते ना पारि

प्रानाधिक रामहिं सियरानी ※ हरन तासु, मनु लंक नसानी
रघुपति-रार[1] द्वार-यमधामा ※ तिन सों छल-बल एक न कामा
कुम्भकर्ण घननादिक जेते ※ सकल कुअँरगन जूझहिं तेते
अतुल रम्य जग लंका नगरी ※ शमन तात ! नतु उजरहि सगरी
बन्दौं पद, सुनु विनय हमारी ※ क्षमहु, लंक-जन-हित उर धारी
करि विवाद आनहु वैदेही ※ फरहिं विपति-घन लोक-सनेही
मंत्रि-कुमंत्र राज्य श्री-नासा ※ सचिव-सुमति तहँ सम्पति-बासा
मत्त गयन्द[2] बिबस उन्मादू ※ जरहि लंक दसकन्ध - प्रमादू
सकल भुवन रघुपति-गुन-गाना ※ तासु बिरह पितु तजे पराना

दो० सदा राम-उर सिय बसै, रमत न प्रभु-मन अन्त ।
सीता के मन एक छबि, सदा चरन - भगवन्त ॥ २५ ॥

सकल सुवन तव सकुशल रहहीं ※ सुहृद-सगोत मोद नित करहीं
तजि सिय-हरन अमंगल-जोगू ※ लहु परमायु विपुल सुख भोगू
भक्ति अनन्य जासु हरि-चरना ※ रावन ! तव निष्फल सिय-हरना
बिह्वल निरखि रूप परनारी ※ सकुल बिनास न रञ्च[3] बिचारी
भटकहिं राम, धरहु मृग-बेसू ※ छलि, तिय हरहिं, कहेउ लंकेसू

प्राणाधिका रामेर से जानकी सुन्दरी ※ हरिले ताँहारे कि रहिवे लंकापुरी
राम सह विवादे जाइवे यमपुरी ※ श्रीरामेर निकटे ना खाटिबे चातुरी
कुम्भकर्ण मेघनाद हइबे बिनाश ※ मरिबे कुमारगण, हवे सर्व्वनाश
मनोहर लंकापुरी, नाहिक उपमा ※ सृष्टि नष्ट ना करिह, चित्ते देह क्षमा
पाये पड़ि लंकानाथ, करि हे मिनति ※ क्षमा देह, रक्षा कर लंकार बसति
आनह यद्यपि सीता करिया विवाद ※ सवाकार उपरेते पड़िबे प्रमाद
कुमंत्रीर बचनेते राजलक्ष्मी त्यजे ※ सुमंत्री मंत्रणा दिले लक्ष्मी तारे भजे
छुटिले ये मत्त हस्ती, ना रहे अंकुशे ※ लंकापुरी तेमति मजिबे तव दोषे
विदित रामेर गुण आछे सर्व्वलोके ※ प्राण दिल दशरथ राम-पुत्र-शोके
सीता विना रामेर ना जाय अन्ये मन ※ सीतार श्रीराम - पदे मन:समर्पण
तोमार कुमार सब थाकुक कुशले ※ ज्ञाति-पात्र तोमार थाकुक कुतूहले
बहुभोग करिबे, हइबे चिरजीवी ※ आनिते ना कर मने श्रीरामेर देवी
राम-विने सीतादेवी अन्ये नाहि भजे ※ तबे तारे रावण, हरिबे कोन् काजे
परस्त्री देखिले तुमि हओ बड़ सुखी ※ सवंशे मरिवे राजा, पाछू नाहि देखि
राजा बले, मारीच हरिन हओ तुमि ※ भाण्डाइया रामेरे हरिब सीता आमि

१ वैर-लड़ाई २ हाथी ३ किञ्चित भी ।

जो तव संग चलहुँ मृगगाता ❋ प्रथम मोर, पुनि तोर निपाता
सुफल न काज, बिपति बहु बाधा ❋ उचित न प्रभु सन तव अपराधा
भल-अनभल सुजान दृढ़-धर्मा ❋ पूँछि बिभीषन, तजहु अकर्मा
बिज्ञ धर्म-मति त्रिजटा तीरा ❋ लहि मति हरहु नारि-रघुवीरा
राम न मानव, विष्णु सरूपा ❋ नतरु अतुल विक्रम केंहि रूपा
भगिनि-कुगति उर छोभ न लाई ❋ अगनित दनुज-बिनास भुलाई
त्रिशिरा-खर-दूषन तजि पीरा ❋ बिलसहु सुख निज रच्छि सरीरा
चौदह सहस दले, तिन नारी ❋ छलि, सवंश तव प्रानन-हारी
तव बल-तेज विदित दसभाला ❋ कहँ तुम पुनि कहँ राम कृपाला
निज मुख जस[1] बरनहु, उत रामा ❋ तुम सम बहु जीते बलधामा
नारि, सुवन तजि सुवरन लंका ❋ करहुँ इतै तप, पुनि प्रभु-शंका

सो० तजहुँ बिबस तव त्रास, जो रघुपति ढिग जाइहौं ।
निश्चित मोर बिनास, यहि कारन, हे लंकपति ! ॥

दो० जाहु धाम सिय-लोभ तजि, सुनत रोष दसमाथ ।
कृत्तिवास पण्डित रचेउ, कथा विमल रघुनाथ ॥ २६ ॥

मारीच बले मृगवेशे जाव ताँर काछे ❋ आनेते आमार मृत्यु, तव मृत्यु पिछे
कार्य्यसिद्धि ना हइवे, पड़िवे संकटे ❋ अपराध ना करिह रामेर निकटे
परिणाम भाल-मन्द विभीषण जाने ❋ जिज्ञासा करिह से धार्म्मिक विभीषणे
धार्म्मिका त्रिजटा आछे, बुद्धिते पण्डिता ❋ यदि वले आनिते से, तबे आन सीता
मनुष्य नहेन राम, स्वयं त्रिविक्रम ❋ नतुवा अन्येर कार एत पराक्रम
मने ना करिह शूर्पनखार अवस्था ❋ मरिल राक्षस बहु, ताहाते कि आस्था
दूषण-त्रिशिरा-खर लागि नाहि दुःख ❋ आपनि बाँचिले जे भुजिबे नाना सुख
चतुर्द्दश - सहस्र राक्षस जेइ मारे ❋ सवंशे मरिबे राजा नारिबे[2] ताहारे
तोमार विक्रम जानि, शुन लंकेश्वर ❋ श्रीरामे तोमाय देखि अनेक अन्तर
आपन-विक्रम तुमि बाखाओ आपनि ❋ तोमा हेन लक्ष-लक्ष जिने रघुमणि
छाड़िलाम भार्य्या-पुत्र स्वर्ण-लंकापुरी ❋ तपस्वी हइया तवू श्रीरामेर डरि
तथापि तोमार स्थाने नाहिक एड़ान ❋ पाठाओ रामेर काछे नाशिते परान
आमार वचन तुमि शुन लंकेश्वर ❋ सीता-लोभ छाड़िया चलिया जाह घर
यत वले मारीच, रावण तत रोषे ❋ रचिल अरण्यकाण्ड द्विज कृत्तिवासे

---

१ यश २ पराजित न कर सकोगे ।

रावण को मारीच का उपदेश

भेषज[1] अरुचि, काल जहि सीसा ❊ सुनी न, कोपि कहेउ दससीसा
कस कुबुद्धि, दुर्मति मारीचा ❊ मनुज प्रसंसि, कहति मोहिं नीचा
शठ पठवहुँ सम्प्रति[2] यमलोकू ❊ डोलति धरा सुयश चहुँ लोकू
का नर! बिजित सुरासुर नाना ❊ मम आगम तैं कृत अपमाना
मनुज राम बल-बुद्धि-बिहीना ❊ मम सम्मुख जस बरनन कीना
हीन दनुज कुल, मानव-गाथा! ❊ गावत अधम, फिरेउ तव माथा
जो पशुपति[3] लौं करहिं निषेधू ❊ तबहुँ न सीय-हरन अवरोधू
भरमित[4] राम दूर करि देही ❊ सूने[5] पाय हरहुँ बैदेही
रूप कुरंग चलहु मम संगा ❊ भय न त्रास नहिं जुद्ध-प्रसंगा
पुनि मारीच सुमंत्र प्रकासा ❊ आगम-सिय तव सकुल बिनासा
अब लौं हरन कीन बहु नारी ❊ यहि अवसर न तोर निस्तारी[6]
पुत्र कलत्र बन्धु परिवारा ❊ सुहृद सकल बिनसहिं यहि बारा
बनिता सकल नसावन-नारी ❊ तजि,[7] पुर चलहु सुभट बलधारी
सागर - दर्प वृथा दससीसा ❊ बोरहिं स-कुल सिन्धु जगदीसा

रावणेर प्रति मारीचेर उपदेश

औषध ना खाय, जार निकट मरण ❊ यत वले मारीच, ता' ना शुने रावण
रुषिया रावण कहे मारीचेर प्रति ❊ कुवुद्धि घटिल तोर शुन रे दुर्म्मति
नरेर गौरव कर मन्द वलि मोरे ❊ आमि यदि मारि तोरे, के राखिते पारे
आमार प्रतापे सदा कम्पिता मेदिनी ❊ मनुष्येर किवा कथा, देव-दैत्ये जिनि
आसिलाम तव घरे, कर तिरस्कार ❊ मोर अग्रे मनुष्येर कर पुरस्कार
बल-बुद्धि-हीन राम हय नर जाति ❊ निशाचर कुले तुमि राखिले अख्याति
निषेध करेन यदि देव पंचानन ❊ तथापि आनिव सीता, ना हय खंडन
भाण्डाइया रामेरे लइया जाह दूरे ❊ हरिया आनिव सीता, पेये शून्य पुरे
आमार सहित जावे, तोमार कि भय ❊ युद्ध ना करिब आमि देखह निश्चय
शुनिया मारीच ताहा बलिल वचन ❊ आनिले सीतारे हबे सवंशे मरण
ह'रेछ अनेक नारी पेयेछ निस्तार ❊ ना देखि निस्तार राजा, हरिले एवार
पुत्र मित्र एकत्र वान्धव परिवार ❊ एइवार सवाकार हइबे संहार
एक नारी आनिया मजावे यत नारी ❊ एइ लोभ छाड़ि फिरि जाह लंकापुरी
सागरेर दर्प कर, सागर कि करे ❊ सवंशे तोमारे राम डुबावे सागरे

१ औषधि २ इसी समय ३ शंकर ४ भटके हुए ५ एकान्त ६ छुटकारा
७ एक नारी लाकर सारी स्त्रियों से हाथ धोना पड़ेगा, इसलिए सीता की कामना छोड़कर लंका लौट चलो।

प्रथम मरहुँ हरि-दरसन पाई * पुनि सबंस दसकन्ध नसाई
राम-लखन सों करि छल धारन * तबहुँ न संकठ होय निवारन

दो० मम माया उपवन तजैं, जायँ दूरि जदि राम।
तबहुँ अकेल न जानकी, लखन बिराजत धाम ॥ २७ ॥

अतुल बीर लछिमन जेहि पाहीं * तहँ प्रवेस-समरथ जग नाहीं
जो कुछ और करहु मनमानी * तजहु आस सिय, भट अभिमानी
सबन जनावहु चलि निज धामा * उपजी सुमति, तजेहु दुष्कामा
पुनि संकल्प अटल जदि तोरा * कुसमय[1] कथन बिसूरेउ[2] मोरा
राजा-सचिव युक्ति मिलि कीना * उत्तर शीघ्र हेलि रथ दीना

मारीच का माया-मृग-रूप धारण

नभ दसमुख - मारीच सुहाये * रथ तजि दण्डक बन दोउ आये
सुनु मारीच, कहेउ दसकंधर * छबि माया-मृग धरहु मनोहर
कौतुक छिनहिं भयेउ मृगरूपा * सुबरन - गात सुचित्र अनूपा
मृदु नवनीत सरिस तेहि अंगा * चौपद खुर छबि धवलित रंगा
शृंग[3] प्रवाल[4] अलोक दिवाकर * ओंठ इन्दु, मनु रम्य निशाकर

आगेते मरिब आमि राम-दरशने * पश्चाते मरिबे तुमि, परे पुरीजने
श्रीराम-लक्ष्मणे भाण्डाइब कि मायाय * ना देखि उपाय किछु ठेकिलाम दाय
आमार मायाय राम यदि छाड़े घर * एका ना रहिबे सीता, थाकिबे सोदर
जे घरे थाकिबे वीर सुमित्रानन्दन * से घरे प्रवेश करे हेन कोन् जन
यथा-तथा जाओ तुमि बलि लंकेश्वर * ना कर सीतार चेष्टा चलि जाह घर
हरिते गेलाम सीता, ना हरिनु ताय * देशे गिया एइ कथा जानाह सबाय
यदि सीता आनिते नितांत कर मन * परिणामे मम कथा करिबे स्मरण
राजा पात्र करे युक्ति ह'ये एकमति * रथे चापि उत्तरेते चले शीघ्र गति
फूलियार कृत्तिवास गाय सुधाभाण्ड * रावणेरे मजाइते विधातार काण्ड

मारीचेर माया-मृगरूप धारण

रावण मारीच सह चलिल गगने * उत्तरिल दोंहे गिया दण्डक कानने
मारीचेर कर धरि कहे लंकेश्वर * मृगरूप धर तुमि देखिते सुन्दर
मृगरूप धरिल मारीच निशाचर * विचित्र सुचित्र तार स्वर्ण कलेवर
नवनीत सदृश कोमल कलेवर * श्वेतवर्ण चारि खुर देखिते सुन्दर
दुइ शृंग तार येन प्रवाल-प्रस्तर * उज्ज्वल बिम्बिक तार येन दिवाकर

१ बुरा फल प्राप्त होने पर २ याद करना ३ सींग ४ मूंगा के समान।

त्रिभुवन अतुल समुज्ज्वल काया ※ कञ्चनमय प्रदीप्त मृगमाया
सुबरन बिच-बिच कज्जल-धारी[1] ※ रक्तिम जीभ चमक रतनारी
रोम रोम दमकत मनु मोती ※ लोचन युग दीपित मणि-जोती
चपला धौं रतनन-उजियारी ※ कपट-बेस खल माया धारी

मारीच-बध

मृग छवि मुग्ध, रुकेउ बन रावन ※ प्रकट कपट-मृग चहुँ दिसि धावन
घूमि लखत निज सुन्दरताई ※ पहुँचेउ जहाँ सीय-रघुराई

दो० मञ्जुल मूर्ति बिराजहीं, उपवन सीता-राम।
दरस दीन तहँ कपट-मृग, रूप नयन-अभिराम ॥ २८ ॥

छं० रजनीचर-बंस-बिनासन औ, सिय सागर-दुःख अथाह परै।
मृग-कंचन सिर्जि बिरंचि कियो, जिमि देवन की विपदा निवरै[2] ॥
जदि आयसु नाथ मिलै तौ कहौं सिय-जानि सौं बानि-सुधा निसरै[3]।
मृग-चर्म कुतूहल पर्णकुटी, तेहि आसन चित्त प्रमोद भरै ॥

सादर सुनि सिय-बचन ललामा ※ लखन निहारि कहेउ श्रीरामा
हरिन बिचित्र तात इत आवा ※ चित्र अतिव रमनीक सुहावा

जिनिया त्रैलोक्य स्वर्णमृग मनोहर ※ दुइ ओष्ठ शोभा पाये येन निशाकर
स्थाने-स्थाने रांगा, मध्ये कज्जलेर रेखा ※ रांगा जिह्वा मेले, येन रतन झलका
लोमावलि देखि येन मुकुतार ज्योति ※ दुइ चक्षु ज्वले येन रतनेर बाति
नाना माया धरे दुष्ट मायार पुतलि ※ रत्नेर किरण किबा शोभित बिजली
मृगरूप देखिया रावण राजा हासे ※ गाइल अरण्यकाण्ड-गीत कृत्तिवासे

मारीच-बध

वन-मध्ये लुकाइया रहिल रावण ※ आलो करि चले मृग रत्नेर किरण
देखिया आपन मूर्ति आपनि उलटे ※ चलिते चलिते गेल रामेर निकटे
राम-सीता बसिया आछेन दुइ जन ※ सेइ खाने मृग गिया दिल दरशन
राक्षस वंशेर ध्वंस करिवार तरे ※ डुबाइते जानकीरे विपत सागरे
देवगणे विपदे करिते परित्राण ※ करिला विधाता हेन मृगेर निर्म्माण
श्रीरामे बलेन सीता मधुर वचन ※ अनुमति हय यदि करि निवेदन
एइ मृगचर्म्म यदि दाओ भालवासि ※ कुटीर कौतुके राम बिछाइया बसि
शुनिया सादरे राम सीतार वचन ※ डाक दिया लक्ष्मणेरे बलेन तखन
अद्भुत हरिण भाइ, देख विद्यमान ※ अपूर्व्व सुन्दर रूप काहार निर्म्माण

१ काली रेखाएँ २ निवारण हो ३ निकले।

बिपुल चन्द्र - छबि गात सुहाई ❋ किरन - प्रभा रोमावलि छाई
अगिनि-लपलपी कुंकुम-रसना[1] ❋ लोचन मञ्जु नखत जिमि गगना
वर्ण-प्रवाल[2] युगुल लघु शृंगा[3] ❋ कर्ण रम्य दुति लखहु कुरंगा[4]
यहि मृग - चर्म मुग्ध बैदेही ❋ करहु विचार लखन मन एही
गति-बिधि हरिन-सुरूप निहारी ❋ लखन प्रभुहिं प्रति गिरा उचारी
मुनि बरनेउ, बन असुर-निकाया ❋ स्वारथ हेत करत बहु माया
करि मन मुग्ध सबन भरमाई ❋ पियत रक्त पुनि गात चबाई
फसैं सकल तिन फन्द अनूपा ❋ धरत बिबिध, खल, माया-रूपा
कौतुक मृग यहि सम जग नाहीं ❋ निश्चय असुर-कपट यहि माहीं
कै मारीच कि सहज कुरंगा ❋ सोचनीय प्रभु! प्रथम प्रसंगा
कुशलबुद्धि जस लखन बतावा ❋ घटित भयेउ सब आगे आवा
इत मारीच दनुज केहि हेतू ❋ आगम तात! कहेउ रघुकेतू
बध-मारीच न भय द्विजघाता ❋ जिमि अगस्त्य बातापि निपाता
जो कोउ अन्य, लखन! निसि-चारी ❋ मारि तपोवन - सूल निवारी

दो० जो न असुर, मृग-मञ्जु तौ, धरि पालहिं, अति प्रीत।
नतरु मारि, आवहुँ इतै लहि मृगचर्म पुनीत ॥ २९ ॥

दुइ पाशे शोभा करे चन्द्रेर मण्डली ❋ धवल किरन येन गाये लोमावली
रांगा जिह्वा मेले, येन अग्नि हेन देखि ❋ आकाशेर तारा येन शोभे दुइ आँखी
दुइ शृंग अल्प देखि प्रवालेर वर्ण ❋ रूपे आलो करितेछे, रम्य दुइ कर्ण
जानकी चाहेन एइ हरिणेर चर्म्म ❋ देखि बुझ लक्ष्मण, इहार किवा मर्म्म
लक्ष्मण मृगेर रूप करि निरीक्षण ❋ श्रीरामे बलेन, किछु प्रवोध वचन
मायावी असुर शुनियाछि मुनि मुखे ❋ पातिया मायार फाँद आपनार सुखे
रूपे भुलाइया आगे मन सवाकार ❋ वने गिया रक्त माँस करये आहार
नाना माया धरे दुष्ट मायार पुत्तलि ❋ आमा सवे भांडिवारे पाते महाजालि
अवश्य राक्षस आछे सहित इहार ❋ नतुवा न देखि हेन मृगेर संचार
भालमते इहा आगे करिब निर्णय ❋ मारीचेर माया कि स्वरूप मृग हय
लक्ष्मण सुवुद्धि अति, वुद्धि नाहि टुटे ❋ यत युक्ति बलिलेन, सकलि से घटे
लक्ष्मणेर वचने कहेन रघुवीर ❋ मारीच आइल, किसे कर भाइ स्थिर
यद्यपि मारीच हय ब्रह्मवधे पापी ❋ मारिब ताहारे, येन अगस्त्य वातापी
से ना हय यद्यपि राक्षस अन्यजन ❋ मारिया करिब निष्कण्टक तपोवन
राक्षस ना हय यदि, हय मृगजाति ❋ रत्न मृग धरिले पाइव मत:प्रीति
धरिते ना पारि यदि मारिब पराने ❋ मृगचर्म्म लइया आसिव एइखाने

---

१ केसर के रंग की जीभ २ मूँगा के रंग के ३ सींग ४ मृग।

लौटहुँ करि आखेट कुरंगा * करहु चौकसी रहि सिय संगा
सदा सचेत, सीख हिय माहीं * परै न तात बिपति परछाहीं
सुनि तरु-ओट रावनहिं भावा * यहि अवसर सिय-हरन सुहावा
भावी बिधि-अच्छर अनुकूला * सिय सम सतिहिं दुसह दुख-सूला
उपवन लखन राखि, रघुनाथा * मृग अनुसरत, बान-धनु हाथा
इत प्रभु-सर उत दसमुख-त्रासा * भजे[1] मरीच न प्रानन आसा
हनहिं राम नतु बधैं दसानन * आजु घरी मम प्रान नसावन
मरन - राम - पद मंगलहेतू * निसिचरपति-कर नरक-निकेतू
खल-गति सिथिल, शंक उर भारी * धरत पैग पुनि भजत पिछारी
छन समीप, छन दूरि कुरंगा * रचत विपुल छल नाना रंगा
ओझल[2] कबहुँ, कबहुँ नियराई * दुरत अनुसरत लखि रघुराई
धरहिं कान धरि, लेहिं न प्राना * मृग तन, प्रभु न बान संधाना
किन्तु निरखि कञ्चनमृग-माया * दनुज प्रतीत भई रघुराया
कबहुँ दरस, अदरस छल रूपा * दानव खल मारीच अनूपा
दिब्य बान रघुपति संधाना * लगेउ हृदय सो बज्र समाना
निसिचर प्रकट पलोटत[3] धरनी * दुसह बेदना जात न बरनी

यावत् मारिया मृग नाहि आसि घरे * तावत् लक्ष्मण, रक्षा करह सीतारे
आमार बचन कभु ना करिह आन * प्रमाद न पड़े येन, ह'यो सावधान
वृक्ष आड़े थाकिया रावण सब शुने * मने भावे जानकीरे हरिब एक्षणे
यखन या' हबे ताहा विधिर लिखन * सीताहेन सती दुःख पान से कारण
श्रीराम करेन सज्जा, हाते धनुःशर * यान मृग मारिते लक्ष्मणे राखि घर
श्रीरामेरे देखिया मारीच भावे मने * पलाइला गेले मोरे मारिवे रावणे
आमारे मारिबे राम नतुवा रावण * आमार कपाले आजि अवश्य मरण
वरञ्च रामेर हाते मरण मंगल * रावणेर हाते मृत्यु नरक केवल
मारीच सशंक ह'ये जाय धीरे धीरे * आगे धाय, पिछे जाय, चाय फिरेफिरे
क्षणे जाय, क्षणे चाय, क्षणे हय दूर * नानारंगे चले मृग मायाय प्रचुर
क्षणेक निकटे जाय, क्षणेक अन्तरे * श्रीराम निकटे गेले पलाय से दूरे
प्राणे मरिवेक मृग, न मारेन वाण * निकटे पाइले मृग धरि दुइ कान
क्षणेक चिन्तिया राम बुझेन कारण * स्वरूपतः मृग नहे हबे दुष्ट जन
क्षणे अदर्शन हय क्षणे मृग देखि * मायारूप धरियाछे मारीच पातकी
ऐषीक विशिख राम पूरेन संधान * मारीचेर बुके बाजे बज्रेर समान
वाणाघाते मारीच से पड़िल अन्तरे * राक्षसेर मूर्त्ति धरि हाहाकार करे

---

१ भाग कर २ गायब ३ जमीन पर लोटने लगा।

दो० राम तुल्य स्वर, हाँक दिय, अन्तहुँ हित-लंकेस ।
अहह दनुज! धावहु लखन! नतरु प्रान मम सेस ।। ३० ।।

राम-गुहार[1] लखन सुनि आवैं ※ सिय तजि कुटी, बन्धु हित धावैं
मन मारीच जुगुति यह धारी ※ लखन! लखन! भरि कण्ठ पुकारी
सो सुनि राम बिकम्पित गाता ※ प्रथम, असुर छिन माँहि निपाता
मन ससंक सायक कर लीन्हे ※ उत सिय-ओर तुरत पग दीन्हे

सीता हरण

परी निसाचर-धुनि सिय काना ※ माया-स्वर रघुनाथ-समाना
आरत वचन न संसय एही ※ लखनहिं हेरि कहत बैदेही
बिकल बन्धु तव दानव-त्रासा ※ गमनहु तुरत, लखन प्रभुपासा
बोले लखन, न कछु भयकारी ※ आवैं बेगि राम मृग मारी
कहँ रघुपति! कहँ आरत बानी! ※ हेतु न, मातु! कहा अकुलानी
शिवधनु-भंग तुम्हैं सुधि नाहीं ※ हनै राम, भट को जग माहीं
प्रानन परे न कातर बानी ※ निश्चय यह न राम मुख-बानी
उपवन सून, न कोउ तव तीरा ※ तजब न उचित, मातु मोहि पीरा

तखन मारीच करे रावणेर हित ※ रामेर डाकेर तुल्य डाके आचम्बित
आइस लक्ष्मण झाट, कर परित्राण ※ राक्षसे मिलिया भाइ लय मोर प्राण
मारीच भाविल इहा, डाकिले एमनि ※ रामेर वचन मानि आसिबे एखनि
'लक्ष्मण-लक्ष्मण' बलि डाके उच्चैःस्वरे ※ शुनिया रामेर कम्प हय कलेवरे
मारीच बुकेर वाण खसे टान दिते ※ मारीचेरे संहारिया वाण ल'ये हाते
सीतार निकटे राम चलेन त्वरिते ※ कृत्तिवास मारीच-वध गाय अरण्येते

रावण कर्त्तृक सीता-हरण

दूरेते राक्षस करे रामतुल्य ध्वनि ※ राक्षसेर मायाय रामेर शब्द शुनि
हेथा सीता शुनिया से करुण वचन ※ बलिलेन, झाट जाओ देवर लक्ष्मण
आर्त्तस्वरे श्रीराम जे डाकेन तोमारे ※ देख गिया ताँहारे कि राक्षसेते मारे
लक्ष्मण बलेन, नाइ श्रीरामेर भय ※ मृग मारि आसिबेन, किसेर विस्मय
श्रीरामेर मुखे नाइ कातर वचन ※ एत व्यस्त हओ माता, किसेर कारन
रामेरे मारिते पारे, नाहि कोन् जन ※ तुम कि जान ना देवि, धनुक-भंजन
रामेर वचन देवि, आमि नाहि शुनि ※ प्राण गेले रामेर कातर नहे वाणी
कारे राखि तोमार निकट केवा रहे ※ शून्य घरे थाका तव उपयुक्त नहे

---

१ पुकार ।

उर अधीर सिय अति रिस-पागी ❋ कुवचन कहन लखन प्रति लागी
बन्धु - बिमातन चाल बिरानी[1] ❋ मम प्रति तव दुर्मति मैं जानी
भरतहिं राज, हरहु तुम नारी ❋ भरत संघ अभिसन्धि[2] तुम्हारी
मेटि राम, यहि छन मम आसा ❋ साध, बुझावन चहउ पिपासा

दो० आन पुरुष छाँही परे, तजहुँ प्रान, सुनि बैन ।
परमधार्मिक, विमलमन, लखनलाल बेचैन ॥ ३१ ॥

जलचर थलचर जे नभचारी ❋ साखी ! सिय दुर्वचन उचारी
सीख न तोष, करत पुनि रोषू ❋ नेउतत सिय बिनास निज दोषू
निकसि लखन चहुँ रेख खँचाई ❋ जेहि उलंघि कोउ कुटी न आई
देवन सौंपि, राम-पद ध्याई ❋ लखन, सियहिं पुनि विनय सुनाई
आयसु देहु, छमा करु माई ❋ द्रवित नैन सिय करुना छाई
चले प्रणम्य लखन, विधि वामा ❋ बिटप ओट रावन बलधामा
तापस बेस सुअवसर पाई ❋ धरि छल-रूप सिया ढिग जाई
झोरी, दण्ड - कमण्डल रूपा ❋ भगवा[3] बसन सुरूप अनूपा
मधुबयनी मृगनयनि ललामा ❋ सीय-छटा लखि उपजा कामा

प्रबोध ना माने सीता ह'ये उतरोली ❋ शिरे घा हानेन सीता देन गालागाली
वैमात्रेय भाइ कभू नहे त आपन ❋ आमा प्रति लक्ष्मण, तोमार बुझि मन
भरत लइल राज्य तुमि लओ नारी ❋ भरतेर संगे खड़ आछये तोमारि
मनेर वासना कि साधिवे एइ वेला ❋ आमार आशाते कि रामेरे कर हेला
अपर पुरुषे यदि जाय मम मन ❋ गलाय काटारि दिया त्यजिव जीवन
लक्ष्मण धार्म्मिक अति मने नाहि पाप ❋ सकलेरे साक्षी करे पेये मनस्ताप
स्थलचर जलचर अन्तरीक्षचर ❋ सबे साक्षी हओ, सीता बले दुरक्षर
प्रबोध न माने सीता आरो बले रोषे ❋ आजि मजिवेक सीता आपनार दोषे
गन्ती दिया बेड़िलेन लक्ष्मण से घर ❋ प्रवेश ना करे केह घरेर भितर
स्वयं विष्णु रघुनाथ, ताँर पत्नी सीता ❋ शून्य घरे राखि ओहे सकल देवता
आमारे विदाय कर सीता ठाकुराणी ❋ आर किछु ना वलिह दुरक्षर वाणी
शिरे घात हाने सीता, नेत्र जले तिते ❋ सीतारे, प्रणमि जान लक्ष्मण त्वरिते
हइल विमुख विधि चलेन लक्ष्मण ❋ थाकिया वृक्षेर आड़े देखिछे रावण
एतक्षणे रावणेर सिद्ध अभिलाष ❋ तपस्वीर वेश धरि जाय सीता पाश
भिक्षा झुलि करे धरे स्कन्ध धरे छाति ❋ सकल वसन रांगा, धरे, नाना गति
परम सुन्दरी सीता वचन मधुर ❋ ताँर रूप देखिया, रावण कामातुर

१ सौतेले भाइयों की रीति ही गैरो सी होती है २ साँठ-गाँठ ३ गेरुए ।

रसमय करत मधुर सम्भाषू * केहि कुल पुनि केहि देस निवासू
केहि दुहिता केहि प्रानपियारी * मनुज न, प्रतिमा कनक-सवाँरी
लखि उरोज-छबि, छबि मन मोहा * तव तन रम्य बसन भल सोहा
ब्याघ्र-सिंह दण्डक बनवासू * केहि बल तहँ सुन्दरी-निवासू
सुनि तपसिहिं निज कथा बखानी * अमिय[1] सनी सिय की मधुवानी
जनक-सुता सीता मम नामा * दशरथ-बधू, नाथ मम रामा
लखनलाल लाये फल नाना * तव अर्पन, द्विज! कीजिय पाना

दो० अतिथि-भक्त रघुबंसमणि, अतिथिन तिन अति प्रीत ।
लहैं परम सुख पाय तव, मुनिवर! दरस पुनीत ॥ ३२ ॥

कस सिर जटा कहहु मुनिकेतू * नाम, जाति भिक्षाटन-हेतू?
यहि बिधि सुनि वृतांत-वैदेही * लंकापति निज परिचय देही
अग्रज मम कुबेर धनधामा * मुनिन प्रकट मम रावन नामा
बन तप करत अवधि बहु बीती * लहि तव दरस अतुल मन प्रीती
असन[2] गिरिस्त समादर करहीं * लै फल-मूल मोद मन भरहीं
आजु प्रथम दर्शन तव पाहीं * लै भिक्षा निज आश्रम जाहीं
भइ अबेर[3] जदि करहु बिधानू * आजु पुण्य-तव दान स्नानू

रावण मधुर वाक्ये सीतारे सम्भाषे * कोन जाति नारी, तुमि थाक् कोन देशे
काहार झियारी तुमि कार प्रियतमा * मानवी ना हओ तुमि, सोनार प्रतिमा
सुगठित दुइ स्तन शोभा करे हारे * उत्तम बसन शोभे तोमार शरीरे
विषम दण्डक वने हिंस्र व्याघ्र वैसे * एमन सुन्दरी थाक केमन साहसे
परिचय देन सीता तपस्वीर ज्ञाने * अमृत सिञ्चिल येन मधुर बचने
जनकनन्दिनी आमि, नाम धरि सीता * दशरथ-पुत्रबधू, रामेर वनिता
रह द्विज, फल आनि दिवेन लक्ष्मण * सेइ फल दिब, तुमि करिओ भक्षण
अतिथिरे भक्ति राम करेन यतने * बड़ प्रीति पाइबेन तोमा दरशने
जिज्ञासि तोमारे मुनि, शिरे धर शिखा * कि जाति कि नाम धर, केन कर भिक्षा
एतेक बलेन सीता तपस्वीर ज्ञाने * निज परिचय देय राजा दशानने
ज्येष्ठ भाइ कुबेर धनेर अधिकारी * एइ बने बहुकाल आमि तप करि
रावण आमार नाम, जाने मुनिगणे * बड़ प्रीति पाइलाम तोमा दरशने
फल-मूल दिया करि उदर पूरण * गृहस्थेर घरे गेले कराय भोजन
तोमार सहित आजि अपूर्व्व दर्शन * भिक्षा दिले जाइ चले निज निकेतन
हइल अनेक वेला, कर जे विधान * तोमार पुण्येते गिया करि स्नान-दान

१ अमृत २ भोजन ३ विलम्व ।

आगम राम लखत अति देरी ※ सुमुखि! होत मोंहि बेर घनेरी[1]
बिप्र! पञ्चफल प्रस्तुत गेहा ※ करहु पान, सिय कहत स-नेहा
मैथिलि! मैं अरण्य-ब्रतचारी ※ आश्रम-भीख न मुनि अधिकारी
प्रभु आयसु बिन बाहेर आई ※ देहुँ भीख, यह द्विज! कठिनाई
कह दसकंध अबेर न कीजै ※ नतरु जाहुँ घर, उत्तर दीजै
अतिथि बिमुख रामहिं न सुहाई ※ धर्म-कर्म यत सकल नसाई
लिखा ललार न तेहि प्रतिकूला ※ भावी बिधि-अच्छर-अनुकूला
लिये सिया फल बाहेर आई ※ बढ़ेउ पतित खल निसिचर धाई
गहेउ बेगि कर, बिस्मित सीता ※ कस बिपरीत! कहेउ भयभीता

दो० दुष्ट दुराचारी दनुज, दूर! दूर! खल दूर!।
मम कारन बिनसै स-कुल, कुटिल कुचाली कूर ॥ ३३ ॥

सुनु सीता मम परिचय-गाथा ※ लंक धाम, मैं निसिचर-नाथा
लोचन बीस भुजा लखु बीसा ※ जग जाहिर दसमुख दससीसा
आयेउँ उपवन तापस रूपा ※ करहु कृपा लहि दास सरूपा
सुरपुर सरिस पुरी मम लंका ※ जग-दुर्लभ चलि लखहु निसंका
छबि-बिमुग्ध तव बड़ अभिलासी ※ महिषी[2] सकल करौं तव दासी

श्रीरामेर आसिते विलम्ब बहु देखि ※ हइल स्नानेर वेला, देख चन्द्रमुखि
जानकी बलेन, द्विज, करि निवेदन ※ पंच फल घरे आछे, करह भक्षण
रावण बलिल, सीता, व्रत करि वने ※ आश्रमे ना लइ भिक्षा, जाने मुनिगणे
जानकी बलेन, द्विज, एक कथा कहि ※ आज्ञाबिना प्रभुर घरेर बाहिर नहि
रावण बलिल, भिक्षा आनह सत्वर ※ नतुवा उत्तर देह, जाइ निज घर
जानकी बलेन, व्यर्थ अतिथि जाइबे ※ धर्म्म कर्म्म नष्ट हबे, प्रभु कि बलिबे
बिधिर निर्ब्बन्ध कभु ना हय अन्यथा ※ बिधिर लिखन मत घटिलेक तथा
फल-हाते बाहिर से हइला जानकी ※ लइते आइल दुष्ट रावण पातकी
धरिया सीतार हाथ लइल त्वरित ※ जानकी बलेन, हाय एकि विपरीत
दूर ह'रे दुराचार पापिष्ठ दुर्ज्जन ※ आमा लागि हबे तोर सवंशे मरण
रावण बलिल सीता शुनह वचन ※ आत्म-परिचय कहि, आमि दशानन
राक्षसेर राजा आमि, लंका निकेतन ※ कुड़ि हात, कुड़ि चक्षु, दशटि वदन
तपस्वीर वेश धरि आसि तपोवन ※ अनुग्रह कर मोरे, आमि दासजन
इन्द्रेर अमरावती जिनि लंकापुरी ※ जगत् दुर्लभ ठाँइ देखिबे सुन्दरि
तोमार रूपेते आमि बड़ भालबासि ※ अन्य यत महिषी, तोमार हबे दासी

---

१ बहुत देर २ रानियां।

तुम सिरमौरि सबन पटरानी ❋ आश्रित सकल, सुमुखि! तव रानी
पुजहु, मान-सम्मान प्रकासू ❋ कनक-रत्नमय-धाम निवासू
दुखमय जनम साथ रघुनाथा ❋ सुख अनन्त बिलसहु मम साथा
कम्प त्रिलोक लखत मम बाना ❋ मनुज राम मोहिं कीट समाना
बुद्धि न आयु! हीन तव कन्ता ❋ जुगजुग मैं चिरायु बलवन्ता
वेष अनूप सुरूप लुनाई[1] ❋ तुम सम रूपसि मम मन भाई
सिया कुपित सुनि रावन-बचना ❋ अभिमत[2] अथक[3] कहहि दुर्बचना
रे शठ! पतित तोर दसमाथा ❋ सकुल बिनास करहिं रघुनाथा
राम सिंह तैं निपट शृगाला ❋ केहि बल भीरु! बजावत गाला
बिष्णुरूप रघुपति मनभावन ❋ कहँ समता तव असुर अपावन
सूने लखन बिसूने रामा ❋ नतरु सकत करि किमि दुष्कामा

दो० उपवन आजु सहाय बिन, पाय अकेली मोहिं।
अहा, दुष्ट मम हरन किय, आवत लाज न तोहिं ॥ ३४ ॥

कटकटाहिं दसमुख बत्तीसी ❋ काँपति सीय पात-कदली सी
असुर भयंकर रूप दिखावा ❋ सबबिधि गर्जि-तर्जि समुझावा
केहि गुन राम रीझ तव प्राना ❋ बनन फिरत बल्कल-परिधाना[4]

सर्व्वोपरि तोमारे करिब ठाकुराणी ❋ तुमि अन्न दिले अन्न पावे अन्यरानी
हइबे तोमार पूजा, बाड़िबे सम्मान ❋ सुवर्ण माणिक्यमय हबे तवस्थान
करिया रामेर सेवा जन्म गेले दुःखे ❋ करिले आमार सेवा रवे नाना सुखे
त्रिभुवन आमार वाणेते कम्पमान ❋ मनुष्य रामेरे आमि कीट तुल्य ज्ञान
अल्पबुद्धि रामेर से अत्यल्प जीवन ❋ युगे युगे चिरजीवी आमि दशानन
सीता, तुमि सुन्दरी लावण्य आर वेशे ❋ तोमाहेन सुन्दरी आमाके अभिलाषे
कोपान्विता सीतादेवी रावण-वचने ❋ रावणेरे गालि देन यत आसे मने
अधार्म्मिक नगण्य अधम दुराचार ❋ करिवेन राम तोरे सवंशे संहार
श्रीराम केशरी, तुइ शृगाल येमन ❋ कि साहस ताँहारे बलिस् कुवचन
विष्णु अवतार राम, तुइ निशाचर ❋ रामे आर तोरे देखि अनेक अन्तर
यदि राम थाकितेन अथवा लक्ष्मण ❋ करितिस् केमने ए दुष्ट आचरण
एकाकिनी पाइया आमारे वनमाझ ❋ हरिस् आमारे दुष्ट, नाहि तोर लाज
करे दुष्ट कुड़ि पाटि दन्त कड़मड़ि ❋ जानकी काँपेन येन कलार बागुड़ि
प्रकाशे राक्षस मूर्ति अति भयंकर ❋ अधिक तर्ज्जन करे राजा लंकेश्वर
कि गुणे रामेर प्रति मजे तोर मन ❋ वल्कल परिया से बेड़ाय वने वन

---

१ लावण्य २ मनमाने ३ विना रुके हुए ४ छाल के वस्त्र।

जग न सुलभ सुख बिलसहु लंका * सुनत सीय अति त्रस्त ससंका
रे मतिमन्द पातकी रावन * तव करनी तव प्रान-नसावन
लिखा ललार अमिट फल-भोगू * नतरु जुरत किमि सकल कुयोगू
जनकलली बनिता श्रीरामा * नृपमनि दशरथ-बधू ललामा
स्वयं रमा ! जननी जगबन्दन * अचरज आजु असुर के बन्धन
बिलखति त्रास, करुन सियबानी * हे प्रभु कहाँ राम गुनखानी
देवर लखन सिंह-बल-धारी * सूने हरत मोहिं निसिचारी
सत्य कथन तव कौन विधाता * आवहु बेगि उबारहु ताता
बिकल मैथिली अतुल बिलापू * करै त्रान को यहि सन्तापू
निसिचर-बस रथ सीय लखाई * जिमि घन सौदामिनी सुहाई
संकट परि ध्यावत श्रीरामा * नयनन छबि दूर्बादल श्यामा
असुर-दिब्यरथ, सिय नभ जाई * चितवत मनौ निकट रघुराई
सुरगन ! प्रभुहिं कहेउ बिधि एही * रावन हरन कीन बैदेही
दो० उदित कर्म बिधि बाम कस, डारेउ बिपति-पहार ! ।
कोउ न बन्धु, दसकन्ध हनि, बिपति बचावनहार ॥ ३५ ॥
रामहिं, बिटप-लता जे कानन ! * कहेउ, हरी जेहि बिधि सिय रावन
मृदु-प्रबोध-दसमुख जनि भावै * बढ़त शोक सिय रुदन मचावै

देखिबे केमने करि तोमार पालन * ताहा शुनि जानकीर उड़िल जीवन
जानकी बलेन ओरे पातकी रावण * आपनि मजिलि तुइ आमार कारण
दैवेर निर्ब्बंध कभु ना हय खण्डन * नतुवा एमन केन हबे संगठन
जनकेर कन्या जिनि, रामेर कामिनी * श्वशुर जाँहार दशरथ नृपमणि
आपनि त्रिलोक-माता लक्ष्मी अवतार * ताँहारे राक्षसे हरे, एकि चमत्कार
त्रासेते कान्देन सीता हइया कातर * कोथा गेले प्रभुराम गुणेर सागर
सिंहेर विक्रम-सम देवर लक्ष्मण * शून्य घर पेये मोरे हरिल रावण
तुमि यत वलिले, हइल विद्यमान * झाट आइस देवर, करह परित्राण
अत्यन्त कातरा सीता करेन रोदन * एमत समये रक्षा करे कोन् जन
सीतारे धरिया रथे तुलिल रावण * मेघेर उपरे शोभे चपला येमन
विपदे पड़िया सीता डाकेन श्रीराम * चक्षु मुदि भावेन से दूर्व्वादल श्याम
सीता ल'ये रावण पलाय दिव्य रथे * राम पाछे आसे बलि देखे चारि भिते
जानकी वलेन, शुन यत देवगण * प्रभुर कहिओ, सीता हरिल रावण
हाय विधि, कि करिले, फेलिले विपाके * एमन ना देखि बन्धु, सीतारे जे राखे
वनेर भितर यत आछ वृक्ष-लता * श्रीरामे कहिओ हृता तोमार वनिता
वचन मधुर यत बुझाय रावण * शोकेते जानकी तत करेन रोदन

हाय, असुर छल जानि न पाई ❊ रेख लाँघि गृह बाहेर आई
लखन न हठ करि बिबस पठावत ❊ गिरत न गाज, न यहु दुख आवत
कह दसभाल वृथा सिय! रागा[1] ❊ लहि तव सरिस रतन केहि त्यागा
जनकलली सुनि कहत सशोका ❊ बेग गमन तव शठ! यमलोका
रावन सुनि कटुबैन रिसाना ❊ रथ प्रेरित गति पवन समाना

जटायु-रावण युद्ध

गरुड़-सुवन खग नाम जटाई ❊ उत सिय-रुदन दूरि सुनि पाई
उड़ेउ गगन चहुँ दीठि पसारी ❊ असुर-फन्द सिय फँसी बिचारी
सुभट-विश्व चीन्हत खगनाथा ❊ अहह! लंकपति यहु दसमाथा
पंख पसारि गगन तन धावा ❊ पंख-नखन बहु रारि मचावा
भल मोंहि बिदित अधम निसिचारी ❊ शठ रावन तैं पापाचारी
ढायेउ लंक न तव रघुकेतू ❊ हरन तासु तिय कहु केहि हेतू
सूर्पनखा कामातुर जाई ❊ स्वयं नासिका कान नसाई
दसरथ सदा धर्म अति प्रीती ❊ तासु बधू हरि तोंहि न भीती
वृद्ध, सिथिल तन, हे भुज-बीसा ❊ फल सम नतरु बिदारत सीसा

आगे यदि जानिताम राक्षस दुर्ज्जन ❊ घरेर बाहिर आमि हब कि कारण
हाय, केन लक्ष्मणेरे दिलाम बिदाय ❊ लक्ष्मण थाकिले कि घटित हेन दाय
रावण बलिल, सीता, भाव अकारण ❊ पाइले एमन रत्न छाड़े कोन् जन
जानकी बलेन, शोन् दुष्ट निशाचर ❊ अल्पायु हइया तुइ जाबि यम-घर
कुपिल रावण राजा सीतार वचने ❊ चालाइल रथखान त्वरित गगने

जटायुर सहित रावणेर युद्ध

जटायु नामेते पक्षी गरुड़-नन्दन ❊ दूर हैते शुनिल से सीतार क्रन्दन
आकाशे उठिया पक्ष चतुर्द्दिके जाय ❊ देखिल, रावण राजा सीता ल'ये जाय
त्रिभुवने यत वीर, पक्षीर गोचर ❊ देखिया चिनिल पक्षी राजा लंकेश्वर
दुइ पाखा पसारिया आगुलिल बाट ❊ रावणेरे गालि दिया मारे पाख-साट
डाक दिया बले पक्षी, शोन् निशाचर ❊ आपनाना जानिस् रे पापी लंकेश्वर
कोन् दोषे हरिलि श्रीरामेर सुन्दरी ❊ रघुनाथ नाहि हिंसे तोर लंकापुरी
शूर्पनखा गियाछिल रमणेर साधे ❊ नाक-कान काटा गेल सेइ अपराधे
राजा दशरथ बड़, धर्म्मेते तत्पर ❊ पुत्रवधू ताँहार हरिल नाहि डर
कि कव, ह'येछि वृद्ध ठोंट हैल भोंता ❊ नतुवा फलेर मत छिंड़िताम माथा

---

१ क्रोध।

दो० ऊँचे उठि नभ, हेरि चहुँ, लखेउ न कहुँ रघुनाथ।
डपटि भिरेउ दसमाथ सन, महाबली खगनाथ ॥ ३६ ॥

चोंचन, बिपुल पंख-नख-घाता * रथ बिखण्डि सारथी निपाता
गगन कठिन रन खग विस्तारा * रावन-तन बहु मास बिदारा
बिरथ लंकपति, रथ-ध्वज भंगा * बिकल सकोपि प्रज्वलित अंगा
राखेउ सीय महीतल आनी * पुनि उड़ि चला ब्योम[1] अभिमानी
बसन सँभारि, सुअवसर ताकी * बन सिय भाजि चली एकाकी[2]
चहुँ गिरि शृंग, बीच बन्न भारी * बन भटकत बिन पंथ बिचारी
दारुन अति बिलाप भयभीता * बिकल गगन सुरगन लखि सीता
युद्ध-त्रस्त कछु, बृद्ध जटाई * तरु विराम, जनि साँस समाई
खगपति सिथिल निरखि तरु-डारी * माया-बल रथ असुर सवाँरी
सिय धरि स्यन्दन[3] बेगि बढ़ावा * महा सुभट पुनि काम बनावा
पुनि जटायु बिक्रम बल साधा * ठनेउ विषम रन युद्ध अगाधा
कस बिहंग! दसकन्ध बखाना * पर-हित तजत व्यर्थ निज प्राना
बचु रे बचु, हे महिप-बिहंगा * काटि पंख नतु करहुँ अपंगा
यहि बिधि दोउ अभिरत ललकारत * दोउ अति सुभट परस्पर मारत

आकाशे उठिया देखे, राम बहु दूर * कामड़े आँचड़े तार रथ कैल चूर
पाखसाट मारे पक्षी आर देय गालि * रावणेर संगे युद्ध करे महाबली
आकाशे उठिया पक्षी छों दिया से पड़े * रावणेर पृष्ठ-मांस खान खान छिड़े
छिड़िल ठोंटेर घाय सारथिर मुण्ड * रथ-ध्वज भांगिया करिल खण्ड-खण्ड
अति व्यस्त दशानन ज्वले क्रोधानले * रथ हैते सीतारे राखिल भूमितले
भूमे राखि सीतारे से उठिल आकाशे * संवरेन वस्त्र सीता पलायन आशे
पलाइते जान सीता, नाहि पान पथ * चतुर्द्दिके महावन वेष्टित पर्व्वत
भयेते कान्देन सीता करिया व्यग्रता * अन्तरीक्ष हाहाकार करेन देवता
जुझे पक्षिराज, किन्तु, अन्तरे तरास * बृक्ष डाले वैसे गिया, घन बहे श्वास
बले टुटा पक्षिराजे देखिया रावण * माया करि रथखान करिल साजन
आर वार रावण सीतारे तोले रथे * चलिल से महाबली पूर्ण मनोरथे
आर वार जटायु साहसे करि भर * महायुद्ध करे पक्षी अति घोर तर
रावण बलिल, पक्षी, शुनह वचन * परलागि केन प्राण देह अकारन
अतःपर पक्षिराज, निज प्राण रक्ष * यावत् तोमार नाहि काटि दुइ पक्ष
दुइ जने घोर-रवे हैल गालागालि * दुइ जने युद्ध करे, दोंहे महाबली

---

१ आकाश २ अकेले ३ रथ।

मत्त मतंग न मानत हारी * एक न एकहिं सकहिं निवारी
रतन किरीट सीस दस धारे * चोंचन टूक-टूक करि डारे

दो० आशुतोष-तप-पुण्य-बल, रहे कुशल दस माथ ।
तदपि सीस बिन केश करि, कुगति कीन खगनाथ ।। ३७ ।।

सिय कर गहे, न सर सन्धानू * खग-रन भयेउ असुर अपमानू
रावन पुनि सिय धरनि उतारी * लै रथ बेगि भयेउ नभचारी
हनेउ बतीस सहस सर नाना * घायल खग तन आकुल प्राना
दुर्जय दसमुख! चहुँ जग ख्याती * निपट बिहंग युद्ध केहि भाँती
भिरेउ प्रानपन साहस ठाना * मग जोहत[1] आवैं भगवाना
दनुज हेरि खग टरत न टारे * अर्द्धचन्द्र सर पंख निवारे
आहत धरनी गिरेउ जटाई * कहि बिलखत समीप सिय आई
तैं मम श्वसुर[2]! बिसर्जेउ प्राना * निसिचर-कर[3] न प्रान मम त्राना
रावन हेतु जनम जग मोरा * अब न दरस रघुबंसकिसोरा
दरसन पाय लखन-रघुराई * तबहिं तात तव प्रान नसाई
बन प्रभु मिलइँ, कहेउ समुझाई * हरन कीन सिय निसिचरराई

अंकुश न माने मत्त मातंग येमन * केह कारे करिते नारिल निवारण
रावणेर मुकुट से रत्नेते निर्म्माण * ठोंट दिया पक्षी ताहा करे खान खान
रावणेर पूर्व्वपुण्ये रहे दशमाथा * शिवेर प्रसादे ताहा ना हय अन्यथा
किन्तु केश छिंड़िया करिल खण्ड-खण्ड * निष्केश हइल रावणेर दशमुण्ड
पक्षियुद्धे ताहार हइल अपमान * धरियाछे सीतारे, केमने छाड़े वाण
आर वार सीतारे राखिल भूमि तले * रथ शुद्ध रावण उठिल नभस्तले
बत्रिश हाजार बाण रावण एड़िल * सर्व्वांगे फुटिल, पक्षी कातर हइल
दुर्ज्जय रावण राजा त्रिभुवन जिने * कि करिते पारे तार पक्षीर पराने
रामेर अपेक्षा करि रहे पक्षिवर * प्राणपने जुझिल साहसे करि भर
रावण देखिल, पक्षी बले नाहि टुटे * अर्द्धचन्द्र वाणे तार दुइ पाखा काटे
भूमिते पड़िया पक्षी करे छट्फट् * आसिया कहेन सीता पक्षीर निकट
आमा लागे श्वशुर जे हाराले जीवन * रावणेर हाते आछे आमार मरण
आमार हइल जन्म रावण-कारण * आर ना पाइब श्री रामेर दरशन
दर्शन पाइबे जबे श्रीराम - लक्ष्मण * तावत् रहिबे तव एइत जीवन
प्रभुरे देखह यदि वनेर भितर * बलिह, तोमार सीता हरे लंकेश्वर

---

१ राह देखता था २ दशरथ-मित्र होने से जटायु भी श्वसुर के समान ३ रावण के हाथ से ।

सागर पार लंक रजधानी ❋ हरेउ गगन-पथ जहँ सियरानी
बिहग[1] अपंग दसा निज बरनी ❋ लखेउ सकल मम पौरुष-करनी
लखन-राम करिहैं तव त्राना ❋ तजहु रुदन आवइँ भगवाना
उभय कथन सुनि हँसेउ दसानन ❋ रथ लखि, सीय भयेउ दुख दारुन
पुलकि बहोरि रथहिं बैठारी ❋ रुदन-सीय सुनि शिलन दरारी[2]

दो० जनि भरोस, जनि आस कहुँ, सियहिं बिपुल संताप ।
दीन बेष, तन छीन अति, बहुबिधि दुसह बिलाप ॥ ३८ ॥

फँसी गरुड़ मुख साँपिनि जैसे ❋ क्रन्दन करुण अकथ सिय तैसे
सीता-कुबचन धरत न काना ❋ रथ चढ़ि नभ गति-पवन पयाना
खग-रन लस्त-पस्त दसमाथा ❋ उर भय ! मिलि न जायँ रघुनाथा
सरपट भजेउ न साँस समाई ❋ तासु बेग लखि पवन लजाई

सुपार्श्व पक्षी द्वारा रावण का अवरोध

रामहिं चीन्ह[3] तजति बैदेही ❋ भूषन-सुमन, गगन छबि देही
गर-आभरन सीय तजि दीन्हा ❋ सो गिरि धरनि सुहावनि कीन्हा
जनकलली मणि-मुक्ता-हारा ❋ हिमगिरि सरसति सुरसरि धारा

सागरेर पारे घर, बैसे लंकापुरी ❋ अन्तरीक्ष लये गेल तोमार सुन्दरी
जटायु बलेन, सीता, नाहि मोर हात ❋ यत युद्ध करिलाम, देखिले साक्षात्
आमार वचन शुन ना कर क्रन्दन ❋ तोमा उद्धारिबे माता श्रीराम-लक्ष्मण
उभयेर कथा शुनि दशानन हासे ❋ रथ देखि जानकी काँपेन महात्रासे
पुनर्व्वार सीतारे तुलिल रथोपरे ❋ सीतार विलाप शुनि पाषाण विदरे
अपार भाविया सीता नाहि पान कूल ❋ अति-कृशा दीनवेशा कान्दिया आकुल
सीतार विलाप कत लिखिबे लेखनी ❋ गरुड़ेर मुखे येन पड़िल सापिनी
सीता यत गालि देन, रावण ना शुने ❋ रथे चड़ि वायु वेगे उठिल गगने
रावण पक्षीर युद्धे हैल लण्ड-भण्ड ❋ कि जानि आसिया राम काटिबेन मुण्ड
एइ भये रावण पलाय ऊर्द्ध्व श्वासे ❋ तार सह जाइते ना पारिल वातासे

सुपार्श्व-पक्षि-कर्त्तृक रावणेर लंका-गमने वाधा प्रदान

रामे जानाइते सीता फेलेन भूषण ❋ सीतार भूषण पुष्पे छाइल गगन
आभरण गलार फेलेन सीतादेवी ❋ से भूषणे सुशोभिता हइल पृथिवी
छिंड़िया फेलेन मणि-मुकुतार झारा ❋ हिमालय हैते येन पड़े गंगाधारा

१ पक्षी-जटायु २ चट्टानों में दरारे पड़ती थीं ३ निशानी ।

राम! राम! हा राम! बिलापू * सुरगन गगन बिपुल संतापू
कहाँ लखन! कहँ छबि रघुनन्दन * इक छन मिलइँ अभागिनि दरसन
ऋष्यमूक गिरि श्रृंग उतंगा[1] * तहँ सुग्रीव बसत प्रिय संगा
जामवन्त भल्लुक बलशीला * हनुमत् पुनि गवाक्ष, नल, नीला
खग-सम ते सोहत गिरि माहीं * कपिगन मम सँदेस तुम पाहीं
बनिता-राम, नाम सिय अहही * भूषन-बसन चीन्ह तजि कहही
दरसन मिलैं राम मनभावन * कहेउ हरन-सिय किय खल रावन
सुनि हनुमान सुकण्ठहिं[2] टेरी * धरि लंकेश मुक्ति सिय केरी
सो मति परी दशानन काना * राम त्रास! शठ बेगि पयाना

दो० लिये मैथिली गमन किय, दच्छिन दिसि दसकन्ध।
मारग भेंट सुपार्श्व सों भई! दैव-दुर्बन्ध[3] ॥ ३९ ॥

सुत-सम्पाति भतीज-जटाई * भट सुपार्श्व तहँ परेउ लखाई
बृद्ध पिता हित जतन अहारा * करत, निवसि सो बिन्ध्य पहारा
बिदित सुपार्श्व न रावन-करनी * मारि जटायु गिरायेसि धरनी
जो जानत जटायु जग नाहीं * खग रावनहिं हनत छन माहीं
शूकर महिष हस्ति बन पावै * सहसन[4] दाबि चोंच महँ लावै
कहँ जल-जन्तु सिन्धु महँ चापै * सागर तीनि भाग जल छापै

'श्रीराम' बलिया सीता करेन क्रन्दन * अन्तरीक्ष हाहाकार करे देवगण
जानकी बलेन, कोथा श्रीराम-लक्ष्मण * ए अभागिनीरे देखा देह एइक्षण
ऋष्यमूक नाम गिरि अति उच्चतर * पञ्चपात्र सहित सुग्रीव तदुपर
नल नील गवाक्ष ओ पवननन्दन * जाम्ववान सुग्रीव बसेछे छयजन
पक्षी येन बसियाछे पर्व्वतेर माझ * डाकिया बलेन सीता, शुन कपिराज
श्रीरामेर नारी आमि, सीता नाम धरि * अंगेर भूषण फेलि गात्रेर उत्तरी
रामेर सहित यदि हय दरशन * ताँहाके कहिओ, सीता हरिल रावण
हेनकाले सुग्रीवेरे बले हनूमान * सीता राखि रावणेर करि अपमान
एइ युक्ति दशानन शुनिल आकाशे * सीता ल'ये पलाइल श्रीरामेर त्रासे
सीता ल'ये दक्षिणेते चलिल रावण * दैवे पथे सुपार्श्वेर सह दरशन
सम्पातिर नन्दन, सुपार्श्व नाम तार * विन्ध्याचले थाकि भक्ष्य योगाय पितार
जटायुर भ्रातपुत्र सम्पातिनन्दन * से ना जाने जटायुरे मारिले रावण
जटायुर मरण सुपार्श्व यदि जाने * रावणेरे मारित से दिन सेइ क्षणे
शूकर महिष हस्ती यत पाय वने * सहस्र-सहस्र जन्तु ठोंटे करि आने
सागरेर जल-जन्तु यखन से धरे * तिन भाग जल पक्षे आच्छादन करे

१ ऊँचे २ सुग्रीव से ३ दैवी वाधा ४ हजारों।

रिक्त[1] भाग इक सिंधु-तरंगा ※ दुर्जय बिकटाकार बिहंगा
बन्धु-जटायु जेठ सम्पाती ※ नन्दन तासु, गरुड़ कर नाती[2]
उड़ि सबेग नभमण्डल धावा ※ पंखन हलत बवण्डर छावा
लखि ससंक कौतुक दसमाथा ※ उत सिय रुदन 'राम-रघुनाथा!'
सुनि खग गर्जि-तर्जि ललकारा ※ रावन-पथ युग[3] पंख पसारा
तब लौं भई गगन सुरबानी ※ दसमुख हरन कीन सियरानी
कोपानल सुनि भयेउ बिहंगा ※ लीलन चलेउ रथहिं इकसंगा
स्यन्दन मध्य सियहिं तहँ पेखी ※ नारी-बध-भय पाप बिसेषी
पंखन करि स्यन्दन अवरोधू ※ करत विनय लखि, दनुज, विरोधू
रावन नाम, लंक मम धामा ※ तव प्रति मम न आचरन बामा

दो० खर-दूषन-रिपु, भगिनि किय नासा-श्रवन-विहीन।
राम किये अपमान-वश, तासु तिया हरि लीन ॥ ४० ॥

दुर्जय! तव बिक्रम जग ख्याती ※ खगपति! तुम पहँ मैं प्रणिपाती[4]
क्षमा सुपार्श्व कीन रथ त्यागी ※ भजेउ लंकपति देर न लागी
जानि न सकी कथा यह सीता ※ निरखि अचेत सिन्धु भयभीता
लखि पयोधि[5] दसकंध हुलासू ※ उदधि[5]-उलंघन कीन प्रयासू

सागरेर एक भाग जलमात्र रय ※ एमन वृहत्काय विहंग दुर्ज्जय
जटायुर भ्रातुष्पुत्र गरुड़ेर नाति ※ अन्तरीक्षे उड़िया आइसे शीघ्रगति
पाखसाट मारे पाखी, झड़ येन बहे ※ त्रासेते रावण माथ तुलि ऊर्द्ध चाहे
'श्रीराम' बलिया सीता करेन क्रन्दन ※ शुनिल से पक्षिराज उपर-गगन
पाखसाट मारे पाखी तर्ज्जे गर्ज्जे डाके ※ दुइ पक्ष दिया रावणेर रथ ढाके
तार प्रति डाक दिया बले देवगण ※ सीतारे हरिया ल'ये जाय दशानन
देवतार वाक्य शुनि पक्षी कोपे ज्वले ※ रथ शुद्ध गिलिवारे दुइ ठोंट मेले
रथ मध्ये देखे पक्षी आछेन जानकी ※ भावे नारी-हत्या करि हव कि नारकी
रथखान वद्ध करि राखे पाखा दिया ※ रावण वलिल तारे विनय करिया
रावण आमार नाम, बसति लंकाय ※ तव सह शत्रुता ना आछये आमाय
करियाछे राघव आमार अपमान ※ सहोदरा भगिनीर काटे नाक-कान
भाइ खर-दूषणेर राम महा-अरि ※ सेइ क्रोधे हरिलाम रामेर सुन्दरी
त्रिभुवने ख्यात तुमि, विक्रमे दुर्ज्जय ※ तव ठाँइ पक्षिराज, मानि पराजय
सुपार्श्व करिया क्षमा छाड़िल तखन ※ सेइ क्षणे रथ ल'ये चलिल रावण
एइ सब कथा किछु न जानेन सीता ※ समुद्र देखिया सहा भयेते मूर्च्छिता
देखिया समुद्रतीर रावण उल्लास ※ जलनिधि उत्तरिल करिया प्रयास

---

१ खाली २ पौत्र ३ दोनों ४ चरणों की शरण में हूँ ५ समुद्र।

सिय सोचत लखि सिंधु अपारा ❊ राम कृपालु होहिं किमि पारा
संकित सिय नतमुखी[1] बेहाला[2] ❊ उतरेउ लंक तबहिं दसभाला

सीता-सहित रावण का लंका-गमन

'रथ तजि कित राखउँ बैदेही' ❊ लंकेश्वर बिचार मन एही
लखन शत्रु पुनि रिपु रघुराई ❊ निसि न नींद बिन युगुल नसाई
नींद न भूख, सदा उर संका ❊ कहँ केहि बिधि राखहिं सिय लंका
सियहिं बुझावत, सुनु अतिरूपा ❊ मुख उठाय लखु लंक अनूपा
रवि-शशि सदा रहत सेवकाई ❊ आयसु बिना न कोउ नियराई
सागर अगम मध्य गढ़ लंका ❊ आवत निकट सुरासुर संका
देव - दनुज - दुहिता गृह मोरे ❊ सेवइँ, सुमुखि! सदा पग तोरे
मम भण्डार बिपुल, नाना धन ❊ तव आयसु सिय! सकल समर्पन
धरि सिय-चरन, बिकल मुख बानी ❊ चन्द्रमुखी! करु कोप न रानी
तुम स्वामिनि, सेवक दसमाथा ❊ अन्तःपुर चलि करहु सनाथा

सो० सुनि रावन के बैन, उर उपजेउ सिय क्रोध अति।
मुख घुमाय, तर नैन, कहत सिथिल-स्वर जानकी ॥ ४१ ॥

भावेन जानकी देवी, सागर अपार ❊ कृपार आधार राम किसे हबे पार
अधोमुखे जानकी कान्देन आशंकाय ❊ उत्तरिल दशानन तखन लंकाय

सीताके लइया रावणेर लंकाय गमन

रथ हेते सीता के नामाय लंकेश्वर ❊ 'कोथाय राखिब' बलि चिन्तित अन्तर
शत्रुता हइल राम-लक्ष्मणेर सने ❊ निद्रा नाहि, यावत ना मारि दुई जने
रावणेर नाहि निद्रा, नाहिक भोजन ❊ सीतारे राखिब कोथा, भावे सर्व्वक्षन
सीतारे प्रबोध वाक्ये कहे दशानन ❊ लंकापुरी देख सीता, तुलिया वदन
चन्द्र-सूर्य्य दुयारे आसिया सदा खाटे ❊ मोर आज्ञा-बिना केह ना आसे निकटे
चारभिते सागर, मध्येते लंकागड़ ❊ देव दैत्य ना आइसे लंकार नियड़
देव-दानवेर कन्या आछे मोर घरे ❊ दासी करि राखिब तोमार से सवारे
नाना-धनेपूर्ण देख आमार भाण्डार ❊ आज्ञा कर सीता देवि, सकलि तोमार
सीतार चरणे पड़े करिया व्यग्रता ❊ कोप ना करिह मोरे चन्द्रमुखि सीता
तोमार सेवक आमि तुमि तो ईश्वरी ❊ आज्ञा करि सीता ल'ये जाइ अन्तःपुरी
रावणेर वाक्ये सीता कुपित अन्तरे ❊ विमुखी हइया बलिलेन धीरे धीरे

---

१ सिर झुकाये २ व्याकुल।

आन न ज्ञान, ध्यान मम प्राना ❊ मम आराध्य राम भगवाना
सुनि सिय-बचन सिथिल दसकंधर ❊ चेरिन कीन नियुक्त सीय तर
बन अशोक राखेंउ तहँ सीता ❊ दासिन घिरी अतिव भयभीता
सूर्पनखा कटु बचन उचारी ❊ बधहुँ कण्ठ धरि नखन बिदारी
तव देवर भंगेउ मम अंगा ❊ तेंहि प्रकोप तव मृत्यु-प्रसंगा
गर्जत मुख विरूप यहि अन्तर ❊ सकत न करि कछु भय-दसकंधर
बन अशोक दृग सजल सशोका ❊ उर सिय राम सदा अवलोका

देवताओं द्वारा सीता की आहार-व्यवस्था

सुरगन बिकल बिपति सिय केरी ❊ कहत विरञ्चि सुरपतिहिं टेरी
लंका सिय दस मास निवासू ❊ कटैं कवन विधि करि उपवासू[1]
सीय-मरन सुर-काज न सीझै[2] ❊ लै परमान्न जाय सिय दीजै
गमने इन्द्र सुनत बिधि-बानी ❊ जहँ अशोक-कानन सियरानी
मैं इत इन्द्र, सती ! धरु धीरा ❊ बेगि आय प्रभु मेटइँ पीरा
मृग आखेट लखन-श्रीरामा ❊ छल-दसकंध, शून्य तव धामा
सेतु ससैन बाँधि करि पारा ❊ हनहिं दनुज पुनि तव निस्तारा

राम ध्यान, राम प्राण, राम से देवता ❊ रामविना अन्यजने नाहि जाने सीता
शुनिया सीतार वाक्य निरस्त रावण ❊ ताँर काछे नियुक्त करिल चेड़ीगण
सीतारे राखिल ल'ये अशोक कानने ❊ सीतारे वेड़िले गिया यत चेड़ीगने
शूर्पनखा आसि वले निष्ठुर वचन ❊ गले नख दिया तोर वधिव जीवन
काटिल देवर तोर मोर नाक कान ❊ सेइ कोपे आजि तोर वधिव परान
खान्दा मुखे गर्ज्जे खाँदी सभय अन्तरे ❊ रावणेर डरे किछु वलिते न पारे
सशोक थाकेन सीता अशोक कानने ❊ हृदये सर्व्वदा राम, सलिल नयने

देवगण कर्त्तृक सीतार आहारेर व्यवस्था

जानकीर दुखे दुखी सदा देव गण ❊ इन्द्रेरे डाकिया ब्रह्मा बलेन वचन
लंकामध्ये थाकिवेन सीता दशमास ❊ एहादिने केमने करेन उपवास
जानकी मरिले सिद्ध ना हइवे काज ❊ एइ परमान्न ल'ये जाउ देवराज
ब्रह्मार वचने इन्द्र गेलेन तखन ❊ जानकी आछेन यथा अशोक कानन
वासव वलेन, सीता, ना भाविह चिते ❊ आमि इन्द्र आसियाछि तोमा संभाषिते
श्रीराम-लक्ष्मण गेल मृग मारिवारे ❊ हरिल तोमाके से रावण शून्य घरे
सागर वाँधिया रामसैन्य करि पार ❊ रावणे मारिया तोमा करिबे उद्धार

---

१ लंघन २ काम नही वनेगा।

रहहु शोक तजि धैर्य समेतू * यहु परमान्न सिया तव हेतू
लंक दनुज-भय! प्रणवति सीता * प्रभु सुरपति! किमि होय प्रतीता[1]

दो० सिय-संका समुचित समुझि, सहसविलोचन रूप ।
धरेउ इन्द्र, लखि सीय कहँ, भइ प्रतीत अनुरूप ।। ४२ ।।

सुधा सरिस परमान्न प्रकासा * सेवत जासु न छुधा-पिपासा
रामहिं सिय नैवेद्य लगाई * लीन प्रसाद, तृप्ति तिन आई
अमिय-पान सों सिय सन्तापा * दूरि न प्रभु-बिरहानल-तापा
सुरपति कहेउ सुधा नित लाई * देहुँ, धीर धरु हे सिय माई
विदा महेन्द्र[2] लीन कहि एही * इत दुख दुसह नित्य बैदेही
इत अशोक बन सीय विरामा * सुमिरत सदा राम अभिरामा
शोक अरण्य राम जेहि भाँती * कवि बिपन्न बरनत बहुभाँती
प्रमुख ग्राम फूलिया निवासू * राम-कथा कृतिवास हुलासू

श्रीराम द्वारा विलाप और सीता की खोज

कर सर-चाप राम गृह ओरा * मग तहँ मिलत अपशकुन घोरा
दहिने जम्बुक[3] बाम भुजंगा[4] * धरकत हीय, कम्प प्रभु-अंगा

शोक परिहर सीते, स्थिर कर मन * परमान्न आनियाछि तोमार कारण
जानकी बलेन, लंका निशाचरमय * इन्द्र यदि हओ, तबे देह परिचय
सीतार वचने इन्द्र भाविलेन मने * सहस्रलोचन हइलेन तत क्षणे
इन्द्रके देखेन सीता सहस्रलोचन * जन्मिल ताँहार मने प्रतीति तखन
दिलेन सीताके इन्द्र परमान्न सुधा * याहार भक्षणे हरे तृष्णा आर क्षुधा
आगे परमान्न देन रामेर उद्देशे * आपनि भक्षण सीता करिलेन शेषे
पायस-भक्षणे तृप्ति हवे कि ताँहार * रामेर विरहानल ज्वले अनिवार
महेन्द्र बलेन, सीता, न हउ विकल * प्रतिदिन जोगाइब आमि सुधाफल
सीतारे आश्वास दिया जान पुरन्दर * अन्तरे जानकी दुःख पान निरन्तर
लंकाते रहेन सीता अशोक कानने * हृदये श्रीराम मूर्ति सलिल नयने
कृत्तिवास पण्डितेर फाटिछे परान * अरण्येते गान राम-शोकेर निदान
स्थानेर प्रधान से फुलियार निवास * रामायण गान द्विज, मने अभिलाष

श्रीरामचन्द्रेर विलाप ओ सीतार अन्वेषण

हाते धनुर्व्वाण राम आइसेन घरे * पथे अमंगल यत देखेन गोचरे
वामे सर्प देखिलेन श्रृगाल दक्षिणे * तोलापाड़ा करेन श्रीराम कत मने

---

१ कैसे विश्वास हो कि तुम इन्द्र हो २ इन्द्र ३ सियार ४ सर्प ।

मम अनुरूप दनुज स्वर पाये ❊ तजि घर सून[1] लखन मनु धाये
छल - मारीच लखन भरमाये ❊ सिय अकेलि तजि अन्त सिधाये?
दुख पर दुख विरञ्चि सिर डारा ❊ दिय बिमातु! जस लिखेउ ललारा
हे सुरगन! बिनती मम एही ❊ करहु आज रक्षा - वैदेही
आकुल राम, शोच उर भारी ❊ आवत लखन प्रतच्छ निहारी
विस्मित व्यस्त उपज हिय कंपन ❊ लखनहिं पुनि बूझत रघुनन्दन

दो० कस अकेल तजि सीय वन, तव आगम हे तात! ।
लखत, हरन-सिय सफल भइ, असुर अपावन घात ॥ ४३ ॥

आयेउँ सौंपि तुमहिं प्रिय थाती[2] ❊ तात कीन्ह रच्छा केहि भाँती
कस अन्यथा कीन मम बानी ❊ अब धौं मिलन कठिन सियरानी
का गति अहा लखन मम होई ❊ केहि सन किमि बरनउँ दुख रोई
कनक - पूतरी मम अतिरूपा ❊ परी बन्धु! केहि फन्द अनूपा
दुर्जय दण्डक बन भय घोरा ❊ असुर, हिंस पशु बहु चहुँ ओरा
केहि खल कीन्ह उपस्थित बाधा ❊ दनुज दुष्ट मम केहि अपराधा
बरजेउ मुनिन सदा यहि कानन ❊ दानव दुष्ट विपुल भय कारन
तात! पूर्वापर[3] पर भल ज्ञाना ❊ तबहुँ बिवेक न सुधि नहिं ध्याना

विपरीत ध्वनि करिलेक निशाचर ❊ लक्ष्मण आसये पाछे शून्य राखि घर
मारीचेर आह्वाने कि लक्ष्मण भुलिवे ❊ सीतारे राखिया एका अन्यत्र जाइवे
दुःखेर उपरे दुःख दिवे कि विधाता ❊ या'छिल कपाले ताहा दिलेन विमाता
वलेन श्रीराम शुन सकल देवता ❊ आजिकार दिने मोर रक्षा कर सीता
येमन चिन्तेन राम, घटिल तेमन ❊ आसिते देखेन पथे सम्मुखे लक्ष्मण
लक्ष्मणेरे देखिया विस्मय मने मानि ❊ व्यस्त ह'ये जिज्ञासा करेन रघुमणि
केन भाइ, आसितेछ तुमि ये एकाकी ❊ शून्यघरे जानकीरे एकाकिनी राखि
प्रमाद पाड़िल बुझि राक्षस पातकी ❊ ज्ञान हय भाइ हाराइलाम जानकी
आइलाम तोमाय करिया समर्पन ❊ राखिया आइले कोथा मम स्थाप्य धन
मम वाक्य अन्यथा करिले केन भाइ ❊ आर बुझि, सीतार साक्षात् नाहि पाइ
कि हइल, लक्ष्मण! कि हइल आमारे ❊ ये दुःखे दुःखित आमि, कहिव काहारे
शुनरे लक्ष्मण, सेइ सोनार पुतलि ❊ शून्यघरे राखिया काहारे दिलि डालि
दुरन्त दण्डकारण्य महा भयंकर ❊ जन्तु-हिंस्र कत-शत कत निशाचर
कोन दण्डे कोन दुष्ट पाड़िबे प्रमाद ❊ कि जानि राक्षसगणे साधिवेक वाद
एइ वने यत दुष्ट राक्षसेर थाना ❊ मुनिगण सकले करेन सदा माना
तोमार लक्ष्मण पूर्व्वापर आछे जाना ❊ तथापि लक्ष्मण ना करिले विवेचना

---

१ अकेला २ धरोहर ३ कब क्या अधिक आवश्यक है इसका विवेक ।

तव न दोष, भावी प्रतिकूला * बिधि अच्छर जनि मम अनुकूला
मो सन सूझ-बूझ अधिकाई * दैव-योग सो आजु नसाई
मायामृग छलि बन लै गयऊ * मम सर लगत असुर सो भयऊ
मूषल बिकट दहिन कर भारी * लखहु मरीच धरनि भयकारी
यहि बिधि कहत बन्धु दोउ जाहीं * अतिशय बेग, अन्त मन नाहीं[1]
तब लौं कुटी-द्वार नगिचाये * सिय,पुनि सिय, पुनि-पुनि गोहराये
कतहुँ न सीय, सून लखि धामा * भये अचेत धनुर्धर रामा
कौतुक लखि न तात मोहिं धीरा * बिन सिय इत मैं तजहुँ सरीरा

दो० हाय! लखन! घटना घटित जो मोरे-उर संक।
चोर दनुज सिय हरन किय, पाय अकेलि, निसंक ॥ ४४ ॥

बन-उपबन इत-उत तरु-मूला * हेरत[2] सिय प्रभु, दारुन सूला
कबहुँ लखन बहोरि रघुबीरा * पुनि पुनि लखत गौतमी[3] तीरा
गिरि कन्दरा मुनिन-बन माहीं * ठौर-ठौर सिय खोजत जाहीं
शत-शत बार जात चहुँ धाई * तबहुँ न सिय-दरसन कहुँ पाई
नयन बारि[4] रघुनाथ बिलापा * रोवत बन-खग-पशु संतापा
राम-कुटी मुनिगन जे आवहिं * धीरज दै बहु बिधि समुझावहिं

तोमार कि दिब दोष, मम कर्म्म-फल * येमन विधिर लिपि घटिबे सकल
आमार अधिक भाइ, तव बुद्धिबल * कर्म्मदोष हेन बुद्धि गेल रसातल
माया मृग छले मोरे लइल कानने * हेर, सेइ राक्षस पड़ेछे मोर वाणे
भयंकर विकट मुषल डानि हाते * देख भाइ, मारीच पड़िया आछे पथे
एइमत कहिते कहिते दुइ भाइ * वायुवेगे चलिलेन, अन्य ज्ञान नाइ
उपनीत हइलेन कुटीरेर द्वारे * 'सीता-सीता' बलिया डाकेन बारे-बारे
शून्य घरे देखेन, न देखेन जानकी * मूर्च्छापन्न अवसन्न श्रीराम धानुकी
श्रीराम वलेन भाइ, एकि चमत्कार * ना देखिले सीता प्राण ना राखिब आर
तखनि बलिनु भाइ, सीता नाइ घरे * शून्य घरे पाइया हरिल निशाचरे
प्रतिवन प्रतिस्थान प्रति-तरुमूल * सर्व्वत्र देखेन राम हइया व्याकुल
पाति पाति करिया खोजेन दुइवीर * उलटि पालटि यत गोदावरी-तीर
गिरि गुहा देखेन, मुनिर तपोवन * नाना स्थाने करेन सीतार अन्वेषण
एक बार येखाने करेन अन्वेषण * पुनर्व्वार जान तथा सीतार कारण
एइरूपे एक स्थाने जान शतबार * तथापि श्रीराम देखा ना पान सीतार
कान्दिया विकल राम, जले भासे आँखि * रामेर क्रन्दने कान्दे वन्य-पशु-पाखी
रामेर आश्रमे आसि यत मुनिगण * रामेरे कहेन कत प्रबोध-वचन

---

१ किसी दूसरी ओर ध्यान नही २ खोजते फिरते थे ३ गोदावरी नदी ४ आँसू।

सुनिन सीख प्रभु मनहिं न माना * गुनत सदा उर सिय-गुनगाना
धरनि पलोटत सिय गोहराई * अंकहिं लखन लेत रघुराई
रामहिं धीर न, पुनि-पुनि शोकू * प्रभुहिं बिलोकि बिकल सुरलोकू
बिलपत कहत लखन सन एही * तात! न छन बिसरत बैदेही
कवन उपाय लखन! कहँ जाई * केहि बिधि सोध, सीय कहँ पाई?
सिय लुकान[1], आवत मन एही * बूझहिं लखन कितै बैदेही
कै बिन कहे संघ मुनि-नारी * गई कतहुँ मनु जनकदुलारी
कमलकुन्ज भरमत धौं सीता * गोदावरि-तट जहाँ पुनीता
कमला मनौ कमलमुखि पाई * कमलकुन्ज तेहि लीन लुकाई[2]
शशि-छबि-भरम राहु कृत ग्रासा * कीन्ह शांत चिरकाल-पिपासा

दो० राज-हीन लखि धरनि मोहिं, कीन चहेउ श्री-हीन।
मम लक्ष्मी सीता, धरनि, निज-दुहिता[3] हरि लीन ॥ ४५ ॥

मैं श्री-हीन, दुसह दुख शूला * आजु बिमातु-मनोरथ फूला
सौदामिनि[4] समात घन माहीं * तिमि अदरस सिय कानन माहीं
कनकलता छबि बन बैदेही * रुचिकर केहि न? उजारेसि[5] तेही

उपदेश वाक्य नाहि मानेन श्रीराम * सदा मने पड़े से सीतार गुणग्राम
'सीता सीता' बलिया पड़ेन भूमितले * करेन लक्ष्मण वीर श्रीरामेरे कोले
रघुवीर नहे स्थिर जानकीर शोके * हाहाकार बार बार करे देवलोके
विलाप करेन राम लक्ष्मणेर आगे * ना भुलिते पारि सीता, सदा मने जागे
कि करिब, कोथा जाब अनुज लक्ष्मण * कोथा गेले पाब सीता कर निरूपण
मन बुझिवारे बुझि आमार जानकी * लुकाइया आछेन लक्ष्मण, देखि देखि
बुझि, कोन मुनिपत्नी-सहित कोथाय * गेलेन जानकी नाहि जानाये आमाय
गोदावरी तीरे आछे कमल-कानन * तथा कि कमलमुखी करेन भ्रमन
पद्मालया पद्ममुखी सीतारे पाइया * राखिलेन बुझि पद्मवने लुकाइया
चिर दिन पिपासित करिया प्रयास * चन्द्रकला-भ्रमे राहु करिल कि ग्रास
राज्यच्युत आमाके देखिया चिन्तान्विता * हरिलेन पृथिवी कि आपन दुहिता
रज्यहीन यद्यपि ह'येछि आमि वटे * राजलक्ष्मी तथापि छिलेन सन्निकटे
आमार से राजलक्ष्मी हाराइल वने * कैकेयीर मनोभीष्ट सिद्ध एत दिने
सौदामिनी येमन लुकाय जलधरे * लुकाइल तेमन जानकी वनान्तरे
कनक-लतार प्राय जनक-दुहिता * वने छिल, के करिल तोर उत्पाटिता

१ छिप गई है २ छिपा लिया ३ पृथ्वी ने अपनी कन्या को ४ बिजली
५ उजाड़ दिया।

दिवस दिवाकर निसि शशि-तारा ※ हरि तम[1] करत जगत उजियारा
मम उर तिमिर[1] न सकहिं निवारी ※ बिन सिय दिनहुँ सकल अँधियारी
दसौ दिसा सूनी बिन सीता ※ मम मन धरत कतहुँ जनि प्रीता
सब सुख मूरि[2] ज्ञान मम ध्याना ※ मणि बिन फनि[3], बिन सिय निष्प्राना
खोजहु लखन कतहुँ बन माहीं ※ बिन सिय प्रान कुशल मम नाहीं
पञ्चबटी ! तैं पावन धामा ※ यहि कारन इत लीन बिरामा
सुफल तासु भल मोहिं दिखावा ※ तेंहि तपवन सिय आजु गवाँवा
लता विटप खग मृग पशु, कानन ※ सिय शशिमुखी-हरन को कारन
बिलपत बन भरमत रघुराई ※ सिय भूषन पथ परेउ लखाई
लखि रथ-शिखर भंग रथ चाका ※ बिबिध खण्ड रथ कनक-पताका
मनि मुक्ता पुनि कञ्चनहारा ※ बिखरे चहुँ रघुनाथ निहारा
लखन लखहु लच्छन कछु एही ※ खोजइँ इत निश्चय बैदेही
सम्मुख अति उतंग[4] गिरिराई ※ मनहुँ धरेसि ससिबदनि[5] लुकाई

दो० तात ! निरखु यमदण्ड सम, मम सायक-कोदण्ड[6] ।
लखत समुख तव महारन, करहुँ बिपुल गिरि खंड ॥ ४६ ॥

दिवाकर निशाकर दीप्त तारागण ※ दिवानिशि करितेछे तमो निवारण
तारा न हरिते पारे तिमिर आमार ※ एक सीता विहने सकलि अन्धकार
दशदिक् शून्य देखि सीता अदर्शने ※ सीता विना किछु नाहि लय मन मने
सीताध्यान, सीताज्ञान, सीताचिन्तामणि ※ सीता विना आमि येन मणिहारा फणी
देख रे लक्ष्मण भाइ, कर अन्वेषण ※ सीतारे आनिया दिया बाँचाओ जीवन
आमि जानि, पंचवटी, तुमि पुण्यस्थान ※ तेइ से एखाने करिलाम अवस्थान
ताहार उचित फल दिले हे आमारे ※ शून्य देखि तपोवन, सीता नाहि घरे
शुन पशु-मृग-पक्षि, शुन वृक्ष-लता ※ के हरिल आमार से चन्द्रमुखी-सीता
कान्दिया कान्दिया राम भ्रमेन कानन ※ देखिलेन पथ-मध्ये सीतार भूषण
देखिलेन, प'ड़े आछे भग्न रथ चाका ※ कनक-रचित आछे पतित पताका
रथ-चूड़ा पड़ियाछे आर तार जाठि ※ मणि-मुक्ता पड़ियाछे सुवर्णेर काँठि
श्रीराम बलेन देख भाइ रे लक्ष्मण ※ एइ खाने करह सीतार अन्वेषण
सम्मुखे पर्व्वत बड़ अति उच्चकोटि ※ लुकाइया पर्व्वत राखिल चन्द्रमुखि
यमदण्ड सम आमि धरि धनुर्व्वाण ※ पर्व्वत काटिया आजि करि खान खान
महायुद्ध हइयाछे करि अनुमान ※ लक्ष्मण, लक्षण तार देख विद्यमान

---

१ अँधेरा २ संजीवनी, अमृत ३ सर्प ४ ऊँचा ५ चन्द्रमुखी सीता
६ धनुषबाण ।

बोले लखन न हियँ केहु रूपा * सिय-निवास गिरि घोर विरूपा
अनुचित कोप वृथा गिरि-भंगा * नभ-पथ कोउ गमनेउ सिय-संगा
बहुबिधि लखन-प्रबोध अकासा[1] * बिकल अधीर कहेउ पुनि रामा
बिषधर स्वर धनु धरत प्रतञ्चा * दहन विश्व, यहु वृथा प्रपञ्चा
प्रभु-सर जारि करै जग-नासा * दक्ष यज्ञ जिमि शंभु विनासा
कहेउ लखन प्रभु-चरनन्ह धाई * कछु मम विनय सुनहु रघुराई
रची सृष्टि जग सिरजनहारे * उचित न नाथ तासु संहारे
सकुल पातकिहिं समुचित नासू * तासु पाप किमि अन्य-बिनासू
प्रभु सर तजत न जग-निस्तारा * होई भसम विश्व जरि छारा
सीता कहँ[2] ? दोउ मिलि मन देहीं * धरि उर धीर शोध-सिय लेहीं
लखि गिरिशृंग तपोवन ग्रामा * चहुँ नद नदी सरोवर धामा
दरस न जो सीता कर पाई * मन भावै कीजिय रघुराई
सुनि निषंग[3] सर लिय रघुनाथा * हेरत सीय चले दोउ साथा
क्षण क्षण चलत करत बिश्रामा * मत्त प्रलाप करत बहु रामा
जल थल नभ सिय कर उद्देसू[4] * बन-बन फिरत सहत बहु क्लेसू
मिलत पन्थ कोउ, पूछत एही * तुम कहुँ लखी जाति बैदेही

लक्ष्मण बलेन, इहा नहे कोन मते * सीता केन रहिवेन ए घोरे पर्व्वते
पर्व्वत काटिते प्रभु चाह अकारण * सीता ल'ये अन्तरिक्ष गेल कोन्‌जन
नानामते श्रीरामेरे बुझान लक्ष्मण * शोकाकुल श्रीराम ना मानेन वचन
धनुके दिलेन गुण सर्प येन गर्ज्जे * वलेन, दहिव विश्व, आछे कोन कार्य्ये
विश्व पुड़ाइते राम पूरेन सन्धान * दक्ष - यज्ञ - विनाशे येमन महेशान
लक्ष्मण चरणे धरि करेन मिनति * एक कथा अवधान कर रघुपति
सृष्टिकर्ता सृष्टि करिलेन चराचर * केन सृष्टि नष्ट कर देव रघुवर
सवंशे मरिबे, ये हइबे अपराधी * अपराधे एकेर अन्येर नाहि बधि
तोमार वाणेते कारो नाहिक निस्तार * अकारणे केन प्रभु, पोड़ाउ संसार
कोथार आछेन सीता, करह विचार * दुइ भाइ अन्वेषण करिव सीतार
ग्राम आर तपोवन पर्व्वत शिखर * नद-नदी देखि आर गिरि सरोवर
तबे यदि सीतार ना पाइ दरशन * पश्चात् करिउ चेष्टा, येवा लय मन
शुनि अस्त्र संवरिया राखिलेन तूने * सीतार उद्देशे चलिलेन दुइ जने
क्षणेक उठेन राम, बसेन क्षणेक * उन्मत्तेर प्राय राम वलेन अनेक
जले - स्थले - अन्तरीक्षे करेन उद्देश * बने वने भ्रमिया अनेक पान क्लेश
जाइते देखेन जाके, जिज्ञासेन ताके * देखियाछ तोमारा कि ए पथे सीताके

१ व्यर्थ २ कहाँ है ? ३ तरकस ४ खोज ।

दो० धन्य धन्य गिरि बिटप बन! मो पर होहु सहाय।
सिय-संबाद सुनाय मोंहि, लीजिय प्रान बचाय ॥ ४७ ॥

चक्रवाक और चक्रवाकी को श्रीराम का अभिशाप

चले दूरि कछु राजिवनयना[1] ❋ चक्रवाक लखि पूछत बयना
कँहुँ लै जात लखी बैदेही ❋ सुनि बिहंग बोलत बिधि एही
बैदेही सों निपट अजाना ❋ सुनहिं, मर्म खुलि करहु बखाना
सुनि खग-बचन कही मृदुबानी ❋ जनकलली तिय मम सियरानी
उपवन तजि, गमनेउँ मृग हेतू ❋ लौटि न पुनि सिय लखेउँ निकेतू[2]
कथा-राम सुनि किय उपहासू ❋ जासु कुफल तिन भयेउ बिनासू
राम-कलेस बिहंग न ब्यापा ❋ करत अनर्गल[3] ब्यंग प्रलापा
दुइ जन रखि न सके इक नारी ❋ तिय बिन भ्रमत इतै बनचारी
तरु निवास, मैं हीन बिहंगा ❋ रमत बिहंगिन दुइ[4] नित संगा
तिया-हरन पूछत जनि लाजा ❋ मुख न बैन जहँ क्षत्रि-समाजा
चक्रवाक सुनि बचन कठोरा ❋ कहेउ कोपि रघुबंशकिशोरा
मैं विपन्न[5], परि नारि-बिछोहू ❋ शोध लेत भरमत तिय-मोहू

ओहे गिरि, ए समये करि उपकार ❋ बाँचाओ कहिया जानकीर समाचार
हे अरण्य, तुमि धन्य, वन्य वृक्षगण ❋ कहिया सीतार कथा राखह जीवन

चक्रवाक ओ चक्रवाकीर प्रति श्रीरामेर अभिशाप

आरो बहुदूर गिया कमललोचन ❋ चक्रवाके देखि राम जिज्ञासे तखन
तुमि कि देखेछ निते जनकनन्दिनी ❋ राम वाक्य शुनि पक्षी बलिलेक वाणी
जनकनन्दिनी केवा, तारे नाहि जानि ❋ मर्म्मकथा खुलि बल मोर दोंहे शुनि
पक्षीर बचन शुनि बले चक्रपाणि ❋ जनकनन्दिनी सीता आमार घरनी
गृहे राखि जाइलाम मृग मारिवारे ❋ गृहे फिरि आसि देखि सीता नाहि घरे
रामेर कथाय पक्षी करे उपहास ❋ एइ उपहासे तार हैल सर्व्वनाश
देखिया रामेर दुःख, दुःख ना हइल ❋ उपहास करि पक्षी बलिते लागिल
एक नारी दुइ जने राखिते न पार ❋ नारी उद्देशे ताइ हैला देशान्तर
पक्षिरूपे जन्म मोर वृक्षशाखे थाकि ❋ एकेश्वर पक्षी आमि, दुइ नारी राखि
कि बलिबे जिज्ञासिले क्षत्रिय समाज ❋ स्त्रीके हाराइया पुछ, नाहि बास लाज
पक्षीर वचन शुनि कमल-लोचन ❋ अग्नि सम नेत्र करि कहिला वचन
स्त्रीके हाराइया आमि पुछिनु तोमाय ❋ तेंइ कि करिले तुमि विद्रूप आमाय

---

१ कमलनयन राम २ आश्रम में ३ अनुचित ४ दो पक्षिणियों के साथ
५ विपत्ति का मारा।

नारि-संग-मद! मम उपहासू ❋ सुलभ न अब तोहिं नारि-बिलासू
करहु अहार संग निसि दोऊ ❋ तदपि न चीन्हि सकहु कोउ कोऊ
चकवा - चकई रैन बिछोहा ❋ राम-शाप दोउ बिलग बिमोहा
अन्तरिक्ष रहि रंग - बिलासू ❋ धरनि किये रति निश्चय नासू

दो० दण्ड पाय समुचित बिहग, चिन्ता शाप दुरंत[1]।
बोलि 'राम कम्! राम कम्'[2] गिरेउ चरन-भगवन्त ॥ ४८ ॥

चीन्हेउँ नाथ न पातक एता ❋ सुनी स्वस्ति तुम क्षमानिकेता
भगतन प्रीति, पातकिन करुना ❋ हरहु पाप, मैं भगवत्-चरना
जो अजान निकसी मुख बानी ❋ करनी, लहि प्रभु-दरस, नसानी
बानी सुनि आरत खग केरी ❋ कहेउ दयामय तेहि पुनि हेरी
अमिट प्रभाव, पच्छि! मम शापा ❋ तदपि निवारण तव संतापा
द्वापर फन्द ब्याध के जाला ❋ फँसत नसै यह शाप कराला
चक्रवाक कै दण्ड - कहानी ❋ सुधा सरिस कृतिवास बखानी

राम-जटायु मिलन—सीता का समाचार प्राप्त

भरमत चहुँ इमि प्रभु पग डारा ❋ रंजित - रक्त जटायु निहारा

स्त्रीर संगे वसि मोरे कैला उपहास ❋ स्त्रीर गर्व्व रति-रस आजि होक् नाश
रजनीते आहार करिबे दुइ जने ❋ केह कारे ना चिनिवे आमार वचने
उद्देश ना पावे केह रात्रिर भितरे ❋ रात्रिते विच्छेद ह'ये थाकिवे अन्तरे
रतिक्रिया करि पक्षी उड़िया आकाश ❋ भूमिते पड़िले हैउ रति संगे नाश
शापेते पक्षीर हैल दण्ड समुचित ❋ 'राम कम् राम कम्' वलिल त्वरित
शाप पेये पक्षिवर चिन्तित हइया ❋ श्रीरामेर स्तव करे भूमिते पड़िया
ना जानिया प्रभु, दोष हइल आमार ❋ ये कथा वलेछि प्रभु शास्ति हैल तार
भकतवत्सल प्रभु तुमि नारायण ❋ पतिते तराओ, ताइ पतित-पावन
ना बुझिया याहा किछु बलेछि वदने ❋ सेइ पाप नाश हैल तव दरशने
रामेर हइल दया पक्षीर स्तवने ❋ पुनरपि वले प्रभु पक्षिवर-स्थाने
जे कथा वलेछि, तार ना हवे खण्डन ❋ द्वापर युगेते हवे ताहार मोचन
जाल दिया व्याधे तोमा करिबे वन्धन ❋ तखन हइवे तव शाप-विमोचन
कृत्तिवास पण्डितेर वाक्य सुधा-खण्ड ❋ गाइल अरण्यकाण्ड चक्रवाक-दण्ड

जटायुर मुखे श्रीरामेर सीता-वार्त्ता श्रवण ओ जटायुर स्वर्गलाभ

एइ रूपे श्रीराम भ्रमेण चारिदिके ❋ रक्ते रांगा जटायुके देखेन सम्मुखे

१ विकट २ चकई-चकवों की वोली।

सिय भच्छेसि खग! मम अनुमाना * रे शठ! अबहिं करौं बिन प्राना
तैं निशिचर खगरूप बिलोका * बिसिख[1] एक गमनै यमलोका
सर सन्धान, उतै खगराई * रक्त सने मृदु गिरा सुनाई
सिया-खोज पायेउ बहु क्लेसू * तात! न लेस-सीय यहि देसू
लै सिय लंक गयेउ खल रावन * सिया-हेतु मम प्रान नसावन
युगुल बन्धु बिन उपबन पाई * दशमुख हरन कीन सियमाई
जरठ[2] गात, रन करि पथ रोका * आसा करि बहु पन्थ बिलोका
दनुज कीन पुनि पंख-बिहीना * स्रवत रक्त, अब जीवन हीना

दो० भरमि न इत-उत, कीजिए, जिमि दसमुख-विध्वंस।
तात! जनक[3] तव मित्र मम, धन्य दरस तेंहि अंस[4]॥ ४९॥

तव हित नश्वर गात गवाँवा * प्रान रहत प्रभु-दरशन पावा
सम्मुख दरस देहु छबिखानी * सानुज राम सुनत मन ग्लानी
रोवत युगुल, नयन जलधारा * कह खग अच्छर अमिट ललारा
पितु सम, तात! कहेउ रघुबीरा * कहि सिय-कुसल हरहु मम पीरा
दशमुख-सन मम-हेतु न रोषू * मम तिय-हरन तासु केहि दोषू
कहँ निवास कहु केहि कुल-केतू * सीता सुमुखि हरी केहि हेतू

पक्षीरे कहेन राम करि अनुमान * खाइलि सीतारे तुइ, बधि तार प्राण
पक्षिरूपे आछिस् रे तुइ निशाचर * पाठाइब एक वाणे तोरे यमघर
सन्धान पूरेन राम तारे मारिवारे * मुखे रक्त उठे बीर बले धीरे धीरे
अन्वेषिया सीतारे पाइले बहु क्लेश * एइ देशे ना पाइबे सीतार उद्देश
सीतार लागिया राम, आमार मरण * सीता के लइया गेल लंकार रावण
तोमार दु भाइ जवे नाहि छिला घर * शून्य घर पाइया हरिल लंकेश्वर
आमि वृद्ध, युद्ध करि रुद्ध करि ताय * राखिया छिलाम राम, तोमार आशाय
दुइ पाखा काटिलेक पापिष्ठ रावण * मुखे रक्त उठे राम जाय ए-जीवन
इतस्ततः भ्रमणे नाहिक प्रयोजन * चिन्ता कर राम, जाते मरिबे रावण
तोमार पितार मित्र, तोमा लागि मरि * आपनि मारिले राम, कि करिते पारि
प्राण आछे तोमारे करिते दरशन * सम्मुखे दाँड़ाउ राम देखि एक क्षण
आपना निन्देन राम जानि परिचय * दुइ भाइ रोदन करेन सातिशय
जटायु बलेन यत, लिखिब ता' कत * रामेर नयने बहे वारि अविरत
श्रीराम बलेन, पक्षि तुमि मोर बाप * कहिया सीतार वार्त्ता दूर कर ताप
रावणेर संगे मोर नाहिक वैरिता * विना दोषे हरिलेक आमार वनिता
कोन वंशे जन्म तार थाके कोन् पुरे * कोन् दोषे हरिलेक मोरे जानकीरे

१ वाण २ वृद्ध ३ पिता ४ पुत्र, अंश।

पौरुष जोरि उठायेउ माथा ❋ रामहिं सकल कहेउ खगनाथा
सहस चतुर्दश दानव मारे ❋ कुत्सित शूर्पनखा करि डारे
रावन कोपि हरन सिय कीन्हा ❋ उतरि सिन्धु लंका पग दीन्हा
विश्वस्रवा - सुवन नृप - नाथा ❋ विधि-वर तेजपुञ्ज दसमाथा
चिन्ता तजि बिलाप, धरि धीरा ❋ खल हनि आनहु सिय, रघुवीरा
चरनोदक पावौं मुख माहीं ❋ लहौं सुगति सब पाप नसाहीं
प्रभुहिं कथा सिय केरि सुनावा ❋ श्रम सों रक्त फूटि मुख आवा
अन्त बन्दि खग, पद-श्रीरामा ❋ चढ़ि रथ दिव्य गयेउ सुरधामा
कथा जटायु बरनि कृत्तिवासा ❋ धर्म-ज्ञान कर मर्म प्रकासा

जटायु की अन्त्येष्ठि

सिय हित प्रान दीन खगनाथा ❋ पितु सम, अहह ! कहेउ रघुनाथा

दो० अयश, अधर्म ! जटायु-शव वन्यजन्तु जो खाहिं ।
दाह-कर्म आदेश प्रभु कीन्हेउ लक्ष्मण पाहिं ॥ ५० ॥

लखन दिव्य तहँ चिता सजाई ❋ बिधिवत सो प्रज्वलित कराई
शव - बिहंगपति पुण्यस्वरूपा ❋ अग्नि दीन दोउ बन्धु अनूपा
प्रेत - कर्म बिधिवत सम्पादन ❋ गोदावरी सलिल किय तर्पन

अनेक शक्तिते पक्षी तुलिलेक माथा ❋ कहिते लागिल श्रीरामेरे सर्व्वकथा
संहारिले चतुर्द्दश-सहस्र राक्षस ❋ लक्ष्मण करेन शूर्पनखार अयश
एइ कोपे रावण हरिल जानकीरे ❋ राखिल लंकाय ल'ये समुद्रेर पारे
पुत्र विश्वश्रवार रावण बड़ राजा ❋ विधातार वरेते हइल महातेजा
कोन चिन्ता ना करिह संवर क्रन्दन ❋ जानकीरे उद्धारिबे मारिया रावण
तव पादोदक राम, देह मोर मुखे ❋ सकल कलुष नाशि जाइ स्वर्गलोके
कहिल सीतार वार्त्ता श्रीरामेर आगे ❋ एत वलि पक्षीर मुखेते रक्त भांगे
मृत्युकाले बन्दे पक्षी श्रीरामचरण ❋ दिव्यरथे चापि स्वर्गे करिल गमन
जटायुर मरण-श्रवणे धर्म्म ज्ञान ❋ कृत्तिवास रचे इहा शुनिया पुराण

श्रीराम-कर्त्तृक जटायुर सत्कार ओ उद्धार

श्रीराम बलेन, पक्षी पितार समान ❋ सीतार कारणे पक्षी हाराइल प्राण
वन्य जन्तु खाइले अधर्म-अपयश ❋ अग्निकार्य्य करि राख, लक्ष्मण पौरुष
तवे त लक्ष्मण दिव्य-अग्नि कुण्ड काटि ❋ ज्वालिलेन कुण्ड वीर करि परिपाटी
तुलिलेन चिताय जटायु पक्षिराज ❋ दुइ भाइ ताहार करेन अग्निकाज
सत्कार करेन तार व्यवस्था येमन ❋ गोदावरी जले तार करेन तर्पण

अन्त समय लहि दरसन-रामा * गमन जटायु कीन सुरधामा

श्रीराम द्वारा कबन्ध दानव का उद्धार

कित विराम ? रजनी[1] चहुँ छाई * शून्य कुटी गमने दोउ भाई
कानन कछुक चैन रघुराई * निर्जन धाम अधिक दुखदाई
लखन तात ! मोहिं सहन न पीरा * लेहुँ समाधि गौतमी - नीरा[2]
अनुज अंक भरि नयनन - वारी * बरि - बहि मुक्तन हार सवाँरी
नींद निसा जनि भरत उसासू * तहँ दिन तीन राम उपवासू
सिया-बिछोह दुसह दुख-तापू * अकथ अचिन्त्य राम - संतापू
गत निसि, निरखि अरुन[3] रघुकेतू * दक्खिन दिसि गमने सिय - हेतू
तजि उपवन, गमने दुइ कोसू * कुश - वन दुर्गम कीन प्रवेसू
सिंह ब्याघ्र महिषादि चरन्ता * तरु - तर तहँ सानुज भगवन्ता
बिक्रम-बुद्धि लखन अति आगर * बोले सुनहु नाथ ! करुनाकर
फरकत भुज-लोचन शुभ नाहीं * खंजन निकसि बाम पथ जाहीं
कुश-वन विषम अतिव भयकारी * लच्छन लखत असंगलकारी

राम दरशने पक्षी गेल स्वर्गवास * गाइल अरण्यकाण्ड कवि कृत्तिवास

श्रीराम कर्त्तृक कवन्धेर मुक्ति-विधान

रजनी आइल, स्थान थाकिवार नाइ * शून्य घरे आइलेन पुनः दुइ भाइ
बाहिरे छिलेन राम वरंच आश्वस्त * शून्य घर देखि हइलेन आ रो व्यस्त
श्रीराम बलेन शुन भाइ रे लक्ष्मण * गोदावरी जीवनेते त्यजिब जीवन
एतेक बलिया लक्ष्मणेरे करि कोले * गांथिल मुक्तार हार नयनेर जले
रजनीते निद्रा नाहि घन बहे श्वास * से घरे करेन राम तिन उपवास
सीतार विच्छेद राम पाइल जे क्लेश * विशेष लिखिते गेले हय से अशेष
रजनी प्रभाता हय अरुण विकाशे * चलेन दक्षिणे राम सीतार उद्देशे
घर छाड़ जान राम क्रोश दुइ पथे * प्रवेशेन दुइ भाइ कुशेर वनेते
सिंह-व्याघ्र-महिषादि चरे पालेपाले * दुइ भाइ वसिलेन एक वृक्ष तले
बुद्धिते विक्रमे बड़ चतुर लक्ष्मण * रामेर वलेन किछु प्रबोध वचन
केन प्रभु हय हस्त-लोचन स्पन्दन * वामदिके करितेछे खण्डन गमन
विषम कुशेर वन देखि करे भय * नाना अमंगल देखि, ना जानि कि हय

१ रात्रि २ गोदावरी के जल में ३ अरुणोदय, प्रभात ।

दो० पुनि पथ गहेउ, कबन्ध दनु, बिकट दरस तहँ दीन ।
नाक कान मुख नैन सब, जासु उदर आसीन ।। ५१ ।।

अकथ ! प्रलंब बाहु शत योजन ※ राम-लखन लखि, किय घन गर्जन
बाहु पसारि युगुल धरि कहही ※ करगत[1] मम अहार जनि बचही
कहु परिचय, मानव ! केहि कारन ※ आगम इतै विषम वन दारुन
बोले राम, देहु तेहिं परिचय ※ नतरु तात[2] ! प्रानन कर संसय
दुर्बल मन कीजिय कस नाथा ※ हनि दनु-भुज दोउ करहि सनाथा[3]
सुनि दक्षिण कर[4] राम निपाता ※ लछिमन-खड्ग, बाम भुइँ पाता
छेदेउ भुज, दोउ बन्धु, बिशाला ※ फटकति अवनि कबन्ध कराला
पुनि रघुपतिहिं निवेदन करई ※ को तुम, कहँ निवास शुभ अहई
दसरथ-सुत जगपति, जगबन्दन ※ लखन कहेउ, सोई रघुनन्दन
लछिमन अनुज तासु, इत कानन ※ भरमत पिता-वचन प्रतिपालन
यहि बन बिकटाकार बिरूपा ※ कवन जाति, तुम दानव रूपा
सुनत कबन्धहिं लछिमन-बानी ※ परी याद पुनि कथा पुरानी
दैत्य कुबेर अन्त छबि नाहीं ※ मम छबि चन्द्र मनोज लजाहीं
तेहि मद सुरन-रूप उपहासा ※ रुष्ट एक मुनि शाप प्रकासा

दुइ भाइ चलिते करेन अनुवन्ध ※ पथ आगुलिया राखे राक्षस कवंध
पेटेर भितर नाक-कान-चक्षु-माथा ※ शतेक योजन हस्त, अपूर्व्व से कथा
राम लक्ष्मणेरे देखि करिया तर्ज्जन ※ दुइ हात प्रसारिया राखे दुइ जन
कवन्ध वलिल तोरा आमार आहार ※ मोर हाते पड़िलि, कि पाइ निस्तार
ए विषम वने तोरा आइल कि कारण ※ परिचय देह शुनि तोरा कोन् जन
श्रीराम बलेन भाइ हइल संशय ※ प्राणरक्षा कर भाइ, देह परिचय
लक्ष्मण बलेन, प्रभु बुद्धि केन घाटि ※ राक्षसेर दुइ हात दुइ भाइ काटि
कबन्धेर डान हात काटेन श्रीराम ※ खड्गाघाते लक्ष्मण काटेन हस्त वाम
दुइ भाइ काटिलेन तार हस्त दुटि ※ पड़िया कवन्ध वीर करे छट्पटि
डाक दिया श्रीरामे से करे सम्भाषण ※ कोन् देशे थाक तुमि हउ कोन् जन
लक्ष्मण बलेन, राम जगतेर राजा ※ दशरथ ! राजपुत्र सबे करे पूजा
श्रीरामेर भाइ आमि नामते लक्ष्मण ※ पितृसत्य पालिते बेड़ाइ बने वन
तुमि कोन् निशाचर विकृत आकृति ※ वनेर भितरे थाक, हओ कोन् जाति
एत यदि लक्ष्मण करेन सम्भाषण ※ पूर्व्वकथा कवन्धेर हइल स्मरण
कुबेर नामेते दैत्य छिलाम सुन्दर ※ कन्दर्प जिनिया रूप येन निशाकर
सकल देवता निन्दा करि निजरूपे ※ एक मुनिवर मोरे शाप दिल कोपे

१ हाथ में आया २ हे लक्ष्मण ! ३ मुक्ति प्रदान करे ४ हाथ ।

रूप-गर्व ! निन्देसि पर-रूपा ❊ शाप विवश खल ! होय विरूपा[1]
त्रेता विष्णु लेंहि अवतारा ❊ परसि राम-सर तव निस्तारा

दो० इन्द्र कोपि, हनि बज्र मम मुण्ड उदर-गत कीन ।
चक्षु, कर्ण, नासा, चरन, सीस, उदर-आसीन ।। ५२ ।।

गति बिहीन, जनि जतन-अहारा ❊ भुज प्रलम्ब बल मम आधारा
बाहू युगुल पर्वताकारा ❊ करगत मम बहु पन्थ-प्रसारा
चलत प्रहर दुइ समय प्रमाना ❊ पथ - विस्तार जीव जे नाना
भुज पसारि भच्छहुँ नित सारे ❊ नित समात ते उदर हमारे
घृणित अहार घृणित आकारू ❊ लहि तव दरस शाप-उद्धारू
प्रभु बन-हेतु जानि अभिलासा ❊ करि उपकार चहौं सुरवासा
वरनेउ राम, हरी सिय रावन ❊ मिलै दरस किमि तासु सुहावन
जेहि बिधि सुलभ होय बैदेही ❊ प्रभुहिं कबन्ध बतावत तेही
बिन अन्त्येष्टि[2] न मम निस्तारू ❊ निपट अन्ध सोहिं जग अँधियारू
अधम दनुज-तन जब लौं शेसू ❊ कबहुँ न सम्भव प्रभु ! निरदेसू[3]
अनल-चिता, सुनि लखन सवाँरी ❊ दाह दीन पुनि बिधि अनुसारी
दहकेउ तन-कबन्ध बलसीवा ❊ उठेउ अनल सों अद्भुत जीवा

येमन रूपेर तेजे कर उपहास ❊ विरूप हउक सब, रूप याक् नाश
यखन हवेन विष्णु राम अवतार ❊ ताँर वाण स्पर्शे तोर हइबे निस्तार
आमार उपरे क्रुद्ध देव शचीनाथ ❊ करिले आमार शरीर बज्राघात
वज्राघाते मुण्ड मोर प्रवेशे उदरे ❊ चक्षु-कर्ण-घ्राण-पदे ना रहे बाहिरे
गतिशक्ति नाइ, किसे मिलिबेक भक्ष्य ❊ तेंइ मम दुइ-हस्त दीर्घ दुइ लक्ष
दुइ हस्त मोर येन दुइटा पर्य्यन्त ❊ दुइ हस्ते जुड़ि आमि बहुदूर-पंथ
दुइ प्रहरेर पथ यत वनचर ❊ दुइ हाते सापटिया भरि हे उदर
कुत्सित आकार मोर कुत्सित भोजन ❊ तोमा दरशने मोर शाप-विमोचन
तब किछु हित करि जाइ इन्द्रवास ❊ केन राम वने भ्रम, कोन् अभिलाष
श्रीराम बलेन, सीता हरिल रावण ❊ युक्ति बल, केमने पाइब दरशन
कबन्ध बलिल, राम, कहि उपदेश ❊ याहा हैते पावे तुमि सीतार उद्देश
यावत् तनुर मोर ना हय संहार ❊ तावत् ना देखि किछू, सब अन्धकार
राक्षस शरीर गेले पाव अव्याहति ❊ तबे त वलिते पारि इहार युकति
तखन लक्ष्मण वीर अग्निकुण्ड काटि ❊ कवन्धेरे दहिलेन करि परिपाटी
शरीर पुड़िया तार हइल अंगार ❊ अग्नि हैते उठे वीर अद्भुत आकार

१ अत्यन्त कुरूप २ अन्तःकर्म, दाहक्रिया आदि ३ निर्देश करना, राह सुझाना ।

अवर भानु[1] मनु गगन प्रकासा * दिव्य पुरुष रामहिं सम्भासा
चित दै सुनहु लखन, रघुराई! * ऋष्यमूक गिरि जहाँ सुहाई
मिलि सुग्रीव सरै[2] सब कामा * आयसु होय लहौं सुरधामा
राम दरस, दानव सुरधामा * कुश-कानन प्रभु कीन विरामा

श्रीराम-दर्शन पाकर शवरी का स्वर्गलाभ

दो० विगत रैन, रवि उदित छबि, सहित लखन, रघुवीर ।
पहुँचे सरित सुहावनी सलिला पम्पा तीर ॥ ५३ ॥

सहित बिहंगिनि[3] केलि बिहंगा[4] * चिर बिहार जहँ मृगी-कुरंगा[5]
राजहंस - हंसिन जल - क्रीड़ा * निरखि राम अतिशय मन पीड़ा
खग-मृग टेरि कहत बिधि एही * शशिमुखि कतहुँ लखी बैदेही
मज्जन - तर्पन पम्पा तीरा * शोध - सुकण्ठ[6] चले रघुवीरा
चलि मतंगमुनि - आश्रम आये * दरस तहाँ शवरी[7] के पाये
नयन नेह - जल भरत असेसू * रामहिं कहेउ यथा आदेसू
बहु दिन मुनि मतंग-पद सेवा * अन्त गये सुरपुर मुनिदेवा
मुनि के बचन—आश्रम वासू * दिवस एक जहँ राम निवासू

आकाशे उठिया करे रामे सम्भाषण * देवमूर्ति से पुरुष, द्वितीय तपन
पुरुष बलेन, शुन श्रीराम-लक्ष्मण * सावधान ह'ये शुन आमार वचन
सुग्रीवेर उद्देश करिओ ऋष्यमूके * आज्ञाकर रामचन्द्र जाइ स्वर्गलोके
राम दरशने कवन्धेर स्वर्गवास * कुशेर वनेते राम करेन प्रवास

श्रीरामदर्शने शवरीर स्वर्गलाभ

प्रभात हइल निशा, उदित मिहिर * चलिलेन दुइ भाइ पम्पा नदी तीर
केलि करे नाना पक्षी पक्षिणी सहित * देखिलेन मृग-मृगी विच्छेद-वञ्चित
राजहंसे-राजहंसी क्रीड़ा करे जले * देखिया रामेर शोकसागर उथले
जिज्ञासा करेन राम, ओहे मृग पक्षि * देखियाछ तोमारा कि सीता चन्द्रमुखी
पम्पाते करिया स्नान, करिया तर्पण * सुग्रीव-उद्देशे राम करेन गमन
प्रवेश करेन राम मतंग-आश्रमे * तथाय शवरी छिल देखिल श्रीरामे
शवरी आनन्द-वारि वारिते न पारे * श्रीरामेर प्रति बले आज्ञा अनुसारे
मतंग मुनिर सेवा करि वहुकाल * वैकुण्ठ गेलेन मुनि ह'ये प्राप्तकाल
कहिलेन आमार आश्रमे कर स्थित * आसिवेन एखाने अवश्य रघुपति

---

१ दूसरा सूर्य २ काम बनेगा ३ पक्षिणी ४ पक्षी ५ हरिन-हरिनी
६ सुग्रीव की खोज में ७ देखिये पृष्ठ ३८५ ।

दरस मिलैं जब नलिनि-विलोचन[1] ✲ शवरी ! तब तव पाप-विमोचन
राम - राम रघुपति श्रीरामा ✲ दासिहिं सदय लेहु निज धामा
शुद्ध काठ बहु, चिता सजाई ✲ शवरी पुनि तहँ अनल जराई
कीन प्रवेश, राम मन धारी ✲ तेंहि साहस प्रभु विस्मय भारी
दहकि शरीर भयेउ जरि आगी ✲ अहह ! धन्य शवरी बड़भागी !
जासु अस्मरन मंगल नामा ✲ मुक्ति दैन पावन हरिधामा
सो प्रतच्छ पुनि दरशन पाई ✲ शवरी-गति§ प्रभु स्वयं बनाई
राम प्रसाद पाप तेंहि नासू ✲ अनायास बैकुण्ठ निवासू

दो० राम-चरित-घट-सुधा सों, लहि अरण्य सुख-खानि ।
किष्किन्धा गाथा कहत, कवि कृतिवास बखानि ।। ५४ ।।

शवरी, यखन पावे राम-दरशन ✲ तखन हइबे तव पाप-विमोचन
राम-राम श्रीराम राघव रघुपति ✲ हइया प्रसन्न ए दासीरे देह गति
शवरी रामेर आगे अग्निकुण्ड काटे ✲ आनिया ज्वलिल अग्नि नाना शुद्धकाठे
अग्निते प्रवेश करे स्मरि नारायण ✲ ताहार साहसे राम चमकित-मन
अग्निते पुड़िया तनु हइल अंगार ✲ ताहार भाग्येर कथा कि कहिब आर
याँहार स्मरण मात्र मुक्ति संगे धाय ✲ ताँहाके सम्मुखि देखि त्यजिल से काय
श्रीराम-प्रसादे तार हय पाप नाश ✲ अनायासे शवरी चलिल स्वर्गवास
श्रीराम-चरित-कथा अमृतेर भाण्ड ✲ एत दूरे समाप्त हइल वन-काण्ड

।। अरण्यकाण्ड समाप्त ।।

---

१ कमलनयन राम ।

§ शवरी—एक अस्पृश्य कन्या के विवाह-आयोजन हेतु, उसके माता-पिता ने अनेक पशु-पक्षी प्रीतिभोज के निमित्त एकत्र कर रखे थे । शवरी को जव यह पता लगा, तो वह इस जीव-हत्या की आशंका से व्याकुल हो, विना कहे-सुने वन में भागकर अकेली फल-फूल-पत्तों पर गुज़र करने लगी । संयोगवश मतंग मुनि को इस छिपी हुई भक्तिनी का आभास मिला और उन्होने उसे अपने आश्रम मे आश्रय दिया । वहुत दिनों बाद, मतंग मुनि ने अपने शरीर-त्याग के समय शवरी से कहा कि वह उसी आश्रम में रहकर भगवान् के वहाँ आगमन तक प्रतीक्षा करे और भगवान् रामचन्द्र का दर्शन पाकर तब स्वर्गलाभ करे । सुतराम् शवरी वहाँ अकेली रहती, नित्य फल बटोर कर सायंकाल तक भगवान् की प्रतीक्षा करती और तव नैवेद्य लगाकर उसे स्वयं ग्रहण करती । वह शुभ अवसर राम के वन-आगमन के समय उपस्थित होने पर, शवरी ने उनका जंगली वेरों से सत्कार किया और, भगवान् का दर्शन प्राप्त होने पर, सदेह चितारोहण कर वैकुण्ठ को प्रस्थान किया ।

* श्रीगणेशाय नमः *

किष्किन्धाकाण्ड

श्लोक—कुन्देन्दीवरसुन्दरौ धृतिवलौ विज्ञानगेहावुभौ
लीलाढ्यौ वरधन्विनौ श्रुतिनुतौ गोविप्रवृन्दप्रियौ ।
मायामानुषरूपिणौ रघुवरौ सत्यव्रतावस्थितौ
सीतान्वेषणतत्परौ पथिगतौ भक्त्या भजामो वयम् ॥ १ ॥
ब्रह्माम्भोधिसमुद्भवं कलिमलप्रध्वंसनं चाव्ययं-
श्रीशम्भो रसनासुतृप्तिजनकं देवैः परं दुर्लभम् ।
संसारामयभेषजं सुमधुरं श्रीजानकीजीवनं-
धन्यास्ते कृतिनः पिवन्ति नियतं श्रीरामनामामृतम् ॥ २ ॥

दो० राम-लखन दण्डक भ्रमन, कपिगन कौन सहाय ।
सीय-खोज मञ्जुल कथा कहेउ सन्त कबि गाय ॥

ऋष्यमूक गिरि शिखर सुहावन * युगुल बन्धु चलि सो किय पावन
तहँ मारुति[1], गवाक्ष, नल, नीला * सहित, सुकण्ठ[2] बसत बलशीला
उर ससंक कपिगन भय छावा * बालि मनहु चर युगुल पठावा
बालि अथाह बुद्धि - चतुराई * सो बिन जुगुति बूझि किमि पाई
सुनि सुग्रीव-बचन, तरु-डारी * फाँदि चढ़े बहु शाखाचारी[3]
घुड़कत खौखियात बहु भाँती * तरु विशाल फल-फूल निपाती
व्याघ्र, मृगेन्द्र[4], महिष भय पाई * आर्त्त कण्ठ गिरि चले बराई
हनुमत कहेउ, सुनहु कपिकेतू[2] * कतहुँ न बालि, बालि-भय हेतू

श्रीराम लक्ष्मण दोंहे भ्रमेन दण्डके * सहाय करिते जान वानर कटके
दुइ भाइ उठिलेन पर्व्वत शिखरे * देखिया वानर पञ्च शंकित अन्तरे
सुग्रीव वलिल देख आसे दुइ नर * मने करि, वालि राजा पाठाइल चर
बुद्धिर सागर बालि बुद्धि धरे नाना * तत्त्व धर सत्य मिथ्या सब जावे जाना
सुग्रीवेर वचने वानर पाले पाले * लाफे लाफे उठे सब बड़-बड़ डाले
से गाछ सहिते नारे सवार आस्फाल * फल फूल भांगे कत शाल-ताल-डाल
बनजन्तु यत छिल पर्व्वत-शिखरे * सिंह व्याघ्र महिष पलाय उच्चैःस्वरे
हनूमान ब'ले राजा ना हओ चिन्तित * ना देखिया बालिरे हइले केन भीत

१ हनुमान २ सुग्रीव ३ वन्दर ४ सिंह ।

जग जानत कपि-चञ्चल-रीती ※ तिन नृप चपल, अधिक अनरीती
चलि देखहुँ, के धनुधर वीरा ※ बिन जाने, प्रभु ! व्यर्थ अधीरा
तापस बेस यदपि, हनुमाना ! ※ तदपि हेतु-भय ! कर धनु-बाना !
कोउ नृप सुवन, भभूति रमाई ※ आनहु मर्म बेगि तुम जाई
धरि मुनि-रूप चले हनुमाना ※ उभय मिलन अति मोद समाना[1]
राम-नाम यम त्रास नसावन ※ सहज मुक्ति, हरि-नाम दिवावन
प्रथम कड़ी किष्किन्धा गाना ※ मञ्जु, विज्ञ कृतिवास बखाना

राम-सुग्रीव-मित्रता और सीता-आभूषण-प्राप्ति

निरखि, पवनसुत, दोउ तपरूपा ※ कहेउ बचन, धरि निज मुनि-रूपा

छं० बनबासिन छद्म सरूप धरे, निहचय तुम राजदुलार कोऊ ।
ससि-भानु समान धरा बिचरौ, तजि व्योम[2] अरण्य रमन्त दोऊ ॥
केहि हेतु, कवन कुल-केतु, सदन कहँ? नाथ! सकल बिबरन कहऊ ।
जग-जाहिर वानरराज सुकण्ठ-सचीव[3] की संक प्रभो! हरऊ ॥

दो० लहैं मित्रता नाथ की, सुग्रीवहिं अभिलाष ।
तिन बसीठ[4] हनुमान मैं, इत आयेउँ प्रभु पास ॥

वानर चञ्चल जाति लोके उपहासे ※ चञ्चल हइले राजा लोके आरो दोषे
आमि गिया जेने आसि कोथाकारवीर ※ तथ्य ना जानिया केन हइले अस्थिर
सुग्रीव वलिल, देखि तपस्वी उभय ※ किन्तु धनुर्व्वाण धरे, मने लागे भय
हइबे तपस्वी वेश राजार कुमार ※ शीघ्र जाह हनूमान आन समाचार
जान हनूमान वीर तपस्वीर वेशे ※ परम गौरव भावे उभय सम्भाषे
राम नाम श्रवणे यमेर दाय तरि ※ अनायासे मुक्त हबे मुखे व'ल हरि
कृत्तिवास पण्डितेर मधुर पांचालि ※ रचेन किष्किन्ध्याकाण्ड प्रथम शिकलि

सुग्रीवेर सहित श्रीरामेर मित्रता-बन्धन ओ सीतार आभूषण-प्राप्ति

हनूमान मुनिवेशे देखे दुइ जन ※ तपस्वीर वेश धरि कर सम्भाषन
हनूमान कहे, प्रभु, देखि ये आकार ※ अवश्य हइबे कोन राजार कुमार
चन्द्र सूर्य्य जिनि रूप भ्रम भूमण्डले ※ गगनमण्डल छाड़ि केन वनस्थले
कोथा घर कि कारने हेथा आगमन ※ विशेषिया कह प्रभु सव विवरन
सुग्रीव वानरराजा लोके ख्यातिमान ※ ताँहार सचिव आमि नाम हनूमान
तोमा सह मित्रता करिते अभिलाष ※ पाठाइल सुग्रीव आमारे तव पाश

---

१ आनन्द से भर गये २ आकाश ३ सुग्रीव के मंत्री मुझ हनुमान की ४ दूत ।

सुनि लखनहिं आयसु दियेउ रघुपति राजिवनैन ।
सचिव-सुकण्ठहिं लखन निज दीन्हेउ परिचय बैन ॥ १ ॥

छिति-भूषन दशरथ नृप-बन्दन ※ हम तिन सुवन लखन-रघुनन्दन
कानन इतै सत्य-पितु पालन ※ सूने हरी सिया तहँ रावन
एक सिद्ध जन[1] किय निर्देसू ※ मिलन-सुकण्ठ हरन सब क्लेसू
कहँ सुग्रीव? भ्रमत तेहि हेतू ※ लै कपि! चलौ जहाँ कपिकेतू
कह कपि, दरस परस्पर पाई ※ निवरैं क्लेस, उभय[2] सुखदाई
नारि-हरन अरु राजु विनासी ※ बालिराज किय अनुज प्रवासी
तव-सहाय तिन राज-उबारू ※ तिन-कर[3] पुनि सीता-उद्धारू
राज-रहित बन भ्रमत कपीसा ※ लहैं राज-सुख मिलि जगदीसा
बोले राम, करउ कपि! सोई ※ मम-सुग्रीव-मिलन जिमि होई
सुनि प्रभु-बचन बेगि हनुमाना ※ चलि सुकण्ठ प्रति सकल बखाना
ऋष्यमूक सुग्रीव सुहाये ※ मारुति-बचन सुनत मन लाये

छं० हे कपि-मुकुट! कुरूप कीस तजि, मानव-तन छबि धारी ।
पाद्य-अर्घ्य-सत्कार करहु चलि आई राम-सवारी ॥

श्रीराम बलेन शुन लक्ष्मण वचन ※ सुग्रीवेर पात्र सह कर सम्भाषन
एतेक कहेन यदि कमललोचन ※ निज परिचय देन ताहारे लक्ष्मण
महाराज दशरथ पृथिवी-भूषण ※ आमरा ताँहार पुत्र श्रीराम लक्ष्मण
आइलाम पितृसत्य पालिते कानन ※ शून्य घरे पेये सीता हरिल रावण
कोन सिद्ध पुरुषे कहिल उपदेश ※ सुग्रीव हइते सब खण्डिवेक क्लेश
भ्रमितेछि आमरा सुग्रीवेर उद्देशे ※ दोंहारे लाइया चल सुग्रीवेर पाशे
हनूमान बलेन, उभय दरशने ※ परस्पर तुष्ट हबे उभयेर मने
सुग्रीवेर राज्य नाइ, नाइ तार नारी ※ वालिराजा हरिया करिल देशान्तरी
सुग्रीव पाइबे राज्य साहाय्ये तोमार ※ सुग्रीव करिबे तव सीतार उद्धार
हाराइया राज्य भ्रमे सुग्रीव काननें ※ राज्य सुख पाइब से तव दरशने
श्रीराम ब'लेन, कपि करह गमन ※ सुग्रीवेर सने मोर कराओ मिलन
शुनिया रामेर वाक्य जान हनूमान ※ कहेन सकल सुग्रीवेर विद्यमान
ऋष्यमूक पर्व्वते उठिया सेइ क्षणे ※ हनूमान कहेन, सुग्रीव राजा शुने
छाड़ह वानर मूर्ति कुत्सित आकार ※ धरह मनुष्य रूप, देखिते सुसार
पाद्य अर्घ्य लाइया करह शिष्टाचार ※ आइलेन राम दशरथेर कुमार

---

१ देवयोनि-प्राप्त कवन्ध दैत्य २ दोनों को ३ सुग्रीव के हाथों ।

दसरथ-नन्दन जगबन्दन के, प्रभु ! अब काज सवाँरी ।
लहि सहाय निज बिपदा निवरौ[1] पात्र-कुपात्र विचारी ।।
अनुज सुलच्छन लखन जासु तिन तिया हरी दसभाला ।
बिधि-अनुगत ! सुग्रीव-द्वार सो प्रस्तुत आजु कृपाला ।।
वेद न जानत भेद, जोगि जन ध्यावत, जाहि त्रिकाला ।
शिव-विरञ्चि तरसत जिन दरसन श्रीपति राम-भुवाला ।।

सुनि सुग्रीव अनन्द-विभोरा * लै फल-पुहुप चलेउ प्रभु ओरा
मंगल घरी धन्य ! कपिकेतू * सुभ छन लहेउ दरस-रघुकेतू
पाद्य अर्घ्य पूजेउ रघुवीरा * पुलकित कपि दृग सरसति नीरा
कर जोरे प्रणवति कपिराजू * अवगत नाथ ! मोंहि तव काजू
गाथा सकल कही हनुमाना * सिय-उद्धार हेतु भगवाना

दो० मारुति-बचन प्रतीत जनि, पसुहिं बनावौ मीत ।
प्रियजन कहि, कर गहहु[2] प्रभु ! जो मो पै कछु प्रीत ।। २ ।।

कहँ कपि हीन, कहाँ तव चरना * कृपासिन्धु कीजिय कछु करुना
प्रभु-पद परसत शिला-स्वरूपा * अहह ! भई सुन्दरी अनूपा

ताँहारे साहाय्य यदि कर महाराज * सेइ परकाले तव सिद्ध हबे काज
रामेर अनुज से लक्ष्मण सुलक्षण * सुवर्ण कुवर्ण मानि करि निरीक्षण
रामेर रमणी सीता हरिल रावण * सेइ हेतु तोमाते ताँहार प्रयोजन
सुग्रीव, तोमारे आजि अनुकूल विधि * कोथा हैते मिलाइल राम गुणनिधि
एतदिने तोमारे दुःखेर अवसान * तोमारे सदय रामरूपी भगवान
याँर तत्व चारि वेदे ना पाय किञ्चित् * विरिञ्चि वाञ्छित आर शंकर इप्सित
योगे योगे योगिगन ना पाय याँहारे * सेइ राम रमानाथ उपस्थित द्वारे
शुनिया सुग्रीव राजा आपना पासरे * फल पुष्प लये गेल श्रीराम गोचरे
बड़ भाग्य सुग्रीवेर विधिर लिखन * शुभक्षणे करिल श्रीराम-दर्शन
पाद्य अर्घ्य दिया श्रीरामेर पूजा करे * प्रेमानन्दे सुग्रीवेर नेत्रे नीर झरे
कृताञ्जलि हइया कहिल कपिराज * हइयाछि ज्ञात राम, तोमार ये काज
कहिलेन सकल आमारे हनूमान * सीतार उद्धार हेतु आइले ए स्थान
मित्रता करिवे राम पशुर सहित * ए हनूमानेर वाक्य ना हय प्रतीत
पशु प्रति यदि राम हय अनुग्रह * मित्र बलि रघुवीर हस्ते हस्त देह
दास योग्य नहि आमि जातिते वानर * करुणा प्रकाश कर करुणासागर
पाषाण उपर समर्पिया निज पद * अनायासे दिले तारे मनुष्येर पद

१ छुटकारा पाओ २ हाथ पकड़ो ।

केवट धन्य! सुहृद पद पाई ❋ हीनहिं सुगति राम-प्रभुताई
राजिवनयन राम रघुनाथा ❋ गहि कपीस-कर कीन सनाथा
पूरब पुन्य अनन्त कपीसा ❋ विधि वाञ्छित पद लहि जगदीसा
गुणनिधि राम दया के सागर ❋ जासु कृपा बन्धन वन-वानर

छं० अति पामर, वानर प्रति कातर, प्रभु कर[1] दहिन बढ़ावा।
तजि मुनिवेस, पवनसुत अरनी[2] मंथि अनल सुलगावा॥
साखी अगिनि, परस्पर प्रमुदित, मित्र! मित्र! गुहरावा।
हनि रिपु, तिय-उद्धार, दुहुन दोउ करि सहाय, मन भावा॥

अमिट ललार-लिखी विधि-गाथा ❋ जगपति[3] बचन बँधे कपि साथा
धन्य धन्य सुग्रीव कपाला[4] ❋ सुहृद राम जिन परम दयाला
कथन परस्पर दोउ जन कहहीं ❋ अतिशय मोद निरखि दोउ लहहीं
कथन-श्रवन दोउ मित्तन-गाना ❋ दिन बहुरत[5] सुग्रीव समाना
कहें सुकण्ठ यथा मोहिं ज्ञाना ❋ सिय-बृतांत प्रभु! करहुँ वखाना
कपि हम पाँच इतै गिरि ऊपर ❋ स्यन्दन गगन लखा दसकंधर
बाला बिलपत रथ, कंकण-ध्वनि ❋ गरुड़मुखे जिमि ग्रस्त भुजंगिनि

चण्डालेरे दस्यु भावे करिले उद्धार ❋ नीचेर निस्तार हेतु तव अवतार
दयाल श्रीरामचन्द्र कमललोचन ❋ वानरेर हस्ते हस्त देन नारायन
पुञ्ज पुञ्ज पूर्व्व पुण्य सुग्रीवेर छिल ❋ विरिञ्चि वांछित पद प्रत्यक्ष पाइल
परम दयालु राम गुणे नाहि सन्धि ❋ जाँर गुणे वनेर वानर हय वन्दी
वानरेर हस्त दिते नहेन विमर्ष ❋ दिलेन दक्षिण हात श्रीराम सहर्ष
मुनि वेश छाड़ि कपि ह'ये हनूमान ❋ काष्ठ आने बाछिया डागर दुइ खान
दुइ काष्ठ घर्षण करिते अग्नि ज्वले ❋ अग्नि साक्षी करि दोंहे मित्र-मित्र वले
परस्पर वैरी मारि उद्धारिव नारी ❋ अग्नि साक्षी करि एइ हइल दोंहारि
विधिर निर्व्वन्ध केवा करिवे खण्डन ❋ वानरेर संगे सत्ये वद्ध नारायन
सवा हैते सुग्रीवेर अधिक कपाल ❋ मितालि करेन राम परम दयाल
उभये कहेन कथा शुनेन उभय ❋ उभये उभय-प्रति प्रीति सातिशय
उभयेर मित्रता जे शुने किम्वा कय ❋ सुग्रीवेर मत तार हय भाग्योदय
सुग्रीव कहेन, राम, कहि अवशेष ❋ पाइया छिलाम बूझि सीतार उद्देश
आमरा वानर पञ्च छिलाम पर्व्वते ❋ देखिलाम एक कन्या रावणेर रथे
हात पा आछाड़े करे कंकणेर ध्वनि ❋ गरुड़ेर मुखे येन बद्धा भुजंगिनि

१ हाथ २ अरणी, घिसकर अग्नि प्रकट करने के लिए दो काष्ठ ३ जगत् के स्वामी ४ भाग्य ५ भाग्योदय होना, दिन फिरना।

आँचर आभूषन, गरहारा * रथ सों झरत मनहुँ नभ-तारा
धरेउ सँजूति नाथ मैं तेही * संसय मोंहि सोई वैदेही
लाय धरउँ प्रभु आयसु पाई * लखौ चीन्ह-सिय ते रघुराई

दो० चीन्ह-मैथिली आनि मोंहि दरस करावहु मीत।
राखि प्रान, मेटहु व्यथा, बोले करुनातीत ॥ ३ ॥

आनेउ सोइ सुकण्ठ अविरामा * सोक-सिन्धु उमड़ेउ लखि रामा
सोक-विवस प्रभु धरनि निपाता * बरसि नयन-जन भिजवति गाता
आँचर अभरन रूपसि तोरा *कहँ सुमुखी ? बिलाप अति घोरा!
तिन सग तजि मोंहि किय निर्देसू[1] * जानहिं किमि, कहँ प्रिय, केहि देसू
कहहु अहा! सुग्रीव सनेही * संभव मिलन पुनः वैदेही
सिय मन सुमिरि व्यथा उर माहीं * जग अँधियार ज्ञान थिर नाहीं
जनि दिन-रैन चैन, कहँ जाई * चन्द्रबदनि - दरसन कहँ पाई
स्वर्ग - मर्त्य तिहुँलोक पताला * हेरि दनुज जहँ जाति कराला
हनहिं, न तिन कोउ राखनहारा * मम धनु - तेज विदित संसारा
आनहु चाप, लखन! रिपु मारी * शोक-अनल-उर होय निवारी[2]
बानरपति[3] बहुबिधि समुझावा * कृत्तिवास मंजुल - पद गावा

गलार उत्तरीय गायेर आभरण * रथ हैते पड़िल जेमन तारागण
अनुमाने बुझि तिनि तोमार सुन्दरी * यत्न करि राखियाछि भूषण उत्तरी
यदि आज्ञा हय तब आनि ता एखन * हय नय, चिन मित्र सीतार भूषण
श्रीराम बलेन, मित्र, कर से विधान * देखाओ सीतार चिन्ह राख मम प्रान
आभरण आनेन सुग्रीव सेइ स्थले * देखिया रामेर शोकसागर उथले
अवश हइया राम पड़ेन भूतले * शरीर भासिल ताँर नयनेर जले
विलाप करेन कोथा रहिले सुन्दरी * तोमाय भूषण एइ तोमाय उत्तरी
जानाइते आमारे फेलियाछिले पथे * कोन दिके गेले प्रिये, जानिब किमंते
कह कह सुग्रीव आमार तुमि सखा * पुनः कि पाइब आमि जानकीर देखा
जानकीर रूप मने हइले उदय * ज्ञानहत एइ सेइ, देखि विश्व तमोमय
स्थिर नहे मन देह दिवस रजनी * कोथा गेले पाइ सेइ सुधांशुबदनी
स्वर्ग मर्त्य पाताले रावण वैसे यथा * घुचाइब सर्व्वत्र राक्षस जाति कथा
त्रिभुवने जाने मम धनुकेर छटा * मारिब राक्षसगणे रक्षा करे केटा
लक्ष्मण, उद्योग कर, आन धनुर्व्वाण *अरि-बध करि आमि शोकाग्नि निर्व्वाण
सुग्रीव विविध रूपे रामे के बुझान * कृत्तिवास रचे गीत मधुर आख्यान

१ संकेत, २ निवारण ३ सुग्रीव।

राम-नाम-महिमा

छं० यम कर दमन कीन रावन, तिन-दलन कियेउ प्रभु रामा।
पुण्य-नाम जिन लिये फन्द कटि, दरस न पुनि यम-धामा॥
पातक-हरनि पुण्य कै जननी, वेद-ऋचा रामायन।
श्रवन, ध्यान, पारायन कीन्हे तुष्ट होत नारायन॥

सर्वप्रधान कर्म जप-रामा ❋ कर्म न धर्म, वृथा सब कामा
अन्तकाल जेहि मुख प्रभु-रामा ❋ चढ़ि बिमान गमनत सुरधामा
सुयश अहिल्या जग बिस्तारा ❋ रघुपति महिमा अकथ अपारा
अश्वमेध-फल सुनि रामायन ❋ खल रत्नाकर सम तारायन
सिथिल न कबहुँ, सदा हिय धारन ❋ राम-सेतु भव-सिन्धु उबारन

दो० बन-वानर के नेह बँधि, दीनन कीन सनाथ।
जल-तैरत पाहन[1], अहो! लीला-लीलानाथ॥
राम-जन्म सों प्रथम ही वत्सर साठि हजार।
राम-भविष्यपुरान किय बाल्मीकि विस्तार॥
बाल्मीकि मुनि बन्दि, किय बंग-काव्य कृतिवास।
देवनागरी माँहि सो यहि विधि भयेउ प्रकास॥ ४॥

राम-नाम महिमा

शमन-दमन रावण राजा, रावण-दमन राम।
शमन-भवन ना हय गमन, जे लय रामेर नाम॥
सुकृत-जनन, दुष्कृति-दमन, श्रुति-मुख रामायण।
श्रवण-मनन, करे जेइ जन, तारे तुष्ट नारायण॥

राम-नाम जप भाइ अन्य कर्म्म पिछे ❋ सर्व्व धर्म्म-कर्म्म राम-नाम विना मिछे
मृत्युकाले यदि नर 'राम' बलि डाके ❋ बिमाने चड़िया सेइ जाय देवलोके
श्रीरामेर महिमार कि दिब तुलना ❋ ताहार प्रमाण देख गौतम-ललना
पापी जन हय मुक्त बाल्मीकिर गुने ❋ अश्वमेध फल पाय रामायण शुने
राम नाम लइते भाइ ना करिओ हेला ❋ भव सिन्धु तरिवारे राम-नाम भेला
अनाथेर नाथ राम प्रकाशिते लीला ❋ बनेर वानर बन्दी, जले भासे शिला
रामजन्म पूर्व्वे षाटि सहस्र वत्सर ❋ अनागत पुराण रचिल मुनिवर
बाल्मीकि बन्दिया कृत्तिवास विचक्षण ❋ शुभक्षणे प्रकाशिल भाषा रामायण

१ पत्थर।

सुग्रीव द्वारा सीता-उद्धार की स्वीकृति

कह सुग्रीव, न ज्ञान बिसेसू * केहि बिधि वीर गयेउ केहि देसू
तदपि, तात! कहुँ तासु न त्राना * लै कपि-कटक हरहुँ तेहि प्राना
धैर्य, सखा! करु धीरज धारन * तव प्रिय शोध, अबेर[1] न कारन
जहँ कहुँ खल रावन कर वासू * जाति गोत कुल सहित बिनासू
रुदन तजहु, न शोक बुध[2] करहीं * कातर-शोक, शोक अनुसरहीं
शासन रहित, हरित मम नारी * मैं पसु, तबहुँ न बहु मन धारी
त्रिभुवन पूज्य अहो! तुम रामा * अनुचित तव बिषाद हित-बामा[3]
तव प्रिय-मुक्ति,असत[4] जनि भाषी * निश्चय करहुँ अनल करि साखी
बहु विधि दिय प्रबोध कपिकेतू * शमन न राम दुसह दुख हेतू
बहु बिधि बिनय सुकण्ठ सुहाई * सो सुनि उतर दीन रघुराई
दुख कुल, जाति, सखा, सुत लोका * सर्वोपरि सहभामिनि-सोका
घरनी[5] सों घर-जग-उजियारा * नारी हेतु-पुत्र-परिवारा
पितरन श्राद्ध-पिण्ड-अधिकारी * वंश-प्रदीप-दयनि यह नारी
अतिशय सीख सुहृद! तव पाई * बिसरत सोक न सिय दुखदाई
कहा कहौं प्रभु, कहेउ कपीसा * मैं अनुचर, तव आयसु सीसा

सुग्रीवेर सीता-उद्धारेर अंगीकार

सुग्रीव बलेन, सखे ना जानि विशेष * कि जानि केमन वीर गेल कोन देश
जथाय् जाउक तार नाहिक एड़ान * वानर लइया तार बधिब परान
सम्वर सम्बर मित्र मने देह क्षमा * अविलम्बे उद्धारिव तव प्रियतमा
जथा तथा जाउक से पापिष्ठ रावण * सवंशे मारिव तार ज्ञाति-बन्धुजन
विलाप सम्बर राम, शोके वाड़े शोक * शोकेते कातर नाहि हय विज्ञलोक
राज्य हारालाम आर हारालाम नारी * पशु आमि तथापि ता मने नाहि करि
तुमि राम हइयाछ भुवन-पूजित * भार्य्या लागि कर खेद अति अनुचित
मिथ्या ना बलिब मित्र, अग्नि साक्षीकरि * उद्धार करिव आमि तोमार सुन्दरी
अशेष प्रकारे राजा जन्माय प्रबोध * तथापि बिषम शोक नाहि हय बोध
एतेक बलिल यदि सुग्रीव भूपति * प्रत्युत्तर करेन आपनि रघुपति
ज्ञाति गोत्र पुत्र मित्र शोक पाय लोक * से सबार हइते अधिक भार्य्या-शोक
कलत्रे गृहीर हय कलत्रे संसार * कलत्र हइते हय पुत्र-परिवार
गया श्राद्धे करे पुत्र वंशेर उद्धार * पुत्र दारा पारत्रिक ऐहिक निस्तार
अशेष प्रकारे मित्र, बुझाओ आमाय * तथापि कलत्र शोक पासरा ना जाय
सुग्रीव कहेन, राम, कि कहिते पारि * पालिब तोमार आज्ञा आमि आज्ञाकारी

१ विलंब २ समझदार ३ पत्नी के लिए ४ मिथ्या ५ पत्नी।

यथा बुद्धि तव काज सवाँरहिं * सुधा-गान कृतिवास बखानहिं

राम द्वारा बालि को मार कर सुग्रीव को राज्य दिलाने का वचन

दो० भला प्रयोजन बिन कबहुँ, को यहि बिधि बतरात[1]।
कहेउ राम, मम दुसह दुख, सुबिदित तुम कहँ तात ! ॥ ५ ॥

सिय खोजहु, उर संशय नाहीं * कहउ प्रयोजन निज मम पाहीं
कतहुँ दुराव[2] न, साधहिं काजू * सुनि बिनीत बोलेउ कपिराजू
धरि मन धीर सुनहु रघुबीरा * करहुँ निवेदन कछु मम पीरा
हेरि, शाल-तरु आसन लाई * सोहत सखा युगुल सुख पाई
चन्दन-डार लखन आसीना * पुनि सुग्रीव निवेदन कीना
दुर्जय बालि बिपुल दुख दीना * अपमानित तिय-राजु-बिहीना !
यहि गिरि गुजर, न आन उपावा * बिधि अनुगत प्रभु-दरस दिखावा
दीन भरोस कपिहिं रघुनन्दन * बालिहिं मारि निवारहुँ बन्धन
तुमहिं राज-दुख, मोहिं तिय-सोकू * दुहुन बेगि पठवहुँ यमलोकू
बरनहु युगुल बन्धु किमि रारी[3] *सुनहिं कवन केहि बिधि अपकारी[4]
रुचिर न रारि[5] मोहिं रघुनाथा * बरनौं सकल सुनौ मम गाथा

करिव तोमार कार्य्य आमि यथाज्ञान * कृत्तिवास रचे गीत अमृत समान

राम बालि के मारिया सुग्रीव के राज्य दिवार अंगीकार

श्रीराम ब'लेन मित्र बिना प्रियजन * हेनकाले हेनकथा कहे कोनजन
आपनि देखिले मित्र, आमार ये क्लेश * अवश्य करिवे तुमि सीतार उद्देश
आमाते तोमार ये हइबे प्रयोजन * अकपटे सेइ कार्य्य करिब साधन
सुग्रीव ब'लेन, स्थिर कर तुमि मन * सम्प्रति करिब किछु आत्मनिवेदन
बसिते आसन राजा देखे चारिभिते * आनिलेन शालबृक्ष फलेर सहिते
वसेन आनन्दे तदुपरि दुइजन * चन्दनेर डाल भांगि बसेन लक्ष्मण
सुग्रीव बलेन, वालि बिक्रमे प्रधान * राज्य-जाया हरिया करिल अपमान
ए पर्व्वते थाकि राम ना देखि उपाय * हये अनुकूल विधि तोमारे मिलाय
आश्वास करेन सुग्रीवेर रघुवर * बालिके मारिया तव घुचाइब डर
मम भार्य्या, तव राज्य, जेइ जन हरे * अविलम्बे ताहारे पाठाब यमघरे
उभय भ्रातार केन हइल विवाद * विशेष शुनिते चाहि कार अपराध
सुग्रीव बलेन, आमि विवाद ना जानि * विशेष करिया कहि, शुन रघुमणि

१ कहता है २ अलगाव, कपट ३ झगड़ा, विरोध ४ बुराई करनेवाला, अपराधी ५ झगड़ा।

भूप महामति 'अक्षय' नामा ❋ हम दोउ तासु सुवन सरनामा[1]
समय पाय पितु स्वर्ग सिधारे ❋ केहि नृह-पद ? परिजनन[2] बिचारे
अग्रज बालि अतुल बलवाना ❋ धर्म कर्म रत, समर-प्रधाना
मंत्रिन-मत, सो राजु सम्हारी ❋ बालि कीन पुनि मोंहि अधिकारी
सदा सनेह हास परिहासू ❋ रारि न कहुँ, दोउ सुखद निवासू

दो० बिलसत राज सप्रीत दोउ, बिधि होनी दुख-दैन ।
दारुन घटित बिवाद जिमि, सुनहु सरोरुहनैन[3] ॥ ६ ॥

मायावी, दुन्दुभि—दुइ भ्राता ❋ दनु[4] दुर्जय, वर दीन विधाता
माया महिष रूप निशिचारी ❋ मायावी निसि बालि हँकारी[5]
सुनेउ निषेध न बाहेर जाई ❋ मैं अनुसरेउँ द्वार जहँ भाई
युगुल बन्धु लखि निसिचर भागा ❋ तेहि खोजत हम दोउ गृह त्यागा
लखेउँ चन्द्रछबि-धवलित देसू ❋ दनु पातकी सुरंग प्रवेसू
कहेउ बालि आवहुँ खल मारी ❋ तब लौं द्वार करहु रखवारी
हटकेउँ[6], दानव-त्रास न सेसू ❋ उचित प्रवेस न संसय-देसू[7]
पद-बिनती मम ताहि न भाई ❋ धाय सुरंग दनुज पहँ जाई

अक्षय छिलेन नामे राज्य महापति ❋ आमरा उभय भ्राता ताँहार सन्तति
किछु काल परे पिता पाइलेन स्वर्ग ❋ राज्य दिते उभयेर आसे पात्रवर्ग
ज्येष्ठ भाइ वालि राजा विक्रमे सागर ❋ धर्म्मे सदा रात, समरे तत्पर
मंत्रीगण ताँहारे दिलेन राज्यभार ❋ परे वालि दिल मोरे राज्य अधिकार
परस्पर परम सौहार्द करि वास ❋ ना जानि विरोध, सदा-परिहास
विधिर निर्व्वन्धन कभू ना हय खण्डन ❋ विवादेर कथा शुन कमललोचन
प्रीतिरूपे दोहे करिताम राज्यभोग ❋ हेनकाले करिलेन विधाता दुर्य्योग
मायावी दुन्दुभि नामे दुइ सहोदर ❋ पाइया ब्रह्मार वर दानव दुर्द्धर
दुइ भाइ मायाय महिषरूप धरे ❋ मायावी निशीथ आसे जिनिते वालिरे
जुझिवारे जाय वालि सबार निषेधे ❋ पश्चाते गेलाम आमि भाइ अनुरोधे
पलाइल दानव देखिया दुइजने ❋ आमरा भ्रमन करि तार अन्वेषने
चन्द्र-आलोकेते मोरा जाइ देखादेखि ❋ सुड़ंगे प्रवेश करे दानव पातकी
वालि बले थाक भाइ सुड़ंगेर द्वारे ❋ यावत् दानव मारि नाहि आसि फिरे
आमि कहिलाम, दैत्य हैल निरुद्देश ❋ संशय-स्थानेते तुमि ना कर प्रवेश
पापे पड़ि बलिलाम तबू नाहि माने ❋ सुड़ंगे प्रवेश करे दानव जेखाने

१ प्रसिद्ध २ आत्मीयों ने ३ कमलनयन ४ दनुज ५ ललकारा ६ रोका
७ खतरे के स्थान में ।

बर्जेउँ[1] पुनि-पुनि, देत न काना * पैठि पताल कपीस पयाना
खोजत बालि भ्रमत इक वत्सर * मिलत बधेउ दनु समर अनन्तर
बालि सुभट कृत दानव - घातू * मोंहि प्रतीत नृप बालि - निपातू
नृप हनि पुनि मम हनन-प्रसंगा * शिला - रुद्ध किय द्वार - सुरंगा
बीतेउ वर्ष बालि नहिं आवा * सब के मन, नृप प्रान गवाँवा
बिलपहुँ अति परि बन्धु-बिछोहू * अहह तात कहँ ? उपजेउ मोहू
अन्त:कर्म शास्त्र - मत कीन्हा * मंत्रिन मोहिं राजपद दीन्हा
पुनि दलि दनुज नृपति गृह आये * मोंहि नृप लखि, दुर्वचन सुनाये

दो० सुहृद सचिव परिजन सबन, गर्जि तर्जि ललकारि ।
सब के सम्मुख डपटि मोंहि कुवचन रहेउ उचारि ॥ ७ ॥

द्वार सुकण्ठ राखि चण्डाला * गमनेउँ दनु-वध हेत पताला
शिला रोपि गमनेउ अविचारी[2] * हिय वासना, हरेसि मम नारी
करगत[3] रानि, राज-अधिकारू * धरा धरति तेंहि पातक-भारू
विगत वर्ष, बधि निसिचर आयेउँ * पुनि-पुनि द्वार अनुज गोहरायेउँ[4]
विफल गोहार, उतर जनि पाई * पदाघात हनि शिला हटाई
अहह सहोदर दुसह अनीती * काटि शीश पावहुँ उर प्रीती

बारे बारे निषेधिनु, ना शुने उत्तर * प्रवेश करिल गिया पाताल-भितर
दैत्य अन्वेषणे भ्रमे से एक वत्सर * साक्षात् हइले परे बाधिल समर
महावीर दानवेरे करिल आघात * आमि भाव वालि राजा हइल निपात
वालिके मारिया दैत्य पाछे मोरे मारे * दिलाम पाथर एक सुड़ंगेर द्वारे
सम्वत्सर ना देखिया हइल संशय * सबे वले, वालिर ये मरन निश्चय
कान्दिलाम भ्रातृशोके आपनि विस्तर * कोथा गेल वालिराजा ज्येष्ठ सहोदर
अन्त्यक्रिया करिलाम ताहार विधाने * आमारे करिल राजा यत पात्रगने
तार पर दैत्ये मारि घरे एल वालि * मोरे राजा देखिया करिल गालागालि
पात्र मित्र वन्धुगणे डाके सवाकारे * सवार सम्मुखे गालि दिलेक आमारे
दानव मारिते आमि गेलाम पाताले * राखिया सुड़ंग द्वारे सुग्रीव चण्डाले
सुग्रीव पाथर दिया तार द्वार रोधे * राज्य महादेवी हरे श्रृंगारेर साधे
छत्रदण्ड निल मोर निल महादेवी * हेन पातकीर भार धरिल पृथिवी
वत्सरेके दैत्य मारि देशे आसिवारे * सुग्रीव ब'लिया डाकि सुड़ंगेर द्वारे
बहु डाकिलाम तबु ना पाइ उत्तर * पदाघाते घुचाइनु सुड़ंग - पाथर
सहोदर भाइ हये करिल अन्याय * माथा काटि इहार तवेते दु:ख जाय

१ मना किया २ अन्यायी ३ हाथ में सुलभ ४ पुकारा।

धर्म-अचार-हीन ! तजु देसू ! ❋ खल-मुख-दरस न जीवन सेसू
सुनि बहु विधि बन्देउँ मैं चरना ❋ क्षमहु तात ! सेवक तव सरना[1]
बन्धु ! न राज-लोभ उर व्यापा ❋ प्रजा हेतु सचिवन मोहिं थापा[2]
सुहृद-सचिव मम हित बहु कहहीं ❋ मम बहु विनय न नृप उर धरहीं
निष्फल बिनय - बन्दना सारी ❋ खेदि सरोष देत बहु गारी
पुनि-पुनि डपट, न शठ ! तैं सुनहीं ❋ मुष्टिक एक शीस तव हनहीं
बालि-क्रोध लखि उर भय पाई ❋ अपमानित मैं चलेउँ बराई
यहि अपराध, आजु लौं नाथा! ❋ भरमत वन-वन दुखित अनाथा
बीती व्यथा सुकण्ठ बखाना ❋ सानुज सुनत राम धरि ध्याना

बालि द्वारा दुन्दुभि-बध

जहँ संकठ समीप, तहँ वासू ? ❋ केहि साहस, कपिनाथ निवासू ?
छं० सुनि सुग्रीव कहत रघुवर सों ऋष्यमूक गिरि-गाथा ।
'मायावी' दानव दुरंत बध कीन जबै कपिनाथा[3] ।।
अनुज 'दुंदुभी' क्रोध रैन - दिन महिष रूप फुफकारत ।
विक्रम अतुल गनत जनि काहू, रनहिं सिंधु[4] ललकारत ।।

दूर ह रे अधर्म्मिष्ठ दुष्ट दुराचार ❋ ए जीवने तोर मुख ना देखिब आर
पाये पड़ि करिलाम बहु स्तुतिवाद ❋ सेवक हइया थाकि क्षम अपराध
आमार इच्छाय नाहि हइआमि राजा ❋ मंत्रि गण करिलेक पालिवारे प्रजा
वहु स्तव करिलाम ना शुने बचन ❋ ब'लिल आमार लागि बहु पात्रगण
यत बलि पाये पड़ि, बालि नाहि शुने ❋ क्रोधे वले या रे दुष्ट येखाने सेखाने
बारे बारे ब'लि तबू ना शुनिस् कथा ❋ एकटा चापड़ भांगि आय तोर माथा
देखिया बालिर क्रोध भीत ह'ये मने ❋ पलाइया आइलाम एइ अपमाने
एइ अपराधे राम आमि अपराधी ❋ वने वने फिरि दुःखे आमि तदवधि
ब'लिल सुग्रीव पूर्व्व विषाद कथन ❋ एकचित्ते शुनिलेन श्रीराम-लक्ष्मण

बालिर विक्रम ओ दुन्दुभि-बध

श्रीराम व'लेन मित्र पड़ेछ संकटे ❋ केमन साहसे थाक देशेर निकटे
सुग्रीव कहेन कथा श्रीरामेर पाश ❋ ऋष्यमूक पर्व्वतेर शुन इतिहास
विक्रमे महिषासुर कारे नाहि गने ❋ समुद्रे हाँकारे गिया जूझिवार मने

---

१ शरण २ स्थापित किया ३ राजा वालि ४ समुद्र को ।

दीन सिन्धु कहि पाहि-पाहि सोचत किमि दनुज नसाई ।
शंकर-श्वसुर हिमञ्चल पहँ महिषासुर दीन पठाई ।।
जिमि प्रतञ्च सर तजै, दुन्दुभी निमिष जहाँ गिरिनाथा ।
अभिरि सींग पर सींग हनत भूधरपति ठनकेउ माथा ।।
को जग सुभट महिष संहारै, सोचि दनुज-गुन गावा ।
किष्किन्धापति बालि-बुद्धिबल कहि कहि तैस[1] देवावा ।।
बल-आगर वानर निपाति मधुवन जहँ रम्य प्रदेसू ।
तेंहि विनासि अधिकार राजु, सुख बिलसहु, दनुज! असेसू ।।

दो० मायावी तव अग्रजहिं[2] कीन्ह कपीस विनास ।
ताहि ताल दै रन किये, तव रन मिटै पिपास ।। ८ ।।

मायावी - दुर्गति सुनि काना ※ बालिभूप - गृह कुपित पयाना
क्षत-विक्षत वन, श्रृंग-प्रहारा ※ रनहिं क्रुद्ध बालिहिं ललकारा
सुनि, प्रचण्ड तत्पर रनहेतू ※ सहवनितन निर्भय कपिकेतू
रानिन बिच इमि बालि सुहावा ※ नखतन बीच इन्दु[3] छबि पावा
महिष सरोष रक्तमय लोचन ※ वनितन समुख गर्ज पुनि तर्जन
नयन चढ़े, मधुमद घनघोरा ※ मद्यप-वध न प्रयोजन मोरा

समुद्र ब'लेन मम युद्ध ना आइसे ※ जाह हिमालये चलि रणेर उद्देशे
हिमालय पर्व्वत शंकरेर श्वशुर ※ ताँर ठाँइ मेले तव दर्प हवे चूर
धनुकेर गुणेते येमन वाण छुटे ※ चक्षुर निमिषे गेल पर्व्वत निकटे
श्रृंगाघाते पर्व्वतेरे करे खान खान ※ चिन्तित हइया गिरि करे अनुमान
पर्व्वत जानिल तवे चिन्तिया संसार ※ याहाते महिषासुर हइवे संहार
ब'लिल, महिषासुर तुमि महावली ※ किष्किध्याय जाह तुमि यथा आछे वालि
वलबुद्धि चूर्ण हवे, शुन उपदेश ※ वालिर मधुर वने करह प्रवेश
राज्यभोग मधुवन राजार भाण्डार ※ वन भांगि मधु खेये कर छारखार
वालिराज ना सहिवे हेन अपचय ※ प्राणेते मारिवे तोरे वालि महाशय
तोर ज्येष्ठ मायावी ये छिल महावली ※ ताहारे मारिल से वनेर राजा वालि
शुनिया ज्येष्ठेर कथा कुपित अन्तरे ※ तखनि चलिल वालि-भूपतिर घरे
श्रृंगाघाते करिल कानन खण्ड-खण्ड ※ कुपित हइल वालि संग्रामे प्रचण्ड
स्त्रीगण वेष्टित वालि आइल निर्भय ※ तारागण मध्ये येन चन्द्रेर उदय
रुषिल महिषासुर आरक्तलोचन ※ स्त्रीगण-सम्मुखे करे तर्ज्जन, गर्ज्जन
मधुपाने मत्त तुमि घूर्णितलोचन ※ मत्तजने मारि, नाहि मोर प्रयोजन

१ ताव, उत्तेजना   २ वड़े भाई 'मायावी' को   ३ चन्द्रमा ।

बधहुँ न प्रान, अभय तैं आजू * बिलसु रैन कपि ! रानि-समाजू
निसि सुख-साज, बहोरि बिहानू[1] * दलि बल-बुद्धि, हरहुँ तव प्रानू
बनितन अन्तःपुरी पठावा * बालि सदर्प असुर गोहरावा
मम बल-बुद्धि-स्वाद रन चाखै * मम कर तोर प्रान को राखै !
यम की दया न रच्छहि प्राना * बालि-समर परि तासु न त्राना
स्वर्ग - पताल - मर्त्यं जे वीरा * मम रन निश्चय तजत शरीरा
करि छल, बचन चहत तैं आजू * काल्हि मरन तव निश्चय साजू
मम रन बिपति, कुमति तोहिं दीना * विधि-अच्छरन बिबस तोहिं कीन्हा
भाजु भाजु लै भाजु पराना * देहुँ आजु शठ ! जीवन दाना
महिष कम्प, अति क्रोधित गाता * बालि बहोरि बचन संघाता[2]

दो० प्रथम चोट करु अमित बल बिक्रम जोरि बटोरि ।
सहि, बल निरखि, परान तव, यहि छन लेहुँ बहोरि ।। ६ ।।

बालि द्वारा महिपासुर-बध

दुंदुभि कुपित हने दोउ शृंगा * बालि बिदीर्ण अंग - प्रत्यंगा
टरत न भट क्षत अंग विलोका * फूलेउ पाय बसन्त अशोका

प्राणदान दिनु तोरे आजिकार तरे * आजि रात्रि वञ्च गिया कौतुकशृंगारे
सुखे रात्रि वञ्च गिया प्रत्युषे विहाने * बल बुद्धि चूर्ण करि बधिब पराने
स्त्रीगणेरे बालि पाठाइल अन्तःपुर * वीर दाप करि बले शुनरे असुर
रणे प्रवेशिले बुझि शक्तिर परीक्षा * पड़िले बालिर होते नाहि तोर रक्षा
यमराज यदि धरे आछे प्रतिकार * बालिर स्थानेते कार' नाहिक निस्तार
स्वर्ग मर्त्य पाताले यतेक वीरगन * आइले आमार युद्धे अवश्य मरन
कंपटे वाँचिते चाह आजिकार तरे * से कथा थाकुक, आजि जाह यमघरे
कुबुद्धि पाइल तोरे, मोर संगे रन * तोर दोष नाहि तोर ललाटे लिखन
पलाइया जारे तुइ लइया परान * आजिकार दिवस दिलाम प्राणदान
कोपेते महिषासुर काँपे थर-थर * पुनश्च ब'लिछे तारे बालि कपीश्वर
आगे मोरे हान तोर बुझिब विक्रम * तोर घा सहिया तोरे देखाइब यम
यत शक्ति थाके तोर, तत शक्ति हान * एइ दण्डे आमि तोर बधिब परान

वालि-कर्त्तृक महिषासुर-बध

रुषिया महिषासुर दुइ शृंग मारे * खानखान करिया बालिर अंग चिरे
सर्व्वांग विदीर्ण बालि तबु नाहि हटे * अशोक किंशुक येन बसन्तेते फुटे

---

१ भोर (तड़के) २ वचन प्रहार किया ।

बालि-महिष रन कौतुक लरहीं ※ लै तरु-शिला मार दोउ करहीं
कपि तरु-उपल[1] रहेउ बहु मारी ※ अभिरत दनुज न मानत हारी
सहसा बालि बिदीर्ण प्रसंगा ※ दुंदुभि लक्ष्य किये युग[2] शृंगा
साधि शृंग दोउ बालि सकोपा ※ कर धरि महिष गगन पुनि रोपा
पकरि सींग नभ ताहि उठावा ※ चाक-कुम्हार समान घुमावा
पुनि कपीस तकि शिला पछारा ※ चूरन अस्थि सीस करि डारा
गिरेउ धरनि दुंदुभी अचेतन ※ पद हनि कपि फेंकेउ इक जोजन
स्रवत फुहार रक्त चहुँ छावा ※ मुनि मतंग तन लाल बनावा
केहि पापी मम तन रँगि दीन्हा ※ मुनि लखि रक्त खेद अति कीन्हा
धोयेउ गात आचमन करहीं ※ तन शुचि करि मन हरि पद धरहीं
कोप कराल लीन पुनि नीरा ※ शाप दीन मुनि क्रोध अधीरा
खल दुष्कर्म कीन तेहि चरना ※ यहि गिरि[3] देत न संसय—मरना
सुनि मुनि-शाप बालि रहि दूरी ※ पुनि-पुनि बन्दति मुनि पद-धूरी
हे मुनि, संकठ-सिंधु उबारन ※ अहह कहउ किमि शाप-निवारन

दो० बालि-बचन कातर सुनत, यहि बिधि कहेउ मतंग ।
अमिट गिरा मम, कबहुँ पद, देहु न यहि गिरि-शृंग ॥ १० ॥

महिष बालिर सहित जूझे चमत्कार ※ पादप-पाथरे दोउ करे महामार
मारे गाछ-पाथर बालि महिप उपर ※ पराभव नहे दैत्य जूझे निरन्तर
दुइ शृंग नत करि बालिरे वधिते ※ बालिर सम्मुखे दैत्य गेल आचम्बिते
दुइ शृंग बालि तार धरिलेक रोषे ※ शृंग धरि महिषेरे तुलिल आकाशे
दुइ शृंग धरि तार घन देय पाक ※ घन-पाके फेरे येन कुमारेर चाक
पाथर उपरे तारे मारिल आछाड़ ※ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़
पड़िल महिषासुर ह'ये अचेतन ※ पदाघाते फेले तारे एकटि योजन
चतुर्दिके छड़ाइल रक्त पड़े स्रोते ※ मतंग मुनिर गात्र तितिल रक्तेते
मुनि ब'ले, कोन बेटा करिल एमन ※ गाये रक्त देय ये से पापिष्ठ केमन
रक्त प्रक्षालिया करिलेन आचमन ※ पवित्र हइल मुनि स्मरि नारायण
महाक्रोध करि मुनि जल निल हाते ※ अभिशाप दिल तारे कुपिया रागेते
मुनि ब'ले हेन कर्म करिल ये जन ※ ए पर्व्वते एले तार अवश्य मरन
परस्पर शुनि बलि शाप वाक्य तार ※ दूर हैते मुनि पदे करे नमस्कार
दूरे थाकि मुनि-स्थाने याचे परिहार ※ संकटसागरे प्रभु करह निस्तार
मतंग वलेन मम शाप अखण्डन ※ ए पर्व्वते कभु तुमि ना कर गमन

---

१ वृक्ष-पत्थर २ दोनों ३ इस पर्वत पर ।

ऋष्यमूक जनि बालि प्रवेसू * शाप - कथा चर्चित दिग्देसू
गिरि पग देत बालि निष्प्राना * बालिहिं शाप मोहिं वरदाना
सुनि सुग्रीव कहेउ रघुराई * देहिं बालि हनि तुमहिं रजाई[1]
बालि अगाध बली रघुनाथा * विक्रम तासु सुनहु प्रभु ! गाथा
निसि गत जबहिं अरुन अनुसरहीं * चारि सिन्धु जल सन्ध्या करहीं
नभ गिरि श्रृंग फेंकि, पुनि, हाथा * रोकत अति समर्थ कपिनाथा
गिरि उपारि नभ-मण्डल फेंकी * चहुँ अस सुनी नयन निज देखी
सप्तद्वीप छिति[2] निमिष[3] भ्रमन्ता * पावत पवन न डग[4]-बलवन्ता
सायक[5] प्रथम बालि-बध टरई * तौ मम प्रान वीरवर हरई
त्रिभुवन तासु सरिस भट नाहीं * सकल वीर अवनत[6] तेहि पाहीं

बालि-बध और सुग्रीव को राज्यारोहण की राम-प्रतिज्ञा

लछिमन सुनि कपि-कथा अतीता * कहेउ होय किमि तुमहिं प्रतीता
जेते देव दनुज गन्धर्वा * प्रभु-सर एक न समरथ सर्वा
तबहुँ राम प्रति नाहिं भरोसू * किमि कपि होय कहहु सन्तोषू
लखहु दुंदुभी-शव रघुनाथा * पदाघात फेंकेउ कपिनाथा

सेइ शापे बालि ना आइसे ऋष्यमूके * देशे देशान्तरे थाकि शुनि लोके मुखे
ऋष्यमूके आइले से हाराबे परान * बालिके मुनिर शाप तेइ मोर त्रान
श्रीराम कहेन, मित्र, कहिले सकल * बालिके मारिया करि तोमाके प्रबल
सुग्रीव ब'लेन, बालि विक्रम सागर * बालिर विक्रम-कथा शुन रघुवर
रजनी जेखन जाय, अरुण उदय * चारि सागरेते सन्ध्या करे महाशय
आकाशे तुलिया फेले पर्व्वतशिखर * दुइ हाथे लोफे ताहा बालि कपीश्वर
उपाड़िया पर्व्वत आकाशोपरि फेले * आपनारे परीक्षिते नित्य लोफे बले
सप्तद्वीप पृथिवी से निमिषे बेड़ाय * कि क'ब पवन तार संगे ना गोड़ाय
बालिके मारिते यदि नार एक बाणे * तबे बालिराज मोरे बधिबे पराने
महावीर बालिराज ए तिन भुवने * पराभव पाय सर्व्ववीर तार रणे

बालि के मारिया सुग्रीव के राज्य दिते श्रीरामेर प्रतिज्ञा

सुग्रीवेर कथा शुनि बलेन लक्ष्मण * कोन कर्म्मे तोमार प्रतीत हय मन
देव-दैत्य-गन्धर्व्व कोथाय हेन वीर * श्रीरामेर एक वाणे के रहिबे स्थिर
हेन राम प्रति तव न हय प्रतीत * कि कर्म्म करिले तुमि हओ हरषित
सुग्रीव कहेन, देख दुन्दुभि-पाँजर * पाये करि फेलाइल बालि कपीश्वर

---

१ राज्य-अधिकार २ पृथ्वी ३ पलमात्र में ४ कदम (चाल) ५ बाण
६ झुकते हैं।

द्रवित-सुकंठ बहत दृग नीरा * दीन भरोस लखन रघुवीरा
दो० बालि एक योजन कहाँ ! शत योजन रघुनाथ ।
दनु-पञ्जर फेंकेउ, लहैं जिमि भरोस कपिनाथ ॥ ११ ॥

रक्त-चर्म मांसल[1] शव-भारा * जबहिं बालि किय पाद प्रहारा
ठाँठर[2] दनु पाँजर यहि काला * बालि सरिस किमि दीनदयाला
संसय मोहिं, कहेउ सुग्रीवा * तुम कि बालि ? को अति बलसीवा
बरनहुँ बालि अतुल बल नाथा * मन दै सुनहु सकल रघुनाथा
चलेउ दिग्विजय हित दसकन्धर * भयो कपीस सहित तहँ संगर[3]
बालि सिन्धु तट सन्ध्या-मग्ना * मूँदि नैन तप-ध्यान निमग्ना
हेरत तहँ आयो सोइ काला * चापेउ[4] पृष्ठ घूमि दसभाला
तजेउ न तप, नहिं कीन लराई * बाँधेउ दससुख पूँछ घुमाई
पूँछ बाँधि सागर तेहि डारी * छिन बोरत छिन लेत निकारी
ऊछू[5] जात विकल जेहि काला * सागर तप-रत कीस-भुवाला[6]
सन्ध्या कीन्ह सिन्धु-तट चारी * उठेउ, लंकपति बाँधि पुँछारी
रैन निरखि गृह चलेउ कपीसा * क्षमहु कहत कातर दससीसा
अभय दीन लखि परम विनीती * अति रावनहिं मुक्ति लहि प्रीती ।

नेत्र-नीरे सुग्रीवेर तितिल वदन * आश्वासिया तुषिलेन श्रीराम-लक्ष्मण
सुग्रीवेर प्रत्यय-निमित्त रघुवर * पदाघाते फेलिलेन दुंदुभि-पाँजर
फेलियाछिलेन बालि एकटि योजन * फेलेन योजन - शत कमललोचन
सुग्रीव बलिल, शुन राम रघुवर * यखन फेलियाछिल वालि से पाँजर
रक्तचर्म्म छिल भारि तुलिते दुष्कर * एखन हयेछे शुष्क, नहे तत भार
इहाते केमने राम, करि अनुमान * वालिराज हइते ये तुमि वलवान
नाथ रघुनाथ, शुन आमार वचन * बालिर विक्रम शुन करि निवेदन
दिग्विजय करिते चलिल दशानन * वालिर सहित युद्ध हइल घटन
सन्ध्या करे वालिराज मुद्रित नयन * पश्चाते धरिते जाय राजा दशानन
युद्ध नाहि करे बालि तप नाहि त्यजे * पृष्ठदिके रावनेरे जड़ाइल लेजे
लांगूले बांधिया फेले सागरेर जले * एक बार डुबाइया आर बार तोले
एइ रूपे तप करे चारि पारावारे * रावन खाइल जल बाँचिते ना पारे
चारि सागरेते सन्ध्या करि समापन * उठिलेन बालि लेजे बाँधा दशानन
रजनी हइल वालि चलि गेल घर * कातरे रावन ब'लि क्षम कपीश्वर
नहु स्तव क्षमे बालि तार अपराध * रावन हइल मुक्त, परम आह्लाद

१ मांस सहित २ सूखी ठठरी ३ युद्ध ४ धर दबाया ५ नाक-मुँह में पानी भर जाना ६ वालि ।

अलबत[1] एक युक्ति प्रभु ! भाई ※ बालि संग मम साधि मिताई
जो प्रभु मिलन होय दोउ भ्राता ※ दोउ-कर छिन दसकंध-निपाता
दोउ भट बन्धु परस्पर मिलहीं ※ रावन कुगति सहज पुनि करहीं

दो० धरा समर्थ न बालि सम, दनु[2] आनै धरि केस ।
बचन सुनत सुग्रीव के, बोले प्रभु अवधेस ॥ १२ ॥

अगिन समुख मम प्रन यहि देसू[3] ※ तुमहिं, बालि बधि करहुँ नरेसू
पिता वचन पालन वन आये ※ कथन अटल मम, सदा निभाये
इतै वचन मृदु रघुपति केरा ※ लखन बहोरि सुकण्ठहिं टेरा
सप्त ताल तरु एक समाना ※ करु प्रतीत, बिन्धहिं भगवाना
कहत कपीस कुतूहल नाहीं ※ नखन बालि नृप बिन्धति ताहीं
बालि-समर समरथ रघुनायक ※ तौ बेधहिं सातौ इक सायक
बिहँसे प्रभु दस दिसा प्रकासी ※ कठिन कहा ! बोले अविनासी
सुबरन सर[4] अनूप छबि छाई ※ तरकस काढ़ि लीन रघुराई
दक्षिण कर दृढ़ मुष्टि कराला ※ सायक[4] चलेउ जितै तरु-ताला
बेधि सप्त तरु आरम्पारा ※ ऋष्यमूक पुनि बिंधि पहारा
पर्वत बिंधि, बिंधि तरु - ताला ※ बज्र शब्द सो बेधि पताला

एक युक्ति शुन प्रभु कमललोचन ※ वालि संगे मिलन कराओ एइ क्षण
मिलन हइले राम दुइ सहोदरे ※ दोंहे मिलि मारि गिया राजा लंकेश्वरे
भ्राता दुइ जने यदि कराओ मिलन ※ कोन् छार गणि तवे राजा दशानन
पृथिवीर मध्ये केवा बालिराज आंटे ※ रावणे आनिबे वालि धरि तार जटे
एतेक व'लिल यदि सुग्रीव वचन ※ शुनिया श्रीरामचन्द्र कहेन तखन
करियाछि प्रतिज्ञा जे अग्नि साक्षी करि ※ बालि वधि तोमारे करिब अधिकारी
आमार वचन कभू ना हय खण्डन ※ पितृवाक्य-क्रमे आमि आइलाम वन
एतेक व'लिले मृदु कमललोचन ※ सुग्रीवेरे डाक दिया व'लेन लक्ष्मण
सात तालगाछ आछे एकइ सोसर ※ प्रत्येते तोमारे सबे विन्धिबे रघुवर
सुग्रीव व'लेन तबे शुन नरवर ※ नखेर चापने विन्धे ताहा कपीश्वर
सात तालगाछ यदि विन्ध एक शरे ※ तबे से वालिके तुमि जिनिवे समरे
हासेन श्रीरघुनाथ, दीप्त दशदिक ※ तालगाछ बिन्धिब से, ए कोन् अधिक
सुचित्र विचित्र वाण कनक रचित ※ तून हैते तुलिलेन श्रीराम त्वरित
द्रृढ़ मुष्टि करि निल दक्षिण हस्तेते ※ छुटिल रामेर वाण से सात तालेते
सप्त ताल भेद करि वाण हैल पार ※ ऋष्यमूके पर्व्वत विन्धिया आगुसार
एक वाणे शैल बिन्धे सप्त गाछ ताल ※ वज्रघात शब्दे वाण सान्धाय पाताल

१ वेशक २ दनुज (रावण) ३ स्थान पर ४ वाण ।

पुनि धरि राजहंस कर रूपा ※ आयेउ प्रभु ढिग बान अनूपा
तरकस पुनि समान[1] बनि सायक ※ चकित सकल लखि बल-रघुनायक
कपिगन कहत चरन प्रणिपाती ※ सकहु बालि शत नाथ! निपाती
विक्रम सुविदित, कहेंउ कपीसा ※ तजि बैकुण्ठ प्रकट जगदीसा
तुम सम सखा विरञ्चि मिलाई ※ तव प्रताप मोहिं मिलै रजाई[2]

बालि-सुग्रीव युद्ध, सुग्रीव-पराजय

दो० बोले करुणानाथ, कपि! अब बिलम्ब केहि काज।
बेगि दरस चलि कीजिये, मिलैं जहाँ कपिराज ॥ १३ ॥

रिपु हनि संकट करउँ निवारन ※ सौंपहुँ सुहृद! तुमहिं सुख-सासन
सब बिधि पाय राम-आश्वासन ※ किष्किन्धा गमने सातौ जन
राज-द्वार रघुपति नियराने ※ बिटप ओट दोउ वीर लुकाने
द्वारे सिंहनाद - सुग्रीवा ※ आवै सुनत बालि बलसीवा
होय समर तुम-सन आरूढ़ा ※ तबहिं हनौं सर एक विमूढ़ा
द्वार सिंह सम गर्जत कीसा[3] ※ निरखेउ निकसि प्रमाद कपीसा[4]
वीर सदर्प बालि रव[5] घोरा ※ झपटेउ सबल सहोदर ओरा

राजहंस मूर्तिमान आसिवार काले ※ पुनर्व्वार बाण एल श्रीरामेर काले
निज मूर्ति धरि बाण तून मध्ये ढोके ※ रामेर विक्रमे सवे हात दिल नाके
सकल वानर निल राम-पद-धूलि ※ तुमि पार मारिवारे शत शत बालि
ब'लेन सुग्रीव, तव विक्रमेते गनि ※ बैकुण्ठ छाड़िया प्रभु एसेछ आपनि
मित्र तोमा हेन मोरे दिलेन विधाता ※ तोमार प्रतापे पाव राजदण्ड-छाता

बालिर सहित सुग्रीवेर युद्ध ओ सुग्रीवेर पराजय

श्रीराम ब'लेन बिलम्बे कि प्रयोजन ※ वालिर सहित झाट कराओ दर्शन
देखिले शत्रुके मारि घुचाइब डर ※ सुखे राज्य कराइब तोमा मित्रवर
सुग्रीवेरे देन राम आश्वास वचन ※ सात जन किष्किन्ध्याय करेन गमन
राजद्वार-निकटे चलेन राम धीरे ※ वृक्ष-आड़े लुकाइया थाकि दुइ वीरे
बालि-द्वारे सुग्रीव छाड़िबे सिंहनाद ※ ताहाते अवश्य बालि शुनिवे संबाद
करिवे तोमार संगे समर आरब्ध ※ एक बाणे बालि के करिब आमि स्तब्ध
बालि द्वारे सुग्रीव छाड़िल सिंहनाद ※ बाहिर हइल बालि देखिते प्रमाद
वीर दर्प करे बालि अति भयंकर ※ विक्रमे पड़िल आसि सुग्रीव उपर

---

१ प्रवेश कर गया २ राज्य ३ सुग्रीव ४ बालि ५ शब्द।

अभिरे[1] युगुल अंग - प्रत्यंगा ※ मल्लयुद्ध रत बहु रणरंगा
क्षण सुग्रीव प्रबल क्षण बाली ※ युगुल भार लहि धरती हाली
सिंहनाद गर्जत रन माहीं ※ दोउ रन करत मलिन कोउ नाहीं
बसन वयस लखि रूप समाना ※ केहि सर हनहिं चकित भगवाना
सुहृद न चीन्हत, जो सर मारैं ※ भ्रमवस राम मित्र हनि डारैं
बालि बज्र सम मुष्टि प्रहारी ※ दुसह, सुकण्ठ भजेउ मन हारी
बालि महाबल अतुल प्रतापा ※ केहि पितु सहन तासु रन-तापा
सुभट महाभट जिन संहारा ※ किमि समर्थ सुग्रीव बिचारा
ततछन लेत सुकण्ठ - पराना ※ जानि अनुज दिय जीवन दाना

दो० अंग - अंग शोणित रँगे, शिथिल - प्राय निर्जीव ।
डगमगात इत - उत गिरत - परत भजेउ सुग्रीव ॥ १४ ॥

ऋष्यमूक लीन्हीं पुनि सरना ※ जहँ पग देत बालि कर मरना
मुनि शापित न अनुज सक-मारी ※ चलेउ धाम रिसि-गर्जन भारी
भल लै प्रान पलायन कीन्हा ※ केहि बल सो सन रन मन दीन्हा
बन्धु मोर, भल गयेउ बराई ※ मिलत पुनः शठ प्रान गवाँई
उत विषन्न[2] बाली सिंहासन ※ जर्जर अनुज मूक[3] गिरि पावन

हाते-हाते माथे-माथे बाधिल समर ※ दुइ भाइ मल्लयुद्ध करे बहुतर
क्षणे हेंटे पड़े बालि, क्षणेक उपरे ※ क्षिति टलमल करे उभयेर भरे
दुइ सिंह युद्धे छाड़े येन सिंहनाद ※ दुइ भाइ युद्ध करे नाहि अवसाद
देखेन श्रीराम बाण करिया सन्धान ※ उभयेर वेश-भूषा-वयस समान
चिनिते नारेन राम सुग्रीव बालिरे ※ बालिके मारिते पाछे निज मित्र मरे
सुग्रीवेरे मारि बालि बज्र सम चड़ ※ सहिते न पारि ताहा उठे दिल रड़
महाबल बालिराज अतुल प्रताप ※ ताहार सहित युद्ध सहे कार बाप
वड़-बड़ वीरगणे करे ये संहार ※ तार युद्धे सुग्रीव वानर कोन छार
तखनि से सुग्रीवेर बधित परान ※ सहोदर-भाइ ब'लि दिल प्रानदान
रक्त रांगा अंग भांगा पलाय सुग्रीव ※ आगे जाय, फिरि चाय, प्राय से निर्जीव
ऋष्यमूके तिष्ठिते सुग्रीव पलाइल ※ मुनिशाप बालि मने करिया फिरिल
ना पारिया सुग्रीवेर प्रान विनाशिते ※ घरे जाय बालि राजा गर्जिते गर्जिते
भाल, पलाइया गेलि लइया जीवन ※ कि जोरे करिस रे आमार संगे रन
भाल हैल, पलाइल, हय मोर भाइ ※ प्रानेते मारिव यदि पुनः देखा पाइ
सिंहासने बसि बालि भावे मनोदुःखे ※ सुग्रीव जर्ज्जर घाये रहे ऋष्यमूखे

१ भिड़ गये २ विपादयुक्त ३ ऋष्यमूक ।

अपमानित सुकण्ठ मन मारे * रामादिक चलि तहाँ पधारे
नत-मस्तक न दीठि प्रभु ओरा * किय अनुयोग[1] सबन प्रति घोरा
बालि-समर जदि जूझत आजू * केहिकर राज, राम केहि काजू
मारत सबल न साहस काहू * को भिरि सकत बालि नरनाहू
प्रथम कहेउँ दुर्जय प्रख्याता * सहज न कौतुक बालि - निपाता
धरनी सुभट महाभट वीरा * मारहि बालि न अस रणधीरा
रन तो कहा! दरस भयकारी * को तेहि सन रन परै अगारी
जेहि विधि गयेउँ लहेउँ अपमाना * तेहि कर बचत न अबलौं प्राना
ऋष्यमूक गिरि निकट सहाई * जहाँ विपन्न[2] अभय मैं पाई
दिय भरोस मनु बालि सँहारा * रन ढकेलि[3], निज कीन किनारा
मन आसरा, हनत अब बाना * सर न राम कहुँ, बचे पराना

दो० शमन मित्र रघुपति कहेउ, तुम दोउ एक समान ।
तुल्य वेष-विक्रम-वयस, भ्रमित हनेउँ नहिं बान ।। १५ ।।

चिह्न दिये चीन्हउँ निज ताता * नृप पद लहौ बालि-संघाता
पुनि ललकारि बालि रन लावौ * मनस्ताप निज, मित्र! मिटावौ
प्रभु भरोस लहि रैन विरामा * कृत्तिवास गुण गावत रामा

चलिलेन श्रीराम प्रभृति सेइखाने * आछे हेंट मुण्डेते सुग्रीव अपमाने
माथा तूलि सुग्रीव रामेरे नाहि देखे * बहु अनुयोग करे सबार सम्मुखे
आजि यदि मरिताम वालिर संग्रामे * के करिते राज्यभोग कि करिते रामे
मारिते नारिबे, आगे न व'लिले केने * वालि सगे तवे केन प्रवेशिव रने
तखनि व'लेछि, बालि विषम दुर्ज्जय * ताहारे संहार करा क्षुद्र कर्म्म नय
बड़ बड़ बीर यत मध्ये पृथिवीर * वालिके मारिते पारे नाहि हेन वीर
आछुक युद्धेर काज, दरशने भागे * कोन् जन युद्ध करे से वालिर आगे
केन वा गेलाम पाइलाम अपमान * एतक्षणे थाकिले वधित मोर प्रान
ऋष्यमूक पर्व्वत निकटे छिल जेइ * ए संकटे रक्षा आमि पाइलाम तेंइ
बालिके मारिव ब'लि करिले आश्वास * आमारे फेलिया रणे हैल एकपाश
एखनि मारिबे बाण हेन लय मने * कोथा वाण, कोथा राम, भाग्ये आछि प्राने
श्रीराम ब'लेन, मित्र, ना ब'ल बिस्तर * उभयेरे देखिलाम एकइ सोसर
वयसे - साहसे - वेशे एकइ समान * मित्रवध - भये नाहि एड़िलाम बाण
चिह्न दिया मात्र तुमि रणे गेले चिनि * वालिके मारिव, राजा हइबे आपनि
पुनः गेले यखन आसिबे रणे वालि * घुचाइव तखन मनेर यत कालि
वञ्चिल सुग्रीव रात्रि रामेर आश्वासे * रचिल किष्किन्ध्याकाण्ड कबि कृत्तिवासे

---

१ गिला २ मुसीवत का मारा ३ युद्ध में झोंक कर ।

श्रीराम द्वारा वालि-वध

जेंहि बिधि सकहिं सुकण्ठहिं देखी * लखन देहु कछु चिह्न विशेषी
निसि गत भोर सुमन बहु रूपा * आनि लखन रचि माल अनूपा
कण्ठ सुकण्ठ दीन सो माला * सात सुभट गमने शुभकाला
बन्धु बिनासि राजु परिहरही * आगे सबन बेगि डग धरही
सधनु लखन धनुधर रघुनाथा * पुनि अनुसरत इतर[1] कपि साथा
देखत चहुँ खग मृग वनचारी * लख लख गज पर्वत अनुहारी[2]
ज्ञानी मुनिन तपोवन माहीं * कदली-बन चहुँ निरखत जाहीं
कहेउ राम कदली-बन हेरी * यहु तपवन रचना केंहि केरी
इतै सप्तऋषि किय तप घोरा * जनश्रुति[3] कपि वरनत प्रभु ओरा
बर्ष सहस दस बिन आहारा * करि तप, सरग सतन[4] पग धारा
सबन सप्तऋषि-मण्डल बन्दे * जेंहि फल सब विधि कुशल अनन्दे
कपि सचेत किय रघुपति-ध्याना * कालिह सरिस जनि होय विधाना
निज प्रन पूर्ति करौ रघुनाथा * सिय उद्धार-भार मम नाथा

दो० संसय उर जनि राखिए, करहु बचन अनुसार।
मारि लंकपति, लंक चलि, करौं सिया उद्धार॥ १६॥

श्रीराम-कर्त्तृक वालि-वध

चिह्न बिना नाहि चिना जाय सुग्रीवेरे * चिह्न दिते श्रीराम कहेन लक्ष्मणेरे
रजनी प्रभाते फुल आने नानाजाति * सेइ फले माला गोंथे लक्ष्मण सुमति
लक्ष्मण दिलेन पुष्पमाला तार गले * करिलेन सात वीर यात्रा शुभकाले
राज्यलोभे सुग्रीव मारिते सहोदरे * आगे-आगे चलिल, बिलम्ब नाहि करे
श्रीराम-लक्ष्मण जान हाते धनु:शर * ताँहार पश्चाते चले इतर वानर
मृग पक्षी वनचर देखे स्थाने-स्थान * लक्ष-लक्ष हस्ती देखे पर्व्वत प्रमान
वनेर भितर देखे अति विलक्षण * मुनिर आश्रमे-माझे कदलीर वन
श्रीराम ब'लेन मित्र अद्‌भुत कदली * काहार सृजन एइ आश्रम-मण्डली
सुग्रीव ब'लेन हेथा छिल सप्तमुनि * करित कठोर तप लोकमुखे शुनि
ताँरा दश हाजार वत्सर अनाहारे * करि तप स्वशरीरे गेल स्वर्गपुरे
सकले बन्देन गिया आश्रम-मण्डल * याहारे बन्दिले हय सर्व्वत्र मंगल
सुग्रीव बलेन राम हओ सावधान * कालिकार मत येन ना हय विधान
आपन शपथे मित्र आजि हओ पार * अवश्य करिव आमि सीतार उद्धार
आमार वचन मिथ्या ना भाविह मने * सीता उद्धारिब आमि मारिया रावने

---

१ दूसरे २ के समान ३ लोकचर्चा ४ शरीर सहित।

बोले राम निरखि तव माला ※ आजु बधहुँ मैं बालि भुवाला
बालि दरस मम सर सन्धाना ※ आजु न तेहि पुरगमन विधाना
सप्तताल बेधे सर जेही ※ सोइ सर सुमिरि संक तजि देही
अचल सत्य जो बचन प्रकासा ※ आजु न संसय बालि - बिनासा
कपि किय सिंहनाद जहँ बाली ※ गगन गिरेउ गिरि, धरती हाली
प्रभु-बल पाय सुकण्ठ कराला ※ गर्जत, कम्पित धरा - पताला
बालि कुपित सुनि नाद अपारा ※ कहत दुर्वचन जाहि[1] निहारा
मुख ज्वलंत जिमि अनल-अँगारा ※ रवि शशि सम चमकत दृग-तारा
दीर्घ तीनि शत योजन वीरा ※ सत्तर योजन बेंड़[2] सरीरा
कहुँ लघु रूप नकुल[3] सम धरई ※ करि विस्तार गगन कहुँ छुवई
योजन पूँछ पसारि पचासा ※ दुगुन किये परसत[4] आकासा
आगरि - बुद्धि[5] बालि कै दारा ※ पतिहिं समर हित हटकति[6] तारा
शमन, नाथ ! जनि समर पयाना ※ प्रानन हेत सीख धरि ध्याना
वत्सर शयन समर दिन एका ※ रन आतुर, साहस अतिरेका[7]
पराभूत - रन पुनि ललकारै ※ निसचय नीति सुविज्ञ विचारै
क्रोध बिबस निज हित बिसराना ※ लखि तव कर्म, कम्प मम प्राना

श्रीराम ब'लेन तुमि भूषित मालाय ※ बालिके बधिब आजि, बाँचब तोमाय
बालिके देखिया मात्र चालाइब शर ※ पुनराय बालि आजि ना जाइबे घर
सप्तताल बिन्धिलाम आमि जेइ बाणे ※ सेइ बाण स्मरिया निश्चिन्त हओ मने
मिथ्या ना वलिब, सत्य ना करिब आन ※ बालिराज नितान्त हाराबे आजि प्रान
सिंहनाद छाड़िल सुग्रीव वालि-द्वारे ※ आकाश भांगिया पड़े येन महीधरे
पाइया रामेर बल सुग्रीव प्रबल ※ सिंहनादे काँपाइल धरा - रसातल
सिंहनादे रुषिल वानरराज बालि ※ सम्मुखे याहारे देखे तारे देय गालि
मुखखान मेले येन ज्वलन्त आंगारा ※ चन्द्र सूर्य्य जिनिया चक्षुर दुइ तारा
सत्तरि योजन तनु आड़े परिसर ※ तिन शत योजन दीघल कलेवर
यदि वाञ्छा करे, हय नकुल प्रमान ※ कखन आकाश-जोड़ा हय परिमाण
लांगूल करिते पारे योजन पञ्चाश ※ उभ यदि करे तबे परशे आकाश
तारा महादेवी तार अति बुद्धि धरे ※ बालिके वारन करे जाइते समरे
कोप सम्वरह, रणे ना कर गमन ※ आमार वचन शुन जीवन-कारण
एक दिन युद्धे जार वत्सर विश्राम ※ कि साहसे आसे पुनः करिते संग्राम
युद्ध दिया पुनः जेइ जुझते हाँकारे ※ हइले पण्डित लोके अवश्य विचारे
आपना पासर तुमि मत्त हओ कोपे ※ भाविते तोमार कर्म्म, भये प्रान काँपे

१ जिसको भी २ चौड़ाई (बेंड़ा) ३ नेवला ४ छूती थी ५ बुद्धि की खान
६ रोकती है ७ सीमा के बाहर।

दो० नाथ ! तजहु संकल्प-रन, आजु अमंगल जानि ।
मम बानी मन धारिए, पुनि-पुनि हटकत रानि ॥ १७ ॥

केहु बल प्रबल अनुज इत आजू ❋ निसचय भोर सरै[1] तव काजू
आयेउ अवसि काहु बल पाई ❋ नतरु निपट दुर्बल किमि आई
रहि रनिवास रैन, रन तजहू ❋ द्वार विफल रिपु-गर्जन करहू
सूर्यवंश दशरथ नृप - बन्दन ❋ तिन सुत युगुल लखन-रघुनन्दन
धरि पितु-बचन भये बनवासी ❋ बल्कल, जटा सीस, संन्यासी
बन-बन भरमत राज-विहीना ❋ तिन-सुग्रीव सुमति मिलि कीना
राजविहीन विविध छल करई ❋ राम-सुकण्ठ संधि लखि परई
यहि अभिसन्धि[2] अतिव उर चिन्ता ❋ आजु न रन तव मंगल कन्ता[3] !
भला-बुरा पुनि अनुज तिहारा ❋ उचित न तेहि सन रारि[4] प्रसारा
धीरज धरहु, कोप जनि योगू ❋ बिलसहु सानुज सासन भोगू
सकल समेटि बन्धु करि हीना ❋ होय विरुद्ध दुखी पुनि दीना
उचित न, प्रभु ! मम सीख उलंघा ❋ अहं[5] -विवस अनुचित रणरंगा
सुनहु निवेदन पुनि हिय धारी ❋ धरि पितु वचन राम वनचारी
सत्य-भार तिन दीन विमाता ❋ अर्पेउ राजु राम, लघुभ्राता

युद्धे ना जाइओ प्रभु, शुन मोर वाणी ❋ आजिकार युद्धे आमि अमंगल गणि
कालि गेल तव स्थाने सुग्रीव हारिया ❋ कि वले आइल आजि प्रवल हइया
अवश्य काहारा ठाँइ पाइयाछे बल ❋ नतुवा आसिबे केन निजे से दुर्ब्बल
युद्धे ना जाइओ तुमि, थाक अन्तःपुरे ❋ डाकिछे सुग्रीव, डाके डाकुक बाहिरे
सूर्य्यवंश राजा छिल दशरथ नाम ❋ ताँर पुत्र दुइ भाइ लक्ष्मण-श्रीराम
पितृ-सत्य पालिते हइल वनवासी ❋ बल्कल परेन, शिरे जटा, से संन्यासी
राज्य हाराइया तारा भ्रमे वने-वने ❋ मिलियाछे तारा बुझि सुग्रीवेर सने
राज्यभ्रष्ट सुग्रीव विविध बुद्धि धरे ❋ सहाय करिया बुझि आइल रामेरे
यद्यपि एमत-हय तबे बड़ भार ❋ नाहि देखि अद्य युद्धे मंगल तोमार
भालमन्द हउक, से तव सहोदर ❋ सहोदर सने युद्ध अयोग्य विस्तर
क्षान्त हओ महाराज काज नाहि रागे ❋ सुग्रीव सहित राज्य कर एके योगे
सकले राजत्व करे, सुग्रीव वञ्चित ❋ सहिते ना पारे दुःख, भावे विपरीत
आमार वचन तुमि ना करिह हेला ❋ अहंकार ना करिओ संग्रामेर खेला
आर एक कथा प्रभु करि निवेदन ❋ पितृ-सत्य-हेतु राम आइलेन वन
कैकेयी विमाता ताँरे दिल सत्यभार ❋ कनिष्ठेरे राज्य राम देन अधिकार

---

१ बनेगा २ खड्यंत्र ३ हे स्वामी ! ४ झगड़ा ५ अहंकार ।

वन कर हेतु शत्रु अपकारी * किमि किय तिन्हिं राज-अधिकारी
तव पितु सुवन, अनुज सुग्रीवा * दोउ मिलि राजु करहु बलसीवा

दो० कहेउ बालि मोहिं रुचिर जनि, चन्द्रबदनि ! सुनि लेय।
शठ सुकण्ठ हित कहत जस, तस-तस हिय दुख देय ॥ १८ ॥

दुंदुभि दलन सुरंग पताला * गमनेउँ द्वार राखि चण्डाला
रोपि विटप-प्रस्तर अपकारी * धर्म न राखि हरन किय नारी
लेहुँ न जीवन, बाँधि सरीरा * तव आदर, आनहुँ तव तीरा
नृपमणि ! सुनहु, कहत पुनि तारा * दोषी सचिव, न बन्धु बिचारा
परिजन सचिव सुमति सब साधा * दीन राज्य, जनि तेंहि अपराधा
धरि मम वचन भीख मोंहि दीजै * कतहुँ न तात ! आजु रन कीजै
खण्ड खण्ड छिति, भूधर टरहीं * रबि-ससि रघुपति-सर परि जरहीं
राम आगमन जासु सहाई * हे प्रभु ! तबहिं त्रान कहँ पाई
असत बचन कस ? कह कपिकेतू * मारहिं राम मोहिं केहि हेतू ?
पर हित राम न करहिं अधर्मा * संशय राम न, सुनु, प्रिय! मर्मा[1]
सत्य-धर्म रघुपति गुनरासी * कारन सत्य भये बनबासी
कबहुँ न तिन सन मोर विवादू * लरहिं न मिथ्या सुनि अपवादू[2]

शत्रु हैया जेइ जन पाठाइल वने * ताहारे करेन राजा किसेर कारणे
तोमार बापेर बेटा कनिष्ठ सोदर * दुइ भाइ राज्य कर हैया एकत्तर
वालि ब'ले ना भाविओ तारा चन्द्रमुखी * सुग्रीव लागिया ब'ल यत, हय दुःखी
दानव मारिते आमि गेलाम पाताले * राखिलाम सुड़ंगेर द्वारे से चण्डाले
वृक्ष प्रस्तरेते से सुड़ंग द्वार ढाके * आमार महिला हरे, जाति नाहि राखे
तोमार कथाय तारे ना मारिब प्राने * हाते-गले वान्धि दिब तोमा विद्यमाने
तारा ब'ले, शुन राजा करि निवेदन * सुग्रीवेर दोष नाइ दोषी पात्रगण
पात्रगणे राज्य दिल करिया सन्तोष * सुग्रीव हइल राजा, तार नाहि दोष
करह आमारे रक्षा, राखह वचन * आजिकार दिन तुमि न करिह रन
क्षिति खान-खान हय पर्व्वत उपाड़े * चन्द्र-सूर्य्य आदि श्रीरामेर बाणे पोड़े
रामेर सहाय करि यदि से आइसे * तबे ब'ल प्राणनाथ, रक्षा पावे किसे
वालि ब'ले ब'ल केन असत्य वचन * मारिवेन श्रीराम आमारे कि कारण
परेर कथाय कि करिवेन अधर्म्म * रामके ना भय करि, शुन तार मर्म्म
सत्यवादी राम बड़, सत्ये धर्म्मे मन * सत्येर कारणे तिनि आइलेन वन
कखन रामेर संगे मोर नाहि बाद * तिनि केन मारिबेन मिथ्या विसम्वाद

---

१ रहस्य २ निन्दा।

बिन अपराध रोष केँहि कारन ※ पुनि-पुनि कहत, राम किमि आवन
तदपि सहाय होयँ जो रामा ※ अडिग करउँ अविचल संग्रामा
रानि-वचन कछु बालि न माना ※ कुपित सिंह सम गर्जि पयाना
नारि नयन जल छल-छल करई ※ रन पयान पति मंगल धरई

दो० जानि पुनः दुस्तर समर, निरखि न पति-निस्तार।
किष्किन्धापति - भामिनी विलपत विकल अपार ॥ १९ ॥

आय बालि चहुँ दीठि पसारी ※ तहँ सुग्रीव, न इतर[1] निहारी
दोउ भट अभिरि परस्पर लरई ※ ठेलि, घेरि, कसि रिपु बस करई
लपिटि दाँव पर दाँव चलावैं ※ मारामार प्रहार मचावैं
मानत हार न वीर समाना ※ दंगल प्रहर[2] मल्ल दोउ ठाना
बिक्रम दुगुन बालि बलसीवा ※ लहि चपेट कातर सुग्रीवा
बज्र मुष्टि हनि उर तेँहि मारा ※ मुख अचेत स्रव[3] शोणित धारा
लखि सम्मुख सुग्रीव अचेता ※ लीन दिव्य सर कृपानिकेता
भीत सुकण्ठ भजत[4] अनुमाना ※ ओट राम रहि सर संधाना
जगमग दस दिसि छूटत बाना ※ भिदेउ बालि-हिय बज्र समाना
हाहाकार पकरि हिय बाली ※ दारुण सर केँहि हनेउ कुचाली

आमि दोषी नहि, राम रुषिवेन किसे ※ पुनः पुनः कह केन, राम बुझि आसे
तबे यदि सुग्रीव साहाय्ये आसे राम ※ तबु नाहि भंग दिव, करिब संग्राम
रुषिया चलिल वालि सिंहेर गर्ज्जने ※ ना रहिल तारा महादेवीर वचने
यात्राकाले महादेवी करिल मंगल ※ किन्तु तार नेत्रे जल करे छलछल
अन्तरे जानिया तारा कान्दिल विस्तर ※ एबार निस्तार नाहि, समर दुस्तर
बाहिर हइया वालि चतुर्द्दिके चाय ※ एका सुग्रीवेरे मात्र देखिबारे पाय
बालि सुग्रीवेर युद्ध लागे हुड़ाहुड़ि ※ हुड़ाहुड़ि दुइ जने करे बेड़ावेड़ि
बेड़ावेड़ि दुइ जने करे जड़ाजड़ि ※ जड़ाजड़ि दुइ जने करे मारामारि
केह कारे नाहि पारे, उभये सोसर ※ दुइ जने मल्ल युद्ध एकटि प्रहर
सुग्रीव हवते वालि द्विगुण प्रखर ※ एकटि चापड़े तारे करिल कातर
वालि बज्रमुष्टि जे मारे तार बुके ※ अचेतन सुग्रीव, शोणित उठे मुखे
सुग्रीवेर अचेतन देखिया सम्मुखे ※ श्रीराम ऐषिक बाण जुड़िया धनुके
सशंक-सुग्रीव प्राय करे पलायन ※ आड़े थाकि राम वाण करेन क्षेपण
दशदिक् आलो करि सेइ बाण छुटे ※ बज्राघात सम बाण बालि वुके फुटे
वुक धरि बालिराज करे हाहाकार ※ कोन् जन करिल ए दारुण प्रहार

१ कोई दूसरा २ एक प्रहर तक ३ रक्त-धार बहती थी ४ भागता।

शूल पीठ-उर हलब मुहाला[1] ❊ प्रबल श्वास, सर चोट बेहाला[2]
धरनि बिलोटति सुरपति-सुवना[3] ❊ अस्त-व्यस्त तन भूषन बसना
कृत्तिवास मन अतिव विषादा ❊ धर्मरूप किमि कीन प्रमादा

बालि द्वारा राम की भर्त्सना

छटपटाति छिति बालि भुवाला ❊ धाये तहँ रघुवीर कृपाला
हनि मृग, व्याध जात मृग पाहीं ❊ बालि समीप राम तिमि जाहीं
शोणित नयन राम प्रति लखही ❊ कड़कड़ दन्त, दुर्वचन कहही

दो० तारा कीन निषेध मोंहि, अमिट विरञ्चि-विधान।
अहह! कीन विश्वास मैं, पतित समुझि सद्ज्ञान॥ २०॥

जनमि राजकुल धर्म न ज्ञाना ❊ केहि विधान मम लीन्हेसि प्राना
गैंड़ा, कूर्म, शशक अरु साही ❊ गोह पञ्चनख, भक्षत जाही[4]
नहिं तिन मध्य सुनहु रघुवीरा ❊ रक्त मांस जनि भक्ष्य शरीरा
मृग नहिं, शाखामृग[5] तरुचारी ❊ चर्म न मम आसन अधिकारी
निर्दोषी कपि-बध केहि काजू ❊ नीति न धर्म, रहित तैं राजू
देश-हरन केहि दीन्हेउँ क्लेशा ❊ बिन अपराध आयु मम शेषा

बुके-पृष्ठे भार जे नाड़िते नारे पाश ❊ एक बाणे पड़े बालि, घन वहे श्वास
पड़िलेक बालिराज इन्द्रेर नन्दन ❊ गायेर भूषण खसे अगेर वसन
कृत्तिवास पण्डितेर थाकिल विषाद ❊ धार्म्मिक रामेर केन घटिल प्रमाद

वालि कर्त्तृक श्रीरामके भर्त्सना

भूमे पड़ि बालिराज करे छट्पट् ❊ धाइया गेलेन राम ताहार निकट
मृग मारि व्याध येन धाइल उद्देशे ❊ धाइया गेलेन राम से बालिर पाशे
रक्त नेत्रे श्रीरामेर पाने चाहे वालि ❊ दन्त कड़मड़ करि देय गालागालि
निषेधिल तारा मोरे विविध विधाने ❊ करिलाम विश्वास चण्डाले साधुज्ञाने
राजकुले जन्मियाछ नाहि धर्म्मज्ञान ❊ आमिरे मारिले राम, ए कोन् विधान
शशक गण्डार कूर्म्म गोधिका शल्लकी ❊ भक्षणीय जन्तु हय एइ पंचनखी
तार मध्ये केह नहि, शुन रघुवीर ❊ आमार शोणित मांस भक्ष्येर बाहिर
आमार चर्म्मेते नाहि हइबे आसन ❊ मृग नहि, शाखामृगे कोन् प्रयोजन
निर्द्दोष वानर आमि मार कोन कार्य्ये ❊ एइ हेतु अधिकार ना पाइले राज्ये
कोन् देश लुटिया दिलाम कारे क्लेश ❊ कोन दोषे करिले आमार आयु शेष

---

१ हिलना कठिन २ व्याकुल ३ बालि ४ गैण्डा, कछुआ, खरगोश, साही, गोह—ये पाँच नखवाले जीव भक्ष्य कहे गये है ५ बन्दर।

कुल न हीन रघुवंश-कुमारा ❋ जग तव धर्म प्रशंसति सारा
केहि विधि धर्म-कर्म विस्तारा ❋ छलि विन दोष महाभट मारा
कहत लोग तुम दया-निवासू ❋ दया-पुञ्ज तव आजु प्रकासू
धरि मुनि रूप भ्रमत वन जाहीं ❋ केहि वध करैं, सदा मन माहीं
जनश्रुति राम धर्म-अवतारा ❋ प्रकट आजु तव धर्म - अचारा
कौतुक लखत लरत दुइ भाई ❋ मारेहु बालि कवन सुख पाई
कबहुँ न दीख सुनी नहिं बाता ❋ केहु रन इतर करै अपघाता
सम्मुख समर न सर सन्धाना ❋ नतरु चपेटि हरत तव प्राना
मम सन संगर प्रकट कठोरा ❋ ह्वै तरु ओट हनेउ जिमि चोरा
तुमहिं प्रकट मैं अतुलित वीरा ❋ मम रन नहिं समर्थ रणधीरा

दो० बैरी मम सुग्रीव तेहि कारन किय अपघात[1]।
विन विवाद दुर्नीति तुम, राम! कौन उतपात ॥ २१ ॥

विन अपराध मारि कपिराजा ❋ केहि मुख जइहौ साधु-समाजा
दशरथ धर्मधुरीन कहाये ❋ कुल-द्रुम राम वंश तिन जाये
सदा धर्म दशरथ मन माहीं ❋ तुम कदापि दशरथ-सुत नाहीं
पितु गौरव, तजि धर्म विहीना ❋ संग-सुकण्ठ नीच मन दीना

हीन वंशे जन्म नहे, जन्म रघुवंशे ❋ धार्म्मिक ब'लिया सब तोमारे प्रशंसे
ए कोन् धर्म्मेर कर्म्म करिले, ना जानि ❋ बिना अपराधे बिनाशिले ममप्रानी
सबे ब'ले, रामचन्द्र दयार निवास ❋ यत दया तोमार, ता आमाते प्रकाश
तपस्वीर वेशे राम भ्रम एइ वने ❋ काहार बधिब प्रान, सदा भावे मने
सर्व्वलोके ब'ले राम धर्म्म अवतार ❋ भाल राम देखाइले सेइ व्यवहार
भाइ भाइ द्वन्द्व करि देखह कौतुक ❋ आमारे मारिया तुमि कि पाइले सुख
कोथाओ न देखि हेन कखन ना शुनि ❋ एक सहित युद्धे अन्ये हय खुनी
सम्मुख संग्रामे यदि मारिते हे वाण ❋ एकटा चपेटाघाते बधिलाम प्राण
सम्मुखे संग्राम मने बुझिया कठोर ❋ तेंइ राम आमाके बधिले ह'ये चोर
ज्ञात आछ आमारे, जेमन आमि वीर ❋ आमार सहित युद्धे केह नहे स्थिर
सुग्रीव आमार वादी, साधि तार वाद ❋ अविवादे तुमि केन करिले प्रमाद
केमने देखावे मुख साधुर समाजे ❋ विना दोषे कपटे बधिया वालिराजे
दशरथ राजा तिनि धर्म्म-अवतार ❋ ताँर वंशे हइयाछ कुलेर अंगार
महाराज दशरथ, धर्म्मे रत मन ❋ तार पुत्र तुमि ना हइबे कदाचन
धर्म्महीन मान्य छिले वापेर गौरवे ❋ मिलिले साधिते इष्ट पापीष्ठ सुग्रीवे

---

१ विश्वासघात।

सिद्धक-साधक पापिन जोगू ❋ नतरु होत मोंहि किमि दुखभोगू
बिन कपि-कृपा न तव निस्तारा ❋ तौ मोंहि किमि न दीन यहु भारा
एक छलांग सिन्धु के पारा ❋ एक दिवस महँ सिय-उद्धारा
क्षत्रिय-सुवन विवेक न कीन्हा ❋ अधम सचिव केहि सम्मति दीन्हा
शत-शत बीरन बालि सँहारा ❋ कहा छुद्र दसकन्ध बिचारा
बाँधि पूँछ, जब रन हित आवा ❋ सिंधु बोरि पुनि-पुनि उतरावा
बंधन ढील भएउ, गृह आई ❋ गहि पद क्षमा पाय नभ जाई
त्रिपुर[1] जयी सिवप्रिय दसग्रीवा ❋ तेहि समता कहँ खल सुग्रीवा
अधिकाधिक बिलम्ब यदि हेतू ❋ सिन्धुमात्र बाधा रघुकेतू
जो मोंहि राम मिलत यहु भारा ❋ दिवस एक महँ सिय-उद्धारा
धरि दशकन्ध कण्ठ सों लावत ❋ सदा तुमहिं सेवक सम ध्यावत
मैं उपयुक्त - भार कपिराजा ❋ चीन्हति मोंहि सब वीर समाजा
दो० बालिराज इमि राम प्रति विविध भर्त्सना कीन।
कृत्तिवास कृत लेखनी मन विषाद अति लीन ॥ २२ ॥

श्रीराम के प्रति बालि-विनय

बोले राम, बालि! धरु धीरा ❋ सुनु कपिकुल तैं अद्भुत वीरा

पापी पापी मिलनेते पापेर मन्त्रणा ❋ नतुवा आमार केन हइबे यन्त्रणा
वानर हइते कार्य्य करिबे उद्धार ❋ तवे केन आमारे ना दिले एइ भार
एक लाफे पारावार हइताम पार ❋ एकदिने करिताम सीतार उद्धार
राजपुत्र तुमि राम, नाहि विवेचना ❋ कोन् छार मन्त्री सह करिले मन्त्रणा
करिताम कत शत वीरेर संहार ❋ आमार सम्मुखेते रावण कोन् छार
रावण आसियाछिल रण करिवारे ❋ लेजे बाँधि डुबाइनु चारि पारावारे
लेजेर बन्धन तार किष्किन्ध्याय खसे ❋ पाये पड़ि आमार से उठिल आकाशे
त्रिलोक-विजयी शिवभक्त दशग्रीव ❋ कि करिवे ताहार निकटे ए सुग्रीव
यदि हय, हइबे बिलम्व बहुतर ❋ मध्ये एक व्यवधान प्रवल सागर
यद्यपि आमारे राम, दिते एइभार ❋ एक दिने करिताम सीतार उद्धार
आनिताम रावणेरे धरिया गलाय ❋ सेवक हइया राम, सेवित तोमाय
ए विचित्र भार हेन आमि बालिराज ❋ आमारे ना जाने कोन् वीरेर समाज
विस्तर भर्त्सिल रामे रण-स्थले वालि ❋ कृत्तिवास व'ले केन रामे देह गालि

श्रीरामेर प्रति बालिर विनय

श्रीराम व'लेन, वालि, शुन ह'ये स्थिर ❋ वानर जातिर मध्ये तुमि वड़ वीर

१ तीनो लोक।

बहु भर्त्सन[1] किय बालि नरेसू ※ कहु दुर्वचन अबहिं यदि शेषू
युग - युग भूमण्डल नरराया ※ केहि आखेट[2] तजेउ करि दाया
वन तृन गुजर न कछु अपराधा ※ पुनि मृग हेत बनत नृप व्याधा[3]
जनि कछु दोष बसत जल मीना ※ भक्ष्य भद्र जन तिन कहँ कीना
खग-मृग बसत बिपुल बन माहीं ※ ब्याध फन्द सों तिन गति नाहीं
मम सासन[4] बिलसत पर दारा ※ चहुँ दिसि पाप पाप-सञ्चारा
पातक मुक्त कीन मम सायक ※ हेतु न ताप, स्वर्ग फलदायक
करि सुग्रीव भक्त प्रतिपालन ※ बधहिं सदा तेंहि शत्रु अपावन
कीन मित्रता पावक साखी ※ सकहुँ न रिपु-सुकण्ठ मैं राखी
अग्रज[5] तुम सुकण्ठ-सन्माने[6] ※ अधिक कथन जनि उचित लखाने
तुम सन उचित न मम रन-साजा ※ क्षमहु कपीस देहु जनि लाजा
क्षमहु वीर, विधि-लेख विचारौ ※ मम प्रसाद सुरपुरी सिधारौ
सुरपति-सुत! धरि सुरपति-वेसू ※ गमन करहु सुरपुर निज देसू
त्रिभुवनपति पूजित मैं जानी ※ मन विषन्न! मम अनुचित बानी
क्षमहु राम बन्दौं तव चरना ※ दोउ अंगद-सुकण्ठ तव सरना

आमाके करिले तुमि अनेक भर्त्सन ※ आर यदि थाके किछु, कह कुवचन
पृथिवीते यत राजा आछे युगे युगे ※ दया करि कोन् राजा छाड़ियाछे मृगे
घास खाय, वने चरे, नाहि अपराध ※ तबु मृग मारिते राजारा ह'य व्याध
मत्स्यगण जले थाके, हिंसे ब'ल काके ※ तारे वध करे केन बड़ बड़ लोके
पशुपक्षी सर्व्वस्थाने थाके सर्व्ववने ※ व्याधगण अविरत तारे केन हने
आमार राज्येते थाकि कर परदार ※ सेइ पापे मम राज्ये पापेर सञ्चार
मम वाणे तोमार हइल मुक्त पाप ※ स्वर्गे जाह बालि केन करह सन्ताप
भक्त हेन सुग्रीवेरे करिब पालन ※ ताहार ये शत्रु, तार बधिब जीवन
करियाछि मित्रता पावक साक्षी करि ※ कोथाओ ना राखि आमि सुग्रीवेर अरि
सुग्रीवेर ज्येष्ठ तुमि परम गर्व्वित ※ तोमाय अधिक ब'ला नहे त उचित
तोमार सहित युद्धे मोरे नाहि साजे ※ क्षमा कर कपिराज, केन फेल लाजे
क्षमा कर वीर तव दैवेर लिखन ※ आमार प्रसादे जाओ महेन्द्र-भुवन
इन्द्र-पुत्र तुमि, धर महेन्द्रेर वेश ※ अमरावतीते जाओ आपनार देश
बालि ब'ले त्रिभुवने तुमित पूजित ※ व्यथित हइया ब'लिलाम अनुचित
क्षमा कर, धरि राम तोमार चरण ※ सुग्रीव-अंगदे तुमि करह पालन

१ तिरस्कार, झिड़की २ शिकार ३ बहेलिया ४ राज्य में ५ बड़े भाई
६ सुग्रीव के पूज्य।

दो० राजु समर्पन अनुज कहँ, करहु नाथ स्वीकार।
अंगद सुवन सनाथ करि देव यथा अधिकार ।।
दाता, कर्त्ता नाथ तुम सबके सिरजनहार।
अंगद पुनि सुग्रीव दोउ, तव अब धर्मकुमार ।। २३ ।।

सुता-सुषेन रानि गृह तारा * दुख जनि लहै, सुकण्ठहिं भारा
पावन प्रद अति पायेउ कीसा * तजौ व्यथा बोले जगदीसा
राम-राम प्रणवति कपिनाथा * मम दुर्वचन क्षमहु रघुनाथा
बालि-बच्चन सुनि राम हुलासा * किष्किन्धा कृतिवास प्रकासा

तारा-विलाप एवं राम को अभिशाप

प्रभु-सर रन परि बालि विनासू * तारहिं खबरि मिली रनिवासू
सम्हरति केस वसन जनि आली * अंगद सहित चली जहँ बाली
सचिवन[1] त्रसित भजत मग माहीं * अश्रुमुखी पूछत तिन पाहीं
सब बिधि योग्य सखा नृप केरे * तिन तजि कहँ अपकीर्ति[2] बटोरे
कपिगन कहत सुनहु ठकुरानी * कलह बन्धु युग[3], किय अति हानी
रानि ! कथन तव आगे आवा * रघुपति-सर नृप प्रान गवाँवा
रहु रनिवास सैन चहुँ ओरा * दुख तजि नृप करि बालिकिशोरा[4]

सुग्रीवेरे राज्य दिते करले स्वीकार * अगदेरे दिले तुमि कोन् अधिकार
तुमि दाता तुमि कर्त्ता तुमि त विधाता * सुग्रीव-अंगदेर धर्म्मतः हओ पिता
सुषेण-दुहिता तारा आछे गृहमाझे * सुग्रीव ना दुःख देय तारे कोन् काजे
श्रीराम ब'लेन चिन्ता-गत कपिराज * पवित्र हइले तुमि, कथाय कि काज
श्रीरामे विनये कहे वालि जोड़ हाथ * विरूप वचन क्षमा कर रघुनाथ
बालिर वचन शुनि रामेर उल्लास * रचिल किष्किध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

वालिर मृत्युते तारार विलाप ओ श्रीरामेर प्रति अभिशाप

रणे पड़े बालिराज श्रीरामेर बाणे * अन्तःपुरे थाकि ताहा तारादेवी शुने
वस्त्र ना सम्वरे रानी आलूलित केशे * अंगदेरे ल'ये जाय बालिर उद्देशे
पथे देखे मंत्रिगण पलाइछे त्रासे * अश्रुमुखी तारादेवी सबारे जिज्ञासे
तोमरा राजार पात्र, छिले तार साथी * तारे छाड़ि जाओ केन राखिया अख्याति
कपिगन व'ले, शुन तारा ठाकुरानी * दुइ भाइ विस्तर करिल हानाहानि
तुमि यत व'लिले इहार विद्यमान * श्रीरामेर बाण बालि हाराइल प्राण
चारिभिते सैन्य दिया राज अन्तःपुरी * अंगदेरे राजा कर शोक परिहरि

---

१ मंत्रियों से २ भाग कर अपयश ले रहे हो ? ३ दोनों भाई ४ अंगद ।

राज्य भार अंगद सुत हेतू ❋ संग जाहुँ, मम धन कपिकेतू
कर सिर धुनत न वस्त्र सम्हारा ❋ रनस्थली चहुँ रानि निहारा
तजि सर चाप थपे रघुनाथा ❋ समुख लखन दोउ जोरे हाथा
मौन, सबन मुख चुप्पी छाई ❋ सकल रहे तहँ माथ लचाई
वेगि बालि जहँ, प्रस्तुत तारा ❋ पति-दुर्गति लखि हाहाकारा

दो० विपुल सुभट तुम सन कबहुँ, लरि न सके, घननाद[1]!।
छिति लोटत सर एक यहु, अघटन[2] दैव-विषाद[3] ॥ २४ ॥

कथन न मम सुनि, साहस कीन्हा ❋ तव न दोष, विधि विपदा दीन्हा
नयन मूँदि मोंहि त्यागेउ नाथा ❋ तुम बिन अंगद निपट अनाथा
अथये[4] चन्द्र अस्त नभ-तारा ❋ नाथ-अस्त तारहिं अँधियारा
शासन हित सुकण्ठ अपकाजू ❋ कौन दुखित कपि अखिल समाजू
रुदन बिसूरि[5] कृशोदरि तारा ❋ सुनि किष्किन्धा रुदन अपारा
छिति लोटत अंगद सन्तापा ❋ बालि-मरन मृग-विहग[6] बिलापा
रोवत लखन विकल सब जीवा ❋ मुख मलीन रघुपति सुग्रीवा
रघुकुल जनमि, कहेउ पुनि तारा ❋ छल करि पति मम किमि संहारा

तारा ब'ले, राज्य निये थाकुक अंगद ❋ स्वामी संगे जाब आमि, एइ से सम्पद
शिरे करे कराघात, वस्त्र ना सम्बरे ❋ रणस्थले रानी चतुर्द्दिके दृष्टि करे
धनुर्व्वाण छाड़िया बसिया रघुनाथ ❋ लक्ष्मण सम्मुखे ताँर करि जोड़ हाथ
कारो मुखे नाहि शुना जाय कोन कथा ❋ सकले बसिया आछे हेंट करि माथा
वालिर निकटे तारा चलिल सत्वरे ❋ स्वामीर दुर्गति देखि हाहाकार करे
मेघेर गर्ज्जन-तुल्य तोमार गर्ज्जन ❋ बड़ बड़ बीर सहे के तोमार रण
श्रीरामेर एक बाणे लोटाओ भूतले ❋ एकि असम्भव कर्म्म, विधि देखाइले
मम वाक्य ना शुनिले करिले साहस ❋ तोमार नाहिक दोष, विधाता विरस
मुदिले नयन नाथ, त्यजिया आमाय ❋ तोमा बिना अंगदेर ना देखि उपाय
चन्द्र जान अस्त, ताँर संगे जाय तारा ❋ तोमार हइल अस्त, केन रहे तारा
राज्य-लोभे सुग्रीव करिल एइ काज ❋ कान्दाइल किष्किध्यार विशिष्ठ समाज
एतेक ब'लिया कान्दे तारा कृषोदरी ❋ ताहार क्रन्दने कान्दे किष्किध्यानगरी
वालक अंगद कान्दे मृत्तिका-शयने ❋ पशु-पक्षी आदि कान्दे बालिर मरने
थाकुक अन्येर कथा, कान्देन लक्ष्मण ❋ श्रीराम सुग्रीव दोंहे विरस वदन
तारा ब'ले, राम तव जन्म रघुकुले ❋ आमार स्वामीके केन विनाशिले छले

---

१ मेघ के समान गर्जन करने वाले वीर २ अनहोनी ३ भाग्य का कोप
४ अस्त होने पर ५ याद करके रोदन ६ पशु-पक्षी ।

रन प्रतच्छ[1] करि लखत प्रतापू ❋ हनेउ विटप लुकि, दारुन तापू
जनश्रुति दयासिन्धु भगवाना ❋ भल दीन्हेउ तुम तासु प्रमाना
मम सब विधि तुम निपट विनासी ❋ सुग्रीवहिं प्रति दया प्रकासी
सिय-बिछोह परिचित रघुवीरा ❋ सो मम हित किमि दारुन पीरा
दीन न शाप! सदय मम नाथा ❋ लहि मम शाप भरहु रघुनाथा
निज बल विक्रम सिय उद्धारी ❋ बहु श्रम करि आनहु गृह नारी
वेगि वियोग, सिया कर शोकू ❋ कछु दिन निवसि लहै सुरलोकू
किष्किन्धा निमग्न जिमि शोका ❋ अवध[2] सशोक लहै सुरलोका

दो० सती, सती, जो मैं सती, भारत-भूतल माहिं।
सीय विना कलपत कटैं सदा दिवस तव पाहिं ॥ २५ ॥

अमिट, राम! यहु मम अभिशापू ❋ सिय कारन तव तन संतापू
विगलित होयँ सिया हित प्राना ❋ जीवन कटै सदा दुख-साना[3]
कहँ रघुपति कहँ बानरि हीना ❋ गर्जति, 'किय मोहिं सकल विहीना'
करहु न दर्प, 'अहौं जगनाथा' ❋ कर्मभोग - बन्धन सब साथा
बिन अपराध बधेउ कपिनाथा ❋ अन्य जन्म तव बध तिन[4]-हाथा
सदा सती - बाचा फुर[5] होई ❋ तेहि परि मुक्ति-उपाय न कोई

सम्मुखे मारिते यदि, देखिते प्रताप ❋ लुकाय मारिले पाइलाम बड़ ताप
श्रीराम तोमारे सवे व'ले दयावान ❋ भाल देखाइले आजि ताहार प्रमान
एक बारे आमार करिते सर्व्वनाश ❋ सुग्रीवेर प्रति दया करिले प्रकाश
विच्छेद यातना यत जान त आपनि ❋ तबे केन आमारे हे दिले रघुमनि
प्रभु शाप नाहि दिले सदय हृदय ❋ आमि शाप दिब तोमा फलिबे निश्चय
सीता उद्धारिवे राम, आपन विक्रमे ❋ सीतार आनिबे घरे बहु परिश्रमे
किन्तु सीता ना थाकिबे सदा तव पाश ❋ किछु दिन थाकिय करिवे स्वर्गवास
कान्दाइले जेइ रूप किष्किन्ध्यानगरी ❋ कान्दाइया अयोध्या जाइबे स्वर्गपुरी
आमि यदि सती हइ भारत-भितरे ❋ कान्दिवे सीतार हेतु चिर दिन धरे
आमि ए दिलाम शाप ना हबे खण्डन ❋ सीतार कारणे राम हबे ज्वालातन
सीतार कारणे तुमि प्राण हाराइवे ❋ ए जन्मेर मत दुःखे काल काटाइबे
वानरी हइया तारा रामेरे गरजे ❋ एतेक सम्पद मोर तोमा हेतु मजे
इहा मने न करिह, आमि नारायन ❋ कर्म्ममत फलभोग करे सर्व्वजन
विना दोषे जेमने मारिले कपीश्वरे ❋ मारिबे तोमारे पुनः सेइ जन्मान्तरे
सतीर वचन कभु ना हबे खण्डन ❋ जाहा ब'लि, ताहा नाहि हबे विमोचन

१ सम्मुख युद्ध करके २ सारी अयोध्या ३ दुखभरा ४ बालि रूपी व्याध
५ सच्ची।

लै पति अंक सखेद बिलापू ※ बालि छीन बोलत लखि तापू
सुनु प्रेयसी, बचन मम तारा ※ रामहिं बहु दुर्बचन उचारा
मम कुवचन रामहिं अति लाजा ※ पुनि तव रोष सरै कस काजा
हरन लंकपति किय बैदेही ※ रावन-दोष मरन मम एही
राम निदोष[1] अमिट बिधि-रीती ※ तव कुवचन तिन वृथा अप्रीती
तारहिं बालि प्रबोध प्रकासा ※ मरन काल अनुजहिं सम्भाषा
तैं सुग्रीव सहोदर मोरा ※ चलेउ विवाद दुहुन अति घोरा
तव विषाद पायेउँ फल आजू ※ निश्चय मोर मरन तव राजू
भावी[2] तुमहिं न दोष प्रसंगा ※ राज-भोग दोउ लिखा न संगा
अंगद पलेउ राज सुख भोगू ※ तेहि पद धूरि धूसरित जोगू

दो० मम सूने तुम जनक सम, प्रतिपालहु निज जानि।
कबहुँ मिलै संताप जनि, अभय करहु सुत मानि ॥ २६ ॥

जो मैं होत, न होत अनाथा ※ सौंपहुँ कुअँर आजु तव हाथा
अहह राम सर दारुन पीरा ※ छनहिं प्रान अब तजत सरीरा
दीन सुवन-हित सुरपति माला ※ अर्पन तुमहिं अनुज यहि काला
अनुमति लीन बालि प्रभु पासा ※ दिव्य अनुज गर माल प्रकासा

खेदे तारा कान्दे कोले लइया वालिरे ※ ताँरार क्रन्दने बालि ब'ले धीरे धीरे
शुन तारा प्रेयसी, तोमारे आमि ब'लि ※ आमि बहु रामेरे दियाछि गालागालि
आमार बचने बड़ पाइलेन लाज ※ तुमि मन्द व'लिया साधिबे कोन् काज
सीतारे हरिया निल लंकार रावन ※ रावनेर अपराधे आमार मरन
विधिर निर्ब्बंध दिल, रामेर कि दोष ※ गालि दिले श्रीरामेर हबे असन्तोष
तारा प्रति दिल बालि प्रबोध बचन ※ मृत्युकाले सुग्रवेरे करे सम्भाषण
बालि ब'ले सुग्रीव तुमि ये सहोदर ※ तव संगे विसम्वाद हइल विस्तर
तोमार विषादे मोर एइ फल हय ※ तुमि राज्य कर, आमि मरिहे निश्चय
तव दोष नाहि मोरे विधाता विमुख ※ एकत्र ना हइल दोंहार राज्य सुख
राजभोगे वाड़ालाम अंगद सुन्दर ※ पदतले लोटे पुत्र धूलाय धूसर
अंगदेरे भाइ, तुमि नाहि दिओ ताप ※ आमार विहने तुमि अंगदेर बाप
अंगदेरे भयेते अभय दिओ दान ※ पालन करिओ एरे पुत्रेर समान
आमि यदि थाकिताम हइत पालन ※ एइ लह, अंगदेरे कपि समर्पन
दारुण रामेर वाणे पुड़े ए शरीर ※ क्षणेक थाकिया प्रान हइबे वाहिर
इन्द्रमाल दियाछेन पुत्रेर शन्देश ※ सुग्रीवेरे दिह से देखुक एइ देश
श्रीरामेर ठाँइ बालि लये अनुमति ※ सुग्रीवेरे गले दिल, धरे नाना ज्योति

१ बेकसूर २ होनहार।

अनुज माल, पुनि सुवन निहारी ※ अन्तकाल कछु गिरा उचारी
मम गौरव जिमि दीन बड़ाई ※ प्रति-सुग्रीव करहु मन लाई
मन मम दर्प कबहुँ जनि आनौ ※ पितु सम पितु-भाई सन्मानौ
जहँ सुग्रीव-प्रीति तहँ प्रीती ※ तेहि विपरीत तोर विपरीती
सेवा तासु धर्म शुभकर्मा ※ दोउ जीवन करु सफल सधर्मा
यहि विधि कहत तजे कपि प्राना ※ प्रस्तुत सुरपति कीन विमाना
काल कराल न गति कोउ जाना ※ रन-थल महासुभट अवसाना[1]
चढ़ि विमान सुरपुरी सिधारा ※ इत विषादमय विलपति दारा[2]
सिर धुनि तजत आभरन तारा ※ छन अचेत छन हाहाकारा
बेणी खसि, गर मुक्ताहारा ※ छिन्न-भिन्न सहचरिन सम्हारा
पति बिछोह दृग सरसत नीरा ※ प्रभु ! तव विन मम दहति सरीरा
अहह ! कहाँ तव राज-पाट-धन ※ कहँ तव दिव्य रत्न सिंहासन

दो० प्रान हरेउ सुग्रीव तव, तुम विन सब अँधियार ।
कहँ अंगद तव प्रान सम, कहाँ राज-संसार ॥ २७ ॥

जिन विक्रम काँपत त्रयलोका ※ विधिगति तव यह दशा बिलोका
रघुपति-सर दारुण हिय माहीं ※ पाप-सुकण्ठ[3] फले हम पाहीं

सुग्रीवेरे माला दिया पुत्र-पाने चाहे ※ मृत्युकाले अंगदेरे परिमित कहे
वाड़िले येमत पुत्र आमार गौरवे ※ सेइमत वाड़ाइवे तोमाय सुग्रीवे
अहंकार ना करिह आमार कखने ※ खुड़ार करिओ सेवा आमार विधाने
सुग्रीवेर विपक्ष से जानिओ विपक्ष ※ सुग्रीवेर जेइ पक्ष, सेइ तव पक्ष
अधर्म न करिह, करिह सेवाकर्म ※ खुड़ार करिओ सेवा परापर धर्म
एत व'लि वालिराज त्यजिल परान ※ प्रेरण करेन इन्द्र तखनि विमान
कालेर कुटिल गति, के बुझिवे स्थिर ※ रणस्थले शयन करिल महावीर
विमाने चड़िया गेल अमरावतीते ※ हाहाकार करि तारा लागिल कान्दिते
शिरे करि कराघात त्यजे आभरन ※ क्षणे हाहाकार करे, क्षणे अचेतन
छिड़िर मुक्तार माला खसिल कवरी ※ धरिया राखिते तारे नारे सहचरी
पति हाराइया तारा नेत्रे धारा वहे ※ व'ले, प्रभु, तोमार विहने प्रान दहे
कोथाय रहिल तव राज्य पाट धन ※ कोथाय तोमार दिव्य रत्न सिंहासन
सुग्रीव हइल तव प्राणेर आपद ※ कोथाय रहिल तव प्राणेर अंगद
कोथाय रहिल तव ए राज्य संसार ※ तोमार विहने देखि सब अन्धकार
त्रिभुवन कम्पमान तोमार विक्रमे ※ तोमार एमन दशा मम भाग्यक्रमे
रामेर दारुण बाण विद्ध वक्षस्थले ※ सुग्रवेर यत पाप आमार ता फले

---

१ मुरझा गया २ पत्नी तारा ३ सुग्रीव ।

बालि-तनहिं सर अनुज निकारा * बही तीव्र तहँ शोणित धारा
कातर भामिनि करत बिलापा * परिजन-बचन बुझावत तापा
कलपत रानि धरति जनि धीरा * करि अनुरोध कहेउ हनु[1] वीरा
धैर्य सती करु धीरज धारन * काल-धर्म जनि होय निवारन
बालि इन्द्र - सुत पुण्यश्लोकू * हरि - प्रसाद गमनेउ पितुलोकू[2]
अंगद, सकल समाज तिहारा * करहु, रानि! प्रतिपाल हमारा
नैनन अंगद लखहिं नरेसू * रानि! धीर धरि तजहु कलेसू
सावन झरी झरै दृग धारा * अकथ कथा, बोलति इमि तारा
जो अंगद नृप? तौ कस बीती * राम-सहाय सुकण्ठ न प्रीती
भल अनभल सुत, मोर न भारा * करि सहमरन[3] तरौं सब भारा
गौरव-नारि स्वामि के साथा * वृथा सुवन, जब मातु अनाथा[4]
लखि तिय रोष मोद पति लेही * सहति न सुवन बैन, तजि देही
धर्म कर्म पति सर्व विधाता * पति तिय-मोद-मुक्ति कर दाता
स्वामि सती-सेवा अधिकारी * पति विन लहति न गति कहुँ नारी

दो० बुध जन कहत अनन्य गुरु सम्पति स्वामि अनन्य ।
तिय-कर्त्ता दाता सकल स्वामि विधाता धन्य ॥ २८ ॥

बुक हैते सुग्रीव काड़िया निल बाण * वालिर रक्तेते नदी बहे खरशान
कान्दिते कान्दिते तारा हइल कातर * पात्र मित्र मिलि देय प्रबोध उत्तर
कान्दे महादेवी तारा ना माने प्रबोध * हनूमान व'ले कत करि अनुरोध
शोक परिहर रानी, सम्बर क्रन्दन * एमन कालेर धर्म, के करे खण्डन
परम धार्म्मिक बालि, इन्द्रेर नन्दन * रामेर प्रसादे जान पितार भुवन
अंगदेरे पालह, पालह सवाकारे * सकलि तोमार रानी, आछे ए संसारे
अंगद हइबे राजा, देखिबे नयने * परित्याग कर शोक, धैर्य्य धर मने
नेत्र नीर झरे येन श्रावनेर धारा * ना कहिले नहे, तेइ कहे रानी तारा
शुन वीर राजा यदि अंगद हइबे * श्रीरामेर कि साहाय्य सुग्रीव करिबे
भाल मन्द पुत्रेर जे नाहि मने करि * स्वामी-सह मरिले सकल दाये तरि
नारीर गौरव यत, स्वामी सब जाने * कि करिते पारे पुत्र स्वामीर बिहने
पुत्रेर ब'लिले मन्द, अवश्य से रोषे * स्वामीर ब'लिले, मन्द मने-मने हासे
सर्व्व धर्म्म कर्म्म स्वामी नारीर विधाता * कामिनीर स्वामी हय सुख-मोक्षदाता
स्वामी-सेवा करिवेक यदि हय सती * स्वामी विना स्त्री लोकेर आर नाहि गति
स्वामी दाता स्वामी कर्त्ता स्वामी मात्र धन * स्वामी बिना गुरु नाहि, व'ले ज्ञानी जन

---

१ हनुमान २ इन्द्रलोक ३ पति के साथ सती होकर ४ विना पति की ।

शतपुत्री बिन स्वामि बिचारी ※ कहत अभागिनि जग तेहि नारी
विकल रानि इमि करत विलापा ※ लखि संताप सुकण्ठहिं व्यापा

वालि-सस्कार

बोले हरि, प्रिय ! तजहु विषादू ※ दोष न काहु, विरञ्चि प्रमादू
हे कपिराज ! शोक परिहरहू ※ अन्तःकर्म - बालि द्रुत करहू
चन्दन अगुरु सुकाष्ठ मँगाई ※ राजवसन अरु अभरन लाई
गात बिशाल बहन करि पावैं[1] ※ बाहक बाछि[2] कटक सों आवैं
कहेउ लखन हनुमत ! धरि-धीरा ※ यथा प्रयोजन आनहु वीरा !
गृहभण्डार प्रविसि हनुमाना ※ आनेउ रत्न आभरन नाना
चतुर्दोल नृप अद्भुत वसना ※ देस-विदेस विविध धन रतना
शिविका[3] लिए बालि शव बीरा ※ गये सरित् जहँ पम्पा तीरा
चन्दन काष्ठ चिता सजवाई ※ वालिराज शव शयन कराई
राज-साज किंशुक[4] बहु भाँती ※ तारा पुनि पावक[5] प्रणिपाती
बालि-बन्धुगन धरेउ अँगारा ※ अकथ कथा तिन रुदन अपारा
राम सरन लहि पाप विनासा ※ किष्किंधा गायेउ कृतिवासा

शतपुत्रवती यदि स्वामी-हीना हय ※ तथापि सकले तारे अभागिनी कय
कान्दिते कान्दिते तारा हइल विह्वल ※ तारार क्रन्दते हय सुग्रीव विकल

वालिर-संस्कार

श्रीराम व'लेन मित्र ना कर विषाद ※ कार दोष नाइ, दैव पाड़िल प्रमाद
सम्वरह शोक तुमि वानरेर राज ※ त्वरा करि करह वालिर अग्निकाज
शुष्क काष्ठ आन मित्र अगुरु चन्दन ※ राज-आभरन आन वसन भूषण
वृहत् शरीर तार करिते वहन ※ वाछिया कटक आन वालिर वाहन
लक्ष्मण व'लेन हनूमान हउ स्थिर ※ सर्व्व प्रयोजन तुमि आनह बाहिर
हनुमान सान्धाइल बाहिर भीतरे ※ नाना-रत्न-आभरन आनिल बाहिरे
राज चतुर्दोल आने विचित्र वसन ※ विलाइते आने आरो बहुमूल्य धन
राज चतुर्दोले निया तुलिल वालिरे ※ सकले लइया गेल पम्पा नदी तीरे
चन्दन काष्ठेर चिता करिल से तीरे ※ वालिराजे शोयाइल ताहार उपरे
राजयोग्य चिता करे, नाना पुष्पजाति ※ तारा महादेवी करे वैश्वानरे स्तुति
अग्निकार्य्य वालिर करिल बन्धुगण ※ ताहार क्रन्दन कत करिव वर्णन
राम नाम शरणेते शापेर विनाश ※ रचिल किष्किन्धा काण्ड कवि कृत्तिवास

---

१ ले चल सकें २ छाँट कर ३ पालकी ४ फूल ५ वैश्वानर अग्नि।

सुग्रीव द्वारा राज्य-प्राप्ति

कपिगन चलि जहँ राम सुहाये ❋ प्रभुहिं पवनसुत बचन सुनाये
नृप सुग्रीव, नाथ! तव कारन ❋ पद तव चहत कपीस पखारन

दो० तव आयसु अन्तर्सदन[1] चलि निवसैं कपिनाथ।
किन्तु प्रवेश न देत मन विना संग रघुनाथ ॥ २९ ॥

कहेउ राम जनि नगर प्रवेसू ❋ पितु के बचन बास बनदेसू
चौदह वर्ष फिरहिं बन-कानन ❋ केहि विधि समुचित नगर सँझावन
अतः सम्हारहु शासन-भारू ❋ ह्वै नृप राज्य करौ अधिकारू
बालि निपाति सहेउँ अति लाजा ❋ अंगद सुवन करहु युवराजा
सम्मति लै तारा महरानी ❋ शासन करहु ताहि सन्मानी
सावन पावस कीन प्रवेसू ❋ चलै कटक-कपि निज-निज देसू
वन-वन भरमि सहेउ बहु क्लेसू ❋ बर्षा बिलसहु राजु नरेसू
वर्षा विगत रुकै दिन चारी ❋ समुचित, तात! दण्ड अधिकारी
आयसु राम भयेउ कपि, सदना ❋ दान वसन बहु दीन्हे रतना
सिंहासन सुग्रीव असीना ❋ छत्र दण्ड युत सासन कीना
सिंहासन सुघरी[2] पग दीना ❋ चवँरादिक चहुँ कपिगन लीना

सुग्रीवेर राज्य-प्राप्ति

सकल वानर गेल राम-विद्यमान ❋ सुग्रीवेर इंगिते ब'लेन हनूमान
तोमार प्रसादेते सुग्रीव हैल राजा ❋ वाञ्छा करे सुग्रीव तोमारे करे पूजा
पाइले तोमार आज्ञा जाय अन्तःपुरे ❋ अन्तःपुरे श्रीराम जाइबे एकत्तरे
श्रीराम वलेन पुरे ना करि प्रवेश ❋ वने-वास करिवारे पितार आदेश
चतुर्द्दश वत्सर भ्रमिव वने-वने ❋ नगरे केमने आमि करिब गमन
सुग्रीवेर श्रीराम बलेन लउ भार ❋ राजा हइया तुमि राज्य कर अधिकार
बालि के मारिया वड़ पाइलाम लाज ❋ एइ हेतु अंगदेरे कर युवराज
महादेवी तारार करह पुरस्कार ❋ ताहार मन्त्रणाय करिह व्यवहार
आइस श्रावण मास वरिषा प्रवेशे ❋ शाखामृग-कटक थाकुक निज देशे
वने-वने भ्रमिया पाइले बड़ दुःख ❋ वरिषार किछु दिन कर राज्य-सुख
वर्षा गेले घरे जे थाकिवे एक दण्ड ❋ ताहार करिब मित्र, समुचित दण्ड
श्रीरामेर आज्ञाते से गेल अन्तःपुर ❋ नाना वस्त्र रत्न दान करिल प्रचुर
सुग्रीवे करिते राजा एल राज्यखण्ड ❋ सिंहासन बाहिर करिल छत्रदण्ड
शुभक्षणे सुग्रीव वसिल सिंहासने ❋ चारिदिके चामर ढुलाय कपिगने

१ महल में २ शुभ घड़ी में।

आयसु-राम शिला कै रेखा ※ लै जलसिंधु कीन अभिषेका
कीन तिलक, किष्किन्धा-भारा ※ अर्पित कीन मञ्जुकटि-तारा
लहि सुकण्ठ तारहिं[1] अति तोषू ※ नृप-तिय रानि होय जनि दोषू
बादि सुकण्ठ अंगदहिं राजू ※ राम-वचन किमि होय अकाजू
अंगद सचिवन किय युवराजू ※ 'राम-घोष' किय कपिन समाजू

दो० माल्यवान एकान्त गिरि बहति सुवास समीर।
आकुल सिय हित, कोस दुइ, रहे जाय रघुबीर ॥ ३० ॥

दिव्य सरोवर जहुँ गिरि सोहा ※ गिरि निवास रघुपति मन मोहा
धवल सीत निसि पूनम चन्दा ※ तरु फल फूल विविध सुखकंदा
तबहुँ न रामहिं कहुँ सुख-छाहीं ※ सिय विन वृथा सकल सुख आहीं
असन-सयन कछु मनहिं न भावा ※ दिवस रुदन निसि जागि बितावा
नित कपिपति बिलास मन दीना ※ निसि-दिन राम सीय-सुधि छीना
कनक पर्यंक[2] शयन कपिनाथा ※ तरुतर इत सोवत रघुनाथा
चतुर्मास सिय हेत विलापू ※ कपि उत सुमुखिन मगन प्रलापू
रुदन निरन्तर राम अधीरा ※ लखन प्रबोधि[3] देत बहु धीरा
वीर! धीर धरि तजहु प्रमादू ※ महापुरुष जनि उचित विषादू

श्रीरामेर आज्ञा येन पापाणेर रेख ※ सागरेर जले तारे करे अभिपेक
छत्रदण्ड दिल आर किष्किन्ध्या नगरी ※ अभिपेक करि दिल तारा कृपोदरी
राजा-स्त्री राणी हवे इहाते कि दोपे ※ तारा पेये सुग्रीवेर वड़ह सन्तोषे
श्रीरामेर अलंघित वचन प्रमाणे ※ अंगदेर अभिपेक करे अवसाने
करिल अंगदे युवराज पात्रगण ※ 'रामजय' व'लि डाके यत कपिगण
सीतार लागिया राम सदा क्षुण्ण मन ※ वरिपा वञ्चिते जान गिरि माल्यवान
दुइ क्रोश अन्तरे थाकेन रघुवीर ※ तथा वहे पर्व्वतेते सुगन्ध समीर
वासा करि थाकिलेन पर्व्वत-शिखर ※ स्थाने-स्थाने पर्व्वतेते दिव्य सरोवर
नानाविध वृक्षेते विचित्र फुल-फल ※ धवल रजनी पूर्णचन्द्र सुशीतल
रामेर सुखेर हेतु ना हय किञ्चित् ※ सीता विना सर्व्वसुखे श्रीराम वञ्चित
शयन भोजन ताँर किछु नाहि मने ※ दिन जाय रोदनेते, रात्रि जागरणे
राज्य भोग सुग्रीवेर वाड़े दिन दिन ※ रात्रि-दिन श्रीराम सीतार शोके क्षीण
सुवर्ण पालंके शोय सुग्रीव भूपति ※ तरुतले श्रीराम करेन निवसति
दिव्य सुन्दरीते सुग्रीवेर अभिलाष ※ सीता लागि श्रीराम कान्देन चारि मास
कान्दिते कान्दिते राम हइल कातर ※ ताँहारे लक्ष्मण देन सुबोध उत्तर
तुमि वीर हओ स्थिर त्यजह प्रमाद ※ महापुरुषेरा हने ना करे विषाद

१ तारा को २ पलँग ३ समझा बुझाकर।

अतिव शोक चहुँ लोक प्रवादा * हरत बुद्धि व्यापत उन्मादा
शोक सदा अज्ञान सतावै * ज्ञानसिंधु प्रभु पहँ किमि आवै
काम क्रोध जीतेंउ तुम वीरा * शोक मगन किमि नाथ अधीरा
शमन, तात उर त्यागहु शंका * लावहुँ सहित लंकपति लंका
प्रभु - आयसु सेवक जो पावै * आनि सिया, दशकन्ध नसावै
कहा बिसात[1] लंकपति, लंका * करहुँ बिनास अकेल निसंका
बीतेंउ बिलपत सावन मासू * राम - रुदन बरनत कृतिवासू

सीता-शोक में राम-अनुताप

दो० चारि सिन्धु-जल सोंकि घन, आठ मास लहि नीर ।
बरसत पावस, तृप्त छिति[2], बिगत न प्रभु-सियपीर ॥ ३१ ॥

लखन ! कथन मम धरहु न काना * बर्षा कुटिल हरेंउ मम ज्ञाना
रवि ससि ढकत मेघ जिमि घोरा * लेय सीय-दुख जीवन मोरा
जलद माझ दामिनि जिमि सोहा * मम मन अंक मैथिली सोहा
जल थल एकमयी चहुँ अहई * किमि कपि कटक कितहु पग धरई
नभ सों झरत सतत[3] जलधारा * जलमय धरनि भूधराकारा

कातर हइले शोके निन्दा करे लोके * शोके बुद्धिनाश हय, क्षिप्त हय शोके
शोकेते आच्छन्न होय, ये जन अज्ञान * शोक कर केन राम, ह'ये ज्ञानवान
तुमि वीर, काम क्रोध कैला पराजय * शोकस्थाने पराभव केन तव हय
क्षान्त हओ रघुवीर चिन्ता कर दूर * लंकेश्वर-सहित आनिब लंकापुर
आज्ञा कर विज्ञवर, सेवक लक्ष्मणे * जानकीर उद्धार करि नाशिया रावणे
कोन् छार लंका से, रावन कोन् छार * एका आमि करि प्रभु, सबार संहार
कान्दिते कान्दिते गेल से श्रावण मास * रामेर क्रन्दन गीत गाय कृत्तिवास

सीतार शोके श्रीरामेर अनुताप

चारि सागरेर नीर अष्टमास शोषे * वरिषाकालेते मेघ सञ्चारि बरिषे
वरिषार धाराते पृथिवी छाड़े ताप * सीतारे स्मरिया राम करेन सन्ताप
आमार वचने कर लक्ष्मण, आरति * दुरन्त वरिषा ऋतु स्थिर नहे मति
सूर्य्य चन्द्र दोंहे बरिषार मेघ ढाके * आमि त मरिब भाइ जानकीर शोके
सजल जलद शोभे विद्युत जेमन * जानकी आमार कोले छिलेन सेमन
चतुर्द्दिके जल-स्थल सब एकाकार * केमने हइबे कपिसैन्य आगुसार
जलधर निरंतर वरिषे आकाशे * जलमग्ना धरणी, धरणीधर भासे

१ कीमत, हस्ती २ धरती ३ निरन्तर ।

कहुँ न पन्थ, दुर्गम सब देसू ※ सब विधि दुर्लभ सिय-उद्देसू[1]
किमि सुकण्ठ टेरहिं यहि काला ※ 'चलि खोजहु सिय कीसभुवाला'[2]
मग जल तजि, नद-नदी सुखाहीं ※ बिन तेहि सुफल मनोरथ नाहीं
तब लौं अस्थि-चर्म अवसेसू ※ मम विछोह-सिय प्रान न सेसू
रिपु-बिच सीय अनाथिनि एका ※ पार करै किमि मास अनेका
उर मम आन न तजि बैदेही ※ बधै दनुज लखि, संसय एही
कलपत सीय सुनिश्चित मरना ※ तव बस अथच[3] मित्र के बस ना
खग न! सिन्धु उड़ि निरखहिं पारा ※ हतभागिनि सिय-शयन-अहारा
सदा विलाप राम जनि आसा ※ शोक कथा वरनत कृतिवासा

सीता-उद्धार हेतु सुग्रीव को ताड़ना

पावस बीती, शरद प्रवेसू ※ तबहुँ न चेत, न सिय-उद्देसू[4]
दादुर[5] लोप, न घन घहराहीं ※ विसल नखत ससि छबि नभ माहीं

दो० दिन बीते, मनु सिय मरन, थिर न मोर मन प्रान।
चहुँ तम, तात! कपीस-तुम[6] काहु न बस कल्यान ॥ ३२ ॥

ए समये सुग्रीवेरे कहिब किमते ※ कटक लइया चल सीता उद्धारिते
नद नदी शुकाइबे, शुष्क हवे पथ ※ तवे से हइवे मम सिद्ध मनोरथ
तत दिन सीता हवे अस्थि-चर्म्म-सार ※ कि जानि त्यजे वा प्रान विरहे आमार
एकाकिनी अनाथिनी शत्रुमध्ये वास ※ केमने वाँचिवे सीता एइ कय-मास
आमा विना जानकीर आर नाहि मन ※ एइ क्रोधे पाछे तारे वधे दशानन
कान्दिते कान्दिते सीता मरिवे निश्चित ※ कि करिवे भाइ तुमि, कि करिवे मित
पक्षी ह'ये उड़े जाइ सागरेर पार ※ अभागी सीतार देखि शयन-आहार
कान्देन सर्व्वदा राम करिया हताश ※ रामेर क्रन्दन रचे कवि कृत्तिवास

सीता उद्धारेर जन्य सुग्रीवेर प्रति ताड़न

बरिषा हइल गत, शरत् प्रवेश ※ तथापि ना जानकीर हइल उद्देश
भेकेर निनाद गेल मेघेर गर्ज्जन ※ निर्म्मल चन्द्रमा-तारा प्रकाशे गगन
मन प्राण स्थिर नहे सीतार लागिये ※ मरिवेक सीता बुझि, गेल दिन वये
कि करिबे भाइ तुमि कि करिबे मिते ※ सब अन्धकार मोर सीतार मृत्युते

---

१ सीता की खोज २ कपिराज सुग्रीव ३ अथवा ४ सीता की खोज
५ मेंढक ६ सुग्रीव और तुम लक्ष्मण।

युगुल पुरुष-तिय धृत[1] संसारा * नारि स्रोत सन्तति परिवारा
तिय सों सुवन सार - संसारू * विन सुत तरत न पारावारू[2]
गया पिण्ड तर्पन अधिकारी * बन्धु ! जगत सुत-सम्पति भारी
तिय-सुत-परिजन[3] काहु न त्यागा * विन सुत कहत निपूत अभागा
करत श्राद्ध तेहि सुख जे देखी * वृथा श्राद्ध, मत शास्त्र विशेषी
रतन अमोल बन्धु इमि दारा * सुत कर स्रोत, पलत परिवारा
जेते गोत बन्धु कुल लोका * सर्वोपरि सहभामिनि शोका
निर्दय मोहि सुग्रीव न भावत * सतिय केलि निज धाम मनावत
हनेउ बालि मैं कपिपति-काजू * परि सुख-भोग न मम सुधि आजू
तहि हित कीन विवेक न धर्मा * लहेउँ लाज वध-बालि अधर्मा
मम बल किष्किन्धा अधिकारा * यहि छन कपि मम अर्थ[4] बिसारा
बन्धु ! गमन किष्किन्धा करहू * गाथा उचित तासु ढिग धरहू
बोले लखन, जाय कपिधामा * देखहुँ कस सुकण्ठ बलधामा
जाति कुटुम्ब गोत यत-लोकू * सबन अबहिं पठवहुँ यमलोकू
अति निश्चिन्त सकल बिसराई * हनहुँ एक सर सकल नसाई
विलपत इत भरमत रघुनाथा * उत पर्यंक रमत कपिनाथा

स्त्री पुरुष दुइ जने धरेछे संसार * भार्य्याते सन्तति हय, बाड़े परिवार
स्त्री थाकिले पुत्र हय संसारेर सार * पुत्र ना थाकिले तार गति नाहि आर
पिण्ड देय गयाय से, करये तर्पण * संसारेर मध्ये भाइ पुत्र बड़ धन
स्त्री पुत्र परिवार केह नहे छाड़ा * पुत्र ना थाकिले लोके बले आँटकुड़ा
तार मुख देखि श्राद्ध करये ये जन * श्राद्ध क्रिया वृथा तार, शास्त्रे कय हेन
अतएव शुन भाइ, भार्य्या बड़ धन * ताहाते सन्तति हय संसार-पालन
ज्ञाति बन्धु सहोदर मरे यत लोक * सबार अधिक भाइ, स्त्रीर बड़ शोक
सुग्रीव आमाके नाहि भावे से निर्द्दय * स्त्री पाइया केलि करे आपन आलय
ताहार लागिया आमि मारिलाम बालि * आमाके ना स्मरे कपि राजभोगे भुलि
बालिके बधिया आमि पाइलाम लाज * धर्म्माधर्म्म ना भाविया साधि तार काज
किष्किन्ध्या पाइल कपि आमार कारणे * एखन आमार कर्म्म नाहि करे मने
एइक्षणे जाओ भाइ किष्किन्ध्या नगर * समक्षे ब'लिवे तारे उचित उत्तर
लक्ष्मण ब'लेन जाइ किष्किन्ध्या नगर * देखिब केमन आजि सुग्रीव वानर
ज्ञाति बन्धु ताहार कुटुम्ब यत आर * पाठाइब सबाकारे शमनेर द्वार
निश्चिते वसिया आछे, आपना ना चिने * सुग्रीवे मारिया आजि पाणि एक बाणे
तुमि प्रभु रघुनाथ बेड़ाओ कान्दिया * कौतुके सुग्रीव थाके पालंके शुइया

१ धारण २ संसार-सागर ३ कुटुम्ब ४ मेरा प्रयोजन।

दो० अनुज ! मित्र-वध उचित जनि, लेहु काज डरपाय ।
बाम चाप कर दहिन सर, चले लखन तहँ धाय ॥ ३३ ॥

दृग सरोष अति कोप कराला ※ डगमग धरती सरग पताला
द्वार कपि-सदन लखन सुहाये ※ तहँ ससैन अंगद लखि पाये
लखन कोप लखि कपि भयभीता ※ प्रणवति बानर सकल बिनीता
छुद्र बहुल कीसन तजि धीरा ※ फाँदि बराय चले प्राचीरा[1]
कहेउ लखन सुनु बालिकुमारा ※ कहु सुकण्ठ आगमन हमारा
भ्रमत विकल हम नित वनदेसा ※ उत पर्यंक[2] सुखसैन कपीसा
वन दोउ भाइ फिरहिं सिय हेतू ※ रत्नासन सुचित्त कपिकेतू
दीन्हेउ राजु बालि हनि रामा ※ लहि, प्रमत्त कपि लीन विरामा
मञ्जु-बैन कपि कुटिल न लाजा ※ दै भरोस समिटेउ कपिराजा
चीटिहिं जमत पंख अवसानू[3] ※ इक सर सपुर[4] न तेहि कल्यानू
करन सहाय दीन जिन बाचा ※ करत न आजु बचन निज साचा
फिरत बालि-भय बन-बन रहई ※ सो सुधि आजु कपीस न अहई
समाचार चलि देहु कपीसा ※ प्रस्तुत द्वार अनुज - जगदीसा
बालि राम-सर सहजहिं सरई ※ केहि बल कपि दुःसाहस करई

बुझाइया लक्ष्मणेरे कहे रघुवर ※ मित्रवध ना करिओ, देखाइओ डर
लक्ष्मण विदाय हन श्रीरामेर स्थान ※ वाम हस्ते धनुक दक्षिण हस्ते वाण
महाकोपे चलिलेन घूर्णितलोचन ※ स्वर्ग्य मर्त्य पाताल काँपिल त्रिभुवन
किष्किन्ध्या नगरे वीर ह'ये उपनीत ※ द्वारे देखे अंगदेरे कटक वेष्टित
लक्ष्मणेर कोप देखि हइया कातर ※ प्रणति करिल ताँरे सकल वानर
हइलेक क्षुद्र क्षुद्र वानर अस्थिर ※ लाफे लाफे हल तारा प्राचीर बाहिर
लक्ष्मण ब'लेन शुन बालिर नन्दन ※ सुग्रीवेरे जनाओ आमार आगमन
वने वने भ्रमितेछि आमरा कान्दिया ※ सुग्रीव थाकेन नित्य पालंके शुइया
सीता लागि दुइ भाइ भ्रमि वने वने ※ निश्चिन्त आछेन तिनि रत्न सिंहासने
वालिरे मारिया राम दिलेन राजत्व ※ सुग्रीव पाइया राज्य हइयाछे मत्त
अति दुष्ट मिष्ट वाक्ये आछे आश्वासिया ※ कोन् लाजे थाके घरे निश्चिन्त वसिया
पिपीलिका पाखा उठे मरिवार तरे ※ राज्य सह पोड़ाइव आजि एक शरे
साहाय्य करिते आगे करिया स्वीकार ※ एखन ना मने करे ताहा एक बार
वालि भये अति भीत वेड़ाइत वने ※ से सकल सुग्रीवेर किछू नाहि मने
सुग्रीवेरे कह गिया एइ समाचार ※ रामेर अनुज भाइ आसियाछे द्वार
मारिलेन जे राम बालि के अनायासे ※ सुग्रीव ताँहारे तुच्छ कि करे साहसे

१ चहारदीवारी २ पलँग ३ मरण ४ किष्किन्धा सहित ।

वनचर बानर दुष्ट स्वभावा ❋ तेहि कहि सखा राम अपनावा
दयासिन्धु कहँ श्रीरघुनाथा ❋ कहँ बानर प्रभु कीन सनाथा

दो० मुनी जितेन्द्रिय योगिजन, अरु ब्रह्मर्षि अनन्त।
अनाहार निज तप करत, अहिनिसि ध्यावत संत ।। ३४ ।।

सोइ प्रभु कीस लगायेउ कण्ठा ❋ जन्म-जन्म कृत पुण्य सुकण्ठा[1]
अंगद वचन विनीत सुनाई ❋ लखन-कोप कछु शमन कराई
पाद्य अर्घ्य पुनि आसन दीना ❋ दोउ कर जोरि अस्तुती कीना
लखन कोप लखि अति भय लेही ❋ अन्तःपुर विनीत पग देही
बन्दि कपीसहिं मातु बहोरी ❋ लखन द्वार, बरनत कर जोरी
रस-प्रमत्त लोचन मद-मोहा ❋ नृप-तन कुंकुम[2] मृगमद[3] सोहा
मदन प्रभाव, न मन नृप पाहीं ❋ अंगद-कथन सुनेउ कछु नाहीं
खौखियाय करि चिल्ल पुकारा ❋ बँदरन नृप सन कीन गुहारा
कपिन कुलाहल द्वार सुनाना ❋ केहि कारन चहुँदिसि रव[4] नाना
सुनि सुग्रीव शयन पुनि त्यागा ❋ सचिव सखन प्रति कहत सरागा[5]
अन्तर्सदन सोर[4] किमि घोरा ❋ सम्मुख प्रणवति बालिकिशोरा[6]
पठयेउ राम अनुज तव तीरा ❋ द्वार उपस्थित लछिमन वीरा

पशु जाति बानर सुग्रीव दुराचारी ❋ याहाके ब'लेन मित्र आपनि मुरारी
आपनि श्रीरघुनाथ दयार सागर ❋ ताँर योग्य मित्र कि ए सुग्रीव बानर
कत योगी जितेन्द्रिय मुनि ब्रह्मऋषि ❋ अनाहारे कत तप करे दिवानिशि
हेन राम कोले देय सुग्रीव बानरे ❋ सुग्रीवेर कत पुण्य छिल जन्मान्तरे
अंगद ब'लेन शुन ठाकुर लक्ष्मण ❋ स्थिर हओ महाशय करि निवेदन
पाद्य अर्घ्य दिल ताँरे बसिते आसन ❋ जोड़ हाते स्तुति करे बालिर नन्दन
लक्ष्मणेर कोप देखि बड़ भय मने ❋ अन्तःपुर मध्ये जाय परम सम्भ्रमे
सुग्रीव प्रणमि बन्दे मायेर चरण ❋ जोड़ हाते ब'ले प्रभु, द्वारेते लक्ष्मण
घूर्णित लोचन राजा श्रृंगारेर मदे ❋ शोभा पाय शरीर कुंकुम मृगमदे
कामरसे विह्वल सुग्रीव अन्य मन ❋ किछु नाहि शुनिल अंगदेर वचन
जागाते राजारे करिल पाँचापाँचि ❋ अनेक बानर मेलि करे किचिमिचि
बानरेर कोलाहल हइलेक द्वारे ❋ कार मध्ये, स्थित थाके ए घोर चीत्कारे
शब्द शुनि सुग्रीव शय्या छाड़ि उठय ❋ पात्र मित्र देखि राजा क्रोध भरे कय
अन्तःपुरे गोल[4] केन कर घोरतर ❋ अंगद सम्मुखे गिया कहिछे उत्तर
पाठाइयाछेन राम आपन भ्रातारे ❋ सुमित्रानन्दन वीर उपस्थित द्वारे

---

१ सुग्रीव २ केसर ३ कस्तूरी ४ शोर ५ क्रोध सहित ६ अंगद।

महाकोप निन्दा फिटकारू * बहु कुवचन जनि जाय प्रचारू
साधि मित्रता निज हित[1] साधा *खल ! अब प्रभु-कारज किमि बाधा
कह सुकण्ठ, भल राम मिताई * पठय लखन दुर्वचन सुनाई
भय नहिं, कीन न मैं कछु दोषू * धनुधर लखन करत किमि रोषू

दो० कीन मित्रता राम सन, निश्चय यथा प्रमान ।
तेहि कारन लंकेस पहँ, करहुँ न जीवनदान ॥ ३५ ॥

जयी त्रिलोक लंकपति वीरा * तेहि भय सुरगन सदा अधीरा
नर-वानर तिन सन रन करई * केहि विधि जियत भला गृह फिरई
अबहिं लखन निज उपवन जाहीं * अवसर पाय कहउँ तिन पाहीं
अति मतिमान सचिव हनुमाना * बहु सुकण्ठ प्रति सीख बखाना
स्वयं विष्णु प्रभु पद्मविलोचन *तिन प्रति किमि कुशब्द इमि मोचन
लहउ राजु नृप ! जासु प्रसादा * तिन प्रति किमि दुर्वचन प्रमादा
निसि दिन रत श्रृंगार विलासा * सुधि न राम-दुख, जात न पासा
लछिमन कुपित द्वार तव आहीं * चलि प्रसन्न कीजिय तिन पाहीं
जिन सर त्रिभुवन कोउ न समर्था * तिनहिं उलंघि परहु दुख व्यर्था
मैं तव मंत्री सुनहु नरेसू * तव हित मम निर्भय उपदेसू

महाकोपान्वित देखि ठाकुर लक्ष्मन * ब'लिव कतेक मत करिल भर्त्सन
साधिले आपन कर्म्म करिया मित्रता * रामेर कर्म्मेर काले कारिले खलता
सुग्रीव ब'लेन राम करिया मितालि * पाठाइला लक्ष्मनेरे देन गालागालि
अपराध नाहि करि कारे मोर डर * केन कोप करेन लक्ष्मन धनुर्धर
करियाछि मित्रता, नहे से अप्रमाण * राखिवारे मित्रता कि हाराइब प्राण
त्रिलोक विजयी से रावण महावीर * याहार भयेते सव देवता अस्थिर
ताहार सहित युद्ध नर कि वानर * आसिवेक पुनः प्राण लइया कि धर
एखन फिरया जाउक स्वस्थाने लक्ष्मन * आणु पाछु जाहा हवे, ब'लिव तखन
महामंत्री हनूमान अति तीक्ष्णमति * कहेन हितोपदेश सुग्रीवेरे प्रति
स्वयं विष्णु रघुनाथ कमललोचन * हेन वाक्य ब'ल केन ना बुझि कारन
याँहार प्रसादे तुमि पाइले राजत्व * ताँहाके एमत ब'ल, हयेछे कि मत्त
रात्रि दिन कर तुमि श्रृंगार विलास * ना देख रामेर दुःख नाहि जाओ पाश
कुपित लक्ष्मण वीर आइलेन द्वारे * अविलम्बे जाओ राजा, साध गिया ताँरे
याँर बाणे त्रिभुवने केह नाहि आँटे * ताँर आज्ञा ना मानिले पड़िबे संकटे
आमि तव मंत्री जेइ, शुन महाशय * हित उपदेश ब'लि हइया निर्भय

---

१ प्रयोजन ।

जेहि सर बालि वीर अवसाना * बिन तेहि सरन, न तव कल्याना
राम दुर्दसा हीय विदारन * कातर शोक, न धीरज धारन
रत रनिवास रूपसी संगा * लाज न मत्त राज सुख रंगा
भय - लंकेस तजहु रघुनाथा * बचैं प्रान किमि लछिमन हाथा
इतै लखन, तरि सिन्धु दसानन *अबहिं लखन-सर किमि निस्तारन
सर-सौमित्र चलै छन माहीं * कपिगन प्रान निवारन नाहीं

दो० धारि वचन मम, प्रभु चरन, गहे नृपति कल्यान।
पावक साखी लीन, द्रुति, पुरहु काज भगवान ।। ३६ ।।

पालत सत्य सत्य - अनुयाई[1] * सत हित वन आये रघुराई
जिन रघुनाथ सत्य प्रतिपाला * हनेउ बालि सोइ राम भुवाला
राज प्रजा सुख जिनके काजा[2] * जिन बल छत्र-दण्ड सुखसाजा
सहस चतुर्दस दनुज सँहारे * तिन सायक तुम सहज बिसारे
लहु गति, भजि रामहिं तजि भोगू * बिन रघुनाथ न सद्‌गति जोगू
नृप सुनि पवनतनय - खरबानी[3] * कहेउ वचन तिनि मधुरस-सानी
आनहु लखन दीन आदेसू * नगर कीन सौमित्र प्रवेसू
दिव्यपुरी सुरपुरी समाना * लखि कपि-साज लाज[4] सुर माना

बालि हेन महावीर पड़े जाँर बाणे * ताँहार शरण लओ बाँचिबे पराणे
रामेर दुर्द्दशा शुनि बुक हय चिर * शोकेते कातर गति; नहेन सुस्थिर
परम सुन्दरी लैया घरे कर क्रीड़ा * राजभोगे मत्त थाक नाहि हय व्रीणा
रावणेर भये यदि रामेरे छाड़िबे * लक्ष्मनेर हाते तुमि केमन बाँचिबे
रावण सागर पारे, द्वारेते लक्ष्मन * लक्ष्मणेर बाणाग्निते मरिबे एखन
लक्ष्मणेर बाणे कारो नाहिक निस्तार * बधिते वानरगणे कि भय ताँहार
आमार बचन राख हबे तव हित * रामेर शरण लह नहे विपरीत
सत्य करियाछे तुमि अग्नि साक्षी करि * श्रीरामेर कार्य्य कर, चल त्वरा करि
सत्यवादी लोके करे सत्येर पालन * सत्येर कारणे राम आइलेन वन
जेइ राम आइलेन सत्य पालिवारे * तेंइ से रामेर वाणे बालि राजा मरे
तेंइ से पाइले तुमि छत्र नवदण्ड * तेंइ प्रजागन लैया कर राज्यखण्ड
चतुर्द्दश सहस्र राक्षस पड़े रणे * याँर बाणे ताँरे कि सामान्य बुझ मने
भोग छाड़, राम भज, पाइबे निष्कृति * रघुनाथ विना राजा आर नाहि गति
हनूमान निरपेक्ष सुग्रीवे सम्भाषे * मधुर बचने राजा हनूमाने तोषे
लक्ष्मणेते आनाइते करेन आदेश * लक्ष्मण भितर-गड़े करेन प्रवेश
इन्द्रपुरी समान देखेन दिव्य पुरी * देखिया वानर-सज्जा लज्जा पाय सुरी

१ सत्य पर चलने वाले २ कारण, बदौलत ३ खरी बात ४ देवता लजाते थे।

मञ्जु अटारिन्ह कान्ति विशेखा ※ लखन प्रविसि अन्तःपुर देखा
कपि निवास लछमन पग धारा ※ त्रसित निरखि कपि क्रोध अपारा
लखि सुग्रीव कीन सत्कारा ※ उमा[1] बाम दहिने उठि तारा
अस्तुति - लखन जोरि कर कीना ※ पाद्य अर्घ्य आसन पुनि दीना
कुपित लखन आसन जनि लयऊ ※ रक्त - नयन कपिपति सन कहेऊ
अगिनि सपथ[2] लै निजहित साधा ※ करि चातुरी मित्र हित बाधा
निसिदिन क्लेस सहत दोउ भाई ※ मत्त सदा सुधि तुमहिं न आई
केहि बल किष्किन्धा तुम पावा ? ※ केहि बल तारहिं रानि बनावा ?

दो० केहि बल बिछुरी नारि पुनि, उमा कीन अधिकार।
केहि प्रसाद कपिनाथ तुम, पायेउ सासन-भार ? ॥ ३७ ॥

राम सरल, निर्दय कपिराजू ※ विमुख सत्य, साधेउ निज काजू
जग दुर्लभ जस तोर मिताई ※ तुम सम सुहृद न जग कोउ पाई
तुमहिं निपाति अंगदहिं राजू ※ तबहिं बनै सीता कर काजू
धर्महीन कपि सत्य न राखा ※ यहिं सर-धनु पुरवहुँ अभिलाषा
किष्किन्धा करि खण्ड-विखण्डा ※ कतहुँ न त्रान निरखु कोदण्डा[3]
छत्र दण्ड दै बालिकुमारा ※ मम सर होय सबन निस्तारा

चतुर्द्दिके अट्टालिका शोभित प्रचुर ※ चलिलेन लक्ष्मन देखिया अन्तःपुर
गेलेन लक्ष्मन वीर भीतर आवासे ※ लक्ष्मनेर कोपे देखि वानर तरासे
देखिया सुग्रीव राजा उठिल सम्भ्रमे ※ डाइने उठिल तारा उमा उठि बामे
जोड़ हाते लक्ष्मणेरे करिल स्तवन ※ पाद्य अर्घ्य दिल राजा बसित आसन
कुपित लक्ष्मण वीर ना लय आसन ※ सुग्रीवेरे कहिलेन आरक्त नयन
तुमि जे करिले सत्य अग्नि साक्षी करि ※ उद्धारिते निज कार्य्य करिले चातुरी
रात्रि दिन क्लेश पाइ दुइ भाइ वने ※ वारेक ना कर तत्त्व, मत्त रात्रि दिने
पाइले काहार गुणे किष्किन्ध्या नगरी ※ पाइले काहार गुणे तारा कृषोदरी
पाइले काहार गुणे उमा निज नारी ※ काहार प्रसादे तुमि राज्य अधिकारी
सरल हृदय राम, तुमि हे निष्ठुर ※ साधिले आपन कार्य्य सत्य करि दूर
तोमार मित्रता येन त्रिभुवने थाके ※ आर येन हेन कर्म्म नाहि करे लोके
तोरे मारि अंगदेरे दिबे राज्यभार ※ अंगद हइते हबे सीतार उद्धार
अधर्म्मि वानर रे लंघिलि सत्य पथ ※ देख धनुर्ब्बाण, करि पूर्ण मनोरथ
एक बाणे मारि तोरे राखे कोन् जने ※ खण्ड-खण्ड किष्किन्ध्या करिब आजि रने
बाणे काटि सबारे करिब खण्ड-खण्ड ※ अंगदेर उपरे धराब छत्रदण्ड

---

१ उमा—सुग्रीव की स्त्री २ सौगन्ध, कसम ३ धनुष ।

सुनेउ बालि-बध धनु टंकारा * सोइ सर चाप करौं संहारा
बालि समय बीती[1] जन एका * तव कारन कपि मरहिं अनेका
जेहि पथ गयेउ बालि कपिराई * तेहि चलि मिलौ बन्धु उर लाई
धर्महीन-बध कतहुँ न पापा * लखु शठ! इत मम चाप प्रतापा
मम सर बज्र करै तव नासू * संग बालि सुग्रीव निवासू
दुष्ट दुराचारी कपि जेते * लहैं यमपुरी यहि छन तेते
धरा न कोउ कहुँ अस नर-नारी * दै भरोस पुनि पाँव पछारी
जन्म-जन्म तव पुण्य कपीसा * तोहिं भरि अंक लीन जगदीसा
स्वयं विष्णु रघुपति के चरना * दयानाथ तोहिं दीन्हेउ सरना
तुम नृप, बालि-मरन, सत हेतू * दया असीम राम गुणकेतू

दो० लखन कोप लखि बढ़त अति, उर कपीस भयभीत।
विकल वेगि पद लीन गहि, तारा कहेउ विनीत ॥ ३८ ॥

अग्रज-मित्र[2] उचित कछु माना[3] * जेठ समुझि समुचित सन्माना
राम सुकण्ठ सखा जग जाना * उचित न इमि तिन कर अपमाना
क्षमहु राजसुत! होहु सधीरा * राम-काज तत्पर कपि वीरा
दूर देश गिरि सागर पारा * वानर जहँ निवसत संसारा

बालिबधे शुनियाछ धनुक टंकार * सेइ धनु सेइ बाणे करिब संहार
वालिराजा केवल मारिल एक जन * तोर दोषे मरिबेक यत कपिगन
देखियाछ बालिराज गेल जेइ बाटे * सेइ बाटे थाक गिया भायेर निकटे
मारिब अधर्म्मि तोरे, नाहि ताहे पाप * हेर बाण एड़ि एइ, देखह प्रताप
प्राण लब आजि तोर बज्र सम बाने * एकत्र हइया जाक भाइ दुइ जने
आरे दुष्ट वानर पापिष्ट दुराचार * एखनि पाठाइ तोरे देख यमद्वार
पृथिवीते हेन कार्य्य के कोथाय करे * आगे दिय भर'सा पश्चाते थाके दूरे
राम मित ब'लिया दिलेन कोल तोरे * कत पुण्य करे छिलि जन्म-जन्मान्तरे
स्वयं विष्णु रघुनाथ करिलेन दया * तेंइ तोरे श्रीराम दिलेन पद-छाया
गुणेर सागर राम, दयार नाइ सन्धि * बालि मारि राज्य दिल सत्य हये बन्दी
लक्ष्मणेर महाक्रोध वाड़िते लागिल * त्रासेते सुग्रीव राजा चिन्तित हइल
त्वरा करि कातरा उठिया तारा रानी * लक्ष्मणेर पाये धरि ब'लिया मृदुवाणी
ज्येष्ठेर हइले मित्र हय से गर्व्वित * ज्येष्ठेर समान तार मानिते उचित
सुग्रीव रामेर मित्र जगते विदित * एत तिरस्कार प्रभु, ना हय उचित
क्षमा कर राजपुत्र हओ तुमि स्थिर * राम-कार्य्य करिबेक सकल कपि वीर
दूर देशे पर्व्वतेते समुद्रेर पारे * जेखाने वानर यत आछे ए संसारे

१ वीत गई २ वड़े भाई राम का मित्र ३ आदर।

धावहिं सकल पाय सम्बादू ❋ शमन लखन प्रभु ! तजिय प्रमादू
तबहुँ न थिर जनि क्रोध विहीना ❋ केहु विधि स्वर्ण पलँग आसीना
रानि विनय सुस्थिर सौमित्रा[1] ❋ कृत्तिवास किय गान पवित्रा

सुग्रीव-लक्ष्मण कथोपकथन

कण्ठ सुकण्ठहिं सुरभित हारा ❋ तजि कपीस सो भूतल डारा
सिंहासन तत्क्षण तजि धावा ❋ बहुकर जोरि लखन-गुन गावा
छिना-राजु लहि राम-प्रसादा ❋ दिन-दिन सम्पति बढ़ति अगाधा
स्वयं बिष्ण रघुपति अवतारू ❋ शोध[2] न सम्भव तिन उपकारू
सिय-उद्धार शक्ति-रघुनाथा ❋ केवल मैं निमित्त तिन साथा
तजि प्रभु-काजु, रहेउँ यहि भाँती ❋ क्षमहु सदोष जानि कपि जाती
मैं पशु अधम करहुँ बहु दोषू ❋ राम-दास प्रिय-प्रति जनि रोषू
बोले लखन सुनहु कपिराई ❋ राम-काज करि सुकृति[3] कमाई
चहुँ जय, किये राम हित कर्मा ❋ धर्म लोप नतु बढ़इ अधर्मा
दो० सतवादी ह्वै सत्य धरु, सत्य बँधे दोउ मीत ।
राम निबाहेउ सत्य निज, तुम कस करत अनीत ॥ ३९ ॥

सम्बाद करिया शीघ्र आनिबे सबारे ❋ सम्बर सम्बर क्रोध लक्ष्मण आमारे
तथापि श्रीलक्ष्मणेर कोप नाहि टुटे ❋ बसाइल यत्न करि तारा स्वर्णखाटे
तारार विनय वाक्य सुस्थिर लक्ष्मण ❋ कृत्तिवास विरचित गीत रामायण

सुग्रीवेर सहित लक्ष्मणेर कथोपकथन

सुगन्धि पुष्पेर माला सुग्रीवेर गले ❋ सेइ माला सुग्रीव फेलिल भूमि तले
सिंहासन छाड़िया उठिल तत छण ❋ जोड़ हाते लक्ष्मणेर करिछे स्तवन
हाराइया राज्य पाइ रामेर प्रसादे ❋ तोमार प्रसादे बाड़िलाम सम्पदे
हेन रघुनाथ स्वयं विष्णु अवतार ❋ कार शक्ति साधिवेक श्रीरामेर धार
सीता उद्धारिबे राम आपन शक्तिते ❋ जाइबे केवल आमि ताँहार सहिते
ना करिया राम कार्य्य बसे आछि घरे ❋ वानर जातिर दोप लागे क्षमिवारे
पशुजाति कपि आमि, कत करि दोष ❋ सेवक-वत्सल राम नाहि करे रोष
लक्ष्मण ब'लेन, शुन सुग्रीव राजन ❋ रामकार्य्य करि कर पुण्य उपार्ज्जन
राम-कार्य्य करिले सर्वत्र हय जय ❋ ना करिले धर्म्म-लोप, अधर्म्म-सञ्चय
सत्यवादी हैले करे सत्येर पालन ❋ मने कर करियाछ सत्य दुइ जन
श्रीराम आपनि सत्ये हइयाछेन पार ❋ तुमि सत्ये बद्ध आछ, अधर्म्म अपार

१ लक्ष्मण २ बदला, उद्धार ३ पुण्य ।

राम-विषन्न[1] निरखि, कटुबानी ❋ कहेउँ तुमहिं बहु अपयश-खानी
क्षमहु कपीस करहु परिहारा[2] ❋ कुवचन तुमहिं न शिष्टाचारा
सम्मानित - सन धर्म - अलापू ❋ उचित न तिन सन मन्द प्रलापू
समुचित कर्म करहु धरि धर्मा ❋ राम-काज करि फलहिं सुकर्मा
लखन दीन बहु हित - उपदेसू ❋ कृत्तिवास कृत गान बिसेसू

सुग्रीव द्वारा कटक सञ्चय

कह सुग्रीव बेगि हनुमाना ❋ आनहु कटक जितै कपि नाना
हिम, सुमेरु, मन्दर, विन्ध्याचल ❋ रैवत, उदयाचल, अस्ताचल
करहु घोष चहुँ मम आदेसू ❋ जुरैं बेगि कपि जो जेहि देसू
देस - बिदेस दूत चहुँ धावैं ❋ दस दिन मध्य सकल जुरि आवैं
जो तजि अवधि[3] विलंब लगावैं ❋ मारत तिनहिं केस धरि लावैं
अन्य उपाय जदा अनुसरहीं ❋ बाँधि जँजीरन प्रस्तुत करहीं
मम अधीन छिति स्वर्ग पताला ❋ समिटहिं अखिल कीस यहि काला
कोप कपीस प्रकम्पित वानर ❋ आनन[4] कपिन चले बल-आगर
अनुशासन लहि मारुति[5] टेरे ❋ तीस कोटि वानर चहुँ प्रेरे

रामेर कातर देखि ब'लेछि कर्कश ❋ तोमार विरूप ब'ला आमार अयश
क्षमा कर कपीश्वर, करि परिहार ❋ तोमाके दुर्व्वाक्य ब'ला नहे शिष्टाचार
मान्य लोके मन्द कथा नहे उपयुक्त ❋ मान्य सह आलाप करिबे धर्म्मयुक्त
धर्म्म राख, कर्म्म कर, ये हय विहित ❋ राम कार्य्य करिले हइबे सब हित
हित उपदेश वहु बुझान लक्ष्मण ❋ किष्किन्ध्या काण्डेते गीत कृत्तिवास गान

सुग्रीवेर कटक-सञ्चय

वेलिल सुग्रीव राजा करिया आह्वान ❋ वानर-कटक झाट आन हनूमान
हिमालय सुमेरु मन्दर आदि करि ❋ विन्ध्याचल रैवत उदय अस्त गिरि
सर्व्वत्र घोषणा देह आमार आज्ञाय ❋ यथा जे वानर थाके आइसे त्वराय
पाठाओ हे दूतगणे देश देशान्तरे ❋ दश दिन मध्ये येन आइसे सत्वरे
इहाते विलम्ब जेइ करिबे वानरे ❋ प्रहारिया आनिबे ताहार चूले धरे
अन्यमत करिबे इहाते जेइ जन ❋ आनिबे ताहारे करि निगड़े बन्धन
स्वर्ग मर्त्य पाताले आमार अधिकार ❋ कोथाओ ना थाके हेन वानर सञ्चार
सुग्रीवेर कोपेते वानर सब काँपे ❋ कटक आनिते चले अतुल प्रतापे
हनु जान बाहिरे हइया उपस्थित ❋ त्रिश कोटि वानर पाठाय चारि भित

---

१ दुखी २ भूल जाओ ३ मियाद ४ लाने के लिए ५ हनुमान।

कीस-कटक छाये छिति-गगना ※ टीड़ी-दल सम जासु न गणना
पच्छिम नल पूरब भट नीला ※ पुनि सम्पाति दखिन बलशीला

दो० महावीर[1] विक्रम अतुल, उत्तर दिसि पग दीन ।
सुभट चारि दिसि संग कपि, लक्ष-लक्ष लौं लीन ॥ ४० ॥

खौखियाहिं गर्जहिं डग भरहीं ※ उछलहिं फाँदि उधुम बहु करहीं
डगमग कूर्म, शेष शिर हाला ※ चहुँ प्रकम्प भुइँडोल पताला
पुनि निनाद[2] किय बालिकुमारा ※ कपिगन गमन हुकुम अनुसारा
दसदिसि मध्य समिटि सब आवैं ※ करि विलंब निज प्रान गवावैं
प्रानन मोह साध मन माहीं ※ आनहिं कपिन वेगि मम पाहीं
कपिगन अंगद सकल पठाये ※ राजपुरी हित निजहिं बचाये
कीस कोटि दस चहुँ दिसि छाये ※ सील[3] न, पकरि जहाँ जेहि पाये
लख-लख कीस दिवस दस माहीं ※ धरा गगन चहुँ ओर लखाहीं
किष्किन्धा कोलाहल नाना ※ नृप फल फूल नजर सन्माना
कटक देखि कपिपति उर आना ※ कार्य-सिद्धि लच्छन अनुमाना
अखिल सैन-कपि नगर पधारी ※ अगणित कटक अतिव भयकारी
किष्किन्धा कपि-कटक विरामा ※ चले सुकण्ठ जहाँ प्रिय रामा

मेदिनी आकाश जुड़ि चले कपिसेना ※ जेन पंगपाल जाय, ना हय गणना
चलिल वानर गण देश देशान्तरे ※ पूर्व्वदिके चलि गेल नील नाम धरे
पश्चिमे चलिया गेल नल महामति ※ दक्षिण दिकेते गेल आपनि सम्पाति
हनूमान महावीर महा पराक्रम ※ उत्तर दिकेते जान करिया विक्रम
एकैक जनार संगे चले दश लाख ※ महा शब्दे चले सबे करे हाँक डाक
हुप हाप लम्पे झम्पे कम्पे वसुमती ※ अति कष्टे धरे धरा कूर्म्म नागपति
तर्ज्जिया गर्ज्जिया ब'ले वालिर्कुमार ※ यात्रा कर कपिगन आज्ञा अनुसार
दश दिवसेर मध्ये आनिवे सकले ※ प्राणदण्ड करिव हे विलम्ब हइले
बाँचिवे बलिया यदि साध थाके मने ※ त्वरा धरि आनिवे सकल कपिगणे
पाठाइल सकलेरे वालिर नन्दन ※ एकेला रहिल राजवाटीर रक्षण
हइल से दशकोटि कपि आगुसार ※ यारे पाय तारे आने नाहिक विचार
जुड़िया आकाश तुमि कपि झाँके झाँके ※ दशदिने आइसे सकल लाखे लाखे
किष्किन्ध्यार मध्येते लागिल कोलाहल ※ सुग्रीवेर भेट आनि दिल फुल फल
सैन्य देखि सुग्रीव भावेन मने मने ※ कार्य्यसिद्धि हइवेक, वुझि अनुमाने
आइल कटक सव किष्किन्ध्या भितर ※ असंख्य वानर सेना अति भयंकर
किष्किन्ध्याय प्रवेश करिल कपिगणे ※ चलिल सुग्रीव राजा मित्र सम्भाषणे

१ हनुमान २ गर्जन ३ मुरौवत ।

कहैं सैन सों इमि कपिकेतू * चलहिं सुहृद जहँ मम रघुकेतू
राम-दरस उपजी मोंहि प्रीती * कहेउ लखन प्रति वचन विनीती
राम विष्णु तिन तुम सहचारी * चतुर्दोल प्रभु! करहु सवारी
चतुर्दोल करि तुमहिं असीना * बेगि सुहृद-दरसन मन कीना

दो० लखनलाल तव चरन गहि, विनवहुँ साध[1] ललाम।
सदा रहै मन प्रीति, उर, बसैं लखन - श्रीराम ॥ ४१ ॥

दुइ जन चढ़ि चन्दोल सुहाये * चौदिसि दासन चवँर डुलाये
पञ्च प्रकार बाजने बाजे * शंखनाद चहुँ घन रव[2] गाजे
अति रव सुनि रघुबीर विचारे * मनहुँ मित्र सुग्रीव पधारे
जस-जस राम-निकट नियराने * मित्र-दरस उर प्रभु हरषाने
तजि चन्दोल धरनि कपिनाथा * माल्यवान गिरि जहँ रघुनाथा
बन्देउ राम - चरन अनुरागी * कीन दण्डवत कपि बड़भागी
आसन दिव्य समादर दीन्हा * कुशल प्रश्न तिन रघुपति लीन्हा
कह सुग्रीव कुशल सब भाँती * नाथ-कृपा सब विपति निपाती
बालि निवारि दीन मोंहि राजू * मम सिर सत्य-भार प्रभु आजू
प्रभु-प्रसाद आसन अधिकारा * दण्ड-छत्र चहुँ कपिगन धारा

सुग्रीव आपन ठाटे वलिल वचन * मित्र सम्भाषणे आजि करिब गमन
सुग्रीव करिते जाय श्रीराम दर्शन * लक्ष्मणेर प्रति व'ले विनय वचन
विष्णु अवतार तुमि, रामेर सादेर * आपनि चड़ह प्रभु, चतुर्द्दोलोपर
तबे चतुर्द्दोले आमि चारि बारे पारि * मित्र दरशने चल जाह त्वरा करि
तोमार चरणे मोर एइ निवेदन * श्रीराम-लक्ष्मणे जेन सदा थाके मन
चतुर्द्दोले तखन चड़ेन दुइजन * चारिभिते चामर ढुलाय दासगण
पञ्च शब्द बाद्य बाजे करे शंखध्वनि * कोलाहल करे सबे महाशब्द गणि
कलरव शुनिया चिन्तेन रघुमणि * आमा सम्भाषिते आसे सुग्रीव आपनि
निकट हइल आसि सुग्रीव राजन * मने मने भावे वीर मित्र दरशन
चतुर्द्दोल हैते नामे राम विद्यमान * चलि जान सुग्रीव पर्व्वत माल्यवान
रामेर चरण बन्दे करिया प्रणति * जोड़ हाते दाण्डाइल सुग्रीव भूपति
आदरे श्रीराम तारे करि सम्भाषण * निकटे वसिते दिव्य दिलेन आसन
करिलेन मंगल जिज्ञासा रघुवर * सुग्रीव विनये तार करिछे उत्तर
हरियाछ राम, मम विपद सकल * तोमार प्रसादे मिता सकल मंगल
बालिके मारिया मोरे दिले राज्यभार * सत्ये वद्ध हइयाछि छारि तव धार
तोमार प्रसादे पाइलाम राज्यखण्ड * सकल वानरगण धरे छत्र दण्ड

---

१ अभिलाष २ शव्द।

तुम समर्थ काटहु सिय-बन्धन * मैं निमित्त अनुचर, रघुनन्दन!
भूमण्डल जेते कपि यूथा * बसत श्रृंगगिरि कीस-वरूथा
आयसु पाय सकल ते आये * कोटि, वृन्द, अर्बुद चहुँ छाये
सेन दुर्दमन कीस अपारा * जो मन धरहिं न रोकनहारा
तीन कोटि योजन त्रयलोका * प्रविसि लखैं दुर्जय कपिलोका
सिर्जेउ बिधि छिति स्वर्ग पताला * खोजहि सिय कपि कटक विशाला

दो० सीतापति के चरन महँ, जाकी भक्ति अपार।
तेहि समीप का बापुरो! काज सिया - उद्धार ॥ ४२ ॥

प्रभु-कर स्वयं सिया निस्तारा * कहा कहौं, मैं दास तिहारा
भजति इन्द्र, सुर; सृष्टि सवाँरी * तव संकेत भानु नभचारी
तुम सोवत, जग सोवत सारा * तव चेतन सचेत संसारा
जन्म-जन्म तप बिधि मन लावा * तबहुँ न नाथ-दरस तिन पावा
सोइ पद-पद्म नयन निज देखी * धन्य-धन्य मम जन्म विशेषी
वानर जाति कहाँ अति हीना * प्रभु करि दया मित्रपद दीना
सिया शोधि लावहिं प्रभु पाहीं * तबलौं असन[1] शयन रुचि नाहीं
किष्किंधा न राज, रघुनाथा * प्रभु प्रसन्न, उर लिय कपिनाथा

सीता उद्धारिबे तुमि आपनार गुणे * उपलक्ष केवल थाकिब तव सने
यतेक वानर थाके पृथिवी उपरे * यतेक वसति करे पर्वत शिखरे
से सकल आसियाछे आमार सम्बादे * कोटि-कोटि वृन्द-वृन्द अर्व्वुद अर्व्वुद
दुरन्त वानर सैन ना हय गनन * इहारा यामने करे, के करे लंघन
तिन कोटि योजनेर पथ त्रिभुवन * प्रवेशिब सर्व्वत्र दुर्ज्जय कपिगन
स्वर्ग मर्त्त्य पाताल सृजन विधातार * जेखाने थाकुक सीता, करिब उद्धार
तोमार चरणे भक्ति थाकिले आमार * कोन कार्य्य गनि आमि सीतार उद्धार
आमि कि बलिब प्रभु तोमार चरणे * उद्धारिबे तुमि सीता आपनार गुणे
इन्द्र आदि देवगण तोमार धेयाय * गगने उदय रवि तोमार आज्ञाय
तोमार सृजने सृष्टि ए तिन भुवन * तोमार निद्राय निद्रा, चेतने चेतन
कत शत जन्म ब्रह्मा तपस्या करिल * तबु तव पाद पद्म देखा न पाइल
हेन पाद पद्म देखि प्रत्यक्ष नयने * आपनारे धन्य करि मानि एत दिने
अमित वानर जाति कि ब'लिते पारि * मित्र व'ले आमारे से दया आपनारि
यावत् ना हय प्रभु सीता उद्धारन * तावत् आमार नाहि शयन भोजन
सीतारे आनिया दिले तोमार गोचरे * तबेत करिब राज्य किष्किन्ध्यानगरे
सन्तुष्ट हइल राम कमललोचन * सुग्रीवेरे उठिया दिलेन आलिंगन

---

१ भोजन।

अकथ भाग्य सुग्रीव सुहावा * वन-वानर प्रभु हृदय लगावा
अतुल पुण्यभागी कपिराया * जिन प्रति दयासिंधु किय दाया
पुनि रघुवीर-बैन सुखकारी * तुम समान मम को हितकारी
अचरज, हरत न रवि अँधियारा * अचरज मोंहि न सिय-उद्धारा
जनि अपूर्व, घन बरसहिं वारी[1] * तुम अपूर्व मोंहि मित्र! सुखारी
गिरि दोउ सुहृद करहिं सम्भासा[2] * कपि छाये चहुँ धरनि-अकासा
स-सहसकोटि शतावलि आये * सविता[3] गगन धुंधि[4] महँ छाये

दो० गन्धमादनाधिप शरभ, पुनि गवाक्ष तहँ आय।
वानर कोटि पचास लै, रहे गगन-छिति छाय ॥ ४२ ॥

कज्जल धूम्र सरिस धूम्राक्षा * तीस कोटि कपि सह नीलाक्षा
सहस कोटि वानर लै साथी * घिरी धरनि चहुँ सैन-प्रमाथी
पथ दस प्रहर सैन विस्तारा * सत्तर योजन अंग प्रसारा
बसति हिंगु गिरि हिंगुल रंगा * मरकट[5] कोटि पचास विहंगा
मलयाचल केसरी निवासू * सत्तर कोटि संग कपि जासू
पूर्व्व सैनपति सुभट विनोदा * सहस कोटि लै चलति समोदा
आयेउ धूम्र सुकण्ठहिं शाला[6] * कटक गगन लौं जिमि घनमाला

सुग्रीवेर भाग्य कथा के कहिते पारे * श्रीराम दिलेन कोले बनेर बानरे
सब हैते सुग्रीवेर अधिक कपाल * यार प्रति सदा राम परम दयाल
श्रीराम ब'लेन शुन सुग्रीव सुहृद * तुमि विना आमार के करिबेक हित
अपूर्व्व ना गणि सूर्य्य हरे अन्धकार * अपूर्व्व ना मानि आनि सीतार उद्धार
अपूर्व्व ना गणि मेघ बरिषये जल * तोमारे अपूर्व्व मित्र, जानि हे केवल
दुइ मित्र पर्व्वते करेन सम्भाषण * आकाश मेदिनी जुड़ि आसे कपिगण
सहस्र कोटि वानरे एलो शतावलि * यार सैन्य चलिले गगने लागे धूलि
गवाक्ष शरभ गय से गन्धमादन * वानर पञ्चाश कोटि संगे आगमन
अंजनिया बड़ धूम्र आइल धूम्राक्ष * त्रिश कोट कपि लैया आसे से नीलाक्ष
वानर सहस्रकोटि सहित प्रमाथी * आइल आपन सैन्य आच्छादिया क्षिति
प्रमाथी वानर बले क्षणे यदि नड़े * दश प्रहरेर पथ सैन्ये आड़े जोड़े
सत्तरि योजन वीर आड़े परिमान * सकले करये यार शरीर बाखान
हिंगुलिया पर्व्वते जे हिंगुलिया रंग * वानर पंचाश कोटि सहित विहंग
वानर सत्तरि कोटि लइया केशरी * जाहार बसति स्थान से मलयगिरि
पूर्व्व हैते आइल विनोद सेनापति * वानर सहस्र कोटि ताहार संहति
धूम्राक्ष आइल धूम्र सुग्रीवेर श्याला * गगन जुड़िया ठाट येन मेघमाला

---

१ जल २ वातचीत ३ सूर्य ४ गर्द ५ वन्दर ६ साला।

गौर वर्ण छबि जिन, सम्पाती ❋ भाजत लखि रिपु, अस तेहि ख्याती
वैद्य सुषेन श्वसुर नृप केरे ❋ तीन करोर वृन्द कपि प्रेरे
जाम्बवान लै भल्लुक नाना ❋ दुर्जय महा सुभट हनुमाना
पुनि युवराज सुबालिकुमारा ❋ सहस कोटि जिन कीस अपारा
कपि शत लक्ष कोटि इक जाना ❋ शतक कोटि कपि वृन्द समाना
शतक करोर वृन्द सम अर्बा ❋ शतक कोटि अर्बुद पुनि खर्बा
महाखर्व, शत कोटिन खर्बा ❋ तिन शत कोटि शंख कह सर्बा
शंखन महाशंख बुध गनहीं ❋ पदम महाशंखहिं अनुसरहीं
महापद्म पुनि, सिन्धु बहोरी ❋ तिन मिलि महासिन्धु सक जोरी

दो० महासिन्धु अक्षौहिणी, अक्षौहिणी अपार ।
क्रम सों सब शत कोटि सम, अगणित पार-अपार[1] ॥
एक मास बिस्तार पथ, गिरि नद नदी सुघेरि ।
सैन विशाल अनन्त प्रभु, रहे उल्लसित हेरि ॥ ४४ ॥

सीताखोज-हित वानर-सेना का पूर्वदिशा-प्रस्थान

बोले राम, तात! चहुँ देसू ❋ पठवहु सैन सीय उद्देसू[2]

सम्पाति वानर एल, गौरवर्ण धरे ❋ देखिले विपक्ष जाय पलाइया डरे
आइल सुषेण वैद्य राजार श्वशुर ❋ तिन कोटि वृन्द ठाट आइल प्रचुर
भल्लगण सहित आइल जाम्बुवान ❋ दुर्ज्जय आइल महावीर हनूमान
युवराज आइल से बालिर कुमार ❋ वानर सहस्र कोटि जार परिवार
शत लक्ष वानरेते एक कोटि जानि ❋ शत कोटि वानरेते एक वृन्द गनि
शत कोटि वृन्दे हय अर्व्बुद गनन ❋ शत कोटि अर्व्बुदेते खर्व्व निरूपन
शत कोटि खर्व्व एक महाखर्व्व गनि ❋ शत कोटि महाखर्व्वे एक शंख जानि
शत कोटि शंख महाशंखेर गनन ❋ शत कोटि महाशंख पद्म निरूपन
शत कोटि पद्मे एक महापद्म गनि ❋ शत कोटि महापद्मे सागर बाखानि
शत कोटि सागरे महासागर जानि ❋ शत कोटि महासागरे एक अक्षौहिनी
शत कोटि अक्षौहिणीते एक अपार ❋ अपारेर अधिक गणना नाहि आर
नद नदी व्यापी ठाट भांगिल पर्व्वत ❋ सर्व्व ठाट जुड़ि गेल मासेकेर पथ
पृथिवी जुड़िल सैन्य नाहि दिक् पाश ❋ कटकेर चाप देखि रामेर उल्लास

सीतान्वेषणार्थं सुग्रीव कर्त्तृक पूर्व्वदिके वानर सैन्य प्रेरण

श्रीराम ब'लेन मिता, सैन्य नाना देशे ❋ पाठाइया देह शीघ्र सीतार उद्देशे

1 'अपार' के आगे संख्या गिनी नहीं जा सकती 2 खोज में ।

जेहि छन होय सिया-उद्धारा * तबहिं भार-मम तव निस्तारा
कपिपति राम - अनुज्ञा पाई * नाना दिसि चहुँ सैन पठाई
अर्ब खर्ब कपि सीमा नाहीं * केहु बिधि गिरि ऊपर न समाहीं
नृप, सेनिप[1] विनोद दिय भारा * पूरुब दिसि कर्तव्य तुम्हारा
सहस कोटि बानरन लैवाई * सीता खोज करहु तुम जाई
जे नद नदी मिलहिं यत देसू * खोजहु करि सर्वत्र प्रवेसू
पावन धाम पुण्य थल जेते * सहित कटक चलि हेरहु तेते
स्वर्गहिं जाय भगीरथ आनी * उतरहु पार गंग महरानी
तरि सरयू तप - पुण्य बिसेषी * कौशिक-भगिनि कौशिकी देखी
सुरभी[2] चरहिं गोमती तीरा * सो तरि दरस सरस्वति-नीरा
मलय कोकनद कश्यप देसू * मगध जनकपुर करहु प्रवेसू
ब्रह्मपुत्र मन्द्राचल जाई * कर्नाटक शकद्वीप सुहाई
भूमि किरात कुतूहल ख्याती * अद्‌भुत निवसहिं नाना जाती
उठे लम्ब दुइ कर्ण विरूपा * कनक चम्प सम वर्ण[3] अनूपा
ताम्र केश मुख गोल लखाहीं * चलि पद एक, थाह बल नाहीं

तुमि यदि जानकीर करह उद्धार * तवे त आमार ठाँइ सत्ये हओ पार
श्रीरामेर ठाँइ राजा ल'ये अनुमति * नाना दिके पाठाइल सैन्य सेनापति
अर्ब्बुद खर्ब्बुद कपि, सीमा नाहि पाइ * पर्व्वते उपरे बसिते नाहि ठाँइ
सुग्रीव विनोद सेनापति प्रति भने * पूर्व्व दिके जाओ तुमि सीता अन्वेषने
वानर सहस्र कोटि तोमार भिड़न * सीता अन्वेषणे तुमि करह गमन
नद नदी मिलिवे मिलिवे यत देश * सेइ सेइ स्थाने गिया करिबे प्रवेश
यत यत पुण्य देश देख पुण्य स्थान * सकल वानर लैया करिबे पयान
स्वर्ग हैते गंगाके आनिल भगीरथे * गंगादेवी पार हवे कटक सहिते
तरिह सरयू नदी पुण्य तरंगिनी * कौशिकी तरिह विश्वामित्रेर भगिनी
दुइ कूले गरू चरे मध्येते गोमती * गोमती हइया पार पावे सरस्वती
अपूर्व्व मलय देश, देश कोकनद * कश्यपेर देश जाओ जनक मगध
ब्रह्मपुत्र तार संगे करिह प्रवेश * मन्दर पर्व्वते जेउ किरातेर देश
जाइबे कर्णाट देश आर शाक द्वीपे * किरात जातिरा आछे कि अद्‌भुते रूपे
कनक चाँपार मत शरीरेर वर्ण * उठान खानार मत धरे दुइ कर्ण
थाला हेन मुखखाना ताम्रवर्ण केश * एक पदे चले पथ, ब'लेते विशेष

---

१ सेनापति २ गायें ३ रंग।

दो० बसति नीर, मुख मीन सम, मिलत मनुज धरि खाहिं ।
कहत व्याघ्र-नर, ताप पुनि सहन किरातन नाहिं ॥ ४५ ॥

जदि सिय कतहुँ किरातन-डेरा * हेरेउ शोध लंकपति केरा
पार किरात ऋषभ गिरि परहीं * सुरगन आय केलि नित करहीं
सदा पधारत तहँ सुरनाथा * तहँ सिय सहित लखेउ दशमाथा
क्षीर सिन्धु पूरुब चलि मिलहीं * पुनि तेहि पार श्वेत गिरि अहही
श्वेत नाग[1] तहँ सहस फनीसा * धारे सहस फनीस गिरीसा[2]
फन सहस्र मणि सहस अनूपा * मणि अलोक निसि दिवस सरूपा
क्षीर सिन्धु सों धवलित भूतल * श्वेत श्वेतगिरि किय नभमण्डल
मणिधर श्वेत सहस फनधारी * पूरुब धन्य तीनि उजियारी
दरस अनन्त[3] करहिं सब लोगू * बन्दि गिरीश सधै सब जोगू
पूरुब तासु उभयगिरि-श्रृंगा * ताल विटप चहुँ सुवरन रंगा
मनि मानिक गुच्छन तर झूमी * डार कनक छबि परसत[4] भूमी
शिखर-शिखर चहुँ हेरहु जाई * कहाँ दनुजपति कहँ सियमाई
उभयाचल न मिलै उद्देसू[5] * कालोदक गिरि करिय प्रवेसू
कज्जल सलिल कालसर तीरा * कोटि सर्प-सर्पिन तेहि नीरा

जलेर भितरे बैसे मत्स्यवत् मुख * मानुष धरिया खाय आइले सम्मुख
मनुष्य-व्याघ्र ब'लिया ताहादेर ख्याति * आतप सहिते नारे किरातेर जाति
सीता लये थाके यदि किरातेर घरे * यत्न करि चाहिउ तथा लंकेश्वरे
ऋषभ पर्व्वते जावे किरातेर पार * देवगण करे केलि नित्य अवतार
सर्व्वकाले आइसे तथाय पुरन्दरे * यतने चाहिउ तथा सीता लंकेश्वरे
तारपूर्व्वदिके जावे क्षीरोद सागर * श्वेतगिरि देखिवेसे क्षीरोद उपर
श्वेत नाग धरे तथा सहस्र शिखर * सहस्र फणाय आछे देव महेश्वर
सहस्र फणाय आछे सहस्रेक मणि * मणिर आलोक तुल्य दिवस रजनी
क्षीरोद सागर करे पृथिवी धवल * शेत गिरि श्वेत करे गगनमण्डल
श्वेत नाग धरे शिरे सहस्रेक फना * पूर्व्वदिके धन्य करे सेइ तिन जना
सकले वन्दिवे से अनन्त महाराज * महेश्वर वन्दि गेले सिद्ध हवे काज
उभय पर्व्वते जावे तार पूर्व्व दिके * स्वर्ण-तालवृक्ष तथा आछे चारियुगे
मणि माणिक्येते तार बाँधियाछे गुँड़ि * कनक-रचित तार शोभित बागुड़ि
देखिओ वानरगण शिखरे शिखर * अन्वेषण कर तथा सीता लंकेश्वर
यदि तथा उभयेर ना पाओ उद्देश * कालोदक पर्व्वते करिओ प्रवेश
से पर्व्वते आछे सरोवरे काल जल * तिन कोटि सर्पी सर्प थाके सेइ स्थल

---

१ श्वेत पर्वत २ महादेव ३ नाग देवता के ४ छूती थी ५ पता ।

सकल विनास जदा फुफकरहीं * भयबस दूरि सुरासुर रहहीं
गुहा नदी नद पर्वत जाई * देखहु कितै दुष्ट दनुराई

दो० मिलै न तहँ, पुनि अनुसरहु, लोहित गिरि अवलोकि।
कौतुक! योजन तीनि नद, रहेउ विषम पथ रोकि ।। ४६ ।।

तेहि पूरुब जहँ लोहित सागर * बसत दनुज दुर्जय बल-आगर
लोहित वर्ण अगम तहँ नीरा * सेमर बिटप पुरातन तीरा
सुबरन गाछ गात चहुँ सूला[1] * गुच्छन लदे कनक फल-फूला
जल सों दनुज बिटप चढ़ि आवैं * सुर सभीत, कोउ निकट न आवैं
समाचार तहँ सीय न पाई * प्राची-सिन्धु[2] लखहु पुनि जाई
द्वादश योजन तासु उतारा * सावधान कपि उतरहिं पारा
कनक उदयगिरि छबि किमि बरनी * भानु उदय धवलित किय धरनी
योजन दुइ शत लक्ष चलाई * तहँ रवि-किरन निमिष महँ छाई
मुनिगन तप रत यथा विधाना * बालखिल्य[3] अंगुष्ठ प्रमाना
उदय न रवि उदयाचल पारा * निश्चय तासु परे[4] अँधियारा
तेहि न दीख, नहिं ज्ञान विशेषी * लौटहिं कपि उदयाचल देखी

सर्पी यदि हाइ छाड़े, सर्व्वलोक मरे * तार काछे देव-दैत्य नाहि जाय डरे
नद नदी गिरि गुहा खुजिओ विस्तर * सेखाने मिलिते पारे दुष्ट लंकेश्वर
तथा यदि नाहि पाओ ताहार उद्देश * लोहित पर्व्वते गिया करिह प्रवेश
से पर्व्वते आछे एक वड़ चमत्कार * त्रियोजन नदी, ताहे विषम पाथार
तार पूर्व्वदिके आछे लोहित सागर * दुरन्त राक्षस आछे जलेर भितर
अगाध सलिल तार रक्त वर्ण धरे * चारियुगे एक वृक्ष आछे तार तीरे
सोनार शिमूल गाछ, सर्व्व गाय काँटा * सुवर्णेर फल फुल धरे गोटा गोटा
जल हैते राक्षसेरा चड़े तदुपरे * तार काछे देवगण नाहि जाय डरे
तथा यदि जानकीर ना पाओ उद्देश * पूर्व्व सागरेर तीरे करह प्रवेश
आड़े दीर्घ से सागर द्वादश योजन * सावधाने पार हवे सब कपिगन
उदयगिरिर सर्व्व अंग स्वर्णमय * पृथिवी उज्ज्वल करे सूर्य्येर उदय
तिन लक्ष दुइ शत योजनेर पथ * चक्षुर मिमिषे सूर्य्य करे गतायात
मुनिगण तप करे येमन विधान * बालखिल्य नामे मुनि विघत प्रमान
उदयगिरिर पूर्व्वे नाहि सूर्य्योदय * अन्धकारमय देश, जानिह निश्चय
से देश कखन नहे आमार गोचर * देखिय उदयगिरि फिरिबे वानर

१ काँटे २ पूर्वसागर ३ अँगूठे के बराबर आकार वाले बालखिल्य मुनि
४ उसके आगे।

एते देश अवधि इक मासा ❋ अधिक रुकहिं तिन होय विनासा
मास मध्य लौटहिं नहिं देसू ❋ परिजन सहित मरहिं निज दोसू
आयसु सीस सैन-कपि धारी ❋ सिय हित पूरुब दिसा सिधारी
कृत्तिवास कविमयी सुरसना ❋ सैनगमन - पूरुब छवि - रचना
तिन ओझा मुरारि कर नाती ❋ गिरा गान - प्रभुगुन प्रनिपाती

सीता-खोज हित वानर सेना का दक्षिण दिशा को प्रस्थान

दो० दच्छिन दिसि रावन बसत, सुग्रीवहिं भल ज्ञान ।
महावीर बलवीर बहु तहाँ कौन सन्धान ।। ४७ ।।

अंगद जाम्बवान मतिमाना ❋ पवनतनय हनुमत बलवाना
रम्भा ऋषभ कुमुद बलशीला ❋ पाँच प्रमुख सेनप नल-नीला
रहेंउ सचेत, कहेंउ कपिकेतू ❋ दच्छिन गमन करहु सिय हेतू
मारग देस नदी नद जेते ❋ गिरि कन्दर छानहु सब तेते
उत्तम अधम सकल चलि हेरी ❋ हयगिरि[1] जाय लखहु कावेरी
जहँ गौतमी नर्मदा कृष्णा ❋ लै सिय शोध निवारहु तृष्णा
सहस शिखर गिरि विन्ध्य विलोकी ❋ दिव्य फूल फल सर अवलोकी
लखि कलिंग उत्कल अनुसारी ❋ मलयागिरि विधि भली निहारी

जाइते उदयगिरि लागे एक मास ❋ मासेकेर बाड़ा हइले सबार विनाश
मासेकेर मध्ये ये वानर ना आइसे ❋ सवंशे मरिवे सेइ आपनार दोषे
वानर कटक सुग्रीवेर आज्ञा पाय ❋ सीतार उद्देशे तारा पूर्व्व दिके जाय
कृत्तिवास करिब कवित्वमय वाणी ❋ अद्भुत रचिल पूर्व्वदिकेर पाँचनी
कृत्तिवास पण्डित मुरारि ओझार नाति ❋ याँर कण्ठे विराज करेन सरस्वति

सीतान्वेषणे सुग्रीव कर्त्तृक दक्षिण दिके सैन्य-प्रेरण

दक्षिणे रावण बैसे, सुग्रीव ता जाने ❋ वड़-वड़ वीर पाँचे सेइ त दक्षिणे
बालिर कुमार पाँचे मंत्री जाम्बवान ❋ पवन नन्दन पाँचे वीर हनूमान
ऋषभ कुमुद पाँचे रम्भ योद्धापति ❋ नल नील पाँच जने मुख्य सेनापति
सुग्रीव ब'लेन सैन्य शुन सावधाने ❋ सीतार उद्देशे जाह तोमरा दक्षिने
यत नद-नदी देख यत देख देश ❋ यत यत गिरि आछे, करिवे प्रवेश
उत्तम अधम स्थाने करिह प्रवेश ❋ जेरूपे पाइते पार सीतार उद्देश
कृष्ण वेणी नदी जे नर्म्मदा गोदावरी ❋ जावे अश्वमुख गिरि नदी जे कावेरी
पाइया पर्व्वत विन्ध्य सहस्र शिखर ❋ नाना फल फुल तथा दिव्य सरोवर
परेते कलिंग देशे जाइवे उत्कल ❋ मलय पर्व्वत गिया देखिबे सकल

---

१ अश्वमुख पर्वत ।

शृंग महेन्द्र गिरीश विशाला * जहँ सुरनाथ रमत सब काला
दक्षिण तासु सिन्धु के तीरा * चन्दनबन सुख-गन्ध समीरा
चन्दन सुरभि पाँति बहुतेरी * सिन्धु पार छबि लंका केरी
उदधि-मध्य मैनाक सुहाये * जल सों सहस शिखर उठि आये
सहस शिखर चुम्बति आकासू * कञ्चन गिरि दस दिसा प्रकासू
सो दनुजी सिंहिका कराला * बरनत लोक विषम विकराला
दनुजी तहँ सिंहिका बखानी * सागर बीच बसति भयखानी
निसिचरि विकट धरित लखि छाया * ग्रसति संग शत जीव निकाया[1]

दो० सत्तर योजन बेंड़ पुनि दुइ शत लम्ब शरीर ।
अर्ध गात नभ, अर्ध जल, होयँ त्रसित जनि वीर[2] ॥ ४८ ॥

एक छलाँग सिन्धु के पारा * रहैं सचेत तबहिं निस्तारा
शत योजन तरि सागर पारा * रावन-लंकापुरी प्रसारा
सागर मध्य घिरी सो लंका * सुरन समीप जात अति शंका
सकल कोस करि सकल उपाई * हेरैं दसमुख कित सियमाई
जो तिन मिलै न तहँ उद्देसू * लौटि करैं पुनि विन्ध्य प्रवेसू
विश्कर्मा-कृत निर्मित देखी * सुबरनमय तहँ पुरी विशेषी

महेन्द्र पर्व्वते जावे अत्युच्च शिखर * सर्व्वक्षण थाकेन तथाय पुरन्दर
ताहार दक्षिणे जाह सागरेर तीर * चन्दनेर बन तथा सुगन्ध समीर
सुगन्धि चन्दन निरखिबे सारि सारि * सागरेर पारे जाब स्वर्ण लंकापुरि
मैनाक पर्व्वत आछे सागर भितर * सलिल हइते उठे तार सहस्र शिखर
सोनार पर्व्वते दशदिकेर प्रकाश * सहस्र शिखर उठे जुड़िया आकाश
सागरेर मध्ये आछे सिंहिका राक्षसी * विषम राक्षसी सेइ सर्व्वलोके घुषि
बिषम राक्षसी से छाया पाइले धरे * वार शत जीव-जन्तु गिले एके वारे
सत्तर योजन तनु आड़े परिसर * दुइ शत योजन दीर्घे उच्च कलेवर
अर्द्ध तनु जले थाके अर्द्धेक आकाश * ताहा देखि वीरगण ना पाइओ त्रास
सकल वानर तथा हइउ सावधान * एक लाफे सागर लंघिले हबे त्रान
सागर तरिबे सबे शतेक योजन * सागरेर पारे लंका तथाय रावन
चारिदिके सागर मध्येते लंकागड़ * देवगणेर गति नाइ लंकार निगड़
खूँजिबे लंकार मध्ये सीता लंकेश्वर * यत्न पुरःसरे तथा सकल वानर
तथा यदि उभयेर ना पाओ उद्देश * विन्ध्य गिरि मध्ये गिया करिबे प्रवेश
अन्वेषन करिह तथाय कपिगन * विश्वकर्म्मा कृत पुरी सोनार गठन

१ समूह २ वानर वीर उससे भय न खायँ ।

विश्कर्मा कृत कुम्भज-धामा[1] ❊ रत्न धातु गिरि विविध ललामा
शिखर-शिखर खोजहिं बलधारी ❊ कहँ दशमुख, कहँ सिया विचारी?
तहँ पुनि दरस न तिनकर पाई ❊ गवनहिं सुभट ऋषभ गिरिराई
ऋषभ महीधर[2] दक्षिण जासू ❊ कनक किरन दश दिशा प्रकासू
दुर्ग पञ्च सुवरनमय सर्वा ❊ भयकारी निवसत गन्धर्वा
भय गन्धर्व न जे उर करहीं ❊ 'आनहिं रतन' तबहिं मन धरहीं
रतन लोभ परि धन के अर्था ❊ करैं न कपिगन कबहुँ अनर्था
दुर्जय विकट हनैं छिन माहीं ❊ रारि[3] उचित यहि अवसर नाहीं
रहि सचेत लखि शिखर अनन्ता ❊ लेहु सीय-दसमुख कर अन्ता[4]
मिलै न तहँ केहु विधि सियमाई ❊ तौ दक्षिण-पुनि[5] खोजहु जाई

दो० जियत न गति यमलोक जनि, रवि-ससि करत उजेर ।
निसि-दिन एक समान जहँ, एकाकार अँधेर ॥ ४९ ॥

यमपुर परे[6] ज्ञान मोंहि नाहीं ❊ लौटहु निरखि मास इक माहीं
मास दिवस ते अधिक प्रवासू ❊ सकुल तासु निज दोष विनासू
सिय कर शोध वेगि जो लावै ❊ सम्मानित मम बन्धु कहावै

अगस्त्येर बाड़ी विश्वकर्म्मार निर्म्मित ❊ नाना रत्न नाना धातु पर्व्वते भूषित
वीर गण अन्वेषिओ शिखर शिखर ❊ यत्न करि देख तथा सीता लंकेश्वर
तथा यदि ताहादेर ना पाओ दर्शन ❊ ऋषभ पर्व्वते जावे सब वीर गन
ऋषभ पर्व्वत कर देखिबे दक्षिणे ❊ दशदिक आलो करे सोनार किरणे
गन्धर्व्व आछये तथा स्वर्ण पञ्च गड़ ❊ अन्य के जाइते पारे ताहार निगड़
आनिते तथाय रत्न यदि यत्न हय ❊ विषम गन्धर्व्व तथा, न करिह भय
धन लोभ कारणेते हइबे अनर्थ ❊ ताहा ना लइवे केह, शुनह यथार्थ
विषम दुरन्त तारा, सेइक्षणे मारे ❊ ते कारणे द्वन्द्व येन केह नाहि करे
सावधाने उठि तथा शिखरे शिखरे ❊ यत्न करि अन्वेषिओ दुष्ट लंकेश्वरे
तथा यदि नाहि पाओ सीतार उद्देश ❊ यमेर दक्षिण बाड़ी करिओ प्रवेश
जीयन्ते यमेर बाड़ी कारो नाहि गति ❊ यमेर दक्षिणे नाहि चन्द्र सूर्य्य द्युति
यमेर दक्षिण दिके महा अन्धकार ❊ रात्रि दिन नाहि चिनि, सब एकाकार
यमेर दक्षिणे नाहि आमार गोचर ❊ यमपुरी हइते फिरिओ वीरवर
यमपुरी जाइते आसिते एक मास ❊ मासेर अधिक हइले सवार विनाश
मासेकेर मध्ये जेइ वीर ना आइसे ❊ सवंशे मरिबे सेइ आपनार दोषे
आनिबे सीतार वार्त्ता शीघ्र जेइ जन ❊ बाड़ाब ताहारे आमि सह बन्धुगन

१ अगस्त्य मुनि का आश्रम २ पर्वत ३ झमेला ४ खोज ५ और भी दक्षिण
६ के पार ।

मास मध्य आवहि सिय देखी * लहै सदा मम प्रीति विशेषी
पवनसुतहिं बोले कपिराजू * तव कर लखत पूर्ति मम काजू
पवन वेग, जल-अगिन न मानत * लइहौ सीय-खबरि, मन आवत
तव प्रसाद मम भार उतारा * तव यश होय भुवन विस्तारा
कोउ भट आन न मोहिं प्रतीती[1] * हेरहु सिय, पावौं उर प्रीती
रामहिं विनय कीन कपिकेतू * प्रभु कछु चिह्न देहु सिय हेतू
पवनसुतहिं जनि चीन्हति सीता * बानर लखि न होय भयभीता
सुनि कपि-वचन, मुदित भगवाना * सिय प्रतीति[2] हित चिह्न प्रदाना
दीन मुद्रिका[3] निज रघुनाथा * हनुमत लीन जोरि जुग हाथा
कटक सहित गमने हनुमाना * टीड़ी दल जिमि गगन पयाना
नृप सुग्रीव-वचन सिर धारी * दच्छिन दिसि कपि-सैन सिधारी

कपिसेना का पश्चिम दिशा को प्रस्थान

पच्छिम जे नद-नदी प्रदेसू * हे सुषेन ! तहँ करहु प्रवेसू
ठौर-कुठौर न मन कछु लाई * खोजहु सिय चहुँ, बुद्धि लगाई

दो० सिन्धु हेरि पुनि मलय चलि कावेरी के तीर ।
कृमिजीवी जहँ देश अति गहन लखहु चलि वीर ॥ ५० ॥

सीतारे देखिया जे आसिबे एक मासे * सदा बन्धु हइया थाकिब तार पाशे
सुग्रीव वलेन, शुन पवननन्दन * तुमि से साधिवे कार्य्य, हेन लय मन
अग्नि जल नाहि मान पवनेर गति * तुमि से देखिबे सीता लय मोर मति
तोमार प्रसादे आमि सत्ये हब पार * तव यश घुपिवेक सकल संसार
तुमि यदि सीता देख, तवे आमि सुखी * आर के देखिबे सीता इहा नाहि देखि
सुग्रीव रामेर प्रति वलिल वचन * जानाइते जानकीरे देह निदर्शन
हनूमान सह ताँर नाहि परिचय * कि जानि, वानर देखि यदि पान भय
श्रीराम ब'लेन, शुन सुग्रीव सुहृत् * अंगुरी दिलाम आमि सीतार प्रतीत
दिलेन अंगुरी राम निज निदर्शन * हात पाति निल ताहा पवननन्दन
कपिसैन्य सह वीर हनूमान नड़े * पतंग सकल येन झाँके-झाँके उड़े
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे * दक्षिणेर पाँचलि रचिल कृत्तिवासे

सीता अन्वेपणे पश्चिम दिके वानर सैन्य-प्रेषण

पश्चिमे देखिबे यत नद नदी देश * सुषेण, सर्वत्र तुमि करिबे प्रवेश
सुस्थान कुस्थान ना करिओ विवेचना * अन्वेषिबे जानकीरे करिया मंत्रना
सिन्धु देश मलय देश कावेरीर तीर * कृमिजीव देशे जाबे अति से गभीर

---

१ भरोसा २ विश्वास ३ अँगूठी ।

निकट केतकी-कानन घोरा ※ जोजन विस्तर, ओर न छोरा
दोउ दिसि वन केतकी अपारा ※ कण्टक धार विकट जिमि आरा
केहु विधि बेगि ताहि करि पारा ※ कपिगन लेयँ प्रान निस्तारा
तजि कानन केतकी बिषादा ※ लहैं ताल-वन ताल-प्रसादा[1]
पच्छिम दिसि पुर-नगर मँझाई ※ हिंगुल गिरि छवि कौतुक छाई
पूर्व सिन्धु नद, पच्छिम सागर ※ मध्य हिंगु अति उच्च धराधर[2]
निरखहु भल खोजहु सब पाहीं ※ तात! असाध्य तुमहिं कछु नाहीं
जो तहँ मिलै न सिय उद्देसू ※ चक्रवान गिरि करहु प्रवेसू
पच्छिम सागर जोजन एका ※ लखहु यतन करि भाँति अनेका
चक्रवान दस दिसा प्रकासा ※ रहि सचेत हेरहु तिन पासा
अद्भुत धार विपुल आकारा ※ कौतुक विष्णु-चक्र विस्तारा
विष्णु दनुज हयग्रीव निपाता ※ विष्णु-चक्र शोभित दनुगाता
भेदि चक्र दानव तन माहीं ※ शंख-चक्रधर विष्णु कहाहीं
कपिगन हेरहिं गिरि आरोही[3] ※ कहँ सीता कहँ दसमुख द्रोही
शोध-सिया कछु तहाँ न पाई ※ जोजन पुनि पचास चलि जाई
चक्रवान तजि, कञ्चन देसू ※ गिरि बराह पुनि करहु प्रवेसू

ताहार निकटे आछे केतकी कानन ※ दिशपाश नाहि तार, अनेक योजन
दुइ पार्श्वे केयावन देखिते अपार ※ केयावने काँटा येन करातेर धार
सकल वानर तथा हवे सावधान ※ शीघ्रशीघ्र गेले तथा पाइबे हे त्रान
केयावन एड़िया से जाइवे तालवने ※ दुःख पासरिवे सवे से ताल भक्षने
ताहार पश्चिमे जावे पाटने पाटन ※ हिंगुलिया गिरि तथा अद्भुत गठन
तार पूर्व्वे सिन्धु नदी, पश्चिमे सागर ※ तार मध्ये हिंगुलिया अत्युच्च शिखर
अन्वेषण करिबे से खाने सर्व्व ठाँइ ※ तोमार करिले कर्म्म असाध्य कि भाइ
तथा यदि नाहि पाओ सीतार उद्देश ※ चक्रवान पर्व्वते ते करिवे प्रवेश
पश्चिम सागर तीर एकह योजन ※ यत्न करि से खाने करिओ अन्वेषन
चक्रवान गिरि करे आलो दशदिगे ※ सावधाने सकले खूंजिओ एक योगे
विष्णुचक्र सेखाने अद्भुत तार धार ※ असुरेर हाड़े चक्र अद्भुत आकार
हयग्रीव असुरे मारेन गदाधर ※ असुरेर हाड़े चक्र देखिते सुन्दर
सेइ दैत्य हाड़े चक्र अति सृष्टि करि ※ आपनि हइल हरि शंख चक्र धारी
से पर्व्वते आरोहिवे सकल वानर ※ अन्वेषिओ सीता लंकेश्वरे यत्न करि
तथा यदि उभयेर ना पाओ उद्देश ※ वराह पर्व्वते गिया करिबे प्रवेश
चक्रवान छाड़ाइया पञ्चाश योजन ※ वाराह पर्व्वते जाबे निर्म्मल काञ्चन

१ ताल फल (खजूर) २ पर्वत ३ चढ़कर।

दो० विश्कर्मा विरचित जहाँ विमल वरुण कर धाम ।
हीरक मणि माणिक्य युत मनहर मञ्जु ललाम ॥ ५१ ॥

पुरी अलोक हरति अँधियारा * नरकासुर जहँ सुभट जुझारा[1]
वरुण सहित निवास तहँ कीन्हा * यहि बिधि वरुण अभय तेंहि दीन्हा
रहेउ सचेत सदा तेंहि देसू * तेंहि कर[2] गये प्रान जनि सेसू
सुस्थिर, जतन करहु धरि धीरा * मोंहि प्रन-उरिन करावहु वीरा
तहाँ न लखि सीता संकेतू * गवनहु पुनि सुमेरु गिरिकेतू
घेरे साठि सहस जेंहि शृंगा * छबिमय अतुल सोबरन रंगा
तिन समूह जे साठि हजारा * सुबरन मण्डित सकल पहारा
कनक-ताल-तरु मेरु सुहाये * तिन द्युति[3] दसौ दिसा दमकाये
दिन गत, रैन नित्य अवतरहीं * उमा-महेश केलि तहँ करहीं
धरा न अस कहुँ मंजुल-मूला * बहु विधि बहु झूमत फल-फूला
कौतुक गीत वाद्य अरु नर्तन * नृत्य अप्सरन मोहति सुरगन
जोजन दु-शत तीनि लख देसू * परिकरमति[4] जेंहि भानु निमेषू
गिरि अपूर्व जहँ देव निवासू * सकल सुरम्य सुठाँव[5] प्रकासू
निमिष मात्र आलोक न देरी * देत सुमेरु दिवाकर[6] फेरी[7]

विश्वकर्म्मा सृजिलेन वरुणेर घर * हीरक माणिक्यमय तथा मनोहर
पुरी आलो करे ज्योतिः-अन्धकार दूर * असुर नरक नामे, विक्रमे प्रचुर
वरुणेर सहित से वैसे सेइ देशे * से कारणे वरुण ताहारे नाहि नाशे
सेखाने हइउ सबे अति सावधान * तार हाते पड़िले नाहिक परित्रान
अप्रमत्त रूप तनु करिवे तथाय * आमारे करह मुक्त एइ प्रतिज्ञाय
तथा यदि जानकीर ना पाओ उद्देश * सुमेरु पर्व्वते गिया करिओ प्रवेश
देखिबे पर्व्वत सेइ कनक रचित * सदा षाटि-सहस्र पर्व्वते से वेष्टित
तथा पाटि सहस्र पर्व्वतेर उदय * सेइ षाट सहस्र पर्व्वत स्वर्णमय
सोनार खर्ज्जूर वृक्ष सुमेरु शिखरे * दशदिक आलो करे दशमाथा धरे
तथा आसि केलि करे शंकर-शंकरी * दिवा अस्त जाय तथा आइसे शर्व्वरी
एमन उत्तम स्थान नाहि पृथिवीते * नाना मत फल फुल आछे युथे युथे
गीत वाद्य नृत्य करे परम कौतुके * नर्त्तकी करये नृत्य देखे देवलोके
परिसर तिन लक्ष दु'शत योजन * चक्षुर निमिषे सूर्य्य करये गमन
अपूर्व्व पर्व्वत सेइ, देव अधिष्ठान * सुमेरुर उपर सकल रम्य स्थान
निमिषेते सूर्य्य देव करये गमन * सुमेरु वेड़िया सूर्य्य करेन भ्रमन

१ योद्धा २ नरकासुर के हाथों ३ प्रकाश ४ परिक्रमा करता है ५ सुन्दर स्थान ६ सूर्य ७ परिक्रमा ।

गिरि सों सहज लखत त्रयलोका ❊ सदा सुमेरु रमत सुरलोका
नित्य भानु[1] परिभ्रमत सुमेरू ❊ जेंहि दिसि निसि, विपरीत[2] उजेरू

दो० अवनि स्वर्ग पाताल यत, सबन सुमेरु अधार।
पच्छिम जासु न भानु गति निर्जन नित[3] अँधियार ॥ ५२ ॥

पच्छिम-मेरु, ज्ञान मोंहि नाहीं ❊ तहँ लग लखि आवहु मम पाहीं
पन्थ सुमेरु अवधि इक मासा ❊ जनि अबेर[4] नतु होय विनासा
जो न मास बिच आवै वीरा ❊ सकुल[5] दोष निज तजै सरीरा
नृप आयसु पच्छिम अभियाना[6] ❊ कटक सैन कृतिवास बखाना

सीता की खोज में कपिसेना का उत्तर दिशा को प्रस्थान

सुनहु शतावलि सैन तुम्हारी ❊ छुवत धूरि नभ, जबहिं सिधारी
सेनिप[7]! तुम बानरन प्रधाना ❊ उत्तर दिसि, प्रिय! करहु पयाना
कुमुद द्विविध दधि—गिरि आकारा ❊ अन्य प्रमुख बानरन हँकारा
कहेउ, शतावलि! मम आदेसू ❊ करहु शुभगमन उत्तर देसू
वरनौं यथा ज्ञान सब देसा ❊ सिय खोजहु रहि सजग विसेसा
प्रथम दरस लहि बर्बर देसू ❊ निरखहु पुनि हिमवान प्रदेसू

स्वर्ग मर्त्य रसातल सुमेरु गोचर ❊ देवगण करे तथा केलि निरंतर
सुमेरु फिरिया करे नित्य नित्य गति ❊ एक दिक दिन हय आर दिक राति
स्वर्ग मर्त्य पाताल व्यतीत नाहि स्थान ❊ सुमेरुर उपरे सकल अधिष्ठान
सुमेरुर पश्चिमे सूर्य्येर नाहि गति ❊ अन्धकारमय तथा नाहिक वसति
ताहार पश्चिमे नाहि गमन आमार ❊ सुमेरु पर्य्यन्त देखि आसिवेहे घर
सुमेरुते जाइते आसिते एक मास ❊ मासेर अधिक हैले सवार विनाश
जेइ वीर मासेकेर मध्ये ना आइसे ❊ सवंशे मरिबे सेइ आपनार दोषे
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे ❊ पश्चिम दिकेर यात्रा रचे कृत्तिवासे

सीता अन्वेषणे उत्तर दिके वानरसैन्य-प्रेरण

सुग्रीव ब'लेन शुन वीर शतावली ❊ तव सैन्य चलिते गगने लागे धूलि
वानरेर मध्ये तुमि मुख्य सेनापति ❊ चलिवे उत्तरदिके, आमार आरति
कुमुद द्विविध दधि वदन भूधर ❊ आर आर आछे यत प्रधान वानर
शतावली ब'ले जे उत्तर तव देश ❊ यात्रा कर शुभ क्षणे, आमार आदेश
यत देश जानि आमि, कहि तव स्थान ❊ तथा सीता अन्वेषिओ ह'ये सावधान
इहार उत्तरे पावे देश ये वर्व्बर ❊ हिमालय गिरि तथा यथा हिमघर

१ सूर्य २ उलटी (दूसरी) तरफ ३ सदैव ४ विलम्ब ५ कुल सहित
६ कूच ७ हे सेनापति।

बसत जन्तु रवि किरन समाना ※ तहँ सों गंग भगीरथ आना
अति पावन विरञ्चि[1] कर धामा ※ उद्गम भागीरथी ललामा
त्रिभुवन कहुँ न पुण्य अस छावा ※ दरस भगीरथ सुरसरि[2] पावा
धरा धाम सुरधुनी[2] पधारी ※ दरस जासु सब पातक हारी
महिमा अमित गंग महरानी ※ वरनि सकत जनि बेदन-बानी
शाप विवस दनु[3] द्विज सौदासा ※ परसि गंग बैकुण्ठ निवासा

दो० जेहि विधि गंग पुनीत के दरस होयँ भुविलोक।
तप अनन्त किय भगीरथ रविकुल-पुण्यश्लोक ॥ ५३ ॥

तप विधि हेतु, विष्णु पुनि ध्याई ※ अनाहार तप किय नृपराई
यदपि भगीरथ बहु तप कीन्हा ※ गंग-जनम कोउ मर्म न दीन्हा
बरष सहस दस शिवहिं मनावा ※ बरंब्रूहि[4] इमि शंभु सुनावा
भोलानाथ निरखि नृप बन्दे ※ सुरसरि दै मोहिं करहु अनन्दे
पितर पताल भसम अवसेसू ※ परसि गंग गवनहिं सुरदेसू
भागीरथहिं कहेउ पञ्चानन ※ कवन गंग, कित ? सुनेउँ न कानन
रविकुलनन्दन अतिव उदासा ※ कहौं कहा, प्रभु-चरनन-दासा
अष्टावक्र मुनीस बखाना ※ लहहु शम्भु ढिग गंग-विधाना

सूर्य्येर किरण ह'न जन्तु सब वैसे ※ भागीरथी गंगादेवी तथा हैते आसे
ताहार उत्तर अंशे ब्रह्मार बसति ※ तथा हैते भगीरथ आने भागीरथी
एमन पुण्येर स्थान नाहि त्रिभुवने ※ भगीरथ गंगारे पाइल सेइ खाने
नारायणी गंगादेवी आसिया भुवने ※ पापीर करेन मुक्त निज दरशने
कि व'लिते पारे लोक गंगार महिमा ※ चारि वेदे विचारिया दिते नारि सीमा
आछिल सौदास द्विज राक्षस हइया ※ गेल से वैकुण्ठपुरी गंगाजल पाइया
सूर्य्यवंशे भगीरथ नामे महीपाल ※ गंगा हेतु तपस्या करिल वहुकाल
आराधना ब्रह्मार करिल बारे बारे ※ तार पर विष्णुर तपस्या अनाहारे
भगीरथ नानाविध तपस्या करिल ※ गंगार जन्मेर तत्व केह ना ब'लिल
शिव सेवा करे दश हाजार बत्सर ※ तबे शिव आइलेन ताँरे दिते वर
भगीरथ ब'ले शुन देव पञ्चानन ※ गंगा दिया रक्षा कर एइ निवेदन
मम पितृलोक भस्म ह'येछे पाताले ※ गंगा परशन है'ल स्वर्ग वासे चले
गंगाधर व'लेन, ना जानि से गंगाय ※ कि जाति धरेन गंगा, थाकेन कोथाय
भगीरथ शुनिया भावेन दुःख मने ※ आमि कि वलिब प्रभु, तोमार चरने
अष्टावक्र मुनि कहिलेन मोर स्थान ※ आपनि कहिबे प्रभु, गंगार विधान

१ ब्रह्मा २ गंगा ३ दानव ४ वर माँगो।

नयन मूँदि शंकर किय ध्याना ❋ गंगा - जनम - मर्म उर आना
भक्त नेह बस शिव वर दीन्हा ❋ सुरसरि सहित विदा नृप कीन्हा
करत शंखध्वनि नृप पग धरहीं ❋ हिमगिरि तजि भगवति अनुसरहीं
साधु, साधु ! सब कहत भगीरथ ❋ मुक्ति प्रशस्त कीन सुरसरि-पथ
भुवन भगीरथ पुण्य सरूपा ❋ जगती भूप न तिन अनुरूपा
स्वर्ग पताल मर्त्य उद्धारा ❋ परसि गंग पावन संसारा
भागीरथी भगीरथ लाये ❋ परसि पातकी स्वर्ग सिधाये
रसना राम, बिनासत पापा ❋ कवि गावत भल गंग-प्रतापा

दो० हिम प्रदेस बिस्तर[1] निरखि, दरस न सिय-लंकेस ।
पार हिमञ्चल उतर दिसि, पुनि कपि करहु प्रवेस ।। ५४ ।।

दुर्गम विषम अतिव भयकारी ❋ गिरि तरु-दरस न सरसति वारी[2]
दुइशत योजन पन्थ न अन्ता ❋ तहँ प्रवेस भय-दुःख अनन्ता
तजहि बेगि कपि दुर्गम देसू ❋ तब निवरैं[3] रहि सजग कलेसू
उत्तर चलि गिरिवर कैलासू ❋ जगमग सिखर सहस्त्र प्रकासू
जोजन सहस आयतन[4] भारी ❋ ऊपर लख जोजन बिस्तारी
जहँ कैलाशपुरी छबि - रूपा ❋ सदा उमा-शिव रमत अनूपा

वसिलेन ध्याने शिव मुदित नयने ❋ गंगार जनम तत्व जानिलेन मने
भक्त-ज्ञाने महादेव तुष्ट ह'य ताँय ❋ गंगा दिया भगीरथे करेन विदाय
आगे जान भगीरथ करि शंख ध्वनि ❋ हिमालये उठिलेन देवी तरंगिनी
सबे ब'ले, साधु साधु भाल भगीरथ ❋ गंगा आनि करिलेन तरिवारे पथ
भुवनेर मध्ये भगीरथ पुण्यवान ❋ त्रिभुवने केवा भगीरथेर समान
संसार पवित्र कैल परशे गंगार ❋ स्वर्ग मर्त्य पाताल त्रिलोकेर उद्धार
आइलेन गंगा भगीरथेर कारणे ❋ महापापी स्वर्ग जाय गंगा परशने
राम नाम स्मरणेते पापेर विनाश ❋ गंगार माहात्म्य गीत रचे कृत्तिवास
हेन हिमालय गिरि बहु आयतन ❋ यत्न अन्वेषिओ तथा जानकी रावण
तथा यदि जानकीर ना पाओ उद्देश ❋ ताहार उत्तर देशे करिओ प्रवेश
विषम दुर्गम अति भयानक स्थल ❋ वृक्ष नाहि गिरि नाहि नाहि ताहे जल
दुइ शत योजनेर पथ सेइ देश ❋ पाइबे अत्यन्त भय करिते प्रवेश
सकल वानर तथा हैओ सावधान ❋ झाट जाबे आसिबे तबे से परित्राण
कैलास पर्व्वते जाबे ताहार उत्तर ❋ सेइ दिक आलो करे सहस्त्र शिखर
योजन सहस्त्र एय तार आयतन ❋ उभेते पर्व्वते लक्ष गणित योजन
कहेन अपूर्व्व पुरी कैलास तथाय ❋ सतत रमण शंभु पार्व्वती तथाय

---

१ विस्तार २ जल नहीं बरसता ३ निबटैं, बच सकें ४ घेरा ।

तहँ पुनि अलकापुरी ललामा * कौतुकमय कुवेर कर धामा
विमला तहँ सरिता छबि देही * विद्रुम[1] सरिस लाल जल जेही
धनपति पियत नित्य सो नीरा * तरु सुगंध चन्दन छबि तीरा
चहुँ दिसि हेरि तहाँ सियमाई * कहँ लंकेस दसाननराई
जो श्रम होय न तहँ अनुकूला * पुनि पग देहु पहार त्रिशूला
तीनि शृंग गिरि तीनि सरूपा * गिरिवर कपिगन लखहिं अनूपा
प्रथम धवल चन्द्रिका समाना * दूजे मनहुँ जोति मणि नाना
लोहित[2] शृंग तृतीय प्रकासा * तीनि शिखर उठि छुवत अकासा
शिखर-शिखर भल खोजहिं कीसा * हेरहिं यथा मिलै भुजबीसा[3]
मिलै न शोध तहाँ वैदेही * उत्तर अवर[4] कटक पग देही

दो० सुबरन जंबूवृक्ष तहँ, कनक विपुल आकार ।
तेहि कौतुक-तरु नाम लहि, जंबू द्वीप प्रचार ॥ ५५ ॥

सब द्वीपन सो प्रमुख प्रधाना * द्वीप न जंबू - द्वीप समाना
सुरगन केलि करत दिन राती * जंबूद्वीप नाम यहि भाँती
जिमि गिरि शिखर चली तरु डारी[5] * लख योजन प्रकाण्ड[6] बिस्तारी

आर एक अद्भुत अलका नाम पुरी * धनेश्वर कुबेर ताहार अधिकारी
ताहार उपरे नदी नामेते विमला * तार जल रांगा वर्ण येन रक्तपला
धनेश्वर कुबेर करेन पान ताय * सुगन्धि चन्दन वृक्ष तीरे शोभा पाय
सीता लैया थाके यदि तथा दशानन * चतुर्द्दिके ताहार करिओ अन्वेषण
तथा यदि जानकीर ना पाओ उद्देश * त्रिशृंग पर्व्वत गिया करिबे प्रवेश
त्रिशृंग पर्व्वत सेइ तिन मूर्ति धरे * चमत्कार हबे तथा सकल वानरे
एक शृंग रूप तार येन चन्द्रकला * द्वितीय शृंगेर रूप येन मणि पला
अन्य शृंग रांगा वर्ण सर्व्वत्र प्रकाश * त्रिशृंग पर्व्वत गिया जुड़ये आकाश
सेखाने करिओ तत्त्व शिखरे-शिखरे * यत्न करि अन्वेषिओ सकल वानरे
तथा यदि नाहि पाओ सीता-लंकेश्वर * ताहार उद्देशे जाबे ताहार उत्तर
ताहार उत्तरे एक अद्भुत आकार * जम्बुवृक्ष देखिबे से अति चमत्कार
स्वर्ण-जम्बुवृक्ष सेइ सोनार आकार * तार नामे जम्बूद्वीप हइल प्रचार
सकलेर मुख्य सेइ जम्बूद्वीप हय * अन्य यत द्वीप, जम्बूद्वीप-तुल्य नय
तार तले देवगण नित्य करे केलि * ताहार कारण एइ जम्बूद्वीप बलि
डाल-डाल धरे येन पर्व्वतेर चूड़ा * लक्ष योजनेर बेड़ा से गाछेर गोड़ा

---

१ मूँगा २ लाल ३ रावण ४ और उत्तर की ओर ५ वृक्ष की शाखा
६ वृक्ष का तना ।

चहुँ लखि मिलै न सिय-लंकेसू ※ अधि-उत्तर पुनि करहु प्रवेसू
जंबुद्वीप उत्तर गिरि मन्दर ※ तहँ विशाल सरवर अति सुन्दर
सर्वस्थली कहत सब नामा ※ तहँ विरञ्चि सुख लहति ललामा
मन्दाकिनि जहँ सरसति नीरा ※ उद्गम सरित् कौशिकी, तीरा
कपिगन विफल होउ तहँ हेरी ※ लेहु डगर[1] बढ़ि उत्तर केरी
तहँ महेश सागर शत योजन ※ आकर[2] मणि बहुमूल्य रत्न धन
अस्ताचल गिरि सागर माहीं ※ सहस शृंग उठि नभ तन जाहीं
लखि महेश सागर भयखानी ※ सावधान खोजहु सियरानी
कञ्चन गिरि दस दिसा प्रकासा ※ परसहिं सिखर सहस्र अकासा
गिरिवर मूल सुवर्ण ललामा ※ तहँ शिवलिंग तहाँ शिवधामा
रावण पूजत सदा महेसा ※ तेहि मिस[3] जाय तहाँ लंकेसा
हेरहु तहँ बहु आस लगाई ※ संभव, ते कहुँ परैं लखाई
किन्तु लंकपति माया रूपा ※ विजय कीन त्रयलोक अनूपा
दो० तीनिलोक जय, दिग्विजय, किय लहि शंभु-प्रसाद ।
सुरन-त्रास, सो बालि पहँ, लहेउ मात्र अवसाद[4] ॥ ५६ ॥

सीता ल'ये यदि थाके तथाय रावण ※ चारिदिके सेखाने करिवे अन्वेषण
तथा यदि नाहि पाओ सीता लंकेश्वर ※ करिवे गमन आरो ताहार उत्तर
मन्दर पर्व्वत जम्बूद्वीपेर उत्तर ※ एक ह्रद आछे तथा परम सुन्दर
सर्व्वस्थली ब'लिया से ह्रदेर खेयाति ※ आइसेन देखिते से ह्रद प्रजापति
स्वर्ग हैते सेइ ह्रदे पड़े गंगनीर ※ कौशिकी नामेते नदी बहे सेइ तीर
आमार बचन शुन सर्व्व कपिगन ※ सावधाने अन्वेषिवे सीता-दशानन
तथा यदि नाहि पाओ सीता-लंकेश्वर ※ ताहार उत्तरे जावे महेशसागर
महेशसागरे जन्मे बहुमूल्य धन ※ आड़े दीर्घ सागर से शतेक योजन
अस्ताचल पर्व्वत सागरेर भितर ※ जल हैते उठे गिरि सहस्र शिखर
देखिया हइवे सबे सभय अन्तर ※ अन्वेषिबे सावधाने महेशसागर
सोनार पर्व्वत दशदिक सुप्रकाश ※ शिखर सहस्र उठे जुड़िया आकाश
सोनार गठित गोड़ा देखिते सुठाम ※ शिवलिंग आछे ताहे येन शिवधाम
रावण से महेश्वरे पूजे सर्व्वक्षण ※ महेशेर काछे गिया थाकेन रावण
अन्वेषण करिओ से शिखरे शिखर ※ पाइते पारिबे तथा सीता लंकेश्वर
किन्तु माया जाने से पापिष्ठ दशानन ※ स्वर्ग मर्त्य पाताल जिनिल त्रिभुवन
सेविया शिवेर पद दिग्विजय करे ※ त्रिभुवन जिने बेटा शंकरेर वरे
देवगण जार डरे एक पाश हय ※ सबे मात्र बालिस्थाने तार पराजय

---

१ रास्ता २ खान ३ निमित्त ४ हार, पराभव ।

जो निष्फल, गिरि क्रौञ्च अगारी[1] ❋ विषम अँधेर लखहु भयकारी
केवल दरस निकट जनि गमना ❋ गये समीप सुनिश्चित मरना
दिसि नैरित[2] गिरि क्रौञ्च बराई[3] ❋ द्रोणाचल उत्तर दरसाई
दरस द्रोण सुख-खानि बखानी ❋ सुर, गन्धर्व, अप्सरन - खानी
बालखिल्य आदिक मुनि जेते ❋ बसत द्रोणगिरि तप-रत तेते
चन्द्रप्रभा, रवि - रश्मि - प्रकासू ❋ सुलभ न नखतन जोति अकासू
रूप - रूपसिन गिरि आलोका ❋ सरित पुण्यदा तहाँ विलोका
दोउ तट अगणित बाँस सुहाये ❋ जुरि दोउ तोरण[4] गगन बनाये
बसत भयंकर म्लेच्छ अपारा ❋ बाँस-सेतु[5] धरि करहु उतारा
उत्तर पुनि आगे शुभ - देसू ❋ प्रमुदित जन तहँ मिलैं असेसू
मन-वाञ्छित सुमधुर फल मूला ❋ रतन द्रव्य सुबरन अनुकूला
विविध रतन मानिक जल माहीं ❋ रक्तिम जल लहि मानिक-छाहीं
अभरन[6] रतन पुरुष जहँ सोहा ❋ अकथ नारि-अभरन मन मोहा
मदमातिन - मद इन्द्र रिसाई ❋ बनितन[7] शाप दीन सुरराई
कीन अवज्ञा जिमि मदमाती ❋ जीवन दिवस, मरन नित राती

तथा यदि नाहि पाओ सीतार उद्देश ❋ महीधर क्रौञ्च गिया करिओ प्रवेश
क्रौञ्च पर्व्वत देखिया लागिवेक भय ❋ विषम पर्व्वत सेइ अन्धकारमय
दूर हैते पर्व्वत करिबे दरशन ❋ ताहार मध्येते गेले अवश्य मरन
से पर्व्वत राखिया दक्षिणे किंवा वामे ❋ ताहार उत्तरे जावे गिरि द्रोण नामे
द्रोण गिरि देखिले हइबे वड़ सुखी ❋ देव गन्धर्व्वेर आछे यत चन्द्रमुखी
बालखिल्य आदि करि यत मुनिवर ❋ बास करे सकले से पर्व्वत-उपर
चन्द्रतेज नाहि तथा सूर्य्येर प्रकाश ❋ नक्षत्र नाहि देखि ना देखि आकाश
कामिनीगनेर तेज तथा आलो करे ❋ पुण्यदा नामेते नदी ताहार उपरे
दुइ कूले आछे तार बंश अगनन ❋ उत्तर तीरेर बंश दक्षिणे मिलन
म्लेच्छजाति आछे तथा जाति भयंकर ❋ नदी पार हय तारा बाँशे करि भर
ताहार उत्तरे जाबे सीतार उद्देशे ❋ सेइ देशे बहुलोक हरिषेते वैसे
जाहा चावे ताहा पावे मिष्ट वृक्षफल ❋ स्वर्ण जन्ये द्रव्य तथा सोनार उत्पल
रतन माणिक नाना जलेते उपजे ❋ रक्तवर्ण नदी जल माणिकेर तेजे
नाना रत्न अलंकार पुरुषेते परे ❋ कि वर्णिब अलंकार, स्त्रीलोके जा धरे
अहंकारे नारीगण इन्द्रे ना मानिल ❋ क्रोध करि इन्द्रदेव अभिशाप दिल
अहंकारे येमन ना मानिलि आमाय ❋ जीवित हइबे दिने, राते मृतप्राय

१ आगे २ दक्षिण-पश्चिम कोण ३ वचाते हुये ४ जुड़कर महराव के समान फाटक ५ वाँस का पुल ६ आभूषण ७ वनिताओं (स्त्रियों) को।

यहि विधि रैन नित्य अवसानू[1] * भोर होत पुनि जीवन-दानू

दो० शाप-विवस, नित रूपसी, रजनी रहि निष्प्रान ।
निरखि अरुन छबि मगन ते नृत्य रंग रस गान ।। ५७ ।।

अद्भुत सृष्टि कहाँ केहि भाँती * धरनि रत्नगर्भा चहुँ ख्याती
सावधान कपिगन तहँ जाई * भल हेरहिं रावन - सियमाई
उत्तर चलि पुनि सिंधु अपारा * गिरिवर हेमकूट विस्तारा
गिरि न हेमगिरि अद्भुत रंगा * अखिल शृंग तेहि शृंग उतंगा[2]
शिखर समूह गगन बतराहीं * जग गिरि-हेम सरिस गिरि नाहीं
तेहि उत्तर न भानु-पैठारी[3] * जीव न तहँ चहुँ दिसि अँधियारी
आगे तासु गयेउँ मैं नाहीं * तहँ लौं लखि आवौ मम पाहीं
यहि विधि जंबूद्वीप बखानी * सीमा, वसत जहाँ लौं प्रानी
मारग दिवस तीस गिरि हेमा * बीते अवधि सकुल जनि क्षेमा[4]
मास अधिक जेहि समय लगावा * निज करनी निज प्रान गवाँवा
बरनेउँ सबन कथा सब देसू * जहँ सिय चलि आनहु उद्देसू[5]
स्वर्ग पताल मर्त्य त्रयलोका * शास्त्रन इतर न सृष्टि विलोका
पौरुष करि दिग्देसन जाई * रामहिं सीय समर्पहु लाई

सेइ शापे मृत थाके सकल रजनी * प्रभात हइले वाँचे सकल रमणी
रजनीते थाके तारा हये अचेतन * प्रभाते उठिया करे संगीत नर्त्तन
बहुरत्ना पृथिवी ब'लेन सर्व्वजन * कत ठाँइ कत सृष्टि न हय गनन
सावधान हइया जावे यत कपिगन * यत्नेते खुंजिवे तथा जानकी-रावण
ताहार उत्तरे जावे अनन्त सागर * तथा हैते हेमगिरि नाम गिरिवर
सकल पर्व्वत मध्ये हेमगिरि सार * सकल पर्व्वत जिनि शिखर ताहार
आकाशेते जार शृंग लागे सारि सारि * हेमगिरि सम गिरि जगते ना हेरि
ताहार उत्तरे नाइ भास्करेर गति * अन्धकारमय तथा नाहिक वसति
ताहार उत्तरे नाइ आमार गमन * से पर्य्यन्त खुंजिया फिरिवे सर्व्वजन
एइ कहिलाम जम्वूद्वीपेर उत्पत्ति * ए अवधि आछे जीवजन्तुर वसति
हेमगिरि आसिते जाइते एक मास * मासेर अधिक हैले सवार विनाश
मासेकेर मध्ये जेवा फिरे ना आइसे * सवंशे मरिवे से ये आपनार दोषे
सकल देशेर कथा कहिनु सवाके * ये देशे थाकेन सीता उद्धारिवे ताँके
स्वर्ग मर्त्य ओ पाताल एइ तिन स्थान * इहा विना सृष्टि नाहि शास्त्रे विधान
यत देश कहिलाम, जाइवे साहसे * सीतादेवी आनि दिवे श्रीरामेर पाशे

---

१ मृत्यु २ ऊँचा ३ सूर्य का प्रवेश ४ कल्याण ५ पता ।

विफल, न आनि सकै बैदेही ❋ तासु विनास, न संसय येही
मास अवधि, जनि करैं अबेरी ❋ नतरु कुसल जनि प्रानन केरी
साखी अगिन, वचन मैं हारा ❋ करहुँ प्रानपन सिय उद्धारा

दो० कहेंउ, शतावलि ! प्रथम लखि अखिल उत्तराखण्ड ।
सुबरन लंक प्रवेश पुनि जहँ लंकेस प्रचण्ड ॥ ५८ ॥

करतल मारि ताल बहु दीन्हा ❋ सुभट मेघ सम गर्जन कीन्हा
मैं अकेल, कपि-सैन न काजू ❋ हनि रावन आनहुँ सिय, राजू !
सिय पताल, पाताल प्रवेसू ❋ जो सिय सिन्धु, करौं जल सेसू[1]
वृथा मलीन लखन - रघुराई ❋ निज पौरुष आनहुँ सिय माई
वृथा शोच उर राम भुवाला ❋ मम रन, किमि समुखै[2] दसभाला
आवन-जान, न क्षण अधिकाई ❋ लावहुँ मैं प्रभु - काज बनाई
सुनत शतावलि विक्रम बानी ❋ उर प्रतीति कपिपति बहु मानी
सकल सैन उत्तर दिसि धाई ❋ कृत्तिवास करि गान सुनाई

उत्तर-पूर्व-पश्चिम से निराश कपि-सेना वापस

विपुल नदी-नद गिरि बहु नामा ❋ पूँछत सुनि कपीस सन रामा
सागर द्वीप महीधर धरनी ❋ सुहृद ! कथा किमि बिस्तर वरनी ?

आनिते ना पार यदि सीता ठाकुरानी ❋ आमि गिया ताहारे करिब हानाहानि
मासेकेर मध्येते आसिबे वीरगण ❋ अधिक हइले तार अवश्य मरण
अग्नि साक्षी करि करियाछि अंगीकार ❋ प्राणपणे आमि सीता करिब उद्धार
सर्व्वस्थाने जाब आमि यत दूर संख्या ❋ तार पर प्रवेशिब स्वर्णपुरी लंका
मालसाट मारे बहु देय कर तालि ❋ मेघेरे गर्ज्जने गर्ज्जे वीर शतावलि
कि कर्य्ये पाठाओ राजा एत सेनागण ❋ आमि आनि दिब सीता मारिया रावण
पाताले थाकेन सीता, पाताले प्रवेशि ❋ सागरे थाकेन यदि, ताहा आमि शुषि
श्रीराम लक्ष्मण, केन हओ म्रियमाण ❋ सीता उद्धारिव आमि हये यत्नवान
कि हेतु श्रीराम, तुमि मने भाव आन ❋ एकेला रावण मोर ना धरिबे टान
आसिते जाइते मोर जे होक व्याज ❋ अविलम्ब देखा दिब सिद्ध करि काज
शुनि शतावलीर से विक्रम वचन ❋ भरोसा पाइल मने सुग्रीव राजन
चलिल सकल ठाट सुग्रीव आदेशे ❋ उत्तर दिकेर यात्रा रचे कृत्तिवासे

उत्तर-पूर्व्व-पश्चिम दिके सीतार उद्देश ना पाइया वानरगणेर प्रत्यावर्त्तन

नद नदी पर्व्वतेर शुनिया त नाम ❋ सुग्रीवेरे जिज्ञासेन तखन श्रीराम
सागर पर्व्वत द्वीप पृथिवीर अन्त ❋ केमने जानिले मित्र, कह से वृत्तान्त

---

१ समाप्त २ सामना करै ।

बालि-त्रास भरमउँ, रघुनाथा * त्रिभुवन लखेउँ, कहेउ कपिनाथा
निमिषमात्र पथ बालि महीपा * त्रान न कतहुँ सप्त प्रभु द्वीपा
जहँ जहँ जावँ, बालि अनुसरही * लहि छन दरस प्रान मम हरहीं
त्रिभुवन बालि सरिस नहिं बीरा * तीनि लोक भरमेउँ तेहि पीरा
कतहुँ विराम न रैन बसेरा * संकित सदा बालि-भटभेरा[1]
निर्दय, मिलत न प्रान-निवारन * दूरि दूरि भरमेउँ यहि कारन

दो० सिन्धु नदी गिरि निरंतर भरमेउँ देस दिगन्त।
जड़ जंगम त्रयलोक चहुँ घूमेउँ बार अनन्त ॥ ५९ ॥

चहुँ दिसि धरनि अन्त जहँ पाये * दुर्दिन तहँ लौं दरस कराये
वरनेउँ प्रथम बालि-भय-हेतू * इमि मैं विश्व लखेउँ रघुकेतू !
मारुति[2] कही मूकगिरि[3]-गाथा * लही सरन इत जिमि, रघुनाथा !
चारि सखा युत भ्रमन विषादा * लहउँ नृपति-पद नाथ-प्रसादा
इमि नित सुहृद युगुल बतराहीं * मास व्यतीत दिवस नगिचाहीं
पूरुब देखि प्रगट तेहि काला * कपि विनोद जहँ कीस भुवाला
पश्चिम सों सुषेन बलबीरा * सीय न शोध विकल रघुबीरा
उत्तर पूरुब पच्छिम हेरी * आय सुनत कहि सब, सब केरी

कहेन सुग्रीव, शुन राम गुणाधार * वालि भये भ्रमिलाम ए तिन संसार
सप्तद्वीपा मही वालि निमिषेते जाय * कोन देशे जाव आमि, नादेखि उपाय
ये देशे जाइव आमि तथा वालि जावे * मुहूर्त्तेक देखा पेले तखनि मारिवे
वालि सम वीर नाइ ए तिन भुवने * स्वर्ग मर्त्य पातालेते फिरि से कारणे
एकदिन एकस्थाने ना थाकि कोथाय * वड़ भय, वालिराज यदि देखा पाय
देखा पेले प्राणे मारे वड़ह निष्ठुर * से कारणे पलाइया भ्रमि वहु दूर
सागर पर्व्वत नदी देश-देशान्तर * सर्व्वत्र भ्रमन करि आमि निरन्तर
स्थावर जंगम आदि ए तिन संसार * प्रतिस्थाने भ्रमण करेछि शतवार
जेखाने जेखाने आछे पृथिवीर अन्त * से कारणे जानि मित्र सकल वृत्तान्त
पूर्व्वकथा कहिलाम तोमार गोचरे * सर्व्व तत्त्व जानिलाम से वालिर डरे
ऋष्यमूक-कथा जेह कहिले हनूमान * से कारणे करिलाम हेथा अवस्थान
चारि पात्र भ्रमिताम ह'ये संकुचित * तोमार प्रसादे एवे राज्येते पूजित
एइ रूपे दुइ मित्रे प्रत्यह सम्भाष * देखिते देखिते प्राय पूर्ण एकमास
एक दिन पूर्व्वदिक हइते सुमति * उपस्थित हइल विनोद सेनापति
ना शुनि सीतार वार्त्ता आर्त्त रघुवीर * आइल पश्चिम देखि सुषेण सुधीर

१ बालि का सामना पड़ जाने की शंका २ हनुमान ३ ऋष्यमूक पर्वत।

खोजे गिरि बहु नाना देसा ※ खबरि न सीय कतहुँ लवलेसा
रघुपति व्यथित मूर्च्छा आई ※ समुझावत बहु बिधि कपिराई
दच्छिन जहँ निवास लंकेसू ※ प्रभु! कपि प्रमुख गये तेहि देसू
जाम्बवान पुनि बालिकुमारा ※ हनुमत् काज सवाँरनहारा
वीर पवनसुत बुद्धि अपारा ※ निसचय तिन-कर[1] काज उबारा
तव कारज मारुति अति प्रीती ※ खोजहिं सिय, भल मोहिं प्रतीती
प्रखर बुद्धि अतिशय मतिमाना ※ संक न, काजु करैं हनुमाना
बचन कपीस धीर प्रभु आवा ※ कृत्तिवास किष्किन्धा गावा

राम-नाम-महिमा

छं० सुमिरि राम उर धाम निरंतर अगतिन-गति रासायन ।
श्रवन, अतुलगुन-गान रामके अश्वमेध-फल दायन ।।
पद-रज परसि शिला भइ तरुनी, तरनी[2] कञ्चन काया ।
निरालंब लखि नाव हटायो, अहह, करौ प्रभु! दाया ।।
मंत्र तंत्र जप जोग ध्यान-रत स्वतः सिन्धु-भव पारा ।
करुनसिन्धु तौ दीन-हीन-गुन मनुजन करौ उतारा ।।

पश्चिम उत्तर पूर्व्व तिन दिक देखे ※ आसिया सकले कहे सबार सम्मुखे
नाना गिरि खुँजिनु देखिनु बहुदेश ※ कोन देशे ना पाइनु सीतार उद्देश
रघुनाथ हइलेन शुनिया मूर्च्छित ※ ताँहारे प्रबोध देय सुग्रीव सुहृत्
दक्षिण दिकेते प्रभु रावणेर घर ※ से दिके गियाछे यत प्रधान वानर
अंगद गियाछे आर मंत्री जाम्बवान ※ कार्य्य-सम्पादक संगे वीर हनूमान
बुद्धिर सागर वड़ वीर हनूमान ※ अवश्य साधिबे कर्म्म, किछु नहे आन
तव कार्य्ये हनूमान बड़ह तत्पर ※ अवश्य हइबे सीता ताहार गोचर
बुद्धिते पण्डित हनूमान महाशय ※ हनूमान पावे सीता, ना करिह भय
स्थिर हइलेन राम राजार आश्वासे ※ रचिल किष्किध्याकाण्ड कवि कृत्तिवासे

राम-नाम महिमा

'राम' नाम ब'ल भाइ, मुखे बार-वार ※ भेवे देख राम विना गति नाइ आर
करिलेन अश्वमेध श्रीराम यतने ※ अश्वमेध-फल पाय रामायण शुने
एमत रामेर गुण कि दिबे तुलना ※ पादस्पर्शे शिला तर, नौका हय सोना
पार कर रामचन्द्र, पार कर मोरे ※ दीन देखि नौका राम, ल'येगेले दूरे
योग याग तंत्र मंत्र, जेइ जन जाने ※ तारे कि ताराबे राम तबे निजगुणे
ध्यान पूजा मंत्र तंत्रे जार नाहि ज्ञान ※ तारे यदि पार कर तबे भगवान

१ उनके हाथों २ नाव ।

बिना छिदाम, किनारे हेरौं, बोरौ भले उबारौ।
माँझी सहज सुभाव, साँझ लखि बिना छिदाम उतारौ॥
स्वामी पालन-प्रलय, सर्प-विष तुम विष-झारनहारे।
लीलानाथ सकल के मालिक, प्यादा सकल तिहारे॥
नाम पतितपावन किमि कहिये, बिना पतित पर दाया।
साधुन सद्गति सदा, असाधुन तारिय तौ प्रभु-माया॥
तव पद-रेनु अहिल्या तारी, क्षमहु नाथ! मम करनी।
भवसागर के पार हेतु तव युगुल चरन मम तरनी[1]॥
लाख तजौ, तव पद-नूपुर ह्वै बाजि राम धुनि गावौं।
राम सरित लखि, कहुँ विराम, असनान करौं, सुख पावौं॥
मकर, भवँर, पुनि प्रलय रहित शुचि शान्त राम-निर्झरनी,।
विमल मञ्जु मधुमय सलिला तजि अन्य किते मलहरनी॥
तृप्ति न, पावन नीर पान करि, पुनि-पुनि बढ़त पिपासा।
राम-सरित करि पार, न पुनि यहि दिसि की होय दुरासा॥

दो० राम गंग लों पार ह्वै जनि लौटन मन दीन।
नाम-अमिय करि पान, बहि, पतित होय जल-लीन॥

मोर संगे कड़ि नाइ, पार हब किसे ※ कर वा ना कर पार, कूले अछि ब'से
नेयेर स्वभाव आमि जानि भाले भाले ※ कड़ि ना पाइले पार करे सन्ध्याकाले
आपनि से भांग प्रभु, आपनि से गड़ ※ सर्प ह'ये दंश तुमि, ओझा ह'ये झाड़
सकलि तोमार लीला, सब तुमि पार ※ हाकिम ह'ये हुकुम दाओ, पेयादा ह'ये मार
अधम देखिया यदि दया ना करिबे ※ 'पतितपावन' नाम कि गुणे धरिबे
साधुजने तराइते सर्व्वदेव पारे ※ असाधु तरान जिनि, ठाकुर ब'लि ताँरे
अहल्या पाषाण ह'ये छिल दैववशे ※ मुक्ति पद पाइल तव चरण परशे
पार कर रामचन्द्र रघुकुलमणि ※ तरावारे दुटि पद क'रेछ तरणी
तुमि यदि छाड़ मोरे, आमि ना छाड़िब ※ बाजन नुपुर ह'ये चरने बाजिब
राम नदी ब'ये जाय देखह नयने ※ ताहे गिया स्नान कर, कूले बसि केने
से नदीर मध्ये नाइ कुम्भीर हांगर ※ झड़ वृष्टि ना पाइबे ताहार उपर
पिओ स्वच्छ सुशीतल सुमधुर जल ※ कोथाय चलिया जावे अन्तरेर मल
यतइ करिबे पान, ना मिटि'बे आशा ※ जल पिते पिते पुनः बाड़िबे पिपासा
वारेक जाइले राम-नदीर ओपार ※ एपारे आसिते नाहि हय, पुनर्व्वार
हेदे रे पामर लोक पार हबि यदि ※ पिओ राम-नामामृत, ब'ये जाय नदी

---

[1] नाव।

पार उतारत, अमित गुन, अन्त जासु मुख राम ।
सो प्रानी सुरपुर लहै, यमपुर तासु न काम ।। ६० ।।

दक्षिण पाताल में सीतान्वेषण में विफलता

विफल तीनि-दिसि सकल प्रयासू * दच्छिन दिसि पुनि-कथा प्रकासू
बिन्ध्य-माल्ल कपि-सैन प्रयासा[1] * बीतेउ सहज तहाँ इक मासा
मास अवधि बीती भय छावा * कपिगन जीवन-आस गवाँवा
दण्डक कानन ओर न छोरा * कपिन प्रवेश कीन बन घोरा
बीती कथा, विप्र सुत एका * वयस वर्ष दस छबि-अतिरेका[2]
वन्य-जन्तु द्विज-सुवन विनासा * विकल वनहिं द्विज शाप प्रकासा
जल फल फूल न इत संचारा * यहि बन, जीव न जन्तु गुजारा
कपिन विषम वन कीन प्रवेसू * तदपि सुलभ जनि सिय-उद्देसू
सम्मुख अन्य एक वन देखी * तहँ प्रवेश मन कीन विशेषी
कानन ज्यों कपिगन पग दीन्हा * दानव विकट नयनतर लीन्हा
भच्छहिं कीस, विकट दनु धावा * अंगद हाँक प्रकोपि लगावा
अहह लंकपति तैं दससीसा * तव तलास[3] भरमत भट कीसा

मृत्युकाले वारेक जे 'राम' बलि डाके * स्वर्गे जाय सेइ, यम दाँड़ाइया देखे
एमन रामेर गुण वर्णिते ना पारि * हेलाय तरिया जाबे, मुखे बल हरि

दक्षिण-पाताले सीतार अन्वेषणे वानरगणेर वैफल्य

तिन दिके विफल हइल अन्वेषन * दक्षिणदिकेर कथा शुनह एखन
दक्षिणेते यत ठाट करिल प्रयास * विन्ध्यगिरि अन्वेषिते गेल एकमास
मासेकेर अधिक हइले लागे डर * जीवनेर आशा छाड़े सकल वानर
विषम दण्डक वन नाहिक उद्देश * ताहाते वानर सैन्य करिल प्रवेश
पूर्व्वे तथा छिल एक ब्राह्मण-तनय * दश वर्ष वयस्क सुन्दर अतिशय
ए वनेर वन्य जन्तु ताहारे मारिल * पुत्र शोके ब्राह्मण वनेरे शाप दिल
तदवधि फल जल नाहिक सञ्चार * कोन जीवजन्तु तथा नाहि थाके आर
हेन वने वानरेरा करिल प्रवेश * तथा ना पाइल तारा सीतार उद्देश
अन्य वन ताहारा देखिल ये सम्मुखे * जानकीर अन्वेषणे सेइ वने ढुके
सकल वानर गेल वनेर भितर * देखे एक राक्षस देखिते भयंकर
धाइया आइल से वानर खाइवारे * रुषिल अंगद वीर जुझिते हाँकारे
आय बेटा वुझि तुइ लंकार रावण * आमरा भ्रमिया करि तार अन्वेषण

१ सीता की खोज करते २ अत्यंत सुन्दर ३ तलाश, खोज में ।

अभिरि बालिसुत निसिचर संगा ❋ दोउ भट मत्त लपिटि रनरंगा
मानत हार न वीर समाना ❋ जर्जर गात समर विधि नाना
अंगद प्रबल कबहुँ निसिचारी ❋ छिति डगमग तिन भार विचारी
दनु-उर अंगद मुष्टि प्रहारा ❋ दनु अचेत मुख शोनित-धारा

दो० दनुज मरन, पुनि खेद अति, शोध न सिय-लंकेस ।
बोले अंगद कपिन सन, बैठि बिटप-तर-देस ॥ ६१ ॥

हिय-कारन, आये यहि देसू ❋ मास अवधि सों विगत विसेसू
बिन सिय-खबरि नृपति पहँ जाहीं ❋ तौ अकाल परि प्रान नसाहीं
अंगद-वचन सबन मत एका ❋ छानत बन बन जतन अनेका
अंगद कहेउ, कुशल सिय केरी ❋ दुर्लभ, यदपि चतुर्दिसि हेरी
पितु-अनुजहिं मैं बाचा हारी ❋ लौटहुँ मातु सिया उद्धारी
चहुँ दिसि दूर कटक पग धारैं ❋ लखैं कौन किमि काज सवाँरैं
शोच न होनी[1], हित यहि माहीं ❋ भल लखि दखिन, चलैं प्रभु पाहीं
सिय न शोध, तौ सब जन मरहीं ❋ राम-मरन[2] पुनि सब अनुसरहीं
लखन-मरन परि[3] रघुपति-सोकू ❋ पुनि सुग्रीव गमन यमलोकू

अंगदे राक्षसे लागिगेल हुड़ा-हुड़ि ❋ हुड़ा-हुड़ि एड़िया उभये जड़ाजड़ि
कहे कारे नाहि जिने दुजने सोसर ❋ आँचड़े कामड़े दोंहे हइल जर्ज्जर
क्षणे हेंटे अंगद, से क्षणेक उपरे ❋ टलमल करे क्षिति उभयेर भारे
अंगद चापड़ मारे राक्षसेर बुके ❋ अचेतन हइल से रक्त उठे मुखे
राक्षसेरे मारिया रहिल सेइ वने ❋ किन्तु सीता ना पाइया सबे दुखी मने
विषादेते कपि सब वैसे गाछतले ❋ अंगद उठिया सब वानरेरे व'ले
आइलाम जानकीर जानिते विशेष ❋ हइल मासेर ऊर्द्ध, ना जाइव देश
सीता ना देखिया जाब सुग्रीवेर पाश ❋ जीवनेर आशा नाइ अवश्य विनाश
अंगदेर वाक्ये सबे हये एकमति ❋ वन डाल उटकिल करि पाति-पाति
ना पाइया अंगद कहिल खेमकथा ❋ देखिलाम सर्व्ववन, आर पाव कोथा
सत्य करि आछेन से खुड़ा महाशय ❋ सीता उद्धारिब आमि कहिनु निश्चय
चारि दिके वीरगण गेले दूर देशे ❋ देखि-देखि कोन वीर कि करिया आसे
जे होक से होक भावि, आपन कल्याण ❋ समस्त दक्षिण देखि जाब रामस्थान
सीता न पाइले हबे सबार मरण ❋ आगे मरिबेन राम, शेषे अन्यजन
तारपर लक्ष्मण मरिबे ताँर शोके ❋ अनन्तर सुग्रीव जाइबे यमलोके

---

१ होनहार २ सीता के वियोग में पहले राम का मरण ३ पड़कर ।

तबहिं सुरंग गहन लखि पाई * नीर न, कलरव[1], खग समुदाई
निकट न नीर न फल लवलेसू * पच्छिन सोर[2] अनन्त असेसू
कौतुक लखि मन चिन्तन करहीं * बिन जल खग-धुनि किमि सुनि परहीं
करत परस्पर तर्क विशेषा * देत ध्यान कपिगन तहँ देखा
कोटर-तट बड़ विटप लखाई * लीन छलांग चढ़े तरु जाई
चहुँ दिसि शाखन दृष्टि पसारी * लखत न कहुँ कछु शाखाचारी[2]
तरु महँ द्वार सुरंग विलोका * तम चहुँ, शशि न भानु-आलोका

दो० कोटर गहन प्रवेस किमि, सोचत होनी होय।
पौरुष धारि सुरंग बिच, धँसे बहुरि सब कोय ॥ ६२ ॥

कर महँ कर लीन्हे कपि-यूथा * चलत, करत मत[3] कीस-वरूथा
मर्म - सुरंग जानिबे जोगू * होनी भले मरहिं सब लोगू
कपिगन दृढ़ विचार इमि कीन्हा * निपट अँधेर द्वार पग दीन्हा
चलत अंध जिमि लकुटि[4] सहारे * गिरत, घोर तम, अभिरि बिचारे
हाँथन-हाँथ, न ओर न छोरा * कपिगन-मन विषाद घनघोरा
जोति न, दुर्गम पथ किमि धारन * सोचत फिरहिं, मरन केहि कारन !

चाहिते चाहिते देखे एकगोटा बिल * जल नाइ, पक्षी तथा करे किल-किल
खाल फल ना देखि, निकटे नाइ जल * नाना पक्षि कलरव शुनि जे केवल
आश्चर्य्य देखिया तारा भावे मने-मने * जल नाहि, शब्द शुनि किसेर कारने
केह ब'ले देखि इहा हय कि कारण * दाण्डाइया भावे तथा सब कपिगण
वड़ गाछ आछे एक से बिलेर पाड़े * लाफ दिया कपि सब सेइ गाछ चड़े
चारिदिके चाहे, नाहि हय दरशन * शाखाय शाखाय फिरे शाखामृग गण
गाछे थाकि देखे तारा सुड़ंगेर द्वार * चन्द्र सूर्य्य दीप्ति नाहि, महा अन्धकार
सुड़ंग देखिया तारा भावे मने-मने * जाइब इहार मध्ये आमरा केमने
जे होक से होक, साहसे करि भर * सकल वानर जाय सुड़ंग भितर
हाताहाति करि जाय सकल वानर * जाइते-जाइते युक्ति करिल विस्तर
दैवे हय होक आमा सबार मरन * वुझिव इहार धर्म्म, जानिब कारन
सुड़ंगे प्रवेशे एइ करिया विचार * सुड़ंगे चलिल सवे महा अन्धकार
अन्धकारे जाय येन हाथे करि लड़ि * हुड़ाहुड़ि करे कहे जाय गाय पड़ि
हाता-हाति जाय सवे, ना पाय सञ्चार * सकल वानर तबे भाविल असार
देखिते ना पाइ किछु जाइब केमने * फिरे चल, उठि गिया मरि कि कारने
केह व'ले नामियाछि या हवार हवे * एसेछ सुड़ंग पथे केन फिरे जावे

---

१ चहचहाना २ वानर ३ सलाह करते ४ लाठी।

विधि प्रणम्य[1], कोउ मनै विचारी ❋ दै पग पुनि किमि पाँव पछारी
चलत अंध, पथ बिन पहिचाने ❋ तृषा-लसित कपि-कण्ठ सुखाने
कपिगन पवन-तनय अनुसारे ❋ लकुटि लिये मनु अंध विचारे
वीर साहसी हनुमत आगे ❋ नयनहीन मनु पाछे लागे
कहत सुभट बरनहु हनुमाना ❋ कत[2] योजन प्रकाश अनुमाना ?
कतक दूरि चलि सुलभ प्रकासू ❋ कहेउ पवनसुत उचित न त्रासू
उर, सम रहत, शंक परिहरहू ❋ कपिगन सकल मोहिं अनुसरहू
शत योजन चलि कोटर पारा ❋ तहँ इक गृह अद्भुत आकारा
मारुति-वचन सवन बल आवा ❋ कपिन मन्द गति पैंज[3] वढ़ावा
बुद्धि-बृहस्पति, हनुमति वीरा ❋ कर धरि सबन लगायेउ तीरा

दो० क्रमशः पार सुरंग करि, उतरे संकठ पार ।
अखिल बानरन लखेउ पुनि, गृह अद्भुत आकार ॥ ६३ ॥

सुवरन तरु सुवरन प्राचीरा ❋ सुवरन मीन-पद्म तेहि नीरा
लखत स्वर्णमय नगरी सारी ❋ विस्मित कपिगन ताहि निहारी
सुरभि समीर फूल फल नाना ❋ रसना प्रवल क्षुधातुर प्राना
उदर न अन्न न जल, दुख पाये ❋ प्रचुर फूल-फल सबन लुभाये

अन्धकारे चलि जाय नाहि देखे वाट ❋ पिपासाय सकलेर गला हैल काठ
अन्धकारे जाय सबे आगे हनुमान ❋ हाते लड़ि करि जेन लये जाय कान
आगे हनूमान वीर चलिल साहसे ❋ अंधलोके चले येन पड़े आशेपाशे
वीर गण वले शुन पवननन्दन ❋ प्रकाश हइब गेले कतेक योजन
आर कत पथ गेले पाइब प्रकाश ❋ हनूमान कहे, केह ना करिओ त्रास
आमि संगे जाव तबे विषम कि आछे ❋ सकल वानरगण एस मोर पाछे
योजन शतेक गेले तबे हइ पार ❋ एक गृह आछे तथा अद्भुत आकार
हनूमान वाक्येते साहसे करि भर ❋ धीरे-धीरे चले तथा सकल वानर
हनूमान महावीर बुद्धे बृहस्पति ❋ सवार करिल पार करि हाताहाति
धीरे-धीरे संकटे सकले हय पार ❋ देखिते पाइल गृह अद्भुत आकार
सोनार प्राचीर तार स्वर्णमय गाछ ❋ स्वर्णपद्म जले देखे स्वर्णमय माछ
पुरीखान देखिल सकल स्वर्णमय ❋ देखिया वानरगण हइल विस्मय
अपूर्व्व पुरीर शोभा स्वर्ग सविशेष ❋ सबे व'ले, अनुमान एइ कोन देश
नाना फूल फल देखि सुगन्ध वातास ❋ क्षुधातुर सकले खाइते करि आश
अन्न जल पेटे नाइ क्षुधाय दुःखित ❋ फल फूल देखि मने वड़ हरषित

१ प्रणाम करके २ कितने ३ पैर, कदम ।

कन्या एक मात्र[1] तेंहि नगरी * तेंहि समीप कपि सेना डगरी[2]
त्रिशत प्रकोष्ठ[3] मध्य अतिरूपा * निवसि देति जग जोति अनूपा
कैधौं सुता उमा छबि-खानी * तिलोत्तमा रम्भा इन्द्रानी
कामधेनु-वत भृकुटि विशाला * सेंदुर अरुण सरिस छबि-भाला
चन्दन भाल बिन्दु कजरारी * चन्द्र हृदय छबि-श्याम पधारी
भ्रुव[4] बिच चन्दन विमल प्रकासा * मनहुँ उदित अर्द्धेन्दु[5] अकासा
बिन्दु - बिन्दु गोरोचन शोभा * अलका-तिलकावलि[6] मन लोभा
रतन जोति पद अंगुलि लाली * छबि अनूप गति हंस निराली
कटि किंकिणी शंख कर चूरी * नूपुर धुनि रुनझुन अति रूरी[7]
पीठ लालरी झलकति ऐसे * मणि-विद्रुम चूनरि तन जैसे
गौर वरन[8] तन सुरभि सुगंधा * महकत मनु चहुँ चम्पक-गन्धा
शंख - वलय[9], भुजबन्द सुहाये * अभरन विविध गात छबि छाये

दो० पायजेब, पायल, अमित आभूषन पद सोह ।
निरखि बिरागिन तासु छबि बरबस उपजत मोह ।। ६४ ।।

नगरी बिच एकाकी बाला * छटा अलोकत पुरी पताला
कपिगन सकल बन्दि पद रहहीं * पुनि कर जोरि पवनसुत कहहीं
हम पशु-वन्य सदा वनचारी * अति क्षुधार्त्त पथ-दिशा बिसारी

पुरीर भितरे मात्र एक कन्या आछे * सकल वानर गेल से कन्यार काछे
त्रिशत प्रकोष्ठ मध्ये हय से आवास * कन्यार रूपेते करे जगत् प्रकाश
सुन्दरी से कन्या बुझि हरेर घरणी * रम्भा तिलोत्तमा किंवा इन्द्रेर इन्द्राणी
शोभित युगल भ्रुरु येन कामधेनु * कपाले सिन्दूर फोटा प्रभातेरु भानु
चन्दन चन्द्रमा कोले कज्जलेर बिन्दु * भ्रुरु युग उपरेते उदित अर्द्ध-इन्दु
विन्दु-विन्दु गोरोचना शोभा करे अति * अलका तिलका रेखा अर्द्ध-अर्द्ध पाँति
रतन रञ्जित तार पदांगुलि सब * राजहंस जिनि गति रूपे अभिनव
करे शंख कंकण किंकिणी कटि माझे * रतन नूपुर पाय रुनुझुनु बाजे
पृष्ठे लोटे स्पष्ट रूपे प्रवालेर झाँपा * गौर गाय गन्ध करे गन्धराज चाँपा
कड़ा छड़ा बाजूबन्द शंखेर उपर * जेखाने जे शोभा करे परेछे विस्तर
दुइ पाये शोभित परेछे गोटा मल * ब्रह्मचारी आदि लोक देखिया पागल
पुरीर भितर कन्या आछे एकेश्वरी * कन्या रूपे आलो करे रसातल पुरी
ताहारा सकले वन्दे कन्यार चरन * जोड़ हाते ब'ले वीर पवननन्दन
आमरा बनेर पशु बने करि बासा * क्षुधाय न देखि पथे लागियाछे दिशा

---

१ अकेली २ धीरे धीरे पहुँची ३ कमरे ४ भौहें ५ अर्द्धचंद्र ६ मुख पर चन्दन रेखाचित्र ७ अति सुन्दर ८ गोरा रंग ९ शख की चूड़ी ।

शासन-भय परि सकल असारा * नतु जल, फल, वन मात्र गुजारा
दुर्जय भटकि रसातल आये * लहि तव दरस प्रान मनु पाये
अमित तोष तव दरसन पाई * पितु, पति-परिचय दीजिय माई!
यहि छन उत्कण्ठा मम येही * निज परिचय रूपसि[1]! मोंहि देही
नगर, निवास, तडाग-अधीपा * वरनउ सकल प्रसंग समीपा
दिव्य सरोवर पुरी अनूपा * आय फँसे कह अति भयरूपा
पवनतनय सों सुता बखाना * पितु सुमेरु मम गिरिन प्रधाना
मैं 'सम्भवा' सखी मम 'हेमा' * पुरी-चौकसी[2] मम नितनेमा
सखी-वचन, रच्छहुँ यहु देसू * सम्भव जनि मम ओट[3] प्रवेसू
मयदानव विरचित आवासू * हेमा-सह दनु इतै विलासू
गान नर्त्त गुन वेष अनूपा * हेमा त्रिभुवन-जयी सुरूपा
तेंहि छबि मुग्ध दनुज नहिं चैना * रति अनवरत[4] रमत दिन रैना
चिर विलास हेमहिं अति क्लेसू * उठत न गात छीन तन शेषू

दो० दनुज अत्ति[5] सों त्रसित अति, हेमा गई पलाय[6]।
जहाँ मिलै, धरि लावई, तेंहि हेरत दनु जाय ॥ ६५ ॥

राजभये हइयाछे जीवन असार * खोलि जुली वन आदि चाहिनु संसार
दुर्ज्जय पातालेते आमरा सबे आसि * तोमा देखि बाँचिलाम, मने हेन वासि
हइलाम वड़ तुष्ट तोमारे देखिया * परिचय देह कन्या, तुमि कार प्रिया
वड़इ कातर मोरा ह'येछि एखन * परिचय देह कन्या, तुमि कोन जन
काहार वसति घर कार सरोवर * कृपा करि कह कन्ये, कार अवान्तर
अपूर्व्व पुरीर शोभा दिव्य सरोवर * कार पुरी आइलाम, वड़ पाइ डर
कन्या ब'ले शुन वीर मम परिचय * सुमेरु पर्व्वत श्रेष्ठ मम पिता हय
सम्भवा आमार नाम, हेमा मोर सखी * हेमार वचने आमि एइ पुरी राखि
एइ आवासेर रक्षा आछे मम करे * आमा आगे करे केह आसिते ना पारे
मय नामे दानवेर रचित आवास * हेमा सह मय करे एखाने विलास
नृत्येते नर्त्तकी हेमा गानेते गायनी * रूपे वेशे गुणे हेमा त्रिभुवन जिनि
रूपे मयदानवेरे मुग्ध करे हेमा * अविरत रति करे तार नाइ क्षमा
रात्रि दिन रमणे हेमार हय क्लेश * उठिते ना पारे हेमा, प्राय तनु शेष
दानवेर शृंगारे पलाय हेमा त्रासे * दानव चलिल सेइ हेमार उद्देशे
जेखाने पाइवे तारे आनिवे धरिया * एइ वेला पलाओ हे सेइ पथ दिया

---

१ हे सुन्दरी ! २ पुरी की रक्षा ३ मेरी निगाह बचाकर ४ निरन्तर
५ हद से ज्यादा ६ भाग गई ।

निसिचर दुष्ट दुरंत कराला ❋ कपिगन तजहु देस तत्काला
सम्मति कासु[1], कासु उपदेसू ❋ दुर्जय कान पताल प्रवेसू ?
तेंहि आगमन न केंहु निस्तारा ❋ बेगि रसातल निकरहु पारा
बोले पवनतनय, सुनु गाथा ❋ हम कपि सकल दूत-रघुनाथा
दशरथ-सुत सर्वोपरि रामा ❋ महामहिम अतुलित गुणधामा
पिता-वचन धरि कानन आये ❋ संग-अनुज तिन लखन सुहाये
संग भामिनी सीय ललामा ❋ सहज स्वभाव सहचरी-रामा
तीनिउ जन निवसत वन देसू ❋ सीता हरन कीन लंकेसू
आकुल अतिशय विरहित-भामा ❋ वन-वन भ्रमत निरन्तर रामा
तहँ रघुपति-सुग्रीव मिताई ❋ भये उभय[2] मिलि उभय सहाई
कीन, बालि बधि, नृपति कपीसा[3] ❋ सिय-उद्धार भार कपि-सीसा
भरमत बन आयसु-कपिकेतू ❋ अब लौं मिलेउ न सिय-संकेतू
मास अवधि कपिपति निर्धारी ❋ सो व्यतीत उर अति भयकारी
सलिल हेतु हेरत तरु तीरा ❋ खोजत इत आये हम नीरा
साँच सबन अति फल-अभिलाषा ❋ उर ससपंज[4] चितै तुम पासा
फल-तृष्ना कपि सहज लुभाई ❋ पके अधपके तरु चढ़ि खाई

बड़ह दुरंत से दानव दुष्टजन ❋ एखान हइते जाह सब कपिगन
कोन जन हइते पाइले उपदेश ❋ दुर्ज्जय पाताले केन करिले प्रवेश
शीघ्र जाह, बिलम्ब कि हेतु कर आर ❋ दानव करिले कारो नाहिक निस्तार
हनूमान ब'ले कन्या शुन विवरन ❋ आमरा रामेर दूत सर्व्व कपिगन
रामचन्द्र दशरथराजार कुमार ❋ सर्व्वज्येष्ठ गुणश्रेष्ठ महिमा अपार
आइलेन पितृ-सत्य पालिते कानन ❋ ताँर संगे आइलेन अनुज लक्ष्मण
श्रीराम-रमणी सीता परमा सुन्दरी ❋ स्वभावतः सतत रामेर सहचरी
बने बास करियाछिलेन तिन जन ❋ रामेर रमणी सीता हरिल रावण
सीतार बिरहे राम हइया कातर ❋ वने वने भ्रमण करेन निरन्तर
दैवयोगे सुग्रीवेर सहित मिलन ❋ हइलेक उभयेर सख्य संघटन
बालि बधि, राम राज्य दिलेन सुग्रीवे ❋ सुग्रीव करिल सत्य सीता उद्धारिबे
सुग्रीवेर आदेशे बेड़ाइ नाना देश ❋ अद्यापि ना पाइलाम सीतार उद्देश
मासकेर तरे राजा करिल निश्चय ❋ मासकेर अधिक हैल बड़ बासि भय
गाछ हैते देखिया आमरा ए सकल ❋ जलेर उद्देशे आइलाम एइ स्थल
मुखे कथा कहे तारा फल पाने चाय ❋ मने तोलापाड़ा करे कन्यारे डराय
वानर देखिया फल हइब विकल ❋ साध हय पेड़े खाय काँचा पाका फल

१ किसकी २ दोनो ३ सुग्रीव को राजपद ४ सोच-विचार ।

दो० कपि क्षुधार्त्त, लखि सुन्दरी, बोली ममता पाय।
खायँ सर्वथा मोद भरि, कपिगन तरु फल जाय ॥ ६६ ॥

खाहु जितै रुचि फल मनमाने ॥ कपिगन सकल सुनत हरषाने
मन भावै सो बैद बताई ॥ उछरि छलाँग भरेउ तरु जाई
खायँ दुहुन कर डारि नसावैं ॥ भरि कपोल कपि बोलि न पावैं
मृदु मद-गंध ताल-तरु जाई ॥ भरि-भरि उदरन छुधा नसाई
अति परिपक्व दाबि रस लेहीं ॥ अधखाये चलाय कछु देहीं
चूसि, चिचोरि, उदर रस भरहीं ॥ मन-मन मगन, मोद उर धरहीं
खाये जहँ लौं उदर समाये ॥ दूभर[1] चलब, पेट तनि आये
कपिगन तृप्ति पाय सब भाँती ॥ किय सुन्दरिहिं ? विनय प्रणिपाती
तव प्रसाद निदरैं सब क्लेसू ॥ केहि पथ जाहिं, करौ उपदेसू
जब लौं दनुज न इतै प्रवेसा ॥ तेहि विच चलैं त्यागि यह देसा
दनु-भय विपुल, सुमुखि ! मन दीजै ॥ बेगि पन्थ दै बाहिर कीजै
निर्देसत पथ गमनत बाला ॥ कपिन अनुसरन किय तत्काला
चलत, घूमि पुनि लखत पछारी ॥ आवै कहुँ न दनुज भयकारी

वानरेर इच्छा बुझि कन्या मने गणि ॥ फल खाइवारे कन्या वलिल आपनि
वड़ह क्षुधार्त्त देखि हइल ममता ॥ कन्या ब'ले फल खाओ, दिलाम सर्व्वथा
इच्छामत फल खाओ यत आसे मने ॥ शुनिया हरिप चित्त यत कपिगणे
एक चाय आर आज्ञा पाइल वानर ॥ लाफ दिया उठे गिया गाछेर उपर
दुइ हाते फल खाय भांगे आर डाल ॥ मदगन्धे पाता खाय पूर्ण करि गाल
पक्व ताल लइया बसिल शाखापरे ॥ क्षुधाय कातर खाय यत पेटे धरे
कतगुला पाका फल निङाड़िया खाय ॥ आध खाओया करि कत टानिया फेलाय
कतक कामड़े खाय चुषि कत फल ॥ मने मने खुसि रसे उदर पूरिल
फल फूल खाइया करिल माथा हेंट ॥ नड़िते चड़िते नारे, भारि हइल पेट
करिया वानरगण उदर पूरण ॥ निवेदन करि वन्दे कन्यार चरण
तोमार प्रसादेते खण्डिब सब क्लेश ॥ कोन पथे वाहिरिब कह उपदेश
यावत् एखाने कन्या, दानव ना आसे ॥ तावत् वाहिर हैया जाइ अन्यदेशे
वड़ भय हय कन्ये, दानवेर तरे ॥ त्वराय बाहिर कर सकल वानरे
पथ देखाइते कन्या आपनि चलिल ॥ सकल वानर तार पाछे गोड़ाइल
पलाय वानरगण, पाछू पाने चाय ॥ दानव आसिया पाछे पश्चाते खेदाय

---

१ अति कठिन।

मयदानव सों बचैं न प्राना ✻ तान सुन्दरी मात्र लखाना
द्वार सुरंग पार किय बाला ✻ लखहु कोसगन सिन्धु विशाला
सलिल अगम यहु दक्षिण सागर ✻बिन्ध्य-मलय इत, बुद्धि-उजागर!

छ० रामजन्म सों साठि सहस वत्सर पूरुब रामायन।
भवतारन जो, बालमीकि मुनि कीन ब्रह्म-गुन-गायन॥
गुह पर दया, तरनि पाषाणी, वेद-अगम नारायन।
'मरा-मरा' कहि राम कृपा सों बाल्मीकि तारायन॥

दो० बाल्मीकि बन्दन प्रथम, पुनि बन्दन कृतिवास।
मंजुल भाषा भारती महँ मृदु काव्य प्रकास॥ ६७॥

(सीता अन्वेषणार्थ अंगद-हनुमानादि में मंत्रणा)

निकरि रसातल सों कपि आये ✻ सकल अंगदहिं सीस नवाये
खोजेउ सबन प्रवेसि पताला ✻ कतहुँ न सिया, न लंक-भुवाला
कहेउ बहोरि बालि-सुत बीरा ✻ सुनहु कथन मम सब धरि धीरा
खोजहिं सीय—अवधि इक मासा ✻ अवधि-पार कपि सबन बिनासा
बकसैं[1] अन्य भले, सुग्रीवा ✻ निसिचय हरन करैं मम जीवा
जेठ बन्धु जिन सहज निपाता ✻ तिन समीप मैं कौन बिसाता[2]

पराणे मारिबे सबे कार नाहि रक्षा ✻ उपाय केवल देखि, ए कन्या सपक्षा
सुड़ंगेर द्वारे कन्या हइया बाहिर ✻ देखाय वानर प्रति सागर गभीर
एइ जल देख सबे सागर दक्षिण ✻ विन्ध्याद्रि मलयगिरि देखह प्रवीण
श्रीरामेर आगे षाटि सहस्र वत्सर ✻ अनागत पुराण रचिल मुनिवर
वाल्मीकि बन्दिया कृत्तिवास विचक्षण ✻ शुभक्षणे प्रवेशिल वेद - रामायण
चण्डाले करिल दया बड़ सकरुण ✻ पाषाणेते निशान रहिल तार गुण
तारक ब्रह्म राम नाम अनन्त महिमा ✻ चारि वेदे विचारिया दिते नारे सीमा
असीम रामेरे गुण कि बलिते जानि ✻ मरा मंत्र जपिया बालमीकि हैल मुनि

सीता अन्वेषणार्थ हनूमानादिर मन्त्रणा

पाताल हइते उठि सकल वानर ✻ जोड़ हाते दाण्डाइल अंगद गोचर
पाताले प्रवेशि मोरा सकल वानर ✻ कोथाओ ना देखिलाम सीता लंकेश्वर
बलेन अंगद वीर, हे वानरगण ✻ सावधान हैया शुन आमार वचन
सीता-वार्त्ता जानिते हइल एक मास ✻ मासेर अधिक हैले सबार विनाश
अन्येर जे होक मम संशय जीवन ✻ सुग्रीव मारिते मोरे करियाछे पन
भ्रातारे मारिते यार ना हैल ममता ✻ आमारे मारिबे से एवा कोन कथा

---

१ बखश दे २ क्या मूल्य है।

दच्छिन-कर करि पावक साखी ✻ सो कपीस जनि छन भर राखी
पितु विहीन, किय प्रभु युवराजू ✻ भूलि नृपति मम करै अकाजू
जनि पितृव्य[1] मोह मम हेतू ✻ अवसर पाय हनै कपिकेतू
जनक-अनुज सों मम निस्तारा ✻ कतहुँ न कपिगन मम उद्धारा
कातर अंगद विनय प्रमाना ✻ आस न जीव, तजब अब प्राना
'तारक' कीस बुद्धि बहु पावा ✻ बालिसुतहिं बहु युक्ति बुझावा
भय-सुग्रीव जाहिं नहिं देसू ✻ सब चलि करहिं पताल प्रवेसू
राज्य - भोग, सुबरन आवासू ✻ परम मोद तहँ सुखद निवासू
सलिल दिव्य सेवन फल फूला ✻ तहँ सुग्रीव केर जनि शूला
का करि सकै तहाँ कपिनाथा ✻ तहाँ न भय लछिमन-रघुनाथा

दो० कपिगन ! सुनहु निचिन्त[2] ह्वै बसइँ रसातल जाय ।
राम लखन सुग्रीव कर, तहँ जनि चलै उपाय ॥ ६८ ॥

तारक-कथन सबन मन माना ✻ सो सुनि मनन करत हनुमाना
वचन प्रमाद, न समुचित बानी ✻ धरि सुबुद्धि निज युक्ति बखानी
किमि मम रहत राम-हित हानी ✻ सभा निहारि कहत मृदुबानी
सीस भार, सो सकल बिसारा ✻ अन्य काज, युवराज ! सम्हारा

दक्षिण हस्तेते राम अग्नि साक्षी करे ✻ यत हित करिलेन सकल पासरे
आमि युवराज नहि पिता विद्यमाने ✻ से पद दिलेन राम आमारे विधाने
खुड़ार गणेते नहे आमार सम्बन्ध ✻ आमारे मारिते खुड़ा करेन प्रबन्ध
आमारे मारिबे खुड़ा, ना हय खण्डन ✻ आमार निस्तार नाहि, शुन कपिगण
जोड़ हाते कपिगणे कहिछे काहिनी ✻ जीवनेर आशा नाहि त्यजिब पराणी
तारक वानर छिल बुद्धे बृहस्पति ✻ अंगदेरे बुझाय से उत्तम प्रकृति
सुग्रीवेर भय हेतु ना जाइब देश ✻ सकले पाताले गिया करिव प्रवेश
राज्यभोग आछे तथा सोनार आवास ✻ परम आनन्दे तथा करिव निवास
फूल फल खाब तथा जल सुवासित ✻ सुग्रीवेर भय यथा ना कर किञ्चित्
कि करिबे सुग्रीव से श्रीराम-लक्ष्मण ✻ कोन भय ना करिह, शुन मित्रगण
निश्चिन्ते थाकिब गिया-पाताल भुवने ✻ कि करिबे सुग्रीव श्रीराम-लक्ष्मणे
तारकेर वाक्ये सबे करे अनुमति ✻ मने मने हनूमान करेन युकति
प्रमाद वचन नाहि भावे हनु वीर ✻ आपनार मने बुद्धि करिलेन स्थिर
मोर विद्यमाने राम कार्य्ये हय हानि ✻ सभार मध्येते हनूमान कहे वानी
हनूमान ब'लेन अंगद युवराज ✻ एक कार्य्ये आसि तुमि कर अन्य काज

---

१ चाचा २ निश्चिन्त, बेखटके ।

लिये कपिन सोचत विपरीता ❋ उचित न तव यह कथन प्रतीता
भजहु[1] पताल कुमति अतिरेकू[2] ❋ धर्माधर्म न होय विवेकू
सकल सुकण्ठ विदित, कहँ त्राना ❋ कतहुँ पलायन जनि कल्याना
साँच न आँच, कहौं तुम पाहीं ❋ कपिगन तव न अनुसरन जाहीं
किष्किधा तिय-सुत-परिवारा ❋ तिन तजि किमि तव संग गुजारा
तव हित पुत्र-कलत्र न त्यागी ❋ भरमहु बन अकेल हतभागी!
जो पताल चलि उबरैं प्राना ❋ जियत सर्वदा अपजस नाना
तव पितु हनेउ एक प्रभु सायक ❋ कहँ निस्तार बिना रघुनायक
रामहिं कपिपति[3] खबरि जनाये ❋ बसि पताल केहि बिधि बचि पाये
किमि निर्भय, कहु किमि सुखदायक ❋ द्वार सुरंग हनै प्रभु-सायक
पूजित जगत विष्णु अवतारा ❋ तिन रघुपति प्रति किमि कुविचारा
किमि दुर्बुद्धि-वचन युवराजा ❋ वीर पलायन! कहत न लाजा

दो० यतक दूरि पथ जाइ पुनि, चौथाई बिन पार।
पौरुष तजि, अनुचित इतै, धरिबो अशुभ विचार ॥ ६६ ॥

मिलै न सिय, यदि लखि सब देसू ❋ लहैं सरन चलि कीस-नरेसू
सदा सुकण्ठ धर्म उर धरहीं ❋ बूझि दोष-गुन समुचित करहीं

कोन युक्ति कर तुमि ल'ये कपिगन ❋ तोमार उचित नहे ए सब कथन
पलाइया जाबे तुमि पाताल भुवने ❋ धर्म्माधर्म्म किछु ना भाविले केन मने
पलाइबे कोथाय, सुग्रीव सब जाने ❋ पलाइया बाँचिते नारिबे कोन खाने
उचित ब'लिते तोमा आमार कि डर ❋ तोमार सहित केबा पलाबे वानर
स्त्री पुत्र लइया करे किष्किन्ध्याय वास ❋ तोमा लागि के छाड़िबे स्त्री-पुत्रेर आश
तोमा हेतु स्त्री-पुत्र छाड़िबे कोन जन ❋ एकाकी केवल तुमि फिर वने-वन
मने कर पलाइया पावे अव्याहति ❋ यतकाले जीबे तव थाकिबे अख्याति
तोमार बापेरे राम मारे एक बाणे ❋ ताँर हाते छाड़ाइबे गिया कोन खाने
सुग्रीव वलिछे रामे बारता सम्प्रति ❋ पाताले बसिया तुमि न पाबे निष्कृति
निर्भये केमने तुमि पाइवे निस्तार ❋ रामबाणे मुक्त हबे सुड़ंगेर द्वार
विष्णु अवतार राम जगते पूजित ❋ तोमार एमन युक्ति ना हय उचित
निर्व्बुद्धि तोमारे ब'लि, शुन युवराज ❋ वीर हये पलाइबे, मुखे नाहि लाज
यतदूर जावे तार चोटि नाहि आसि ❋ अनर्थक युक्ति कर, भाल नाहि बासि
सर्व्व देश देख यदि नहे दरशन ❋ सुग्रीवेर ठाइ गिया लइब शरण
धार्म्मिक सुग्रीव राजा धर्म्मेर चरित ❋ दोष-गुण बुझिया से करिबे उचित

---

१ भागो २ सीमा पार (अतिरेक) ३ सुग्रीव द्वारा राम को।

भय बस निपट पलायन दोषू ✻ चलि प्रभु-सरन लहैं तिन तोषू
नृप-आयसु निरखहिं सब देसा ✻ अमिट दैवगति अर्पहिं शेसा
नृप तटस्थ करि तुमहिं प्रधाना ✻ तव प्रसाद भय हमहिं न ज्ञाना
सभा मध्य हनुमान लजावा ✻ अंगद तिनहिं प्रकोपि सुनावा
जेठ सरिस-पितु शास्त्रन गावा ✻ तासु तीय नृप नारि बनावा
नारिहिं पर-जन तनय सरूपा ✻ पर-नारी पुनि जननी रूपा
पितु सम अग्रज[1] शास्त्र विधाना ✻ तेहि बनिता पुनि जननि समाना
सो सुग्रीव हरति सुख पावा ✻ सिय हित मोहिं कुदेस पठावा
राम काज बिन होय विषादा ✻ मारुति ! मरन मोर अविवादा[2]
तुम सुग्रीव सधर्म बखाना ✻ धर्माधर्म जिनहिं जनि ज्ञाना
राम-लखन पुरुषार्थ सराहा ✻ छल करि हनेउ बालि नरनाहा
सम्मुख समर लेत जो रामा ✻ लखत जनक मम कस बलधामा
करत गुजारिस[3] जो पितु पाहीं ✻ धरि लावत रावन छिन माहीं
जानत, कहँ सिय ? कहँ लंकेसू ? ✻ वृथा न कपि भरमत दिग्देसू

दो० सन्ध्या तर्पन नित करत, चारिउ सिंधु समीप ।
तुमहिं अजान न पवनसुत, भुजबल बालि महीप ।। ७० ।।

भय करि पलाइले बड़ हवे दोष ✻ हइले शरणापन्न रामेर सन्तोष
जे देश ब'लिल राजा जाइव से देशे ✻ तारपर या हवार हइबेक शेषे
तोमारे प्रधान करि से सुग्रीव वैसे ✻ तोमार प्रसादे आमादेर भय किसे
कुपिल अंगद हनूमानेर वचने ✻ लज्जा दिल हनुमान सभा विद्यमाने
ज्येष्ठभ्रातृ-रमणी राजार विवाहिता ✻ शास्त्रमत ज्येष्ठे हय कनिष्ठेर पिता
अपर पुरुषे माता पुत्र हेन गणि ✻ अपरन्त परजाया जेमन जननी
ज्येष्ठ भाइ पित सम सर्व्व शास्त्रे कय ✻ तार पत्नी केवल मायेर तुल्य हय
ज्येष्ठभ्रातृ जाया हरे किसेर बाखान ✻ जानिते सीतार वार्त्ता पाठाय कुस्थान
कार्य्य ना करिले राम हइवेन दुःखी ✻ सर्व्वथा आमार मृत्यु हनूमान देखि
धर्म्माधर्म्म तार देखि वीर हनूमान ✻ कोन कार्य्ये भाल नहे सुग्रीवेर ज्ञान
श्रीराम-लक्ष्मण कार्य्य करिलेन यत ✻ चोरा-युद्धे आमार पितारे करे हत
सम्मुख समर यदि करितेन पिता ✻ के केमन वीर तुमि तवे त जानिता
राम केन ना ब'लिलेन आमार बापेरे ✻ गले धरि आनितेन राजा लंकेश्वरे
जेखाने थाकित सीता, जानित रावणे ✻ तवे केन सीता लागि दुःख कपिगणे
तुमि किवा नाहि जान वीर हनूमान ✻ पिता चारि सागरे करे सन्ध्या स्नान

---

१ बड़ा भाई २ निर्विवाद, निश्चय ३ प्रार्थना ।

करि दिग्विजय लंकपति धावा * किष्किन्धा पितु जीतन आवा
आह्निक-रत[1] पितु सागर तीरा * लखेउ न गृह तिन रावन वीरा
पृष्ठ भाग रावन धरि बाली * स-बल कीन दशमाथ कुचाली
ध्यान भंग जनि, पूँछ घुमाई * बाँधि लंकपति सिंधु डुबाई
योजन पूँछ-कपीस पचासा * बाँधि दनुज पुनि लीन अकासा
छन बोरत अकास छन ताना[2] * ऊछू[3] जात कण्ठ-गत प्राना
चारि सिंधु जप-तप अवशेसू * साँझ आगमन पितु निज देसू
तहँ रावन दशशीस नवाई * किष्किधा तृण दाँत दबाई
पिता दया-बस छाँड़ेउ तेही * तत्क्षण लंक शरण दनु लेही
सो रावन अब सिया चुरावा * तेहि कारन हम सब दुख पावा
मम पितु-शरण लेत जो रामा * खल दसमुख पठवत यमधामा
राम भूप ह्वै कीन कुकर्मा * पितु निपाति किय पूर्ण अधर्मा
निज अधरम दुख रामहिं नाना * धर्म-मर्म सोचहु हनुमाना
राम काज बिन सधे विषादू * सबबिधि मोर मरन अवसादू[4]
सुग्रीवहिं जस, मरन हमारा * बिन सिय-शोध तजैं संसारा

दिग्विजय करिया से बेड़ाय रावण * पितारे जिनिते एल किष्किध्या भुवन
रावण देखिल, मोर बाप नाहि घरे * आह्निक करेन पिता सागरेर तीरे
पाछू बाटे रावण धरिल मोर बापे * सापटिया धरिल से अतुल प्रतापे
ध्यान भंग ना हइल लेजेते बाँधिया * सागरेते रावणेरे फेले डुबाइया
दीर्घल पितार लेज योजन पञ्चाश * रावणे तोलेन पिता उपर आकाश
क्षणे तुलि नभःपरे डुबान से नीरे * नाकानि डुबानि खेये बेटा शेषे मरे
चारि सागरेर तथा हय अवशेष * सन्ध्याकाले मम पिता आइलेन देश
रावणेर दशमाथा करे नड़वड़ * किष्किन्ध्याय आसे बेटा दाँते करे खड़
दया करि मोर बाप छाड़ेन ताहारे * लंकाय पलाये गेल रावण तत्परे
से रावण आसिया सीतारे करे चुरि * इहार कारणे आमरा सबे मारि
यदि राम लइलेन पितार शरण * कोन तुच्छ पितार से पापिष्ठ रावण
पितारे मारिया राम करिल कुकर्म्म * राजा हैया करिलेन सम्पूर्ण अधर्म्म
आपन अधर्म्मे राम एत दुःखे पान * धर्म्ममत भाव तुमि वीर हनूमान
कार्य्य ना करिले राम हइबेन दुःखी * सब कार्य्ये हनूमान मोर मृत्यु देखि
सुग्रीवेर हबे यश आमार मरन * सीता ना पाइले आमि त्यजिब जीवन

---

१ नित्य संध्या-पूजन में लगे २ उठाकर अन्तरिक्ष मे तान लेते थे ३ नाक-मुँह में पानी भर जाना ४ दुःख।

कहेउ पवनसुत, फुर[1] तव बानी * अग्रज-तीय मातु सम जानी

दो० किन्तु मनुज हित शास्त्र-मत, बन-पसु तासु न भार।
नृप आयसु सत खोजि चहुँ, पुनि सब करहिं विचार॥

दो० राम-नाम नित अस्मरन, पातक करत विनास।
किष्किधा पावन चरित, गावत कवि कृतिवास॥ ७१॥

सकल वानरों द्वारा प्राणोत्सर्ग-व्रत

सुनि हनुमत् जिमि बैन उचारा * सभा, कहति पुनि बालिकुमारा
पुनि पुनि एक कथा तुम वरना * किन्तु लखत सब विधि मम मरना
भल सुग्रीव न रघुपति नीके * निश्चय चहुँ संकठ मम जी[2] के
पितु सम जेठ बन्धु-वध-हेतू * तेंहि सुत किमि बकसैं[3] कपिकेतू
मातु चरन मम कहेउ प्रनामा * सुनि मम मरन मातु-यमधामा[4]
कपि सम्मकक्ष परस्पर बन्दहिं * रोवत सबजन घेरि अंगदहिं
बिन अंगदकुमार गति नाहीं * तिन सहमरण रुचिर सब काहीं
सकल बानरन युक्ति सिलाई * तजि अहार जिय-आस गवाँई
करि अस्नान पूर्व मुख कीन्हे * दुख-बस अनाहार ब्रत लीन्हे

हनुमान ब'ले यत मिथ्या किछु नय * ज्येष्ठेर रमणी हैले मातृ तुल्य हय
आमरा वानर पशु, जाति इहा पारि * कहिले जे शास्त्र ताहा हय मानुषेरि
यत देश ब'ले राजा खुँजि एक वार * पश्चाते करिब आमि इहार विचार
रामनाम स्मरणेते पापेर विनाश * रचिल किष्किन्ध्या काण्ड कवि कृत्तिवास

वानर सकलेर प्रायोपवेशन

एतेक ब'लिल यदि वीर हनूमान * पुनश्च अंगद व'ले सबा विद्यमान
पुनः पुनः ब'ल तुमि पवननन्दन * जे ब'ल से ब'ल मोर अवश्य मरन
श्रीराम सुग्रीव एरा कभु नहे भाल * निश्चय जानिह अंगदेर प्राण गेल
ज्येष्ठ भाइ पितृ सम मारिल हेलाय * तार पुत्रे मारिबे सुग्रीव कोन दाय
दण्डवत जानाइओ मायेर चरणे * प्राण छाड़िबेन माता आमार मरणे
सोसर वानरगण परस्पर बन्दे * अंगदे बेड़िया सव वानरेरा कान्दे
अंगद कुमार बइ आर नइ गति * मरिब अंगद संगे करिल युकति
सकल वानर युक्ति एइ करि सार * जीवनेर आशा छाड़ि त्यजिल आहार
स्नान करि कपिगण बैसे पूर्व्वमुखे * उपवास करिया रहिल मनोदुःखे

---

१ सत्य २ प्राण ३ प्राणदान दे ४ माता प्राण त्याग करेगी।

कपि प्रायोपवेश[1] उपवासा ❋ कृत्तिवास इमि कीन प्रकासा

रामायण-श्रवण से सम्पाति-पक्षोदय

अतिबल गरुड़ सुवन खग जाती ❋ विन्ध्य-शिखर निवसति सम्पाती
मुख उठाय कपि-कटक निहारा ❋ चहत सबन खग करै अहारा
अंगद कहेउ, सुनहु हनुमाना ❋ जो मम कथन सकल करि ध्याना
सिय की खोज इतै सब आये ❋ सिय हित जीव विदेस गवाँये
राम-काज कोंहि दीन न आयू ❋ सिय हित खगपति मरेउ जटायू
अतिशय समर कीन खगनाथा ❋ गरुड़तनय लहि स्वर्ग सनाथा

दो० सीय-हरन दशमाथ किय, भ्रमन राम वन हेत।
सिय हित, मरैं विदेस परि, कपिगन कटक समेत ॥ ७२ ॥

मरन-जटायु सुनत सम्पाती ❋ शोकाकुल सुनि बन्धु-निपाती
विधिबस जरि मम पंख विनासा ❋ सकहुँ न उड़ि आवहुँ तव पासा
तव मुख सुनहुँ जटायु-विनासा ❋ अन्त न शोक नितांत निरासा
कपिन कहेउ अति विहग[2] सयाना ❋ गये समीप बचैं जनि प्राना
पंगु, जरठ, दुर्बल ! तेंहि पासा ❋ जातै विहग छलै करि ग्रासा
यदपि मरन, बोले हनुमाना ❋ वृद्धहिं चलि कीजिय सन्धाना[3]

मरिवारे वानर करिल उपवास ❋ रचिल किष्किन्ध्याकाण्ड कवि कृत्तिवास

रामायण-श्रवणे सम्पातिर पक्षोदय

गरुड़ेर पुत्र महाबल पक्षिजाति ❋ बैसे बिन्ध्यपर्व्वतेर शिखरे सम्पाति
वानर कटक माथा तुलि ऊर्द्ध्व देखे ❋ अनुमान करे, एइ खाइबे सबाके
अंगद उठिया ब'ले शुन हनुमान ❋ आमार बचने तुमि कर अवधान
सीतार उद्देशे आइलाम सर्व्वजन ❋ सीता लागि हाराइब विदेशे जीवन
कोन जन ना करिल श्रीरामेर काज ❋ सीता लागि मरिल जटायु पक्षिराज
प्राण दिल पक्षिराज करिया समर ❋ अनायासे स्वर्गे गेल गरुड़-तनय
राम वनवास हेतु सीतार हरण ❋ सीता लागि विदेशेते मरे कपिगण
सम्पाति ब'लेन के जटायु मृत्यु कहे ❋ सोदरेर मृत्यु शुने मोर प्राण दहे
विधिर विपाके पाखा पुड़िया विनाश ❋ उड़िया जाइते नारि तोमादेर पाश
तोमादेर मुखे शुनि जटायु-विनाश ❋ आजि शोके हइलाम नितान्त निराश
कपिगण ब'ले पक्षी बड़ह सियान ❋ निकटे आसिते चाहे लइते पराण
नड़िते चड़िते नारे जराते दुर्ब्बल ❋ सम्मुखे पाइले गिलिवेक करि छल
हनूमान ब'ले भाइ अवश्य मरण ❋ ए वृद्ध पक्षीके आमि जिज्ञासि कारण

१ मृत्यु-आवाहन हेतु अनशन २ पक्षी ३ पूछताछ।

हनुमत्-मत कपिगन सिर धारा * कर गहि भल खगनाथ सम्हारा
खग राजत जहँ कीस-समाजू * पुनि कर जोरि कहत युवराजू
बालि-सुकण्ठ विदित दुइ भाई * रही कलह चिरकाल समाई
पिता-वचन वन आये रामा * तिन अनुसरेउ लखन, सिय बामा
बन्धु भ्रमत वन दोउ, सिय साथा * सूने[1] सीय हरी दसमाथा
राम-लखन भरमत सिय हेतू * मग सुग्रीव मिलेउ कपिकेतू
परिचय दीन, मिलन दोउ करहीं * दोउ निज व्यथा परस्पर कहहीं
अगिनि साक्षी युगुल-मिताई * करैं परस्पर उभय सहाई
सत्य बँधे, दोउ भये सनेही * यहि विधि हम खोजत बैदेही
मम पितु मारि, राम प्रन साधा * सुग्रीवहिं दिय राजु अगाधा

दो० पिता-मरन उर क्लेस मम, अति दारुन दुख दीन ।
वन-बन भरमत, आय इत, आजु दरस तव कीन ।। ७३ ।।

समिटे आय कीस दिग्देसा * राम काज हित नृप - आदेसा
मास अवधि[2] कपिपति रखि दीनी * अवधि वितीत, कहा जनु होनी
परिचय इमि, खगनाथ! हमारा * सुनहु जटायु - मरन - बिस्तारा
मरन-जटायु कथा विधि एही * दसमुख हरन कीन बैदेही

हनूर वचने सबे दिल अनुमति * आनिलेन धराधरि करिया सम्पाति
पक्षीराजे बसाइल वानर समाज * जोड़ हाते कहिल अंगद युवराज
बालि-सुग्रीवेर जान दुइ सहोदर * कतकाल कोन्दल करिल परस्पर
पितृसत्य पालिते श्रीराम आसे वन * संगे गोड़ाइल ताँर जानकी-लक्ष्मण
सीता सह दुइ भाइ भ्रमे वने वन * घर शून्य पेये सीता हरिल रावन
सीता लागि भ्रमेन जे श्रीराम-लक्ष्मन * पथे सुग्रीवेर संगे हइल मिलन
सुग्रीवेरे दिलेन आपनि परिचय * आपन दुःखेर कथा दुइ जने कय
अग्नि साक्षी करि दुइजने सत्य करे * परस्पर उपकार करे परस्परे
दुइजने सत्येबद्ध हइल मिलन * सेइ हेतु करि मोरा सीता-अन्वेषन
राम सत्य पालेन मारिया मोर वापे * सुग्रीवेरे राज्य देन दुर्ज्जय प्रतापे
पिता मरिलेन मने हइलाम दुःखी * वने वने फिरि आमि, देख तार साक्षी
वानर आइल यत छिल देशे-देशे * रामकार्य्य साधिवारे सुग्रीव आदेशे
एक मास नियम करिल महाशय * मासेकेर बाड़ा हैले ना जानि कि हय
परिचय दिलाम आमरा कपिगण * एखन शुनह जटायूर विवरण
जटायु पक्षीर शुन मरणेर कथा * रावण हरिया निल श्रीरामेर सीता

---

१ अकेले में २ मियाद ।

गरुड़-तनय खग नाम जटाई ❊ गिरि सों सुनत रुदन-सियमाई
रथहिं पटकि कर[1], खाति पछारा ❊ 'राम-लखन' कहि रुदन अपारा
सोचत खग मनु कहुँ लंकेसू ❊ हरि मैथिली जात निज देसू
वृद्ध विहंग जरठ चिरकाला ❊ पंख सम्हारि उठेउ तत्काला
सीता-रुदन परत तेहि काना ❊ होय न भ्रम, खगपति अनुमाना
धाय गगन चहुँ लखत अकासा ❊ रावन-रथ छबि-सीय प्रकासा
भनत जटायु वनै[2] इत सीता ❊ हरेउ दनुज, उर होय प्रतीता
पंख पसारि पन्थ अवरोधा ❊ हनत पंख दुर्वचन विरोधा
नभ सों लखेउ, न कहुँ रघुवीरा ❊ दसन-नखाहत[3] किय दनुवीरा
सर पर सर मारत दशग्रीवा ❊ जर्जर गात पच्छि बलसीवा
राम-बाट[4] बहु जोहत बीरा ❊ तबहुँ न दरस तहाँ रघुवीरा
वृद्ध विशेष, टूटि दम आवा ❊ गिरेउ धरनि युग पंख नसावा

दो० राम आय, दै अगिन पुनि, खगपति कीन सनाथ।
इमि जटायु सद्गति लही, को तुम्हार खगनाथ ? ॥ ७४ ॥

विवरन सुनि जटायु, सम्पाती ❊ बन्धु ! बन्धु ! रोवत बहु भाँती

जटायु नामेते पक्षी गरुड़नन्दन ❊ पर्व्वत हइते शुने सीतार क्रन्दन
हात-पा आछाड़े सीता रथेर उपरे ❊ श्रीराम-लक्ष्मण ब'लि डाके उच्चैःस्वरे
पक्षी ब'ले, एइ बेटा लंकार रावण ❊ सीतारे हरण करि करिछे गमन
अनेक कालेर पक्षी, हइयाछे जरा ❊ दुइ पाखा मेलिया पोहाय तथा खरा
सीतार क्रन्दन पक्षी तथा हैते शुनि ❊ भाविते लागिल से प्रमाद मने गनि
आकाशे उड़िया पक्षी चारिदिके चाय ❊ रावणेर रथे सीता देखिवारे पाय
जटायु ब'लेन, सीता एसछेन वने ❊ सेइ सीता लैया जाय पापिष्ठ रावने
दुइ पाखा प्रसारिया आगुलिल बाट ❊ रावणेरे गालि पाड़े मारे पाख साट
आकाशे थाकिबा देखे राम वहुदूर ❊ आँचड़ कामड़े तार रथ कैल चूर
रावण मारिल तारे घन-घन शर ❊ जटायुर शरीर से करिल जर्ज्जर
रामेर अपेक्षा करि बुझिल विस्तर ❊ तथापि ना आइलेन तथा रघुवर
वृद्धकाले जटायुर टुटियाछे वल ❊ दुइ पाखा काटिया पाड़िल भूमितल
आसिया करेन राम तार अग्निकाज ❊ राम दरशने मुक्त हैल पक्षिराज
कहिलाम जटायुर मृत्युर काहिनी ❊ जटायुर के हओ आपनि इओ शुनि
सम्पाति शुनिया जटायुर विवरण ❊ भाइ-भाइ ब'लिया कान्दल वहुक्षण

---

१ हाथ २ वन में ३ दांत-नाखूनों से घायल किया ४ राम की रास्ता।

बधि मम बन्धु, चैन लंकेसू ❋ रहौं मारि मन, पंख न शेसू
भइर युवा—पंख मम अंगा ❋ तब कर कपिगन! सुनहु प्रसंगा
अनुज जटायु, जेठ सम्पाती ❋ गरुड़-तनय, अति बल जिन ख्याती
जुगुल बन्धु मिलि स्थिर कीना ❋ रवि परसैं[1] सो वीर प्रवीना
अरुन-प्रभात गगन बिस्तारा ❋ धरहिं भानु, दृढ़ कीन विचारा
जाति बन्धुगन विस्मय माहीं ❋ लख योजन जहँ भानु लखाहीं
लख योजन उड़ि चलि आकासू ❋ पहुँचे उभय प्रभाकर पासू
चहुँ दिसि प्रखर दिवाकर-तापा ❋ तपत दिशा दस अगिनि-प्रतापा
उड़त प्रहर दुइ दिन चढ़ि आवा ❋ दुहुन तेज-रवि चहत जरावा
विकल सहोदर तात जटाई ❋ मरनप्राय लखि करुना आई
ढाकि पंख तेहि ऊपर राखा ❋ आतप जरे युगुल मम पाँखा[2]
होनी प्रबल गिरेउँ गिरि आई ❋ पंखहीन विधि पंगु बनाई
सात दिवस तृन-सलिल न पाना ❋ तबहिं एक सर्वज्ञ[3] लखाना
सर[4] 'सर्वज्ञ' करत असनाना ❋ सिंह व्याघ्र तट बिचरत नाना
गिरि प्रमान तहँ जन्तु विशेसू ❋ धरि न खाहिं! बल गात न शेसू

दो० बिबस दूरि भय-बस लहेउँ, सरन विटप-बट जाय।
जन्तु सिंह महिषादि जे तब लौं गये बराय ॥ ७५ ॥

आमार भाइके मारि बेटा थाके सुखे ❋ पाखा नाइ, कि करिव, आछि मनोदुःखे
यौवने जखन छिल पाखा से आमार ❋ शुनह वानरगण, व'लि सारोद्धार
जटायु सम्पाति एइ दुइ सहोदर ❋ व'ले महाबली मोरा गरुड़ कोङर
दुइ भाइ प्रतिज्ञा जे करिलाम एइ ❋ सूर्य्य जे छुँइते पारे, वीर वटे सेइ
प्रभाते हइल जबे अरुण उदय ❋ सूर्य्यरे धरिते जाइ करिया निश्चय
ज्ञाति बन्धु सकले देखिया सविस्मय ❋ एक लक्ष योजन उपरे सूर्य्योदय
से लक्ष योजन उड़ि उठिया आकाशे ❋ दिवाकरे धरिते गेलेन ताँर पाशे
चौदिके चापिया उठे सूर्य्य महाशय ❋ दिक कि विदिक सब हैल अग्निमय
प्रभात हइते दुइ प्रहर उड़िया ❋ दुइ भाइ मरि सूर्य्य-तेजेते पुड़िया
ताहाते जटायु भाइ हइल कातर ❋ मृतप्राय हेन देखि भाइ सहोदर
ढाकि जटायुर पाखा निज पाखा दिया ❋ आमार उभय पाखा गेल त पुड़िया
ए पर्व्वते पड़िलाम दैवेर निर्व्बन्ध ❋ एइ से कारणे आमि हइयाछि बन्ध
सात दिन नाहि पाइ सलिल ओदन ❋ हेनकाले सर्व्वज्ञ आइल एक जन
स्नान करे सर्व्वज्ञ से सरोवर-जले ❋ सिंह व्याघ्र चरितेछे तार दुइ कूले
पर्व्वत प्रमान देखि जन्तु से सकल ❋ धरिया खाइवे मोरे गाये नाहि बल

१ स्पर्श करे २ पंख ३ सिद्धजन ४ तालाव।

सरवर जल 'सर्वज्ञ' नहाई ※ दरस दीन मम सम्मुख आई
ज्ञानी परम 'निशाकर' नामा ※ मग आवत लखि, कीन्ह प्रनामा
व्यथा-विकल मुख शब्द न आना ※ लखि मोहिं दीन, विप्र किय ध्याना
कहेउ रच्छु निज प्रान खगेसा ※ उबरैं पुनि तव पंख असेसा[1]
दशरथ नृपति अवध चिरकाला ※ जेठ सुवन तिन राम कृपाला
पिता-वचन गवनहिं वनदेसू ※ सूने हरहि सीय लंकेसू
सिय खोजत कपिगन इत आवैं ※ देहिं दरस, तव क्लेस नसावैं
होय दरस-कपि यहि गिरि धामा ※ जमहिं पंख मुख निकसत रामा
चिर निवसहु गिरि खगपति जबहीं ※ कपिगन-दरस मिलै रहि तबहीं
ध्यावत राम जियेउँ करि आसा ※ आजु दरस तव, मिटी पिपासा
अंगद कहत पच्छि! भयरूपा! ※ बरनहु सकल सत्य अनुरूपा
कहँ निवास, कहँ लंक-जुझारा ※ कत योजन बिच सिन्धु अपारा
मैं खगपति, कुल गृद्ध हमारा ※ पूर्व-दखिन[2] मम गति-बिस्तारा
कहब सुनब विवरन, जस ज्ञाना ※ प्रथमहिं राम-कथा सुनि काना
राम-कथा सुनि पंख-उबारा ※ होय पंख लहि सुलभ अहारा

दूर गिया रहिलाम वटबृक्ष तले ※ सिंहे महिषादि जन्तु गेल हेनकाले
स्नान करि सर्व्वज्ञ से सरोवर जले ※ आमार सम्मुखे से आइल हेनकाले
प्रसिद्ध सर्व्वज्ञ तिनि, निशाकर नाम ※ पथेते पाइया देखा कहिनु प्रणाम
व्यथाय कातर आमि शब्द नाहि मुखे ※ आमारे कातर देखि द्विज ध्याने देखे
सर्व्वज्ञ ब'लेन, पक्षिराज, प्राण रक्ष ※ हाराइया पावे तुमि आपनार पक्ष
दशरथ राज्य करिबेन बहु दिन ※ ताँर ज्येष्ठ पुत्र राम हवेन प्रवीन
पितृसत्य पालिते जावेन तिनि वन ※ शून्य घरे ताँहार सीता हरिवे रावन
कपिगण करिबेक सीतार उद्देश ※ ताँर दरशने तव खण्डिवेक क्लेश
थाक एइ पर्व्वते पाइबे तार देखा ※ 'राम-नाम' व लिते उठिबे तव पाखा
बहुकाल ए पर्व्वते थाक पक्षिवर ※ तबे से देखिबे तुमि सकल वानर
एत काल राम लागि आछे हे जीवन ※ एत दिन तव सने हैल दरशन
अंगद ब'लेन तोमा देखि पाइ भय ※ सत्य कह पक्षिराज वृतान्त निश्चय
रावणेर कोन देश, कोथा तार घर ※ तार देशे येते कत योजन सागर
पक्षिराज ब'ले आमि एइ ग्रध्र-जाति ※ पूर्व्वेते दक्षिण दिके छिल मम गति
कहिव शुनिवे, यत जानि विवरण ※ सम्प्रति जुड़ाउ कर्ण कहि रामायण
रामेर प्रसंग पुनः हबे पक्षोदय ※ पक्षोदये भक्ष्यलाभ प्राणरक्षा हय

---

१ जो लुप्त हो चुके हैं २ पूर्व से दक्षिण दिशा तक।

सुनु सुत-गरुड़! कहेउ हनुमाना * करहुँ बखान राम भगवाना

दो० सुनहु पुरातन, नारदहिं नारायण मत कीन।
दुखमय सृष्टि-विरंचि किमि, होय कलेस-विहीन ॥ ७६ ॥

नारायण विचार मन भावा * नारद सहित विरंचि पठावा
भ्रमत धरा दोउ देसन-देसू * सहसा किय वन घोर प्रवेसू
तहाँ व्याध रत्नाकर नामा * दस्यु वृत्ति नित रत दुष्कामा
वैश्य शूद्र क्षत्रिय द्विज सोऊ * फाँसी देत, बचत जनि कोऊ
दस्युकर्म-रत इमि जहँ फिरई * पन्थ दरस नारद मिलि करई
नारद अरु विरंचि मग हेरी * लखि दुइ विप्र, दस्यु तिन टेरी
हे युग[1] विप्र! कितै अब गमनू * परि मम हाथ सुनिश्चित मरनू
नारद कहेउ, भद्र! कहु कारन * तपसी विप्र वृथा तिन मारन
कहत दस्यु, मुनि! मम नित धर्मा * मम जीविका दस्यु कर कर्मा
पितु जननी तिय सुत जन जेते * मम जीविका पलत सब तेते
एक मात्र मम यहै कमाई * कर फँसरी[2], भरमत बन जाई
जती जितेन्द्रिय बटु संन्यासी * परत नयन, तिन हित यह फाँसी
द्विज दुर्बुद्धि हेरि मुनि टेरे * भागीदार कौन अघ[3] तेरे

हनूमान ब'ले शुन गरुड़नन्दन * मन दिया शुन ब'लि रामेर कथन
पूर्व्वकथा कहि, शुन ताहे देह मन * नारदेर संगे युक्ति कैल नारायन
सृष्टि करिलेन पितामह बहु क्लेशे * भावेन, सकल लोक त्राण पावे किसे
नारदेरे युक्ति करि पाठान पृथिवीते * दिलेन विधिके हरि नारदेर साथे
दुइजन पृथिवीते बेड़ान भ्रमिया * दैवात् निबिड़ वने उत्तरिल गिया
बाल्मीकि छिलेन पूर्व्वे व्याध अवतार * दस्युवृत्ति करितेन अति दुराचार
ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र जार देखा पाय * फाँसि दिया मारे से, के कोथाय पलाय
एइ रूपे दस्युकर्म्म कर्म्म करे वने वन * नारदेर सने हैल पथे दरशन
नारद ओ विधि ताँरा जान दुइजने * हेनकाले देखे दस्यु से दुई ब्राह्मणे
दस्यु ब'ले, विप्र, ताँरा आर जाबि कोथा * पड़िलि आमार हाते, काटा जावे माथा
नारद ब'लेन, आमि तपसी ब्राह्मण * आमारे मारिया तुमि किसेर कारण
दस्यु ब'ले नित्य आमि एइ कर्म्म करि * दस्युकर्म्म करिया उदर सदा भरि
माता पिता पत्नी पुत्र आछे यतजन * इहाते सबार करि उदर पूरन
अविरत दस्यु कर्म्म करि आमि खाइ * ते कारणे फाँसि-हाते वनेते बेड़ाइ
कत गण्डा जितेन्द्रिय जति ब्रह्मचारी * जार देखा पाइ, तारे सेइ क्षणे मारि
नारद ब'लेन शुन दुर्बुद्धि ब्राह्मण * तोमार पापेर भाग लय कोन जन

---

१ दोनो २ हाथ में फाँसी का फन्दा लिए ३ पाप।

पितु-जननी जदि बाटहिं पापा * बध करु, हमहिं न पुनि संतापा
जानु जानु, गृह जाय नृशंसा ! * को तव पाप बटावत अंसा
रत्नाकर बोलत, द्विजराई ! * ओट होत मम, जाहु बराई

दो० जनि प्रतीत, तरु बाँधि दोउ, जाहु, कही मुनिराय ।
दस्यु कीन सो, विटप तर, मुनिन राखि गृह जाय ॥ ७७ ॥

बिलसहु पितु ! मम पाप कमाई * पाप-अंस मम तव सिर जाई
हे सुत ! पितु-पालन तव धर्मा * पितु किमि भागी सुत-अपकर्मा
जिमि पोषत मम तन, सोहिं तोषू * मम सिर किमि तव पातक-दोषू
सुनत जनक कै[1] निष्ठुर बानी * दरस लहेउ जहँ जननी रानी
उदर निमित्त नित्य हे माता ! * अर्जन हित[2] नित मनुज निपाता
बिलसहु मम घर बैठि कमाई * पाप अंस कछु बाटहु माई
सुनु कुबुद्ध सुत ! बोलति जननी * मम सिर किमि तव पातक करनी
सुवन, मात-पितु पालन हेता * तर्पन श्राद्ध गयादिक जेता
जो सुपुत्र कुल - दीप - प्रकासू * जननि न सेवत, रौरव - बासू[3]
जो जिमि देत, बैठि घर खाहीं * तव पातक, सुत ! मम सिर नाहीं
भारत-भुवन अखिल सुत अहहीं * सुत-अघ[4] जननिहिं शास्त्र न कहहीं

तव पापभागी यदि हय पितामाता * तबेत आमारे बध करह सर्व्वथा
जिज्ञासा करह गिया आपनार घरे * तोमार पापेर भाग काहार उपरे
दस्यु ब'ले, शुन ब'लि तपस्वी ब्राह्मन * आमि घरे गेले कि पालाबे दुइजन
नारद ब'लेन, राख गाछेते बाँधिया * पापभागी केवा हय, आइस जानिया
तबे दस्यु दुइजने करिल बन्धन * गाछेते बाँधिया, घरे करिल गमन
बापेरे कहिल, तुमि घरे बसे खाओ * आमा पापेर भाग तुमि निते चाओ
पिता ब'ले, जाहा दाउ, घरे बसे खाव * तुमि पाप कर, तार भाग केन लब
ये से प्रकारेते तुमि करिबे पालन * पापभाग लइते ना पारि कदाचन
बापेर शुनिल यदि निष्ठुर वचन * तबे गिया मायेरे से दिल दरशन
दस्यु ब'ले, शुन माता, करि निवेदन * मनुष्य मारिया करि उदर-भरन
आमि आनि देइ, तुमि घरे बसे खाओ * आमार पापेर भाग तुमि निते चाओ
जननी बलिल, शुन दुर्व्बुद्धि नन्दन * तोमार पापेर भाग लब कि कारन
पुत्र हैले कर माता-पितार पालन * गयाय पिण्डदान करे श्राद्ध ओ तर्पन
सुपुत्र हइले हय कुलेर दीपक * मातृसेवा ना करिले विषम नरक
जाहा तुमि आनि दिबे, घरे बसे खाव * तोमार पापेर भाग आमि केन लब
यत-यत पुत्र जन्मे भारत मण्डले * पुत्र पाप माये लय, कोन शास्त्रे ब'ले

---

१ पिता की २ जीविका कमाने के लिए ३ नरकवास ४ पुत्र के पाप ।

मातु-बैन खर[1] सुनि, उर पीरा ❋ कहेउ खिन्न मन चलि तिय तीरा
दस्यु-वृत्ति पालन प्रिय तोरा ❋ पातक-अंस बटावहु मोरा
बनिता बिनय कीन, हे नाथा! ❋ पति-पातक किमि पत्नी साथा
सेवहुँ स्वामि करहुँ गृह-काजू ❋ घर बसि तव बिलसहुँ सुख-साजू
नारि-वचन सुनि अतिव हतासा[2] ❋ जाय-समीप कहेउ सुत पासा

दो० चरन बन्दि पुनि, कहेउ सुत, मम सिर पाप न भार।
करहुँ मजूरी, आयु लहि, पितु प्रतिपाल तुम्हार ॥ ७८ ॥

मम पालन तव सिर यहि काला ❋ बहुरि करौं मैं तव प्रतिपाला
खल पूँछेसि चहुँ बारम्बारा ❋ केहु न अंस-अघ[3] लेन सखारा[4]
रत्नाकर-उर अति अनुतापा ❋ अगनित बध नित सिर्जति पापा
मन गलानि उर घोर निरासा ❋ भरति साँस चलि तपसिन पासा
बन्धन खोलि, न गात-सम्हारा ❋ सविनय वचन प्रनम्य उचारा
भल विधि जानि लीन मुनिनाथा! ❋ परिजन कोउ न पाप मम साथा
किमि कीजै, गति कहा उपाई? ❋ 'तौ बध हेतु न' कह मुनिराई
तव पातक न बटावनहारा ❋ तव अपकर्मन तव शिर भारा

मायेर शुनिल यदि निष्ठुर वचन ❋ पत्नीर निकटे गिया कहे विवरन
दस्युकर्म्म करे आनि घरे बसे खाओ ❋ आमार पापेर भाग तुमि निते चाओ
स्वामी ब'लिछे रामा विनय-वचन ❋ तोमार पापेर भाग लब कि कारन
गृहस्थेर कर्म्म कार्य्य सकल करिव ❋ यथा हैते आन तुमि, घरे बसि खाव
नारीर शुनिल यदि एतेक वचन ❋ पुत्रेर निकट गिया कहिल तखन
शुनिया ब'लिल पुत्र पितार चरणे ❋ पातकेर भार लब किसेर कारणे
आमि उपयुक्त जबे हइब संसारे ❋ शिरे मोट बहि आमि पालिव तोमारे
एखन आमार कर भरण पोषण ❋ आमि पुत्र, तोमादेर करिब पालन
एइमत जिज्ञासा करिल वारे-बार ❋ पापभाग लैते केह ना करे स्वीकार
दस्यु ब'ले, तबे आमि कोन कर्म्म करि ❋ अधर्म्म करिया केन लोकजन मारि
मने-मने दस्यु बड़ हइल निराश ❋ उद्धर्वश्वासे धेये गेल तपस्वीर पाश
आस्ते व्यस्ते खसाइल मुनिर बन्धन ❋ प्रणाम करिया ब'ले विनय वचन
जिज्ञासिया घरे जानिलाम समाचार ❋ आमार पापेर भागी केह नहे आर
कि करिब, कोथा जाब, कि हबे उपाय ❋ मुनि ब'ले, तबे केन बधिबे आमाय
तोमार पापेर भागी केह ना हइल ❋ यत पाप करिले से तोमारि थाकिल

---

१ खरी बात २ हताश ३ पाप में हिस्सा ४ स्वीकार किया।

यमपुर नरक कहत चौरासी * रौरवादि[1] क्रम सों दुखरासी
धरि गर बसन युगुल कर जोरा * कातर दस्यु कहत मुनि ओरा
मैं तव चरन कृपामय नाथा * लहहुँ सुगति जिमि, करहु सनाथा
दस्यु-वृत्ति अरु तजि दुष्कर्मा * नित तव पद रहि सेवहुँ धर्मा
दयाशील मुनि जतन बतावा * सरवर करि असनान बुलावा
तव हित, तात ! उपाय प्रकासा * लहौ सुकुति सब पातक नासा
व्याध मन्द गति चलि सर तीरा * परत छाँह सूखेउ सर-नीरा
सलिल न सरवर, बिन असनाना * पुनि जहँ मुनि तहँ कीन पयाना

दो० कहत जोरि कर, सलिल सर, लखि मम पाप सुखान ।
अहह, नाथ ! तव चरन पुनि आयेउँ बिन असनान ।। ७९ ।।

नारद बहु भरोस तेंहि दीन्हा * नीर-कमण्डल निज पुनि लीन्हा
लीन दया-जल, सीस लगावा * गात पुनीत, दस्यु सुख पावा
विधि-सुत[2] नारद दया-प्रतापू * महामंत्र अष्टाक्षर जापू
रत्नाकरहिं सतत आदेसू * जपै राम अहिनिसि, जनि शेसू
रसना जड़, न राम, विधि बामा * रसना चखन चहत रस-आसा

चौराशी नरककुण्ड आछे यमपुरे * रौरव नरक आदि, सब स्तरे स्तरे
गलाय कापड़ दिया जोड़ हात बुके * कातरे कहिल दस्यु मुनिर सम्मुखे
कृपा कर कृपामय, धरि हे चरण * कि हबे आमार गति, कह विवरण
आर आमि दस्युकर्म्म कभु ना करिव * हइया तोमार दास संगते फिरिव
ताहारे कहेन दयाशील महामुनि * सरोवरे स्नान करि आइस एखनि
तोमार निमित्त एक करिब उपाय * जाहाते हइबे मुक्त, पाप दूर जाय
आस्ते व्यस्ते गेल व्याध सरोवर तीरे * पापी देखे उड़ेगेल सलिल सरोवरे
स्नान करिवारे जल यदि ना पाइल * आर वार दस्यु सेइ मुनि काछे गेल
जाड़ हात करिया बलिल से गोसाइँ * गेलाम करिते स्नान, जल नाहि पाइ
आमाके आसिते देखे यत छिल जल * शुकाइया सरोवर, ह'ल शुष्क स्थल
शुनिया नारन मुनि करिया आश्वास * कमण्डले छिल जल आपनार पाश
दया करि सेइ जल दिलेन ताहाय * सेइ जल दस्यु निल आपन माथाय
ब्रह्मापुत्र नारदेर दया उपजिल * अष्टाक्षर महामंत्र तार काने दिल
ब्रह्मापुत्र आपनि करिल आदेशन * दिवानिशि रामनाम करह स्मरण
राम नाम बलिते बदने आसे आम * परम पातकी से विधाता तारे वाम

---

१ रौरव आदि नरक २ ब्रह्मा के पुत्र ।

मुखरत[1] आस, रास कठिनाई ※ मुनि सोचत किमि करिय उपाई
मुनि-उर उपजी दया विशेषी ※ तहि वन सूख ताल-तरु देखी
विटप सूख मुनि एक दिखाई ※ पूछत, कहु तरु कौन लखाई ?
दस्यु जोरि कर विनय सुनाई ※ 'मरा' ताल-तरु मोहिं लखाई
मुनि प्रवीन बोले, सुत सुनहू ※ 'मरा' मंत्र अहिनिसि बस जपहू
बन्दि मुनीस, समाधि लगाई ※ जपत निरन्तर निसिदिन ध्याई
पातक छीन, पुण्य बस जागा ※ एक मात्र सुख जप-अनुरागा
मुनि-आयसु—करु जाप निरंतर ※ आवइँ हम पुनि वर्ष-अनन्तर
विधि-नारद आगे पग दीना ※ 'मरा' मंत्र-जप दस्यु विलीना
वन बसि जाप अखण्ड सुहावा ※ ढूह[2] दीमकन अंग छिपावा

दो० वर्ष उपरि मुनि आय तहँ निरखेउ कतहुँ न दस्यु ।
ध्यान धरत जानेउ यथा द्विज-तन मृत्तिका-मध्य[3] ॥
मुनि-आयसु अनवरत[4] जल बरसायेउ सुरनाथ ।
माटी नही, अखण्ड जप, मुनिहिं नवाऐउ माथ ॥
निर्विकार एकाग्र मन, मंत्र जाप लवलीन ।
लखि प्रसन्न मुनिनाथ पुनि पूरन आशिष दीन ॥ ८० ॥

भाविलेन महामुनि कि ह'व उपाय ※ रामनाम वदने नाहि जे वाहिराय
सेइ वने मरा एक ताल गाछ छिल ※ हेरिया मुनिर मने दया उपजिल
वुद्धिजीवी महामुनि जिज्ञासेन ताय ※ व'ल देखि कोन वृक्ष ऐ देखा जाय
शुनिया कहिल दस्यु जोड़ करि कर ※ मरा ताल-गाछ एक देखि मुनिवर
शुनिया कहेन तार नारद प्रवीण ※ 'मरा' मंत्र जप कर तुमि रात्रिदिन
प्रणाम करिया दस्यु मुनिर चरणे ※ मरामंत्र जपिते वसिल रात्रिदिने
मरामंत्र विना तार मुखे नाहि आर ※ दूरे गेल दस्युवृत्ति, सदा सदाचार
नारद व'लेन, मंत्र करह स्मरण ※ एक वत्सरेर परे आसिव दुजन
इहा व'लि बिदाय हइल दुइजने ※ मरा मंत्र जप करे दस्यु एक मने
अरण्ये निवास करि 'मरा' मंत्र जपि ※ सर्व्वांग घेरिल तार वल्मीकेर ढिपि
आसिय देखेन मुनि वत्सरेक परे ※ एइखाने छिल दस्यु गेल कोथाकारे
ध्यान करि देखेन नारद तपोधन ※ ढिपिर मध्येते आछे से दस्यु ब्राह्मण
देवराज आदेश करेन तपोधन ※ वासव करिल परे वृष्टि वरिषण
माटि हइते वाहिर हइल सेइ क्षणे ※ एक चित्ते मरामंत्र जपे एकमने
आशिर्व्वाद करि तेन तुष्ट तपोधन ※ मुनिर प्रणाम करे से दस्यु ब्राह्मण

---

१ उच्चारण होता था २ टीला ३ मिट्टी के बीच ४ लगातार ।

दिव्य कान्ति प्रणवति मुनिनाथा ※ तव प्रसाद गति पाय सनाथा
कहत सनेह मुनी गुनधामा ※ पलटि तात मुख, बोलहु रामा
कातर रत्नाकर मुनि बन्दे ※ महामंत्र मुख 'राम' अनन्दे
अखिल तासु जे भौतिक पापा ※ मेटे राम नाम संतापा
दस हजार वत्सर तप करई ※ प्रति छन राम नाम अस्मरई
'मरा' मंत्र जपि, कौतुक कहेऊ ※ बालमीकि रत्नाकर भयेऊ
बालमीकि प्रति नारद बरना ※ सात काण्ड रामायन रचना
खगहिं गाय हनुमान सुनाये ※ उदित पंख - सम्पाति सुहाये
आदिकाण्ड सुभ घरी अनूपा ※ अवधहिं राम-जनम सुख-रूपा
राम भरत लछिमन रिपुसूदन ※ प्रमुदित भूप चारि लहि नन्दन
विश्वामित्र अवध चलि आये ※ मिथिला राम विवाह रचाये
कौतुक चारि सुवन गठबन्धन ※ दसरथ अवध करत सुख-सासन
रामहिं तिलक नृपति मन भावा ※ कुटिल कैकयी कुमति जगावा
धरि पितु-वचन, गये वन रामा ※ संग लखन अरु सीय ललामा
'आदौ' रघुपति जनम-बिबाहू ※ प्रभु बन, 'अवध'[1] भरत नरनाहू
पुनि सिय हरि 'अरण्य','किष्किधा' ※ बालि-मरन कपि सैन निबन्धा

दिव्य कान्ति हइया मुनिरे करे स्तुति ※ तोमार प्रसादे पाइलाम अव्याहति
कहिलेन स्नेह वाक्ये मुनि गुणधाम ※ उलटिया आर कर बल रामनाम
कातर हइया कह जोड़ हात बुके ※ रामनाम महामंत्र निःसरिल मुखे
यय पाप छिल तार भौतिक शरीरे ※ रामनाम स्मरणे सकल गेल दूरे
रामनाम स्मरण करिल निरन्तर ※ तपस्या करिल दश हाजार वत्सर
मन दिया शुन तार अपूर्व्व काहिनी ※ मरामंत्र जपिया वाल्मीकि हैल मुनि
नारदेर उपदेश पाइया से जन ※ प्रकाश करिल सातकाण्ड रामायण
सातकाण्ड रामायण हनुमान कय ※ सम्पाति पक्षीर पाखा हइल उदय
आदिकाण्डे राम जन्म हैल शुभक्षणे ※ परम उल्लास हैल अयोध्या भुवने
श्रीराम-लक्ष्मण आर भरत-शत्रुघ्न ※ चारि पुत्र पाइया भूपति हृष्टमन
विश्वामित्र आइलेन अयोध्या नगरे ※ मिथिलाय विवाह दिलेन श्रीरामेरे
चारि नन्दनेर दिया विवाह कौतुके ※ राजत्व करेन राजा अयोध्याय सुखे
रामेरे करिते राजा राजार वासना ※ कुटिला कैकेयी ताहे करे कुमंत्रणा
पितृ-सत्य पालिते गेलेन राम वन ※ संगे चलिलेन ताँर जानकी-लक्ष्मण
आदिकाण्डे रामजन्म विवाह निर्द्धार्य ※ अयोध्याय वनवास भरतेर राज्य
अरण्यकाण्डेते सीता हरे दुराशय ※ किष्कन्ध्याय वालि-बध कटक-सञ्चय

१ अयोध्याकाण्ड में।

दो० सेतुबन्ध अद्भुत कथा बरनेउ सुन्दरकाण्ड।
लंकाकाण्ड निपात सुनु रावन सकुल प्रकाण्ड ॥ ८१ ॥

उत्तरकाण्ड समापन गाना ※ सात काण्ड हनुमान बखाना
सो सुनि पंख उदय सम्पाती ※ कपिन कहत पुनि खग यहि भाँती
हरेउ मैथिली खल लंकेसू ※ राखेसि दक्षिण—लंक प्रदेसू
सीस किये तर[1] तहँ ससिबदनी ※ वन अशोक, गति जात न वरनी
करहिं चौकसी बहु निसिचरिगन ※ मारग सिन्धु लखत शत योजन
एक छलाँग लंघि कपि! सागर ※ लखि सीता लौटहु बलआगर
शोच न कछु सब अति बलवन्ता ※ लहौ तृप्ति तरि सिन्धु अनन्ता
सुनि दच्छिन दिसि दृष्टि पसारा ※ सके न लखि दस योजन पारा
दृष्टि मात्र भट कीस हतासा ※ खग बिहँसेउ लखि कपिन निरासा
जाम्बवान अति बुद्धि - उजागर ※ कहेउ, विहगपति[2] सुनहु गुनागर
योजन शत सागर विस्तारा ※ सो कपिगन किमि करहिं उतारा
तुम अनुभवी वृद्ध खगराई ※ सिंधु-पार कर कहहु उपाई
सुनहु ध्यान धरि कहेउ खगेसा ※ उपजी मन मम सूझ बिसेसा
हिमगिरि, तनय सुपार्श्व निवासा ※ देखन मोहिं नित आवत पासा

सुन्दरकाण्डेते सेतुबन्ध चमत्कार ※ लंकाकाण्डे रावणेर सवंशे संहार
कथा सातकाण्डेर उत्तरकाण्डे पड़े ※ गाय उत्तराकाण्ड रामायण निगुड़े
कथा सप्तकाण्डेर कहिल हनूमान ※ सम्पाति पक्षीर पाखा हइल प्रमाण
सम्पाति व'लेन शुन यत वीर गण ※ सीताके लइया गेल पापिष्ठ रावण
यखन दक्षिण दिके माथा तुले थाकि ※ अशोकेर वने थाके सीता चन्द्रमुखी
नाना वर्णे राक्षसी सीतारे करे रक्षा ※ शत योजनेर पथ सागर परिखा
एक लाफे पार हओ सकल वानर ※ सीतादेवी देखिया सकले जाह घर
महाबल धर सबे किसेर भावना ※ हइया सागर पारे पुराओ कामना
तार वाक्ये वानर दक्षिणदिके चाय ※ दश योजन विना आर देखिते ना पाय
एक दृष्टे कपिगन चाहे ऊर्द्ध्वश्वासे ※ देखिते ना पाइ किछु, पक्षिराज हासे
जाम्बुवान उठि व'ले बुद्धि-वृहस्पति ※ आमार वचन शुन विहंग सम्पाति
शतक योजन पथ सागर पाथार ※ वानर हइया हब कि प्रकारे पार
अनेक कालेर साक्षी अनेक वयस ※ सागर त्वरिते तुमि कर उपदेश
सम्पाति ब'लेन, तबे शुन सावधाने ※ अपूर्व्व प्रस्ताव एक पड़िल जे मने
सुपार्श्व आमार पुत्र हिमालये थाके ※ नित्य-नित्य से आइसे देखिते आमाके

---

१ सिर झुकाये २ सम्पाति।

बसति हिमञ्चल मम परिवारू * करत जतन तहँ मम आहारू
आवत नित लै असन[1] प्रभाता * इक दिन अति अबेर[2] किय ताता

दो० क्षुधा त्रसित तन विकल मैं, तात-भर्त्सना कीन।
परम धार्मिक सुवन मम, बरनी कथा नवीन ॥ ८२ ॥

छं० भोर अहार लिये, पितु! आवत, लखी पंथ वरनारी।
कृष्ण मेघ रावण-रथ माहीं सौदामिनि[3] उजियारी ॥
राम-लखन कहि विलपत, रथ दुइ पहर पंथ अवरोधा।
रथ समग्र लीलत नारी-बध लखि, मैं तजेउँ विरोधा ॥

वचन- सुपार्श्व न संशय लेसू * विदित राम-तिय सीय कलेसू
अतिबल सुवन अबहिं सो आवै * सबन उठाय पार पहुँचावै
पौन[4] जलधि दुइ पंखपसारा[5] * एक भाग पुनि सहज उतारा
लंघन एक न भाग विसेसू * धरहु धीर कपि तजहु कलेसू
इमि बतरात[6], सरीर कराला * दरस सुपार्श्व दीन तत्काला
कटक-कीस लखि, लीलन चाहा * ओट निवारि[7] लीन खगनाहा
अहह! तात! अनुचित संहारू * मोर अमित इन किय उपकारू

हिमालय पर्व्वते आमार परिवार * तथा हैते पुत्र मम योगाय आहार
नित्य आने आहार से प्रभात समय * एक दिन आनिते विलम्ब अतिशय
क्षुधाय आकुल आमि, दहे कलेवर * कोपे सुपार्श्वेर भर्तिसलाम बहुतर
धार्म्मिक आमार पुत्र धर्म्मे बड़ रत * कहिलेन वृत्तान्त आमारे अवगत
आहार लइया पिता प्रभाते आसिते * देखिलाम एक नारी रावणेर रथे
कृष्णवर्ण रावण से गौरवर्ण नारी * मेघेर उपरे जेन विद्युत् सञ्चारि
'श्रीराम लक्ष्मण' बलि कान्दिछे बिस्तर * दुइ पाखे आगुलिनु दुइटि प्रहर
राखिताम रथ सह ताहारे उदरे * केवल पाइल रक्षा स्त्री-वधेर डरे
सुपार्श्वेर कथा शुनिलाम मनोनीता * जानिलाम तखनि से श्रीरामेर सीता
एखनि आसिवे पुत्र महाबल तार * पृष्ठे करि सब कारे से करिबे पार
तिन भाग सागर से दुइ पाखे ढाके * एक भाग मात्र तार लंघिवारे थाके
एक भाग लंघिते ना हवे कोन श्रम * स्थिर हओ कपिगण नहे व्यतिक्रम
एइ रूप करितेछे कथोपकथन * महाकाय सुपार्श्व आइल तत्क्षण
दुइ ठोंट मिलिया से गिलिवारे जाय * सम्पातिर आड़े गिया कटक लुकाय
सम्पाति बलेन, वाछा, ना कर संहार * पृष्ठे करि सवार सागर कर पार

१ भोजन २ विलम्ब ३ बिजली ४ तीन चौथाई ५ दो पंख-फैलाव की जगह ६ वात करते हुये ७ अपनी आड़ में करके।

प्रत्युपकार[1] पीठ तिन लेही ※ सिंधु पार कपिगन करि देही
कह सुपार्श्व, पितु-वचन प्रमाना ※ मम तन चढ़ि, कपि करैं पयाना
सुनत कहेउ पुनि बालिकुमारा ※ सिय हित सिंधु तरन मम भारा
स्वयं देव - देवन - अवतारा[2] ※ उचित न देहिं विहग-सिर[3] भारा
कह सम्पाति, कौन प्रभु-काजू ※ रामायन-प्रसाद मोहिं आजू
नूतन पंख पुनः मैं धारा ※ कपिन राम! जय राम! पुकारा
चमत्कार लखि बल सञ्चारा ※ सिन्धु, सुमिरि प्रभु, उतरहिं पारा
इमि चर्चत नभ उठेउ खगेसू ※ पंख पसारि चलेउ निज देसू
सहित सुवन उत्तरहिं पयाना ※ दक्षिण अंगदादि हनुमाना

दो० कृत्तिवास रचना विमल, श्रोतन[4] अमृतभाण्ड ।
कथा समापन पावनी इमि किष्किन्धाकाण्ड ॥ ८३ ॥

करियाछे इहारा आमार उपकार ※ करह प्रत्युपकार तबे हइ पार
सुपार्श्व बलेन, मान्य पितार वचन ※ आमार पृष्ठेते सब चड़ कपिगन
अंगद ब'लेन, वीर शुन उपदेश ※ सागर तरिया करि सीतार उद्देश
देवतार पुत्र मोरा देव अवतार ※ कि कारणे पक्षी हे, तोमाय दिब भार
सम्पाति ब'लेन, आमि रामकार्य्य करि ※ रामायण-प्रसादे नूतन पक्ष धरि
उभय हइल पक्ष देखिते सुन्दर ※ 'राम जय' ब'लि डाके सकल वानर
देखिया वानरगण लागे चमत्कार ※ रायजय-स्मरणे सागर हव पार
कपि सम्भाषिया पक्षी उठिया आकाशे ※ दुइ पक्ष पसारिया जाय निज देशे
पुत्र सह पक्षिराज गेलेन उत्तर ※ अंगद कटक सह दक्षिण सागर
कृत्तिवास रचे गीत अमृतेर भाण्ड ※ समाप्त हइल एइ किष्किन्ध्या काण्ड

॥ इति किष्किन्ध्या काण्ड ॥

---

१ उपकार के बदले में २ हम लोग देवी-देवताओं के अवतार स्वयं दिव्य हैं
३ पक्षी के ऊपर सवार हों ४ श्रोताओं (सुननेवालों) के लिए।

श्री गणेशाय नम:

सुन्दरकाण्ड

शान्तं शाश्वतमप्रमेयमनघं निर्व्वाणशान्तिप्रदं-
शम्भुब्रह्मफणीन्द्रसेव्यमनिशं वेदान्तवेद्यं विभुम् ।
रामाख्यं जगदीश्वरं सुरगुरुं मायामनुष्यं हरिं-
वन्देहं करुणाकरं रघुवरं भूपालचूडामणिम् ।।
नान्या स्पृहा रघुपते हृदये मदीये
सत्यं वदामि च भवानखिलान्तरात्मा ।
भक्तिं प्रयच्छ रघुपुङ्गव निर्भरां मे
कामादिदोषरहितं कुरु मानसञ्च ।।
अतुलित - वलगेहं हेमशैलाभदेहं-
दशमुखपुर - वह्निं ज्ञानिनाम् - अग्रगण्यम् ।
सकलगुण - निधानं वानराणाम् - अधीशं-
रघुपति - वरदूतं वातजातं नमामि ।।

सागर पार करने हेतु वानर-मंत्रणा

दो० किष्किधा वन-वन फिरत कपिगन क्षोभ प्रकाण्ड ।
सीय-सुखद-सम्बाद-युत् सुन्दर सुन्दरकाण्ड ।।
उत्तर कीन पयान उत, दोउ सुपार्श्व-सम्पाति ।
अंगद दच्छिन सिन्धु-तन, कपिन पाँति की पाँति ।। १ ।।

गर्ज - तर्ज बहु केहरि नादा ※ अगम तरंगन लखत प्रमादा[1]
तिमिर[2] गगन, पुनि विकट समीरा ※ उफनि उछालति बारिधि-नीरा
तहँ जलजन्तु विविध रव करहीं ※ ग्राह- त्रास[3] जल पग जनि धरहीं
ते जल - जीव पर्वताकारा ※ ग्रसहिं अकेल मनहुँ संसारा

वानरगणेर सागर-पार-गमनार्थ मन्त्रणा

पिता पुत्रे पक्षिराज गेलेन उत्तर ※ अंगद कटक सह दक्षिण सागर
तर्ज्जन गर्ज्जन करे, छाड़े सिंहनाद ※ सागर तरंग देखि गणिल प्रमाद
तमोमय देखा जाय गगन-मण्डल ※ हिल्लोले कल्लोल तुले समुद्रेर जल
सिन्धु जले जलजन्तु कलरव करे ※ जलेते ना नामे केह मकरेर डरे
एक एक जलजन्तु पर्व्वत प्रमान ※ जगत् करिबे ग्रास, हय अनुमान

१ उन्माद (उफनाना) २ अन्धकार ३ मगर के भय से ।

अगम सिन्धु लखि त्रसित अपारा * सबन प्रबोधत बालिकुमारा
संशय बल तोरत, पुनि मरना * संशय तजि सब संकठ तरना
सुख सोवहिं निसि सागर तीरा * उतरहिं भोर उदधि गम्भीरा
शय्या पुनि तृणपात सजाई * कपिन सिंधु-तट निसा बिताई
तीर जलधि सुखरैन बिताये * सैनिप[1] सब प्रातः जुरि आये
सम्मुख लखि प्रणवत[2] सब वीरा * अंगद कहेउ सुनहु रणधीरा
नृप-आयसु विधि इतै पठाई * कवन समर्थ विपत्ति नसाई
ब्रह्मकलश - अमरित छलि लावै * सुरपति कर सों बज्र छिनावै
को समर्थ रवि-ताप निवारी * सीत छटा सक चन्द्र उतारी
छीनि सकै यमदण्ड विशाला * बाँधै कुञ्जर तन्तु - मृनाला
जेहिं सशक्त पौरुष यहि भाँती * करै पराक्रम लहै सुख्याती
सिय-सम्बाद सबन सुखदाई * तिय-सुत-दरस लहैं गृह जाई

दो० विषम काज अंगद वरनि, पूँछत समरथ कौन ।
काहु न साहस, तकत मुँह, अखिल सैन-कपि मौन ॥ २ ॥

संग प्रचुर जे कपि सामन्ता * पूँछत अंगद बार अनन्ता
पुनि पुनि मैं पूँछत तुम पाहीं * उतर न देत, बैन मुख नाहीं

सागर देखिया सबे पाइल तरास * सबाकारे करितेछे अंगद आश्वास
विषादे विक्रम टूटे, विषादेते मरि * विषाद घुचिले भाइ सर्व्वएइ तरि
सुखे निद्रा जाय आजि समुद्रेर कूले * सागर तरिब कालि अति प्रातःकाले
सागरेर कूल चापि रहिल वानर * रहिवारे लतापत्र साजाइले घर
सागरेर कूले तारा सुखे वाञ्चे राति * प्रभाते एकत्र हैल सर्व्व-सेनापति
जोड़ हाते दाण्डाइल अंगदेर आगे * अंगद कहिछे वार्त्ता शुने वीरभागे
दैवदोषे लंघिलाम राजार शासन * कोन् वीर घुचाइव ए घोर वन्धन
ब्रह्मार हस्तेर सुधा छले कोन् जने * इन्द्रेर हस्तेर वज्र कोन् जन आने
प्रखर सूर्य्येर रश्मि कोन् जन हरे * चन्द्रेर शीतल रश्मि के आनिते पारे
यम हैते यमदण्ड काड़े कोन् जन * के कर मृणाल-सूत्र करीर बन्धन
एइ कर्म्म करिवारे जाहार शकति * देखाइया विक्रम से राखुक खेयाति
आनिले सीतार वार्त्ता सबे हइ सुखी * ताहार प्रसादे गिया पत्नी पुत्र देखि
ऐत यदि वलिलेन कुमार अंगद * नीरव हइया सबे गनिल विपद
छिल यत सैन्य संगे सामन्त प्रचुर * बार-वार जिज्ञासेन अंगद ठाकुर
राजपुत्र अंगद जिज्ञासे वार-बार * उत्तर ना दाउ केन, ए कि व्यवहार

---

१ सेनापति २ प्रणाम करते हैं ।

सबन नयन-तर उदधि[1] विशाला ❋ विकट तरंग अकास-पताला
पूँछत, उर केहि भाँति विषादू ❋ को भट, लहै कपीस - प्रसादू
प्रन - सुग्रीव करै को पारा ❋ करै वीर ! रघुपति-उपकारा ?
केहि कर[2] होय जाति-निस्तारा ❋ लहै सुयश करि सिय-उद्धारा
अंगद - वचन अवज्ञा नाहीं ❋ निज बल कहि कछु कछु सकुचाहीं
यम-नन्दन 'गय' निज बल वरना ❋ अधिक न योजन दस मोंहि तरना
पुनि 'गवाक्ष' गय कीस-सहोदर ❋ योजन बीस तरै सो सागर
'शरभ' सैनपति कपिन उजागर ❋ योजन चालिस लौं बल-आगर
बन्धु 'गन्धमादन' विस्तारा ❋ मम योजन पचास लौं भारा
कहेउ 'महेन्द्र' सुषेनकुमारा ❋ योजन साठि करौं मैं पारा
मम बन्धु 'देवेन्द्र' बखाना ❋ सत्तर अधिक न मम अनुमाना
विश्कर्मा-सुत 'नल' बहु ख्याती ❋ अस्सी उपर न बल केहु भाँती
अग्निसुवन बोलत कपि 'नीला' ❋ नब्बे योजन लौं बलशीला
तारक जो कपीस - भण्डारी ❋ नब्बे पर दुइ अधिक पुकारी

दो० ऋक्षपुत्र भल्लुक सचिव जाम्बवान अनुमान ।
बिहँसि बहुरि युवराज सन निज बल कीन बखान ।। ३ ।।

अंगदेरे बोले, सबे सागर नेहाले ❋ महा ढेउ उठे पड़े आकाश-पाताले
अंगद ब'लेन, केन करिछ विषाद ❋ कोन् वीर लवे एस राजार प्रसाद
कोन् वीर सुग्रीवे करिबे सत्ये पार ❋ कोन् वीर करिबे रामेर उपकार
कोन् वीर करिबे ज्ञातिर अव्याहति ❋ सीता अन्वेषिया आजि राखह सुख्याति
अंगदेर वचन लंघिते केह नारे ❋ आपन विक्रम सबे कहे धीरे-धीरे
गय नामे सेनापति यमेर नन्दन ❋ सेइ ब'ले डिंगाइब ए दश योजन
गवाक्ष वानर ब'ले तार सहोदर ❋ पारि लंघिवारे कुड़ि योजन सागर
शरभ नामेते ब'ले मुख्य सेनापति ❋ चल्लिश-योजन आमि लंघि सरित्पति
तार सहोदर ब'ले से गन्धमादन ❋ आमि लंघिवारे पारि पंचाश योजन
महेन्द्र वानर ब'ले सुषेण कोङर ❋ लंघिवारे पारि षाटि योजन सागर
देवेन्द्र ताहार भाइ ब'ले एइ सार ❋ सत्तर योजन लंघि आमि पारावार
पुत्र विश्वकर्म्मार ब'लिछे नल वीर ❋ अशीति योजन लंघि सागर गभीर
अग्नि-पुत्र नील ब'ले वीर अवतार ❋ नवति योजन लंघि सागर पाथार
तारक वानर ब'ले राजार भाण्डारी ❋ द्विनवति जोजन जे लंघि वारे पारि
ब्रह्मापुत्र भल्लुक करिया अनुमान ❋ हासिया उत्तर करे मन्त्री जाम्बवान
यौवन कालेर बल टूटये बार्द्धके ❋ यौवन कालेर कथा शुनह कौतुके

---

१ समुद्र २ हाथों से ।

यौवन-बल न, वृद्ध अब अंगा ※ यौवन-कौतुक सुनहु प्रसंगा
बलिहिं छलन, वामन पग तीनी ※ त्रिभुवन धरनि नापि सब लीनी
अवनि अखिल जे वीर प्रवीना ※ हरि पद सकल प्रदच्छिन कीना
प्रभु - पद पैकरमा विस्तारा ※ सहित जटायु कीन त्रय वारा
भयेउँ जरठ, यद्यपि अब छीना ※ पचनब्बे योजनहिं प्रवीना
शत योजन विन सिद्ध न काजा ※ योजन पाँच कमी, अति लाजा
जामवन्त लचरई[1] बखाना ※ आत्मविभोर वीर हनुमाना
कोप-दग्ध कह बालिकुमारा ※ करौं शक्ति निज सिन्धु उतारा
इक छलाँग महँ सुबरन लंका ※ लौटत किन्तु हिये कछु संका
पिता-दुलारन[2] श्रम नहिं जाना ※ इमि संसय निज बल अनुमाना
जाब सुलभ प्रत्यागम[3] संसय ※ राम काज किमि होय असंसय[4]
को समर्थ सैनिप नरनाहू ※ जीतहि सिन्धु लहै जस-लाहू
कहेउ भल्लु सुनि अंगद-बानी ※ अहो वीर, किमि कथा बखानी
बिक्रम-बालि बिदित त्रयलोका ※ तेहि सम तहि सुत जगत विलोका
गिनती एक न, तुम शतवारा ※ सिन्धु समर्थ आर पुनि पारा
कटक रहित, तव श्रम अनरीती ※ जाहु सैन तजि स्वयं, न रीती

बलिरे छलिते हरि हइला वामन ※ तिनपाये जुड़िलेन ए तिन भुवन
प्रथिवीते यत वीर आछिल प्रवीण ※ तारा सब ताँर पद करे प्रदक्षिण
जटायु पक्षीर संगे उड़िया अपार ※ विष्णुपद प्रदक्षिण करि तिन वार
पूर्व्वे सेइ शक्ति छिल टूटिल एखन ※ तथापि लंघिब पंचनवति योजन
लांघिले योजन शत सिद्ध हय काज ※ लागिया योजन पाँच भावि बड़ लाज
एत यदि ब'लिलेन मंत्री जाम्बवान ※ अभिमाने ज्वले महावीर हनूमान
कहेन अंगद वीर, कोपे अंग ज्वले ※ सागर तरिते पारि आपनार बले
एक लाफे पड़ि गिया स्वर्णपुरी लंका ※ यदि ना आसिते पारि ताहे करि शंका
भोगे राखिलेन पिता, ना दिलेन श्रम ※ से कारणे नाहि जानि आपन विक्रम
सागर तरिते पारि आसिते संशय ※ कि जानि रामेर कर्म्मे पाछे विघ्न हय
सागर तरिते केवा आछ सेनापति ※ देखाइया विक्रम राखह निज ख्याति
अंगदेर कथा शुनि जाम्बवान हासे ※ वीर तुमि हेन कथा कह कि आभासे
बालिर विक्रम वापू, त्रिभुवने जाने ※ ताहार हइते तव विक्रम बाखाने
एकवार कोन कथा, तुमि शतवार ※ जाइते आसिते पार सागरेर पार
राजा ह'य केन हे करिबे एत श्रम ※ तुमि गेले कटकेर ना रवे नियम

१ लाचारी २ पिता के लाड-प्यार में ३ वापस लौटने में

दो० हम शाखा, तुम मूल, जिन, रहत फलन अधिकाय ।
मूल विना पल्लव झरैं, मूल रहत हरियाय ।। ४ ।।

तव पितु केहि न सीस उपकारा ❋ तव प्रताप, नहिं कठिन उतारा
तव, युवराज ! सकल कपि पायक[1] ❋ तव आयसु समर्थ सब लायक
आयसु मात्र देहु कपिराजू ! ❋ सेवक सिद्ध करैं सब काजू
अंगद कहत, न सागर पारा ❋ कोउ भट करत न अंगीकारा
प्रत्यागम[2] दुष्कर मोंहि जाई ❋ लखि विलंब नृप-भय अधिकाई
संसय जीवन निश्चित मरना ❋ अबहिं करौं मैं सागर तरना
कपिगन कहत जोरि जुग पानी ❋ तरहु सिंधु तुम, हमहिं गलानी[3]
नृप, नृप-सुवन, इन्द्र कर नाती ❋ सबन सुबुद्ध वृहस्पति भाँती
तव मुख निरखि बालि दुख भूला ❋ तुम विन एक दिवस दुखशूला
कहेउ ऋचछपति संसय तजहू ❋ तरै सिन्धु जो, रुचि धरि सुनहू
आत्मविभोर मौन हनुमाना ❋ बसत सैन बिच नकुल[4] प्रमाना
सहज नयनतर काहु न आवैं ❋ जाम्बवन्त तिन बचन सुनावैं
का मुख लखत मौन हनुमाना ! ❋ तात कथन मम सुनु धरि ध्याना

तुमि कटकेर मूल, मोरा सबे डाल ❋ से मूल थाकिले फल पाब सर्व्वकाल
झड़े वृक्ष भांगिलेइ पत्र नाहि रय ❋ यदि मूल थाके पत्र पुनराय हय
कार उपकार ना करिल तव बाप ❋ कोन् वीर लंघिवेक तोमार प्रताप
सकल वानर तव घरेर सेवक ❋ सकले हइब तव कार्य्येर साधक
बसि आज्ञा कर तुमि वानरेर राज ❋ सेवक हइते तव सिद्ध हबे काज
अंगद ब'लेन धीरे कि करि इहार ❋ सागर लंघिते केह ना करे स्वीकार
सागर तरिते पारि, आसिते संशय ❋ विलम्ब हइले करि सुग्रीवेर भय
जीवन संशय मम, निश्चित मरन ❋ सागर लंघिब आमि, देख वीरगण
सकल वानर कहे करि जोड़ हात ❋ तुमि केन लंघिबे हे वानरेर नाथ
राजपुत्र राजा तुमि वासवेर नाति ❋ निजे महामति तुमि बुद्धे वृहस्पति
भुलियाछि बालिके हे तोमा दरशने ❋ एक तिल नाहि बाँचि तोमार बिहने
जाम्बवान ब'ले छाड़ जंजाल वचन ❋ जे सागर लंघिबे, ता करह श्रवन
अभिमाने मौनभावे वीर हनूमान ❋ कटकेर मध्ये आछे नकुल प्रमान
कटकेते हनुमाने केह नाहि देखे ❋ जाम्बवान कहितेछे देखिया ताहाके
कार मुख चाह तुमि वीर हनूमान ❋ आमार वचन बाछा कर अवधान

१ प्यादा, सेवक २ वापसी ३ लज्जा ४ नेवला ।

जाम्बवान हनुमत् जिमि कहहीं ※ कृत्तिवास कवि प्रस्तुत करहीं
बल अगाध पुनि किमि छलरूपा ※ राम-काज करु धाय अनूपा
सचिव-वचन अंगद मन दीना ※ गुन न कवन हनुमान प्रवीना
जाम्बवन्त, अंगद कपिनाथा ※ उर लपिटाइ लेत कर हाथा
भल्लुक कहत सुनहु धरि ध्याना ※ जन्म - वृतांत वीर हनुमाना

हनुमान-जन्मवृत्तांत वर्णन

दो० कुञ्जर - तनया रूपसी विद्याधरी अनूप ।
शापित विश्वामित्र सों, भइ वानरी सरूप ॥ ५ ॥

सो वानरी सुता इक जाई ※ कपि केसरी ब्याहि घर आई
नाम अञ्जना केसरि संगा ※ सदा मलय गिरि रत रस-रंगा
चैत मास ऋतु जबहिं बसन्ता ※ 'पवन' कतहुँ गिरि मलय रमंता
ऋतु बसंत पुनि मलय समीरा ※ मन चञ्चल, अञ्जना अधीरा
रूप - अञ्जना पवन लुभावा ※ कपि-गृह दुर्जय, लंघि न पावा
ऋतु असनान नर्मदा - कूला ※ गई अञ्जना, विधि-अनुकूला
पवनहिं गंध मिलत तेंहि ओरी ※ रमत अञ्जना, धरि बरजोरी
अहह ! देव वानरी - विलासू ※ कवन हेतु किय जाति विनासू

हनूमान जाम्बवान उभये सम्भाष ※ सुन्दरकाण्डेते गीत गाय . कृत्तिवास
जाम्बवान ब'ले बाछा तुमि महाबल ※ रामकार्य्य कर वापू केन कर छल
अंगद ब'लेन भाल मंत्री जाम्बवान ※ कोन गुण नाहि धरे वीर हनूमान
जाम्बवान् वाक्य आर अंगदेर बोले ※ केह हाते धरे तार केह करे कोले
जाम्बवान् ब'ले, वीर, कर अवधान ※ शुन हनूमानेर ये जन्मेर विधान

जाम्बवान-कर्त्तृक हनुमानेर जन्म वृत्तान्त कथन

कुञ्जर तनया नामे छिल विद्याधरी ※ शापे विश्वामित्रेर से हइल वानरी
सेइ वानरीर एक हइल कुमारी ※ विवाह करिल तारे वानर केशरी
मलय पर्व्वतोपरि केशरीर घर ※ अंजना लइया केलि करे निरन्तर
चैत्रमास प्रवेशिल, बसन्त समय ※ हेन काले वायु गेल पर्व्वत मलय
एकेत वसन्त, ताहे मलय पवन ※ कामेते चंचल अति अंजनार मन
अंजनार रूपे वायु मोहित हृदय ※ लंघिते ना पारे घरे केशरी दुर्ज्जय
अंजना गेलेन भावि निज अनुकूल ※ ऋतु स्नान करिवारे नर्म्मदार कूल
सन्धान पाइया गिया देवता पवन ※ बले धरि अंजनारे करेन रमन
अंजना ब'लेन हे करिला जातिनाश ※ देवता हइया तव वानरी विलास

कहँ सुर श्रेष्ठ, कहाँ दुष्कर्मा * किय मम नष्ट पतिव्रत धर्मा
सुनु अञ्जना क्षमहि मम दोषू * लखि तव छबि दुर्लभ सन्तोषू
करहु गमन गृह कोप सम्हारी * तव सुत होय अमित बलधारी
मम औरस जेहि जन्म कुमारा * मम गति सों गतितर[1] बिस्तारा
इमि कहि पवन गयेउ निज वासा * मारुति जन्म अठरहें[2] मासा
जन्म अमा तिथि लिय हनुमाना * सुनहु कथा शुभघरी बखाना
जन्मति मातु-छीर[3] मुख लावा * भोर अरुण रवि कौतुक छावा
रुचिर लाल फल मनहिं लुभाना * भरि छलाँग तहँ कौतुक ठाना

दो० गिरि सों भानु छलाँग बिच, इक जोजन बिस्तार।
एक उपक्रम तड़कि सो, कीन पवनसुत पार ॥ ६ ॥

लोभ-दिवाकर, हनुमत धाई * दैवयोग तहँ 'राहु' लखाई
प्रस्तुत राहु, हेतु रवि ग्रासा * निरखि पवनसुत, उपजी त्रासा
सोचि समुझि पुनि चलेउ बराई * विनती सुरपति तीर सुनाई
लीलहि भानु, अवर[4] इक राहू * प्रस्तुत गगन सुनहु सुरनाहू
सुरपति-छोह, अन्य किमि राहू * ग्रसै भानु, किमि ताहि उछाहू[5]
ऐरावत चढ़ि इन्द्र सुहाये * रवि ढिग नजर पवनसुत आये

देवता हइया तुमि करिला कि कर्म्म * कि हेतु करिला नष्ट पतिव्रता धर्म्म
पवन ब'लेन किछु ना कह अंजना * देखिया तोमार रूप पासरि आपना
कोप संवरिया हे अंजना जाह घरे * महावीर हबे एक तोमार उदरे
आमार वीर्य्येते जेइ हइबे कुमार * आमार अधिक गति हइबे ताहार
एत बलि पवन गेलेन निजस्थान * अष्टादश-मासे जन्मिलेन हनूमान
अमावस्या तिथिते जन्मेन हनूमान * से दिनेर कथा कहि, कर अवधान
जन्मिया मायेर कोले करे स्तन्यपान * प्रत्यूषे उदित रक्तवर्ण भानुमान
रागा-फल ज्ञान करि धरिते ताँहाके * सेखान हइते लाफ दिलेन कौतुके
पर्व्वत हइते लक्ष्य योजन भास्कर * एक लाफे उठिलेन से अति दुष्कर
दिवाकरे धरिवारे जान हनूमान * दैवायत्त तथा राहु हय अधिष्ठान
सूर्य्यके करिते ग्रास राहु उपस्थित * देखि हनूमानेरे आपनि सशंकित
भाविया चिन्तिया राहु पलाय तरासे * निवेदन करे गिया बासवेर पाशे
शुन सुरपति, कहि एक समाचार * सूर्य्यके गिलिते ये आइल राहु आर
शुनिया राहुर कथा बासव विरस * सूर्य्यके गिलिते अन्य काहार साहस
ऐरावत चड़िया आइल पुरन्दर * हनूमाने देखे गिया सूर्य्येर गोचर

१ अधिक वेगवाला २ अठारवें ३ मा का दूध ४ एक दूसरा राहु ५ उत्साह।

मारुति लखि सुरपति भय माना ※ रवि तजि कहुँ न करै मम पाना
बदन - गजेन्द्र सुभग सिन्दूरी ※ रहे सकौतुक हनुमति घूरी
धरै मतंग तजै दिननाथा[1]! ※ बज्र त्रास - बस लिय सुरनाथा
ज्ञान - विवेक बिनासत रोषू ※ हनेउ बज्र सुरपति बिन दोषू
लागत कुलिस[2] मूर्च्छा आई ※ गिरे मलयगिरि हनुमत जाई
हनु[3] आहत मारुति गिरि-धामा ※ दिय हनुमान मातु-पितु नामा
यौवन बल अतीव विधि दीना ※ त्रिभुवन तीनि प्रदच्छिन कीना
मरन समीप वृद्ध बल व्यर्था ※ सिन्धु तरन जनि मैं असमर्था
जेहि विक्रम जग लेय सहारा ※ धन्य सुयश चहुँ तासु प्रसारा
लावहु खबरि सीय, हनुमाना! ※ कपिगन चिन्तित, कीजिय त्राना

दो० निज-देसन चलि बिपुल कपि, सुयस करैं उद्घोष।
सिन्धु उतरि, उद्धारि सिय, दीजिय रामहिं तोष ॥ ७ ॥

हनुमान का सागर-तरण के लिए उत्साह

जेहि विधि जन्म भयेउ मम धरनी ※ गाथा निज मुख हनुमत वरनी
भूतल तीर्थ 'प्रभास' बखाना ※ सलिल तासु मुनिगन असनाना

भाविते लागिल इन्द्र पाइया तरास ※ सूर्य्यके छाड़िया पाछे मोरे करे ग्रास
सिन्दूर शोभित ऐरावतेर वदन ※ देखिया कौतुकी अति पवननन्दन
सूर्य्यके छाड़िया पाछे धरे ऐरावते ※ त्रासयुक्त देवराज वज्र निल हाते
कुपित हइले लोक आपना पासरे ※ विन अपरधे इन्द्र वज्र मारे शिरे
अचेतन हनूमान हइलेन ताते ※ पड़िलेन तखनि से मलय पर्व्वते
हनू भग्न ह'ये पड़े मलय शिखरे ※ हनूमान नाम ताइ वाप माये करे
यौवन कालेते आमि छिलाम प्रवल ※ तिनवार प्रदक्षिण करि भूमण्डल
वृद्धकाले वलहीन निकट मरन ※ आपनारे नाहि पारि करिते पालन
याहार विक्रमे लोक करेन भर'सा ※ ताहार जीवन धन्य विक्रम प्रशंसा
जानिया सीतार वार्त्ता आइस हनूमान ※ चिन्तित वानर सवे, कर परित्रान
नाना विध वानर बसति नाना देशे ※ तोमार विक्रम येन देशे गिया घोषे
पौरुष प्रकाश कर सागर लंधिया ※ श्रीरामेरे तुष्ट कर सीता उद्धारिया

आत्म-जन्मवृत्तान्त श्रवणे हनुमानेर सागर लंघनेर उत्साह

हनूमान कहिलेन करह विचार ※ आमार जन्मेर कथा कहि आर वार
प्रभास नामेते तीर्थ ख्यात महीतले ※ मुनिगण स्नान करे से नदीर जले

---

१ सूर्य २ वज्र ३ ठोड़ी।

दन्त प्रलम्ब 'धवल' गज एका ※ दसन बिदारै मुनिन अनेका
भरद्वाज ऋषि मुनिन प्रधाना ※ दन्त पसारि चहत तिन प्राना
प्रानन परी बिकल मुनि देखी ※ मम पितु उपजेउ रोष बिसेषी
द्रवित[1] पितहिं अति कोप कराला ※ तड़कि मतंग धरेउ तत्काला
नखाघात दुइ नयन निकारे ※ हाथन हनि तिन दशन[2] उपारे
दन्त उपारि उदर पुनि धाँसा ※ दन्ताहत इमि कुञ्जर[3] नासा
प्रस्तुत पितु[4] पुनि मुनिन-समाजू ※ माँगु माँगु वर हे कपिराजू
जो मुनि वर मोंहि देन बिचारा ※ लहौं तनय अति श्रेष्ठ कुमारा
कहेउ मुनिन, कपिपति ! जस भावै ※ जयी-त्रिलोक सुवन तैं पावै
मुनिन प्रणम्य, कपीस[4] सिधारा ※ गयेउ मलयगिरि निज परिवारा
जननि अञ्जना रूप बखाना ※ गई नर्मदा ऋतु अस्नाना
पवनदेव प्रवहति तेंहि ओरी ※ परसि गात लिय बसन झकोरी
पवन तनय इमि ख्याति समाजा ※ भरे समाज दिवावत लाजा
पुनि तुम जाम्बवान केंहि जाये ※ हनुमानहिं जनि छिपत छिपाये

दो० मातु सती केंहि, विदित केंहिं, को भट कपिन समाज ।
वृथा वचन मतभेद कहि, रामहिं काज अकाज ॥ ८ ॥

धवल नामेते हस्ती दीघल दशन ※ दन्ताघाते चिरिया मारित मुनिगन
भरद्वाज महाऋषि ऋषिर प्रधान ※ दन्त सारि जाय हस्ती निते ताँर प्रान
व्याकुल हइया मुनि पलाय दौड़िया ※ रुषिया गेलेन पिता विपद् देखिया
दयालु आमार पिता अति भयंकर ※ एक लाफे पड़िलेन हस्तीर उपर
दुइ चक्षु उपाड़ेन नखेर आँचड़े ※ दुइ हाथे टानि दुइ दशन उपाड़े
दन्त उपाड़िया तार पेटे देय दन्त ※ दन्ताघाते मातंगेर करिलेन अन्त
परेते गेलेन पिता मुनिर समाज ※ मुनि ब'ले, वर माँग ओहे कपिराज
केशरी ब'लेन, यदि वर निते हय ※ तबे येन पाइ एक उत्तम तनय
मुनिरा ब'लेन, तुमि चाहिला जे वर ※ त्रैलोक्य विजयी हबे तोमार कोङर
वर पेये मुनिगणे करि नमस्कार ※ मलय पर्व्वते गेल यथा परिवार
अंजना आमार माता अति रूपवती ※ ऋत स्नान हेत गेल नर्म्मदार प्रति

छं० कपि-सैन अभय करि, बालि-तनय कर, मान कौ मान बढ़ाइबे का ! ।
शत योजन सिन्धु मनौ जलबिन्दु, तहाँ शतबार कौ जाइबे का ! ।।
रिपु मारि, सिया उद्धारि, महाबल ! सुबरन-लंक ढहाइबे का ! ।
रन काहु न टेरि, अकेल सिया लहि, राम कौ काज सवाँरिबे का ! ।।

धरि उर मोद तजहु सब चिन्ता ※ करहुँ अकेल काज - भगवन्ता
कहत कीस तव वचन प्रमाना ※ जग न वीर हनुमान समाना
सुमन सुगन्ध मनोहर हारा ※ सकल कपिन हनुमत-गर डारा
सिन्धु तरन मारुति मन भावा ※ बहुभट-सुभटन सहज लजावा
कवि कृतिवास विचक्षण बानी ※ पावन गाथा - राम बखानी

हनुमान द्वारा सागर-लंघनोद्योग

हर्षित अति हिय पवनकुमारा ※ धाय, राम जय राम पुकारा
भरि सुअंक बन्देउ युवराजू ※ बन्दनीय पुनि अखिल समाजू
कपिन कहत भरि गोद बलागर[1] ※ भरौं छलाँग तरन हित सागर
तबहिं धरनि सहि सकै न भारा ※ चलि महेन्द्र गिरि लेयँ अधारा
गिरि समरथ मम भार सम्हारी ※ कपि अनुसरत मरुति[2] बलधारी

वानर कटके करि अभय प्रदान ※ अंगद वीरेर आजि बाड़ाइब मान
सागर जोजन शत देखि खालि जुलि ※ शतवार पार हइ आमि महावली
उड़िया पड़िब गिया स्वर्ण लंकापुरी ※ शत्रु मारि उद्धारिब रामेर सुन्दरी
तोमा सवाकारे ना डाकिबे युद्ध आशे ※ एकाकी आनिब सीता श्रीरामेर पाशे
परम हरिषे थाक कोन चिन्ता नाइ ※ सकलेते किवा काज, एका आमि जाइ
सबे ब'ले, यत ब'ल, किछु नहे आन ※ त्रिभुवने वीर नाहि तोमार समान
सुगन्धि पुष्पेर माल्य गन्ध मनोहर ※ हनूमान गले दिल सकल वानर
बड़-बड़ वानरेर देखिया काकुति ※ सागर तरिते हनूमान करे मति
कृत्तिवास कविर कवित्व विचक्षण ※ गाइल सुन्दरकाण्ड गीत रामायण

हनूमानेर सागर लंघनोद्योग

तदन्तर वायु - पुत्र प्रसन्न हृदय ※ उठि दाँड़ाइया ब'ले 'राम जय-जय'
युवराज अंगदेरे करि आलिंगन ※ बन्दनीय सर्व्वजने करिला बन्दन
अन्य यत कपिगणे आलिंगन दिया ※ कहिछेन सकलेरे उल्लासित हैया
आमि जबे लम्फ दिब सागर लंघिते ※ ना पारिबे मोर भार धरणी सहिते
अतएव चल सबे महेन्द्र भूधरे ※ लम्फ दिब थाकि ओइ गिरिर उपरे

१ बलशाली हनुमान २ हनुमान ।

गिरि महेन्द्र हनुमत छबि पावा * गिरि पर गिरि मानहुँ चढ़ि आवा
किन्नर, अमर, यक्ष, गन्धर्वा * नाग, भूत, सिद्धादिक सर्वा
अप्सरादि विद्याधरि सारी * नभ सों मुनिगन रहे निहारी
गिरि, प्रस्तुत वानर-कुल सारा * विविध सुमन मिलि गूँथल हारा
सो युवराज लीन ततकाला * अर्पित पवनतनय - गर माला
ऐरावत - मणिमाल सरूपा * मरुति-कण्ठ छबि देत अनूपा

दो० कपिन-अनुज्ञा लै प्रथम, पूरुब-मुख आसीन।
पवनतनय सविनय सबन, ध्याय दण्डवत कीन ॥ ९ ॥

गौरि गनेश ब्रह्म दिक्पाला * अष्ट लोकपति शंभु दयाला
पञ्चदेव वरुणादि कुबेरा * विष्णु-रमा पुनि सुरपति टेरा
पुनि अञ्जना केशरी बन्दे * बन्दति निज पितु पवन अनन्दे
जेते कीस सुभट बलसीवा * बन्दि लखन-सिय उर सुग्रीवा
आदि राम छबि चिन्तन कीन्हा * उर-हनुमान, दरस प्रभु दीन्हा
भक्ति सहित कपि कीन प्रणामा * जयति राम जय करुणाधामा
अगनित रघुपति राम सहारा * तव लहि कृपा तरति भव पारा
जो अवलम्ब दयामय केरू * पिपीलकहिं[1] गिरि सहज सुमेरू

एत शुनि अग्रे करि पवन कोङरे * उठिलेन कपिगण सेइ धराधरे
महेन्द्र उपरे शोभे मरुतनन्दन * येन अन्य गिरि आसि कैल आरोहन
हेनकाले यावतीय अमर किन्नर * देखिवारे एल सबे अम्बर उपर
विद्याधर अप्सरा गन्धर्व्व नागगन * यक्ष भूत सिद्ध साध्य मुनि तपोधन
सबे मिलि यावतीय शाखामृग-कुल * गाँथिलेन माला एक तुलि नाना फुल
सेइ माला युवराज ल'ये निज करे * समर्पिला पवनतनय - कण्ठोपरे
शोभिल श्रीहनूमान सेइ माला परि * जेन मणिमाला गले ऐरावत करी
तबे सब कपिस्थाने अनुमति ल'ये * बसिलेन हनूमान पूर्व्वमुख ह'ये
भक्तियुक्त मने कैला दण्डवत नति * गणेशादि पंचदेव दिक्पाल प्रति
अष्ट लोकपाल बन्दे उमा महेश्वरे * कुबेर वरुण बन्दे बन्दे पुरन्दरे
ब्रह्मा विष्णु वन्दे वीर विष्णुर वनिता * अंजना केशरी बन्दे, बन्दे वायु पिता
बड़-बड़ कपिगणे बन्दे एक भावे * उद्देशे प्रणाम करे नृपति सुग्रीवे
लक्ष्मण जानकी पद करिया बन्दन * आरम्भिला रामचन्द्र करिते चिन्तन
चिन्तामात्र हृदय प्रकाश रघुवर * देखिया मारुति मने करेन आदर
जय - जय रामचन्द्र रघुकुलपति * कृपामृत पारावार अगतिर गति
तुमि यदि चाह प्रभु हइया सदय * तबे पिपीलिका मेरु तुलिते पारय

१ चीटियों को भी।

अणु-परमाणु नयन बिन देखी * पंगु सकत तरि सिन्धु विशेषी
तव महिमा इमि लखि रघुराजू * करि साहस लिय गुरुतर काजू
यदि तव कृपा सिद्ध जनि कामा * तौ तव वृथा कल्पतरु नामा
लीन सरन मैं, प्रभु ! यहि हेतू * कृपा-कोर[1] कीजिय रघुकेतू
यहि विधि विनय पवनसुत कीन्हा * उर-छबि-राम अनुमती[2] दीन्हा
पुनि हिय सों हरि अन्तर्द्धाना * लखि प्रभु-गमन, तजेउ कपि ध्याना
राम-कृपा लहि, मोद महाना * कपिन हेरि बरनत हनुमाना
सखा ! सुनहु अब मोहिं न चिन्ता * कर मम गहेउ स्वयं भगवन्ता

दो० गोपद सम सागर लखत, रुचि, शतबार सँझाय ।
हनि सवंश लंकेस पुनि, धरौं लंक इत लाय ।। १० ।।

हाथन सिन्धु उलीचहुँ वारी[3] * बोरहुँ विश्व मनै अस धारी
सुनत बैन प्रमुदित कपिवृन्दा * जिमि घन-गर्ज मयूर अनन्दा
पुनि मारुति अंगद उरलाई * वृद्ध ऋच्छपति-पद शिर नाई
राम-चरन, उर ध्यान लगावा * लंघन सिन्धु दछिन दिसि धावा
सबबिधि हनुमत-कुशल मनाई * वानर-कटक राम-धुनि छाई
धरनि विलोकि न समरथ भारा * गिरि चढ़ि लंघ पयोधि विचारा

परमाणु देखिते पारये अन्धजन * पंगु पारे पारावार करिते लंघन
एइ साहसेइ आमि हेन गुरुकाज * करिवारे साहस क'रेछि रघुराज
यदि सिद्ध नाहि कर तुमि सेइ कामे * दोष हवे प्रभु, तव कल्पतरु नामे
अतएव तव पदे करि निवेदन * कर मोर प्रति कृपा कटाक्ष अर्पन
एत निवेदन कैला जबे हनुमान * कटाक्षेते अनुमति दिला भगवान
तवे प्रभु अन्तरेह कैला अन्तर्द्धान * प्रभु नाहि देखि वीर त्यजिलेन ध्यान
प्रभु अनुग्रह पेये आनन्दित मन * कहिछेन कपिगणे पवननन्दन
आर नाहि करि आमि कोनइ चिन्तन * हइयाछि राम-कृपा-कटाक्ष-भाजन
एवे देखि समुद्रेर गोष्पद जेमन * शत कोटि वार लंघिवारे करि मन
सवंशे रावण वधे साहस जे करि * लंका तुलि एइ स्थाने अनिवारे पारि
भुजे करि हेलाइया सागरेर वारि * इच्छा हैले ब्रह्माण्डेरे डुवाइते पारि
मारुतिर वाणी शुनि सुखी कपिगन * शिखी यथा शुनि धाराधरेर गर्जन
तवे पुनः मारुति अंगदे आलिंगिया * वृद्ध ऋक्ष जाम्बवान-चरण वन्दिया
दाँड़ाय दक्षिण मुखे लंघिते सागर * श्रीरामचन्द्रेर पदे राखिया अन्तर
वानर कटके करे राम जयकार * हनूमान, निर्व्विघ्ने सागर हओ पार
पृथिवी सहिते नारे हनुमान भर * समुद्र लंघिते उठे पर्व्वत उपर

---

१ दयादृष्टि २ स्वीकृति ३ जल ।

कपिपद - चाप धराधर काँपा * भय बस सिंह व्याघ्र गिरि साँपा
चालिस योजन अंग प्रसारा * तड़कि चलेउ नभ त्यागि पहारा

सागर लंघन हेतु हनुमान द्वारा भीषण-रूप धारण

गुणनिधि जाहिं सिन्धु के पारा * माया - तन हनुमत विस्तारा
दश योजन तन अभय कराला * बल तेहि द्विगुन अतिव विकराला
पवनतनय गिरि इमि छबि पावा * अवर[1] धराधर[2] भूधर[3] छावा
अग्निपुञ्ज सम नयन विशाला * नासा-स्वर जिमि बज्र कराला
पुच्छ-रोम शिर करत कलोलैं * मेरु शिखर जिमि अहिपति[4] डोलैं
दुसह कलेवर-कपिवर-भारा * पुनि पुनि डगमग होत पहारा
गिरि लर्जत तरु कम्प गम्भीरा * झरत सुमन बरसत मनु वीरा
उपरि विटप[5] बहु धरनि लखाहीं * तरु-पंछी उड़ि नभ मड़राहीं

दो० कनक शृंग[6] आपात भुइँ, दुष्ट जीव दबि नष्ट।
हस्ति चिघरत पाय भय, तजि वन भजे[7] सकष्ट ॥ ११ ॥

बहु कुञ्जर उतान[8] बिन प्राना * तिन दबि मरे निकट-पशुनाना
अचरज अति जिमि लहि मृगराजू * बिडरत[9] चहुँ मृग वन्य समाजू

पर्व्वते उठिल सबे ह'ये एक चाप * सिंह व्याघ्र पलाइल पार्व्वतीय साप
चल्लिश योजन तनु हनूमान धरे * शरीर ठेकिल गिया आकाश उपरे

सागर लंघने हनुमानेर भीषण मूर्ति धारण

सर्व्वगुण पात्र वायु-पुत्र सिन्धु लंघिवारे * तबे करि लीला बाड़ाइला आपन कायारे
तबे असाध्वस ह'ल दश योजन विस्तार * आर महाबल सुदीघल द्विगुण ताहार
करि दरशन तारे मन करे हेन ज्ञान * येन सेइ गिरि शिरोपर आन गिरिमान
ताहे दुनयन विरोचन सम प्रकाशय * किवा नासा-रव शुनि सब निर्घात मानय
दिव्यरोमगुच्छ दीर्घपुच्छ शिरोपरिलोले * येन मेरुगिरि शृंगोपरि नागराज दोले
सेइ कपिवर-कलेवर-भर से भूधर * नारि सहिवारे वारे-वारे करे थर-थर
ताहे तरुगण आन्दोलन कर घनेघन * ताहे पुष्प झरे, बुझि वीरे करिये वर्षन
आर कत वृक्ष लक्ष-लक्ष उपड़ि पड़य * ताहेनानापाखी छाड़ि शाखी आकाशेउड़य
ताहे कत शृंग पेये भंग भूतले पड़िला * ताय कत दुष्ट पशु नष्ट कष्टेते हइला
ताहेपाय भीति कत हाती कातर हइया * करे पलायन छाड़ि वन चीत्कार करिया
आर कत करी प्राणे मरि उच्च हैते पड़े * ताहे हैल हत पशु कत ये छिल नियड़े
इथे ह'ल एक परतेक महत् आश्चर्य्य * किवा करि-स्थाने ह'ल प्राणेशून्य सिंहवर्य्य

१ दूसरा २ पहाड़ ३ पड़ाव पर ४ शेषनाग ५ वृक्ष उखड़-उखड़ कर
६ पहाड़ों की चोटियाँ ७ भाग गये ८ चित पड़े थे ९ तितर बितर हो जाता है।

पवन प्रान-जग, तेंहि सुत-अंगा ※ पावत भार ढहत गिरि-श्रृंगा
मारुति-चाप विवर[1] तजि साँपा ※ आकुल तजत श्वास-सन्तापा
कर्ण सचेष्ट, धीर, बलवीरा ※ हुमकि सदर्प, घोष 'रघुवीरा'
सो हनु-नाद छनहिं जग छावा ※ मनु कल्पान्त जलद घहरावा
सुनत महारव जीव अधीरा ※ भय बस बिकल, न चेत सरीरा
घन-रव, पुनि कपिगन-जयकारा ※ दिग्दिगंत दोउ रव[2] विस्तारा
हनुमत - वेग अनन्त अपारा ※ स्वयं पवन-गति तन जिमि धारा
लख-लख विटप न वेग सम्हारी ※ तेंहिं[3] अनुगमत, भये नभचारी
लखि प्रवास, हनुमान-बिछोहा ※ मनहुँ अनुसरत बिबस-बिमोहा
कतक शिखर कुंजर[4] उड़ि धाये ※ चलि मग वारिध-नीर समाये
मारुति अन्तरिक्ष तन उठहीं ※ कौतुक लखत चकित सब रहहीं
अहह! पवनसुत गगन सुहावा ※ मेरु पंख धरि नभ छबि पावा
युगुल बाहु घन बीच प्रकासू ※ बासुकि जिमि गिरि-सीस निवासू
पुच्छ उच्चतर उद्धर्व अनूपा ※ भाद्र मास ध्वज-इन्द्र[5] सुरूपा

दो० चलत पवनगति अंग जिन अति रव वज्र समान।
मरुत-बयार-प्रवाह फँसि, थिर न काहु कल्यान ॥ १२ ॥

किवा जगत्-प्राण सुसन्तान-कलेवर-भरे ※ नारि सहिवारे से शिखरे चड़-चड़ करे
ताहे पेये चाप यत साप विवरे आछिल ※ तारा पेये त्रास महाश्वास छाड़िते लागिल
तबे महावीर ह'ये स्थिर उच्चे कर्ण सारि ※ करिमहादम्भ दिला लम्फ श्रीराम फुकारि
सेइ महारव लोकसब क्षणे आच्छादिल ※ येन कल्पकाले कुतूहले जलद गर्ज्जिल
सेइ शब्द शुनि यत प्राणी करे टलमल ※ ह'ल अचेतन यत जन भयेते विकल
ताहे कपिगन घने घन जयध्वनि करे ※ दुइ शब्दे मिलि गेला चलि दश दिगन्तरे
सेइ महावीर मारुतिर गतिवेग देखि ※ तार उपमान मरुत्वान पवनेन लेखि
सेइ वेग वृक्ष लक्ष-लक्ष ना पारि सहिते ※ तारा वीरवाय पाछे जाय व्योम उपरिते
मने एइ लिखि तारा देखि प्रवासी ताहाय ※ येन बन्धुजन दुःखिमन अनुव्रजि जाय
आर कत हाती श्रृंग तथि उड़िया चलिल ※ तारा कत दूरे गिया परे जलेत पड़िल
तबे विना लक्ष्ये अन्तरीक्षे मारुति उठिल ※ करि निरीक्षण सवजन स्तम्भित हइल
आहा कपि किवा पाय शोभा आकाश उपरे ※ येन मेरु गिरि पक्ष धरि उड़ये अम्बरे
तार बाहुद्वय प्रकाशय सघने दोलय ※ येन नागराज गिरिराज उपरि शोभय
तार ऊर्द्ध्व वदेशे किवा भासे पुच्छ उच्चतर ※ येन भाद्रमासे सुप्रकाशे इन्द्रध्वजवर
तार अंगगण समीरण सम तेजे वय ※ जार शुनि रव लोक सब निर्घात मानय

---

१ बिल २ शब्द ३ हनुमान के पीछे ४ हाथी ५ प्राचीन काल में भाद्र शुक्ल द्वादशी को इन्द्रध्वज गाड़कर पूजन होता था।

बेग-समीर अकर्षन भारी ❋ बिबस सकल फँसि चले मँझारी
बहुल धराधर सिन्धु समाये ❋ नभचारी बहु उबरि न पाये
बारिधि जल अति कलकल ब्यापा ❋ जल-थल अखिल महारव काँपा
मकरादिक जलचर जल माहीं ❋ भय बस चलि अति दूर लुकाहीं[1]
उठत शनैः[2] व्योम[3] हनुमाना ❋ लहेँउ दिवाकर मुकुट समाना
रक्तपद्म अभरन युग चरना ❋ गर जगमग रवि-द्युति[4] आभरना
बल बिक्रम निहारि सुख पावैं ❋ सुरगन सुमन वृष्टि झरिलावैं
चिन्तति उर स-नेह रघुनाथा ❋ गगन संतरति इमि कपिनाथा

सुरसा द्वारा मार्ग-अवरोध

बिक्रम अतुल निरखि हनुमाना ❋ सुरगन सुरसा तीर बखाना
अहि-जननी[5] तव शक्ति विलच्छन ❋ संसय-हीय-सबन करु भञ्जन
राम-प्रिया सिय-शोध लगावन ❋ लखहु लंक-प्रति हनुमति-धावन
मारग विघिन रूप अस धरहू ❋ तेहि बल-बुद्धि परिच्छन[6] करहू
सिन्धु पार करि पुनरपि आवै ❋ कारज-राम सिद्ध करि लावै

सेइ वेगवान मरुत्वान लागये याहारे ❋ सेइ कोनमते स्वस्थानेते स्थिर हैते नारे
सेइ समीरण वेगे घन सब आकर्षित ❋ तार पाछे-पाछे काछे-काछे चलिल त्वरित
आर बहुतर धराधर सागरे पड़िल ❋ कत व्योमचारी सिन्धुवारि माझारे डुबिल
आर सिन्धुजल कलकल करे अतिशय ❋ सेइ उतरोल जल-स्थल अवधि काँपय
ताहे स मकर जलचर यावत् आछिल ❋ तारा पेये भय अतिशय दूरे पलाइल
तवे क्रमे क्रमे उठे व्योमे पवननन्दन ❋ ह'ल प्रथमेते तार माथे मुकुट तपन
परे से तरणि कण्ठमणि-समान शोभिला ❋ परे दुइपद कोकनद भूषण हइला
हेन महावीर मारुतिर शौर्य्य निरीक्षणे ❋ पेये महातुष्टि पुष्पवृष्टि करे देवगणे
तबे एइमते आकाशेते चलिला वानर ❋ किवा प्रेम भरे चिन्ता करे रामे वीरवर

सुरसा सापिनी कर्त्तृक हनूमानेर गतिरोध

एइमत मारुतिर विक्रम देखिया ❋ सुरसाके सुर सब कहेन डाकिया
नागमाता, तुमि धर शक्ति विलक्षन ❋ कर मो' सवार एक संदेह भंजन
जाइछेन एइ वायुतनय लंकाते ❋ रामचन्द्र प्रेयसीर तत्त्वे से जानिते
तुमहि ताहाते करि विघ्न आचरन ❋ जानह इहार बल बुद्धि वा केमन
पारिबे नारिवे किंवा एइ कपिराज ❋ सेथा हैते फिरिवारे साधि एइ काज

१ छिप रहते थे २ धीरे धीरे ३ आकाश ४ सूर्य के प्रकाश जैसा ५ हे नागमाता! ६ परीक्षा।

धरि यहि हेतु बदन विकराला * मारुति तीर जाहु तत्काला
सर्पमातु सुरसा यहि रूपा * रूप-राच्छसी धरेसि अनूपा
मारुति चलत पवन रव करहीं * पुच्छ-अघात शिला-तरु उड़हीं

दो० कीस निहारत सिन्धु तन, जहँ लौं दीठि-पसार।
दरस न कहुँ हनुमान के, गये कहाँ लौं पार॥ १३॥

लंघि भाग त्रय, इक अवसेसू * सर्पिनि किय मग विघिन विसेसू
सुरसा कर निवास सुरलोकू * ठकुराइन सब बिधि अहिलोकू
जन-पताल[1] पुनि सुर-गन्धर्वा * सुरसा-भय व्यापत जग सर्वा
सरजी-सुरन[2] विकट तन लाई * जहँ मारुति नभ-तर तहँ छाई
कपि ढिग रूप भयंकर धारी * अहि-जननी छल-बैन उचारी
रे रे कीस! जाहु जनि अन्ता * करु प्रवेश मम बदन[3] अनन्ता
अतिशय क्षुधा विकल मम प्राना * तुम लहि यहि छन जीव जुड़ाना
देव दयामय लखि मम पीरा * किय अहार प्रस्तुत मम तीरा
अतः विलम्ब न करि तत्काला * बेगि पैठु मम बदन कराला
सुनि सुतपवन युगुल कर जोरी * नागमातु प्रति विनय बहोरी
दशरथ - तनय राम वनवासू * पितु आयसु लहि दण्डक वासू

इहाइ जानिते धरि घोर कलेवर * जाह तुमि क्षणेक मारुति वराबर
एत शुनि सर्पमाता सुरसा सापिनी * प्रस्थान करिला ह'ये राक्षसी रूपिनी
दुड़ दुड़ शब्दे हनू जाय वायु-भर * लेजेर आघाते उड़े पादप-पाथर
एक दृष्टे कपिगन सागर नेहाले * देखिते ना पाय केह कतदूर गेले
तिनभाग गेछे, आर आछे एक भाग * सुरसा सापिनी तार पथे पाइल लाग
देवतार पुरे थाके सुरसा सापिनी * भुजंग लोकेर तिनि हन गोस्वामिनी
देवता गन्धर्व्व आर पाताल निवासी * सुरसा-सापिनी-उरे सबे हय त्रासी
धरे से विकट मूर्त्ति देवतार बोले * हनुमाने परीक्षा करिते नभस्तले
मारुतिर अंगे भीम मुरति धरिया * कहिछेन नागमाता कपट करिया
अरे कपि, जाह तुमि आर कोन स्थाने * प्रवेश करह आसि आमार वदने
हइयाछि सातिशय क्षुधाय पीड़ित * ए समये तोरे पेये हैनु बड़ प्रीत
वुझिलाम, कृपा करि यत देवगन * करि दिला मोर आगे तोर आनयन
अतएव विलम्ब ना कर एकक्षन * शीघ्र आसि कर मोर मुखे प्रवेशन
एत शुनि वायुपुत्र जुड़ि कर द्वय * कहिछेन ताँर प्रति करिया विनय
दशरथ-पुत्र राम दण्डक कानने * आसि वास करेछिला पितार बचने

१ पातालनिवासी २ देवताओं की इच्छा से ३ मुख में।

तहाँ लंकपति पापाचारी * बिन अपराध हरेँउ तिन नारी
जाहुँ लंक आनहुँ सिय-शोधू * केँहु विधि उचित न तव अवरोधू
अखिल जगत-हित रघुपति प्रीती * तिन अनहित सब विधि अनरीती
तदपि न जो केँहु भाँति निवारन * तौ कछु काल धीर करु धारन
सिय की रामहिं खबरि जनाई * तव मुख लौटि प्रवेशहुँ माई !

दो० संशय जनि, मम कथन ध्रुव, सुनि सुरसा कपि-वानि ।
अडिग, कहत, ढिग आय मम, जियत न उबरत प्रानि ॥ १४ ॥

सुरसा-वचन समीरकुमारा * सुनि प्रकोपि कटु वैन उचारा
भच्छै मोहिं, कवन मुख माहीं * करौं प्रवेश, लखौं मैं ताहीं
सुनि सुरसा निज बदन पसारा * योजन बीस विषम बिस्तारा
योजन तीस भयेउ हनुमाना * सुरसा पुनि चालीस प्रमाना
मारुति गात प्रलम्ब पचासा * साँपिनि योजन साठि प्रकासा
इत सत्तर उत अस्सी करनी * हनुमति नब्बे, शत अहि-जननी
चिन्तति कौतुक पवनकुमारा * सहज न निसिचरि केन-प्रकारा
सोचत, प्रकट भयेउ सब मर्मा * निश्चय यहु सुरसा-दुष्कर्मा

विना दोषे हरि आनियाछे ताँर नारी * दशानन एइ लंकापुरी अधिकारी
जाइतेछि आमि ताँर तत्त्व जानिवारे * ताहे विघ्न नाहि कर कोनह प्रकारे
सेइ रामचन्द्र ह'न सकलेर हित * ताँहार अहित करा तव अनुचित
यदि व'ल, अवश्यइ खाइब तोमारे * तव योग्य हय किछु गौण करिवारे
सीता देखि वार्त्ता दिया श्रीरघुनन्दने * आसि प्रवेशिब आमि तोमार बदने
किछु नाहि कर तुमि इहाते संशय * कहितेछि सत्य आमि करि निश्चय
सुरसा कहेन, ताहा आमि नाहि मानि * मोर आगे आसि फिरे नाहि जाय प्राणी
सुरसार वाणी शुनि समीरनन्दन * कोप करि कहिछेन कठोर वचन
कोन् मुखे दुष्टा, मोरे करि बिभक्षन * प्रकाश करह ताहा, करि प्रवेशन
शुनिया सुरसा विंश-योजन विस्तार * प्रकाश करिला निज-मुखेर आकार
ता' देखि मारुति त्रिश योजन हइला * चल्लिश योजन मुख सुरसा करिला
पंचाश योजन हैल पवन-सन्तान * करिला सुरसा षष्टि योजन व्यादान
सप्तति योजन हैल परे हनूमान * सुरसा करिल आशी योजन प्रमान
हनूमान हैल तबे नवति योजन * सुरसा करिल शत योजन आनन
ताहा देखि हनूमान चिन्तिल विस्मय * ए के ए त सामान्य राक्षसी नाहि हय
एत भावि क्षणकाल मानस माझारे * जानिलेन मारुति सुरसा ब'लि ताँरे
तवे निजे ह'ये इक योजन प्रमान * ताँर मुखमध्ये प्रवेशिल हनूमान

इक योजन करि गात प्रमाना ※ सुरसा-मुख समान[1] हनुमाना
ज्यों कपि-गात तासु मुख व्यापा ※ युगुल ओंठ अहिजननी चापा[2]
त्यों कपि ह्वै अंगुष्ठ प्रमाना ※ कर्णरन्ध्र[3] सों बहिर पयाना
सम्मुख आय कहेउ कर जोरी ※ नागमातु! विनती सुनु मोरी
तव आयसु तव बदन प्रवेसु ※ आयसु पाय लखौं उद्देसू[4]
पुरवहुँ राम-काज सिय-शोधू ※ गति न मातु! तव निरखि विरोधू
संकठ सों करि कृपा उबारौ ※ लौटति भले उदर पुनि धारौ
सीय-खबरि लावहुँ चलि लंका ※ बहुरि करौ कछु, मोहि न संका

दो० पवनतनय के मधु भरे, सुनत वैन अनुरूप।
ह्वै प्रसन्न बोली वचन, सुरसा धरि निज रूप ॥ १५ ॥

निपुन परम करु समुद[5] पयाना ※ सुरगन सदा करैं कल्याना
तव जाँचन, मोहि सुरन पठावा ※ निधि-बल-बुद्धि तुमहिं मैं पावा
सुख सों जनत करौ चलि तेही ※ जेहि विधि मिलैं राम-वैदेही
इमि कहि सुरसा धाम सिधारी ※ पूर्व-रूप हनुमत पुनि धारी
तिल न बिलम्ब सुमिरि रघुवीरा ※ चलेउ वेगि जिमि वेग-समीरा[6]

हनुमान-मैनाक संवाद

लखि बल-बुद्धि-वीर्य-हनुमाना ※ सुरगन सकल प्रशंसति नाना

प्रवेशिवा मात्र से सुरसा ठाकुराणी ※ उष्ठ चापि मुद्रित करिला मुख खानि
ताहा देखि ह'ये वीर अंगुष्ठ प्रमाण ※ कर्णरन्ध्र दिया कैले वाहिरे प्रयाण
वलिछेन, कपिवर जानिनू तोमाय ※ नागमाता, प्रणति गो करि तव पाय
तव वाक्ये प्रवेशिनु तोमार वदन ※ अनुमति देह एवे, करि गो गमन
रामेर कार्य्येते जाइ सीतार उद्देशे ※ तुमि यदि वाधा दउ पार हव किसे
कृपा यदि ना करिवे, पड़िवे संकटे ※ आसिवार काले खेउ जाइव निकटे
सीतार उद्देशे जाइ लंकार भितर ※ पाछे जाहा कर ताहे नाहि पाइ डर
तबे से सुरसा धरि आपन मूरति ※ कहिवारे आरम्भिला वायुपुत्र प्रति
सुखे जाइ हनूमान परम कुशली ※ करुन तोमार शुभ अमर-मण्डली
तव वीर्य्य पराक्रम बुद्धि जानिवारे ※ पाठाइयाछिला सव अमर आमारे
ताहा जानिलाम सुखे करह गमन ※ राम सीता उभयेर कराओ मिलन
एत कहि नागमाता गेला निजस्थान ※ पुनः पूर्व्वरूप हये जान हनूमान
नागिनी सम्भाषि वीर तिलेक ना रहे ※ श्रीराम स्मरिया जाय, येन झड़ बहे

१ प्रवेश कर गये २ वन्द किये ३ कान के छेद से ४ अपना प्रयोजन
५ सहर्ष ६ पवनगति से।

तबहिं सिन्धु मन चिन्तन करई ※ कथा पुरातन उर अनुसरई
नृपति 'सगर' सों उत्पति नामा ※ 'सागर' नाम जगत सरनामा
तेहि नृप सगर-बंसधर रामा ※ गमनत जासु पवनसुत कामा
मम कर्तव्य राम कर काजू ※ नतरु अजस[1] चहुँ देय समाजू
अखिल सिंधु इक संग उतारा ※ हनुमत सीस अतुल श्रम-भारा
मग जेहि विधि कहुँ मिलै सहारा ※ सो सुख जतन पयोधि[2] विचारा
इमि सोचत, 'मैनाक' बुलाई ※ सादर गिरिहिं कहेउ समुझाई
तनय-हिमालय! हे गिरिराजू! ※ करहु आजु मम एक सुकाजू
सुरपति-संक[3] लहेउ मम सरना ※ पालेहुँ धरि निज गर्भ सयतना
पवनतनय तव श्रंग विरामा ※ यहि छन करु सहाय कछु रामा

दो० उत्पति मम नृप 'सगर' सों, जग 'सागर' सरनाम ।
सगर नृपति के वंश तिन जन्म लीन प्रभु राम ॥ १६ ॥

तिन कारज गमनत हनुमाना ※ करहुँ तासु हित मनहिं सुहाना
अतः जुगुति मम सुनु गिरिराई ※ सलिल उपरि रखु श्रृंग[4] उठाई
विदित मोंहि, चौदिसि तव श्रृंगा ※ सकहि प्रसारि सकल तैं अंगा

मैनाक पर्व्वतेर सहित हनूमानेर सम्भाषण

देखि मारुतिर हेन वीर्य्य-बुद्धि-बल ※ प्रशंसा करेन ताँरे अमर सकल
हेनकाले नदीपति सुचिन्तित मन ※ करिछेन हृदयेते एइ विवेचन
सगर नृपत्ति ह'ते मोर उपादान ※ एलागि सागर ब'लि डुवने आख्यान
सेइ त सगरवंश याँहार जनम ※ सेइ राम कार्य्ये जान पवननन्दन
ए लागि एहार हित कर्त्तव्य आमार ※ अन्यथा हइले निन्दा लोकेते अपार
लंघिछेन हनूमान एइ पारावार ※ हइतेछे बड़ श्रम इहाते इँहार
अतएव मध्यपथे आलम्बन पाइ ※ जे रूपेते सुखे जान करिब ताहाइ
एत भावि नदीपति मैनाक भूधरे ※ डाकिया कहेन किछु बचन सादरे
हिमालय-तनय मैनाक गिरिराज ※ करह तुमिह मोर आजि एक काज
शुन-शुन-शुन हिमालयेर नन्दन ※ एतकाल करिलाम तोमार पालन
इन्द्रेर भयेते मम लइले शरन ※ लुकाइया राखियाछि करिया यतन
तवोपरि जिराइबे पवननन्दन ※ श्रीरामेर सहायता कर एइक्षन
सगर हइते हय उत्पत्ति आमार ※ जन्म लयेछेन राम वंशेते ताँहार
सेइ राम कार्य्ये जान समीरतनय ※ ताँर किछु हित मोरे करिवारे हय
इहा लागि कहि आमि तोंहे युक्ति करि ※ एक वार उठ तुमि सलिल उपरि
अधः उद्धर्व आर चारि पार्श्व वाड़िवार ※ आछये तोमार शक्ति अनेक प्रकार

१ अपयश २ समुद्र ३ देवताओं के भय से ४ पर्वत की चोटी।

विनय हेतु यहि बारम्बारा ॐ उठि, मैनाक ! करहु उपकारा
मारुति करि तव शिखर विरामा ॐ गमन करहिं पुनि लंकाधामा
कहि तथास्तु गिरि शीश उठावा ॐ निकरि सलिल सों ऊपर आवा
सुबरन-शिखर सिन्धु बिच सोहा ॐ मनहु अरुण छबि सागर मोहा
झलक पाय चिन्तित हनुमाना ॐ पुनि केहि विधि यहु विघिन लखाना
मनुज रूप धरि शृंग पसारी ॐ मारुति प्रति गिरि गिरा[1] उचारी
सुनु मम विनय समीरकिशोरा ॐ आयलु-सिन्धु, आगमन मोरा
'सगर' भूप पूर्वज - रघुकेतू ॐ 'सागर' भइ उत्पति जिन हेतू
सोइ सागर उर प्रीति समाई ॐ राम - दूत ढिग मोहिं पठाई
उतरि शिखर मम करहु विरामा ॐ लेहु सलिल फल मूल ललामा
थकन मिटाय स्वस्थ मन लाई ॐ जाहु लंक जहँ रावनराई
मोहिं कपिनाथ ! बन्धु निज जानी ॐ संसय तजहु, न भय उर आनी
बन्दौं तव पद धरि निज सीसा ॐ सफल करहु अभिलाष कपीसा

दो०: विनय-वचन मैनाक के, सुनि मारुतिहिं हुलास ।
रहि अकास सम्भाष पुनि, करत मधुर जिज्ञास ।। १७ ।।

हे गिरिवर ! करु मर्म प्रकासू ॐ किमि पयोधि-अन्तस्तल[2] वासू

एइ लागि कहितेछि तोंहे वार-वार ॐ उठिया करह तुमि मोर उपकार
तोमार उपरि शृंगे करि आरोहन ॐ मारुति विश्राम करि करुन गमन
एत शुनि 'भाल-भाल' ब'लि गिरिवर ॐ उठिलेन सागरेर जलेर उपर
किवा साजे सिन्धु माझे सुवर्ण शिखरी ॐ प्रभात-तपन येन समुद्र उपरि
पथ माझे देखि तारे मारुति चिन्तित ॐ एकि आसि कोन विघ्न हैल उपस्थित
तवे सेइ गिरि धरि मनुष्य मूरति ॐ निज शृंगे थाकि केन मारुतिर प्रति
वायुपुत्र शुन किछु आमार वचन ॐ समुद्र आदेशे आमि कैनु आगमन
श्रीरामेर पूर्व्ववंशे नृपति सगर ॐ तिनि खान करेछेन एइत सागर
एइ हेतु रामदूत, तोंहे सम्मानिते ॐ पाठालेन मोरे सिन्धु प्रीतियुक्त-चिते
तुमि हे आमार शृंगे करिया विश्राम ॐ खाओ दिव्य फल मूल जल अनुपाम
अवशेषे ह'ये तुमि सुखयुक्त मन ॐ करिवे रावणपुर-मध्येते गमन
परिहार कर तुमि यत शंका सव ॐ इह आमि तोमादेर सम्बन्धे बान्धव
ए लागिया आसियाछि पूजिते तोमाय ॐ सफल करह तुमि मोर वासनाय
एत शुनि हनूमान थाकिया आकाशे ॐ जिज्ञासा करेन तारे सुमधुर भाषे
कह-कह कि कारणे तुमि गिरिवर ॐ वास करितेछ सिन्धु जलेर भितर

---

१ वाणी २ समुद्र के भीतर ।

तुम मम बन्धु कहौ केहि रूपा * विस्तर बरनहु कथा अनूपा
सुनत समोद महीधर बानी * कपि सों सकल सप्रीति बखानी
पूरब[1] पंख अखिल गिरि धरहीं * जहँ रुचि, उड़ि पयान ते करहीं
यहि मद-अंध कुबुद्धि प्रकासी * गिरत ग्राम-पुर, करत विनासी
हनेउ बज्र सुरनाथ प्रकोपा * छेदि कीन गिरि-पंख बिलोपा
अखिल पर्वतन पंख विनासा * सुरपति पुनि आये मम पासा
भागेउँ यथा होय भय-मोचन * मोहिं अनुसरत सहस्रविलोचन[2]
मम दयनीय दसा अति देखी * पवनदेव उर करुण विशेषी
अतिशय वेग पवन मोंहि डारा * गिरेउँ कृपा तेंहि सिन्धु मँझारा
सागर-सरन लही, तिन दाया * सके न पंख काटि सुरराया
इमि तल-सिन्धु वास, कपि! मोरा * हिमगिरि - सुत मैनाककिशोरा
बन्धु-पवनसुत मैं यहि भाँती * रुचिर[3] गहौं तव पद प्रणिपाती
मम पुनि सिन्धु-प्रीति उर धारौ * बिलम्बि[4] अंग कछु थकन निवारौ
कहेउ बैन सुनि पवनकुमारा * सफल दिवस लहि दरस तुम्हारा
उर सीतल सुनि तव मधुबानी * क्षुधा, तृषा, श्रम, पीर नसानी

कि रूपे वा हओ तुमि आमार बान्धव * विशेष करिया कथा कह एइ सब
शुनि वाणी महीधर मुदित हइया * कहेन पवन-पुत्रे प्रणय करिया
पूर्व्वे यावतीय गिरि छिला पक्षवान् * उड़िया करित तारा सर्व्वत्र प्रयान
तबे ताहादेर दुष्टबुद्धि उपजिल * पड़िया नगर-ग्राम भंगिते लागिल
ताहा देखि क्रुद्ध ह'ये सहस्रलोचन * वज्र करि कैल पक्षच्छेद आरंभन
सकलेर पक्षच्छेद करि अवशेषे * बज्र धारि आसिलेन इन्द्र मोर पाशे
ताहा देखि भये आमि करि पलायन * पाछे-पाछे चलिलेन सहस्रलोचन
तबे मोरे देखिया कातर अतिशय * करुणाते आर्द्र हैया वायु महाशय
परम प्रवल वेग प्रकाश करिया * फेलाइल मोरे एइ समुद्रे आनिया
ताँहार कृपाय आर समुद्र आश्रये * ना काटिला इन्द्र मोर ए पक्ष उभये
से अवधि आछि आमि सागर भितर * हिमालय-पुत्र नाम मैनाक भूधर
तुमि हओ मोर बन्धु पवन-तनय * तोमार सम्मान मोरे करिवारे हय
अतएव मोर आर सिन्धुर पीरिते * करह विश्राम तुमि मोर उपरेते
गिरि वाक्य शुनि कन पवनकुमार * तोमार दर्शन दिन सफल आमार
तोमार मधुर वाक्ये प्राण जुड़ाइल * क्षुधा, तृष्णा, क्लेश, श्रम, सकलि जाइल
करिले आतिथ्य तुमि देखाइया प्रीत * तोमाते विश्राम करा मोर समुचित

---

१ पुरातन काल में २ इन्द्र ३ इच्छा होती है ४ विश्राम लेकर।

दो० मम पहुनाई प्रीति तव, निरखि, उचित विश्राम।
किन्तु अबेर[1] अकाज लखि, उचित न पन्थ विराम॥
जाय लंक प्रभुकाज करि, बोलत तनय-समीर[2]।
देहुँ वचन, रहि सिंधुतट, बसौं बन्धु तव तीर॥ १८॥

निरालम्ब[3] शत योजन पारा ※ उचित सिन्धु अविराम[4] उतारा
अंगुलि परसि बन्धु तव नेहा ※ क्षमहु, अनुज्ञा देहु स-नेहा
साधु साधु मैनाक पुकारा ※ अनुमति दै प्रशंसि विस्तारा
अंगुलि परसि बंधु गिरि-सीसा ※ धाय गगन किय गमन कपीसा
मारुति प्रति लखि गिरि-सत्कारा ※ इन्द्र सतोष सुबैन उचारा
तव मैनाक! निरखि सत्काजू ※ अतिशय मोद लहेउँ मैं आजू
रामदूत प्रति तव पहुनाई ※ लखि त्रयलोक प्रीति चहुँ छाई
आजु क्षमा तव सब अपराधा ※ निर्भय रहहु, तजहु भय-व्याधा

हनुमान द्वारा सिंहिका राक्षसी-वध और सागर-लंघन

सुनि मैनाक अनन्द अपारा ※ गमनेउ दच्छिन पवनकुमारा
हनुमत योजन चलत अनेका ※ मग सिंहिका राक्षसी एका
कपि लखि, दुष्ट निसिचरिहिं भावा ※ विधि[5] अहार भरपेट पठावा

किन्तु बड़ त्वरा आछे लंकाय जाइते ※ ए लागि ना पारिलाम एक्षणे थाकिते
आर शुन आसिबार काले सिन्धु तटे ※ एसछि प्रतिज्ञा करि बान्धव निकटे
निरालम्बे पार हब शतेक योजन ※ अतएव योग्य नहे विश्राम करन
अंगुलि माथेते करि परशि तोमारे ※ दोष क्षमा करि देह अनुज्ञा आमारे
एत शुनि 'साधु साधु' ब'लि गिरिवर ※ अनुमति दिल तारे प्रशंसि विस्तर
तबे कर अंगुलिते मैनाक भूधरे ※ परशि पयान कैला मारुति अम्बरे
मारुतिर आतिथ्येते सन्तुष्ट अन्तर ※ मैनाक भूधर प्रति कन पुरन्दर
मैनाक, तोमार आजि देखि एइ कर्म ※ पाइलाम मोरा सबे सातिशय शर्म्म
रामदूत मारुतिर आतिथ्य करिया ※ करिले हे तुष्ट तुमि त्रिजगत् हिया
अतएव आमि तोमा दिलाम अभय ※ सुखे थाक तुमि ह'ये निर्भय हृदय

हनूमान कर्त्तृक सिंहिका राक्षसी-वध ओ सागर लंघन

एत शुनि आनन्दित हन गिरिवर ※ दक्षिणेते चलिलेन पवन कोङर
कतदूरे जबे तिनि करिला गमन ※ सिंहिका राक्षसी ताँरे करिला दर्शन
देखि चिन्ता करे सेइ दुष्टा निशाचरी ※ बुझि आजि भुञ्जिते पाइब पेट भरि

१ विलम्ब २ हनुमान ३ विना सहारा लिए ४ विना रुके ५ ब्रह्मा ने।

वृहद् जीव संतरति अकासा * धरि छाया खैंचहुँ निज पासा
सोचि, धरेउ मारुति-परछाहीं * मुख पसारि खैंचत निज पाहीं
लखि गति-वेग पवनसुत छीना[1] * तासु हेतु उर चिन्तन कीना
किमि मम वेग न्यूनपन[2] आवा * बाँधि रज्जु[3] दृढ़ बिबस बनावा
सोचि लखत चहुँ, बार अनेका * निज तर लखेउ राच्छसी एका

दो० मुख पताल सम निसिचरी, नभ तन रही पसार ।
पुनि पुनि सोचत पवनसुत, को यह बिकटाकार ।। १६ ।।

करति अकर्षन, अस मन आवै * खैंचि मोंहि निज ग्रास बनावै
मन सम्पाति-वचन भल जागै * दुष्ट सिंहिका मारग लागै
मम कर आजु तासु प्रतिकारू * अहिनिसि-कण्टक होय निवारू
पुनि लघु रूप धरेउ कपिराई * बदन - सिंहिका[4] गये समाई
मुख भरि लीन तृप्ति अति गाता * स्वयं लीन विष निज अपघाता
प्रविसि दनुजि तन पवनकुमारा * खण्ड-खण्ड पुनि नखन बिदारा
उदर फारि पुनि बाहेर आये * यहि विधि निसिचरि प्रान गवाँये
फटकि-फटकि सिंहिका नसानी * प्रान गवाँय सिन्धु उतरानी
कोटि कोटि जलचर सुख लहहीं * लहि तेहि माँस भोज मिलि करहीं

जाइतेछे आकाशेते बड़ एक प्राणी * इहार छायाके धरि आकर्षिया आनि
एत भावि मारुतिर छायास्पर्श पाय * आकर्षिते आरंभिल मुखखान वाय
तार आकर्षणे न्यून देखि निजवेग * मने चिन्ता करिछेन मारुति सोद्वेग
एकि, मोर गतिवेग न्यून हय केन * दृढ़ रज्जु दिया केह बान्धिलेक जेन
एत भावि सब दिके देखिते-देखिते * देखिलेन राक्षसीर निजे अधोभिते
पाताल समान मुख विस्तारण करि * रहियाछे अम्बरेते दुष्टा निशाचरी
ताहा देखि भावना करेन पुनर्व्वार * एकि, अधोभागे देखि विकट आकार
बुझि एइजन मोरे करे आकर्षन * आपनार मुखे कराइते प्रवेशन
सम्पातिर वाणी मने हइल स्मरन * एइ बटे सिंहिका राक्षसी दुष्टजन
आजि आमि प्रतिकार इहार करिब * ए पथेर कण्टक निःशेषे घुचाइब
एते भावि क्षुद्रमूर्ति धरि कपिवर * प्रवेशिला सिंहिकार वदन भितर
सिंहिका हइया सुखी मुदिल वदन * येन केह विष खाय मरण-कारण
तवे तार हृदये प्रवेशि हनूमान * नखे करि बिदारि करिल खान-खान
सेइ छिद्र दिया निजे हइल बाहिर * ताहे राक्षसीर प्राण छाड़िल शरीर
तबे घुरि-घुरि सेइ दुष्टा निशाचरी * पड़िल परेते सेइ पयोधि उपरि
ताहे सुखी हैल बहु कोटि जलचर * भोजन करिया तार माँस बहुतर

१ क्षीण, मन्द २ शिथिलता ३ रस्सी ४ सिंहिका के मुख में ।

अगनित जीव माँस बहु खाये ❋ तेहि सों आजु सकल भरि पाये
सुर - समूह उर अति हर्षाना ❋ गुन गावत पुनि पुनि हनुमाना
चिर-विजयी रहु पवनकुमारा ❋ राम - कृपा कल्यान तिहारा
निधन-सिंहिका दुष्कर कामा ❋ कोउ समर्थ जनि त्रिभुवनधामा
निरालम्ब शत योजन पारा ❋ धन्य सिंहिका मारग मारा
देवन सकल दनुजि-भय पाई ❋ गगन-पन्थ यहु दीन बराई[1]
कीन अकण्टक पथ यहु आजू ❋ सुलभ कीन सब हित सुख-साजू

दो० राम काज सम्पन्न करि, हरहु त्रिलोकन-पीर।
तुम सम विक्रम वीर्य्य-बल, जनि समर्थ जग वीर ॥ २० ॥

धरति धराधर[2] यावत् धरनी ❋ तावत् अमर सुयश तव करनी
सफल, न संसय, जाहु कपीसा ❋ सकुशल फिरहु, सुरन आसीसा
कहि सुर-सकल सुमन बरसाये ❋ सुनि कपि मगन[3] लंक तन धाये
कछुक दूर चलि लंक निहारी ❋ सोचत उर हनुमत बलधारी
लंका विकटाकार प्रवेसू ❋ निरखि शंक सब करहिं बिसेसू
धरि लघु रूप सुअवसर पावौं ❋ जाय लंक निज काज बनावौं
लंघि सिन्धु धरि सहज सरूपा ❋ दिय पग शिखर त्रिकूट अनूपा

बुझिलाम वहुमाँस पूर्व्वे खेयेछिल ❋ आजि सेइ सकलेर परिषोध दिल
सिंहिकार मृत्यु देखि यत देवगन ❋ करिछेन हनूमान वहु प्रशंसन
सर्व्वदा विजयी हओ पवनकुमार ❋ करुण श्रीभगवान कल्याण तोमार
जे कर्म्म करिले तुमि सिंहिका निधने ❋ इहार सम्भव नहे ए तिन भुवने
एके निरालम्वे शत योजन लंघन ❋ ताहे सुकठिन कर्म्म सिंहिका निधन
ए दुष्ट राक्षसी भये यत देवभाग ❋ करे छिला एइ व्योममार्ग परित्याग
आजि तुमि करिले ए पथ अकण्टक ❋ विहार करुण सुखे सब वृन्दारक
तोमा हैते रामकार्य्य निष्पन्न हइवे ❋ तोमा हैते त्रिभुवन आनन्द पाइवे
एकि वल, एकि वीर्य्य, एकि पराक्रम ❋ त्रिभुवने कोथाओ ना देखि जार सम
धरा धराधर सव यावत् थाकिवे ❋ तावत् पर्य्यन्त तव ए यश घुषिवे
जाह जाह करितेछि मोरा आशीर्वाद ❋ कृतकार्य्य हये फिरि एस निर्व्विवाद
एत कहि पुष्पवृष्टि करे देवगन ❋ शुनिया आनन्दे वीर करिला गमन
किछु दूर हैते लंका करि निरीक्षन ❋ मने-मने भाविछेन पवननन्दन
हेन महादेहे यदि प्रवेशि ए-लंका ❋ तवेते सकलेते मोर करिवेक शंका
अतएव क्षुद्रमूर्ति ह'ये प्रवेशिव ❋ उचित समये निज कार्य्य समाधिव
एत भावि आपन सहज मूर्त्ति धरि ❋ सिन्धु लंघि पड़िलेन सुबेल उपरि

१ त्याग दिया था २ पर्वत ३ प्रफुल्ल।

सहत न भार - कीस रनबंका ※ डगमग गिरि त्रिकूट पुनि लंका
बाम अंग सिय सुभ - सन्देसू ※ फरकत असुभ बाम लंकेसू
यदपि कीन शत योजन पारा ※ मारुति-गात न श्रम संचारा
अमिय-कथा यह सागर-लंघन ※ पातक-पुञ्ज सुनत सब भञ्जन

हनुमान-लंका-प्रवेश और चामुण्डा का लंका-त्याग

इमि लंका चहुँ वीर मँझाई ※ बहुविधि निरखत वरनि न जाई
कनक रजत मणि फटिक[1] सुहावन ※ निर्मित छबि अति पुरी लुभावन
लखत पैठि गढ़ विस्मित नयना ※ विश्कर्मा[2] कृत अद्भुत रचना
भयंकरी तहँ प्रकट प्रचण्डा ※ खर्पर - खड्ग - सहित चामुण्डा
युग लोचन मनु उभय दिवाकर ※ ब्रह्म-अग्नि सम तेज भयंकर

दो० लोल[3] जीभ पुनि चन्द्रछबि मानिक कुण्डल कर्ण ।
विकट दसन पीठी जटा घोर कृष्णतम वर्ण ॥
मुण्डमाल भयकारिनी व्याघ्र चर्म परिधान ।
निरखि देवि, संशय अतिव, विनय कीन हनुमान ॥ २१ ॥

चामुण्डा तुम शिवा सरूपा ※ शास्त्र कहत तव कथा अनूपा

सेइ त सुवेल गिरि भरेते ताँहार ※ काँपिते लागिल लंकाद्वीप सहकार
आर एक हैल बड़ से समये रंग ※ सीता आर रावणेर नाचे वाम अंग
यद्यपि लंघिल सेइ शतेक योजन ※ तथापि नाहिक किछु श्रम एकक्षन
सागर लंघन कथा अमृतेर भाण्ड ※ शुनिले पातक-राशि हय खण्ड खण्ड

हनूमानेर लंकाप्रवेश ओ चामुण्डार लंकात्याग

एइ रूपे गेल वीर लंकार भितर ※ कतस्थाने कत देखे वर्णिते विस्तर
काञ्चन रजत मणि स्फटिके निर्म्मान ※ पुरी-शोभा देखिया विस्मित हनूमान
गड़े प्रवेशिया देखे पवननन्दन ※ विश्वकर्म्मा निर्म्मित से अद्भुतरचन
महा भयंकरा मूर्त्ति सम्मुखे प्रचण्डा ※ बाम हस्ते खर्पर दक्षिण हस्ते खाण्डा
दुइ चक्षु घोरे येन दुइ दिवाकर ※ ब्रह्म अग्नि सम तेज अति भयंकर
लोल जिह्वा पृष्ठे जटा विकट दशन ※ हाँड़िया मेघेर वर्ण देखिते भीषन
व्याघ्र चर्म्म परिधान गले मुण्डमाला ※ माणिक कुण्डल-कर्ण, येन चन्द्रकला
देखिया चिन्तित अति वीर हनूमान ※ जोड़ हाते ब'लेन देवीर विद्यमान
शास्त्रे शुनियाछि आमि चामुण्डार कथा ※ शिवेर प्रेयसी तुमि, केन मागो, हेथा
तोमारे देखिया आमि पाइ बड़ डर ※ कि कारणे आछ माता, लंकार भितर

१ स्फटिक पत्थर के समान २ विश्वकर्मा ३ लपलपाती ।

मातु दरस तव अति भयकारी ※ कवन हेतु इत लंक पधारी
'शंभु-सती मैं' देवि प्रकासा ※ शिव-आयसु लहि लंक निवासा
स्वर्ण लंक सिर्जेउ विधि जबहीं ※ रच्छन-भार लहेउँ मैं तबहीं
बन्दि त्रिलोचन, विनय प्रकासा ※ कब लौं रावन-धाम निवासा
सुनि महेश मोहिं अवधि बताई ※ राम - जन्म सुभघरी सुनाई
दसरथ - भूप - तनय श्रीरामा ※ दसमुख हरै सीय तेहि बामा
पठवहिं राम दूत सिय हेतू ※ लहहु दरस हनुमत कपिकेतू
भेटहु लंक जबै हनुमाना ※ तजि, स्वदेश-हित करहु पयाना
सुबरन लंक निवास अनन्ता ※ अब लौं दरस न कहुँ हनुमन्ता
केहि सेवक? तव कवन प्रदेसू ※ उदधि-अलंघ्य तरन केहि वेसू
सचिव - सुकण्ठ, राम कर दासा ※ पवनतनय कपि कीन प्रकासा
आगम लंकपुरी सिय हेतू ※ सागर तरन कृपा रघुकेतू
सुनि हनु-कथा देवि उल्लासा ※ त्यागि लंक गमनी कैलासा

हनुमान द्वारा सीता की खोज

वन-वन इत भरमत हनुमाना ※ नरियल - पुंगी - उपवन नाना
कोकिल कूजत गुञ्जति भृंगा ※ कौतुक कलरव विविधि विहंगा

चामुण्डा ब'लेन आमि शंकरेर सती ※ ताँहार आज्ञाय आमि लंकाय बसति
सृजेन जेखन ब्रह्मा स्वर्ण-लंकापुरी ※ सेइ काल हैते आमि लंका रक्षा करि
करिलाम जिज्ञासा शिवेर श्रीचरणे ※ थाकिब कतेक काल रावण भवने
शंकर ब'लेन, थाक एइ संख्या तार ※ जत दिन नाहि हय राम-अवतार
जन्मिवेन राम दशरथेर भवने ※ ताँर पत्नी सीता सती हरिबे रावणे
सीता अन्वेषणे राम पाठावेन चर ※ तार नाम हनूमान, आकारे वानर
जखन देखिवे लकागत हनूमान ※ तखन छाड़िया लंका आसिबे स्वस्थान
सेइ हैते राखि आमि स्वर्ण लंकापुरी ※ हनूमाने ना देखिया जाइते ना पारि
काहार सेवक तुमि कोथा तव घर ※ किमते तरिले तुमि अलंघ्य सागर
हनूमान ब'ले आमि रामेर किंकर ※ सुग्रीवेर पात्र आमि पवनकोङर
सीता अन्वेषणे आइलाम लंकापुरी ※ श्रीरामेर दूत आमि, ताइ सिन्धु तरि
शुनिया हनूर कथा चामुण्डार हास ※ लंकाय देखिया तारे गेलेन कैलास

हनूमानेर सीता-अन्वेषण

तदन्तरे हनूमान भ्रमे वने वन ※ गुया नारिकेल देखे अति सुशोभन
कोकिलेर कुहूरव भ्रमर झंकार ※ नाना पक्षि कलरव लागे चमत्कार

दो० अति विशाल सरवर[1] लखे, विमल सलिल छबिधाम ।
धवल रक्त पुनि नील जहँ बिकसे पद्म ललाम ।। २२ ।।

अगम सिन्धु चौगिर्द[2] असेसू * सुरन समर्थ न लंक-प्रवेसू
लौह-प्रकोट कनक-प्राचीरा * शिखर लंक परसति[3] नभ तीरा
चहुँ दिसि इमि भरमत हनुमन्ता * बहु बिधि करत मनहिं मन चिन्ता
दुर्जय दसमुख लंक प्रतापू *कहँ कपि कटक ! निरखि संतापू !
को समर्थ इत करहि प्रवेसू * तजि जन चारि, शक्ति-जनि लेसू
प्रथम सुभट सुग्रीव अपारा * पुनि समर्थ इत बालिकुमारा
सैनिप नील तृतीय बहोरी * गति अपार, गिनती पुनि मोरी
प्रथम प्रयोजन सिय-संधानू * पुनि समुखौं[4] विधि यथा विधानू
किमि दुर्जय रिपुगन भरमाई * चीन्हहुँ किमि कहँ रावनराई
राव-चाव[5] लहि सुबरन लंका * किमि चीन्हउँ सिय जोति-मयंका[6]
राम-प्रिया मैं दरस न कीना * चन्द्रबदनि सिय सोहिं नवीना
चर्चति चपल हास-परिहासू * तहँ दुर्लभ जानकी-निवासू
अश्रु सदा दृग, वसन-मलीना * उर आवत, सिय छबि अति दीना
हेरत, सीय विधिन[7] अनुसरहीं * भावी मानि सीस सब धरहीं

दीघि सरोवर देखे सलिल निर्म्मल * प्रस्फुटित कोकनद पंकज उत्पल
लंकापुरी चारिदिके वेष्टित सागर * देवतार गति नाहि लंकार भितर
सोनार प्राचीर मध्ये, वाहिरे लोहार * गगनमण्डले चूड़ा लागये ताहार
एइरूपे हनूमान भ्रमे चतुर्भिते * मने-मने कत चिन्ता लागिल करिते
रावणेर प्रताप दुर्ज्जय लंकापुरे * वानर-कटक ताहे कि करिते पारे
एखाने आसिते पारे शक्ति आछे कार * चारि व्यक्ति विना आर सकल असार
सुग्रीव आसिते पारे बीर अवतार * युवराज अंगद आसिते पारे आर
आसिवारे शक्ति धरे नील सेनापति * आमिओ आसिते पारि अव्याहत-गति
एइ कार्य्ये आसियाछि सीता देखि आगे * शेषेते करिब, कार्य्य जेखाने जे लागे
भाण्डाइब केमने दुर्ज्जय शत्रुगणे * केमने चिनिब आमि राजा दशानने
बेड़ाइब केमने कनक-लंकापुरी * केमने चिनिब आमि रामेर सुन्दरी
रामेर प्रेयसी सीता कभु नाहि देखि * केमने चिनिब आमि सीता चन्द्रमुखि
हास्य-परिहास-कथा वचन-चातुरी * सेखाने ना थाकिबेन जानकी सुन्दरी
सर्व्वक्षण चक्षे अश्रु मलिन वसना * सेइ से रामेर सीता हय विवेचना
सीतारे देखिते यदि हय हानाहानि * हय लेक, क्षति ताहे किछुइ ना मानि

१ तालाव २ चारो ओर ३ छूती थी ४ सामना करूँ ५ हाल-चाल
६ चन्द्रछवि वाली ७ वाधाएँ ।

अथये भानु[1] उजेर नसाना ❋ पुरी मध्य प्रविसे हनुमाना
नभ शशि उदित खिली उजियारी ❋ भलीभाँति कपि लंक निहारी

दो० कनकझरोखन - युत सदन, मुक्तन बन्दनवार ।
ध्वजा - पताका सोह चहुँ, राज - साज शृंगार ॥ २३ ॥

इच्छामत माया विस्तारी ❋ घर घर फिरत नकुल-तन धारी
लखेउ विभीषण - धाम ललामा ❋ सदन - महोदर भट छबिधामा
उल्काजिह्व सु विद्युतमाली ❋ जहँ बिद्युतजिह्वा बलशाली
शुक-सारन, पुनि दनुजकुमारा ❋ अखिल लंक चहुँ गेह निहारा
कतहुँ लहेउ जनि सिय - उद्देसू ❋ नृप मन्दिर पुनि कीन प्रवेसू
दुर्जय दनु सशस्त्र रखवारे ❋ डोलत पाँति पाँति नृप-द्वारे
लखि पुष्पक कौतुकी विमाना ❋ कूदि छलाँग चढ़े हनुमाना
पुष्पक - सारथि स्वयं समीरा[2] ❋ पवनतनय भेटत पितु तीरा
चर्चत बहु, पुनि पवन पयाना ❋ दसमुख - गेह धँसे हनुमाना
शयन दशानन रतन - पर्यंका[3] ❋ दस किरीट[4] जगमगत मयंका[5]
अभरन[6] अंग प्रचुर दशभाला ❋ दामिनि दमकत जिमि घनमाला

अस्त गेल भानुमान, वेला अवसान ❋ मध्यगड़े प्रवेश करिल हनूमान
निशाकर सुप्रकाश गगनमण्डले ❋ भालमते हनूमान लंकाके नेहाले
चालेर उपरे शोभे सुवर्णेर वारा ❋ चारिभिते शोभा करे मुकुतार झारा
प्रति घरे घरे ध्वजा पताका विराजे ❋ राजार मन्दिर से सुन्दर साजे साजे
हनूमान स्वेच्छाय विविध माया धरे ❋ नेउल प्रमान ह'ये फिरे घरे घरे
अति सुशोभन विभीषणेर आवास ❋ देखे महोदरेर से अपूर्व्व निवास
उल्काजिह्व विद्युत्जिह्व आर विद्युन्माली ❋ शुक सारणेर घर देखे महाबली
कुमार सवार घर देखे सारा राति ❋ एक-एक देखे यत लंकार बसति
कोनस्थाने सीतार न पाइया उद्देश ❋ राज अन्तःपुरे वार करिले प्रवेश
राजार द्वारेते द्वारी देखे सारि-सारि ❋ दुर्ज्जय राक्षस सब नाना अस्त्रधारी
देखिल पुष्पक रथ विचित्र निर्म्मान ❋ तदुपरि लाफ दिया उठे हनूमान
सेइ रथे सारथि जे देवता पवन ❋ पिता पुत्र उभयेते हइल मिलन
पुत्रे सम्भाषिया पिता गेल निज स्थान ❋ रावणेर घरे प्रवेशिल हनूमान
रावण शुइया आछे रत्नमय खाटे ❋ घर आलो करितेछे दशटा मुकुटे
राजदेहे आभरण देखिल प्रचुर ❋ दीप्त करि मेघ जेन पड़िछे चिकुर

---

१ सूर्य अस्त हुये २ पवनदेव ३ रत्न-पलँग पर ४ मुकुट ५ चन्द्रमा
६ आभूषण ।

रमण - श्रान्त सोवत दसकंधा ❋ केसर कुंकुम मृगमद - गंधा
तारन मध्य चन्द्र जेंहि रूपा ❋ चहुँ सोहैं अप्सरा अनूपा
एक संग रूपसि छबिबाला ❋ पारिजात गुंथित मनु माला
बीणा बँसुरि खोल करताला ❋ बजत, करत सुख-सैन भुवाला
मनुजि सुरासुरि पुनि गन्धर्विन ❋ दनु-मन्दिर छबिखानि रूपसिन

दो० तन विशाल नीलम वरन, पीत वसन दसमाथ ।
नव जलधर[1] सोहत यथा सौदामिनि[2] के साथ ॥ २४ ॥

मयदानव - दुहिता मन्दोदरि ❋ रावन-अंक सोह अति सुन्दरि
भरी सुहाग रत्नमय रानी ❋ लखि तेंहि सिय हनुमत अनुमानी
राम सरिस जग पुरुष न दूजा ❋ सिय करि सकै न रावन-पूजा
जनकलली दसरथसुत - जाया ❋ सेयि सकै सो किमि दनुराया
एक-एक करि सबन निहारी ❋ तहँ न लखत सीता अनुहारी[3]
नयन बीस मूँदे पर्यंका ❋ लखि लंकेस कपिहिं उर शंका
अन्तःपुर न खोज सिय पाई ❋ अन्य गेह हेरत कपि जाई
जहँ दशग्रीव करत मधुपाना ❋ तहाँ प्रवेश कीन हनुमाना
भक्ष्याभक्ष्य[4] कक्ष - आहारा[5] ❋ विविध मनुज-मृग[6] मांस निहारा

निद्रा जाय रावण श्रृंगार अवसादे ❋ कस्तूरी कुंकुमे राजा शोभे मृगमदे
चारिभिते देवकन्या मध्येते रावण ❋ आकाशेर चन्द्र वेड़ि येन तारागण
शोभे एक ठाँइ सब रमणीर गला ❋ एकसूत्रे गाँथा येन पारिजात माला
खोल करताल कारो वीणा वाँशी कोले ❋ अचेतन निद्राय लोटाय भूमितले
मानुषी गन्धर्व्वी देवी दानवी राक्षसी ❋ रावणेर घरे आछे परम रूपसी
नीलवर्ण रावण से पीतवस्त्र-धारी ❋ नव-जलधर येन विद्युत सञ्चारी
रावणेर कोले देखे परम सुन्दरी ❋ मयदानवेर कन्या रानी मन्दोदरी
सोहागे अगुलि सेइ रत्ने विभूषिता ❋ तारे देखि भावे वीर एइ बुझि सीता
रामगुणे पुरुष नाहिक त्रिभुवने ❋ रावणे भजिबे सीता, नाहि लय मने
दशरथ - पुत्रवधू जनक - झियारी ❋ भजिवेन रावणेरे मने नाहि करि

सिय-छबि तबहुँ न दरसन पावा * चढ़ि प्राचीर मनहिं मन भावा
जहँ लौं बुद्धि, सकल अवलोकी * घर-घर कुत्सित रूप विलोकी
राम-दास मोहिं रिपु सम नारी * मत्त नगिनि[1] दानविन निहारी
अर्धनिसा मैं जागि बिताई * भरमेउँ कतहुँ खोज जनि पाई
विक्रम, बुद्धि, भक्ति रघुनाथा * मम सब हरन कीन खगनाथा[2]
सिय हित मानि वचन-सम्पाती * खोज सिन्धु तरि किय बहु भाँती
अब न लंक तजि अन्त पयाना * इतै लंक बिच त्यागहुँ प्राना

दो० सोचत बहुबिधि पवनसुत, उर वेदना अपार।
सुन्दरकाण्ड अनूप किय कृत्तिवास विस्तार ॥ २५ ॥

हनुमान का अशोक-वाटिका में सीता-दर्शन

सत्तर योजन गढ़ - प्राचीरा * उपरि बैठि सोचत हनुवीरा
निरखत सुबरन लंक ललामा * कनक-रजत निर्मित चहुँ धामा
जड़ित रतन स्फटिक सुहाये * पंख मयूर छावनी छाये
चहुँ सुरम्य चहुँ दिसि मन मोहा * तनयसमीर[3] विमूढ़ विमोहा
बैठि प्रकोट[4] रुदन कपि करई * कहँ चलि अन्त दरस-सिय लहई
राम-विदा लै बितयेउँ मासा * प्रभु पहँ चलि किमि करइँ प्रकासा

से खाने सीतार नाहि पाइया दर्शन * प्राचीरे बसिया भावे पवननन्दन
सर्व्वस्थान देखिलाम करिला विचार * घरे घरे देखि सब कुत्सित आकार
उलंग उन्मत्त यत रावणेर नारी * रामदास आमि, मोर नारी हय अरि
सीत हेतु अर्द्धरात्रि करि जागरण * अनेक भ्रमणे नाहि पाइ अन्वेषण
बल बुद्धि पराक्रम श्रीरामे भकति * करिल सकल नष्ट विहंग सम्पाति
तार वाक्ये लंघिलाम दुस्तर सागर * सीता हेतु भ्रमिलाम लंकार भितर
ए लंका हइते नाहि करिब गमन * एइ लंकापुरे आमि तजिब जीवन
कान्दिते कान्दिते हनू छाड़िल निःश्वास * रचिल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवास

हनूमान कर्त्तृक अशोकवने सीता-सन्दर्शन

सत्तर योजन लंका-प्राचीर-प्रमान * ताहार उपरे बसि भावे हनूमान
स्वर्णपुरी लंका देखे पवनकोङर * चतुर्दिके देखे स्वर्ण रजतेर घर
सोना ओ रूपार घर स्फटिकेर खनि * मयूरेर पाखे सब घरेर छाउनि
जेइदिके चाहे सेइदिके रहे मन * आपना पासरे वीर पवननन्दन
प्राचीरे बसिया हनू करिछे क्रन्दन * कोन् देशे पाव सीता मायेर दर्शन
मासेक हइल, राम बिदाय दिला मोरे * कि वार्त्ता कहिब गिया ताँहार गोचरे

१ नंगी २ सम्पाति ३ हनुमान ४ चहारदीवारी।

कहौं प्रबोध-बचन किमि रामा ❋ जीवन वृथा, वृथा मम नामा
स्वर्ग पताल मर्त्य त्रयलोका ❋ विफल, सिया जनि कतौं विलोका
बधहुँ प्रथम सुग्रीवहिं जाई ❋ देहुँ प्रान पुनि चिता सजाई
करत पवनसुत रुदन अपारा ❋ दै सिय ! दरस करहु निस्तारा
बिलपत जबहिं, नयन तर आवा ❋ उपवन तहँ अशोक लखि पावा
विविध प्रसून[1] वर्ण तहँ नाना ❋ चकित मुग्ध निरखत हनुमाना
कोकिल कूजत गुंजत भृंगा[2] ❋ पवनसुतहिं उल्लास उमंगा
वन-अशोक लखि अमित हुलासू ❋ निश्चित इत सिय जननि प्रकासू
अश्रु पोंछि पुनि गात सम्हारी ❋ वन अशोक पग दिय बलधारी
तजि प्राचीर बलिस्त[3] प्रमाना ❋ माया - तन प्रविसेउ हनुमाना

दो० विटप अशोक विशाल लखि, धाय चढ़े तहँ जाय ।
चालिस योजन शिखर तरु, गठित सघन अधिकाय ।। २६ ।।

तेंहि ऊपर चढ़ि हनु बलधारी ❋ कहँ तरुतर सिय ? रहेउ निहारी
त्रिजटा सहित अनेकन चेरी ❋ बिलपत सियहिं रहीं जहँ घेरी
नयन उठाय अवर[4] चहुँ देखा ❋ तरु सुन्दर बहु भाँति विशेषा
छबि तरु केते रक्तिम रंगा ❋ मेघवर्ण मञ्जुल इकसंगा

वृथा हनूमान आमि, वृथाइ जीवन ❋ कि ब'लिया प्रबोधिब श्रीरामेर मन
स्वर्ग मर्त्य पाताल खुँजिनु एके-एके ❋ सीता माके खुँजिया ना पेलाम त्रिलोके
आगे गिया सुग्रीवेर वधिब जीवन ❋ परे कुण्ड साजाइया मरिब तखन
कोथा आछ सीता माता, देह दरशन ❋ एतेक ब'लिया वीर करिल क्रन्दन
कान्दिते कान्दिते वीर करे निरीक्षन ❋ हेनकाले हेरे हनू अशोकेर वन
नानावर्ण पुष्पयुक्त अशोक कानन ❋ फाँफर हइया हनू करे निरीक्षन
कोकिलेर कुहूरव, भ्रमर झंकार ❋ ताहा देखि आनन्दित पवनकुमार
अशोकेर वन देखि आनन्दित मन ❋ उखाने पाइब सीता मातार दर्शन
मुछिया नेत्रेर जले हइया सुस्थिर ❋ प्रवेशिल अशोक कानने महावीर
प्राचीर छाड़िया वीर गेल सेइखाने ❋ माया करि हैल हनू विघत प्रमाने
शिशपार वृक्ष वीर देखे उच्चतर ❋ लम्फ दिया उठिलेक ताहार उपर
अति उच्चतर वृक्ष, अपूर्व्व गठन ❋ ऊर्द्धव तार परिमाण चल्लिश योजन
ताहार उपरे उठि हनू महाबले ❋ देखिल, रहेन सीता सेइ वृक्षतले
त्रिजटा राक्षसी तथा सहचेड़ी-गन ❋ चेड़ीगन-मध्ये सीता करेन रोदन
वृक्षेते उठिया वीर नेहाले कानन ❋ नानावर्ण वृक्ष देखे अति सुशोभन
रांगा वर्ण कत वृक्ष देखिते सुन्दर ❋ मेघवर्ण कत वृक्ष देखे मनोहर

---

१ फूल २ भौंरे ३ बालिश्त भर लंबा ४ और ।

सुबरन रंगमञ्च अधिकाई ※ रमत अप्सरन रावनराई
विटप - लता बहुरञ्जित नाना ※ इत सीता, हनुमत अनुमाना
चेरिन विकट विरूप असोहा[1] ※ गिरि प्रलंब कर मुद्‌गर लोहा
धवल कृष्ण सित[2] दासि अशेषा ※ ताल - खजूर - जटा सम केशा
उदर गात लोमावलि[3] छाई ※ भृकुटिन चढ़ि नासिका समाई
गंज ललाटहिं, गिरगिट रूपा ※ लसत रक्त प्रत्यंग विरूपा
चमकति खड्‌ग अस्त्र बहु धारी ※ दसमुख - दासि महा भयकारी
घिरी राच्छसिन, दुर्बल - दीना ※ दुइज चन्द्र जिमि कलाविहीना
दिवस छीन जिमि इन्दु-प्रकासू[4] ※ सिय कहि 'राम' तजति निःस्वासू
राम-नाम मुख, रुदन अपारा ※ रहेउ न संशय पवनकुमारा
सिय लखि रोय उठे हनुमाना ※ सकल यथा सुग्रीव बखाना
भ्रमत मरनमुख कपि जेहि लागे[5] ※ नाक - कान सुपनेखहिं त्यागे

दो० सहस चतुर्दस दनु मरे, रावन हनेउ जटायु ।
तरन कबन्ध, सुकण्ठ पुनि राम लीन उर लाय ॥
कपि-प्रवास, मैं सिंधु तरि, पुनि भरमहुँ निसि लंक ।
सबन-हेतु 'सिय' रामप्रिय लखौं, न अब उर संक ॥ २७ ॥

ठाँइ-ठाँइ देखे तथा स्वर्ण-नाट्यशाला ※ देवकन्या लइया रावण करे खेला
नानावर्ण वृक्ष देखे नानावर्ण लता ※ मने चिन्ते हनूमान, हेथा पाव सीता
चेड़ी सबे देखे तथा अंग भयंकर ※ पर्व्वत प्रमान हाते लोहार मुद्‌गर
केह काली, केह गोरी, कोन चेड़ी धली ※ खर्ज्जुर तालेर मत शिरे केशावली
ओ उदर चूल कारो माथा जुड़ि नाक ※ काँकलास मूर्ति कारो सब माथा ढाक
हाते मुखे सर्व्वांग रक्तेर छड़ाछड़ि ※ भयंकर मूर्त्ति सब रावणेर चेड़ी
नाना वस्त्र धरियाछे, खाण्डा झिकिमिकि ※ चेड़ी सब घेरियाछे सुन्दरी जानकी
गाये मला पड़ियाछे, मलिना दुर्व्वला ※ द्वितीयार चन्द्र येन देखि हीनकला
दिवाभागे येन चन्द्रकलार प्रकाश ※ श्रीराम बलिया सीता छाड़ेन निःश्वास
श्रीराम ब'लिया सीता करेन क्रन्दन ※ सीतारे चिनिया निल पवननन्दन
सीतारूप देखि कान्दे वीर हनूमान ※ सुग्रीव ब'लिल यत, हैल विद्यमान
इहा लागि मरण एड़ाय कपि यत ※ इहा लागि शूर्पनखार नाक-कान हत
इहा लागि चतुर्द्दश-सहस्र रक्ष मरे ※ इहा लागि जटायु प्रहारे लंकेश्वरे
इहा लागि कबन्धेर स्वर्ग दरशन ※ इहा लागि श्रीरामेर सुग्रीव मिलन
इहा लागि कपिगण गेल देशान्तरे ※ इहा लागि एकेश्वर लंघिनु सागरे
इहा लागि लंकाय बेड़ाय राताराति ※ एइ से रामेर प्रिया सीता रूपवती

१ अशोभन २ उज्जवल ३ रोमावली ४ चन्द्र प्रकाश ५ जिसके कारन ।

सीता - दुख कातर हनुमाना ※ प्रस्तुत रूप यथा अनुमाना
दस दिसि जानकि-रूप अलोका ※ जेहि हित रामहिं दारुन शोका
दनुजिन मारि कि निजहिं निपाती ※ सिय-दुख सहन न अब केहु भाँती
मारुति विटप, राम-सिय ध्याना ※ कृत्तिवास कृत रघुपति गाना

अशोक वाटिका में सीता से रावण का साक्षात्

पहर द्वितीय रैन चढ़ि आई ※ नभ पूर्णेन्दु छटा चहुँ छाई
सीतल मनहर गन्ध बयारी[1] ※ खिली सुचित्र धवल उजियारी
विगत अर्ध निसि घोर, असंका ※ सुख सोवत लंकेस पयंका
मलय बसन्त समीर जगावा ※ सिय कर सुधि दसमुखहिं सतावा
कामातुर मदान्ध[2] मन आवा ※ सिया समीप चलन मन भावा
वन अशोक सिय ढिग पग धारी ※ मन्दोदरि आदिकन गुहारी

छं० आयसु पाय सजीं सब रानी टोली सुमुखिन केरी ।
सहस रूपसिन रूप छटा सों सुबरन लंक उजेरी ।।
नारायन - असनिग्ध[3] सोबरन - दीपन पाँति घनेरी ।
झारी, चन्दनपात्र चवँर कर, चलीं दसानन घेरी ।।

देखिया सीतार दुःख कान्दे हनूमान ※ अनुमाने या' छिल ता देखि विद्यमान
दशदिक् आलो करे जानकीर रूपे ※ इहा लागि म्लान राम दारुण संतापे
राक्षसीगणेरे मारि, कि आपनि मारि ※ जानकीर दुःख आर देखिते ना पारी
राम-सीता बाखाने चड़िया हनू गाछे ※ कृत्तिवास मनोदुःखे राम गुण रचे

अशोकवने सीतादेवीर निकटे रावणेर गमन

द्वितीय-प्रहर रात्रे उठिल रावन ※ पूर्ण चन्द्र उठियाछे उपर गगन
सुशीतल वायु बहे अति मनोहर ※ धवल रजनी भाग विचित्र सुन्दर
निशि घोर रात्रि हैल, द्वितीय प्रहर ※ पालंकेते निद्रा जाय राजा लंकेश्वर
मलय वसन्त वाये निद्रा भंग हैल ※ सीतादेवी रावणेर मने पड़े गेल
मधुपाने रावण हइल कामातुर ※ ब'ले, चल जाइ हे सीतार अन्तःपुर
सीता लागि जाब आमि अशोकेर बने ※ मन्दोदरी रानी आदि डाके रानीगने
रावणेर आज्ञा पेये साजे रानीगन ※ वेष्टित करिल सबे राजा दशानन
रावणेर संगे चले दश शत नारी ※ रूपे आलो करिछे कनक-लंकापुरी
चामर ढुलाय केह कारो हाते झारि ※ नारायण तैले ज्वले देउटी सारि सारि
कोन वा रानीर हाते चन्दनेर बाटी ※ कोन वा रानीर हाते स्वर्णेर देउटी

१ वायु २ मदिरा से मत्त ३ नारायण तैल ।

संग रानिगन हाल-बिहाला ❋ सिय ढिग प्रस्तुत लंक-भुवाला
सहस रानि बिच लंक-प्रधानू[1] ❋ सुरपुर सम अशोक उद्यानू
सोचत कपि, सिय सम्मुख आई ❋ किमि आचरत निसाचरराई
लखत लंकपति चहुँ दृग बीसा ❋ सिय ढिग उचित न छाँह-कपीसा
सघन पात तरु ओट लुकाई ❋ अदरस[2] लखत चतुर कपिराई
सिय ढिग प्रस्तुत रानिन संगा ❋ विटप-ओट कपि लखत प्रसंगा

दो० कथन कुतूहल लंकपति-सीय सुनहिं, मन धारि।
दुइ पग डार, बढ़ाय मुख, हनुमत रहे निहारि ॥ २८ ॥

दनु लखि उर कंपित वैदेही ❋ मलिन बसन अंगन ढकि लेही
अति भयभीत विकल सियमाई ❋ चहति जाहिं निज गात समाई
अस्तन[3] जुगुल करन ढकि लीन्हा ❋ आनन-छवि वन धवलित कीन्हा
कनकपूतरी कञ्चन अंगा ❋ युगुल चरन-सिय हिंगुल रंगा
चरन जोति-नख चन्द्र लजाहीं ❋ दसन-पंक्ति सम मुक्ता नाहीं
युगुल नयन-सिय सरसिज[4] शोभा ❋ शत-शत मधुप[5] जुरत मधु-लोभा
दस दिसि सीय अलोकित करनी ❋ तरु अशोक तर शोभित तरुनी

रानीगन संगे राजा चले आस्ते व्यस्ते ❋ उपस्थित हैल गिया सीतार साक्षाते
दश शत नारी सह आइल रावन ❋ अशोक कानन हैल देवता भवन
ब'ले हनू रावण करिल आगुसार ❋ देखिव सीतार संगे कि करे आचार
कुड़ी नेत्रे दशानन चारि दिके चाहे ❋ सीतार निकटे आछि, कभु भाल नहे
गाछेर आड़ाले वसि पातार भितर ❋ आपनि लुकाये देखे चतुर वानर
नारीगण संगे गेले सीतार सम्मुखे ❋ थाकिया गाछेर आड़े हनूमान देखे
कि ब'ले रावण राजा, कि ब'ले जानकी ❋ शुनिवारे आगुसारे मारुति कौतुकी
दुइपद राखिलेक डालेर उपर ❋ देह बाड़ाइया देखे सीतारे गोचर
रावणे देखिया सीता काँपिल अन्तरे ❋ मलिन वसने ढाके निज कलेवरे
मने मने महाभय पाइया जानकी ❋ आपनार अंगे तिनि हैते चान लुकि
दुइ हाते दुइ स्तन ढाकिल जानकी ❋ आनन-लावण्य वन उज्ज्वल निरखि
सोनार प्रतिमा जिनि सीता ठाकुरानी ❋ हिंगुल जिनिया यार चरण दुखानि
चन्द्र जिनि चरणेर दशनख ज्योति ❋ मुकुता जिनिया मार दशनेर पाँति
पद्म जिनि जननीर दुइ चक्षु शोभे ❋ भ्रमर धाइछे कत शत मधु लोभे
दशदिक् आलो करे जनक-झियारी ❋ शिशपार तले जेन पड़िछे विजरी[6]

---

१ रावण २ अदृश्य ३ स्तन ४ कमल ५ भौंरे ६ जरारहित।

जदपि मलीन दुसह दुख छीना ※ सिय अशोक वन जगमग कीना
उड़े प्रान-सिय लखि दससीसा ※ अहह! राम, रच्छहु जगदीसा
देवर लखन कहाँ पुनि रामा ※ राखहु धर्म दुहू बलधामा
विकल सिया पुनि सीस नवाई ※ देखन चहत न मुख-दनुराई
मन - मन सोचत लंकजुझारा ※ सिय! तव आगम मम उद्धारा
होनी होय, होय, जनि चिन्ता ※ लचहुँ न जग लहि कीर्ति अनन्ता
कह लंकेस, वचन सुनि लेही ※ मुख न उठावत किमि वैदेही
चितै, मान तजि, बनि पटरानी ※ स्वर्ण सिहासन[1] बिलसहु रानी
दस सहस्र अप्सरन प्रकासू ※ बनि पटरानि करहु सुखवासू

दो० अंग अंग रत्नाभरन मणि माणिक बहु धारि।
सदा लंकपति चरन तव अनुचर आज्ञाकारि ॥ २९ ॥

त्रिभुवन मम सम भूप न आना ※ धन अपार अधिपति जग जाना
देव न लंक प्रवेस समर्था ※ हे सिय तैं डरपत केहि अर्था
भय मानत, लायेउँ बरजोरी ※ असुर-धर्म छल-बलहिं न खोरी[2]
कमलबदनि कै तुम शशिबदनी ※ त्रिभुवनजयी, मोर मनहरनी
कुण्डल रतन श्रवन दोउ धारी ※ तन नवनीत सरिस सुकुमारी

सीता मार गाते मला, मलिन बदन ※ तबु रूपे आलो करे अशोकेर वन
रावणे देखिया सीतार उड़े गेल प्राण ※ ब'लेन दुहात तूलि रक्षा कर राम
एमन समये कोथा देवर लक्ष्मन ※ जातिमान रक्षा कर भाइ दुइजन
विकलि करिया सीता कैला हेट माथे ※ माथा तुलि ना चाहेन रावण साक्षाते
सीता रूप हेरि रावण भावे मनेमन ※ आमार उद्धारे सीता, तव आगमन
ये होक् से होक् मोर, जानि मने मने ※ उन्नत हइया आमि नत हइ केने
डाक दिया ब'ले तबे लंका अधिकारी ※ हेंट माथा कैले केन जनकझियारी
अभिमान छाड़ि सीता चाह नेत्र कोणे ※ पाटराणी ह'ये बैस स्वर्ण सिंहासने
दश हाजार देवकन्या विभा करि आमि ※ तार मध्ये पाटराणी ह'ये रह तुमि
सर्व्वांग भरिया पर राज आभरन ※ तव आज्ञाकारी रबे राजा दशानन
मोर मत राजा आर नाहि त्रिभुवने ※ धनेर ईश्वर आमि जाने जगज्जने
रावण ब'लिल, सीता, कारे तव डर ※ देवता आसिते नारे लंकार भितर
बले धरि आनियाछि, एइ भय मने ※ राक्षसेर जाति-धर्म्म छले-बले आने
त्रिभुवन जिनिया तोमार सुबदन ※ कि पद्म कि सुधाकर, हेन लय मन
दुइ कर्णे शोभे तव रत्नेर कुण्डल ※ देखि नवनीत प्राय शरीर कोमल

[1] सिहासन [2] दोष।

करगत सुकर[1] सुछबि कटि पावा * हिंगुल मनहुँ पदंगुलि छावा
सेवत राम जनम दुख बीता * बिलसहु सुख मम सहित अतीता
जीवन छीन, सम्पदा स्वल्पा * राजहीन बनवास विकल्पा[2]
विदित न, पर्णकुटी अब रामा * कै दनुजन पठये यमधामा
सहि न सुमेरु सकत मम सायक * किमि बापुरो[3] मनुज रघुनायक
किन्नर, देव, दनुज, गन्धर्वा * यक्ष—सबन के मेटे गर्वा
निज बल-बाहु दिग्विजय कीन्हा * शत-शत शूर रसातल चीन्हा
राम-लखन जड़ तपसी दोऊ * तिन तजि सुमुखि! सुखी चलि होऊ
निपट अबोध, बुद्धि जनि लेसू * सियहिं कहति को विज्ञ[4] विसेसू
पारांगत रतिशास्त्र प्रवीना * रमहिं केलि नित रंग नवीना
रत्न बहुल धन-धाम हमारा * चलै सकल सिय तव अनुसारा

दो० मैं सेवक दसमाथ तव, तैं सिय मम ठकुरानि।
अनुमति लहि, अन्तर्सदन[5], अबहिं करौं पटरानि ॥ ३० ॥

मैं आतुर बन्दहुँ तव चरना * देवि! कोप तजु, मैं तव सरना
केहु पद कबहुँ न सीस नवाये * दसौ सीस तव चरन लोटाये
उर प्रकोप सुनि रावन-बानी * बोलत मन्द मन्द सियरानी

मुष्टिते धरिते पारि तोमार काँकालि * हिंगुले मण्डित तव चरण अंगुलि
करिया रामेर सेवा जन्म गेल दुःखे * हइया आमार भोग्या थाक नाना सुखे
रामेर अत्यल्प धन, अत्यल्प जीवन * राज्य शोके फिरे राम करिया भ्रमन
एखनो कि आछे राम सेइ पर्ण वासे * वनेर भितरे तारे खाइल राक्षसे
मोर वाणे सुमेरु नाहिक धरे टान * मानुष से राम, से कि आमार समान
देवता दानव यक्ष किन्नर गन्धर्व * युद्धे करिलाम पूर्ण सवाकार गर्व्व
दिग्विजय कैनु आमि रणे बाहुवले * कत शत योद्धपति दिनु रसातले
हेन जन छाड़ि तव तपस्वीते मन * जटिल तपस्वी तव श्रीराम लक्ष्मन
किछु बुद्धि नाहि तव अबोधिनी सीता * मिछामिछि ब'ले लोके तोमाके पण्डिता
रतिशास्त्र जानि आमि विविध विधाने * तुमि आमि केलि रसं भुंजिव दुजने
नाना रत्ने पूर्ण आछे आमार आगार * आज्ञा कर सुन्दरि से सकलि तोमार
तोमार सेवक आमि तुमि त ईश्वरी * तोमार आज्ञाय लये जाइ अन्तःपुरी
तोमार चरण धरि करि हे व्यग्रता * कोप त्यजि मोर कथा शुन देवी सीता
कारो पाय नाहि पड़े राजा दशानने * दशमाथा लोटाइनु तोमार चरने
रावणेर वाक्ये सीता कुपिया अन्तरे * कहेन ताहार प्रति अति धीरे-धीरे

---

१ सरलता से २ बदले में ३ बेचारा ४ बुद्धिमती ५ राजमहल।

कुल - ललना मैं जनकदुलारी ※ किमि अधर्म-रत रामपियारी
बैठि बिमुख, उर कोप कराला ※ कुवचन कहत, सुनत दसभाला
विज्ञ न, तव हित कहत बुझाई ※ विज्ञ न दोष, मृत्यु तव आई
जम्बुक-उर सिंहिनि-अभिलासा ※ राम-विवाद, सवंश विनासा
भजे न प्रान बचैं प्रभुसायक ※ तैं किमि सरिस राम रघुनायक
पामर, अमर अमिय जो धारा ※ तबहुँ न प्रभु-सर[1] तव निस्तारा
कनक लंक लहि दर्प अपारा ※ रघुपति-सर जरि होय अँगारा
सिन्धु गर्व-बस किय दुष्कामा ※ जरहि जलधि लहि सायक[2]-रामा
शठ! सुनु, यदि चाहत कल्याना ※ दै मोहिं प्रीति लहै भगवाना
जो नहिं प्रीति लहै रघुनाथा ※ सुगति न देहिं अगति के नाथा
निज मुख निज मम दास बखानी ※ किमि दुलखत[3] बाचा-ठकुरानी[4]
गुरुजन-पद-बन्दन जग रीती ※ गहि मम पद किमि वचन अनीती
धरि पितु-वचन राम बनबासू ※ शाप-रोष तिन तोर बिनासू

दो० केहि साहस दसकन्ध तैं, मम हित कहेसि कुबानि ।
भञ्जहुँ तव बल-दर्प मैं रघुकुल भूषण-रानि ।। ३१ ।।

प्राननाथ मम रघुपति देवा ※ राम अनन्य सीय जनि सेवा

अधार्म्मिका नहि आमि रामेर सुन्दरी ※ जनक राजेर कन्या आमि कुलनारी
रावनेरे पाछु करे बैसे क्षुद्र मने ※ गाला गालि पाड़े सीता रावण ता शुने
नाहि हेन पण्डित, बुझाय तोरे हित ※ पण्डिते कि करे, तोर मृत्यु उपस्थित
शृगाल हइया तोर सिंहे जाय साध ※ सवंशे मरिबि रे, रामेर सने बाद
तोर प्राणे ना सहिबे श्रीरामेर वाण ※ पलाइया कोथाओ ना पाबि परित्राण
अमृत खाइया यदि ह'स रे अमर ※ तथापि रामेर वाणे मरिब पामर
सोनार लंकार तरे तोर अहंकार ※ श्रीरामेर वाणानले हइबे अंगार
सागरेर गर्व्व ये करिस दुराचार ※ रामेर वाणेर तेजे सागर त छार
अतःपर दुष्ट, आमि तोरे ब'लि हित ※ मोरे दिया राम सने करह पीरित
यदि श्रीरामेर संगे ना कर पीरिति ※ श्रीरामेर करे तोर नाहि अव्याहति
आमार सेवक तुइ कहिलि आपनि ※ सेवक हइया कोथा लंघे ठाकुरानी
जार पाय पड़ि, सेइ हय गुरुजन ※ पाये पड़ि ब'लिस् केन कुत्सित कुवचन
पितृसत्य पालिते रामेर वनवास ※ क्रोधे शाप दिले ताँर हय सत्य-नाश
कि हेतु रावण, मोरे ब'लिस् कुवाणी ※ तोर शक्ति, भुलाइबि रामेर रमणी
राम मोर प्राणनाथ, राम से देवता ※ राम विना अन्यजने नाहि जाने सीता

---

१ राम के बाण से २ बाण ३ अवज्ञा करता है ४ स्वामिनी की बात ।

इमि जानकी प्रज्वलित नयना * कहत प्रकोपि रावनहिं वयना
पापी दनु दुर्मति दुष्कर्मा * कहँ रघुपति अपार गुणधर्मा
सीतल अमिय वचन भगवाना * परि तिन कोप विपक्ष नसाना
भानु-प्रताप अवध आसीना * अस्सी सहस नरेस अधीना
तेहि रघुवंश राम जग-प्राना * चौदह भुवन सृष्टि-भगवाना
सो मम पति 'शार्दूल'[1] प्रमाना * तैं शृगाल पुनि श्वान समाना
रहि तव देस तदपि भय नाहीं * उदित राम मन मन्दिर माहीं
चहत पंगु तैं सागर लंघन * बामन बटुक सुधाकर परसन
सिंहिनि प्रति शृगाल मन आना * कतहुँ न धर्म, न शास्त्र-विधाना
चन्दन - गंध सरोवर - पंका[2]! * कस विपरीत! सोचु उर-अंका
कमलनयन मम चन्दन-गंधा * पंक सरोवर तैं दसकन्धा
नखत निसाकर लखु अनुपाता[3] * तैं नछत्र, शशि राम विधाता
एक चन्द्र नभ अखिल प्रकासू * प्रभु पद-कञ्ज दशेन्दु[4] निवासू
दीपक विन - सनेह[5] अवसाना * सरिता-तट-तरु जनि कल्याना
वसन अनल लहि, तिमि तव नासू * लंक धर्म विन होय विनासू

एत ब'लि सीतादेवी अग्नि हेन ज्वले * कोपे दुइ चक्षु रांगा रावणेर ब'ले
दुराचार राक्षस पापिष्ठ दुष्टमति * धरेन कतइ गुण मोर रघुपति
रामेर अमृत जिनि वचन शीतल * विपक्ष विनाशे जिनि महा कालानल
जिनिया सूर्य्येर तेज अयोध्यार पाटे * आशी हाजार राजा जार पदतले खाटे
हेन वंशे जन्म मोर लभिला श्रीराम * चौद्द-भुवनेर कर्त्ता संसारेर प्राण
शोन, रे रावण, मोर पति रघुमणि * ताँरे सिंह, शृगाल कुक्कुर तोरे गणि
तोर देशे थाकिया कि तोरे भय करि * जागेन हृदये मोर राम जटाधारी
पंगु हये चास् तुइ लंघिते सागर * वामन हइया चास् धरिते शशधर
शृगाल हइया चास् सिंहेर रमनी * कोन शास्त्रे कोन धर्म्मे कोथाओ ना शुनि
सरोवर पंक आर सुगन्धि चन्दने * कतह अन्तर, तुइ भेवे देख मने
सरोवर पंक तुइ राजा दशानन * सुगन्धि चन्दन मोर कमललोचन
चन्द्र ओ नक्षत्र देख कतेक अन्तर * तारा ह'ये ह'ते चास् चन्द्रेर सोसर
एक चन्द्र आलो करे गगनमण्डले * दश चन्द्र रहे राम चरण कमले
तैल विना यथा दीप कभु नाहि रय * नदीकूले वृक्ष यथा चिरस्थायी नय
वस्त्रे अग्नि बन्धे यथा मृत्यु आपानार * धर्म्म विना लंका तथा हबे छारखार

---

१ सिंह २ तालाब की कीचड़ ३ तुलना ४ दश चन्द्रमा ५ तेल।

दो० माखी कबहुँ, न करि सकै कुलिश[1] पंख निज धारि।
तिमि समर्थ लंकेस जनि, निरखै जनकदुलारि ।। ३२ ।।

जनक-लली मैं सहज न नारी * जरै शाप-मम लंका सारी
हरेसि सहस दस तैं सुरबाला * प्रभु तोहिं बोरहिं सिन्धु कराला
वृथा गर्व—सागर बिच धामा * सागर स्वतः बँधेउ गुन-रामा
सायक बज्र चलत रघुनाथा * मनहुँ अखिल सागर प्रभु-हाथा
परकेहु[2] बहु सुरपतिहिं सताई * प्रभु पहँ मृत्यु तोर नँगिचाई
काल भुजंग चोट तव खाई * किमि निचिन्त[3], दंशहि गृह आई
मरन निकट, तजु जीवन-आसा * सब विधि तव अविलम्ब विनासा
सिय सरोष दुर्वचन सुनाई * दसमुख-उर उधेर-बुन[4] छाई
आवत छन मैं प्रथम प्रकासा * सादर वर्ष एक सिय वासा
वत्सर हेतु दीन अवकासा * वर्ष मध्य बीते दस मासा
मास मात्र दुइ सहन विसेसू * अवधि विगत निर्बन्ध[5] न लेसू
कह सिय, तैं दुर्वचन उचारा * मम हित विनसहि, लिखी ललारा
तैं दनु, राम विष्णु अवतारा * गरुड़-काग करु भेद विचारा
कहाँ शुक्त[6] कहँ अमरितपाना * लौह स्वर्ण किमि एक समाना

मक्षिका ना पारे कभु बज्र धरिवारे * रावण ना पारे कभु लइते सीतारे
जे से नारी नाहि, आमि जनकझियारी * मोर शापे भस्म हबे स्वर्ण लंकापुरी
दश हाजार देवकन्या ह'रेछिस् बले * डुबावेन तोरे राम सागरेर जले
करिस् वृथाय गर्व्व सागरेर गड़ * राम गुणे बद्ध हबे स्वयं सागर
क्षेपण करिले बज्र-बाण रघुमणि * करिते पारेन शुद्ध सागरेर पाणि
इन्द्रेर निकटे तोर यत भारि भूरि * ए बार रामेर हाते जाबि यमपुरी
रावण भाविस् एइ यत दिन जावे * घाँटाइलि कालसर्प, घरे आसि खावे
मरण निकट, छाड़ जीवनेर आश * अविलम्बे हइबेक तोर सर्व्वनाश
एत यदि सीतादेवी ब'लिलेन रोषे * मने सात पाँच भावे दशानन शेषे
आसिवार काले आमि ब'लेछि बचन * एक वर्ष जानकीर करिब पालन
वत्सरेर तरे तोरे दियाछि आश्वास * वत्सरेर मध्ये तोर जाय दशमास
सहिवेक आर दुइ मास दशस्कन्ध * दुइमास गेले तोर या' थाके निर्ब्बंध
जानकी ब'लेन, तइ बलिस कुत्सित * आमा लागि मरिवि रे, दैवेर लिखित
विष्णु अवतार राम, तुइ निशाचर * गरुड़े वायसे देख् अनेक अन्तर
अनेक अन्तर देख् काँजि सुधा-पाने * अनेक अन्तर देख् लोहा ओ काञ्चने

१ बज्र २ चाट लग गई है ३ निश्चिन्त ४ सोच विचार ५ बन्धन, रोक ६ सिरका।

कहँ द्विज श्रेष्ठ कहाँ चण्डाला * सिन्धु समान छुद्र किमि ताला[1]
राम सिंह तैं श्वान-शृगाला * एक अकास द्वितीय पताला

दो० सुनि अधीर, सिय तन कहत, नयनन बीस अँगार।
दुसह गर्व तव, आजु नहिं मोसन होय उबार ॥ ३३ ॥

दृगन बीस चमकत नभ-तारा * कर दसकन्धर खड्ग सम्हारा
कालान्तक[2] सम रोष अपारा * काटहुँ सीस, हेरु निस्तारा
प्रखर खड्ग-दसभाल निहारी * कर उठाय सिय राम गोहारी
रच्छहु राम! रुदन बहु करही * नतरु निपच्छ-मीच[3] सिय मरही
देवर लखन अनुज-रघुनाथा! * मिलन, मरत-छन जनि तव साथा
वन अशोक रहि विधि अब बामा * जगत जानकी बूड़त नामा
चहत लंकपति! खड्ग प्रहारन * तौ मम विनय करिह उर धारन
प्रान जाहिं मोहिं मोह न प्राना * जग सिय-नाम लखत अवसाना[4]
विलमु[5] तिलेक[6] जबहिं लौं ध्याई * अरुन चरन बन्दहुँ रघुराई
बिन तिलार्ध आजीवन नाहीं * मरन काल ध्यावहुँ उर माहीं
राम ध्यान यदि प्रान नसाना * पुनि केहु जन्म वरहुँ भगवाना

अनेक अन्तर देख ब्राह्मण-चण्डाले * अनेक अन्तर देख वारिनिधि-खाले
श्रीराम हइते तोरे देखि वहुदूर * रामे सिंह तोरे देखि शृगाल-कुक्कुर
रावण अस्थिर हैल सीतार वचने * कुड़ि चक्षु राँगा करि चाहे सीता पाने
रावण वले, सीता तोर एत अहंकार * मोर ठाँइ आजि तोर नाहिक निस्तार
रावण लइल हाते खाण्डा एक धारा * कुड़ि चक्षु फिरे जेन आकाशेर तारा
कालान्तक यम सम रुषिल रावन * खाण्डाय काटिले माथा राखे कोन् जन
रावणेर हाते सीता देखि खाण्डाखान * दुइ हात तुलि व'ले, रक्षा कर राम
उच्चैःस्वरे डाके सीता तुलि दुइ हात * अनाथा हइया मरि, राख रघुनाथ
देवर लक्ष्मण कोथा रामेर छोट भाइ * मृत्युकाले तव संगे देखा हैल नाइ
आजि हैते डुवे गेल जानकीर नाम * एत दिने अशोक वने विधि हैल वाम
सीता ब'ले, यदि तुमि काट लंकेश्वर * आमार मिनति एक तोमार गोचर
प्राण जाय जाक् हाते किछु नाहि दाय * आजि हैते सीता नाम देखि डुबे जाय
तिलेक विलम्ब कर करि निवेदन * ध्यान करि श्रीरामेर रातुल चरन
तिलार्द्ध रहिते नारि रामचन्द्र विना * मृत्युकाले करि मने ताँहारि भावना
रामे ध्यान करि यदि जाय मोर प्रान * कोन जन्मे पुनराय पति पाव राम

१ तालाब २ यम ३ अनाथों की मौत ४ अस्त ५ ठहरो ६ क्षण, तिल-भर।

बूड़ि सिन्धु करि जीवन हाना ❋ मरन-लालसा, मोहि न प्राना
निश्चित मरन काल्हि मनु आजू ❋ भल निज हाथ हनहिं दनुराजू
अन्तयरी रघुपति प्रनपाती ❋ विनय, चोट इक¹ करहु निपाती
मनु तजि राम, सुमुखि! दसभाला ❋ नतरु उपस्थित सिय! तव काला
मोहि तव खड्ग न भय दसकंधर ❋ राम दयामय ध्यान निरन्तर

दो० मौन, नवाये सीस सिय, रही धरनि तन हेरि ।
दनु समीप वनिता सहस सैनन² रहीं तरेरि ।। ३४ ।।

रामप्रियहिं पुनि भीति न लेसू ❋ मन्दोदरि निन्दति लंकेसू
मनुजी³ सहज, न सुर-गन्धर्वा ❋ सिय-छबि तुमहिं जलति किमि सर्वा!
मदन-दग्ध नहिं दनुज सम्हारा ❋ तजि असि⁴ सिय बल धरन विचारा
चहुँ दिसि चितवत काम विभोरा ❋ कर धरि मंदोदरि झकझोरा
नल-कूबर, प्रभु! शाप न ध्याना ❋ विवस रमण करि विनसै प्राना
मन्दोदरी कहत करजोरी ❋ यदपि न ज्ञान, सुनहु कछु मोरी
तजहु दया करि खंग भुवाला ❋ मोहि सिय-दान करहु यहि काला
जानि अजान बनत दशमाथा ❋ जन्मे अवध विष्णु जग-नाथा

बाँचिवार साध नाइ, निजे मरिताम ❋ झाँप दिया सागरेते प्राण त्यजिताम
आजि कालि मरि किंवा एखन तखन ❋ भाल हैल निज हस्ते काटह रे रावण
प्राण गेले रामेर चरण तबु पाय ❋ एक चोटे काट तुमि, तोमार दोहाइ
रावण ब'ले, सीता, एबे छाड़ राम-नाम ❋ मोरे भज, नहिले ए खाण्डे पराण
सीता ब'ले, खाण्डा देखि न करिब भय ❋ छाड़िते नारिब आमि राम गुणगान
एत ब'लि सीतादेवी करे हेट माथा ❋ रावणेर रांगे आर ना कहेन कथा
सहस्र कामिनी आछे रावणेर आड़े ❋ आड़े थाकि ताहारा सीतारे भय देय
तबु भय नाहि पाय रामेर सुन्दरी ❋ रावणेरे भर्त्सि कहिल मन्दोदरी
देवता गन्धर्व्व नहे, जानिते मानुषी ❋ कत बड़ देख प्रभु जानकी [illegible]
रावण सीतारे देखि कामे अचेतन ❋ खाण्डा फेलि जाय सीता धरिते तखन
कामे मत्त चतुर्दिक् रावण नेहारे ❋ मन्दोदरी हाते धरि ब'लि झाकारे
नल कूवरेर शाप पासरिले मने ❋ शृंगार करिले ब'ले [illegible]

दशरथसुत त्रिभुवनपति रामा ※ स्वयं रमा सिय जन्म ललामा
वचन मदोदरि, सीय कलेसू ※ लखि किय खंग कोष[1] लंकेसू
भयेउ शिथिल सुनि रानि-प्रबोधा ※ चेरिन प्रति धायेउ करि क्रोधा
झपटि पुकारत दासिन्ह नामा ※ धाय बेगि सब करहिं प्रनामा
दासिन कहत प्रकोपि दसानन ※ सिय समीप तुम सब केहि कारन
चेरी पुनि दसगुनी बढ़ाई ※ वन अशोक चौकसी कराई
त्रिजटादिकन झपटि समुझावा ※ सकल चेरि सिय तीर लगावा
निर्दय निठुर प्रभाषा आई ※ दुर्मुख सूर्पनखा तहँ धाई

दो० अश्वमुखी चित्तचछमा वज्रधारि जे दासि।
प्रस्तुत सरमा निसिचरी, धर्म तिरजटा रासि ।। ३५ ।।

चेरिन कान कहत दनुराई ※ भल अहिनिसि सीतहिं समुझाई
नेह दिखाय न नीरस वचना ※ अनुमति-सिय लीजिय केहु जतना
रानिन सहित गयेउ निज धामा ※ सुख पर्यक करत विश्रामा
सिय जहँ चेरिन-जमघट छावा ※ गर्जि तर्जि पुनि लकुटि[2] उठावा
कृत्तिवास कबि मञ्जुल बानी ※ सुन्दरकाण्ड पुनीत कहानी

दशरथ गृहे विष्णु जन्मिला आपनि ※ लक्ष्मी रूपे जन्मिलेन सीता ठाकुरानि
मन्दोदरी वाक्ये आर सीतार क्रन्दने ※ खाण्डाखान सम्वरिल राजा दशानने
नेउटिल दशानन रानीर प्रबोधे ※ मारिवारे चेड़िगणे जाय महाक्रोधे
चेड़ीगणे डाके से याहार जेइ नाम ※ द्रुत गिया चेड़ीगण करिल प्रणाम
चेड़ीगणे कोप करि ब'ले दशानन ※ सीता पाशे तोमा सबे राखि कि कारन
यत चेड़ी दिया छिल सीतार रक्षने ※ तार दशगुण दिल अशोक कानने
चेड़ी गणे कोप करि कहे दशानन ※ सीता ल'ये थाक् जित्रटादि चेड़ीगन
निर्द्दया निष्ठुरा एल प्रभाषा दुर्म्मुखा ※ पाइया सीतार वार्त्ता राँणी शूर्पनखा
अश्रुमुखी वज्रधारी एल चित्तक्षमा ※ धार्म्मिका त्रिजटा एल राक्षसी सरमा
कहिल रावण चेड़ी सकलेर काने ※ बुझाओ सीताय भालमते रात्रिदिने
रुक्षवाक्य ना ब'लिह, ब'लिह पीरीते ※ बुझाइया अनुमति लह भालमते
रानीगण सगे राजा गिया निज घर ※ पालंके शयन करे सुखे लंकेश्वर
हेथा सीता आगुलिया रहे यत चेड़ी ※ तर्ज्जन गर्ज्जन करे उठाइया वाड़ि
कृत्तिवास सुकविर कवित्व मधुर ※ पड़िले सुन्दरकाण्ड पाप हय दूर

१ मियान में २ लाठी।

राक्षसियों द्वारा सीता-उत्पीड़न

किय तैनात लंकपति चेरी ※ सकल रहीं ते सीतहिं घेरी
सुनु सीता ! लंकेस समाना ※ जग न स्वामि गुनधाम लखाना
जीवन अल्प, स्वल्प धन रामा ※ चौयुग सासन-सुख दनुधामा
धन-जीवन जिन स्वल्प बखाना ※ मम पति कमलनयन भगवाना
सुनि सिय-कथन, क्रुद्ध सब चेरी ※ लकुटि-खंग कर, कहहिं तरेरी[1]
तव हित सहन करहिं सन्तापू ※ सब मिलि भच्छि नसावहिं तापू
धाईं पुनि सिय मारन हेतू ※ इत मन-मन सुमिरन रघुकेतू
विटप-ओट हनुमत सब लखहीं ※ चेरिन-वध विचार मन करहीं
नारी-बध उर पाप विचारी ※ दलहिं दनुज-दल अस हिय धारी
सोचत, प्रथम सकल सुनि बाता ※ करहिं निसचरिन सकल निपाता
बोलति निठुरा कहति प्रभाषा ※ सियहिं काटि पुरवहिं अभिलाषा

दो० एतक दीन्हीं सीख सो, सियहिं न तनिक सुहाति ।
भच्छहिं मांस विखण्ड करि, सब मिलि सीय निपाति ॥ ३६ ॥

सुनि उठि अश्वमुखी सम्भाषा ※ सुखकारी अति कथन-प्रभाषा
सूर्पनखा किय वचन प्रहारा ※ गर धरि नखन करहिं संहारा

सीतार प्रति चेरीगणेर उत्पीड़न

घरे गेल दशमुख ठेकाइया चेड़ी ※ सीतारे मारिते सबे करे हुड़ाहुड़ि
चेड़ी सब व'ले, सीता, शुन हित वाणी ※ रावणेर मत गुणी ना पाइबे स्वामी
अल्पधन धरे राम, अल्पइ जीवन ※ चौद्द युग राज्य भोग करिबे रावन
सीता ब'ले, अल्पधन अत्यल्प जीवन ※ सेइ से आमार स्वामी कमललोचन
शुनिया सीतार कथा, क्रुद्धा सब चेड़ी ※ कारो हाते खाण्डा आर कारो हाते वाड़ि
तोर लागि आमरा सकले दुःख पाइ ※ मिलिया सकल चेड़ी आज तोरे खाइ
सकले धाइया जाय सीतार निधने ※ श्रीराम स्मरण सीता करे मने मने
देखे शुने हनूमान थाकि वृक्ष आड़े ※ 'चेड़िगणे मारि' व'लि मने तोड़पाड़े
मने भावे, नारी मारि करिब पातक ※ चेड़ीर वदले मारि राक्षस-कटक
शुनि आगे सवाकार बाक्य अवसान ※ पिछे चेड़ी सकलेर बधिब परान
तखन निष्ठुर व'ले प्रभाषा राक्षसी ※ काट तबे सीतारे किसेर तरे तुषि
ना शुनिल सीता आमा सबार बचन ※ सीतारे काटिया मांसे करिल भक्षन
भाल भाल ब'लिया उठिल अश्वमुखी ※ प्रभाषार कथा शुनि हैल वड़ सुखी
शूर्पनखा राँड़ी तबे हाने वाक्यबान ※ गले नख दिया तोर बधिब परान

---

१ क्रोध में आँखें दिखा कर ।

छेदें लखन नासिका काना * तासु कोप तव नासहुँ प्राना
बज्रधारि पुनि पैग बढ़ावा * चाक सरिस धरि केस घुमावा
मारि नघोर्चाहि, काहु न कलेसू * फँसे प्रान, सिय रुदन विसेसू
वस्त्र सम्हार न केशन वेणी * शोकाकुल सिय लोटत धरणी
तरु ऊपर उत हनु बलवन्ता * तरु तर मैथिल रुदन अनन्ता
मातु कौशिला कहँ भगवाना ? * दासिन कृत इत मम अपमाना
यदि लंका - आगम्म रघुनन्दन * सकुल होय दनुराज-निकन्दन
सहेउँ दुसह दुख, जो सुनि पावैं * प्रभु - सायक यह लंक नसावैं
यहि छन अन्तरिक्ष जो बसई * मम दुख जाय राम सन कहई
दृग जल झरत, न लेस विरामा * आवहिं लंक विनासहिं रामा
जम्बुक[1]-श्वान-गृद्ध सब आईं * दनुज-मांस जेवहिं[2] रुचि पाई
शाप - मैथिली लंक - विनासू * सुन्दरकाण्ड रचेउ कृतिवासू

सीता-त्रिजटा-संवाद

त्रिजटा कहति, लंकपति मानी * सिय ! पद लहहु लंक-पटरानी
त्रिजटा कस अनरीति तुम्हारी * प्राननाथ केहि भाँति बिसारी

लक्ष्मण काटिल जेइ मोर नाक कान * सेइ कोपे आजि तोर वधिव परान
आर चेड़ी एल, तार नाम वज्रधारी * चूलि धरि सीतारे से दिल चाक-भाउरी
मारिते काटिते चाहे, कारो नाहि व्यथा * प्राणे आर कत सवे कान्दिछेन सीता
वस्त्र ना संवरे सीता केश नाहि वाँधे * शोकाकुला हये भूमे लोटाइया कान्दे
महावीर हनूमान आछे वृक्षडाले * रोदन करेन सीता सेइ वृक्षतले
कोथा गेले प्रभु राम कौशल्या शाशुड़ी * अपमान करे मोरे रावणेर चेड़ी
यदि हय लंकाय रामेर आगमन * सवंशे निर्व्वंश हय राक्षसेर गन
एत दुःख पाइ, यदि शुनितेन चाने * लंकापुरी खान खान करितेन वाने
हेनकाले अन्तरीक्षे थाक यदि चर * मोर दुःख कह गिया श्रीराम गोचर
आमार चक्षुर जल नाहिक विराम * ए लंकार सर्व्वनाश करुन श्रीराम
गृधिनी शकुनि तुष्ट हउक आकाशे * शृगाले कुक्कुर तृप्त राक्षसेर मासे
जानकीर शापे हवे लंकार विनाश * रचिला सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवास

सीता-त्रिजटा-सम्वाद

त्रिजटा ब'लेन, सीता, शुन मोर वाणी * रावणे भजिया हओ लंकार पाटराणी
सीता ब'ले, त्रिजटा कि ब'लह आमारे * केमने छाड़िते ब'ल प्राण रघुवरे

---

१ गीदड़ २ भक्षण करे ।

दो० आभूषन पटरानि-पद, कहु त्रिजटा केहि काम।
जन्म-जन्म के पुण्यफल, पति पायेउँ मैं राम॥
ताम्रपात्र जल-जाह्नवी[1] तिल तुलसी लै हाथ।
बाल्यकाल पितु दान करि मोहिं अर्पेउ रघुनाथ॥ ३७॥

केवल राम अन्य नहिं सपना ✻ अहिनिसि रुदन न पुनि बिस्मरना
इमि तव सीख मोहिं जनि भावै ✻ ताड़न तजि मुख राम सुनावै
दासी करुणवचन-सिय सुनहीं ✻ निसि-प्रमाद आलस महँ परहीं
चर्चति बहु तन्द्रा तिन छाई ✻ झूमि-झूमि सुख निद्रा आई

त्रिजटा का स्वप्न-वर्णन

रैन तिर्जटहिं सपन सतावा ✻ दासिन निकट जगाय बुलावा
उचटी नींद तिरजटा जागी ✻ निसि दुःस्वपन विचारन लागी
शैया बैठि शोच उर कीन्हा ✻ चेरिन यत सिय पीड़न दीन्हा
त्रिजटा कहत, राम सिय रमनी ✻ मारै ताहि मरै निज करनी
सिय कलेस निश्चित अवसाना[2] ✻ सपन सुनहु जेहि भाँति विधाना[3]
तजि सिय सकल तिरजटा पासा ✻ जाय सपन सुनि उपजेउ त्रासा
चेरिन कहेउ इकान्त बुलाई ✻ सुमिरि सपन मम जीवन जाई

पाटराणीर आभरणे मोर काज कि ✻ कत पुण्यफले रामे पति पेयेछि
ताम्रपात्रे गंगाजले तिल तुलसी हाते ✻ वाल्यकाले पिता मोरे सँपे राम हाते
राम विना आर मोर आछे कोन जना ✻ रात्रि दिन कँदे मरि, ना घुचे भावना
एइ कथा छेड़े चेड़िगो, दाण्डाओ विद्यमान✻बेतेर वाणि फेले एक बारि शुनाओ रामेर नाम
सीतार करुणा शुनि यत चेड़ीगन ✻ घुमे ढुलु ढुलु आँखि निद्राय मगन
त्रिजटा कतक रात्रे स्वप्न देखि उठे ✻ चेड़ी गणे डाकि निल आपन निकटे

चेड़ीगण समीपे त्रिजटा राक्षसीर दुःस्वप्न वृत्तान्त कथन

त्रिजटा राक्षसी रात्रि जागिते ना पारे✻ दुःस्वप्न देखिया बुड़ि उठिल सत्वरे
शय्याय बसिया बुड़ी दुःख पाय मने ✻ सीतारे वेड़िया मारे यत चेड़ीगने
त्रिजटा ब'लेन, सीता रामेर रमणी ✻ सीतारे जे मारे, सेइ मरिवे आपनी
हइल सीतार बुझि दुःख अवसान ✻ स्वप्न शुनिवारे सबे एस मोर स्थान
सीता एड़ि गेल सबे त्रिजटार पास ✻ त्रिजटा कहिछे स्वप्न शुनि लागे त्रास
निभृते त्रिजटा डाकि ब'ले चेड़ीगन ✻ स्वप्न देखि आजि मोर उड़िल जीवन

१ गंगाजल २ समाप्त ३ होनहार।

कुसपन आजु निसा मैं देखा ※ मर्कट[1] लंक प्रवेस विशेषा
प्रथम कपिन्द बलिस्त प्रमाना ※ आय सिय-पद दिय सन्माना
सीतहिं चर्चि भीम तन धारा ※ वन-रसाल भञ्जेउ पुनि सारा
सागर लंघि लंक किय छारा ※ संहारेसि कपि अखयकुमारा
जरठा[2] रक्तवसन-युत कारी[3] ※ सो रावन-गर फँसरी[4] डारी

दो० लंकदाह, हनि दानवन, कुम्भकर्ण-मुख कार।
स-धनु बन्धु दोउ सीय लै, पुष्पक भये सवार ॥ ३८ ॥

देखेउँ सपन, न तेहि निस्तारा ※ लंका अवशि होय संहारा
कहि निसचरि पुनि नींद विभोरा ※ सीय-रुदन तरु-तर अति घोरा
कपि तरु-डार हर्ष अतिरेका ※ सपन प्रतच्छ करहुँ दिन एका
त्रिजटा-सपन सत्य, कृतिवासा ※ वरनेउ दसमुख सकुल विनासा

सीता-सरमा संवाद

तहँ निसचरि सरमा गुनखानी ※ सिय सों सदा प्रीति रससानी
एक मात्र सरमा यह नारी ※ जो न लंक सीतहिं दुखकारी
भगिनी सम सरमा पुनि सीता ※ कहहिं परस्पर दुःख अतीता[5]

दुष्ट स्वप्न देखि आजि निशिर भितरे ※ लंकाय आसिल येन मर्कट वानरे
प्रथमे आसिल कपि विघत प्रमान ※ प्रणाम करिल आसि सीता-विद्यमान
सीता संभाषिया कपि भीम मूर्ति धरे ※ आम्रवन भांगि मारे अक्षयकुमारे
सागर लंघिया वीर एल शीघ्र करि ※ पोड़ाइया भस्मराशि कैल लंकापुरी
रक्तवस्त्र-परिधाना काली हेन बुड़ि ※ रावणेरे पाड़े तार गले दिया दड़ि
देय कुम्भकर्णेर मुखेते कालीचून ※ लंकादाह हय आर राक्षसेरा खून
श्रीराम लक्ष्मण देखि धनुर्व्वाण हाते ※ सीता उद्धारिया जाय चड़ि पुष्परथे
ये स्वप्न देखिनु, ताहे नाहिक निस्तार ※ पड़िबेक अवश्य लंकाय महामार
त्रिजटा एतेक ब'लि घुमे अचेतन ※ एक सीता वृक्ष तले करेन क्रन्दन
शुनिया वृक्षेर शाखे हनूमान हासे ※ प्रत्यक्ष कराब स्वप्न एकइ दिवसे
त्रजटार स्वप्न सत्य, कहे कृत्तिवास ※ रावणेर हबे शीघ्र सवंशे विनाश

सीता ओ सरमार कथोपकथन

सरमा राक्षसी बटे महागुणवती ※ सीतार सहित तार परम पीरिति
लंकार सीतार नाहि दुःखेर भगिनी ※ एकमात्र छिल सेइ सरमा रमनी
सीता ओ सरमा येन दुइटि भगिनी ※ उभये कहित कत दुःखेर काहिनी

१ बन्दर २ बूढ़ी ३ काले रंग की ४ फाँसी ५ अतिशय।

सरमा सुनत क्लेश - वैदेही ※ बहु एकान्त सान्त्वना[1] देही
हे प्रिय सखी! कहति पुनि सीता ※ सहेउँ राम-पद-हित दुख केता
धौं विरंचि मोहिं करैं सुखारी ※ राम संग पुनि अवध निहारी
दीदी! दरस लहौं पुनि रामा! ※ राम-रानि ह्वै निवसउँ बामा
पर्णकुटी कहँ कुटी ललामा ※ देवर लखन कितै गुणधामा
हे प्रिय, कतहुँ न विधि[2] अनुकूला ※ लिखेउ ललार सकल प्रतिकूला
केहु न हानि सब कर कल्याना ※ किमि मम कुगति कीन भगवाना
दुख पर दुःख-गाज कहुँ डारौ ※ सुख पर सुख कहुँ, प्रभु! बिस्तारौ
सुख सरसति जहँ तहँ सुख-सागर ※ दै छीनत किमि 'राम' गुनागर

दो० सीता-राम न भिन्न कहुँ, एक-एक महँ लीन।
तिन बिछोह किमि दुसह दुख आजु विधाता दीन ॥ ३९ ॥

मैं करि साध न धारेउँ हारा ※ अन्तस हार राम-छबि धारा
जिन प्रभु हेतु न धारेउँ हारा ※ विधि तिन कीन सिंधु के पारा
किमि दारुन दुख सकहिं बिसारी ※ वृथा जन्म लिय जनकदुलारी
चेरी मोहिं ताड़हिं बहु रूपा ※ कब लौं सहौं कलेस अनूपा
उत्पीड़हिं दासीगन घोरा ※ भजे न प्रान, जलधि चहुँ ओरा

सीतार दुःखेर कथा सरमा शुनिले ※ सरमा सान्त्वना दित बसिया बिरले
सीता कन शुन मोर सरमा भगिनी ※ आर कि पाइब राम-चरण दुखानि
आर कि सरमा दिदि, हेन भाग्य पाव ※ श्रीरामेर संगे आमि अयोध्याय जाब
आर कि हेरिब चक्षे राम रघुमणि ※ आर कि रामेर बामे हब पाटराणी
कुटीर रहिल कोथा पत्रेर छाउनी ※ देवर लक्ष्मण कोथा सेइ गुण मनि
विषम कठिन विधि, देखि तव मन ※ आमार कपाले कैलि एमन लिखन
कारो मन्द नाहि करि, सबे करि भाल ※ तबे केन अभागीर हेन दशा ह'ल
दुःखेर उपरे कारे दाओ विधि, दुःख ※ सुखेर उपरे कारे दाउ तुमि सुख
यारे सुख दाओ, भासे से सुख सागरे ※ रामनिधि दिया पुनः केड़े निले ताँरे
राम सीता एक वस्तु भिन्न नहे कभु ※ भिन्न करि दिलि आज निदारुण विभु
साध करि गले हार ना परिनु आमि ※ हार-अन्तराले पाछे रन रघुमणि
ताइ आमि भये-भये ना परिनु हार ※ सेइ रामे राखे विधि सागरेर पार
एमन दारुण दुःख केमने पासरि ※ वृथा मोर जन्म वृथा जनकझियारी
आमारे बेतेर बाड़ि मारे चेड़ीगण ※ ए दुःखे सीतार प्राण बाँचे कत क्षण
सदाइ मारिते आसे राक्षसीर दल ※ पलाइते मने करि, चतुर्द्दिके जल

१ धीरज २ प्रारब्ध।

सरमा निरखि अतुल सिय-तापा * बहु समुझाय हरति संतापा
राम पदुम-दृग विष्णु बखानी * सिय जग विदित रमा ठकुरानी
भिन्न न राम-रमापति एका * उभय मिलन द्रुत[1], जनि अतिरेका[2]
सुलभ न फल बिन अवसर आये * अवसर लहत सिद्धि पछुवाये[3]
प्रबल दैव, पुरुषार्थ कहाये * सोऊ व्यर्थ काल बिन पाये
पौरुष, दैव, काल मिलि तीनी * कारज सिद्धि सुनिश्चित कीनी
बिन्दु बिन्दु तव दृग जलधारा * बरसत मनहुँ ज्वलंत अँगारा
सुवरन लंक दहै यह आगी * अमिट वचन मम, सुनु बड़भागी
थोरी शेष, बीति बहु आई * दुख सम्हारु, नतु हिया सुखाई
सरमा सती-वचन सुनि काना * यहि विधि सीता कीन बखाना
जो मैं रमा, धन्य तैं सरमा * अनुपम नाम धन्य तव सुषमा

दो० रमा-संगिनी, सीय हित, सुषमा जासु अनन्य ।
धन्य मातु-पितु जिन धरेउ, सरमा नाम सुधन्य ॥
धरति शीस कर जानकी, तजति दीर्घ निश्वास ।
सिय के दुख उपवन दुखी, खग-मृग सकल उदास ॥
सरमा-सीख सुहावनी, सिय-उर सीतल कीन ।
सुन्दरकाण्ड अनूप इमि कृत्तिवास रचि दीन ॥ ४० ॥

एतेक ब'लिया सीता करेन क्रन्दन * सरमा सीता के कहे प्रबोध वचन
कमललोचन राम देव नारायन * सीता लक्ष्मी ठाकुराणी, जाने त्रिभुवन
लक्ष्मी नारायण कभु भिन्न नाहि रवे * अविलम्बे उभयेर मिलन हइबे
कालपूर्ण हइलेइ कार्य्यसिद्धि हय * कालपूर्ण ना हइले नहे फलोदय
सत्य बटे दैव ओ पुरुषकार वल * किन्तु एइ दु'ये काज ना हय सफल
कालपूर्ण हइया चाइ तादेर सहित * ए तिन मिलिले कार्य्यसिद्धि सुनिश्चित
एक एक बिन्दु तव नयनेर जल * झरितेछे ठिक येन ज्वलन्त अनल
ए अनले दहिवेक स्वर्ण लंकापुरी * मने रेखे दिओ सीता विशेष विचारि
वहुकाल गेल सीता अल्पकाल आछे * क्रन्दन संवर सीता, हिया शुकाय पाछे
सरमा सतीर वाक्य करिया श्रवन * सीतादेवी एइ कथा ब'लेन तखन
आमि रमा यदि हइ तुमि हे सरमा * सार्थक तोमार नामे देखि ये सुषमा
धन्य तव पिता माता बुझिनु एखन * राखिला 'सरमा' नाम आमारि कारन
माथे हात दिया सीता छाड़िला निश्वास * सीतार क्रन्दने पशुपक्षि मने ह्रास
क्रन्दन संवरे सीता सरमा-वचने * सुन्दर सुन्दरकाण्ड कृत्तिवास भने

१ जल्दी ही २ अतिशयोक्ति ३ पीछे चलती है ।

सीता सहित हनुमान-साक्षात्

सिय तजि धाम गई सब चेरी ※ सीय-दरस-अवसर कपि हेरी
चढ़े विटप निरखत हनुमाना ※ पहुँचैं सिय समीप, अनुमाना
तरु-तर सिय, हनुमत तरु-डारी ※ करहिं बात किमि मनहिं विचारी
डरपहि कतहुँ न लखि वैदेही ※ उतरन-विटप न कपि मन देही
तदपि सीय बिन मिले न त्राना ※ होयँ निराश राम भगवाना
ऊँच नीच बहु भाँति विचारी ※ राम कथा हनुमत विस्तारी
राम सुमिरि सिय रुदन अपारा ※ कथा पवनसुत राम प्रसारा
तरु सों पुनि पुनि 'राम' बखाना ※ राम-नाम सिय अचरज काना
राम-नाम मधु को सरसाई ※ देय सतत[1] उर सीतलताई
चहौं दरस जेहि मुख हरिनामा ※ निठुर लंक किमि अनुचर-रामा
कहँ तुम बत्स ! लखत मोहिं नाहीं ※ मनहुँ दरस पाये प्रभु पाहीं
प्रस्तुत ह्वै मारुति बलधामा ※ तबहिं कीन अष्टांग प्रणामा
कपि लखि उर विस्मित वैदेही ※ चीन्हहुँ जनि, तुम कवन सनेही
दसमुख-प्रेरित[2] धौं छलरूपा ※ उर ससंक लखि रूप अनूपा
मोहिं भरमावत धरि कपि रूपा ※ मम अकाज हित छद्म[3] सरूपा

सीतार सहित हनूमानेर साक्षात्कार ओ आत्म-परिचय प्रदान

हनूमान देखे, तवे चेड़ी घरे गेल ※ सीता सम्भाविते मोरे एइ बेला हैल
वृक्ष हैते एइ सब देखे हनूमान ※ एइवार जाब सीता मा'र विद्यमान
वृक्षशाखे हनूमान, सीता भूमितले ※ कि वलिया सम्भाषिब, मने युक्ति तुले
व'लिते रामेर दूत ना हय वासना ※ मोर तरे ह'ते पारे सीतार यन्त्रना
तबेत सकल कार्य्य हइवे विनाश ※ असम्भाषे गेले हबे श्रीराम निराश
सात पाँच हनूमान भावेन आपनि ※ आपना आपनि कहे श्रीराम काहिनी
श्रीराम व'लिया सीता करेन क्रन्दन ※ श्रीरामेर कथा कहे पवननन्दन
वृक्ष हैते राम ब'लि डाके घने घने ※ अचम्बिते राम नाम वाजे सीतार काने
सीता ब'ले के शुनाले मधुर राम नाम ※ जुड़ाओ रामेर नामे कान अविराम
ये शुनाले राम नाम एक बार देखा दे ※ निष्ठुर लंकाय रामेर हेन भक्त के
कोथा हैते आलि वाछा, नाहि जानि आमि ※ वोध हय रामचन्द्रे देखियाछ तुमि
देखिते देखिते एल वीर हनूमान ※ अष्टांग लोटाये वीर करिल प्रणाम
कपि देखि सीतार विस्मित हैल मन ※ चिनिते ना पारि बाछा, तुमि कोन जन
देखिया तोमार मूर्ति हइनु कातर ※ छल करि पाठाइल बुझि लंकेश्वर
एले कपि रूप धरि भुलाइार तरे ※ मरिवार तरे कपि आइले ए धारे

१ निरंतर २ रावण के भेजे हुये ३ भेष बदला हुआ, बहुरूपिया।

कपि तजि, मातु ! न मैं कछु आना[1] * तनय - समीर[2] नाम हनुमाना

दो० राम कृपानिधि कृपा करि कीन मोहिं निज दास ।
भृत्य-राम, निसिचर न मैं, सुनउ मातु ! अरदास[3] ।।
तुम जननी, मैं सुवन तव, धरौ माथ निज हाथ ।
पवनतनय हनुमान मैं, दास राम रघुनाथ ।। ४१ ।।

'राम-दास' सुनि कौतुक छावा * सियहिं कथन विस्वास न आवा
जो तुम रामभक्त हनुमाना * देहु सुपरिचय सहित प्रमाना
हनुमत अतुल भक्ति रससाने * राम-सुयश तत्-छनहिं बखाने
यज्ञ-दान-रत दशरथ राजा * सुर-नर पूजत सकल समाजा
राम जेठ सुत, सिय तिन भामा * हरन कीन रावन दुष्कामा
कानन भ्रमत विरह सिय हेतू * भई मिताइ[4] राम-कपिकेतू[5]
वृत्त[6] राम मैं सकल सुनाई * सुत मैं तोर, निरखु मोंहि माई
सीस उठाय नयन तर आना * सीय लखत कपि वित्त-प्रमाना[7]
दरस परस्पर दोउ जन कीन्हा * कपि कर जोरि नाय सिर दीन्हा
विधि मम वाम कहत वैदेही * रावन - चर भरमावत मोहीं
माया बहु जानत लंकेसू * लखत लंकपति तुम कपिवेसू

हनू ब'ले आमि कपि नाहि अन्यजन * नाम मोर हनूमान पवननन्दन
निजगुणे कृपा करि भृत्य कैला राम * आमि ताँर भृत्य, मोर नाम हनूमान
निशाचर नहि आमि मायाय दाओमा * आमि तोमार प्रिय पुत्र, तुमि आमार मा
सीता ब'ले कि व'लिले रामेर भृत्य तुमि * केमने कहिब कथा प्रत्यय ना जाइ आमि
तुमि यदि रामेर सेवक हनूमान * ताँर परिचय दाओ मोर विद्यमान
सत्वर हइया हनू महाभक्ति-भरे * श्रीरामेर परिचय दिलेन सीतारे
यज्ञशील दानशील दशरथ राजा * देवलोक नरलोक सब्बे करे पूजा
ज्येष्ठपुत्र राम ताँर, बधू सीता सती * हरण करिल ताँरे रावण दुर्म्मति
कानने भ्रमेन राम सीता अन्वेषणे * सुग्रीवर सह मैत्री करिलेन वने
से रामेर वृत्तान्त तोमारे जाय ब'ला * माला तुलि देख मागो सेवक वत्सला
माथा तुलि सीतादेवी सम्मुखे नेहारे * विघत प्रमान कपि देखेन गोचरे
सीता हनूमान दोंहे हैल दरशन * जोड़ हाते नमे ताँरे पवननन्दन
जानकी वलेन, विधि विगुण आमाय * रावणेर दूत बुझि आमारे भुलाय
नानाविध माया जाने पापिष्ठ रावण * वानर रूपेते बुझि करे सम्भाषण

१ अन्य २ पवन-पुत्र ३ प्रार्थना ४ मित्रता ५ राम और सुग्रीव में
६ वृत्तांत ७ वालिश्त वरावर ।

विगत मास दस शोक-उपासू * किमि मम करत नित्य उपहासू
जो तुम साँचु दूत-श्रीरामा * मम वर होहु अमर बलधामा
अस्त्रघात जनि पावक[1] जारी * रन-वन उमा करैं रखवारी
सुत तव कण्ठ सरस्वति राजै * जहाँ जाहु तहँ सिद्धि विराजै
कपि कहु नाम कवन तव देसू * इत केहि हेतु कवन आदेसू

दो० कुशल मिली जनि, विगत दिन, जो तैं चर-प्रभु राम।
मम हित दुर्बल नाथ, तिन वरनहु कथा ललाम ॥ ४२ ॥

मारुति कहत राम गुणधामा * रूप - धर्म सर्वांग ललामा
गात प्रकाण्ड यथा तरु शाला * बाहु अजानु सुनाभि विशाला
नासा तिल, सुप्रशस्त ललाटा * फलाहार बल - वीर्य विराटा
गति मतंग दूर्वादल श्यामा * मदन जीति छबि भुवन ललामा
कौतुक धनु-समर्थ बल-वेशा * सुमनित[2] चञ्चल कुञ्चित केशा
'हा सीते' कहि रुदन, न धीरा * अनुज लखन तिन गौर शरीरा
उमड़ शोक सिय रुदन अतीता * सुत अब मोहिं तव भई प्रतीता[3]
राम सकल-गति नाथ-अनाथा * वरनि सकति को गुन-रघुनाथा
राम भक्त हे, सुनु हनुमाना * कमलनयन कहु किमि भगवाना

दश मास करि आमि शोके उपवास * मम संगे कि लागिया कर उपाहस
स्वरूपेते हओ यदि श्रीरामेर चर * आमार वरेते तुमि हइबे अमर
अग्निते पुड़िबे नाहि अस्त्रे ना मरिबे * रणे-वने तव रक्षा शंकरी करिबे
तव कण्ठे सरस्वती हौन अधिष्ठान * येखाने सेखाने जाओ सर्व्वत्र समान
वानर, कि नाम धर, थाक कोन देशे * कि हेतु आइले हेथा काहार आदेशे
बहुदिन श्री रामेर ना जानि कुशल * आमार लागिया प्रभु आछेन दुर्ब्बल
हइबे रामेर दूत हेन अनुमानि * तव मुखे शुनिलाम प्रभुर काहिनि
हनूमान ब'ले, राम गुणेर सागर * आकृति प्रकृति किवा सर्व्वांग सुन्दर
शालवृक्ष जिनि ताँर प्रकाण्ड शरीर * आजानु लम्बित बाहु नाभि सुगभीर
तिलफुल जिनि नासा सुदृश्य कपाल * फल मूल खान तबु विक्रमे विशाल
दूर्व्वादल श्याम राम गजेन्द्र-गमन * कन्दर्प जिनिया रूप भुवनमोहन
विचित्र धनुक ताँर ताहे देन चड़ा * चाँचर केशे चिकुर होन पुष्पलता बेड़ा
'हा सीता हा सीता' ब'लि करेन क्रन्दन * गौर वर्ण श्रीरामेर अनुज लक्ष्मन
एत शुनि जानकीर वाड़िल क्रन्दन * एत क्षणे बाछा, मोर प्रत्यय हैल मन
अनाथेर नाथ राम सकलेर गति * कहिते ताँहार गुण काहार शकति
रामेर सेवक बटे बाछा हनूमान * केमन आछेन मोर कमलनयान

---

१ अग्नि २ फूलों से सजे हुये ३ विश्वास।

केहि विधि समय कटत रघुनाथा ❋ बिलमि[1] सुनहुँ तिन मंगल गाथा
देवर लखन सुमित्रा - प्राना ❋ प्रथम कुशल तिन कहु हनुमाना
पञ्चबटी मैं कहे कुवचना ❋ सुनहुँ कथा तिन, मोहिं उचित ना
मम दुर्वचन गये वनदेसू ❋ सूने मोहिं हरेउ लंकेसू
सुनि सिय-वचन कहेउ हनुमाना ❋ वरनहुँ कथा विशेष प्रमाना
उपवन लखेउ कनक मृग सुन्दर ❋ दनु मरीच सो रावन-अनुचर
तेहि अखेट[2] रघुवीर पयाना ❋ प्रभुसर दनुज हरे पुनि प्राना

दो० मानि दुर्वचन तव लखन, चले जहाँ रघुनाथ ।
लहि सूने उपवन तुमहिं हरन कीन दशमाथ ॥ ४३ ॥

पञ्च कीस हम रहि गिरि-सूका ❋ छिन्न वसन तहँ गिरत विलोका
छिन्न वसन रघुपति ढिग धारा ❋ लखन-राम किय रुदन अपारा
भूमि विलोटत खात पछारा ❋ दै प्रबोध सुग्रीव सम्हारा
किय सुकण्ठ प्रन सिय-उद्धारा ❋ अेवज[3] राम तेहिं शासन-भारा
जुरेउ कटक-कपि नृप-आदेसू ❋ गमनेउ चहुँ दिस तव उद्देसू[4]
मास-अवधि कपिनाथ बताई ❋ बीते अवधि न केहु कुसलाई
प्रविसि पताल घोर तम-देसू[5] ❋ जहँ लखि मरन, उपाय न शेसू

केमने वञ्चेन काल राम गुणमणि ❋ रामेर मंगल पिछे शुनिव से आमि
आगे एक वार्ता हनू, सुधाइ तव काछे ❋ सुमित्रार प्राण, देवर लक्ष्मण केमन आछे
देवरेर कथा आमि ना शुनिनु काने ❋ दुष्ट कथा कहिलाम पंचवटी वने
दुष्ट कथा शुनि देवर एका राखि गेल ❋ शून्य घर देखि रावण हरिया आनिल
सीतावाक्य शुनि पुनः कहे हनूमान ❋ विशेपिया कहि माता, कर अवधान
आपनि ये स्वर्णमृग देखिला सुन्दर ❋ राक्षस मारीच सेइ रावणेर चर
ताहाके मारिते राम करेन प्रयाण ❋ श्रीरामेर वाणेते से हाराइल प्राण
तोमार दुर्व्वाक्ये घर छाड़िल लक्ष्मण ❋ शून्य घर पेये तोमा हरिल रावण
पर्व्वत शिखरे छिनु मोरा पञ्चजन ❋ छिन्न वस्त्र अकस्मात् पड़िल तखन
राम हस्ते छिन्न वस्त्र करिनु अर्पण ❋ बहु कान्दिलेन राम कान्दिला लक्ष्मण
आछाड़ खाइया राम लोटान भूतले ❋ सुहृद सुग्रीव ताँरे आश्वासिया तोले
करिल सुग्रीव सत्य तोमा उद्धारिते ❋ राजत्व दिलेन ताँरे श्रीराम त्वरिते
आइल वानर सर्व्व सुग्रीव आश्वासे ❋ चतुर्द्दिके गेल सबे तोमार उद्देशे
आसिते मासेर मध्ये राजार नियम ❋ मासेर अधिक हैले हबे व्यतिक्रम
पाताले प्रवेश करि महा अन्धकार ❋ मने हैल, कपि सब मरिल एबार

---

१ कुछ ठहर कर २ शिकार हेतु ३ वदले में ४ खोज में ५ अंधकारमय देश।

गरुड़-तनय खगपति सम्पाती * सो तव बरनन किय बहुभाँती
गिरि ऊपर निवसत खगनाथा * उगे पंख सुनि रघुपति-गाथा
दुस्तर सिन्धु तरेउँ तेहि वचना * देखी लंक सकल इत रचना
दसमुख दूत न मैं भय-हेतू * मातु! समुझु मोहिं चर-रघुकेतू
जनि प्रतीत, पुनि संक निवारौ * राम - मुद्रिका चीन्ह निहारौ
सियजननी! मम करु विश्वासू * असत न कहत राम कर दासू
राम-सीय प्रति भक्ति अगाधा * मैं हनुमत मेटौं तव बाधा
सदा राम-सिय पद मदहोसू[1] * कीजिय मम बल-बुद्धि भरोसू
कर - हनुमन्त[2] मातु उद्धारा * कृत्तिवास हनु-कथा प्रसारा

सीता द्वारा आत्मपरिचय

दो० निज परिचय कहि सीय सों, पुनि पूँछत हनुमान।
नाम, ग्राम, पितु, श्वसुर, निज, कीजिय सकल बखान॥
पद्मपत्र-जल चपल सम नयन युगल छबिधाम।
राम नाम सुनि रुदन अति कहु तुम्हार को राम॥ ४४॥

सम्पाति नामेते पक्षी गरुड़नन्दन * तार मुखे शुनिलाम तव विवरन
पर्व्वतेर उपरे ताहार पाइ देखा * राम नाम ब'लिते ताहार उठे पाखा
तार वाक्ये लंघिलाम दुस्तर सागर * लंकार सकल स्थान हइल गोचर
रावणेर चर ब'लि ना करिह भय * स्वरूपे रामेर दूत जानिह निश्चय
आमार वचने यदि ना हय प्रत्यय * रामेर अंगुरी देखि घुचिबे संशय
ओ मा सीता, हनू वाक्ये कर मा विश्वास * हनू ना कहिबे मिथ्या, हनू रामदास
हनूर अचला भक्ति राम-सीता प्रति * हनू हैते खण्डिवेक तोमार दुर्गति
हनू तव बल-बुद्धि-भरसार स्थल * राम-सीता लागि हनू हइल पागल
हनूह करिबे मागो तोमार उद्धार * मारुतिर कथा कृत्तिवास ब'ले सार

हनूमानेर निकटे सीतार आत्म-परिचय प्रदान

हनूमान ब'ले शुन माता ठाकुरानि * परिचय दिनु आमि तोमारे न चिनि
निज परिचय दाओ तोमार नाम कि * कोन राजार बधु तुमि कोन राजार झि
पद्मपत्रे जल यथा करे ढल ढल * सेरूप तोमार मागो, नयन युगल
शीघ्र करि जननि गो, परिचय दे * रामनाम शुनि कान्द राम तोमार के
एत शुनि जानकीर उथले आगुनि * आमि छार जन्मियाछि बड़ अभागिनि

---

१ विह्वल २ हनुमान के हाथों।

छं० जनकनन्दिनी, कनकधाम जहँ मिथिला पुरी ललामा ।
कुलकलंकिनी अधम अभागिन मोर जानकी नामा ।।
अतुल तेज बल दशरथ भूपति श्वसुर अवध मम धामा ।
मिथिला जाय शंभुधनु भंजेउ वरन कीन मम रामा ।।
अवध-अधीश्वर प्राननाथ वर तबहुँ न सुख संचारा ।
राम विछोह निरन्तर कलपत विधि विपरीत ललारा ।।
सुनु हनुमान, राम बिन तिलछहुँ, रघुपति प्रान अधारा ।
जहाँ राम लै चलहु कीस तव सीस एक यहु भारा ।।
दीन हीन मोंहि दिवस दिखावै अवध दरस लहि पाई ।
राम अवधपति वाम अंक पटरानि सुरूप सुहाई ।।
मारि लंकपति मोर निवारन जो समर्थ कपिराई ।
अवधरानि ह्वै, तनय सरिस तैं, लेहुँ अंक उरलाई ।।

अंगूठी-संवाद

पवनतनय सुनि सिय परितोषा ※ युगुल चरन तव मातु भरोसा
मम पहँ चिह्न एक वैदेही ※ कर महँ राम-मुद्रिका लेही
कौतुक सुनि मुद्रिका अपारा ※ पवनतनय तन हाथ पसारा

मिथिला वसति, जनक नृपति, काञ्चन रचित धाम ।
ताँहार नन्दिनी, कुलकलंकिनी, जानकी आमार नाम ।।
दशरथ राजा, वले महातेजा, ताँर वधू वटे आमि ।
मिथिला जाइया, धनुक भाँगिया, विभा कैला रघुमणि ।।
मोर प्राणवर, अयोध्या-ईश्वर, सुखेर अवधि नाइ ।
विधि हैला वाम, छाड़ि हेन राम, कांदितेछि सर्व्वदाइ ।।
शुन हनूमान, कर एइ काम, ल'ये जाओ यथा राम ।
रामेर विहने, म'रे आछि प्राणे, काँदितेछि अविराम ।।
आमि दीन हीन, हवे हेन दिन, अयोध्या जाइव आमि ।
गिया अयोध्याते, रघुनाथ साथे, वामे हव पाटराणी ।।
रावणे वधिया, आमारे लइया, येते यदि पार तुमि ।
राणी हबार काले, पुत्र व'लि कोले, तोमारे लइव आमि ।।

अंगुरी-संवाद

हनूमान व'ले किवा व'ल ठाकुरानि ※ भरसा तोमार मागो चरण दु'खानि
एकटि निशान आछे जनकझियारी ※ हात पाति लह माता, रामेर अंगुरी
अंगुरीर नाम शुनि जानकी तत्पर ※ निदर्शन दिल हाते पवनकोङर

लीन अँगूठी भई सनाथा ❋ लहे अभागिनि जिमि रघुनाथा
मुँदरी लाय दीन हनुमाना ❋ अंगुस्तरी[1] मनौ मम प्राना
प्रभु मुँदरी कहँ जतन लुकाई ❋ चेरि कनक[2] लखि लेयँ छिनाई
अँगुरिन धरत निसिचरिन हाथा ❋ बिन मुँदरी पुनि होहुँ अनाथा
जो मुद्रिका हिये महँ धारौं ❋ तौ किमि ताहि सदैव निहारौं
कछु विश्राम लेहु कपि ताता ❋ मुँदरिहिं जबै करौं कछु बाता
अंगुस्तरी ! सुनहु मम बानी ❋ निसिदिन कलपति मैं सियरानी
तुम प्रभु-चिह्न, दरस तव पाई ❋ रोवत प्रान दुगुन अधिकाई
जबहिं कीन पितु कन्यादाना ❋ लीन तुमहिं तब रत्न समाना
गंगोदक तिल तुलसी हाथा ❋ मोहिं-तुम-संगहिं कीन सनाथा
लीन संग प्रभु सिय पुनि मुँदरी ❋ यहि विधि सौति भइउ तुम मोरी
हतभागिनि विरञ्चि मम वामा ❋ मैं इत लंक, साथ तुम रामा
मम सुधि जब रघुनाथ सतावै ❋ मम सूने तैं मन बहिलावै

दो० अहो दुसरिहा[3] राम की, रही राम के साथ ।
कवन हेतु आई इतै, करि अकेल रघुनाथ ॥ ४५ ॥

कहु मुद्रिका कबहुँ रघुनाथा ❋ सुमिरि अभागिनि करत सनाथा

अंगुरी देखिया सीता तुलि दुटि हात ❋ अभागिनी ब'ले मने आछे रघुनाथ
रामेर अंगुरी आनि दिले हनूमान ❋ अंगुरी नहे त इहा दिले मोर प्रान
ब'ल देखि कोथा राखि रामेर अंगुरी ❋ सोना देखि केड़े लय पाछे सब चेड़ी
अंगुले राखिले पाछे लय चेड़ीगण ❋ देखिते ना पाइब अंगुरी सर्व्वक्षण
हृदि माझे राखि यदि कहि तव ठाँइ ❋ अंगुरी देखिते हाथ ना पाब सदाइ
वारेक विश्राम कर पवननन्दन ❋ अंगुरीर सने कहि दुचारि कथन
अंगुरीर पाने चाहि कन ठाकुरानी ❋ दिवानिशि काँदि आमि जनकनन्दिनी
शुनह अंगुरी, तुमि रामेर निशान ❋ द्विगुण तोमाय देखि कान्दि उठे प्रान
जे काले जनक पिता दान कैला मोरे ❋ मोर आगे वरण से करिला तोमारे
ताम्रपात्रे गंगाजल, तिल-तुलसी ताते ❋ तोमारे आमारे पिता सँपे राम हाते
तोमाय आमाय दोंहे लैला रघुमनि ❋ सेइ हैते हैले तुमि आमार सतिनी
विधि बाम हइलेन, आमि अभागिनी ❋ रावण हरिल मोरे, संगे रैला तुमि
पड़िलाम जबे आमि श्रीरामेर मने ❋ आमार अभावे राम चान तव पाने
अंगुरी, दोसर तुमि छिले राम सने ❋ रामके राखिया एका हेथा एले केने
आर एक कथा आमि ब'लि तव स्थान ❋ अभागिनी ब'ले मने करेन श्रीराम

---

१ अँगूठी २ सोना, सुवर्ण ३ साथी ।

मम विन विगत भयेउ अति काला ※ कतक क्षीन कहु दीनदयाला
सोइ छन कहेउ कीस कर जोरी ※ तुम बिन छीन न प्रभु गति थोरी
बैठत उठत जागरन शयना ※ 'सीय' सदा मुख सरसिजनयना[1]
तव हित रुदन विकल रघुराया ※ विन जल-असन[2] छीन अति काया
जटिल जटा, तन यहि विधि छीना ※ कृष अँगुरी तजि मुँदरी दीना
तव-रघुपति जेहि समय वियोगू ※ प्रभु-मुद्रिका न पुनि संयोगू
जो कर सोहत रामकृपाला ※ बढ़ि आकार भई सो बाला[3]
पूर्णचन्द्र छवि नभ चहुँ छाई ※ कपि सों सीय मुद्रिका पाई
सो लखि हीय अतुल हर्षानी ※ सुमिरत राम-मूर्ति सियरानी
चन्द्रकान्त मणि मुँदरि सुहाई ※ चन्द्र-किरन जगमगत समाई
रुदन-मुद्रिका सिय अनुमानी ※ तेंहि बोलत प्रबोधमय बानी
जन्मदुखी, मम समुचित पीरा ※ तैं मुँदरी किमि विकल सरीरा
जानि लीन किमि दुःख समेतू ※ वन अशोक तव रोदन हेतू
रघुपति पाणि परसि जेहि पावा ※ आजीवन दुख न्यौति बुलावा
तेंहि कलपत बीतत दिन नाना ※ बहुबिधि करि बिचार मैं जाना

आमा छाड़ा ह'ये राम रन वहुदिन ※ आमार विहने कत हयेछेन क्षीन
हेन काले व'ल हनू करि जोड़ हात ※ तोमा विना क्षीण देह हैला रघुनाथ
उठिते वसिते ताँर मुखे तव नाम ※ जागिते घुमाते 'सीता' व'लेन श्रीराम
कान्दिया तोमार तरे श्रीराम विकल ※ फल जल तेयागिया वड़ह दुर्व्वल
एत क्षीण हयेछेन राम जटाधारी ※ ढिला ह'ये गेछे ताँर करेर अंगुरी
जवे हैते तव संग भंग हैला राम ※ सेइ दिन घुचियाछे अंगुरीर नाम
अंगुरी ब'लिया पूर्व्वे राम परिछिला ※ एखन एमन क्षीण, अंगुरी हैल वाला
पूर्णचन्द्र शोभितेछे गगन उपरे ※ अंगुरी दियाछे हनू जानकीर करे
अंगुरी हेरिया सीता महा हृष्ठ मन ※ श्रीरामेर मूर्तिखानि. करिला स्मरन
चन्द्रकान्त मणि सेइ अंगुरीते छिल ※ चन्द्रेर किरणे ताहा क्षरिते लागिल
अंगुरी काँदछे सीता भावे मनेमन ※ अंगुरीके सम्वोधिया वलेन वचन
जनम दुःखिनी सीता काँदिवे सीताइ ※ हे अंगुरी, कि कारणे कान्द तुमि भाइ
बुझिनु बुझिनु भाइ वुझिनु एखन ※ केन कान्दितेछ आसि अशोकेर वन
श्रीरामचन्द्रेर करे पड़े जेइ जन ※ कान्दिते हइवे तारे जेनो आजीवन
ताहारे कान्दिते हवे चिरदिन धरि ※ देखिलाम इहा आमि विशेष विचारि

---

१ कमलनयन राम २ भोजन-पानी ३ कान की वाली।

दो० हम तुम दोउ रघुनाथ के परीं संग इक जाय।
दोऊ विलपत लंक महँ, आजु दनुज घर आय ॥ ४६ ॥

'सीता' नाम कबहुँ जनि धारै * नतरु दुसह दुख बिधि बिस्तारै
इमि कहि सीय करति अनुतापा * दासी हेतु प्रभुहिं संतापा
रामदूत हे पवनकुमारा ! * मम दारुण दुख आर न पारा
घरी जवन मम स्वामि वियोगू * जल न असन मम मुख संयोगू
रहैं कि प्रान जायँ उर संसय * प्रभु-सुँदरी कहँ, वत्स ! समर्पय
पुनि मुद्रिका जानकी लीन्हा * चहेउ करांगुलि[1] धारन कीन्हा
दृढ़ करि कर-अँगुरी सो धारी * कंकण सरिस मनौ विस्तारी
सो लखि रोय उठे हनुमाना * क्षीण राम-सिय एक समाना

सीता का हनुमान को आशीर्वाद

गति[2] प्रतच्छ मम कपि जिमि देखी * वरनेउ प्रभुपहँ सकल बिशेषी
होय बिलम्ब समीरकुमारा * तजौं प्रान मैं सिन्धु मँझारा
रावन-दासिन दिवस गुजारहिं * कहत 'राम' मारहिं ललकारहिं
उदर अमिय-फल नाहिं समाहीं * 'राम' अधार अभागिनि पाहीं

तुमि आमि दुजनाइ पड़ि ताँर करे * काँदितेछि दोंहे मिलि राक्षसेर घरे
केह येन 'सीता' नाम नाहि राखे आर * राखिले करिते हबे तारे हाहाकार
एत ब'लि जानकी कपाले मारे हात * दासी हेतु एत दुःख पाओ रघुनाथ
जानकी व'लेन शुन पवनकुमार * आमार दुःखेर आर नाहि देखि पार
जेदिन ह'ते संग छाड़ा ह'लेन गोसाँइ * से दिन ह'ते फल जल किछु खाइ नाइ
बाँचे कि ना बाँचे आर जनकझियारी * कोथा राखि बाछा हनू, रामेर अंगुरी
एत ब'लि अंगुरीके लैला ठाकुरानी * अंगुरी परिते चान जनकनन्दिनी
अंगुरी परिला सीता दृढ़ करि मन * अंगुरी हइल ठिक हातेर कंकन
इहा देखि कान्दिया विकल हनूमान * राम सीता, दुइ क्षीण एकइ समान

हनूमान प्रति सीतार आशीर्वाद

सीता ब'ले देखे जाह पवनकोङर * मोर दशा ब'लो गिया रामेर गोचर
किञ्चित विलम्ब यदि हइत तोमार * सिन्धुजले त्यजिताम ए प्राण आमार
मोरे घेरि राखियाछे रावणेर चेड़ी * 'राम' ब'ले डाकिलेइ मारे मारे छड़ि
आहारे अमृत फल ना करि भक्षण * रामनामे अभागीर उदर पूरण

१ हाथ की उँगली में २ हालत ।

जबहिं सतावत छुधा-पिपासा ❋ सेवत रघुपति नाम मिठासा
तरु अशोक तर दारिद-धासा ❋ एकाकी निवसहुँ बिन रामा
राम बिछोह विगत दस मासू ❋ प्रभु-चिन्तन अहि-निसि उपवासू
जो मम मरन, नारि-वध पापा ❋ प्रभुहिं कहेउ, सुत! मम सन्तापा

दो० नित मारहिं बहु ताड़ना मिलै राच्छसिन हाँथ, ।
भुइँ लोटत, उद्घोष मुख, 'रक्ष! रक्ष!' रघुनाथ ॥ ४७ ॥

'सरमा' सों कछु फल जो लेहीं ❋ चेरि-दसानन खान न देहीं
बरनि लंकपति - अत्याचारा ❋ कहेउ न सिय केंहु विधि निस्तारा
बिना राम सब कछु दुख-सेजा[1] ❋ बिना भानु जिमि शशि निस्तेजा
वर्षा हेतु मेघ सन्माना ❋ बिना राम जल अनल समाना
सरमा चन्दन देत सरीरा ❋ मम तन लहत अनल सम पीरा
सहित कपूर पान यदि देही ❋ बिन रघुनाथ न रुचि उर लेही
एते दुख किमि सिय-निस्तारू ❋ मरन असंशय बिन उद्धारू
तजहु शोच कह पवनकुमारा ❋ प्रभु सन रावन नाहिं उबारा
कपि असंख्य मिलि रघुपति संगा ❋ छन महँ बाँधहिं सिन्धु अलंघा

क्षुधाय तृषाय जवे व्याकुलित प्राण ❋ केवल आहार करि मिष्ट राम नाम
शिंशपा वृक्षेर तले देख मोर कुंड़े ❋ श्रीराम विहने आमि एका थाकि पड़े
दशमास उपवासी आमि राम विना ❋ दिवानिशि करि आमि रामेर भावना
ज़ाओ राजा हनू व'ल श्रीरामेर आगे ❋ सीता मैले राम, तव नारीहत्या लागे
दुष्ट रावणेर चेड़ी मारे वेतेर वाड़ि ❋ राम नाम हृदे जपि जाइ गड़ागड़ि
रावणेर चेड़ीगण तुले माथे हाथ ❋ उच्चैःस्वरे डाकि व'लि, रक्ष रघुनाथ
दुइ चारि फल पाइ सरमार ठाँड ❋ रावणेर चेड़ी ताहा खेते दिते नाइ
सन्देश लइया द्रुत जाह हनूमान ❋ रावणेर अत्याचारे ना बाँचे परान
राम विना यत दुःख, शुन दिया मन ❋ चन्द्रकर वोध हय सूर्य्येर किरन
जलविन्दु वरपिते मेघे करि माना ❋ राम विना जलविन्दु अनलेर कना
सरमा चन्दन यदि देय मोर गाय ❋ अग्नि सम वोध हय, अंग पुड़े जाय
कर्पूर यद्यपि देय ताम्बूले भितरे ❋ राम विना सेइ द्रव्य ना रुचे आमारे
एत दुःखे सीता प्राण बाँचे कतक्षण ❋ उद्धार ना हैल मोर निश्चित मरण
हनूमान व'ले मागो चिन्ता नाहि आर ❋ राम हस्ते रावणेर नाहिक निस्तार
राम सने मिलियाछे असंख्य वानर ❋ इंगिते वाँधिया दिवे अलंघ्य सागर

---

१ दुःख-शैय्या ।

कपिपति मिलन रमापति साथा * रघुपति-सचिव भये कपिनाथा[1]
बटुरे[2] कपि असंख्य दिग्देसा * लहत आचमन सिन्धु न शेषा
हरन जबहिं तव किय लंकेसू * पूरुब कथा विदित जनि लेसू
ऋष्यमूक कपि पाँच बिराजे * तन अभरन जब सिय! तुम त्याजे
प्रभु हित तजे चिह्न आभरना * तुमहिं भुलान, मोहिं स्मरना
पञ्च कोस अगणित कपि साथा * अनुचर सकल कृपा रघुनाथा
कपि! आयेउ तरि सिन्धु अपारा * इत मम तीर न दृव्य-अहारा

दो० पाँच आम सरमा दिये, वत्स समर्पन तोहिं।
जाहु संग लै पञ्च फल, देहुँ, बिलम्ब न मोहिं ॥ ४८ ॥

एक राम-पद कृपानिकेता * दुइ फल अखिल कटक-कपि हेता
देवर लखनहिं एक कपीसा! * दै पुनि अगनित कहेउ असीसा
जो फल एक पवनसुत! शेसू * अद्‌र्ध तासु दै कोस-नरेसू[3]
तात! अद्‌र्ध फल पुनि तव हेता * दीन पञ्च फल प्रीति समेता
रुकत न रोके हँसी अपारा * कहत जोरि कर पवनकुमारा
छुधानुरूप[4] चहौं आहारा * अद्‌र्ध रसाल[5] न मोर सहारा
दग्ध छुधानल[6] मैं वैदेही * फल किमि अद्‌र्ध उदर सुख देही

सुग्रीव वानरे संगी कैला रघुनाथ * मितालि करिला राम सुग्रीवेर साथ
कत शत कपि एल देश देशान्तरी * गण्डूषे शुषिते पारे सागरेर वारि
पूर्व्वकथा तव मागो नाहि पड़े मने * जेदिन तोमाय हरि आने दशानने
ऋषिमूके छिनु मोरा कपि पञ्चजन * आमा सबे फेलि दिले अंगेर भूषन
रामके निशान दिते फेलिले भूषने * तुमि पासरिले माता, आछे मोर मने
से पञ्च वानर मिले श्रीरामेर सने * असंख्य वानर संगी श्रीरामेर गुने
सीता कहे, एले हनू, लंघिया सागरे * कि दिबे अनाथा सीता खाइते तोमारे
सरमा पाँचटि आम्र दियाछे आमाय * तुमि बाछा लये जाओ, दिलाम तोमाय
सेइ पंचफल हनू, ल'ये जाह तुमि * तिलेक विलम्ब कर, दिह बापू, आमि
एक आम्र दिबे रामेर चरणकमले * दुटि आम्र दिबे बाछा, वानर सकले
एक आम्र दिबे मोर लक्ष्मण देवरे * शत शत आशीर्वाद जानाबे ताहारे
एक आम्र आछे बाछा पवनकुमार * इहार अर्द्धेक भाग सुग्रीव राजार
अवशिष्ट अद्‌र्धभाग खेओ बाछा तुमि * एके एके फल बाछा, बेटे दिनु आमि
शुनिया हनूर हासि नाहि धरे आर * जोड़ हाते ब'ले हनू निकटे सीतार
आमार जेमन क्षुधा, खाद्य तथा चाइ * अर्द्धेक फलेते मोर किछु हबे नाइ
क्षुधानले पुड़ितेछि ब'ल जनकेर झि * अर्द्धेक फलेते मागो हबे मोर कि

१ सुग्रीव २ इकट्ठा हुए ३ सुग्रीव ४ भूख के अनुसार ५ आम ६ भूख की ज्वाला से।

आयसु लहौं जानकी जननी * सोकहुँ सिन्धु लखौ मम करनी
जो मोहि मिलै मातु-आदेसू * सकल जलधि-जल श्रवन[1] प्रवेसू
वन अशोक इत राम-विहीना * कहति सीय, कपि! मैं अति दीना
वन अशोक नहिं कानन-शोका * दुख नासै मम प्रान, विलोका[2]
अनाहार दिन-रैन गुजारा * कंगालिनि-गृह कितै अहारा!
राम नाम बस एक अधारा * करत शरीर प्रान सञ्चारा
क्षुधा-तृषा मैं सकल बिसारा * केवल रघुपति नाम सहारा
मर्माहत दनु-दुःख अनन्ता * सहौं सुमिरि अहिनिसि[3] भगवन्ता
अवध गमन अवसर यदि पाई * करहुँ सप्रीति तात! पहुनाई[4]

दो० भक्तिभाव सों अर्द्ध फल, लहि अत्यल्प प्रसाद।
क्षुधा निवारन होय कपि! करहु न संशयवाद ॥ ४६ ॥

तव संवाद तुल्य, हनुमाना! * तुच्छ प्रान कर दान लखाना
सुलभ न राम-दरस बिन प्राना * सहज करत नतु जीवन दाना
करहुँ न प्रानदान यहि हेतू * जीवन राखि लखहुँ रघुकेतू
तदपि देहुँ यहि सम वर कोऊ * मम वर अमर चारि युग होऊ

आज्ञा यदि पाइ तव जनकझियारी * समुद्रेर जल आमि शुषे खेते पारि
यदि तव आज्ञा पाइ, हेन लय मने * सागरेर यत जल पूरे राखि काने
जानकी बलेन, हनू, श्रीराम बिहने * दरिद्र हयेछि वाछा, अशोक कानने
अशोक कानन नहे, शोकेर कानन * शोके दुःखे जानकीर जाइछे जीवन
हेथा किवा खाद्य पाब आमि कांगालिनी * अनाहारे आछि बाछा, दिवस यामिनी
एक मात्र राम नाम पानीय आहार * ताइ आछे एइ देहे प्राणेर संचार
क्षुधा तृषा यत किछु भूलेछि सकल * एकमात्र रामनामे यत किछु वल
रावणेर अत्याचारे मर्म्मे म'रे रइ * एकमात्र रामनामे से सकल सइ
कभु यदि जेते पाइ अयोध्या नगरे * उदर पूरिया बाछा, खाओयाव तोमारे
आर किछु ना बलिह पवननन्दन * अर्द्ध आम्रे हवे तव उदर पूरन
अत्यल्प प्रसाद यदि खाओ भक्ति भरे * क्षुधा नाहि प्रवेशिवे तोमार उदरे
जे वार्त्ता आनिया दिले बाछा हनूमान * तुलनाय तार काछे तुच्छ प्राणदान
प्राण दिते पारि आमि, कहि तव ठाँइ * प्राण दिले श्रीरामे देखिते पाब नाइ
सेकारणे प्राणदान ना दिनु तोमारे * प्राणरक्षा करिलाम रामे देखिवारे
इहार समान किछु दान दिब आमि * मोर वरे चारि युग अमर हओ तुमि
दुइ हात तुलि हनू तोमाय दिनु वर * मोर वरे चारि युग हइबे अमर

---

१ कानों में २ ऐसा मालूम पड़ता है ३ दिन-रात ४ आतिथ्य।

जो मैं सती काय - मन - बचना ※ सेवत त्रिविधि स्वामि के चरना
तौ सिय-वचन न संशय करई ※ वत्स! कथन मम निज उर धरई
राम-चरहिं[1] पद-अमर प्रकासा ※ ध्रुवपद-सती[2], कहत कृतिवासा

सीता खेद

छं० योगसिद्ध अति अतुल तेज नृप जनक-लली मैं सीता।
नव दूर्व्वादल श्याम राम सुत-दसरथ कीन गृहीता ॥
शुभ विवाह पुनि श्वसुर-गेह चलि, सुख बैपरे पुनीता।
ससुर-नेह, सासुन-सनेह नित, कौतुक सबन सप्रीता ॥
प्रजा प्रसन्न, मुदित महराजा, रामहिं राजु सवाँरी।
कुमति मंथरा धरति कैकई कीन नाथ वनचारी ॥
धरनिकुमारि[3] राम कै प्यारी हरेउ मोहिं निसिचारी।
सुन्दरकाण्ड ललित मञ्जुल कृतिवास कथा विस्तारी ॥

सीता-हनुमान कथोपकथन

अनुज विभीषण धर्मधुरीना ※ मम हित सीख दनुहिं[4] बहु दीना
दानव पुनि 'अरविन्द' उदारा ! ※ मम हित बहु दनुपतिहिं सम्हारा

काय-मनोवाक्ये यदि सती हइ आमि ※ काय-मनोवाक्ये यदि राम हन स्वामी
निश्चित सीतार वाक्य ना हबे लंघन ※ एइ कथा बाछ हनू रेखो मने मन
अमरत्व वर दिनु बाछा रामदास ※ सतीर अलंघ्य वाक्य, कहे कृत्तिवास

सीतार खेद

योगसिद्ध महातेजा, जनक नामेते राजा, आमि सीता ताँहार नन्दिनी
दशरथ सुत राम, नव दूर्व्वादल श्याम, विवाह करेन पणे जिनि
शुभ विवाहेर पर, गेलाम श्वशुरघर, कतमत करिलाम सुख
श्वशुरेर स्नेह यत, श्वाशुड़ीगणेर तत, नित्य बाड़े परम कौतुक
हरषित यत प्रजा, आनन्दित महाराजा, आदेशिला दिते छत्रदण्ड
कुंजी दिल कुमंत्रणा, कैकेयी करिल माना, बिलम्ब ना कैल एक दण्ड
आमि कन्या प्रथिवीर, स्वामी मम रघुवीर, मोरे बन्दी कैल निशाचर
सुन्दरकाण्डेर गीत, कृत्तिवास सुललित, विरचिल अति मनोहर

सीतादेवी ओ हनूमानेर कथोपकथन

विभीषण धार्म्मिक रावण सहोदर ※ मोर लागि रावणेरे बुझाय विस्तर
अरविन्द नामेते राक्षस महाशय ※ आमा दिते रावणेरे क'रेछे विनय

---

१ रामदूत को २ सती का वचन है अटल ३ धरणिपुत्री सीता ४ रावण को।

'सानन्दा' जो सुता विभीषण ※ पठयेसि मातु मोंहि समुझावन
सुता - विभीषन मर्म बखाना ※ रन विन होय न मम कल्याना
सुग्रीवहिं सो हाल जनायेउ ※ विनय मोर रघुपतिहिं सुनायेउ
हनु बोलत मम पीठ अरोहन ※ करि चलु जहाँ राम अरु लछिमन
कहु पशु नतु मैं बनौं विहंगा ※ मातु विराजि चलहु मम संगा
बोलत सीय, बलिस्त[1] समाना ※ भार-वहन किमि मनुज प्रमाना
सुनि हनुमत परिवर्तित वेषू ※ अस्सी योजन गात निमेषू[2]

दो० योजन दश आड़े भयेउ, सत्तर योजन लम्ब ।
पूँछ पचासक दीर्घ नभ वृहदाकार प्रलम्ब ।। ५० ।।

विकट रूप लखि, बोलत सीता ※ उर कौतुक अति, वत्स ! सभीता
किमि तव पृष्ठ टिकहुँ, बलसीवा ! ※ गिरहुँ सिन्धु, भच्छहिं जलजीवा
आन पुरुष[3] किमि परसन[4] अंगा ※ विवस दसानन करि लिय संगा
दसमुख सम जनि लुकि-छिपि करनी ※ दनु हनि, करहु वीरवत् करनी
दुर्जय गात अतिव भयकारन ※ करहु संयमित तन निज धारन
अस्सी योजन गगन प्रसारी ※ सम्हरहु नतु रिपु लेय निहारी

विभीषण कन्या से सानन्दा नाम धरे ※ तार मा पाठाय तारे आमार गोचरे
ताँर ठाँइ शुनिलाम एइ सारोद्धार ※ विना युद्धे वाछा, मोर नाहिक उद्धार
सुग्रीवेर जानाइओ मम विवरन ※ श्रीरामेरे जानाइओ मोर निवेदन
हनू व'ले मोर पृष्ठे कर आरोहण ※ तोमा ल'ये जाव, यथा श्रीराम लक्ष्मण
व'ल मृग हइ माता, व'ल हइ पाखी ※ किसे आरोहिया जावे, व'ल मा जानकि
जानकी व'लेन तुमि विघत प्रमान ※ मनुष्येर भार किसे सवे हनूमान
शुनिया सीतार कथा हनूमान हासे ※ हइल योजन आशी चक्षुर निमिषे
हइल योजन दश आड़े परिसर ※ सत्तर योजन हैल उभे दीर्घतर
करिल दीघल लेज योजन पंचाश ※ तखनि से लेज गिया ठेकिल आकाश
जानकी व'लेन वाछा तोमार आकार ※ देखिया आमार मने लागे चमत्कार
केमने तोमार पृष्ठे रव आमि स्थिर ※ सागरे पड़िले खावे हाँगर कुम्भीर
पर पुरुषेर स्पर्श नाहि लय मन ※ कि करिव, वले धरि आनिल रावन
रावणेर मत कि करिवे मोरे चुरि ※ तारे मारि उद्धारह, तवे वाहादुरि
तोमार दुर्ज्जय मूर्ति देखि लागे डर ※ आपना संवर वाछा पवनकोङर
अशीति योजन अंग लागे अन्तरीक्षे ※ आपना सम्वर वाछा, केह पाछे देखे

१ वालिश्त के बरावर २ पलक मारते ३ राम के अतिरिक्त अन्य पुरुष
४ स्पर्श करे ।

सीता-वचन सुनत हनुमाना ※ भयेउ तुरंत बलिस्त प्रमाना
पवनसुर्ताहं जानकी सुनावा ※ तव विक्रम लखि अतुल प्रभावा
कहेउ लखन प्रति जो हियँ देखी ※ तिन विक्रम अति विरद विशेषी
निमिकुल जनमि भानुकुल आई ※ विधि गति इमि मम कुगति बनाई
पति प्रतच्छ जेहि रघुपति रामा ※ अपमानित निवसत दनुधामा
कहेउ सुकण्ठहिं कातर बानी ※ बरनेउ अन्य यथा सेनानी[1]
रावन दीन अवधि[2] दुइ मासा ※ शेष एक बीतत मम नासा
बीते अवधि न मम कल्याना ※ खण्ड-खण्ड करि नासहि प्राना
आवहिं वेगि तबहिं उपकारू ※ होत विलंब व्यर्थ उपचारू[3]
सिय की सुनत करुन अति पीरा ※ पवनतनय दृग सरसति नीरा

हनुमान को सीता द्वारा मणि-प्रदान

दो० मातु! रुदन तजि, चीन्ह कछु देहु, धरौ उर धीर।
लंक, सैन पुनि मास बिच, लाय निवारउँ पीर॥ ५१॥

अपेंउ लै मस्तक-मणि सीता ※ दै मणि बोलत वचन सप्रीता
करै मास बिच जो कल्यानू ※ तव दाया सुत! जीवनदानू

शुनिया सीतार कथा वीर हनूमान ※ देखिते देखिते हय विघत प्रमान
जानकी बलेन बाछा पवन कोङर ※ तोमार विक्रमे मोर लागे मोर डर
लक्ष्मणेरे जानाइओ आमार कल्यान ※ ता सवार विक्रमेर किसेर बाखान
निमिकुले जन्मिया पड़िनु सूर्य्यकुले ※ एइ कि आछिल मोर लिखन कपाले
राम हेन स्वामी यार आछे विद्यमान ※ राक्षसे ताहार करे एत अपमान
सुग्रीवेरे जानाइओ आमार काकूति ※ जतेक आछये ताँर सैन्य सेनापति
दुमास जीवन तार, एक मास रय ※ मास गेले बाछा मोर जीवन संशय
दुइमास रावण दियाछे प्राणदान ※ अत:पर काटिया करिबे खान खान
आमि मैले सबाकार वृथा आयोजन ※ यदि झाट एस, तबे रहिबे जीवन
शुनिया सीतार एइ करुण वचन ※ नेत्र नीरे तिते वीर पवननन्दन

हनूमानेर निकटे सीतार निदर्शनमणि-प्रदान

हनूमान ब'ले शुन जनकनन्दिनि ※ ना कर क्रन्दन माता संबर आपनि
निदर्शन देह किछु, जाइब त्वरिते ※ मासेकेर मध्ये ठाट आनिब लंकाते
माथा हैते खसाइया सीता देन मणि ※ मणि दिया तार ठाँइ कहेन काहिनी
मासेकेर मध्ये यदि करह उद्धार ※ तोमार कल्याणे सीता जीये एइबार

१ सेनापतियों से २ मियाद ३ इलाज।

कहँ लौं प्रभु-पद-महिम बखानौ ※ काक जयन्त इन्द्रसुत जानौ
स्तन परसत प्रभु सन्धाना ※ सर[1] अनुसरत जयन्त पयाना
सरन[2] काक लिय सुरपति तीरा ※ सर प्रस्तुत धरि विप्र सरीरा
अपराधी वायस[3] रघुनायक ※ विप्ररूप मैं रघुपति सायक
सुरपति उठे दिव्य लखि वाना ※ करत जोरि कर अस्तुति नाना
सायक कहत न मो सन त्राना ※ त्रिभुवन व्यर्थ न रघुपति-वाना
सर-गर्जन भयभीत पुरन्दर ※ आनेउ काक राम-सर-गोचर
नयन बिन्धि इक, लीन न प्राना ※ बकसेउ खग प्रभु करुननिधाना
क्षमा, जदपि अपराध अपारा ※ राम सरिस गुण जनि संसारा
पति प्रतच्छ जेहि प्रभु गुणधामा ※ सहत गलानि वास-दनुधामा
मणि धरि शीस, वन्दि सियमाई ※ चलेउ पवनसुत माँगि बिदाई
तजि अशोक वन कीन पयाना ※ उर सोचत बहुविधि हनुमाना
सहसा आय गमन पुनि सहसा ※ लेस न चित्त विषाद न हर्षा
कौतुक कछु रावनहिं दिखाई ※ रामदास रघुपति ढिग जाई

दो० जनकनन्दिनिहिं मोद दै, पुनि दसकन्धहिं त्रास ।
लंघौं सिन्धु बहोरि, करि, सुबरन लंक विनास ॥ ५२ ॥

आर कि कहिव कथा प्रभुर चरने ※ इन्द्रसुत काक मोर आँचड़िल स्तने
श्रीराम ऐषिक वाण करेन सन्धान ※ खेदाड़िया जाय वाण वधिते परान
काक गिया वासवेर लइल शरण ※ से ऐषिक वाण तवे हइल ब्राह्मण
द्विजवेश कहे गिया वासवेर ठाँइ ※ श्रीरामेर वाण आमि, एइ काक चाइ
सेइ वाण देखि इन्द्र उठिल तखन ※ कर जोड़े तार आगे करिल स्तवन
वाण ब'ले मोर ठाँइ नाहिक एड़ान ※ त्रिभुवने व्यर्थ नहे श्रीरामेर वान
वाणेर गर्ज्जन शुनि भीत पुरन्दर ※ जयन्त काकेरे दिल वाणेर गोचर
श्रीरामे आनिया दिल विन्धि एक आँखि ※ करुणासागर प्राणे न मारेन पाखी
एत अपराध तारे ना मारेन प्राणे ※ त्रिभुवने तुल्य नाहि श्रीरामेर गुणे
राम हेन पति यार आछे विद्यमान ※ राक्षसे ताहार करे एत अपमान
अनन्तर मस्तके वाँधिया शिरोमनि ※ देशेते चलिल वीर मागिया मेलानि
मेलानि पाइया वीर देशेते आइसे ※ मने सात-पाँच वीर हनूमान भाषे
आचम्बिते आइलाम जाइ आचम्बिते ※ हरिप विषाद किछु ना थाकिवे चिते
रामेर किंकर, जाव सागरेर पार ※ रावणेरे किञ्चित देखाइ चमत्कार
जन्माइ सीतार हर्ष, रावणेर त्रास ※ स्वर्ण लंकापुरी आजि करिब विनास

---

१ वाण २ शरण ३ कौआ, जयंत ।

तरु-प्रकाण्ड मणि जतन लुकाई ❋ हनुमत मन्द-मन्द चलि जाई
आई याद, कहेँउ पुनि सीता ❋ कछु अमरितफल खाहु सप्रीता
कर-फल[1] छुद्र सकौतुक लीन्हा ❋ हनुमत सहज उदरगत कीन्हा
अमिय समान अमियफल चाखा ❋ मारुति विकल, बढ़ी अभिलाषा
मिटी न मातु! छुधा मम लेसू ❋ सुलभ कितै फल-अमिय विशेषू
मधुफल विटप कहाँ? तहँ जाई ❋ खाहुँ उदर भरि यतक समाई
हे कपि! वृथा आगमन तोरा ❋ कुसल न मम पहुँचै प्रभु ओरा
दनुज असंख्य, एक तुम कीसा ❋ लखत बधैं अनुचर-भुजबीसा
कहेँउ कपिन्द[2] संक जनि धारौ ❋ दानव दल मैं आजु सँहारौं
अमरित-वन बस देयि देखाई ❋ उर चिन्ता जनि कीजिय माई

हनुमान द्वारा मधुवन-भञ्जन

कीन अमिय-वन सिय संकेतू ❋ गमनेउ मौन वीर कपिकेतू
चौदिसि जाल मधुवनहिं ताना ❋ सो लखि बिहँसि उठे हनुमाना
खग न खाहिं, चौकस रखवारे[3] ❋ वन कपि मन्द-मन्द पग धारे
विटप-डार चढ़ि नकुल-प्रमाना[4] ❋ लखि विहंग-कुल सहज पयाना

बाँधियाछे मणिते अशोक वृक्ष गुड़ि ❋ सेइ वने हनूमान जाय गुड़ि गुड़ि
सीता ब'लिलेन वाछा हइल स्मरण ❋ अमृतेर फल किछु करह भक्षण
हात पाति लय वीर परम कौतुके ❋ अमनि फेलिया दिल आपनार मुखे
अमृत समान सेइ अमृतेर फल ❋ फल खेये हनूमान हइल विकल
हनूमान कहे ओगो जननि जानकि ❋ अमृत समान फल आरो आछे ना कि
कोथाय ताहार गाछ कह मा विधान ❋ खाइब एमन फल, देख विद्यमान
सीता ब'लिलेन तव वृथा आगमन ❋ मम वार्त्ता ना पावेन श्रीराम लक्ष्मन
तुमि एक वानर राक्षस बहुजन ❋ तोमारे देखिबा मात्र बधिबे जीवन
हनूमान ब'ले, माता, भाव केन आर ❋ राक्षस कटक आजि करिब संहार
मने चिन्ता न करिह शुनह वचन ❋ देखाइया देह माता अमृतेर वन

हनूमान कर्त्तृक मधुवन-भञ्जन व रक्षक दैत्यगणेर संहार

देखान अंगुलि दिया सीता सेइ वन ❋ निःशब्दे चलिल वीर पवननन्दन
जाल-दड़ा दिया बाँधा आछे चारि पाश ❋ ताहा देखि मारुतिर उपजिल हास
खाइते ना पाइ पक्षी राक्षसेरा राखे ❋ धीरे धीरे हनूमान सेइ बने ढाके
नेउल प्रमान ह'ये वृक्षडाले आछे ❋ ताहारे दिखिया पक्षी नाहि रहे गाछे

१ हाथ का फल २ कपिश्रेष्ठ हनुमान ३ रक्षक ४ नेवले के आकार का कपि-स्वरूप।

शाखन बिचरि करत रखवारी ❋ निरखि दनुजगन अति मुदकारी
फल ताकै, वध कीस न हेतू ❋ सोवहिं तरुतर मोद समेतू

दो० लेत नींद-सुख विटपतर, जे निसिचर रखवार।
मधुफल सानँद खात उत, वीर समीरकुमार[1] ॥ ५३ ॥

धावत वीर खात फल फूला ❋ फेंकत डार लता तरुमूला
तड़तड़ात भञ्जत तरु डारी ❋ दनुज सशंकित उठे सम्हारी
चहुँदिसि निसिचरगन अवलोका ❋ मधुवन निपट उजार विलोका
शेल मुषल आयुध बहु मुद्गर ❋ हनत अंग-कपि वृहत्-वृहत्तर[2]
नाना अस्त्र कोपि दनु मारैं ❋ अन्तरिक्ष हनु रोकि निवारैं
बहुरि प्रकोपि समीरकुमारा ❋ बरसावत तरु पर तरु-धारा
बिटप लक्ष्य करि चहुँ दिसि मारैं ❋ तरु-डारन शत-शतन सँहारैं
मत्त मतंग रूप रन धारा ❋ कहुँ तमाच[3] कहुँ पाद प्रहारा
धरि चेरिन रगरत दस-बीसा ❋ हाड़ चूर करि भञ्जेउ सीसा
भजीं प्रान लै दासिन त्रासा ❋ पूछहिं सियहिं, वहति घन-श्वासा
हे सिय ! वरनु सत्य तैं वानी ❋ को कपि ? जेहि सन बहु बतरानी[4]
मैं अजान को माया-रूपा ! ❋ जानहु चलि कपि तीर अनूपा

फल राखे हनूमान डाले डाले पाड़ि ❋ देखिया राक्षस सब हेसे गड़ागड़ि
राक्षसेरा ब'ले, ए वानर नाहि मारि ❋ राखुक वानर फल, निद्रा आगे सारि
वृक्षतले निद्रा जाय राक्षस सकल ❋ पवननन्दन वीर खाय सब फल
फल फूल खाय वीर आर छिड़े पाता ❋ उपाड़िया फेले गाछ, कोथा वृक्षलता
डाल भांगे हनूमान शब्द मड़मड़ि ❋ आतंके राक्षस सब उठे दड़बड़ि
उठिया राक्षस गण चारिदिके चाय ❋ अमृतेर वने देखे, किछु नाहि ताय
जाठा ओ झकड़ा शेल मुषल मुद्गर ❋ नाना अस्त्र मारे तारा हनूर उपर
नाना अस्त्र राक्षसेरा फेले अति कोपे ❋ लाफे लाफे हनूमान सब अस्त्र लोफे
कुपिलेन हनूमान पवननन्दन ❋ सबार उपरे करे गाछ वरिषन
गाछ ल'ये हनूमान जाय ताड़ाताड़ि ❋ गाछेर वाड़िते मारे दशविश कुड़ि
हनूमान जुझे जेन मदमत्त हाती ❋ कारे मारे चापड़, काहारे मारे लाथि
दश त्रिश चेड़ी धरि मारिछे आछाड़ ❋ भांगिया माथार खुलि चूर्ण करे हाड़
प्राण ल'ये कत चेड़ी पलाइल त्रासे ❋ सीतारे जिज्ञासे वार्त्ता अति घनश्वासे
चेड़ी सब कहे, सीता कह सत्यवानी ❋ वानरेर साथे किवा कहिले काहिनी
सीता ब'लिलेन कोन जन माया धरे ❋ आमि कि जानिब, सबे जिज्ञास वानरे

---

१ हनुमान २ बड़े से बड़े ३ तमाचा ४ बहुत बातें की थीं।

हर्म्य[1] विशाल अरण्य - अशोका ※ वरनेउ चलि दशमुखहिं सशोका
आयेउ कीस विकट आकारा ※ बड़ बड़ घर मधुवनहिं उजारा
तुम जेहि सीय समर्पेउ प्राना ※ तेहि सन कपि बहु बिधि बतराना
सिय-कर[2] उठत, नवत कपि माथा ※ कहि न सकत नर-वानर-गाथा

दो० लाय बाँधि कपि, सभा बिच, कीजिय तासु विचार ।
जो बिलम्ब, कारज नसै, काहु न पुनि निस्तार ॥ ५४ ॥

चेरिन प्रति दसमाथ प्रकोपा ※ घृत लहि अनल प्रज्वलित कोपा
मारु - मारु पुनि गर्जन - तर्जन ※ दस दिसि निरखत दनुज दसानन
'मूढ़' नाम किंकर[3] लंकेसू ※ धरहु कीस दीन्हउ आदेसू
चलउ मूढ़ यमराज समाना ※ जहँ हनुमत तहँ वेगि पयाना
कपि - आखेट, जात दनु धाई ※ हनु प्रकोट[4], जिमि पर्वतराई
मुषल शेल बहु अस्त्र प्रकोपे ※ सो हनुमत मारग महँ रोपे
गिरि सम गृह-अस्तंभ उपारी ※ करत वीर अति मारामारी
हनि सर्वांग दुहत्थ चलावा ※ मूढ़ किंकरहिं भूमि दिखावा
असुर मूढ़ यमलोक पठाई ※ वन अशोक तजि, जहँ सियमाई
नागेश्वर[5] तरु गन्ध उखारै ※ चुनि चुनि चम्पक वृक्ष उपारै
सम्मुख परत चूर्ण करि डारै ※ दस - बीसन धरि मारि पछारै

भांगिल अशोक वन बड़ बड़ घर ※ त्रासे वार्त्ता कहे गिया रावण गोचर
आसियाछे कोथाकार एकटा वानर ※ अमृतेर वने भांगे बड़ बड़ घर
जे सीतार प्रति तुमि सँपियाछ मन ※ सेइ सीता वानरे करिल सम्भाषन
सीता नाड़े हातटि, वानरे नाड़े माथा ※ बुझिते नारिनु नर बानरेर कथा
झटिते बाँधिया आनि करह विचार ※ विलम्ब हइले कारो नाहिक निस्तार
कुपिल रावण राजा चेड़ीदेर बोले ※ घृत दिले अग्निते जेमने आरो ज्वले
मार मार शब्द करे तर्ज्जन गर्ज्जन ※ दशदिक् दशानन करे निरीक्षन
सम्मुखे देखिल मूढ़ नामेते किंकर ※ तारे आज्ञा दिल राजा धरिते वानर
चलिल किंकर मूढ़ यमेर दोसर ※ त्वरा करि गेल हनूमानेर गोचर
धेये जाय राक्षस बधिते हनूमान ※ प्राचीरे बसिल वीर पर्व्वत प्रमान
जाठा शेल झकड़ा मुषल फेले कोपे ※ लाफे लाफे हनूमान सब अस्त्र लोफे
उपाड़े घरेर थाम पर्व्वत आकार ※ थामेर बाड़िते वीर करे महामार
आथालि पाथालि मारे दोहातिया वाड़ि ※ पड़िया किंकर मूढ़ नाम गड़ागड़ि
पाठाइल मारिया मूढ़ेर यमघर ※ बाछिया उपाड़े गाछ चाँपा नागेश्वर
जेखाने थाकेन सीता, ताहा मात्र राखे ※ आर सब चूर्ण करे जा' देखे सम्मुखे ...

१ महल २ सीता का हाथ ३ सेवक ४ चहारदीवारी पर ५ वृक्ष विशेष ।

चूरन हाड़ शीश कँहु भंगा ※ धरत विदारत दानव-अंगा
तीक्ष्ण बालुका सागर तीरा ※ कँहु मुख घर्षत[1] तनय-समीरा
बहु जन भागि चले लहि त्रासा ※ रावन ढिग, प्रवहति घनश्वासा
कहत नाथ उर भीति अशेषा ※ यमपुर किंकर मूढ़ प्रवेशा
लंक उजारि एक कपि दीन्हा ※ सबन विवस करि जर्जर कीन्हा

जाम्वुमाली आदि अष्टवीर-संहार

दो० सुभट जाम्बुमाली, जनक[2] दुर्जय जासु प्रहस्त ।
सादर आयसु, कटक लै, बाँधहु कीस प्रशस्त[3] ।। ५५ ।।

लहि आयसु, रथ दिव्य सुहाना ※ संग सैन हय गज रथ नाना
कपि आसीन कनक प्राचीरा ※ दीन ससैन दरस दनु वीरा
प्रथम परस्पर कुवचन नाना ※ जाम्बुमालि पुनि सर सन्धाना
कपि-उर बान असंख्य प्रहारा ※ कपि मुख झलकति रक्त-प्रसारा
बाछि बाछि सर हनत अनूपा ※ कीस-अंग किय जर्जर रूपा
भयेउ क्रुद्ध अति पवनकुमारा ※ शाल-गाछ तेंहि काल उपारा
कपि भुजबल तरु हनत प्रचण्डा ※ सो दानव किय खण्ड-बिखण्डा

दश विश जने धरि मारिछे आछाड़ ※ मस्तक भांगिया कारो चूर्ण करे हाड़
सागरेर कूले यत बालि खरशान ※ ताहाते काहारो मुख घर्षे हनूमान
पलाइल बहुजन पाइया तरास ※ रावणेरे वार्त्ता कहे, घन वहे श्वास
देखिलाम जे किछु कहिते करि डर ※ पड़िल किंकर मूढ़ शुन लंकेश्वर
लंका मजाइल आजि एकटा वानर ※ सहिते ना पारि आर, करिल जर्ज्जर

हनूमान कर्त्तृक जाम्वुमालि प्रभृति अष्टवीर-संहार

महायोद्धपति तार नाम जाम्बुमाली ※ प्रहस्त योद्धार बेटा, वले महावली
रावण ताहाके कहे करिया सम्मान ※ आपन कटके बाँधि आन हनूमान
आदेश पाइया वीर दिव्य रथे चड़े ※ हरित घोड़ा ठाट कत तार संगे नड़े
बसि आछे हनूमान प्राचीर उपर ※ कटक लइया गेल ताहार गोचर
प्रथमे हइल दुइ जने गालागालि ※ वाण वरिषण करे वीर जाम्बुमाली
प्रहारे असंख्य बाण हनूमान-बुके ※ मुखे रक्त उठे तार झलके-झलके
बाछिया-बाछिया मारे चोखा-चोखा शर ※ हनूमाने बिंधिया से करिल जर्ज्जर
हइलेन महाक्रुद्ध पवननन्दन ※ शालगाछ उपाड़िया आने ततक्षन
बाहुबले गाछ एड़े वीर हनूमान ※ राक्षसेर बाणे गाछ हन खान खान

१ रगड़ते थे २ पिता ३ विशाल ।

विफल विटप लखि उर कपि चिन्ता ❋ लिय हटात् गिरि शिखर तुरंता
हनेउ शिखर-गिरि बल सम्पूरन ❋ दानव-सर किय शृंग[1] विचूरन
पुनि पुनि विफल शोक उर छावा ❋ गृह-मूषल सहसा कपि पावा
दोउ कर मुषल तौलि बलधारी ❋ स्यन्दन[2] ताकि दुहत्था मारी
जाम्बुमालि हत यमपुर जाई ❋ कपि प्रकोट बैठत जय पाई
भग्नदूत[3] रावनहिं प्रकासा ❋ जाम्बुमालि किय यमपुर वासा
सैनिप[4] छत्तिस कोटि प्रधाना ❋ सकल लंकपति किय आह्वाना
विडालाक्ष शार्दूल प्रधाना ❋ वीर धूम्रलोचन रन ठाना
नाना आयुध[5] धावत वेगा ❋ कपि मारन हित, सकल सवेगा

दो० सप्त सुभट कर प्रखर अति लीन्हे अस्त्र अनन्त ।
धाय कहत सब, हनहिं हम, अबहिं कीस बलवन्त ॥ ५६ ॥

नकुल प्रमान कीस प्राचीरा ❋ कौतुक लखत सप्त जे वीरा
चलि प्रकोट दानव सब धाये ❋ अलख[6] न दरसन कहुँ कपि पाये
कपि भय खाय लुकायेसि[7] जीवा ❋ कहि भरमावहि किमि दशग्रीवा
यहि विधि घर लौटत घबराहीं ❋ किमि कपि धरि जंजीर लै जाहीं
इमि निसिचरगन करत विचारा ❋ तबहिं खेदि मारुति ललकारा

शाल गाछ व्यर्थ गेल देखिया चिन्तित ❋ पर्व्वतेर चूड़ा वीर आने आचम्बित
बाहुबले एड़े वीर पर्व्वतेर चूड़ा ❋ जाम्बुमाली बाणेते पर्व्वत करे गुंड़ा
जिनिते नारिया वीर हइल चिन्तित ❋ घरेर मूषल तार पाइल आचम्बित
दुइ हाते तुलि वीर मुषल सत्वर ❋ दोहातिया वाड़ि मारे रथेर उपर
वाड़ि खेये जाम्बुमाली गेल यमघर ❋ युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर
भग्न पाइक कहे गिया रावण गोचर ❋ जाम्बुमाली पड़े शुन वीर लंकेश्वर
छत्रिश कोटिर जारा मुख्य सेनापति ❋ सकलेर तरे त्वरा दिलेन आरति
शुनि ताहा विड़ालाक्ष शार्द्दूल प्रधान ❋ वीर धूम्रलोचन से रणे आगुयान
नाना अस्त्र हाते करि धाय रड़ारड़ि ❋ हनूमाने मारिते सबार ताड़ाताड़ि
नाना अस्त्र सात वीर एड़े खरशान ❋ सबे ब'ले आमित मारिब हनूमान
सात वीर आसितेछे हनूमान देखे ❋ नेउल प्रमाण ह'ये प्राचीरेते थाके
सात वीर आसिया प्राचीर पाने चाय ❋ लुकाइल हनूमान, देखिते ना पाय
प्राण ल'ये पलाइल आमा सबा डरे ❋ कि बलिब गिया मोरा राजा लंकेश्वरे
घरे जेते सात वीर करे हुड़ाहुड़ि ❋ टान दिया आने हनू बड़ घरेर कड़ि
नेउटिया घरे जाइ सवाकार मन ❋ पाछू खेदाड़िया जाय पवननन्दन

---

१ पर्वतशिखर २ रथ ३ पराजय का संवाद देनेवाले दूत ४ सेनापति
५ अस्त्र ६ अदृश्य ७ जान छिपाये है।

छीनि जँजीर ताकि रथ मारा ※ सप्त वीर रथ उपर सँहारा
पुनि प्राचीर चढ़े जय पाई ※ भग्नदूत[1] रावन पहँ जाई
जीतेउ युद्ध सहज इक कीसा ※ सप्त वीर जूझे दससीसा

अक्षयकुमार-वध

अखयकुमार सदर्प सुनावा ※ बधहु कीस आयसु-पितु पावा
अक्ष-इन्द्रजित् युगल सहोदर ※ अक्ष इन्द्रजित् सरिस धनुर्धर
बहु भण्डार अभूषन नाना ※ दै असीस नृप कीन प्रदाना
संग सैन हय-गज बहु लीना ※ पितु-प्रदक्षिणा, रथ-आसीना
अक्षय-कटक धरातल काँपा ※ पाँच अछोहिनि सैन प्रतापा
लखि प्राचीरहिं पवनकुमारा ※ कहत कोपि इमि अखैकुमारा
अक्षय सुत, पितु रावनराजू ※ मम कर तव निश्चित वध आजू
कोटिन बान करहुँ सन्धाना ※ देखहुँ किमि निवरत[2] हनुमाना
दो० इत सर जोरत कुअँर धनु, उत कपि चिन्ति उपाय।
लहि छलाँग हनु गयेउ नभ, व्यर्थ बान तर[3] जाय ॥ ५७ ॥
पुनि प्रकोपि सर सीस चलाये ※ जर्जर मारुति-अंग बनाये

कड़ि तुलि मारे वीर रथेर उपर ※ कड़िर वाड़िते तारा जाय यमघर
युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर ※ भग्न-पाइक कहे गिया राजार गोचर
युद्ध जिनिलेक राजा एकटा वानर ※ सात वीर पड़िल, शुनह लंकेश्वर

अक्षयकुमार-वध

अक्ष नामे राजपुत्र करे वीरदाप ※ वानरे मारिते तारे आज्ञा दिल बाप
अक्ष आर इन्द्रजित दुइ सहोदर ※ से इन्द्रजितेर तुल्य युद्ध धनुर्द्धर
प्रसाद दिलेक तारे नाना अलंकार ※ विलाइते दिल तारे चारिटा भण्डार
पितृ प्रदक्षिण करि रथेते चड़िल ※ हस्ति घोड़ा ठाट कत संगेते चलिल
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी ※ कुमार अक्षेर ठाट पाँच अक्षौहिनी
हनूमान बसियाछे प्राचीर उपर ※ रुषिया कहिछे अक्ष शुन रे वानर
अक्ष नाम आमार जे, रावणनन्दन ※ नाहिक निस्तार आजि, बधिब जीवन
कोटि कोटि वाण आजि करिव सन्धान ※ केमन राखह प्राण, देखि हनूमान
सन्धान पूरिया बाण धनुकेते जोड़े ※ बाण व्यर्थ करिवारे चिन्तिल अन्तरे
लाफ दिया उठे हनू गगनमण्डले ※ यत बाण एड़े सब जाय पदतले
कोपे बाण फेले तार माथार उपर ※ बाण फुटि हनूमान हइल जर्ज्जर

१ पराजय का संवाद देने वाले दूत २ बचता है ३ नीचे।

अक्षय मनहु अनल बरसाये * अग्नि शिखा सम चहुँ सर छाये
कूदि पवनसुत रथ पग धारा * एक चपेट चूर्ण करि डारा
रथ सारथि हय सकल विनासा * अक्षय लखि उठि चलेउ अकासा
गगन पलायन लखि हनु कोपा * झपटि चील्ह[1] सम, पद पुनि रोपा
रोपि उभय पद, कुअँर पछारा * हाड़ सीस चूरन करि डारा
पुनि प्राचीर चढ़े जय पाई * इत सुत मरन सुनेउ दनुराई

इन्द्रजीत द्वारा नागपाश में हनुमान-बन्धन

सुनि लंकेस सोच उर छावा * घननादहिं[2] रन हेत बुलावा
भट सुभटन बहु गर्जन कीन्हा * लौटि सदन मोहिं दरस न दीन्हा
सुवन इन्द्रजित ! चढ़ु रन आजू * तोहिं तजि उचित न मम रन साजू
कहत इन्द्रजित सुनि लंकेसू * बान्धौं वानर चक्षुनिमेषू[3]
कहँ कपि हीन, कहाँ घननादा * लहौं आजु जय जनक-प्रसादा[4]
अंगुस्तरी[5] अँगुरि भुज कंकण * सजि सर्वांग राज-आभूषण
कञ्चन वसन नवलड़ी धारा * पूर्ण चन्द्र सम तिलक ललारा
ढाल कवच धारन किय अंगा * लीन बुलाय सारथी संगा

हनू ब'ले, राजपुत्र देखिते छावाल * बाण गुला एड़े जेन अग्निर उथाल
लाफ दिया हनूमान तार रथे चड़े * रथखान गुँड़ा करे एकइ चापड़े
रथेर सारथि घोड़ा हैल चूरमार * अन्तरीक्षे पलाइल से अक्षकुमार
राक्षस पलाय ऊद्ध्वे, हनूमान कोपे * लाफ दिया पाये धरे, चिले जेन लोफे
दुइ पा धरिया वीर मारिल आछाड़ * भांगिल माथार खुलि चूर्ण हैल हाड़
युद्ध जिनि वैसे वीर प्राचीर उपर * कुमार पड़िल वार्त्ता शुने लंकेश्वर

इन्द्रजित द्वारा हनुमानेर बन्दीकरण

शुनिया रावण राजा लागिल भाविते * जुझिवारे कहिल कुमार इन्द्रजिते
बड़-वड़ वीर जाय करिया गर्ज्जन * बाहुड़िया ना आइसे आमार सदन
अद्यकार युद्धे जाह बाछा इन्द्रजित् * तोमरा थाकिते आमि जाइ, अनुचित
पितृवाक्य शुनि वीर इन्द्रजित् भाषे * वानरे करिब बन्दी चक्षुर निमिषे
कि छार वानर बेटा, आमि मेघनाद * युद्ध जिनि लब अद्य राजार प्रसाद
अंगुले अंगुरी दिल, बाहुते कंकण * सर्व्वांग परिल वीर राज आभरण
स्वर्ण नवगुण परे, परे स्वर्ण पाटा * पूर्णिमार चन्द्र जेन कपालेर फोंटा
एक हाते धरियाछे सर्व्वांग-दापनि * आर हाते सारथिर डाकिल आपनि

१ चील पक्षी २ मेघनाद को ३ पलक मारते ४ पिता के प्रसाद से ५ अंगूठी।

रथ रन-अटल सारथी साजा ❋ जगमग रथ रन हेत विराजा

दो० कनक रचित छबि अतुल रथ, अति विचित्र निर्मान।
जोरे अष्ट तुरंग पुनि, जिन गति पवन समान ॥ ५८ ॥

बीस कोटि गज दशक तुरंगा ❋ चलीं अछोहिनि तेरह संगा
कटक भार-पद काँपति मेदिनि[1] ❋ बजत साज-रन सुरपुर लौं धुनि
लै इमि कटक बेगि भट धावा ❋ पाछे सन दशमुख गुहरावा
तुम कहँ विदित बालि-सुग्रीवा ❋ सचिव तासु हनुमत बलसीवा
सो न हीन, अति वीर जुझारा ❋ कीजिय रन तेहि समुझि अपारा
हँसा इन्द्रजित सुनि पितु-बयना ❋ सहज बाँधि कपि लावहुँ अयना[2]
चढ़ि प्राचीर कपिन्द सुहावा ❋ बेगि ससैन इन्द्रजित धावा
कपिहिं हेरि अति कोप ज्वलंता ❋ अति प्रताप, दुर्वचन अनन्ता
लता-पता कोपीन[3] सरीरा ❋ प्रान तजन आतुर मम तीरा
जहँ सुग्रीव विचरु[4] तरु डारन ❋ मरन हेतु किमि लंक पधारन
दनु-दुर्वचन सुनत कपि हँसई ❋ मन अभिमत कुवचन शठ कहई
खायँ मूल-फल मुनि-आचारा ❋ तरु-तरु फिरत, न अत्याचारा
अनाचार निज स्वयं न जाना ❋ अनाचार-पितु[5] जगत बखाना

सारथि आनिल रथ संग्रामे अटल ❋ साजाइल रथखान करे झलमल
कनक रचित रथ विचित्र निर्म्मान ❋ वायुवेगे अष्टघोड़ा रथेर योगान
मातंग विंशति कोटि तार अर्द्ध घोड़ा ❋ तेर अक्षौहिणी चले त्रिभुवन जाड़ा
कटकेर पदभरे काँपिछे मेदिनी ❋ रणवाद्य बाजे कत स्वर्गे लागे ध्वनि
एत सैन्य ल'ये वीर चलिल सत्वर ❋ पाछु हैते डाक दिया ब'ले लंकेश्वर
बालि सुग्रीवेर शुनियाछे जे काहिनी ❋ तार पात्र हनूमान स्र्व्वलोके जानि
सेइ वा आसिया थाके वीर अवतार ❋ तुच्छ ज्ञान ना करिह बुझिओ अपार
पितृवाक्य शुनि वीर इन्द्रजित् हासे ❋ वानरे बधिब आजि देख अनायासे
बसि आछे हनूमान प्राचीर उपर ❋ सैन्य सह इन्द्रजित् गेलेन सत्वर
देखि हनुमानेर से ज्वलिलेक कोपे ❋ गालागालि पाड़े वीर अतुल प्रतापे
लता पता खास बेटा, परिस काछुटि ❋ मरिवारे हेथा आसि करिस छटफटि
सुग्रीवेर काल गेल भ्रमि डाले डाले ❋ मरिवारे कि कारणे लंकाय आइले
राक्षसेर गालि शुनि हनूमान हासे ❋ गालागालि पाड़े वीर, मने यत आसे
फलमूल खाइ मोरा मुनि व्यवहार ❋ डाले डाले फिरि, से त' नहे अनाचार
आपनार अनाचार ना देख आपनि ❋ रावणेर अनाचार त्रिभुवने शुनि

१ पृथ्वी २ घर को ३ लँगोटी ४ भ्रमण कर ५ रावण का अत्याचार।

नारि सहस दस हर्म्य[1] विराजा * पुनि पर-दार[2] हरन केहि काजा
सती यती तपसी द्विज नारी * हरेसि न कुवचन शाप विचारी
पुरुष अदोष नारि हित मारा * हरि विप्रनी रमत श्रृंगारा
दो० विप्र-घात कत शतक किय तव पितु पाप अनन्त ।
अपकीरति तव जनक चहुँ, कब लौं होय न अन्त ।।
तरु न देयँ फल सर्वदा, समय पाय फलवन्त ।
ब्रह्मशाप दसकन्ध प्रति फूलेउ आजु अनन्त ।। ५६ ।।
कुवचन कहत परस्पर दोऊ * पुनि रन करत न्यून[3] जनि कोऊ
अस्त्र इन्द्रजित बहु बरसावै * सकल पवनसुत विफल बनावै
मारुति कहत भञ्जि मद तोरा * पठवहुँ आजु यमपुरी ओरा
केहुँ न लाभ जय, उभय समाना * युगल प्रहर दोउ भट रन ठाना
नाग-पाश आयुध मम तीरा * बाँधहुँ कपि सोचत दनुवीरा
मेघनाद रणकुशल महाना * बाँधेउ कीस, पास[4] सन्धाना
तजि प्राचीर धरातल आवा * भञ्जहुँ पाश हृदय कपि भावा
सोचत जदि भञ्जहुँ मैं पासा[4] * दरस लहौं किमि दसमुख पासा
भञ्जेउ पाश न कपि यहि हेतू * खैंचि दनुज बाँधत कपिकेतू
कोउ गर धरत, पावँ कोउ हाँथा * लौह जँजीर कसत कपिनाथा

नारी दश हाजार यद्यपि आछे घरे * तथापि रे तोर बाप पर दार करे
सती स्त्री हरिया आने यति तपस्विनी * शाप गालि पाड़े तबु ना छाड़े ब्राह्मनी
स्त्री लागि पुरुष मारे बिना अपराधे * ब्राह्मणी हरिया आने श्रृंगारेर साधे
करिलेक कत शत ब्रह्महत्या पाप * अन्त नाहि यत पाप करे तोर बाप
त्रिभुवने तोर ये बापेर विसम्बाद * कतकाल थाके आर, पड़िल प्रमाद
सर्व्वदा ना फले वृक्ष, समयेते फले * रावणेर ब्रह्मशाप फले एत काले
एइ रूपे दुइजने हय गालागालि * तार परे युद्ध करे दोंहे महावली
नाना अस्त्र इन्द्रजित् करे वरिषन * सब अस्त्र लुफे धरे पवननन्दन
हनूमान बले बेटा तोर रण चुरि * देख तोरे आजि रे पाठाइ यमपुरी
जिनिते ना पारे केह उभये सोसर * दुइजने युद्ध करे दुइटि प्रहर
इन्द्रजित् ब'ले, आमि पाश अस्त्र जानि * पाश अस्त्र छाड़िया वानर बाँधि आनि
रणेते पण्डित वीर जाने नाना सन्धि * एड़िलेक पाश अस्त्र हनू हय बन्दी
प्राचीर हइते वीर पड़िया भूतले * भावे, पारि पाश अस्त्र छिड़िवारे ब'ले
पाश अस्त्र छिड़िवारे नाहि लयें मने * रावणेर संगे देखा करिब केमने
एतेक चिन्तिया वीर पाश नाहि छिण्डे * राक्षसे टानिया बाँधे हाते गले मुण्डे

१ राजमहल में २ दूसरे की स्त्री ३ कम ४ नागपाश ।

देत निसचरन आयसु वीरा ※ लै कपि वेगि चलहु पितु तीरा
पुनि घननाद प्रथम डग धरही ※ घेरि कीस दनु-दल अनुसरही
सत्तर योजन कपि विस्तारा ※ तन झूमत चहुँ कोप अपारा
सात लाख दनु झुरमुट करहीं ※ बंक[1] न रोम तासु करि सकहीं
अतुल कीस विक्रम बलधारी ※ दनुज-सैनपति अचरज भारी
लादहु कंध बजाय दमामा ※ चलहु, कहत कपि, दसमुख-धामा

दो० कसे जँजीरन कंध धरि, दनु दुइ लख इकसंग ।
चले, मन्द मुसकात कपि, विविध दिखावत रंग ।। ६० ।।

जेहि दिस लचत[2], देत कपि भारा ※ डगमगात दनु हाहाकारा
असुर सात लख खैंचत कीसा ※ अचल, न टरत द्वार दससीसा
नाँघत[3] कपि न, दानवन त्रासा ※ खबरि बेगि दिय दसमुख पासा
कपि दुरंत केहु विधि हम बाँधा ※ द्वार समात न तन, यह बाधा
द्वार भंगि, बोलत दससीसा ※ आनहु बेगि, लखहुँ कस कीसा
आयसु पाय निसाचर धाये ※ द्वार तोरि पथ बेगि बनाये
भञ्जत सात तदपि इक द्वारे ※ तहँ कपि अचल टरति नहिं टारे

केह हाते-पाये बाँधे केह बाँधे गले ※ गला टानि बाँधे केह लोहार शिकले
राक्षसेरे आज्ञा दिल वीर इन्द्रजित् ※ वापेर आगेते लह वानरे त्वरित्
एत व'लि इन्द्रजित गेल आगुयान ※ वड़ वड़ वीर गिया वेड़े हनूमान
कोपे तोलपाड़े करे हनू यथोचित ※ सत्तर योजन वीर हय आचम्बित
सात लक्ष राक्षसेते टानाटानि करे ※ तथापि ताहार एक रोम नाहि सरे
देखि हनूमानेर से विक्रम विशाल ※ चमत्कृत हइलेक राक्षसेर पाल
हनूमान व'ले तोरा वाजारे दामामा ※ राज सम्भापणे जाव, कान्दे कर आमा
वड़ वड़ सांगि दिया हनूमाने बाँधे ※ दुइ लक्ष राक्षस ताहारे करे काँधे
राक्षसेर काँधे वीर मने मने हासे ※ कत रंग करे वीर मनेर उल्लासे
एइ भिते हनूमान देय किछु भ'र ※ राख राख वलिया राक्षस देय रड़
सात लक्ष राक्षसेते टानाटानि करे ※ अचल हइल हनू रावणेर द्वारे
नाड़िते ना पारे तारे पाप सवे त्रास ※ सत्वर कहिल वार्त्ता रावणेर पाश
कष्टेते हइल वन्दी से दुष्ट वानर ※ ना आसे शरीर तार द्वारेर भितर
हासिया रावण तारे कहे संविधान ※ द्वार भांगि झाट आन देखि हनूमान
राजार आज्ञाय दूत आइल सत्वरे ※ द्वार भांगि पथ करे आनिवार तरे
सात द्वार भांगे तारा एक द्वार रय ※ अचल हइल हनू, नाहि प्रवेशय

१ टेढ़ा २ झुक पड़ते थे ३ द्वार से निकल नही पाते थे ।

पुनि किय मारुति स्वतः प्रवेसू * सचिव-सुहृद बिच्च जहँ लंकेसू
सुत दसकंध पाँति की पाँती * सुरपुर सुर सोहत जेहि भाँती
सुर-बालन बिच रावन बासू * नभ नखतन बिच चन्द्र प्रकासू
वर-विधि[1] लहि दुर्जय दनुराई * बन्दी रवि-ससि[2] जहँ भय पाई
मञ्जुल जहँ दश मणि दशसीसा * ढाल - कवच धारे भुजबीसा
रावन-विभव नयनतर[3] आवा * कपि ससंक उर रघुपति ध्यावा
सचिव प्रहस्त कहत हे वानर ! * केहि आयसु आगम केहि अनुचर?
कहत पवनसुत, तव नरनाथा * कहँ निवसति दनुपति दशमाथा
दुर्मुख कपि ! लखु इतै दसानन * कहत प्रहस्त फेरि कपि-आनन

छं० रहेउ दसानन हेरि पवनसुत कहेउ टेरि इमि बानी ।
लखे विविध रावन, तिन महँ तुम कवन ? रहेउँ पहिचानी ।।
इन्द्रसुवन कपिराज बालि की कोख[4] दबा दनुराई ।
एक लंकपति सहसबाहु गहि अंक सदन लै जाई ।।
बसि घुड़सार कण्ठ-भुज बन्धन तरसि[5] पुलस्त्य छुड़ावा ।
बलि के धाम एक दसमुख पुनि त्रसित दरस मैं पावा ।।
सबन किन्तु छबि एक, मुण्ड दस, बीस नयन, भुज बीसा ।
सकल एक अथवा अनेक कहु को तुम लंक-अधीसा ? ।।

आपन इच्छाय गेल पवननन्दन * पात्र मित्र सह यथा ब'सेछे रावन
राजार कुमारगण बसे सारि सारि * बसियाछे येन सबे अमर नगरी
चारि भिते देवकन्या मध्येते रावण * आकाशेर चन्द्र जेन बेड़ि तारागण
रावण ब्रह्मार वरे कारे नाहि गने * चन्द्र सूर्य्य भये थाके रावण-सदने
दशशिरे शोभा तार करे दशमनि * सम्मुखेते परियाछे सर्व्वांग दापनि
देखिल वानर गिया रावण-सम्पद * त्रास पेये हनूमान भावे रामपद
प्रहस्त ब'ले वानरा तुइ काहार अनुचर * काहार बोले आइलि हेथा लंकार भितर
हनूमान बले तोरे आर कि दिब परिचय * तोर दशमुख रावण राजा सेइबा कोथा रय
प्रहस्त धरिया दड़ि विराय हनूमाने * देख रे वानरा, चेये राजा दशानने
रावणेर पाने चाहि हनूमान ब'ले * तुइ से रावण राजा, देखेछि कोन काले
इन्द्रेर नन्दन छिल कपिराज बालि * वारेक देखेछि तोरे तार कक्षतलि
आर वार देखेछि तोर अर्जुनेर काले * हाते गले बाँधि राखे तोरे अश्वशाले
आसिया पुलस्त्य मुनि घुचाय बन्धन * आर वार देखेछि तोरे बलिर भवन
सेइमत देखि तोरे करि अनुमान * दश मुण्ड कुड़ि आँखि हात कुड़िखान

१ ब्रह्मा का वरदान २ सूर्य-चन्द्रमा ३ नेत्रों में ४ बगल में ५ तरस खा कर ।

दो० कपि-रचना सुनि बिहँसि पुनि पूछत इमि लंकेस ।
सुर, गन्धर्व, मनुष्य केहि तोहि पठयेउ दनु-देस ।।
को तैं सत्य बखान करु जो चाहति कल्यान ।
वृथा असत बकवाद तौ, लेहुँ कीस तव प्रान ।। ६१ ।।

रावण द्वारा हनुमान की दण्ड-व्यवस्था

रे कपि ! कहु, किमि सत्य कहानी ※ केहि चर कहु, न संक उर मानी
दै परिचय निज प्रान बचावै ※ असत[1] बानि तव प्रान नसावै
राम - दूत मैं पवनकुमारा ※ छबि - कानन मैं तोर उजारा[2]
बँधेउँ सहज तव दरसन हेतू ※ बरनहुँ सकल चरित - रघुकेतू
दशरथ भुवन ख्याति विस्तारी ※ जेठ राम सुत, सिय तिन नारी
सूने - राम हरी तुम सीता ※ सिय हित पुनि सुकण्ठ सन प्रीता
तुम ढिग-बालि[3] पराभव पावा ※ बालिहिं यमपुर राम पठावा
ब्रह्म - अस्त्र मम पहुँ असमर्था ※ आयेउँ तोहि बुझावन अर्था
राम-सुकण्ठ युक्ति मन धरहीं ※ तव अरु कुम्भकर्ण बध करहीं
मेघनाद पुनि लछिमन मारैं ※ कपिगन सकल दनुज संहारैं
रघुपति प्रन तव जीवन हरई ※ मम कर[4] बध, रघुपति-प्रन टरई

हासिते लागिल रावण हनूर कथा शुने ※ हनूमाने जिज्ञासा करे तवे दशानने
काहार बोले एलि रे तुइ राक्षसेर देशे ※ देवता गन्धर्व्व किवा पाठाय मानुषे
स्वरूपेते बलिस यदि घुचाव वन्धन ※ मिथ्या यदि वलिस तोर वधिव जीवन

रावण कर्त्तृक हनूमानेर विचार ओ दण्ड-विधान

दशानन बलिछे तोमार नाहि डर ※ सत्य करि कह रे काहार तुमि चर
स्वरूपेते कह यदि घुचाव वन्धन ※ मिथ्या यदि कह तवे वधिव जीवन
हनूमान ब'ले आमि श्रीरामेर दूत ※ भांगिलाम तोमार से कानन अद्भुत
बन्धन मानिनु तोमा देखिवार मने ※ श्रीरामेर कथा कहि शुन सावधाने
सबे शुनियाछ दशरथ महीपति ※ ज्येष्ठ पुत्र राम ताँर वधू सीता सती
अगोचरे रावण हरिले तुमि सीते ※ सुग्रीवेर सह मैत्री सीता अन्वेषिते
ये बालिराजेर स्थाने तव पराजय ※ से बालिरे मारिलेन राम महाशय
तव ब्रह्म अस्त्र मोर कि करिते पारे ※ वन्धन मानिनु किछु बुझावार तरे
राम-सुग्रीवेर युक्ति सविशेष जानि ※ कुम्भकर्ण आर तोर वधिवेन तिनि
इन्द्रजिते मारिवेन ठाकुर लक्ष्मण ※ आर यत राक्षसे मारिबे कपिगण
एइ सत्य करिलेन सुग्रीवेर आगे ※ आमि तोरे मारिले ताँहार सत्ये भांगे

१ झूठी २ उजाड़ा ३ बालि के हाथों ४ मेरे हाथों ।

नतरु करत तव खण्ड विखण्डा ※ पूँछ - अघात छत्र - नवदण्डा
गर धरि रसरि[1] बाँधि घसिलावत ※ एक दण्ड दस मुण्ड गिरावत
दसकन्धर सुनि पवनकुमारा ※ दनुजन प्रति मारन ललकारा
शिरच्छेद ! गर्जत दससीसा ※ कहत विभीषण धरि पद सीसा
सदा दूत - बध निपट अनीती ※ जग सों मिटै दूत कै रीती

दो० कहि सुनि निज बानी तथा दूत यथा मुख-बानि ।
चर[2] अबध्य, पुनि तासु बध, अनुचित सदा बखानि ।।
निज प्रभु करत बखान चर, उचित न तेंहि प्रति रोष ।
गुन गावत निज स्वामि हित, तिन कहँ अनुचित दोष ।। ६२ ।।

पर - कीरति - बखान जनि दोषू ※ चर तजि, उचित चर-पतिहिं रोषू
चर - ताड़न केवल शिर - मुण्डा ※ उचित न अन्य दूत हित दण्डा
युक्ति-विभीषण कपिहिं जियावा ※ आयसु पुनि दसकन्ध सुनावा
पूँछ जारि पठवहु कपि देसू ※ बिहँसइँ जाति-बन्धु लखि बेसू
रावन - आयसु यहि विधि पाये ※ जारन पूँछ, सकल जुरि धाये
कुपित पवनसुत पूँछ पसारा ※ किय योजन पचास विस्तारा
लखि लांगूल[3] सभय दससीसा ※ डपटत पुनि-पुनि धरु ! यहि कीसा
बालि-पूँछ बँधि दुर्गति पाई ※ लखि कपि-पूँछ याद सो आई

मोर आगे धरियाछ नव छत्र दण्ड ※ लांगुलेर बाड़िते करिबे खण्ड-खण्ड
लइया जाइब तोरे गले दिया दड़ि ※ भांगिव दशटा मुण्ड मारि एक नड़ि
एतेक ब'लिल यदि पवननन्दन ※ वानरे काटिते आज्ञा दिल दशानन
काट काट ब'लि घन डाकिछे रावण ※ माथा नोयाइया ब'ले भाइ विभीषण
दूतके काटिले राजा बड़ अनाचार ※ आजि हैते घुचिवे दूतेर व्यवहार
आत्मकथा परकथा दूतमुखे शुनि ※ काटिते एमन दूत अनुचित वानी
परेर बड़ाइ करे, अपराधी किसे ※ जार बड़ाइ करे, तारे मारिते आइसे
दूतेर शासन आछे मुड़ाइते मुण्ड ※ इहा भिन्न दूतेर नाहिक अन्य दण्ड
एइ युक्ति ब'ले हनू पाइल जीवन ※ लेज पुड़ाइते आज्ञा करिछे रावन
लेज पुड़ाइया एरे पाठाओ से देशे ※ लेज पोड़ा देखि जेन ज्ञाति वन्धु हासे
एक आज्ञा करिलेक राजा लंकेश्वर ※ लेज पोड़ाइते सबे आइल सत्वर
कुपित हइल वीर पवननन्दन ※ बाड़ाइया दिल लेज पंचाश योजन
लेज देखि रावणेर हैल
हयेछिल जे दुःख बालि

---

१ रस्सी २ दूत

तीनि लक्ष मिलि भट निसिचारी ※ धरनी कपि लांगूल प्रसारी
बसन तीस मन सबन बटोरा ※ एक लपेटनि[1] परति न पूरा
लंका वसन जहाँ लौं पाई ※ बाँधि तैल-घृत सिक्त[2] बनाई
स्निग्ध[3] विशाल पूँछ छिति छाई ※ धधकि उठी सो पावक[4] पाई
हँसेउ ठठाय, निरखि, हनुमाना ※ निज कुबुद्धि दनु स्वयं नसाना
सिय-वर, अंग न व्यापत तापा ※ हेरत चहुँ कपि, त्रास न व्यापा
रावन कहत, दुष्ट कपि वीरा ※ करहु सबेग बहिर्प्राचीरा[5]
नगर घुमावौ गलिन मँझाई ※ लंक नारि-नर निरखहिं आई

दो० जरत पूँछ, रसरी कमर, कपि अति बदन कराल ।
उमड़ेउ कौतुक देखिबे, चहुँ जन-सिन्धु-विशाल ॥ ६३ ॥

छं० कोउ कहत हने रन मोर नाथ, कोउ कहत बन्धु हनि किय अनाथ ।
केहु रन-जुझार नन्दन निपात, कोउ कहत हने कुल गोत-जात[6] ॥
केहु बन्धु-बान्धव प्रति गुहार, कपि के प्रहार सब छार-खार ।
पुनि परत नयन तर धरि पछार[7], कहुँ शैल शूल मुद्गर प्रहार ॥
हनुमतहिं हेरि कम्पन कराल, किमि कवन धरै कपि यहु विशाल ।
विधि दहिन, मिलेउ यहि सों उबार[8], जेहि दीठि[9] करि सकै सब सँहार ॥

तिन लक्ष राक्षस चापिया लेज धरे ※ सवे मिलि लेज फेले भुमिर उपरे
त्रिश मन वस्त्र सबे आनिल निकटे ※ एक वस्त्र आने एक वेड़े नाहि आँटे
लंकार मध्येते छिल यतेक कापड़ ※ घृत तैल दिया ताहा करिल जावड़
कापड़ तितिल, लेज पड़िल भूतले ※ लेज अग्नि दिते सव दप् दप् ज्वले
लेजे अग्नि दिल देखि हनूमान हासे ※ आपन बुद्धिते वेटा पड़े सर्व्वनाशे
जानकीर वरे अग्नि नाहि लागे जाय ※ लेजे अग्नि दिते हनू चारिदिके चाय
रावण बलिछे दुष्ट कपि महावीर ※ झटिति इहार कर प्राचीर वाहिर
कूलि कूलि लैया वेड़ाउ चातरे चातरे ※ स्त्री-पुरुष देखे जेन लंकार भितरे
लेंजे अग्नि दिलेक, कांकाले दिल दड़ि ※ देखिवारे सकले आइल ताड़ाताड़ि
केह ब'ले स्वामी मैल संग्रामे भितर ※ केह ब'ले मरिल आमार सहोदर
केह ब'ले पड़िल बान्धव वन्धु ज्ञाति ※ केह ब'ले पुत्र मोर पड़ योद्धृपति
इष्ट बन्धु कुटुम्ब मारिल सवाकारे ※ जर्ज्जर हइल सबे इहार प्रहारे
इटाल-पाटाल मारे, या' देखे डागर ※ शेल शूल मारे आर लोहार मुद्गर
हनूमाने देखिया सकले काँपे डरे ※ इहारे के धरे आजि सभार भितरे
भाग्येते इहार ठाँइ पाइनु निस्तार ※ देखिबा मात्रेते सब करिबे संहार

१ लपेट में २ तर किया ३ तर ४ अग्नि ५ चहारदीवारी के बाहर
६ कुल-जाति ७ पछाड़ना ८ छुटकारा ९ निगाहमात्र ।

सुनि सबन युक्ति कपि मृदुल हास, शठ! कहँ उबार? हेरहु विनास।
कपि गलिन गलिन जेहि छन सँझाय, सिय तीर चेरिगन कहेउ जाय।।

जो कपि तव समीप बतराना[1] ※ जरत पूँछ सो बन्दि[2] लखाना
सुनि सम्बाद विलग मनु प्राना ※ पूजत पावक[3] सहित विधाना
जो मैं सती काय मन वाचा ※ तौ हनु-अंग न आवै आँचा
अनल[3] पूजि कलपत सिय रानी ※ सिय दुख देखि भई नभ-बानी
कहति विरञ्चि सीय तजु चिन्ता ※ तजहु सकल कपि प्रति दुश्चिन्ता
तव वर पाय कपिहिं जनि शंका ※ आजु अनल कपि जारहि लंका
सुरगन आय सुकौतुक लखहीं ※ हर्ष-विषाद हेतु जनि तुमहीं
विधि के वचन शमन[4] वैदेही ※ कृत्तिवास मञ्जुल पद एही

हनुमान कर्त्तृक लंकादहन

छं० कपि अंगमान पर्वत प्रमान, सो ससिटि भयेउ लघु नकुल मान।
कर रहे बन्धनन दनुज हेरि, हनु बहिर[5] होत लागी न बेर।।
कसि रज्जु लिये मारुति विशाल, भौचकित देखि ते दनु कराल।
हनुमन्त गाछ लै बेगवन्त शत-शतक हनत निसिचर अनन्त।।

शुनिया सबार युक्ति वानरेर हास ※ एखन जाइबि कोथा, करि सर्व्वनाश
कुलि-कुलि लैया फिरे नगरे-नगरे ※ चेड़ी सब वार्ता कहे सीतार गोचरे
जे वानर संगे तुमि कहिले काहिनी ※ लेजे अग्नि, गले दड़ि, करे टानाटानि
कथा शुनि सीता देवी मृत्यु हेन गने ※ अग्नि ज्वालि पूजे सीता विविध विधाने
कायमनोवाक्ये यदि आमि हइ सती ※ तबे तव ठाँइ हनू पावे अव्याहति
अग्नि पूजि सीतादेवी करिछे क्रन्दन ※ जानकीरे डाक दिय व'ले देवगन
ब्रह्मा बलिलेन शुन ओगो देवि सीता ※ वानरेर जन्य तुमि ना हओ चिन्तिता
तोमार वरेते त'र कारे नाहि शंका ※ एखनि जे हनूमान पोड़ाइबे लंका
कौतुक देखिते आइलाम देवगण ※ हरिषे विषाद तुमि कर कि कारण
क्रन्दन संवरे सीता ब्रह्मार आश्वासे ※ रचिल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवासे

लंका-दहन

पर्व्वत प्रमान छिल सेइ हनूमान ※ घुचाइते बन्धन से नेउल प्रमान
राक्षसेर हाते रहे सकल बन्धन ※ माथा गुंजि बाहिरिल पवननन्दन
हनूमाने बेड़ि छिल यतेक राक्षसे ※ ताहार विक्रमे देखि पलाय तरासे
हाते गाछ हनूमान धाय रड़ारड़ि ※ गाछेर बाड़िते मारे दश बिश कुड़ि

१ बात करता था २ कैदी ३ अग्नि ४ शान्त ५ बाहर।

कहु पूँछ चपेटत लेत प्रान, जरि लोप मूछ-दाढ़िन निसान।
चम्पत[1] सुरारि[2] नहिं सुधि पछारि, कर लिए विटप कपि राजद्वार॥
सोचत निहारि चहुँ बार बार, किमि करहिं लंक जरि छार खार।
रवि किरन सरिस चमकत ललाम, भट अनल समर्पत जवन धाम॥

लपट-पुच्छ चपला घन माहीं ※ भवन-शिखर कपि निमिष[3] लखाहीं
पवन सहाय पवनसुत कीन्हा ※ पितु बल अनल द्विगुण बल दीन्हा
सुनि सुत-विपति पिता जनि धावै ※ तौ जग अति अनरीति कहावै
हनुहिं सहाय पवन उनचासा ※ फाँदि अँटारिन अगिनि प्रकासा
जारत एक जरत बहुधामा ※ बोल न मुख कोउ काहु न कामा
छुवत भवन जेहि अनल तरंगा ※ अर्ध नारि नर भस्मित अंगा
भागत, होस न, कतहुँ उघारे[4] ※ पूँछ लपेटि अनल पुनि जारे
छोट बड़े सब जरत समाना ※ लिये अंग तिय विनसैं नाना

दो० कलपत त्यागे नारि - सुत, जरे विविध बहुरूप।
दग्ध भये मुखलोम[5] बहु मकुन[6] रूप विद्रूप॥ ६४॥

लंक सरोवर बहु छबि पाये ※ फाँदि निसचरिन प्रान बचाये
सलिल उपरि तिन सीस सुहाये ※ सरवर मनहुँ सरोरुह[7] छाये

कारो प्राण लय मारि लांगूलेर बाड़ि ※ लेजेर अग्निते कारो दग्ध गोप दाड़ि
पलाय राक्षस सब, उलटि ना चाहे ※ हाते गाछ हनूमान राजद्वारे रहे
महावीर हनूमान चारिदिके चाय ※ लंकापुरी पोड़ाइते चिन्तिल उपाय
सब घर ज्वले येन रविर किरन ※ हेन घरे अग्नि वीर करे समर्पण
मेघेते विद्युत येन, लेजे अग्नि ज्वले ※ लाफ दिया पड़े वीर बड़घरेर चाले
पुत्रेर साहाय्य हेतु वायु आसि मिले ※ पवनेर साहाय्ये द्विगुण अग्नि ज्वले
विपदे पड़िले पुत्र पिता आसि तार ※ साहाय्य करिबे नहे विचित्र व्यापार
उनपञ्चाशत वायु हय अधिष्ठान ※ घरे घरे लाफ दिया भ्रमे हनूमान
एक घरे अग्नि दिते आर घर ज्वले ※ के करे निर्व्वाण तार केवा कारे ब'ले
अग्निते पूड़िया पड़े बड़ घरेर चाल ※ अर्द्धेक स्त्री पुरुषेर दग्ध गायेर छाल
उलंग उन्मत्त केह पलाय उभरड़े ※ लेजे जड़ाइया तुलि अग्निते आछाड़े
छोट बड़ पुड़िया मारिल एक काले ※ राक्षस मरिल कत स्त्री लइया कोले
केह वा पुड़िया मरे भार्य्या-पुत्र छाड़ि ※ काहारो माकुन्द मुख दग्ध गोपदाड़ि
लंकामध्ये सरोवर, छिल सारि सारि ※ ताहाते नामिल यत राक्षसेर नारी
सुन्दर नारीर मुख नीरे शोभा करे ※ फुटिल कमल येन सेइ सरोवरे

---

१ रफ़ूचक्कर हो गये २ देवताओं के शत्रु दानव ३ पलक मारते ४ नग्न
५ मूछ-दाढ़ी ६ मकुना (पूँछ-दाढ़ी-विहीन) ७ कमल।

रहि सुदूर कपि सुभट निहारी * पूँछ अगिनि केशावलि जारी
नीर गात, मुख बहिर अनूपा * दग्ध केश छबि सीस बिरूपा
जो भय अनल, दुबकि[1] जल रहहीं * जलमय उदर कुअवसर मरहीं
कपिहिं नारि-बध अरुचि न आई * तीनि लाख निसचरिन नसाई
रत्नधाम बहु छबि आगारा * अगनित राजसदन पुर जारा
चहुँ दिसि अगिनि भूधराकारा * कृमि-पतंग, हय-गज किय छारा
दसमुख - सदन मयूर[2] सुहावन * जरी पुछारि कुरूप अभावन
कनक लंक छन भसम बनाये * नृप पुनि सचिव न गृह बचि पाये[3]
कुम्भकर्ण पुनि गेह विभीषन * तजि किय छार सकल ताही छन
वर विभीषनहिं दिय चतुरानन * तासु निकेत बचेउ यहि कारन
दशमुख-अनुज[4] विवस सुख-शयना * सोवत अति प्रगाढ़ निज अयना
जरत धाम किमि विनसत प्राना? * विन रन तासु न मृत्यु-विधाना
परि तरु ओट बचेउ यहि कारन * शेष सकल गत उदर-हुताशन[5]
लंकपुरी जरि अखिल नसानी * हाहाकार करत सब प्रानी

दो० मरत सकल जरि अनल चहुँ, तहँ किमि सिय-कल्यान ।
राम-प्रिया-निर्वान उर, सोचि विकल हनुमान ।। ६५ ।।

दूरे थाकि देखे हनूमान महाबल * लेजेर अग्निते तार पोड़ाय कुन्तल
सर्व्वांग जलेर मध्ये जागे मात्र मुख * अग्निते पोड़ाय मुख, देखिते कौतुक
त्रासे डुब दिल यदि जलेर भितरे * जल दिया फाँफर हइया सबे मरे
स्त्रीवध करिया भावे पवननन्दन * बधिलाम तिन लक्ष नारीर जीवन
रत्नेते निर्म्मित घर अति मनोहर * लेखा-जोखा नाइ यत पोड़े राजघर
पर्व्वत प्रमाण अग्नि चतुर्द्दिके बेड़े * हस्ति-अश्व पोषापाखी ताहे कत पोड़े
कौतुकेते रावण मयूर पक्षी पोषे * लेज पोड़ा गेल से पेखम धरे किसे
स्वर्णमयी लंकापुरी तिलेकेते पोड़े * राजघर पात्रघर किछु नाहि एड़े
अन्य अन्य घर हनू पोड़ाय सकल * बाँचे कुम्भकर्ण विभीषणेर केवल
ब्रह्मावरे विभीषण गृह नाहि पोड़े * कुम्भकर्ण गृह बाँचे गाछेर आओड़े
गृहमध्ये कुम्भकर्ण निद्राय कातर * घरे अग्नि लागिले मरित निशाचर
युद्ध करि मरिवारे निर्व्वन्ध जे आछे * ताइ अन्यघर पोड़े तार घर बाँचे
सब लंका पोड़ाइया करे छार-खार * लंकार सकल प्राणी करे हाहाकार
हनूमान बले, सीता हइल विनाश * हिते विपरीत करि, एकि सर्व्वनाश
चतुर्द्दिके अग्नि ज्वले, मरे सर्व्व प्राणी * रक्षा ना पाइल बुझि रामेर रमणी

---

१ डुबकी लगाकर छिप जायँ २ मोर ३ राजन्य तथा मंत्री किसी के घर न बचे ४ कुम्भकर्ण ५ अग्नि के पेट में ।

बल-बिक्रम धिक् मम चतुराई ※ धिक् जीवन, जनि लखत उपाई
तरेउँ हेतु सिय सिंधु अपारा ※ दुसह निरखि तेहि अगिनि मझारा
परि किमि कुमति लंक मैं जारी ※ प्रभु सेवक प्रभु-तीय उजारी[1]
सुत ह्वै दग्ध कीन निज जननी ※ रहै त्रिलोक अमर अपकरनी
मकर-मच्छ मम करइँ अहारा ※ विनसउँ नतरु अनल परि छारा
भेटहुँ सिन्धु कि अगिनि-प्रवेसू ※ मरहुँ इतै पुनि लखहुँ न देसू
तब लौं सुरन कीन नभबानी ※ सुनु कपीस ! सकुसल सियरानी
अनल अगम जहँ सिय, निस्संका ※ हे कपि ! समुद जरावहु लंका
देव-कथन हनुमत बल पावा ※ उछरि-उछरि[2] चहुँ पुरी जरावा
लंका-दहन, दनुज परिवारा ※ भसम अमित पावक सब जारा

सीता के समीप हनुमान का पुनरागमन

जोजन द्विशत अनल नभ छावा ※ सिय ससंक कपि प्रान नसावा
उर न धीर, विलपत वैदेही ※ 'सरमा' दनुजि सान्त्वना देही
कपि कुवचन रावनहिं सुनावा ※ कपिहिं लंकपति बन्दि[3] बनावा
मरकट-पुच्छ[4] बहोरि जराई ※ अगिनि लंक सो घर घर छाई

कि करिनु धिक् धिक् आमार जीवन ※ बल-बुद्धि-विक्रम आमार अकारण
ये सीतार हेतु आमि पारावार तरि ※ सेइ सीता पोड़ाइया केन प्राण धरि
कोन कर्म्म करि पोड़ाइया लंकापुरी ※ पोड़ाइ सेवक ह'ये रामेर सुन्दरी
जननीरे दग्ध करे हइया तनय ※ एइ कथा व्यक्त रवे त्रिभुवनमय
हांगर कुम्भीर मोरे करुक आहार ※ अग्निते पुड़िया किम्वा एइ छारखार
सागरेते किंवा करि अग्निते प्रवेश ※ एखानि मरिव आमि, ना जाइव देश
देवगण डाकि ब'ले, हनूमान शुने ※ सीतादेवी रक्षा पाय, ना पोड़े आगुने
तुमि लंका दग्ध कर मनेर हरषे ※ भस्म करि फेल लंका राखियाछ किसे
देववाक्ये वानर साहसे करि भर ※ लाफे-लाफे पोड़ाइल यत सब घर
पुड़िया मरिल यत राक्षस-राक्षसी ※ कृत्तिवास रचे लंका हय भस्मराशी

सीतार निकटे हनूमानेर पुनरागमन

द्विशत योजन अग्नि व्यापिल गगन ※ सीता भावे पुड़ि मेल पवननन्दन
विलाप करेन सीता मने नाहि क्षमा ※ ताँहाके बुझाय तवे राक्षसी सरमा
बन्दी हइयाछे, शुनियाछि से काहिनी ※ राजारे से बलिलेक दुरक्षर वाणी
लेजे अग्नि देल तार पोडावार तरे ※ सेइ अग्नि हनूमान दिल घरे घरे

१ उजाड़ दिया, नष्ट कर दिया २ उछल-उछलकर ३ कैदी ४ वानर की पूछ।

आँच न अंग, कुशल बलवन्ता * तब लौं प्रकट भयेउ हनुमन्ता
लंक जारि प्रस्तुत सिय तीरा * पूँछ बुझायेउ वारिधि-नीरा

दो० विकल जलधि-जल बुझत जनि, अनल प्रबल अधिकाय ।
विकल अनिल-सुत[1] सीय पहँ, पूछत सीस नवाय ।। ६६ ।।

अचरज अतिव विदित नहिं कारन * शमन होय किमि जननि! हुताशन[2]
देहु पूँछ मुख, सुत ! तत्काला * लहि मुख-सुधा नसै सब ज्वाला
बुझत न पावक ताप अनन्ता * मुख लांगूल[3] लीन हनुमन्ता
आनन[4] झरसि[5], शमन भइ आगी * सागर-तट सोचत दुखपागी
लखि प्रतिबिम्ब दग्ध मुख नीरा * कहेउ बहोरि आय सिय तीरा
जननि-काज किय मुख-छबि हानी * हसैं जाति जन, मोहिं गलानी
सकल जाति-मुख होयँ विरूपा * असित[6], कहति सिय, तव अनुरूपा
सुनि प्रसन्न, कपि आयसु चाहा * आवैं तबहिं अवध नरनाहा
वैदेही पुनि कहति स-नेहा * आहत ताप-अनल तव देहा
निवसु तात! कछु दिन मम तीरा * लुकि[7] अशोकवन विनसइ पीरा
अनुचित बानि, लखन श्रीरामा * मम विन किमि आवहिं यहि धामा
इत विलम्ब तौ विनसइ काजू * द्रुति[8] आनहुँ सुकण्ठ कपिराजू

हनूमान नाहि पोड़े, आछे से कुशले * लंका पोड़ाइया हनू एल हेनकाले
सीतार निकटे गिया पवननन्दन * फेलिल लेजेर अग्नि सागरे से क्षण
निर्व्वाण ना हय अग्नि आरो ज्वले जले * सीतार निकटे हनू जोड़ हाते बले
ना जानकि, जान किगो इहार कारण * केमते निर्व्वाण हबे एइ हुताशन
सीता बले, मुखामृत देह हनूमान * एखनि अग्निर ज्वाला हइबे निर्व्वाण
तबे हनू ह'ये अति ज्वालाय कातर * ज्वलंत लांगूल पूरे मुखेर भितर
निर्व्वाण हइल ज्वाला, पुड़े गेल मुख * सिन्धुतीरे गेल हनू पेये मने दुख
जले मुख देखि वीर मनागुणे ज्वले * पुनरपि जानकी निकटे आसि बले
तव कार्य्ये आसि मागो, पुड़े गेल मुख * ज्ञाति वर्ग हासिवेक, से जे बड़ दुःख
सीता बले, ज्ञातिवर्ग केह नहे छाड़ा * मन वाक्ये सकलेइ हबे मुखपोडा
हनूमान बले, तबे आसि गो जननि * आमि गेले आसिबेन राम रघुमणि
अग्निते तोमार तनु ह'यछे कातर * किछु दिन थाक वाछा आमार गोचर
जानकी बलेन तबे सस्नेह बचने * लुकाइया थाक हेथा अशोक कानने
हनूमान बले माता व'ल ना एमन * आमि गेले आसिबेन श्रीराम लक्ष्मण
बिलम्ब हइले मम नष्ट हबे काज * आमि गेले आसिबे सुग्रीव महाराज

१ पवनसुत २ अग्नि ३ पूँछ ४ मुख को ५ झुलसाकर ६ काले ७ छिपकर ८ शीघ्र ही ।

चढ़ि मम कंध लखन रघुराई ❊ भरहिं छलांग कोस-समुदाई
केते तव सम कपि बलवन्ता ❊ राम-कटक बरनहु हनुमन्ता?
इत-उत की[1] अनेक कहि बाता ❊बिहँसि कहत कपि सुनु सिय माता
मों सन अधिक सुभट बहु वीरा ❊ मैं लघुतम[2] सुकण्ठ के तीरा

दो० हीन कर्म, अति दीन कपि, सुभटन गिनती नाहिं ।
पायक समुझि सुकण्ठ मोहिं, इत पठयेउ तव पाहिं ।।
तबहुँ हनेउँ लख-लख दनुज, को बरनै प्रभु-बान[3] ।
तीस कोटि सेनिप[4] सुभट आवहिं कीस प्रधान ।। ६७ ।।

तव दुख मातु वेगि अवसाना[5] ❊ तव पद-पायक मैं हनुमाना
सेवक-वचन धरहु उर माता ❊ प्रभु-कर द्रुत लंकेस निपाता
सुघरी[6] सहित लखन-सुग्रीवा ❊ जीतहिं लंक राम बलसीवा
भय परितजहु विषाद न कामा ❊ पवनपूत पुनि करत प्रनामा
दीन्हेउ सिय असीस हरषाई ❊ कृत्तिवास सुचि[7]-कथा सुनाई

लंका से हनुमान की वापसी

राम-प्रतीति[8] हेतु हनुमाना ❊ सिय-मणिमस्तक सहित पयाना

लाफ दिया पार हवे यत कपिगण ❊ मोर पृष्ठे पार हवे श्रीराम लक्ष्मण
जानकी व'लेन, शुन पवननन्दन ❊ तोमा हेन कपि आर आछे कतजन
से कथा शुनिया वीर हनुमान हासे ❊ सीताके वुझाय वीर अशेष-विशेषे
आमार अधिक वीर आछे बहुतर ❊ आमा छोट सुग्रीवेर नाहिक वानर
सकलेर क्षुद्र आमि क्षुद्र कर्म्म करि ❊ आमाके पाठान ताइ एइ लंकापुरी
वीर मध्ये यद्यपि आमारे नाहि लेखे ❊ तथापि राक्षसगणे मारि लाखे-लाखे
त्रिशकोटि सेनापति आसिवे प्रधान ❊ आपनि जानह माता श्रीरामेर वाण
शीघ्र ह'वे ठाकुराणि, दुःख अवसान ❊ चरणसेवक तव आछे हनूमान
श्रीरामेर हाते ध्वस्त हइवे रावण ❊ मने करि राख मागो, हनूर वचन
आसिवेन शुभक्षणे सुग्रीव लक्ष्मण ❊ हइवेन लंकाजयी राम नारायण
भय ना करिह माता जनकनन्दिनी ❊ एत वलि प्रणमिल ह'ये जोड़पाणि
आनन्दिता सीता हनूमानेर आश्वासे ❊ गाइल सुन्दरकाण्ड कवि कृत्तिवासे

लंका हइते हनुमानेर प्रत्यावर्त्तन ओ वानरसैन-सह स्वदेश यात्रा

सीतार मस्तक मणि रामेर सन्देश ❊ मेलानि पाइया हनू चलिलेन देश

---

१ इधर-उधर की २ सबसे छोटा ३ राम के वाण की महिमा ४ सेनापति ५ नष्ट होंगे ६ शुभ घड़ी में ७ पवित्र ८ विश्वास ।

लहि पद-चाप शिला-तरु भंगे * उठि तट-जलधि लंघ गिरि श्रृंगे
गिरि सों उठि पुनि सिन्धु निहारा * इक छलांग जहँ गगन प्रसारा
सिंहनाद किय प्रमुदित वीरा * भयेउ प्रतिध्वनित उत्तर तीरा
जाम्बवान तब हाँक लगावा * मनहु सिद्धि लहि हनुमत आवा
विक्रम, जिमि रव[1] घोर प्रतीता * निश्चित मनहु लखी तिन सीता
गमन पवन-गति, आगम शेषू * अर्ध सिन्धु किय पार निमेषू
बन्दि सुदूर गिरिन बजरंगा * पार कीन गिरि पर गिरिश्रृंगा
मारुति दरस जुरे सब कीसा * कहत धन्य तुम धन्य कपीसा
बालितनय प्रति प्रथमहिं बन्दे * जाम्बवान पुनि, अमित अनन्दे
भेंटे सखा, कपिन उर लावा * लहि फल-फूल, कुतूहल छावा

दो० अंगद सभा विराजहीं वानर-कटक अपार ।
जाम्बवान जिज्ञासहीं, वरनहु पवनकुमार ।। ६८ ।।

कनकलंक किमि, किमि लंकेसू * केहि विधि लखी सिया तेहि देसू
सिय प्रति किमि रावन-व्यवहारू * किमि तहँ जनकलली आचारू
विस्तर[2] सकल वरनु हनुमाना * किमि निसिचरन, लहेउ कपि! त्राना
तव प्रति चिन्ता रही विसेसू * काजसिद्धि बिन दरस न देसू

ताहार चरण-भरे शिला वृक्ष भांगे * समुद्र तरिते उठे पर्व्वतेर श्रृंगे
पर्व्वते उठिया वीर सागर नेहाले * एक लाफे उठे वीर गगनमण्डले
सिंहनाद छाड़े वीर हरषित मुखे * सिंहनाद ताहार उत्तर कूले ठेके
डाक दिया तखन बलिछे जाम्बवान * सर्व्व कार्य्य सिद्ध करि आसे हनूमान
जेमत विक्रमे आसे हेन शब्द शुणि * देखियाछे निश्चित से रामेर रमणी
पवनगमने वीर आइसे सत्वर * चक्षुर निमिषे एल, अर्द्धेक सागर
दूर हैते पर्व्वतेरे नमस्कार करे * पार हैया रहे वीर पर्व्वत शिखरे
हनूमाने देखिवारे आइल वानर * ब'ले, धन्य धन्य वीर पवनकोङर
आगे माथा नोवाइल कुमार अंगदे * जाम्बवान आदि वन्दे परम आह्लादे
सोसर वानर संगे करे कोलाकुलि * फल फुल योगाय सकले कुतूहली
अंगदेर सभाय जिज्ञासे जाम्बवान * केमने देखिले रावणेरे हनूमान
केमने देखिले तुमि स्वर्ण लंकापुरी * केमने देखिले तुमि रामेर सुन्दरी
सीता ल'ये रावणेर किवा व्यवहार * केमन देखिला तुमि सीतार आचार
हनूमान, कह सविशेष समाचार * राक्षसेर हाते किसे पाइले निस्तार
तोमार लागिया छिल चिन्ता अतिशय * तबे देशे जाइ यदि इष्ट सिद्धि हय

१ गर्जन २ विस्तार सहित ।

वचन ऋच्छपति सुनि हनुमाना ❋ हेरि अंगदहिं सकल बखाना
शत योजन वारिधि[1] विस्तारा ❋ झेलि संकठन उतरेउँ पारा
भरमि लंक निसि अर्ध गवाँई ❋ पुनि अशोक वन सीय लखाई
सिद्धि सदा अनुसरति कलेसू ❋ राम तीर चलि कहहिं बिसेसू
सुनि सुभ खबरि[2] मुदित युवराजू ❋ सिय-उद्धार बिलंब न काजू
लै सिय चलहिं जहाँ मनभावन ❋ प्रथम गमन तहँ समय नसावन
एक पवनसुत काज बनावा ❋ अब तुम सबन सुअवसर आवा
जामवन्त सुनि विहँसि बखाना ❋ कथन न केहु विधि उचित लखाना
राम रमापति शिर सिय भारा ❋ तव हाथन किमि तासु उबारा
निर्नय-सीय लेयँ रघुकेतू ❋ नतु सब जतन अनादर हेतू
कपि न समर्थ तरहिं दस योजन ❋ को भट करै पार शत योजन
सुनि व्यंगोक्ति[3] ऋच्छपति केरी ❋ कहति बालिसुत नयन तरेरी[4]

सो० वृथा पकाये केस, सठियानी रे वृद्ध ! मति ।
देत विविध उपदेस, निज-मत[5] सबन अपंग[6] लखि ।।

दो० बाँधि पुच्छ, तव भार लहि, होहुँ सिन्धु के पार ।
कुपित अंगदहिं शान्त करि, बोले पवनकुमार ।। ६६ ।।

एत यदि जिज्ञास करिल जाम्बवान ❋ अंगद गोचरे वार्त्ता कहे हनूमान
शतेक योजन समुद्रेर परिसर ❋ अनेक संकटे आमि तरिनु सागर
दु-प्रहर रात्रि गेल, तृतीय प्रहरे ❋ देखिलाम अशोक कानने जानकीरे
आगे बहु कष्ट, इष्टसिद्धि हय शेषे ❋ चलह रामेर ठाँइ कहिव विशेषे
शुनि शुभ समाचार हृष्ट युवराज ❋ सीता उद्धारिते चाहे नाहि सहे व्याज
जानाइले श्रीरामेरे विलम्ब विस्तर ❋ सीता उद्धारिया चल रामेर गोचर
एकेश्वर हनूमान लंघिल सागर ❋ तोमार साहस कर सकल वानर
अंगदेर कथा शुनि जाम्बवान हासे ❋ यत किछु ब'ल मोर मने नाहि आसे
सीता उद्धारिते राजा करिलेन पन ❋ तोमारा करिले ताहा घटिबे केमन
सीतार चरित्र राम करेन विचार ❋ तव वाक्ये सीता निले हबे तिरस्कार
दश योजन लंघिते नारिवे कपिगन ❋ कोन जन तरिवेक शतेक योजन
एत यदि जाम्बवान अंगदेरे ब'ले ❋ कुपिया अंगद वीर अग्नि हेन ज्वले
अकारणे बुड़ाटि, पाकिल तोर केश ❋ निजे बुड़ा, परेरे शिखाओ उपदेश
आपनार मत देख सकल संसार ❋ लेज चापि धर हे सागर करि पार

---

१ समुद्र २ शुभ समाचार ३ व्यंग्य वचन ४ कोप-दृष्टि से ५ अपने समान ६ लाचार ।

अंगद ! शमन, धरहु उर धीरा ❋ तुम समान दुर्लभ जग वीरा
जामवन्त तव सचिव बखाना ❋ समुचित सचिव-सीख-सन्माना
बालितनय सुनि आनँद - साने ❋ सहित सैन - कपि देस पयाने

वानरों द्वारा सुग्रीव-मधुवन-भञ्जन

छाये कपि छिति गगन असेसू ❋ पहुँचे मधुवन चलि निज देसू
को मधुवन-छबि अतुल विलोकी ❋ करहि प्रवेश न निज मन रोकी!
बालि भूप मधुवनहिं सवाँरे ❋ सहस-सहस कपि जहँ रखवारे
कपिन करत चंचल मधु-गन्धा ❋ विकल निहारि सदा प्रतिबन्धा[1]
जामवन्त मिलि सीख[2] बुझावा ❋ अंगद ढिग हनुमतहिं पठावा
विनय अंगदहिं किय हनुमन्ता ❋ लहि सिय-सुधि सुख दीन अनन्ता
तोहि प्रसाद, आयसु, युवराजू ❋ देहु समुद निज कपिन समाजू
आनि शोध सिय दीन हुलासा ❋ तुमहिं अदेय न कछु मम पासा
आयसु कहा ! लहौ मनमाना ❋ पुनि अंगदहिं कहेउ हनुमाना
मधु-रस अमिय सरिस अति स्वादा ❋ चहत सकल कपि नाथ-प्रसादा
कीस करैं मधुपान सप्रीती ❋ जनि सुग्रीव होयँ विपरीती

हनूमान ब'ले, तुमि ना हओ अस्थिर ❋ पृथिवी-मण्डले नाइ तोमा हेन वीर
सर्व्वलोके ब'ले, तव मंत्री जाम्बवान ❋ गंभीर मंत्रणा कभु ना करिह आन
शुनिया अंगद वीर हासे महोल्लासे ❋ वानर-कटक-सह चले निज देशे

वानरगणेर मधुवन भञ्जन

कटक जुड़िया जाय पृथिवी-आकाश ❋ देशे गिया उपस्थित मधुवन पाश
देखिते मधुर वन अति मनोहर ❋ कोन प्राणी नाहि जाय ताहार भितर
सहस्र-सहस्र कपि मधुवन राखे ❋ बालिर समयावधि मधुवने थाके
मधुगन्धे कपिगण अत्यन्त विकल ❋ खाइवारे नाहि पारे, हइल चंचल
मधुपाने मंत्रणा करिल जाम्बवान ❋ अंगदेर ठाँइ आज्ञा माग हनूमान
आनियासीतारवार्त्ता दियाछ आह्लाद ❋ अंगदेर ठाँइ लह राजार प्रसाद
अंगदेर काछे हनू कहे जोड़ हात ❋ राजार प्रसाद चाहि वानरेर नाथ
अंगद बलेन, वीर, जे दिला आह्लाद ❋ जाहा चाह ताहा लह कि राज-प्रसाद
हनूमाने ब'ले, मधु अमृत समान ❋ सकल वानर खाइ, यदि देह दान
अंगद ब'लेन, मधु खाओ इच्छामत ❋ ना हबेन सुग्रीव इहाते असम्मत
हरषित सकले पाइया मधुदान ❋ आनन्दे करिछे स्वेच्छामत मधुपान

१ मधुफल खाने पर रोक २ सलाह।

लहि आयसु कपिगन हर्षाने ❋ अभिमत[1] करि मधुपान जुड़ाने
कोउ निचोरि कोउ चुल्लुन लीन्हा ❋ मधु विन मधुग्रह कपिगन कीन्हा
दो० पुनि मधुचक्र[2] विखण्ड करि[3] रहे परस्पर मारि।
मधुमाते मदमस्त कपि अभिरि[4] मचाये रारि ॥ ७० ॥
नृत्य गान रत हास-विलासू ❋ हार न जीत, सवन उल्लासू
हटकेउ कपिन, कुपित रखवारे ❋ खेदि तिर्नाहिं वानरगन मारे
कँहु धरि केस फेंकि नभ ओरा ❋ क्रुद्ध चलेउ कोउ अंगद ओरा
तव आयसु कपि रत मधुपाना ❋ मधुरक्षक चाहत तिन प्राना
युवराजहिं सुनि क्रोध अपारा ❋ साजि कटक मधुवन पग धारा
कुपित ससैन बालिसुत धावा ❋ रक्षकपति 'दधिमुख' तहँ आवा
अंगद समुख[5] न कोउ भट धीरा ❋ 'दधिमुख' तजि, अलोप कपि वीरा
दधिमुख ! दीन अतुल संतापा ❋ तव वध मात्र मिटै उर तापा
लहि सिय-शोध कीन प्रभुकाजू ❋ किमि तिन उरिन[6] होयँ कपिराजू
करि नृप-काज न नृप-धन भोगू ❋ तुमहिं निवसि गृह मधुरस जोगू
नित विलसत मधु पितुधन मोरा ❋ मन यहि छनहिं[7] करौं वध तोरा
पितु-मातुल[8] पितुमहत्[9] समाना ❋ यहि कारन तव बकसहुँ[10] प्राना

निङाड़िया खाय केह, पिये त चुमुके ❋ सकल भाण्डार शून्य करिल कटके
मधुचक्र भांगि सबे मारामारि करे ❋ ये जारे मारिते पारे, सेइ तारे मारे
मधु पिये कपिगण हइल पागल ❋ मारामारि हुड़ाहुड़ि करिछे कोन्दल
केह नाचे, केह हासे, केह गाय गीत ❋ केह हारे, केह जिने, सवे आनन्दित
रुषिया करिल माना मधुर रक्षक ❋ खेदाड़िया जाय तारे अंगद कटक
चुलेते धरिया केह घुमाय आकाशे ❋ महाक्रोधे जाय केह अंगदेर पाशे
तोमार आज्ञाय मोग करि मधुपान ❋ कोथाकार वानर लइते चाहे प्रान
कुपिल अंगद वीर शुनिया वचन ❋ साज-साज व'लि डाके वालिर नन्दन
कटक लइया युवराज जाय कोपे ❋ कुपिल से दधिमुख, आसे एकचापे
अंगदेर प्रताप सहिबे कोनजन ❋ दधिमुखे एड़िया पलाय कपिगन
अंगद कहिछे शुन ओरे दधिमुख ❋ तोरे आज मारि यदि, तवे जाय दुख
जानिया सीतार वार्त्ता आइल जेजन ❋ तारे दान दिते आमि नहिनु भाजन
राज-कार्य्य करि, नाहि खाइ पितृ-धन ❋ घरेते बसिया भोग कर मधुवन
पितृधन मधुवन करिस भक्षण ❋ मनेते वासना, तोरे काटि एइक्षण
वापेर मातुल जे सम्वन्धे वड़वाप ❋ सेकारणे ना मारिनु तोमाहेन पाप

१ मनचाहा २ मधुभण्डार ३ तोड़कर ४ गुथे हुये ५ सामने ६ उद्धार ७ इमी क्षण ८ पिता का मामा ९ पितामह १० क्षमादान।

कम्पित ओंठ, सरोष अधीरा ❋ सिथिल दसन-नख-आहत बीरा
दधिमुख जहँ सुकण्ठ कर धामा ❋ धाय गोहारत[1] करत प्रनामा
हे नृप! अंगद - पवनकुमारा ❋ दोउ मधुवन सब भाँति उजारा
अब लौं तुम पुनि बालि सवाँरे ❋ सो मधुवन छिन माँहि सँहारे

दो० यदपि क्रोध, पुनि मौन ह्वै रहे नृपति सुग्रीव।
कौतूहल बस पूछहीं लखनलाल बलसीव ॥ ७१ ॥

मातुल-पद दधिमुख धरि चरना ❋ निज अपमान रोय बहु वरना
किमि मातुलहिं अनादर रोषू ❋ उतर न देत वचन सन्तोषू
लखन-बचन सुनि कह कपिनाथा ❋ बूझेउँ मर्म, सुनहु सब गाथा
दच्छिन दिसि जे सुभट पधारे ❋ लूटि मंजु मधुवन संहारे
रखवारेन[2] तिन खेदि पछारा ❋ मातुल सो सब व्यथा प्रचारा
पूछत लखन कुतूहल भारी ❋ को किमि आय कथा विस्तारी
दच्छिन जाय कवन पुनि आई ❋ कहेउ राम, किमि खबरि जनाई
कहेउ सुकण्ठ, न होहु अधीरा ❋ तेंहि दिसि गये महाभट वीरा
सचिव ऋच्छपति[3], बालिकुमारा ❋ हनुमत सिद्धि सवाँरनहारा
अति तव काज मारुतिहिं[4] प्रीती ❋ लहेउ दरस-सिय, मोहिं प्रतीती

ओष्ठाधर कम्पमान, क्रोधेते आकुल ❋ गोहारि करिते जाय राजार मातुल
जर्ज्जर हइया वीर आँचड़-कामड़े ❋ अति शीघ्र गिया सुग्रीवेर पाये पड़े
पायेते पड़िया कहि निज अपमान ❋ मधुवन नष्ट कर अंगद-हनूमान
तोमरा दुभाइ याहा करिले पालन ❋ एत काले नष्ट करे सेइ मधुवन
शुनि क्रुद्ध हये राजा रहिल नीरवे ❋ जिज्ञासेन लक्ष्मण से भूपति सुग्रीवे
मामा हये दधिमुख धरिल चरन ❋ अपमान कथा कहे करिया क्रन्दन
ना देह सान्त्वना-वाक्य, ना देह उत्तर ❋ किहेतु मामार प्रति एत अनादर
सुग्रीव ब'लेन शुनि लक्ष्मणेर कथा ❋ अभिप्राय बुझिले उत्तर दिव तथा
दक्षिण दिकेते जारा करिल गमन ❋ लुटिया खाइल तारा रम्य मधुवन
मारि खेदाइल एरे, एइ मधु राखे ❋ एइ सब कथा कहे मामा दधिमुखे
शुनिया लक्ष्मण कहे अपरूप शुनि ❋ के आसिल के कहिल दक्षिण-काहिनी
श्रीराम ब'लेन, यारा गियाछे दक्षिणे ❋ तारा कि आइल, जान वार्त्ता कि एक्षणे
सुग्रीव ब'लेन मित्र ना हओ अस्थिर ❋ दक्षिणेते गियाछिल बड़-बड़ वीर
आपनि अंगद आर मंत्री जाम्बवान ❋ कार्य्येर साधक स्वयं वीर हनूमान
तव कार्य्ये हनूमान बड़ह तत्पर ❋ अवश्य हयेछे सीता ताहार गोचर

---

१ फ़र्याद की २ रक्षकों को ३ जाम्बवान् ४ हनुमान को।

विज्ञ, महान, धर्म-मति माना ※ निश्चय सिय खोजेउ हनुमाना
बोले राम, तात तव बयना ※ सकत न कहि अतुलित सुखदयना
हनु - अंगद दोउ लेहु बुलाई ※ हिय जुड़ाय सुनि सिय-कुसलाई
दधिमुख प्रति सुकण्ठ संतोषा ※ अंगद-वचन करहु जनि रोषा
सो तव नाति[1], कपिन युवराजा ※ कौतुक-नाति हेतु जनि लाजा
मातुल बेगि दुहुन चलि लावौ ※ हनु अंगद प्रभु-दरस करावौ

हनूमान द्वारा श्रीराम के समीप निदर्शनमणि-प्रदान

दो० लहि सुकण्ठ-आयसु समुद, दधिमुख कीन पयान ।
लै छलाँग प्रस्तुत भयेउ, जहँ अंगद-हनुमान ॥ ७२ ॥

कहत जोरि कर पुनि शिर नाई ※ जिमि आदेस दीन कपिराई
तव अनुयोग[2] कीन नृप पाहीं ※ सो सुग्रीव लीन मन नाहीं
निज पितु-धन मधुवन बैपरहू[3] ※ सेवक जानि रोष जनि करहू
राम-सुकण्ठ तीर द्रुति[4] जाई ※ रामहिं तोष देहु बतराई
सदा दास अंगदहिं पियारा ※ दीन दधिमुखहिं पुनि मधु-भारा
वीर बालिसुत हरषि पयाना ※ चले घेरि चहुँ भट कपि नाना
सबन कपिन आगे हनु वीरा ※ प्रभु समीप, गिरि सरिस सरीरा

धार्म्मिक पण्डित हनूमान महाशय ※ देखियाछे जानकीरे, कहिनु निश्चय
श्रीराम वलेन, मित्र, तोमार वचने ※ जे आनन्द पाइलाम, कहिवे केमने
हनूमान अंगदेरे डाकिया आनाउ ※ कहिया सीतार वार्त्ता परान जुड़ाउ
सुग्रीव व'लेन, एस मामा दधिमुख ※ अंगदेर वाक्ये मामा ना भाविह दुख
सम्वन्धे तोमार नाति सेइ युवराज ※ नाति नाट करिले तोमार नाहि लाज
झाट जाह मामा, तुमि आमार वचने ※ अंगद-हनूर आन श्रीरामेर स्थाने

हनूमान द्वारा श्रीराम-समीपे सीतार निदर्शनमणि-प्रदान

राज-आज्ञा पाइया हरिषे दधिमुख ※ एक लाफे पड़े गिया अंगद-सम्मुख
माथा नोयाइया तारे कहे जोड़ हात ※ राजवार्त्ता कहि शुन वानरेर नाथ
तव दोष कहिलाम सुग्रीवेरे स्थाने ※ तव अपराध राजा ना शुनिल काने
निज धन खाओ तुमि वापेर अर्ज्जित ※ सेवक हइया कहिलाम अनुचित
श्रीराम सुग्रीव वसि आछे दुइजन ※ झाट गिया कर तुमि राम सम्भाषन
सेवकवत्सल वड़ सुशील अंगद ※ मधुवन-रक्षा तारे दिलेन सम्पद्
चलिल अंगद वीर ह'ये हरषित ※ कौतुकेते जाय वहु वानर-वेष्टित
सकल ठाटेर आगे वीर हनूमान ※ श्रीरामेर ठाँइ जाय पर्व्वत प्रमान

१ नाती, पौत्र २ शिकायत ३ सेवन करो ४ शीघ्र ।

निरखि दूर आवत हनुमाना ※ तत् छन उठे लेन भगवाना
प्रभु ससंक अनुमान लगावैं ※ धौं किमि खबरि पवनसुत लावैं
बहु बिचारि पूछत पुनि एही ※ कै तुम लखी सत्य वैदेही
जो सिय-दरस लहेउ हनुमाना ※ कारज सधै, बचैं मम प्राना
बन्दि राम-पद पवनकुमारा ※ दोउ कर जोरि कथन विस्तारा
वन अशोक बिच लंकानगरी ※ वरनहुँ, नाथ! कथा मैं सगरी[1]
सागर शत योजन विस्तारा ※ संकट झेलि भयउँ मैं पारा
घोर निसा-तम, लंक प्रवेसू ※ राज-सदन जनि सिय उद्देसू
घर-घर मैं सब पुरी मँझाई ※ विफल, अधीर, रुदन अधिकाई

दो० गत निसि अर्द्ध अशोक वन, लखि रवि-प्रभा-अलोक।
सहसा सिय-छबि-दरस लहि, भयेउँ, नाथ! गतशोक ॥ ७३ ॥

तब लौं प्रकट तहाँ दशभाला ※ विद्याधरी लिये सुरबाला
सिय सों यथा कही लंकेसू ※ सुनेउँ सकल मैं लुकि[2] तरुदेसू
कौन अस्तुती[3] दशमुख नाना ※ दीन जानकी एक न काना[4]
लखि सिय-उर अनन्य रघुनाथा ※ सिय-बध हेतु कुपित दशमाथा
मम गति एक मृत्यु-अभिलासा ※ प्रभु पद अन्त मोहिं जनि आसा

दूरे देखिलेन राम पवननन्दने ※ वसिया छिलेन उठिलेन ततक्षने
सशंकित श्रीराम करेन अनुमान ※ कि जानि केमन वार्त्ता कहे हनूमान
सात पाँच भावि राम जिज्ञासेन ताके ※ सत्य कह हनूमान, देखेछ सीताके
यदि सीता देखे थाक वीर हनूमान ※ सर्व्व कार्य्य सिद्ध हबे रबे तबे प्रान
श्रीराम चरणे वीर करि प्रणिपात ※ निवेदन करे सब करि जोड़ हात
लंका मध्ये देखियाछे अशोक कानने ※ कहिब सकल कथा प्रभु तव स्थाने
एक शत योजन से सागर पाथार ※ अनेक कष्टेते आमि हइलाम पार
अन्धकारे करिलाम लंकाय प्रवेश ※ राज अन्तःपुरे नाहि पेलाम उद्देश
आवासे आवासे आमि सीता नाहि देखि ※ कान्दिलाम विस्तर हइया मनोदुःखी
अकस्मात देखिलाम अशोक कानन ※ अशोक वनेर ज्योति; रविर किरन
द्वि प्रहर रात्रि गते तृतीय प्रहरे ※ अशोक वनेर मध्ये देखिनु सीतारे
हेन काले गेल तथा राजा दशानन ※ देवकन्या सगे आर विद्याधरीगन
कि ब'लिया सम्भाषे रावण जानकीरे ※ वृक्ष आड़े रहिलाम शुनिवार तरे
अनेक प्रकारे स्तुति करिल रावन ※ जानकी ना शुनिलेन ताहार वचन
तोमा विना जानकीर अन्ये नाहि मन ※ कोपेते काटिते चाहे राजा दशानन
जानकी ब'लेन, मृत्यु करिलाम सार ※ रामेर चरण बिना गति नाहि आर

१ सारी कथा २ छिपकर ३ खुशामद ४ नही सुना।

कथन-सीय सुनि आस गवाँवा * दुष्ट, विकट राच्छसिन बुलावा
गमनेउ गेह राखि तहँ चेरी * मारहिं कुगति करहिं सिय केरी
साम-दाम सब विधि समुझावैं * दुष्ट वचन सिय-मनहिं न भावैं
त्रिजटा दनुजि सिया-हित-करनी * निसि लखि सपन कथा सब वरनी
तेहि ढिग सपन सुनैं जब चेरी * तरु तजि गयेउँ सुअवसर हेरी
पूँछो मातु, कवन तैं कीसा * वरनेउँ तव सहचर्य्य-कपीसा[1]
पुनि तव चिह्न मुद्रिका दीन्हा * सो लहि रुदन अतिव सिय कीन्हा
जननि भेंटि लौटति, उर व्यापा * करहिं प्रकट निज कछुक प्रतापा
भञ्जि सुधाकानन[2] मन-हारी * कोटि-कोटि निसिचरन सँहारी
अखयकुमार आदि कर प्राना * लीन, बधे सेनापति नाना
चक्षु-निमेष सकल संहारा * मेघनाद रन हित पग धारा

दो० सुवन-लंकपति इन्द्रजित्, समर पहर दुइ साधि ।
ब्रह्मपाश संधानि पुनि, असुर लीन मोहिं बाँधि ।। ७४ ।।

लै प्रस्तुत किय जहँ लंकेसू * कहेउँ ताहि दुर्वचन असेसू
मम वध आयसु दीन दशानन * सो निषेध किय अनुज विभीषन
तासु वचन मम जीवन राखा * जारहु पुच्छ, दनुजपति भाषा

निराश हइल दुष्ट सीतार वचने * विषम राक्षसी चेड़ी डाक दिया आने
घरे गेल दशानन ठेकाइया चेड़ी * सीतारे मारिते सवे करे हुड़ाहुड़ि
सीतारे बुझाय चेड़ी अशेष प्रकारे * कोन मते सीता दुष्ट-वचन ना धरे
त्रिजटा राक्षसी रात्रे देखिल स्वपन * सीतार मंगल सेइ चिन्ते अनुक्षन
स्वप्न शुनिवारे चेड़ी गेल तार पाश * गाछे थाकि सीता सह करिनु सम्भाष
कोथा हैते एले, मोरे सुधान वैदेही * सुग्रीवेर संगे सख्य आमि सव कहि
तोमार अँगुरी ताँरे कराह दर्शन * अंगुरी पाइया सीता करेन रोदन
मेलानि पाइया आमि जवे देशे आसि * मने करिलाम, किछु विक्रम प्रकाशि
भांगिलाम मनोहर अमृत-कानन * कोटि-कोटि राक्षसेरे वधिनु जीवन
क्रमे वधिलाम तार बहु सेनापति * प्राणे मारिलाम अक्षकुमार प्रभृति
चक्षुर निमिषे सब करिनु संहार * इन्द्रजित् करिल समरे आगुसार
दु प्रहर तार सगे करिलाम रन * ब्रह्मपाशे से आमारे करिल बन्धन
धरियां लइया गेल रावण गोचर * रावणेर प्रति गालि दिलाम विस्तर
आमारे काटिते आज्ञा दिल दशानन * निषेध करिल तारे भाइ विभीषन
तार वाक्ये आमि तबे एड़ाइ मरण * लेजे पोड़ाइते आज्ञा करिल रावण

१ सुग्रीव से आपकी मित्रता २ अमृत वन ।

मम जारन हित पूछ जराई ❋ लंक अगिनि सो घर-घर छाई
लंका अखिल कीन मैं छारा ❋ दहकि भसम कहुँ सुलग अँगारा
सोचि विपति-मम, आकुल सीता ❋ जहँ सिय, बेगि भयेउँ उपनीता[1]
निरखि मोहिं सिय हर्ष बिशेषू ❋ करि कारज प्रस्तुत प्रभु-देसू
शशि घन-ओट यथा छबि-हीना ❋ लखेउँ सिया तव विरह-मलीना
अलस[2] नित्य जिमि विद्या-छीना ❋ तिमि सिय-तन विगलित श्री-हीना
जस देखेउँ बरनेउँ तस गाथा ❋ लखहु तासु मस्तक-मणि, नाथा!
ललकि बाम कर मणि प्रभु लीन्हा ❋ लखि सिय-चिह्न रुदन बहु कीन्हा
दै मणि, सीय कहेउ मम हेतू ❋ सुनहुँ यथा, बरनहु कपिकेतू
कहेउ पवनसुत रघुपति-चरना ❋ सिय जिमि रोय कहेउ सो बरना
बिलमौ[3] कपि! जब लौं मणि तीरा ❋ कछु बतराय हरौं उर-पीरा
तुम पुनि मैं मणि भगिनि सरूपा ❋ प्रतिपालेउ भल मैथिल-भूपा[4]
पुनि सादर रामहिं दिय दाना ❋ सुता सहित मणि-रतन प्रदाना[5]

दो० भगिनि युगुल निवसैं सदा संग—जनक[6]-अभिलाष।
तुम जेठी! मम माथ रहि अहि-निसि करहु प्रकास॥ ७५॥

लेजे अग्नि दिल लेज पोड़ावार तरे ❋ सेइ अग्नि दिलाम लंकार घरे घरे
लंका पोड़ाइया करिलाम छारखार ❋ कतक हइल भस्म, कतक अंगार
आमार विपद् भावि भाविछेन माता ❋ हेनकाले उपनीत हइलाम तथा
आमारे देखिया सीता हर्षिता विशेष ❋ सर्व्वकार्य्य सिद्ध करि आइलाम देश
देखिलाम जानकीरे विरहे मलिना ❋ मेघे ढाका शशी यथा लावण्यविहीना
सीता मार देह खानि देखिलाम क्षीन ❋ अलसेर विद्या यथा क्षीण दिन दिन
देखिनु शुनिनु यत कहिनु काहिनी ❋ लह रघुमणि, तोर मस्तकेर मनि
राम हस्ते मनि दिल पवननन्दन ❋ मनि देखि रघुमनि करेन क्रन्दन
मनि दिया कि कहिला जानकी आमार ❋ ब'ल ब'ल ओरे हनू, शुनि एकबार
हनूमान ब'ले, प्रभु, जनकनन्दिनी ❋ कान्दिते कान्दिते एइ कहिला काहिनी
क्षणेक विश्राम कर बाछा हनूमान ❋ मनि सने कथा कहि जुड़ाइ परान
तुमि मनि, आमि मनि, दुइटि भगिनी ❋ दोंहे पालिलेन यत्ने जनक-नृमनि
विवाहेर काले पिता परम आदरे ❋ अंगुरी करिला दान श्रीरामेर करे
तुमि आमि दुइ भग्नी थाकि एक खाने ❋ इहायू पितार इच्छा छिल मने मने
तुमि ज्येष्ठा बलि ताइ तोमारे लइया ❋ माथार उपर मोर दिलेन सँपिया

१ उपस्थित २ आलसी की ३ ठहरो ४ राजा जनक ने ५ कन्या और मणि दोनों ही दीं ६ पिता की।

दोउ अभिन्न निवसीं बहु काला ❋ तोहिं सखी ! जुगयेउँ[1] निज भाला
तुमहिं पाय रघुपतिहिं हुलासू ❋ यहि कारन पठवहुँ प्रभु-पासू
जासु जनक पितु, पति श्रीरामा ❋ परी कुगति-वस निसिचर-धामा
जेहि विधि लंक सहेउँ दुख भारी ❋ प्रभु पहँ जाय कहेउ विस्तारी
तुम मणि, रघुकुल-मणि रघुनाथा ❋ निसिदिन सुख विलसहु रहि साथा
मणि विन फणि, तिमि मोर निवासू ❋ कव लौं हतभागिनि इत वासू
सुनि सीता कर रुदन-विलापू ❋ सरसिजनयन अतिव संतापू
राम-रुदन रोवत कपि-वृन्दा ❋ कृत्तिवास जिमि वरनत छंदा

श्रीराम प्रति हनुमान द्वारा भक्ति-प्रदर्शन

कहेउ नाथ पुनि, हे हनुमाना ❋ सुलभ न जग तव वीर समाना
सागर अगम तरेउ केहि रूपा ❋ कौतुक ! विवरन सुनहुँ अनूपा
कनक लंक किमि दहन-कहानी ❋ उत्कण्ठा अति, कहहु बखानी
कपि किय विनय, सुनहु रघुकेतू ❋ जेहि उर राम, न तेहि भय हेतू
नाथ-चरन पुनि पद-सियमाता ❋ पद-पितुपवन सकल फल-दाता
इन त्रय पाद-पद्म मैं शरना ❋ गोपद सरिस सिन्धु पुनि तरना

बहु दिन एक संगे आछि दोंहे भाइ ❋ तोमार माथाय करे धरे राखि ताइ
रामेर आनन्द हवे तोमारे देखिले ❋ पाठाइ तोमारे ताइ आज कुतूहले
जनक जनक जार, राम जार पति ❋ राक्षसेर पुरे तार एहेन दुर्गति
यत कष्ट सहितेछि एइ लंकापुरे ❋ गिया सव कवे तुमि रामेर गोचरे
तुमि मनि, आर सेइ रघुकुल - मनि ❋ उभये थाकिवे सुखे दिवस यामिनी
मनिहारा फणिनीर मत एकाकिनी ❋ कत काल रवे हथा एइ अभागिनी
सीतार विलाप वाक्य करिया श्रवन ❋ कान्दिते लागिला राम कमललोचन
रामेर रोदन देखि कपिगण कान्दे ❋ कृत्तिवास रचिलेन पाञ्चालीर छन्दे

श्री रामेर प्रति हनूमानेर भक्ति प्रदर्शन

राम कहिलेन शुन वीर हनूमान ❋ वीर नाहि देखि आछि तोमार समान
कि रूपे सागर - पारे करिले गमन ❋ विवरण शुनिवारे ह'येछे मनन
कि रूपे सोनार लंका कैले छारखार ❋ कह कह शुनि हनू, वासना आमार
हनूमान कहिलेन करिया विनय ❋ तुमि जार हृदे थाक, कोथा तार भय
तव पद प्रभु पुनः सीता मार पद ❋ 'पवन' पितार पद परम सम्पद
एइ तिन श्रीपदेर लइया शरन ❋ वत्स - पद - सम हेरि सागर लंघन

१ यत्न से रखा।

सुरसा साँपिनि दरस दिखाये * सुमिरि नाथ, तेहि उदर समाये
मुख सो बहिर[1] सुमिरि तव नामा * सब लीला - अधार गुणधामा

दो० बसति सदा जल सिंहिका, निरखि गगन महँ जीव ।
छाया धरि तिन लेत ग्रसि, कौतुक-दनुजि अतीव ।। ७६ ।।

ग्रसेउ मोहिं, मैं उदर समाई * सुमिरि नाम तव, ताहि नसाई
सम्पद-विपद सदा तव ध्याना * पुण्य नाम आधार महाना
प्रभु-कोपानल[2] अति विकराला * श्वास - वेदना - सीय कराला
शुष्क काष्ठ सम लंक जरावा * मैं निमित्त, विधि जोग जुटावा
परि तव कोप-अनल संसारा * कहुँ निस्तार न काहु उबारा
तव पद शरन गहैं जे लोका * ते तव दया लहैं परलोका
मैं वानर पशुजाति समाना * पशुहिं हिताहित[3] कबहुँ न ज्ञाना
दयाधाम मम निपट अधारा * तव पद रहि मम बुद्धि गुजारा
निर्बल कपि के बल तुम रामा * जग न मोहिं कहुँ अन्त विरामा
तुमहिं मातु-पितु, तुमहिं सहारे * तुम हनु - ताप नसावनहारे
जागे मम सौभाग्य अनन्ता * निज-पद-शरन लियेउ हनुमन्ता
बुद्धि, भरोस, मोर बल रामा *जिन तजि जग न अन्य मम कामा[4]

सुरसा सापिनी आसि देखा दिल मोरे * तव नाम स्मरि जाइ ताहार उदरे
वाहिरे आसिनु पुनः स्मरि तव नाम * सकलि तोमारि खेला ओहे गुणधाम
सिंहिका राक्षसी थाके समुद्रेर जले * मोरे त्रास करिवारे एल कुतूहले
प्रवेश करिनु गिया उदरे ताहार * बाहिरिनु तव नाम स्मरि पुनर्व्वार
कि विपदे कि सम्पदे थाकि एइ खाने * तव पुण्य नाम प्रभु स्मरि मने मने
परम प्रचण्ड प्रभु तव कोपानल * सीता मार श्वास-वायु परम प्रबल
लंकापुरी शुष्क काष्ठ, ज्वलि जाइ छिल * ए हेनू निमित्त मात्र तथाय जुटिल
तव कोपानले प्रभु पड़े जेइ जन * त्रिभुवने नाहि तार निस्तार कखन
ये जन तोमार पद करे समाश्रय * ताहारे परम पद दाओ दयामय
जातिते वानर आमि पशुर समान * नाहिक पशुर कभु हिताहित ज्ञान
तुमिइ आश्रय मोर, ओहे दयाधाम * तोमारि चरणे मोर मति अविराम
दुर्व्वल हनूर तुमि एकमात्र वल * तोमा विना नाहि किछु हनूर सम्वल
तुमि पिता तुमि माता तुमिहि सकल * तुमिहि हनूर मात्र जुड़ावार स्थल
हनूर परम भाग्य, ओहे दयामय * हनूर दियाछ तुमि चरणे आश्रय
तुमि बल, तुमि बुद्धि, तुमिह भरसा * तोमा विना हनू किछु नाहि करे आशा

१ बाहर २ क्रोध की अग्नि ३ भले-बुरे का ज्ञान ४ कामना ।

मम हृदयासन प्रभुहिं न जोगू * प्रभु-पद कहँ कपि दीन अजोगू
तबहुँ साध करुनामय एही * अरजी[1] चरन - रामवैदेही
बसै सदा हिय छबि दोउ केरी * होहुँ सुपावन नयनन हेरी
मोक्ष शास्त्रमत सम्पद् भारी * सो मोंहि लखत बिषम भयकारी

दो० हम-तुम भेद न मोक्ष लहि, उचित न प्रभु-सम्मान।
राम-दास पुनि राम दोउ केहि विधि एक समान ॥
मैं सेवक तुम स्वामि मम, यहै सदा अरदास।
अमर एक सम्बन्ध, प्रभु! रहै, दास-अभिलास ॥ ७७ ॥

मारुति धन्य, कहेउ रघुवीरा * त्रिभुवन तुम समान नहिं वीरा
अद्भुत तव विक्रम - विस्तारा * देहुँ कहा? मैं स्वयं तिहारा
देन न जोग, लेहुँ उरलाई * कहि जगदीस लीन लपिटाई
वचन - पवनसुत सुनि हर्षाने * वेगि राम सुभ घरी पयाने

छं० उतर फालगुनी पहर निसा दुइ, सुभ छन-लगन बखाने।
किय अभियान सवत्स धेनु, पुनि मृग, द्विज, दछिन लखाने ॥
शव, जम्बुकी, बाम कुक्कुटगन शकुन राम-अनुकूला।
सूर्यवंश नक्षत्र रोहिणी, प्रकट दनुज कुल मूला[2] ॥

हनूर ए अपवित्र तुच्छ हृदासन * तव उपयुक्त नहे राखिते चरन
किन्तु ओहे कृपामय, बड़ साध मने * राम सीता दोंहे मिलि कबे दुइ जने
बसिया हनूर एइ हृदय आसने * पवित्र करिया दिबे हेरिब नयने
शास्त्रे बले मोक्ष पद परम सम्पद * किन्तु देखि मोक्षपदे विषम विपद
मोक्ष हैले तुमि आमि एकइ समान * एरूप घटिले हय तव असम्मान
श्रीराम हनूर प्रभु हनू रामदास * थाकुक सर्व्वदा एइ हनूर विश्वास
तुमि प्रभु आमि भृत्य चरणे तोमार * ए सम्बन्ध जेन प्रभु ना घुचे आमार
श्रीराम ब'लेन धन्य धन्य हनूमान * त्रिभुवने वीर नाहि तोमार समान
तोमार विक्रमे मोर लागे चमत्कार * कि दिव तोमारे आमि आमिइ तोमार
अन्य कि प्रसाद दिब, लह आलिंगन * एत ब'लि कोल देन कमललोचन
पवनपुत्रेर कथा शुनि हरषित * शुभ यात्रा करिलेन श्रीराम त्वरित
द्वितीय प्रहर रात्रि उत्तरफाल्गुनी * शुभक्षण शुभलग्न शुभफल गनि
दक्षिणे सवत्सा धेनु हरिण ब्राह्मण * देखे राम वामे शव-शिवा-कुम्भगण
सूर्य्यवंशी नृपतिर नक्षत्र रोहिनी * राक्षसगणेर मूला सर्व्व लोके जानि

---

१ प्रार्थना २ मूल नक्षत्र।

सो 'रोहिणी' अकास 'मूल' तन रही सरोष निहारी।
लच्छन, जीतैं राम, रावनहिं सहित बंस संहारी॥
करत कुलाहल, कपि असीम दल छायो धरनि-अकासा।
धाय सिन्धु-तट लतापतन सों उतरि बनाये बासा॥

दल बल सहित लखन पुनि रामा ❋ सागर तीर लीन विश्रामा
सो लखि दनु-पायक[1] नित धावैं ❋ सकल रावनहिं खबरि जनावैं

रावण को विभीषण का उपदेश

निकषा नाम लंकपति - माता ❋ सुनि अति विपति विकम्पित गाता
विभीषनहिं वरनन सब कीना ❋ सुत सुबुद्ध! सुनु धर्मप्रवीना
रावन अमित सुफल-तप भोगू ❋ सिय हरि आज सकुल यमयोगू
हने विपुल दनु, तिन सन रारी ❋ लखि प्रतच्छ मद-बस मतिमारी
हठ बस काहु-सीख जनि मानत ❋ बनत अजान विपति सब जानत
अवसर रहत सीख तेंहि दीजे ❋ संकट - लंक निवारन कीजे
होय न जिमि रघुपति अभियाना[2] ❋ करहु उपाय दनुज - कुल - त्राना
जननि-वयन सुनि वेगि विभीषन ❋ सचिवन सह सोहत जहँ रावन
जाय जोरि कर अरज गुजारी ❋ सुनहु ध्यान धरि विनय हमारी

मूला ऋक्ष देखिले रोहणी बड़ रोषे ❋ सवंशे मरिबे तेइ रावण राक्षसे
चलिल वानर ठाट, नाहि दिश् पाश ❋ कटक जुड़िया जाय मेदिनी-आकाश
किलिकिलि शब्द करि कपिगण चले ❋ उत्तरिल गिया सबे सागरेर कूले
रहिवारे लता पता दिया करे घर ❋ अवस्थिति करिलेक सकल वानर
सेइ स्थाने रहिलेन श्रीराम - लक्ष्मण ❋ चर-मुखे वार्त्ता नित्य पाय से रावण

रावणेर प्रति विभीषणेर उपदेश

निकषा नामेते बुड़ी रावणेर मा ❋ विपद् शुनिया तार त्रासे काँपे गा
आसिया कहिछे बुड़ी विभीषण प्रति ❋ शुन पुत्र तुमि त धार्मिक शुद्ध मति
रावण तपेर फले यत सुख भुञ्जे ❋ आनिया रामेर सीता सवंशे वा मजे
ये मारे राक्षसे, करे तार सने वाद ❋ देखिया ना देखे दुष्ट एतेक प्रमाद
आर ना थाकिब हेन पुत्रेर निकट ❋ देखिया ना देखे पुत्र एहेन संकट
अबोधे बुझाह, जेन राम ना बाहुड़े ❋ यावत् रामेर बाणे लंका नाहि पुड़े
मातृ-वाक्य विभीषण चलिल सत्वर ❋ पात्र मित्र सह यथा आछे लंकेश्वर
कृताञ्जलि हइया कहेन विभीषण ❋ सभास्थ सकले शुद्ध करिछे श्रवण

---
१ दैत्यों के दूत २ चढ़ाई।

तव तप-फल यह सम्पति सारी * राम-कोप मनु सकल उजारी[1]

दो० तात! घरी जेहि सिय हरी, लंक सीय पद दीन।
सपन अशुभ, बहु अपशकुन, नित प्रति लखौं नवीन ।। ७८ ।।

घर-घर गीध-यूथ मडराहीं * जम्बुक-रव[2], निसि निद्रा नाहीं
वृद्ध कालिका दसन विशाला * झलक साँझ नित द्वार कराला
नित उत्पात लखहुँ चहुँ ओरा * तात! राम-विक्रम अति घोरा
नर रघुपति वानर सुग्रीवा * तिन भय उचित न, कह दशग्रीवा
बन्धु-सीख रावनहिं न भाई * दुष्ट मंत्रिगन लीन बुलाई
कहौ सचिवगन जुगुति प्रकारू * जेहि विधि होय राम-संहारू
सेनिप[3] कहत सदर्प 'प्रहस्ता' * वन्य-जाति कपि निपट असक्ता[4]
गिरि-नद-नदी-गुहा-निर्झरनी * कपि-निर्बीज[5] करौं यह धरनी
बज्रकण्ठ दनु दसन विशाला * लौह मुषल कर वचन कराला
लौह-मुषल रन भेटहुँ कीसा * एक-एक कपि भञ्जहुँ सीसा
'त्रिशिरा' निज बल-बिक्रम गावै * को मम रहत लंक धसि पावै
बन उजारि कपि लंक जराई * सो लखि उर गलानि अति छाई
आयसु, तात! मिलै रन जाई * विक्रम लखहुँ लखन-रघुराई

अनेक तपेर फले ए सब सम्पद * रामेर प्रतापे भाई, घटिबे विपद
यतदिन सीतारे आनिले लंकापुर * ततदिन देखि भाइ कुस्वप्न प्रचुर
झाँके झाँके शकुनि पड़िछे गृहचाले * रात्रे नाहि निद्रा हय शृगालेर रोले
काली हेन बुड़ि देखि दशन विकट * सन्ध्याकाले ऊँकि मारे द्वारेर निकट
विविध उत्पात भाइ, देखि सदाकाल * रामचन्द्र अति वीर, विक्रमे विशाल
रावण ब'लिछे, कि रामेर एत डर * कि करिते पारे राम सुग्रीव वानर
रावण भ्रातार वाक्य न शुनिल काने * मन्त्रणा करिते दुष्ट मंत्रिगणे आने
रावण बलिछे, मन्त्रि युक्ति कर सार * कि प्रकारे राघवेरे करिब संहार
वीर दर्पे कहिछे प्रहस्त सेनापति * कि करिते पारे से वनेर पशुजाति
पर्व्वतेर गुहा आर नद नदी कूले * वानरेर नाम ना राखिब भूमण्डले
वज्रकण्ठ निशाचर दशन विकट * लोहार मुषल हाते कहे अकपट
लोहार मुषल ल'ये प्रवेशिब रने * माथा भांगि वधिब वानर जने जने
त्रिशिरा विक्रम करे, आमि आछि किसे * लंकाय थाकिते आमि कोन वेटा आसे
बन भांगे लंका दाह करे हनूमान * लंकाय थाकिते आमि एत अपमान
पाइले तोमार आज्ञा करि आमि रन * देखिब केमन राम केमन लक्ष्मन

---

१ नष्ट कर देना २ गीदड़ों का चीत्कार ३ सेनापति ४ असमर्थ ५ निर्मूल।

कहति 'अकम्पन' आयसु पावौं ※ कपिन भच्छि चिर साध मिटावौं
कुम्भकर्ण-सुत दोउ रनचातुर ※ 'कुम्भ-निकुम्भ' सुभट रनआतुर
मुषल शेल आयुध बहु नाना ※ रन हित साज कुतूहल ठाना

दो० नेक धीर धरि वीरगण ! बोलहु सोचि सम्हारि ।
जने-जने[1] गहि विभीषण पुनि-पुनि कहत पुकारि ।। ७९ ।।

बढ़ि-बढ़ि कथन न कहुँ निस्तारा ※ अग्रज[2] ! सुनु हित-बैन हमारा
सिय अर्पन करि, पुनि भय नाहीं ※ राखत सिय मनु प्रान नसाहीं
विनसै लंक, नाथ ! केहि हेतू ※ पठवहु सीय जहाँ रघुकेतू

विभीषण की छाती पर रावण का पाद-प्रहार

सुमति-विभीषण सुनि दशभाला ※ अनल-कोप दहकति तन ज्वाला
मैं कनिष्ठ तैं ज्येष्ठ सरूपा ※ तैं सधर्म मैं अधरम - रूपा
काँपति निरखि तुच्छ मनु-देहा[3] ※ यहि विधि अनुज गुजर[4] जनि गेहा
दूर-दूर, धिक् ! बन्धु विभीषन ※ उचित पन्थ मोंहि, करौं विषम रन
कुपित वैन दसकन्ध सुनावा ※ सुमति विभीषण पुनि समुझावा
निसिचरपति सम तव बल-ज्ञाना ※ निज मत तुम तेहि भाँति बखाना
जो प्रतच्छ प्रकटहिं भगवाना ※ चीन्हत तदपि न जन बिन ज्ञाना

अकम्पन ब'ले, राजा, तव आज्ञा पाइ ※ अनेक दिनेर साध, कपि धरे खाइ
कुम्भ ओ निकुम्भ कुम्भकर्णेर नन्दन ※ उभयेर कत दर्प करिवारे रन
जाठि जाठा झकड़ा मुषल शेल आर ※ लइया साजिल युद्धे, लागे चमत्कार
हाते धरि विभीषण कहे जने जने ※ स्थिर हओ स्थिर हओ, शुन वीरगने
ए सबार वाक्ये भाइ ना करिह भर ※ हितवाक्य ब'लि भाइ शुन लंकेश्वर
सीता पाठाइया दिले थाकिबे निर्भय ※ सीतारे राखिले भाइ जीवन संशय
कि निमित्त मजाइते चाह लंकापुरी ※ पाठाइया देह सीता रामेर सुन्दरी

विभीषणेर वक्षस्थले रावणेर पदाघात

एत यदि विभीषण रावणेर ब'ले ※ कोपेते रावण राजा अग्नि हेन ज्वले
विभीषण जेन ज्येष्ठ, आमि त कनिष्ठ ※ आमि अधर्म्मिष्ठ बड, से बड़ धर्म्मिष्ठ
मानुष बेटार भये काँपे विभीषन ※ हेन भाइ ना राखिब आपन भवन
विभीषणे दूर कर, युक्ति बलि सार ※ युद्ध विना गति नाहि किसेर विचार
एत यदि क्रोध करि ब'लिल रावण ※ आर बार बलितेछे साधु विभीषण
निशाचर - राज, तव यथा ज्ञान बल ※ कहिले ताहार योग्य वचन सकल
प्रकटेओ ईश्वरे ना चिने अज्ञजन ※ अन्ध जेन जानिते ना पारये रतन

---

१ एक एक को २ ज्येष्ठ बन्धु रावण ! ३ तुच्छ मानव (राम) ४ गुजारा ।

अन्ध लखत जनि रतन-सरूपा ✻ दिवस उलूकहिं जिमि निसि रूपा
यहि विधि तव न दोष दशमाथा ✻ माया बस न लखत रघुनाथा
नयन प्रतच्छ, न दरसन लहही ✻ अहह! धन्य माया-प्रभु अहही
यदपि सत्य, सुनु पुनि दसभाला ✻ निजकर[1] जनि नेंउतहु[2] निज काला[3]
कालकूट[4] सिय लंक-निवासू ✻ लहौ कटक सह यमपुर-वासू
सम्पद विपुल, विपुल तव राजू ✻ स्वयं विपति सौंपति केहि काजू

दो० तप अनन्त करि सुलभ किय, सम्पति सिद्धि अतीत[5] ।
कछुक दिवस उपभोग करु, तजिय तात अनरीत ॥ ८० ॥

यदपि कछुक कटु सीख हमारी ✻ कहहुँ बिबस तव हित मन धारी
सीख न उचित देय भय पाई ✻ अनुचित मौन[6] पाप अधिकाई
यहि विधि सोचि कहौं हितबानी ✻ मोहिं भरोस, करिहौ सुख मानी
राम धर्म-मय जगत बखानी ✻ अधरम-संगति जीवन-हानी
मत्त-मतंग[7] निरंकुस एका ✻ रुकत न, किय विध्वंस अनेका
धान्य-धाम वन सकल उजारे ✻ कछु पालित-गज[8] तेंहि अनुसारे
खल-संगति सज्जन-मति हरई ✻ त्यागि सुमति पातक सो करई
व्याध कुशल जानत सब अंगा[9] ✻ रसरिन[10] बस करि लेत मतंगा

रहियाछे चक्षु किन्तु देखिते ना पाय ✻ पेचक जेमन सूर्य्यमण्डले दिवाय
इहातेउ नाहि मानि तोमार दूषन ✻ ये हेतु निजेरे प्रभु करये गोपन
प्रणाम करि जे ताँर शकति मायाय ✻ नयन आगेओ जेइ ढाकि राखे ताँय
थाकुक से सब कथा, एखन तोमारे ✻ कहि आमि, ना मजाओ तुमि आपनेरे
आनियाछ सीता काल भुजंगीरे घरे ✻ राखिले ससैन्ये जाबे शमन नगरे
एहेन सुन्दर राज्य, एहेन सम्पद् ✻ निज दोषे केन आनि घटाओ विपद
चिरकाल तप करि पेयेछ ए राज्य ✻ किछु दिन भोग कर छाड़िया अन्याय
यदि बल, तुमि केन कह कुवचन ✻ तार अभिप्राय कहि, करह श्रवन
जिज्ञासिले मंत्रणा कहिते हय हित ✻ अन्यथा करिले हय पाप समुचित
अतएव कहितेछि तोमा हितकथा ✻ कदाचित इहा नाहि करह अन्यथा
धार्म्मिक श्रीराम देख सर्व्वलोके कय ✻ अधार्म्मिक संगे थाका जीवन संशय
देख एक मत्त हस्ती प्रवेशिले वने ✻ सकलेर क्षति करे, क्षमा नाहि माने
क्षेत्रेर शस्यादि खाय, घर-द्वार भांगे ✻ खाद्य लोभे पोषा हस्ती मिले तार संगे
दुष्टेर संगेते हय शिष्ट अपराध ✻ हस्तीर बन्धन हेतु उपयुक्त व्याध
स्वभावेते व्याध जाति जाने नाना संधि ✻ शत हस्त दड़ि दिया हस्ती करे बन्दी

---

१ अपने हाथों २ निमत्रण न दो ३ मृत्यु ४ काला नाग का विष ५ अपार
६ खामोशी, चुप्पी ७ पागल हाथी ८ पालतू हाथी ९ सारे करतब १० रस्सियों से ।

चरत जहाँ नित गज - समुदाई * खाद्य - द्रव्य बहु राखेउ जाई
लोभ-अहार[1] कण्ठ करि आगे * रज्जु - फन्द परि फसत अभागे
खल-संगति जिमि सज्जन-नासू * तव पातक तिमि लंक-विनासू
कथन - बिभीषन सुनि लंकेसा * अतिशय कोप प्रमत्त अशेसा
कटकटात पुनि शब्द कराला * करि हुंकार कहत दशभाला
रे दुर्मति ! गर्जत दससीसा * यम के फन्द लखत तव सीसा
चौदह चौयुग आयु हमारी * कबहुँ न केहु कटु बैन उचारी
मम सन, सुर-सुरनाथ-विवादा * सके न कहि ते वचन-प्रमादा

दो० छोटे मुख कहि दुर्वचन, लहै कोप-दसभाल ।
तड़कि आय भुइँ, तमकि पुनि, कर लिय खड्ग कराल ॥ ८१ ॥

पद-अघात तेहि डगमग लंका * तासु कोप लखि दनुज ससंका
दसमुख बेगि चलेउ पुनि धाई * अनुज-हीय हनि लात जमाई
धरनि अचेत विभीषन पाता * जिमि समूल छिति विटप प्रपाता
निरखि निसिचरन अति दुख पावा * हाहाकार दनुज - दल छावा
पुनि सुर-सुरपति देखि जुड़ाने * कहत परस्पर आनँदसाने
बन्धु विभीषन पाद प्रहारी * कुशल न, निश्चित मरन सुरारी[2]

येखानेते हस्ती सब चरे निरन्तर * भक्ष्य द्रव्य उपहार राखये विस्तर
खाइवार लोभे हस्ती गला बड़ाइल * गलाय लागिया दड़ि सवाइ पड़िल
दुष्टेर मिशाले हय शिष्टेर बन्धन * सेइ मत तव पापे मजे पुरीजन
जेइ मात्र ए कथा कहिल विभीषन * महाकोपे उन्मत्त हइल दशानन
दन्त कड़मड़ि करि छाड़िया हुंकार * विकट निनादे कहितेछे आरबार
एकि एकि एकि रे दुर्म्मति विभीषन * धरियाछे बुद्धि तोर चिकुर शमन
चौद्द चतुर्युग हैल आमार जनम * इति मध्ये शुनि नाइ हेन दुर्व्वचन
करियाछि कलह इन्द्रादि देवसने * केह पारे नाइ कहिवारे कुवचने
ताहा शुनाइलि तुइ क्षुद्र हये मोरे * किन्तु तार फल एइ देखाइ रे तोरे
एत कहि खरतर खड्ग करि करे * लम्फ दिया पड़िलेक भूतल उपरे
तार पदाघाते लंका करे टलमल * क्रोध देखि अति भीत राक्षस सकल
तबे सेइ दशानन महावेगे चले * पदाघात कैला विभीषण वक्षःस्थले
विभीषण अचेतन हइया ताहार * पड़िल धरणीतले छिन्न - तरु - प्राय
ताहा देखि यावतीय निशाचरगन * हाहाकार करे सबे अति दुःखिमन
ताहा देखि देवगण आर सुरपति * परस्पर कहितेछे एसव भारती

---

१ भोजन की लालच में २ देवताओं का शत्रु रावण ।

निज अपमान न रामहिं चिन्ता ❋ भक्त - अनादर दुसह अनन्ता
कहि-सुनि, इत प्रहस्त पुनि कीना ❋ सिंहासन दसमुख आसीना
कर सों खड्ग सचिव लै जाई ❋ कोष[1] सौंपि दिय अन्त बराई[2]
सचिव-विभीषण निसिचर चारी ❋ तेहि सम्हारि आसन बैठारी
सकल सभा यहि बिच्च जड़रूपा ❋ निरखत सब पुत्तली[3] सरूपा

विभीषण का लंका-त्याग

पुनि कछु क्षण विवेक उर धारी ❋ बन्धु विभीषण गिरा उचारी
महाराज ! अपकर्स तुम्हारा ❋ किञ्चित खेद न मैं उर धारा
अतिशय विभव-मत्त-जन-रीती ❋ जग तिन विदित सहज दुर्नीती
एक, तात ! मोहिं खेद अपारा ❋ लेहुँ विदा तव करि परिहारा[4]
उर मम एक अनन्त कलेसू ❋ दनु - कुल मरै पाप - लंकेसू

दो० कहेउ दसानन कोपि सुनि बन्धु बखानत नीत ।
　　जाति-नेह तव प्रकट भल, धन्य ! जाति के मीत ॥ ८२ ॥

जाति-विपति लखि तोहिं हुलासू ❋ जाति-हृदय तव मोहिं प्रकासू
मानी-धनी जाति महँ कोई ❋ निरखत ताहि दुसह दुख होई

गेल गेल गेल एवे निश्चित रावण ❋ विभीषण अंगे करि चरण अर्पण
वरञ्च सहेन राम निज तिरस्कार ❋ भक्त अपमान सह्य ना हय ताँहार
एखाने प्रहस्त उठि धरि दशानने ❋ सान्त्वना करिया वसाइल सिंहासने
हस्त हैते काड़िया लइल खड्गखान ❋ कोषे आच्छादिया राखिलेन अन्यस्थान
विभीषण मंत्री चारिजन निशाचर ❋ तुलि बसाइल ताँरे आसन उपर
क्षण काल पर्य्यन्त तावत् सभाजन ❋ रहिला निस्तब्ध ह'ये पुत्तली जेमन

विभीषणेर लंकात्याग

विभीषण क्षणकाल करि विवेचन ❋ पुनर्व्वार रावणे कहेन ए वचन
महाराज, करिले जे कर्म्म आचरन ❋ इहाते दुःखित किछु नहे मोर मन
ऐश्वर्य्य - मदेते मत्त जारा अतिशय ❋ ताहादेर एइ रूपे दुःखभाव हय
इहातेउ नाहि मोर वड़ दुःख आर ❋ चलिलाम आमि तोमा करि परिहार
एकमात्र खेद एइ रहि गेल मने ❋ मजिल राक्षस-कुल तोमार दूषने
हेन वाणी शुनि अति क्रुद्ध लंकापति ❋ कहितेछे पुनर्व्वार विभीषण प्रति
जानि जानि विभीषण, ज्ञातिर हृदय ❋ ज्ञातिर विपद् देखि आनन्दित हय
ज्ञातिमध्ये केह यदि हय धनी सुखी ❋ ताहा देखि अन्य ज्ञाति हय मनोदुःखी

१ म्यान में　२ हटा दिया　३ जड़ मूर्ति　४ परित्याग ।

यदपि मरन-निज, तबहुँ सुखारी ❋ किन्तु न विभव-जाति रुचिकारी
कपटाचार, नेह दरसाई ❋ ढूँढ़त छिद्र जहाँ लौं पाई
रञ्च दोष पावत प्रतिकूला ❋ करत उपाय विनास-समूला
विप्र-स्वभाव सहज तप-शीला ❋ वनितन चपल सहज जिमि लीला
गो-धन दुग्ध विदित सब काऊ ❋ जाति-द्रोह तव सहज स्वभाऊ
करु तजि लंक गमन छन अबहीं ❋ तव बिन सकल निरापद रहहीं
नीति शास्त्र इमि ज्ञान बखाना ❋ सुनु शठ! प्रस्तुत सकल प्रमाना
उचित संग-रिपु अथच[1] भुजंगा[2] ❋ रिपु-सेवक जनि समुचित संगा
यदपि अनुज, तैं रिपु-अनुकूला[3] ❋ तव सत्संग सदा प्रतिकूला
अतः गमन करु तजि मम देसू ❋ विलमत[4] अतिशय होय कलेसू
सुनि मतिमान विभीषण एही ❋ पुनि सविवेक उतर इमि देही
ठकुरसुहाती[5] सुलभ सदाहीं ❋ कटु-हित कथन-श्रवन जग नाहीं[6]
निश्चय तव यमपुर पग धारन ❋ ममहित-वानि अरुचि यहि कारन
अरुन्धती[7] दृग तर जनि आवै ❋ सुहृद-वचन श्रवनन नहि भावै

दो० गहति नासिका - रन्ध्र जनि गन्ध - दीप - निर्वान ।
एते लच्छन - युक्त जे, ते मानव म्रियमान[8] ॥ ८३ ॥

वरञ्च आपन मृत्यु पारे सहिवारे ❋ ज्ञातिर ऐश्वर्य्य किन्तु सहिते ना पारे
ताहे पुनः कापट्य करिया प्रकाशन ❋ निरन्तर छिद्र तार करे अन्वेषन
पावा मात्र कोन छिद्र विविध प्रकारे ❋ आयोजन करे समूलेते नाशिवारे
स्वभावतः रहे यथा तपस्या ब्राह्मने ❋ चापल्य नारीते, यथा दुग्ध गाभीस्तने
सेइ रूप निरन्तर राखिबे प्रत्यय ❋ ज्ञाति हैते स्वभावतः थाके महाभय
जाह जाह लंका छाड़ि तुमि एइ क्षने ❋ तुमि गेले आमरा थाकिब सुखी मने
इहाते प्रमाण हय नीति शास्त्र ज्ञान ❋ तार अर्थ कहि आमि तव विद्यमान
वरञ्च भुजंग किवा शत्रु संगे रवे ❋ शत्रु सेवि-जन-सहवासी नाहि हबे
एके तुमि ज्ञाति, ताहे शत्रु-भक्तिमान ❋ तुमिह थाकिते मोर ना हवे कल्यान
अतएव जाह तुमि छाड़ि मोर देश ❋ विलम्ब हइले पावे अतिशय क्लेश
एत कथा शुनि विभीषण महामति ❋ कहिते लागिल पुनर्व्वार ए भारती
प्रियवादि-जन राजा, सर्व्वत्र सुलभ ❋ अप्रिय पथ्येर वक्ता श्रोताउ दुर्लभ
निश्चय धरेछे तव चिकुरे शमन ❋ ताइ मोर हित वाक्य ना कैले ग्रहन
किवा अरुन्धती, किवा सुहृद वचन ❋ प्रदीप-निर्व्वाण-गंध किवा दुःसहन

१ अथवा २ सर्प ३ शत्रु से सहानुभूति रखनेवाला ४ ठहर कर समय विताने से ५ चापलूसी ६ भली किन्तु कड़ुई बात कहने-सुननेवाले दोनो दुर्लभ हैं ७ अरुन्धती नक्षत्र ८ मरने के समीप ।

उर मम कथन धरेउ, लंकेसू ! ※ विलपत अनुज तजेउ तव देसू
यदपि छोभ मोहिं बन्धु-बियोगू ※ दहकति सदन तजत बुध लोगू[1]
तात ! कौन जो मम अपमाना ※ अग्रज समुझि माष[2] जनि माना
जो कोउ अन्य करत अपकाजू ※ समुचित उतर देत, दनुराजू ![3]
कहेउँ सोचि मैं राजु - भलाई ※ प्रतिफल प्रभु मोहिं लात जमाई
तव पद तजि रघुपति गहि चरना ※ यहि छन लीन अकिञ्चन[4] सरना
अरज एक सुनु मम, भट ! मानी ※ अन्त समय सुमिरेउ मम वानी
कहैं विभीषण दनुजन हेरी ※ चलै संग मम रुचि जेहि केरी
जेहि उर जीवन-साध समाई ※ चलि रघुनाथ लेय सेवकाई
कहि इमि बन्दि निसाचरराई ※ उठि पथ-गगन विभीषण जाई
सो लखि सचिव-विभीषन चारी ※ तेहि पद, सहित मोद, अनुसारी
अनिल, अनल, सम्पाति सहोदर ※ भीमादिक सुत-मालि निसाचर
लै तिन संग चले जहँ जननी ※ कथा विनीत विभीषन वरनी
अनुमति-मातु लीन शिर नाई ※ जहँ प्रिय बसति सदन तहँ जाई
'सरमा' नाम तियहिं उर लाई ※ सहित प्रेम सब कथा सुनाई

नाहि देखे नाहि शुने नाहि पाय घ्रान ※ हेन दशा यार, तारे मृत्यु सन्निधान
एइ कथा मने रेखो भाइ लंकेश्वर ※ कान्दिया चलिल तव कनिष्ठ सोदर
बहु दु.खे करिलाम तोमारे वर्ज्जन ※ दह्यमान गृह यथा त्यजे विज्ञजन
करिले तुमि जे मोरे यत परिभव ※ ज्येष्ठ व'लि सहिलाम ताहा आमि सब
अन्य कोन जन यदि करित ए काज ※ देखाताम तारे फल निशाचरराज
व'लिलाम राज्यरक्षा हेतु ये वचन ※ से कारणे हइलाम लाथिर भाजन
तोमार चरण छाड़ि रामेर चरन ※ शरण लइल आजि एइ अकिञ्चन
एक कथा व'लि आमि भाइ हे रावन ※ मृत्युकाले स्मरिउ हे आमार वचन
शुन शुन मोर कथा ओहे वन्धुगन ※ चल मोर संगे यदि हय कारो मन
यद्यपि वासना हय जीवन राखिते ※ चल तवे श्रीरामेर चरण सेविते
एत कहि रावणेरे करिया वन्दन ※ उठिया आकाश पथे चले विभीषन
ताहा देखि ताँहार अमात्य चारि जन ※ आनन्दे करिल ताँर पश्चाते गमन
अनिल अनल भीम सम्पाति अपर ※ एइ चारिजन मालि - सन्तान सोदर
ताहादेर सहित जाइया विभीषन ※ मातार निकटे सब कैला निवेदन
ताँर अनुमति ल'ये प्रणमिला ताँरे ※ तार पर गेल निज भवन माझारे
निज भार्य्या सरमाके निकट डाकिया ※ कहिते लागिल तारे प्रणय करिया

---

१ वुद्धिमान् २ वुरा ३ हे निशिचरनाथ ! ४ तुच्छ ने ।

प्रिय! उर धारि शरन-रघुकेतू * चलेउँ चारि मैं सचिव समेतू

दो० सिय समीप रहि सर्वदा, जो सेवहु मन लाय।
सीय-अनुग्रह-सुफल मोंहि, लेयँ राम उर लाय॥
सरमा सिय-अनुरागिनी, अतुल शील गुन खानि।
आयसु लहि, पुनि विदा किय, पतिहि जोरि जुग पानि॥ ८४॥

निज शस्त्रास्त्र विभीषण लीन्हा * सचिवन सहित गमन पुनि कीन्हा
पाद - प्रहार कुतूहल रचना * रावन त्यागि विभीषन-गमना
कृत्तिवास सो गाय बखाना * भक्त सभक्ति सुनत धरि ध्याना

विभीषण का कुवेरालय-गमन और कुवेर द्वारा उपदेश

गगन-पन्थ गमनत तजि लंका * सचिवन प्रकट करत निज शंका
प्रस्तुत विपति निरखि यहि काला * कौन अनादर मैं दशभाला
जो अब सरन लहौं रघुकेतू * अपजस अबुध[1] देयँ यहि हेतू
अवसर टारि चलहिं जहँ रामा * दशमुख लहै जबहिं यमधामा
तब लौं बसहिं कतौं[2] वन जाई * राम-पदुम-पद ध्यान लगाई
करि सलाह संयम उर धारा * थिर न चपल मन क्लेश अपारा

प्रिये, आमि रामचन्द्र शरण लइते * चलिलाम एइ चारि अमात्य सहिते
तुमि जानकीर काछे थाक निरन्तर * करिबे ताँहार सेवा हइया तत्पर
तिन यदि अनुग्रह करेन तोमारे * तबे राम अंगीकार करिबेन मोरे
सुशीला सरमा जानकीते भक्तिमती * 'जे आज्ञा' बलिया ताहे दिला अनुमति
तबे विभीषण निज अस्त्र-शस्त्र निया * यात्रा कैला चारि मंत्री संगेते करिया
विभीषणे पदाघात अपूर्व्वकथन * रावणेरे त्यजिया चलेन विभीषन
कृत्तिवास रचिलेन गीत रामायन * भक्तिभावे शुन सब रामभक्तजन

विभीषण-कुवेर सम्वाद

लंका छाड़ि व्योमपथे जाइते जाइते * मंत्रिगणे विभीषण लागिला कहिते
उपस्थित विपद् करिया निरीक्षण * करिलाम आमिह अग्रजे उपेक्षण
ताहा यदि राम काछे करि हे गमन * अख्याति करिबे मोर यत अज्ञजन
अतएव मने करि, एबे ना जाइबे * रावण विनाश ह'ले प्रस्थान करिबे
एक्षणे थाकिया कोन निर्ज्जन कानने * श्रीराम-चरणपद्म ध्यान करि मने
एइ परामर्श करि, किन्तु निज मन * सुस्थिर करिते नारि पाइया जातन

१ नासमझ लोग २ कही अन्यत्र।

मन आतुर सेवहिं पद-रामा ※ लहत न चंचल मन विश्रामा
किमि कर्तव्य, होत जनि निश्चय ※ कहौ सचिव! मेटौ उर संशय
युक्ति बहोरि एक उर आई ※ करहु विचार कहउँ समुझाई
अग्रज[1] मम कुबेर जो भ्राता ※ परम सुशील शुद्धमति ज्ञाता
अकथ कुबेर अतुल गुनरासी ※ जासु सखा शंकर अविनासी
लेहिं सीख चलि, आयसु पाई ※ करहिं यथाविधि, अस मन आई
युक्ति-विभीषन सबन सुहाई ※ निश्चय कीन सचिव-समुदाई

दो० धनपति[2] आयसु लेन हित, गमने पन्थ - अकास ।
सुदित विभीषण-सचिवगन, पहुँचे गिरि कैलास ।। ८५ ।।

तहँ शिवलोक, शम्भु धरि ध्याना ※ जानि गौरि प्रति सकल बखाना
अनुज विभीषन दससुख केरू ※ जात मिलन जहँ सुहृद कुबेरू
सिय समर्पि पुनि राम-मिताई ※ अनुज-सीख रावनहिं न भाई
कीन अनादर अति लंकेसू ※ यहि कारन आगम यहि देसू
यदपि विभीषन - उर श्रीरामा ※ संशय चित्त, न उर विश्रामा
जेहि विधि संसय होय निवारन ※ प्रिय कुबेर ढिग, किय पगधारन
हरैं कुबेर न संसय - हेतू ※ तरैं विभीषन जनि भव - सेतू

राम-पाद-पद्म मन करिते सेवन ※ चञ्चल हयेछे बड़ ना माने वारण
अतएव कि करिब, ना हय निश्चय ※ तोमा सवे कह, इथे कर्त्तव्य कि हय
करितेछि आमि इथे परामर्श आर ※ ताहाओ कहि ये, शुनि करह विचार
मोदेर अग्रज भ्राता हन धनपति ※ सुशील परम विज्ञ अति शुद्धमति
कि कहिब आर ताँर गुणेर विस्तार ※ सखा हयेछेन शम्भु गुणेते जाँहार
ताँरे जिज्ञासिले या करेन आज्ञापन ※ ताहाइ करिब, एइ लय मोर मन
विभीषण वाणी शुनि चारि मंत्री कय ※ करेछेन एइ युक्ति सुन्दर निश्चय
एतेक वचन शुनि आनन्दित मन ※ व्योमपथे कैलासे चलिला विभीषन
एखानेते निज स्थाने थाकि पशुपति ※ सकल वृत्तांत जानि कन शिवा प्रति
शुन प्रिये, रावण अनुज विभीषन ※ करितेछे सखार निकटे आगमन
सीता फिरि दिया राम संगे मिलिवारे ※ व'लेछिल सेइ रावणेरे वारे वारे
सेह ताहा ना शुनि करेछे अपमान ※ एइ लागि तारे छाड़ि आसिछे एखान
हइयाछे तार मन श्रीरामे भजिते ※ किन्तु करितेछे पुनः नाना शंका चिते
एखन संशयच्छेद करिवार आशे ※ आसितेछे मोर प्रिय सुहृदेर पाशे
यदि सखा ना पारेन बुझाइते तारे ※ तवे पड़िवेक सेइ संकट सागरे

१ बड़ा भाई २ कुबेर ।

यहि कारन चलि स्वयं बुझाई * जेहि विधि लेय सरन - रघुराई
यदि कोउ राम-चरन अनुरागा * अतिव, उमा! मम उर सुखपागा
जीव असंख्य बसत यहि लोकू * पर हित विरल[1] व्यथा पर शोकू
विरल धर्मरत हितुन - अनेका[2] * धर्मिन बिच मुमुक्ष[3] जन एका
कोटि मुमुक्ष, मुक्त-जन कोऊ * मुक्तन राम-भक्त कोउ-कोऊ
यहि विधि रामभक्त यदि एका * लहत मुक्ति लहि दरस अनेका
मम अभिलाष सदा यहि हेतू * सुमिरै विश्व चरन - रघुकेतू
गहै विभीषन पद - रघुराई * सकल तासु तौ बिपति नसाई
तौ चलि अबहिं निवारइँ[4] संशय * जेहि विधि लहै राम-पद निश्चय

दो० पंचानन मत धारि इमि, 'नन्दिहिं'[5] आयसु दीन ।
साजि 'वृषभ' तत्काल तहँ, नन्दी प्रस्तुत कीन ।। ८६ ।।

पशुपति बेगि उमा-कर[6] लीना * वृष वाहन दोउ भये असीना
तेहि छन उमा-उमापति शोभा * निरखि न केहि मन उपजत लोभा
सहित सभासद संभु सवारी * सखा कुबेर - निवास पधारी
निरखेउ आवत दूरि महेसा * गमने स्वागत हेत धनेसा[7]

अतएव चल, जाब आमिओ सेथाय * राम काछे पाठाइते हइबे ताहाय
यदि केह रामचन्द्र करये आश्रय * तबे मोर कतइ परमानन्द हय
देख देख संसार असंख्य जीवमय * तार मध्ये हिते रत केह केह हय
तार कोटि मध्ये एक जन धर्म्मपर * तार कोटि मध्येते मुमुक्ष एक नर
तार कोटि मध्ये एक जन हय मुक्त * तार कोटि मध्ये एक रामभक्ति युक्त
हेन राम भक्त यदि हय कोन जन * ताँर गुणे कत लोक पाय विमोचन
अतएव सतत वासना मोर मने * भजुक सकल लोक श्रीराम चरने
ताहे विभीषण गेले राम सन्निकटे * हइबे ताँहार कत हित ए संकटे
अतएव खण्डि तार सकल संशय * पाठाइब प्रभुकाछे अद्यइ निश्चय
एत कहि नन्दीरे कहेन त्रिलोचन * शीघ्र साजाइया वृषे कर आनयन
तव नन्दी गिया वृषे करिया साजन * करिलेक प्रभुर अग्रेते आनयन
तवे महादेव उठि शिवा-करे धरि * आरोहण करिलेन वृषेर उपरि
हइल जेरूप शोभा सेकाले ताँहार * ताहा भावि मन सुखी ना हय काहार
एइ रूपे पार्षद सहित पञ्चानन * गमन करिला निज सखार भवन
दूर हैते ताँरे निरखिया धनपति * अग्रसर हइया आसिला शीघ्रगति

१ कोई-कोई २ अनेक परोकारियों मे ३ मोक्ष चाहनेवाला ४ दूर करे ५ शिव का पार्षद नन्दी ६ पार्वती का हाथ ७ कुबेर ।

वृष सों उतरि वृषाकपि[1] धाई ❊ कौतुक लिय कुबेर लपिटाई
दोउ कर[2] दुहुन नेह सन लीना ❊ आसन दिव्य भये आसीना
अखिल पार्षद, उमा भवानी ❊ समुचित लिय आसन सुख मानी
युगुल मित्र धनपति पुनि शंकर ❊ करत सप्रेम अलाप परस्पर
तबहिं विभीषन सचिवन लीन्हे ❊ गिरि कैलास आय पग दीन्हे
कनक दिव्य मणि रचित ललामा ❊ विश्कर्मा निर्मित छबिधामा
पुरी विभीषन कीन प्रवेसा ❊ चले, सभा जहँ जुरी धनेसा[3]
दूरि विभीषन शंकर देखी ❊ कहत कुबेरहिं मोद विशेषी
रावन-अनुज सधर्म विभीषन ❊ करत तात ! तव तीर आगमन
सिय समर्पि पुनि राम मिताई ❊ न्याय सीख रावनहिं बुझाई
किय अपमान कुपित लंकेसू ❊ इमि तजि लंक इतै[4] तव देसू
राम-सरन तेहि जदपि सुहावा ❊ किन्तु हृदय कछु संसय छावा

दो० तव सम्मति हित आगमन, हरहु विभीषन-पीर ।
धनपति ! बेगि सुबुद्धि दै, पठवहु रघुपति तीर ॥ ८७ ॥

मिलै विभीषन चलि रघुराई ❊ रामहेतु अति मंगलदायी
रघुपति-सरन लहत, दिन फिरहीं ❊ सरनागतहिं दनुजपति[5] करहीं

वृषाकपि वृष हैते नामिया भूतले ❊ आलिंगन करिला कुवेरे कुतूहले
तबे दुइ जने कर धराधरि करि ❊ बसिला जाइया दिव्य आसन-उपरि
शिवा आर यावतीय शिवभक्तगन ❊ यथायोग्य स्थानेते बसिला सुखिमन
तबे पशुपति निज सखार सहित ❊ करिलेन प्रेम आलापन समुचित
हेनकाले चारि मन्त्रि सने विभीषन ❊ करिलेन कैलास भूधरे आगमन
दिव्य मणि सुवर्णे से रचित नगर ❊ विश्वकर्म्मा विनिर्म्मिल परम सुन्दर
से नगरी माझे प्रवेशिया विभीषन ❊ करिलेन कुबेरेर सभाय गमन
दूर हैते विभीषणे देखि पशुपति ❊ कहिलेन सुखिमने कुबेरेर प्रति
देख सखे, रावण अनुज विभीषन ❊ करितेछे तोमार निकटे आगमन
एइ क'हेछिल रावणेरे न्यायरीते ❊ सीता फिरि दिया राम-सहित मिलिते
ताहा ना शुनिया से करेछे अपमान ❊ एइलागि लंका छाड़ि आसिछे एस्थान
इच्छा हइयाछे रामे करिते आश्रय ❊ किन्तु हृदयेते आछे किंचित संशय
इहा लागि आसितेछे तोमा जिज्ञासिते ❊ पाठाओ इहारे राम निकटे त्वरिते
इह सेखानेते गेले विविध प्रकार ❊ इहवेक श्रीरामचन्द्रेर उपकार
इह यावामात्र सखा करि रघुवर ❊ इहारे करिबे राजा राक्षस-उपर

---

१ शंकर २ हाथ ३ कुबेर ४ इधर तुम्हारे यहाँ ५ लंका का राजा ।

जबहिं बुझावत शम्भु कुबेरा * तेहि छन दुहुन विभीषन हेरा
मोद अपार अनन्द - विभोरा * वरनत निरखि सचिवगन ओरा
अहह धन्य! मम धन्य कपाला[1] * सभा विराजत शम्भु कृपाला
देवन सतत दरस अभिलाषा * चरन, योगिजन जेहि चित राखा
पुनि, मुनि परम तत्व के ज्ञाता * निरवधि[2] पद सभक्ति प्रणिपाता
लहेउँ सहज शिव-दरस पुनीता * पूर्ण मनोरथ आजु अतीता[3]
यहि विधि दनुज-शिरोमनि आगे * चलि पद दुहुन गहेउ अनुरागे
मृत्युञ्जय[4] पुनि आशिष दीन्हा * अनुज कुबेर अलिंगन कीन्हा
दनुज[5] विराजत आयसु पाई * धनपति पुनि पूछत कुसलाई
पन्थ समोद पार किय, ताता * कहु तव लंक सुखी सब भ्राता?
बदन मलीन बिरस तव गाता * कहु मन तव विषाद किमि जाता
धनपति के सुनि वचन विभीषन * अति विनीत पुनि करत निवेदन
प्रभु! सुख सहित पन्थ मम बीता * यहिं छन लौं सब बन्धु सप्रीता
किन्तु उपस्थित दुख यहि काला * तेहि कारन प्रस्तुत तत्काला

दो० हरि लायेउ दसकंध सिय, प्रभु-चर पवनकुमार।
आय भेंटि सिय, लंक पुनि जारि कीन सब छार ॥ ८८ ॥

एइ रूप कुवेरे कहेन पञ्चानन * देखिला दूरेते थाकि ताँरे विभीषन
ताहे ह'ये अतिशय आनन्दित मति * कहिते लागिला निज मंत्रिगण प्रति
एकि एकि देखियाछ! मोर भाग्योदय * सभा माझे बसिया कृपालु मृत्युञ्जय
याँहारे देखिते वाञ्छा करे देवगण * योगी सब ध्यान करे याँहार चरण
मुनिगण परमार्थ तत्व जानिवारे * भक्तिभरे निरवधि सेवा करे याँरे
हेन प्रभु देखिते पाइनु अयतने * मनोरथ परिपूर्ण हैल एत दिने
एइरूप कहिते कहिते आगे गिया * पड़िलेन ताँहादेर पदे लोटाइया
महादेव आशीर्व्वाद कैला तार प्रति * आलिंगन करिला सादरे धनपति
तबे आज्ञा ल'ये बसिलेन विभीषन * कुबेर ताहार प्रति कहेन वचन
आसियाछ पथे सुखे भ्राता विभीषण * कुशले आछय तव सब बन्धुगण
देखितेछि म्लान किछु तोमार बदन * कह कह कि कारणे चिन्तायुक्त मन
कुबेरेर एइ वाक्य करिया श्रवण * निवेदन करिते लागिला विभीषण
करियाछि प्रभु, पथे सुखे आगमन * सम्प्रति आछये सुखे सब बन्धुजन
किन्तु एक दुःख हइतेछे उपस्थित * इहा लागि आइलाम एखाने त्वरित
दादा दशानन रामचन्द्रेर भार्य्यारे * हरिया आनियाछेन लंकार भितरे
ताँर दूत ह'ये आसिछिला हनूमान * सीता भेटि गियाछेद हिया लंकाखान

---

१ भाग्य २ सर्वदा ३ बहुत दिनों का ४ शिव ५ विभीषण।

रघुपति लै कपि कटक अपारा ❋ लंक-सिन्धु-तट कीन उतारा
बन्धुहिं मैं बहुबिधि समुझाई ❋ लहौ, सीय दै, राम-मिताई
एक न मानि अनादर कीन्हा ❋ मैं तजि लंक सरन तव लीन्हा
यहि छन मम कर्तव्य, धनेसू ! ❋ मैं तव सरन, करहु निर्देसू
सुनि कुबेर बोलत इमि बानी ❋ विदित सकल मोहिं प्रथम[1] कहानी
तदपि, सुनहुँ तव मुख, अभिलाषा ❋ तात ! सकल तुम समुचित भाषा
संसय तजि गमनहु अविरामा[2] ❋ जहँ सुग्रीव लखन प्रभु रामा
मिलत न बेर, राम रघुनाथा ❋ तुमहिं सखा सम करहिं सनाथा
अर्पहिं सकल निसाचर-देसू ❋ करि अभिषेक[3] करहिं लंकेसू
हनि दसकंध सबन्धुन, रामा ❋ तुमहिं राजु दै, गमनहिं धामा
यहि कारन तजि सब सन्देहू ❋ रघुपति-चरन-गमन मन देहू
संसय तजि, ह्वै राम सहाई ❋ करहु विनास दनुज-समुदाई
सुर-द्विज-धर्म विरुद्ध दसानन ❋ मारि, त्रिलोक बनहु सुख-कारन
लहै विश्व पुनि सुख-सन्तोषू ❋ यहि विधि लहहु अमरगन-तोषू[4]
ऋषिगन आसिष करहिं प्रदाना ❋ त्रिभुवन होय सुयश तव गाना

सम्प्रति से रामचन्द्र ल'ये कपिगन ❋ करेछेन सागर कूलेते आगमन
ताहा जानि कहिलाम आमिहि दादारे ❋ सीता फिरि दिया राम संगे मिलिवारे
ताहा ना शुनिया मोर कैला अपमान ❋ ए लागि त्यजिया लंका आइनु एस्थान
सम्प्रति उचित हय मोर कि करण ❋ याहा आज्ञा कर, आमि लइनु शरण
विभीषण-वाणी एइ शुनि धनपति ❋ कहिवारे आरम्भ करिला तार प्रति
इहा मोर जानि भ्राता, वहु पूर्व्व ह'ते ❋ तबु जिज्ञासिनु तव वदने शुनिते
कहियाछ जाहा तुमि ताहा समुचित ❋ ना हइवे इथे कोन प्रकारे चिन्तित
जाह जाह एइक्षणे करह गमन ❋ जेखाने आछेन राम सुग्रीव लक्ष्मन
तुमि जावामात्र रामचन्द्र वरावर ❋ सखा करिबेन तोमा प्रभु रघुवर
आर सेइ निशाचर राज्य अधिकारे ❋ करिवेन अभिषेक अद्यइ तोमारे
सवान्धवे रावणे करिया विनाशन ❋ तोमा राज्य दिया राम जावेन भवन
अतएव त्यजि तुमि सकल सन्देह ❋ श्रीरामेर निकटे जाइते मन देह
राम संगे मिलिया सकल निशाचर ❋ संहार करह गिया त्यजि सव डर
रावण अधर्म्मी देव-द्विज द्रोहकारी ❋ त्रिभुवन सुखी कर ताहारे संहारि
हइवेक तबे एइ विश्वेर मंगल ❋ तोमारे हवेन तुष्ट अमर सकल
आशीर्व्वाद करिबे तोमारे ऋषिगन ❋ गाइबे तोमार यश ए तिन भुवन

---

१ पहले से ही प्रकट थी २ तुरंत ३ राज्यतिलक ४ देवताओं की तृप्ति ।

सदा विभीषन रघुपति-दासा ॐ शिव-कुबेर, कवि[1] कथा प्रकासा

विभीषण को शिव-उपदेश

दो० सीस लचाये विभीषन, सुनत धनद[2] के बैन।
संसय लखि शिव दयामय बोले करुनाऐन ॥ ८९ ॥

अग्रज-बचन तुमहिं परमाना[3] ॐ तजहु अकारन संसय नाना
निज पुनि साधि विश्व कर हेतू ॐ अबहिं गमन करु जहँ रघुकेतू
आशुतोष[4], सुनि बैन, विभीषन ॐ सीस नाय इमि करत निवेदन
प्रभु कुबेर पुनि कथन तुम्हारा ॐ नाथ! न दुलखि[5] सकत संसारा
करहुँ निवेदन चलि जहँ रामा ॐ प्रस्तुत, त्यागि बन्धु-धन-धामा
संसय उर अति, किन्तु महेसा ॐ करहु दयामय दूरि कलेसा
यहि अवसर रघुपति पहँ जाई ॐ जग निन्दा चहुँ लोक-हसाई
विपति परे तजि लंक-अधीपा ॐ गयेउ विभीषन शत्रु समीपा
तदुपरि[6] राम देयँ अभिषेकू ॐ सतत[7] विश्व अपजस-अतिरेकू[8]
मैं परि लोभ राज की आसा ॐ अग्रज सकुल सबन्धु विनासा
यहि कारन यहि समय बराई[9] ॐ आगे करहुँ यथायसु[10] पाई

रामभक्त विभीषण सदा राम दास ॐ शिव-कुवेरेर कथा रचे कृत्तिवास

विभीषणेर प्रति शिवेर उपदेश

कुवेरेर मुखे शुनि एतेक वचन ॐ अधोमुख हइया भावेन विभीषन
ताहा देखि परम दयालु शूलपानि ॐ कहिते लागिला तार अभिप्राय जानि
भावितेछ अकारणे किवा विभीषन ॐ कर निज-अग्रजेर वचन पालन
जाह जाह श्रीरामेर निकटे त्वरित ॐ करह निजेर आर संसारेर हित
विरूपाक्ष-वाणी एइ शुनि विभीषन ॐ कृतांजलि हइया करेन निवेदन
जे आज्ञा करेछ प्रभु, तोमा दुइ जन ॐ कार शक्ति करिवारे इहार लंघन
आमिह श्रीराम काछे जाइब बलिया ॐ आसियाछि गृह-धन-बान्धव त्यजिया
किन्तु ताहे अनेक संसय लय मन ॐ अनुग्रह करि ताहा करह खण्डन
आमि यदि राम काछे जाइ एइ क्षन ॐ सब करिबेक लोक आमार निन्दन
कहिवेक, रावणेर विपद देखिया ॐ तारे छाड़ि विभीषण गेल दुष्ट हैया
ताहे पुनः यदि मोरे राज्य देन राम ॐ तबे दोष घुषिवे संसारे अविराम
बलिवे सकले, विभीषण राज्य लोभे ॐ बधिलेक सबान्धवे अग्रजे अक्षोभे
अतएव एक्षणे जाइते नाहि मन ॐ परेते करिबे, जे करिबे आज्ञापन

---

१ कृत्तिवास ने २ कुबेर ३ प्रमाण, पालनयोग्य ४ महादेव ५ नही काट सकता ६ उसके ऊपर ७ सदा के लिए ८ असीम ९ बचाकर १० आदेशानुसार।

इमि सुनि, विरस विभीषन देखी * कहत शंभु सविनोद विशेषी
अहो! विभीषन अचरज बानी * किमि संसय तव मति बौरानी
भ्रम तजि करु मम वचन प्रमाना * राम-भजन सब काल समाना
प्रभु कर रूप न तैं पहिचाना * 'मानव' समुझि बिबस अज्ञाना
यहि भ्रम संसय नाना जाती * सुनु कछु रूप राम जेंहि भाँती

दो० राम सत्य-सुख ज्ञान-घन वेद-जतिन परमेश[1]।
जीवाधार अचिन्त्य सो कर्ता जगत अशेष॥
परम शक्ति, स्थिति-प्रलय-सृष्टि सकल-आधार।
अविनाशी भगवान प्रभु, महिमा-राम अपार॥ ९०॥

कहि कोउ 'ब्रह्म' अराधन करहीं * 'नारायण' कहि कोउ अस्मरहीं
तीनि लोक-रचना अधिकारी * दुख निवारि भक्तन सुखकारी
तासु भजन जनि काल-विधाना[2] * जब जेंहि रुचि सुमिरै भगवाना
भक्तिभाव-रस जासु अनूपा * सुख-संसार तजत यहि रूपा
तव सुत-तीय-बन्धुजन-त्यागा * किमि उपजत विन हरि-अनुरागा
यहि विधि कतहुँ न संशय-हेतू * चलि करु भजन जहाँ रघुकेतू
जासु दरस कामना हमारी * दैवयोग सो नयन अगारी
राम प्रतच्छ दरस सुख त्यागी * सहन कलेस अन्त केंहि लागी[3]

इहा कहि विभीषण विरत हइल * हासि हासि शिव तारे कहिते लागिल
एकि एकि विभीषण, बड़ चमत्कार * हइतेछे ए संशय केन वा तोमार
कहितेछि मोरा याँरे करिते आश्रय * ताँहार भजने नाहि समय निर्णय
बुझि रामे आछे तव 'नर' बलि ज्ञान * इहा लागि करितेछ संशय-विधान
हेन बोध अतिशय अनुचित हय * शुन शुन किछु ताँर स्वरूप निर्णय
सत्य-सुख-ज्ञान-घन-तनु रघुपति * परमात्मा भगवान कहे श्रुति-यति
जीवेर नियन्ता अविचिन्त्य-शक्तिधर * सृष्टि स्थिति-लय-कर्त्ता जगद्-ईश्वर
केह ताँरे ब्रह्म ब'लि करे उपासन * केह नारायण ब'लि करये भजन
ह'येछेन तिनि लोके सम्प्रति प्रकट * साधिते भक्तेर सुख नाशिते संकट
समय निर्व्वन्ध नाहि ताँहार भजने * करिबे तखनि, इच्छा जबे हबे मने
सेइ त ताँहार भक्ति हेन गुण धरे * इच्छा हवामात्र संसारेरे त्याज्य करे
तुमि त त्यजिया आसियाछ बन्धुजने * इथे जानितेछि, इच्छा हइयाछे मने
अतएव संशय करह कि कारन * जाह जाह, कर गिया श्रीरामे भजन
जाँरे मोरा ध्यान करि, देखि मनोरथे * भाग्यगुणे रयेछेन तिनि नेत्रपथे
इहाते साक्षात्-देखा सुख परिहरि * केन क्लेश पाइबे अन्यत्र ध्यान करि

---

१ परमेश्वर २ समय निर्धारित नहीं है ३ किस हेतु।

पुनि पुनि सीख तुमहिं यहि हेतू ※ संसय तजि सेवहु रघुकेतू
तजेउ बन्धु लखि विपति-विवादू ※ चर्चहिं विविध लोक अपवादू
यहि विधि कथन, श्रवन जनि योगू ※ रुचिर न भगतहिं गृह-सुख-भोगू
प्रगटत प्रभु प्रतच्छ तेहि कारन ※ बिन तेहि दरस धीर किमि धारन
प्रभु-पद नेह हिये जहँ जामा ※ तजत बन्धु अतिशय गुनधामा
अग्रज दुष्ट अतिव तुम त्यागा ※ अजस कलंक तुमहिं किमि लागा
तव अपरञ्च[1] सुयश त्रयलोका ※ सदा बखानहिं जस बुधलोका[2]
पुनि आरोप राज कर लोभा ※ तव उर अपकीरति कर छोभा

दो० उचित, तात ! अपवाद[3] जनि, अनुचित तासु विचार ।
कतहुँ न तव उर लालसा राज-लोभ संचार ॥ ६१ ॥

तुमहिं न साध[4], न याचत[5] राजू ※ पुनि किमि निन्दइ तुमहिं समाजू
बरबस[6] रघुपति करैं नरेसू ※ तौ किमि तुमहिं अजस कर लेसू
पितु - प्रह्लाद नृसिंह निपाती ※ प्रह्लादहिं नृप किय; जग ख्याती
सो प्रह्लाद न अपजस भागी ※ वरन् प्रशंसति जग अनुरागी
इमि रावन बधि तुमहिं नरेसू ※ करहिं राम, तव दोष न लेसू

ए लागिया कहितेछि आमि बारबार ※ जाइ राम निकटेते त्यजिया विचार
तबे जे बलिले गालि दिबे लोकावली ※ बिबाद समये बन्धु त्याग कैल बलि
ए कथा त कभु शुनिवार योग्य नय ※ भकति जन्मिले केवा कोथा गृहे रय
ताहे प्रभु रयेछेन प्रकट हइया ※ कि रूपे थाकिबे ताँरे नेत्रे ना देखिया
आर देख, रति जन्में जाहार भजने ※ सेइ त्याग करे गुणवान बन्धुजने
राम-सेवा लागि त्यजि दुष्ट बन्धुजन ※ तुमि वा कि रूपे हबे निन्दार भाजन
वरञ्च तोमार एइ यश त्रिभुवने ※ ज्ञान करिवेक सर्व्वस्थाने विज्ञजने
आर जे कहिले, यदि राज्य देन राम ※ तव दोष घुषिबे संसारे अविराम
ए कथाओ उचित ना हय शुनिवार ※ जे हेतु राज्येर आशा नाहिक तोमार
यदि तुमि राज्य पाव बलिया जाइते ※ वरञ्च तोमारे सबे पारिते निन्दिते
तिनि यदि बले राजा करेन तोमारे ※ इथे केन अपयश गाहिबे संसारे
देखि देखि, बध करि प्रह्लाद पितारे ※ नृसिंह प्रह्लादे राजा कैला बलात्कारे
इथे तार विगान करिबे
ताह बध करि दशानने

---

१ वल्कि २ ज्ञानी

करके ।

बन्धु नास हित कीन मिताई[1] ※ तबहुँ न कछु अपराध लखाई
मुनिगन शान्त, धर्म मन धरहीं ※ खल-बध जतन विपुल विधि करहीं
अति अधार्मिक 'वेण' नरेसू ※ मुनिगन दीन विविध उपदेसू
विफल सीख लखि, करि हुंकारा ※ मुनिगन 'वेण' नृपति संहारा
यहि विधि तुमहिं न पातक-लेसू ※ करहु जतन यदि बध-लंकेसू
पुनि लखु 'राम' विष्णु अवतारा ※ राम प्रीति हित शेष असारा[2]
यदपि अधर्म ! हेतु-रघुराजा[3] ※ कहत शास्त्र सद्धर्म-सुकाजा
यहि कारन सब संशय त्यागी ※ गहौ बेगि प्रभु-पद अनुरागी
काज, प्रानपन करि, रघुराई ※ मिटैं कलेस, प्रेमधन पाई
सुनि महेश-आनन-श्रुतिकन्दा[4] ※ उदित विभीषन अमित अनन्दा
द्रवित लोचनन सरसति वारी ※ उर गद्‌गद इमि गिरा उचारी

दो० संशय छीन, कृतार्थ किय, नाथ अनुग्रह-बैन ।
पैकरमति[5] कहि, बन्दि पुनि, शंकर करुनाऐन ।।

शम्भु दयामय, दीन हित, अतिशय दाया कीन ।
वेगि, विभीषन, राम-पद-दरस सुआयसु लीन ।। ९२ ।।

मिता जे कहिला ब्रधिवारे दशानने ※ ताहातेओ किछु दोष नाहि लय मने
शान्त धर्म्मनिष्ठ यावतीय मुनिगन ※ ताँहाराउ दुष्ट बध करे आयोजन
देख वेण-नामे राजा अधार्म्मिक छिल ※ मुनिगण तारे नानामते शिखाइल
से यखन ना शुनिल ताँदेर बचन ※ हुंकारे करिला तारे ताँहारा निधन
तुमिओ रावण-बधे कर आयोजन ※ ना हइबे कोनमते अधर्म्मभाजन
ताहे पुनः हवे इथे राम-अवतार ※ जन्मिबे रामेर प्रीति संसारेर सार
राम लागि यदि केह करे पाप कर्म ※ ताहा हय सर्व्व शास्त्रे सिद्ध महाधर्म्म
अतएव सकल संशय परिहरि ※ जाह राम निकटेते तुमि त्वरा करि
रामकार्य्य साध गिया करि प्राणपन ※ तरिबे सकल दुःख पावे प्रेमधन
महेशेर मुखे शुनि एतेक वचन ※ अति आनन्दित चित हैला विभीषण
अश्रुजल परिपूर्ण हइल नयन ※ गदगद भावेते करेन निवेदन
प्रभु, अनुग्रह दृष्टि-वलेते तोमार ※ सकल संशय नष्ट हइल आमार
जानितेछि, कृतार्थ जे करिला आमारे ※ आज्ञा देह, जाइ एवे राम देखिवारे
एहा कहि महेशेर अनुज्ञा लइया ※ प्रदक्षिण कैला ताँरे भकति करिया
पुनः पुनः प्रणाम करेन पञ्चानने ※ सुन्दरकाण्डेते गीत कृत्तिवास भने

---

१ मित्रता २ तुच्छ ३ भगवान की राह में ४ मधुर वाणी ५ परिक्रमा करता है।

श्रीराम-विभीषण-मिलन व विभीषण-राज्याभिषेक

यहि विधि शिव पुनि गौरि मनाई ❋ पुनि कुबेर अग्रज-पद ध्याई
लीन्हे चारि मंत्रिगन संगा ❋ चलेउ विभीषन, हीय उमंगा
गमन गगन-पथ रघुपति तीरा ❋ बसि तट-सिन्धु लखत कपिवीरा
शिला विटप कपि कटक सम्हारी ❋ नभ तन, रहे ससंक निहारी
आवत मनहुँ दसानन जोधा ❋ 'मारु मारु' कपि कहत सक्रोधा
व्योम[1] विभीषन प्रगटति बानी ❋ अहह ! सरन मैं सारँगपानी[2]
यहु संवाद दीन चलि पायक ❋ करत सलाह सचिव-रघुनायक
कहत सुकण्ठ न उचित प्रतीती ❋ रिपु बनि मित्र छलै विपरीती
जामवन्त मंत्री मतिमाना ❋ रिपु-सत्संग न उचित बखाना
बिभीषनहिं हनुमत पहिचाना ❋ दीन लंक मोहिं जीवनदाना
जो इन सन रघुनाथ-मिलाई ❋ तौ दसमुख-बध लहिय सहाई
टेरि सुकण्ठ, कहति रघुकेतू ❋ उचित न संक[3] विभीषन हेतू
निज अवगुन निज प्रकट न होहीं ❋ तव मित्रता प्रकट भल मोहीं
कातर जदि सरनागत आवै ❋ करै विमुख, परलोक नसावै
बरनत जिमि पुरान, सुनु गाथा ❋ धर्मरूप 'शिवि' नृप नरनाथा

श्रीराम कर्त्तृक विभीषणेर लंकाराज्ये अभिषेक

एइ रूपे प्रणाम करिया पञ्चानने ❋ परे प्रणमिला शिवा आर वैश्रवणे
तबे चारिजन मंत्री संगेते लइया ❋ चलिला श्रीराम काछे आनन्दित हिया
आकाशे रामेर पाशे जाय विभीषण ❋ सागर-कूलेते थाकि देखे कपिगण
सम्भ्रमे वानर-सैन्य करे तोलापाड़ा ❋ पादप-पाथर लये सबे हय खाड़ा
महाबल पराक्रम देखिते भीषण ❋ सबे बले, मार मार, एइ त रावण
अन्तरीक्षे थाकि ब'ले, आमि विभीषण ❋ रामेर चरणे आमि लइनु शरण
कहे विभीषणेर संवाद दूतगण ❋ बसिलेन मंत्रणा करिते मंत्रिगण
सुग्रीव बलेन, शुन ए नहे उचित ❋ छल करि यदि मिशि करे विपरीत
जाम्बवान-पात्र ब'ले बुद्धि-वृहस्पति ❋ शत्रुके निकटे आना नहे मम मति
हेनकाले कहे आसि वीर हनूमान ❋ एइ विभीषण मोरे दिला प्राणदान
मित्रता यद्यपि हय राम-विभीषणे ❋ विभीषण साहाय्येइ बधिब रावणे
श्रीराम बलेन शुन सुग्रीव भूपति ❋ अन्यरूप ना भाविह विभीषण प्रति
आपनार दोष मित्र, ना देख आपनि ❋ तोमा हैते मित्रतार साक्षी आमि जानि
कातर हइया जेबा लइल शरण ❋ परलोक नष्ट, यदि ना करे पालन
पुराणेर कथा कहि, कर अवधान ❋ शिवि नामे राजा छिल धर्म्म-अधिष्ठान

१ आकाश से २ राम ३ शंका ।

त्रसित[1] कपोत[2] श्येन[3]-भय पाई ※ नृप शिवि-अंक सरन लिय जाई
दो० निज अहार नृप-सरन लखि, 'बाज' प्रकोट[4] असीन।
कहत नृपति ! अनरीति किमि ? भक्ष्य मोर हरि लीन ॥ ९३ ॥
खग मम सरन, कहत नृपकेतू ※ इतर मांस अर्पन तव हेतू
जो कपोत-हित जीवन दाना ※ करौ मांस निज मोहिं प्रदाना
तन-राजसी मांस अति स्वादा ※ मिटै छोभ लहि भूप-प्रसादा
श्येन-वचन, 'शिवि' अति हर्षाना ※ काटि मांस निज गात प्रदाना
तिल-तिल काटि दीन सब अंगा ※ लही उदर भरि तृप्ति विहंगा[5]
शोनित[6] फूटि बहीं चहुँ धारा ※ सिंहासन चहुँ रक्त[6] बहारा
यहि तप नृप बैकुण्ठ निवासू ※ सरन-विमुख करि सदा विनासू
सरनागत जो होत दसानन ※ तेहि कर तबहुँ करत प्रतिपालन
आयसु राम, गगन कपि छाये ※ प्रभु पहँ धाय विभीषन लाये
मिलत विभीषन नृप सुग्रीवा ※ चर्चत[7] दोउ उर मोद अतीवा
पुनि जहँ राम, दुहुन आगमना ※ गहेउ विभीषन रघुपति-चरना
रावन-अनुज विभीषन नामा ※ मैं तव सरन आजु श्रीरामा
कहति राम संसय सम हेरी ※ मिली-भगति[8] तव दसमुख केरी

पलाय कपोतपक्षी साँचानेर डरे ※ त्रासेते पड़िल शिवि नृपतिरे क्रोड़े
यत्न करि नरपति सेइ पक्षी राखे ※ प्राचीरे साँचान पक्षी नृपतिरे डाके
आमिह आमार भक्ष्य करिव आहार ※ हेन भक्ष्य राख राजा, नहे व्यवहार
राजा बले, पक्षी मम लभिल शरण ※ तोमारे अपर मांस कराओ भोजन
साँचान बलिल, यदि कर परित्राण ※ आपन गायेर मांस मोरे देह दान
राजभोगे मांस तव अतीव सुस्वाद ※ ए मांस खाइले मोर घुचे अवसाद
शुनि साँचानेर कथा राजार उल्लास ※ तीक्ष्ण छुरि दिया काटे निज गात्र मास
तिलार्द्ध नाहिक स्थान सर्व्व अंग काटे ※ भोजन कराय तारे, यत धरे पेटे
बहिया शिविर गात्र रक्त बहे स्रोते ※ आपन गायेर रक्ते सिंहासन तिते
सेइ त पुण्येते राजा गेल स्वर्गवास ※ शरणागतेरे ना राखिले सर्व्वनाश
विभीषण थाक, यदि आइसे रावण ※ हइले शरणागत करिव पालन
रामेर आज्ञाय कपि गेल अन्तरीक्षे ※ विभीषणे आनिवारे रामेर समक्षे
सुग्रीव राजेर आगे करे सम्भाषण ※ परम आनन्दे कोल दिल दुइजन
विभीषण सुग्रीव चलिल राम-स्थाने ※ विभीषण पड़े गिया श्रीराम-चरणे
रावणेर भाइ आमि, नाम विभीषण ※ तोमार चरणे आमि लइनु शरण
श्रीराम ब'लेन, ब'लि शुन विभीषण ※ मंत्रणा करिया बुझि पाठाय रावण

---

१ सताया हुआ २ कबूतर ३ बाज पक्षी ४ चहारदीवारी पर ५ बाज पक्षी
६ खून ७ बातचीत करते हैं ८ साँठगाँठ।

कहत विभीषन छल कछु नाहीं * निश्छल शरन नाथ तव पाहीं
मन कछु दुराभाव जो लावौं * तौ कलिकाल-विप्र-गति पावौं
सहसतनय[1], पुनि कलि-नरनाथा * त्रयविधि दिव्य[2] करहुँ रघुनाथा

दो० दिव्य अनोखी तीनि सुनि, कहेउ लखन हँसि बैन ।
सुनेउँ कुतूहल प्रथम मैं, यहि विधि, करुनाऐन[3] ॥ ६४ ॥

इक सुत हित, जग चरनन लागै * वर 'सुत-सहस' विभीषन माँगै
नृप-पद हेतु सदा नर आतुर * यहि विधि करत 'दिव्य', अतिचातुर
कहेउ राम तुम लखन ! न जाना * दिव्य-विभीषन अतुल महाना
वचन-विभीषन मोहिं परितोषू * लखन ! विप्र-कलि के सुनु दोषू
काम क्रोध पुनि लोभ विमोहा * कलि द्विज ग्रस्त लहति अति छोहा
बिबस-लालसा, दान-कुदाना * कबहुँ न उबरत पाप महाना
अपकर्मी सुत, जनक-समाना[4] * जग विनसत इमि पातक-साना[5]
प्रजा न पालति कलि-नरपाला[6] * पाप-पंक फँसि मरत अकाला
दोष-निरूपन तजि यहि काला * प्रथम विभीषन करहु भुवाला
सैनिप ! सिन्धु-सलिल इत लाई * लंक समीप करहु दनुराई[7]
पाथर - लीक कथन - रघुराई * आयसु लीन सबन सिर नाई

शुनिया रामेर कथा कहे विभीषण * तोमार चरण मात्र लइब शरण
इहा भिन्न यदि अन्यदिके धाय मन * तबे जेन हय आमि कलिर ब्राह्मण
हइब कलिर राजा, सहस्रतनय * एइ तिन-दिव्य आमि करिनु निश्चय
तिन-दिव्य करिल राक्षस विभीषण * एइ तिन दिव्य शुनि हासेन लक्ष्मण
हेन काले श्रीरामेरे बलेन लक्ष्मण * बहुदिने शुनिलाम अपूर्व्व कथन
एक पुत्र हेतु लोक करे आराधन * सहस्र पुत्रेर वर मागे विभीषण
राजा हइवार तरे तप करि मरे * हेन दिव्य करे राम, तोमार गोचरे
श्रीराम ब'लेन, अल्पबुद्धि रे लक्ष्मण * बड़ दिव्य करिल राक्षस विभीषण
एइ दिव्ये लक्ष्मण, आमार परितोष * कलिर ब्राह्मण भाइ, शुन तार दोष
काम-क्रोध-लोभ-मोह-आदि महापाप * एइ सब पापे विप्र पाय बड़ ताप
प्रतिग्रह करिवेन उद्धार कारण * प्रतिग्रह महापाप, नाहिक तारण
एइ सब पापे जेबा करे अनाचार * तादृश पुत्रेर पापे मजिब संसार
कलियुगे राजा प्रजा ना करे पालन * से पापे राजार हय अकाले मरण
आर सबदोष आछे ताहा जेनो पाछे * विभीषणे राजा करि राख मम काछे
सर्व्व सेनापति आन सागरेर वारि * लंकार राजत्व देह विभीषणोपरि
श्रीरामेर आज्ञा येन पाषाणेर रेख * सेइ स्थले विभीषणे करे अभिषेक

१ हजार पुत्रवाला २ सौगन्ध, कसम ३ करुणा के आगार राम ! ४ पिता के समान पापी ५ पाप में सना हुआ ६ कलियुग के राजा ७ दैत्यों का नृप ।

पुनि अभिषेक भयेउ ताही छन * चहुँ घोषित लंकेस विभीषन
छत्र-दण्ड, मन्दोदरि रानी * स्वर्ण लंक करि तिलक प्रदानी

श्रीराम द्वारा सागर-उपासना और सागर-ताड़न

कहत सुकण्ठ सिन्धु जिमि तरना * पूछि विभीषन, करहिं प्रयतना
कहौ विभीषन मर्म अनूपा * सागर पार होयँ केहि रूपा
तव पुरिखा[1], प्रभु ! सगर-कुमारा * खोदि महीतल सिन्धु प्रसारा
दो० भूप 'सगर' कर विमल यश, 'सागर' जग सरनाम ।
करि उपवास पयोधि[2] हित, दरस लहौ श्रीराम ॥ ९५ ॥
कुश-आसन बिराज रघुवीरा * लिय उपवास अम्बुनिधि[2] तीरा
दिवस तीनि बीते उपवासू * राम कुपित बिन सिन्धु प्रकासू
अबहिं, लखन ! आनहु धनु-सायक * देहुँ सीख सागर जेहि लायक
अस्तुति-अधम कीन बहु भाँती * विफल उपास[3] तीनि दिन-राती
खल बिनास हनि पावक-बाना[4] * शोषहुँ वारि[5] न जग कल्याना
हरहुँ सिन्धु शठ आजु पराना * कहि प्रभु अनलबान[4] सन्धाना
अग्निबाण सब जलधि[2] प्रदाहा * मकरादिक जलजीवन[6] दाहा
सप्त सिन्धु ढिग भेदि पताला * सर लखि वारिध[2] त्रास कराला

श्रीरामेर वचन लंघिबे कोन जना * विभीषण राजा हैल, जगते घोषणा
छत्रदण्ड दिल तारे स्वर्ण लंकापुरी * अभिषेक करि दिल रानी मन्दोदरी

श्रीराम-कर्त्तृक सागरेर उपासना ओ सागर-कर्त्तृक सेतुवन्धनेर उपदेश

सुग्रीव व'लेन, सिन्धु तरिते उपाय * विभीषण प्रति जिज्ञासिते से जुयाय
श्रीराम व'लेन, विभीषण, वल सार * कि प्रकारे सागर हइव आमि पार
विभीषण वले, से सगर महीपति * सागर खनियाछिल ताँहार सन्तति
तव पूर्व्व-पुरुषेरा सागर प्रकाशे * सागर दिवेन देखा, थाक उपवासे
सागरेर कूले शय्या करिलेन कुशे * तदुपरि रहिलेन राम उपवासे
तिन उपवास गेल, ना देखि सागरे * कहिलेन लक्ष्मणेरे कुपित अन्तरे
आजि आमि सागरेर दिब भाल शिक्षा * धनुर्व्वाण आन भाइ, किसेर अपेक्षा
अधमे करिले स्तव नाहि फल देखे * मारिवे सागरे आजि, कार बाप राखे
तिन उपवास करि तार आराधने * सागर शुषिब आजि अग्निजाल-वाने
आजि सागरेर आमि लइब परान * अग्नि-जाल वाणे राम पूरेन सन्धान
अग्निबाण प्रभावेते शुकाय सागर * पुड़िया मरिल मत्स्य कुम्भीर मकर
चलिल पाताल सप्त-सागरेर पाश * वाण देखि सागरेर लागिल तरास

---

१ पूर्वज २ समुद्र ३ उपवास ४ अग्निवाण ५ जल ६ जलजन्तुओं को ।

थर-थर अतुल प्रकंपित गाता * धवल छत्र शिर सों भुइँपाता
इत निषंग[1] प्रविसेउ प्रभु-सायक * सिन्धु गहे उत पद-रघुनायक
किमि रघुनाथ! कोप विस्तारा * अपराधी किमि नाथ तुम्हारा
रघुकुल-कृत मम जगत प्रकासा *तव-कर, मम जनि उचित विनासा
कातर दिवस तीनि उपवासू * सिन्धु! तीर तव कीन निवासू
हरन कीन मम सिय दनुकेतू[2] * यहि विधि गमन लंक सिय-हेतू
कपिदल तरै जलधि जेहि भाँती * कीन उपास[3] तुमहिं प्रणिपाती

दो० तदपि सुलभ जनि दरस तव, विबस हनेउँ मैं बान ।
आड़े दस, पुनि दसगुना, लम्ब प्रसार प्रमान ।।

देहु पन्थ जल छाँड़ि कपि-कटक होय जिमि पार ।
सुनति जोरि कर राम सों, बरनत पारावार[4] ।। ९६ ।।

स्रोत पताल, सुलभ पथ नाहीं * युगुति एक वरनहुँ प्रभु पाहीं
विश्कर्मा-सुत नल कपि वीरा * तव हित वर पायेउ मुनि तीरा
बसेउ जह्नु मुनि पहँ शिशुकाला * 'नल' शिशु कीन जह्नु प्रतिपाला
दण्ड-कमण्डल नित जल-लीना[5] * पुनि सिर्जति मुनि नित्य नवीना
ध्यान कीन मुनि मर्म विचारा * जन्महिं विष्णु राम अवतारा

भय पेये सागर काँपये थर-थर * माथार धवल-छत्र टलिल सत्वर
बाण गिया प्रवेशिल श्रीरामेर तूणे * सागर पड़िल आसि रामेर चरणे
एत क्रोध मोरे केन, शुन गदाधर * तव पूर्व्व-वंश एइ करिल सागर
तुमि मोरे नष्ट कर, ए नहे विचार * कोन अपराध आमि करिनु तोमार
श्रीराम वलेन, शुन नृपति सागर * तिन दिन उपवासी, कूलेते कातर
मोर सीता चुरि कैल पापिष्ठ रावण * लंकाय जाइब तार उद्देश कारण
वानर कटक सब हइवेक पार * उपवास दिया देखा ना पाइ तोमार
एइ हेतु अग्निबाण जलेते छाड़िनु * तुमि ना आमाते आमि बाण जे मारिनु
आड़े दश-योजन दैर्घ्ये दशगुण तार * जल छाड़ि देह तुमि, वानर होक पार
एत शुनि जोड़ हस्ते व'लेन सागर * मोर जल मिशियाछे पाताल भितर
केमने हइबे पथ, ना देखि उपाय * एक युक्ति आछे राम, कहिब तोमाय
विश्वकर्म्म-पुत्र नल-नामे जे वानर * तोमा हेतु मुनिस्थाने पाइयाछे वर
जन्हु मुनि ताहारे पालिल शिशुकुले * दण्ड कमण्डलु तार हाराइल जले
नित्य हाराइया आसे, नित्य सृजे मुनि * आर दिन ध्यान करि जानिल आपनि

---

१ तरकस में २ दानवराज रावण ३ उपवास ४ समुद्र ५ जल समेट लेता था ।

सिय हित जाहिं लंक के पारा ❋ बाँधि सिन्धु जड़, करैं उतारा
दै वर नलहिं जह्नु इमि कहहीं ❋ तव कर परसि शिला जल तरहीं
कहत सिन्धु मम बन्धन हेतू ❋ करहु सैनपति 'नल' रघुकेतू
सागर-बन्धन गुन तव पाहीं ❋ नल ! तुम प्रकट कबहुँ किय नाहीं
जीतहुँ लंक सिन्धु करि पारा ❋ नल! तव बल, इमि सिन्धु उचारा[1]
जाति-शाप-भय, संशय प्राना ❋ कहेउँ न मर्म[2] कबहुँ भगवाना
कपि सैनिप[3] सुनि, अनुमति दीन्हा ❋ नलहिं सेतु-हित[4] अधिपति कीन्हा
सबन अभीष्ट सिद्धि प्रभु-काजा ❋ ढोवइँ शिला स्वयं कपिराजा[5]
प्रभु पहँ नल किय अंगीकारा ❋ बन्धन - सेतु लेहुँ मैं भारा
नल सम सुभट, राम ! तव तीरा ❋ पाहन[6] परसि तरति जेंहि नीरा
जेंहि कर छुवत शिला-तरु जुरहीं ❋ बाँधि सेतु रघुपति अवतरहीं
तव हित मोंहि बन्धन स्वीकारा ❋ रावन हनहु सिन्धु करि पारा

सागर द्वारा श्रीराम की प्रार्थना

दो० किमि अजान? स्थिति-प्रलय-सृष्टि सकल के नाथ।
अखिल विश्व के पूज्य तुम, अगतिन करत सनाथ ॥

स्वयं विष्णु हइबेन राम अवतार ❋ सागर बाँधिया सैन्य करिबेन पार
एतेक भाविया मुनि दिला वरदान ❋ नल स्पर्शे सलिलेते भासिबे पाषान
सागर बाँधिते सेनापति कर नले ❋ नल स्पर्शे पाषाण भासिबे मोर जले
श्रीराम ब'लेन, नल आछ मम पाश ❋ सागर बाँधिते जान ना कर प्रकाश
आमि लंका जिनिबि, तोमार करि आश ❋ एत बुद्धि धर, शुनि सागरेर पाश
नल व'ले, ज्ञाति भये ना करि प्रकाश ❋ ज्ञाति शापे हय पाछे जीवन विनाश
सागरेर कथा शुनि सब सेनापति ❋ सागर बाँधिते नले दिल अनुमति
राम-कार्य्य सिद्ध होक, एइ मात्र चाइ ❋ सुग्रीव पाथर दिबे, अन्य कार्य्य नाइ
श्रीरामेर आगे नल करे अंगीकार ❋ सागर बाँधिया दिब, प्रतिज्ञा आमार
श्रीराम, अधीन तव नल बीरवर ❋ नलेर परशे जले भासये पाथर
गाछ-पाथर जोड़ा लागे परशे ताहार ❋ जांगाल बाँधिया राम, ह'ये जाओ पार
तोमार कारण आमि लइव बन्धन ❋ पार हये बध कर पापिष्ठ रावन

सागर-कर्त्तृक श्रीरामेर स्तुति

आपना ना जान तुमि देवि गदाधर ❋ सृष्टि-स्थिति-प्रलयेर तुमिह ईश्वर
विश्वेर आराध्य तुमि, अगतिर गति ❋ निदान सृजिते सृष्टि, तुमि प्रजापति

---

१ कहा २ रहस्य ३ वानर-सेनापति ४ पुल बाँधने के लिए ५ सुग्रीव ६ पत्थर।

सृजति सृष्टि बनि प्रजापति, करन-धरन-संहार।
महाकाल, कालाधिपति, सबके एक अधार॥
चन्द्र, सूर्य, यम, वरुण, प्रभु! पुनि कुबेर, सुरनाथ[1]!।
जड़-जंगम, साकार तुम निराकार, रघुनाथ!॥
भगति-विनय जनि ज्ञान मोंहि महिमा-नाथ अपार।
निर्बल के बल! चरन निज लीजिय जगदाधार॥
आदि अनादि अपंग-बल! पलकमात्र[2] प्रतिकूल[3]।
खण्ड खण्ड ब्रह्माण्ड करि, करत छार आमूल॥
सुरन सहित सुरपति विकल, चहत दया की कोरि[4]।
कौशल्या-सुत की कृपा, चहत बहोरि बहोरि॥
पुण्यमही भारत जनमि, अगणित पातक-लीन।
जाहुँ धाम निज, विदा तव, लै, प्रभु! मैं अति दीन॥
बन्दि चरन सागर चलेउ, पुनि पुनि करत प्रणाम।
कृत्तिवास रसनामयी गाथा मञ्जु ललाम॥ ९७॥

नल द्वारा सागर-सेतु-बन्धन

इत निज सदन सिन्धु चलि जाई ※ लीन बोलाय नलहिं रघुराई
जहँ रघुनाथ, बेगि नल आवा ※ रघुपति चरनन सीस नवावा
हे नल सुभट! कहेउ रघुबीरा ※ तुम सम वीर अहह! मम तीरा

तुमि सृष्टि, तुमि स्थिति, तुमिह प्रलय ※ काले महाकाल विश्व, काले कर लय
तुमि चन्द्र, तुमि सूर्य्य, तुमि चराचर ※ कुबेर, वरुण तुमि यम, पुरन्दर
तुमिह साकार पुनः निराकार तुमि ※ तव महिमार सीमा कि जानिब आमि
ना जानि भकति स्तुति, शुन रघुवर ※ श्रीचरणे स्थानदान देह गदाधर
तुमि हे अनाद्य-आद्य असाध्य-साधन ※ कटाक्षे ब्रह्माण्ड कर खण्डविनाशन
आखण्डल[1] चञ्चल चिन्तिया श्रीचरण ※ कटाक्षे करुणा कर कौशल्यानन्दन
जन्मिया भारत-भूमे आमि दुराचार ※ करेछि पातक कत संख्या नाहि तार
विदाय करह, आमि जाइ निज धाम ※ एत बलि पदतले करिल प्रणाम
कृत्तिवास पण्डितेर कवित्व-वचन ※ गाइल सुन्दरकाण्डे गीत रामायन

नल-कर्त्तृक सागरे सेतु-बन्धन

सागर चलिया गेल आपन भवन ※ 'नल' बलि डाक दिल देव नारायन
धाइया आइल नल यथाय श्रीराम ※ भूमि लुटि पदतले करिल प्रणाम
श्रीराम ब'लेन, नल, कहि जे तोमारे ※ तुमि हेन वीर आछ कटक भितरे

---

१ इन्द्र २ क्षण भर में ३ रुष्ट होते ही ४ दृष्टि।

सेतु-बन्ध तुम यदपि समर्था ※ मैं तुम रहत सहेउँ दुख व्यर्था
हे प्रभु ! मैं कपि छुद्र अतीता ※ जाति-लोक-भय अति भयभीता
प्रस्तुत वीर अतुल जहँ नाना ※ तिन सम्मुख किमि करहुँ बखाना
कथा पुरातन पितु के सदना ※ करहुँ निवेदन मैं प्रभु - चरना
नित विधि[1] सर-मानस[2] अवतरहीं ※ कुस-पँती[3] जल संध्या करहीं
तजत कुसादिक सरवर[4] तीरा ※ मैं नित तिनहिं विसर्जहुँ नीरा
मम नितनेम सदा, यहि कारन ※ वर, लहि तोष, दीन चतुरानन
विधि-प्रसाद, परसत[5] मम हाथा ※ जल उतराहिं उपल[6] रघुनाथा
तव कर परसि उपल-तरु[7] जुरहीं ※ तरु-प्रस्तर[7] मिलि जल संतरहीं
बाँधहुँ सेतु विरञ्चि - प्रसादा ※ निश्चय हरहुँ नाथ - अवसादा[8]
मास मध्य बाँधहुँ शत योजन ※ उपल-विटप कपि करहिं नियोजन
नल कर प्रन सुनि बन्धन-हेतू ※ कपिगन मुदित, मुदित कपिकेतू[9]
चहुँ कपि-कटक 'राम जय' छाई ※ बाँधन सेतु चले हर्षाई

दो० करि प्रणाम रघुवंशमणि, चलेउ सुभट नल वीर ।
सेतुबन्ध अभियान किय, पैठेउ सागर-नीर ।। ६८ ।।

सागर बाँधिते तुमि हओ बलवान ※ एत दुःख पाइ आमि तोमा विद्यमान
नल ब'ले प्रभु राम, निवेदन करि ※ क्षुद्र कपि आमि ताइ जाति लोके डरि
बड़-बड़ कपि आछे वीर अवतार ※ केमने तादेर आगे करि अंगीकार
यखन छिलाम आमि जनकेर घरे ※ ताहार वृत्तान्त किछु कहिब तोमारे
मानस सरसे ब्रह्मा छिप कुशी लये ※ सेइ स्थाने बसि सन्ध्या करेन आसिये
छिपकुशी राखि जान सरोवर तीरे ※ ताहा आमि तुलि लये फेलिताम नीरे
नित्य छिपकुशी ब्रह्मा करेन सृजन ※ आमारे देखिया ब्रह्मा ब'लेन वचन
नित्य छिपकुशी फेले दिस् मोरे जले ※ सन्तुष्ट हइया ब्रह्मा मोर प्रति ब'ले
आमि वर दिव तोरे शुन रे वानर ※ तुइ छुंले जले जेन भासये पाथर
गाछ-पाथर जोड़ा लागे तोमार परशे ※ तुइ छुंले गाछ-पाथर जले जेन भासे
ब्रह्मार वरेते आमि बाँधिब सागर ※ प्रतिज्ञा करिया बलि तोमार गोचर
एक मास बाँधि दिब शतेक योजन ※ गाछ पाथर आमि दिक् यत कपिगन
सागर बाँधिते नल अंगीकार करे ※ हर्षित हइल राजा सुग्रीव वानरे
'रामजय' बलिया डाकये कपिगन ※ सागर बाँधिते चले हरषित मन
श्रीरामे प्रणाम करि नल वीर चले ※ सागर बाँधिते वीर वैसे गिया जले

---

१ ब्रह्मा २ मानसरोवर ३ कुश-पवित्री से ४ सरोवर ५ छूतेही ६ पत्थर
७ पत्थर और वृक्ष ८ दुःख ९ सुग्रीव ।

नल-कानन[1] जो सागर तीरा ❋ सकल उजारि बिछायेउ नीरा
तिन पर पुनि तरु-काठ बिछाई ❋ उपल-शिला चहुँ दीन जमाई
कपि तरु-उपल देत यहि हेतू ❋ सम-तल किय दश योजन सेतू
उतर[2] अरंभि, दखिन पग धारा ❋ दिवस एक जोजन बिस्तारा
नल अति कुशल सेतु-आसीना ❋ लाय-लाय पर्व्वत कपि दीना
मुद्‌गर-चोट बज्र ध्वनि करही ❋ घोष 'राम-जय' चहुँ सुनि परही
देत आनि गिरि तनय-समीरा[3] ❋ बन्धन-सिंधु करत नल वीरा
दश योजन बंधन - बिस्तारा ❋ कथा सकल कृतिवास प्रचारा

नल के प्रति हनुमान-कोप

छं० गढ़त सेतु नल, देत उपल-तरु, आनि मरुति[4] बलधारी ।
शिला रम्य अति, जड़ित अलँग दुइ, मगन नचत तरुचारी[5] ।।
बीच सुहावन, धवलित पाहन, कारुकार्य्य[6] रुचिकारी ।
मनहुँ राम कर, रचहिं धाम वर, निवसइँ अवधविहारी ।।

गिरि उपारि आनहिं हनुमन्ता ❋ लेहिं बाम कर नल बलवन्ता

आछिल नलेर वन सागरेर तीरे ❋ ताहा भाँगि फेलि दिल जलेर उपरे
ताहार उपरे गाछ दिल बिछाइया ❋ उपरे पाथर सब दिल चापाइया
प्रस्थे दश योजन से करये बन्धन ❋ गाछ-पाथर जोगाइया देय कपिगन
दीर्घ एक योजन बाँधिल एक दिने ❋ उत्तरे आरम्भ करि चलिल दक्षिणे
बसिलेन नल वीर जांगाल उपरे ❋ पर्व्वत आनिया देय सकल बानरे
मुद्‌गरेर बाड़ि पड़े, महाशब्द शुनि ❋ उच्चैःस्वरे डाके कपि 'राम जय' ध्वनि
पर्व्वत आनिया देय पवननन्दन ❋ नलवीर बसि करे सागर बन्धन
दश योजन सागर जे हइल बन्धन ❋ कृत्तिवास गाइलेन गीत रामायण

नलेर प्रति हनूमानेर क्रोध

छं० सागर बाँधये नल, हनूमान महाबल, आनि देय शिला वृक्षगण ।
जाँगालेर दुइ भिते, सुन्दर पाथर गाँथे, आनन्दे नाचये कपिगण ।।
जाँगालेर माझे-माझे, रजत-पाथर साजे, नल करे विचित्र निर्म्मान ।
गठिछे आवास घर, थाकिवेन रघुवर, हेन मते गठे स्थाने-स्थाने ।।
माथाय पर्व्वत ल'ये, हनूमान देय व'ये, वाम हाते धरे वीर नल ।
महाक्रोधे हनूमान, पर्व्वत आनिते जान, बुझि, बेटा कत धरे बल ।।

---

१ नरकुल का जंगल २ उत्तर दिशा से ३ हनुमान ४ हनुमान ५ शाखाचारी, वानर ६ पच्चीकारी ।

सो निज स्रुति समुझि अपमाना * लावन गिरि पुनि उतर[1] पयाना
भूधर गंधमादनहिं लाई * नल कर देखहुँ बल-प्रभुताई
पद हनि शृंग-महीधर भंगा * रोम-रोम लटकत गिरि-अंगा[2]
दोउ कर दुइ गिरि धरि पुनि सीसा[3] * चलेउ पवनगति बेगि कपीसा
पूँछ एक गिरि धरि बलवन्ता * धायेउ अन्तरिक्ष हनुमन्ता
रवि गिरि ओट तिमिर[4] चहुँ छावा * नलहिं अतुल संसय मड़रावा
आवत निरखि कुपित हनुमाना * रघुपति पहँ नल त्रसित पयाना

दो० गिरि लावत धरि शीश हनु, जबहिं बढ़ावत राम !।
शिल्पी[5] सहज स्वभाव में, लेत तानि कर बाम[6] ॥
अवनि विलोटत बन्दि पद, कहेउ जोरि नल हाथ ।
वृथा कोप, हनुमान मम, लेयँ प्रान, रघुनाथ ! ॥ ९९ ॥

लखि नल-रुदन अतिव दुख पाई * पन्थ रोकि निवसे रघुराई
ततछन मग विलोकि भगवाना * सो किमि लंघि सकैं हनुमाना
अन्तरिक्ष तजि, भुइँ हनु आये * तोष-वचन प्रभु तिनहिं सुनाये
उचित न नल प्रति क्रोध तुम्हारा * सुनि बरनत इमि पवनकुमारा
देत प्रानपन गिरि मैं आनी * लेत वाम कर नल अभिमानी

धाय वीर मनोदुःखे, चलिल उत्तर मुखे, यथा गिरि से गन्धमादन ।
देखि पर्व्वतेर चूड़ा, लाथि मारि करे गुंड़ा, लोमे लोमे करये बन्धन ॥
दुइ हाते दुइ गिरि, लइया मस्तकोपरि, अमनि पवनवेगे धाय ।
जाय वीर महातेजे, एक गिरि बाँधि लेजे, शून्येर उपरि चलि जाय ॥
रविर किरण नाइ, अन्धकार सर्व्वठाँइ, चमकिया चाहे वीर नल ।
क्रोधे आसे हनूमान, उड़िल नलेर प्राण, उठिया पलाय महाबल ॥
श्रीरामेर काछे गिया, भूमि लुटि प्रणमिया, वन्दिया कहेन जोड़ हात ।
हनूमान आने गिरि, वाम हाते आमि धरि, कर्म्मीर स्वभाव रघुनाथ ॥
क्रोध करि मोर तरे, आइसे पवन भरे, पर्व्वत लइया बहुतर ।
कुपियाछे हनूमान, लइबे आमार प्राण, उद्धार करह रघुवर ॥
नलेर क्रन्दन शुनि, दुःखी हैला रघुमणि, पथ माझे दाण्डाइला गिया ।
रामेर उपर दिया, जाइबारे ना पारिया, चले वीर भूमेते नामिया ॥
कहिलेन प्रभु राम, शुन वीर हनूमान, नले क्रोध कर कि कारण ।
हनूमान कहे वाणी, जोड़ करि दुइ पाणि, शुन राम कमललोचन ॥

---

१ उत्तर दिशा को २ गिरिखण्ड ३ शिर पर ४ अन्धकार ५ कारीगर
६ वायें हाथ में ।

विवस छोभ, पर्वत बहु लाई * डारि सीस नल देहुँ नसाई
अनुचित गर्व तजहु हनुमाना * शिल्पी सहज स्वभाव बखाना
जो उपकरण[1] बाम कर साधा * तौ तव प्रति जनि नल-अपराधा
लाज न तात ! नलहिं उर लाई * करहु सप्रीति काज मम जाई
यहि विधि कहि, नल-कर लै हाथा * हनुहिं समर्पेउ पुनि रघुनाथा
नल, सुत-अनिल[2] मुदित लपिटाने * गढ़त सेतु नल आनँदसाने
अहि-निसि कृत्तिवास जप-नामा * चाहत अचल भक्ति पद-रामा

काष्ठविडालों की सेतु-बंधन में सहायता

विपुल महीधर हनुमत लाये * दश योजन पुनि सेतु बँधाये
योजन बीस अगम जहँ सागर * बन्धन निरखत आय निशाचर
काठ-बिडाल[3] तबहिं बहु आये * भरि छलाँग थल सों जल छाये
तन रेणुका[4] झटकि झरिलावैं * सेतु-सन्धि[5] बहु छिद्र मिटावैं

दो० पवनतनय चहुँ दिसि लखत, काष्ठ-बिडाल अनेक ।
इत-उत मारि बिडारि[6] तिन, रहे सकल दिसि फेक ।।१००।।

रोय गिलहरिन राम गुहारा * बिन अपराध पवनसुत मारा

करि आमि प्राणपण, आनिते पर्व्वतगण, वाम हाते नल ताहा धरे ।
एइ हेतु क्रोध करि, आनिनु अनेक गिरि, चापा दिते ए नल वानरे ।।
एत शुनि कहे राम, त्यज बापू अभिमान, कर्म्मीरस्वभाव एइ काज ।
वाम हात आगे चले, क्रोधना करिह नले, नाहिकतोमार इथे लाज ।।
शुन बाछा हनूमान, मोर कार्य्ये देह प्राण, कर प्रीति नलवीर सने ।
एत कहि रघुनाथ, धरिया नलेर हात, समर्पिया दिया हनूमाने ।।
कोलाकुलि दुइ जने, करे हरषित मने, जांगाले उठिल गिया नल ।
कृत्तिवास कहे राम, जपिब तोमार नाम, एइ भक्ति हउक अचल ।।

काष्ठबिडालों की सेतुबन्धन में सहायता

जे पर्व्वत एनछिल पवननन्दन * दश योजन ताहाते जे हइल बन्धन
कुड़िजोजन बाँधा गेल अलंघ्य सागर * आसिया देखिया जात यत निशाचर
काष्ठबिडालेर दल एल तथा कारे * लाफ दिया पड़े गिया सागरेर नीरे
अंगेते माखिया बालि झड़ये जांगाले * फाँक यत छिल, ताहा मारिल बिड़ाले
यातायात करे सदा वीर हनूमान * बिडालेरे चारिदिके फेले दिया टान
कान्दिया कहिल सबे रामेर गोचर * मारिया पाड़ये प्रभु, पवनकोङर

---

१ साधन २ हनुमान ३ गिलहरी ४ बालू ५ छेद या दरार ६ भय दिखाकर भगाना ।

कहेँउ बुलाय राम, हनुमाना ! ❊ कौन गिलहरिन किमि अपमाना
जिमि समर्थ निज बल अनुसारी ❊ बंधन - सेतु सकल सहकारी
लाज पाय हनु सीस लचावा ❊ सदय भाव रघुपति उर छावा
पीठ गिलहरिन प्रभु सुहराई[1] ❊ चले सेतु पहँ सब हरषाई
कहेँउ पवनसुत, चलहु सम्हारी ❊ होय गिलहरिन जनि दुखकारी
दिवस बीस गिरि मरुति जुटावा ❊ सत्तर जोजन सिन्धु बँधावा
पैठि लंकपुर हनुमत वीरा ❊ खण्ड-बिखण्डित किय प्राचीरा
उपल-प्रकोट[2] आनि कपि बाँधा ❊ नब्बे जोजन सिंधु अगाधा
भरत छलाँग कपिन कै जोरी ❊ सिखर-लंक-देवल[3] लिय तोरी
ओट दनुज झाँकत कहुँ पावैं ❊ ताल देंहि कपि मुहँ बिचकावैं
बाँधत सिंधु, मुदित-नल गयऊ ❊ मास बिगत शत योजन भयेऊ
उत्तर सों दक्खिन लौं सेतू ❊ निर्मि[4] कहत कपि 'जय-रघुकेतू'
विश्कर्मा - सुत सेतु रचावा ❊ सुरगन सकल सुमन बरसावा
सेतु समापन करि नल वीरा ❊ चलि बन्देउ पद जहँ रघुवीरा
सविनय कहत भूमि प्रणिपाती ❊ बँधेउ अम्बुनिधि[5], प्रभु! सब भाँती

हनूमान डाकिया कहेन प्रभु राम ❊ काष्ठविडालेर केन कर अपमान
जेमन सामर्थ्य जार, बान्धुक सागर ❊ शुनिया लज्जित हैल पवनकोङर
सदय हृदय बड़ प्रभु रघुनाथ ❊ काष्ठबिडालेर पृष्ठे बुलाइला हात
चलिल सबाइ तबे जांगाल उपर ❊ हनूमान वले, शुन सकल वानर
काष्ठबिडालेरे केह किछु ना बलिबे ❊ सावधान हये सबे जांगाले चलिबे
पर्व्वत आनिया देय पवननन्दन ❊ कुड़िदिने बाँधा गेल सत्तर जोजन
लंकापुरे प्रवेशिया वीर हनूमान ❊ प्राचीर भांगिया सब कैल खान-खान
बहिया आनिया ताहा सकल वानर ❊ नवति योजन बाँधे प्रबल सागर
लाफ दिया जाय ताय कपि जोड़ा-जोड़ा ❊ लंकार भांगिया आने देउलेर चूड़ा
आड़े-ओड़े थाकिया राक्षस देय उँकि ❊ मालसाट मारे कपि, देखाय भावकि
आनन्दे करये नल सागर-बन्धन ❊ एक मासे बाँधा गेल शतेक योजन
उत्तरेर जांगाल ठेकिल दक्षिण कूले ❊ 'राम जय' बलिया बानर सब बुले
जांगाल बाँधिल विश्वकर्म्मार नन्दन ❊ सकल देवता करे पुष्प-वरिषण
जांगाल समाप्त करि नल वीर चले ❊ प्रणाम करिल गिया राम पदतले
भूमि लुटि घन-घन करि प्रणिपात ❊ जोड़-हस्त करि बले, शुन रघुनाथ

---

१ किम्वदन्ती है कि भगवान राम के उस समय के अंगुलियों के स्पर्श के चिह्न गिलहरियों पर अब भी विद्यमान है २ चहारदीवारी के पत्थर ३ लंका के मंदिर का शिखर ४ बनाकर, सेतु बाँधकर ५ सागर।

दो० सेतु रचित, हनुमन्त पुनि रक्षक, सुनि भगवान ।
लही प्रीति, सन्तुष्ट अति, बोले कृपानिधान ॥१०१॥
नल ! धन बिन किमि करहुँ प्रसादू * प्रस्तुत तव हित आशिष-वादू
सिय उद्धारि अवध जब चलहीं * अतुल रतन बहु अर्पन करहीं
नाथ रतन-धन सोंहिं न प्रीता * विधि-वाञ्छित[1] मोंहि रतन अतीता
जेंहि पद सतत[2] रमा[3] अनुरागा * जासु ध्यान शिव लीन विरागा
प्रभु ! सो[4] चरन सीस मम दीजै * यहि सों अधिक रतन किमि लीजै
सुनि उर-कमलविलोचन हरषा * दहिन पदुम-पद नल शिर परसा
लिय प्रसाद नल पद-रज धारी * नाचत कपि 'जय राम' पुकारी
तात सुकण्ठ ! कहेंउ रघुकेतू * लखहिं सकल चलि जलनिधि-सेतु
घोष 'राम-जय' किय रविनन्दन * आगे चले लखन - रघुनन्दन
चले सुकण्ठ[5], विभीषन राजा * अंगद, यत कपि वीर समाजा
कला कुतूहल सेतु निहारा * धनि धनि! नल विश्वकर्मकुमारा!
नाग-सुरासुर चकित निहारा * जनहु सिन्धु पहिरे गर-हारा

श्रीराम द्वारा शिव-प्रतिष्ठा

रचहु शिवालय नल ! जहँ सेतू * पूजहुँ शम्भु कहेंउ रघुकेतू

जांगाल समाप्त करि बान्धिनु सकल * रक्षक रहिल हनूमान महाबल
एत शुनि सन्तुष्ट हइला रघुनाथ * नले आशीर्व्वाद करि पृष्ठे देन हात
धन नाइ, नल, किवा करिब प्रसाद * एखन लह रे बापू, मोर आशीर्व्वाद
सीतार उद्धार करि जाब अयोध्याय * अमूल्य रतन नाना दिब हे तोमाय
नल कहे, ताहे कार्य्य नाहि नारायण * ब्रह्मार वाञ्छित देह अमूल्य रतन
कमला याँहार सदा करित सेवन * याँहा लाखि योगी हैला देव-पञ्चानन
मोर शिरे देह सेइ चरण तोमार * इहा हैते अमूल्य रतन किवा आर
शुनिया सन्तुष्ट राम कमललोचन * नलेर माथाय दिला दक्षिण चरण
प्रसाद लइल नल भूमि लोटाइया * 'राम जय' बलि सबे बेड़ाय नाचिया
श्रीराम बलेन शुन मित्र कपिराज * जांगाल देखिते चल सागरेर माझ
'राम जय' वलि उठे सूर्य्येर नन्दन * आगे-आगे चलिलेन श्रीराम-लक्ष्मण
सुग्रीव चलिल आर राजा विभीषण * अंगद चलिल संगे यत वीरगण
देखिल विचित्र अति जांगाल बन्धन * धन्य-धन्य नल विश्वकर्म्मार नन्दन
देवता-असुर-नाग देखि चमत्कार * हेन बुझि, सागर परिला गले हार

सेतुबन्धे श्रीरामेर शिव-प्रतिष्ठा

श्रीराम बलेन, नल, शुनह विशेष * देउल गठिया देह पूजिते महेश

१ ब्रह्मा जिन चरणों की चाहना रखते हैं २ सदैव ३ लक्ष्मी ४ वे ही ५ सुग्रीव ।

सुनि नल वीर बेगि तहँ धावा ※ शिव मन्दिर, जहँ सेतु, रचावा
आनि पवनसुत शिला जुटावा[1] ※ देवल परम सुरम्य सुहावा
धवल मूर्ति-शिव तहाँ सुहाई ※ दीन खबरि नल जहँ रघुराई

दो० रचित शिवालय, राम सुनि, कहेँउ टेरि हनुमान !।
श्वेत सरोरुह[2] देहु मोंहि, आनि सहस्र प्रमान ॥१०२॥

धाये सुनि मारुति कैलासा ※ कानन-कमल कुबेर निवासा
कानन इक सरवर मन मोहा ※ विकसित सुमन उपर जल सोहा
सहस पदुम चुनि हनुमत लाई ※ प्रस्तुत कीन जहाँ रघुराई
शिव-अर्पन रघुपति मन लाये ※ तजि कैलास स्वयं शिव धाये
दोउ कर रामहिं लीन महेसा ※ प्रेम - अलिंगत मोद असेसा
कहत शंभु रघुपति ! कस पूजा ※ मोंहि न इष्ट राम बिन दूजा
तुम मम इष्ट, लेहु वृषकेतू[3] ! ※ सलिल-सुमन[4] रावण-वध हेतू
रावन यदपि भक्त प्रिय मोरा ※ कीन हरन-सिय पातक घोरा
बोले शंभु, सुनहु रघुनायक ※ तासु मरन निश्चित तव सायक
शिव-आराध्य न रामहिं चीन्हा ※ स्वयं विनास निमंत्रित कीन्हा
आयु न शेष धरत सिय-केशा ※ आकुल सिय दिय शाप विशेषा

एत शुनि नल वीर हइया सत्वर ※ देउल गठिल सेइ जांगाल उपर
पर्व्वत आनिया दिल पवननन्दन ※ परम सुन्दर करे देउल गठन
श्वेतवर्ण शिव गठि ताहार भितर ※ नल जानाइल गिया रामेर गोचर
श्रीराम बलेन तबे पवनकुमारे ※ श्वेतपद्म-सहस्र आनिया देह मोरे
एत शुनि चले वीर पवननन्दन ※ कैलासेते यथा कुबेरेर पद्मबन
ताहार भितरे आछे एक सरोवर ※ फुटियाछे पुष्प सब जलेर उपर
तुलिया सहस्र पद्म पवननन्दन ※ आनिया दिलेन वीर, यथा नारायण
शिवपूजा करिते बसिला भगवान ※ कैलास छाड़िया शिव हैला अधिष्ठान
दुइ हात रामेर धरिला त्रिलोचन ※ दुइ जन हरषित प्रेम-आलिंगन
महेश बलेन प्रभु, पूजा कर कार ※ इष्टदेव राम तुमि हओ जे आमार
श्रीराम बलेन, तुमि मोर इष्ट हओ ※ रावण बधिते तुमि पुष्प जल लओ
शंकर बलेन, मोर सेवक रावण ※ सीता चुरि कैल, तार हउक मरण
तव बाणे हबे तार सवंशे संहार ※ अछिल परम प्रिय रावण आमार
ना चिनिल इष्टदेव प्रभु रघुमणि ※ आपन मरण ताइ आनिल आपनि
आयुः शेष हैल धरि जानकीर चुले ※ शाप दिला सीता तारे मनेर आकुले

१ इकट्ठा की २ सफेद कमल ३ शकर ४ संकलप हेतु जल-पुष्प ।

सकुल विनास तासु यहि हेतू ※ उतरहु सिन्धु बेगि रघुकेतू
बहुरि परस्पर कीन प्रणामा ※ शिव कहि 'राम' गये शिवधामा

राम द्वारा भस्मलोचन-वध व लंका-प्रवेश

आगे लखन सहित रघुराई ※ पुनि सुग्रीव विभीषनराई
दहिने जामवन्त बलवन्ता ※ आगे धाय चलेउ हनुमन्ता
अंगद पुनि सेनापति नाना ※ सैन-चाप घन-गर्ज समाना

दो० 'राम-घोष' चहुँ 'राम जय' कपिगन करत निनाद ।
सिंहनाद सुनि दनुज-दल, छायेउ अतुल प्रमाद ॥१०३॥

कहेउ निसिचरन रावन तीरा ※ आये सिन्धु उतरि रघुवीरा
सुनि दसकन्ध नयन चहुँ कीन्हा ※ भस्मलोचनहिं आयसु दीन्हा
लै कपि, राम लंक-अभियाना[1] ※ हरहु भसम करि कपिगन प्राना
चलेउ दनुज, आयसु लहि धाई ※ चर्म्म-टोप निज नयन चढ़ाई
चर्म-वेष्टित[2] रथ आसीना ※ सेतु समीप हेलि रथ दीना
कमललोचनहिं कहत बिभीषन ※ प्रस्तुत रन हित भस्मविलोचन
निरखत जहि दिसि चर्म हटाई ※ दृग तर परत भसम ह्वै जाई

एइ हेतु हबे तार सवंशे संहार ※ शीघ्र चलि जाइ राम, सागरेर पार
एत वलि परस्परे करिया प्रणाम ※ कैलासे गेलेन शिव बलि 'राम राम'

भस्मलोचन-वध ओ श्रीरामेर लंकाप्रवेश

श्रीराम चलिला तबे सहित लक्ष्मण ※ पश्चाते सुग्रीव राजा आर विभीषण
दक्षिण चापिया चले मंत्री जाम्बवान ※ आगे आगे धाइया चलिल हनूमान
चलिल अंगद वीर लये सेनागण ※ एक चापे चले ठाट मेघेरे गर्ज्जन
'राम जय' बलिया छाड़ये सिंहनाद ※ शुनिया राक्षसगण गणिल प्रमाद
रावणेरे कहे गिया यत निशाचर ※ आइला श्रीराम पार हइया सागर
शुनिया रावण राजा चारि दिके चाय ※ भस्मलोचनेरे देखि आज्ञा दिल ताय
श्रीराम लंकाय आसे वानर लइया ※ वानरेरे भस्म करि देह उड़ाइया
पाइया राजार आज्ञा चलिल सत्वर ※ चक्षे ठुलि दिया उठे रथेर उपर
चर्म्मे ढाका, रथखान आइसे धाइया ※ जांगाल उपरे रथ लागिल आसिया
विभीषण बले, गोसाँइ करि निवेदन ※ जुझिवार तरे आइल ए भस्मलोचन
घुचाये चर्म्मेर ठुलि जार पाने चाबे ※ च'क्षेते देखिवा मात्र भस्म ह'ये जाबे

१ लंका पर चढ़ाई २ चमड़े से ढका हुआ ।

आतुर राम सुहृद सन कहहीं ❋ कवन जतन वानरगन बचहीं
कहत विभीषण, प्रभु ! अनुसरहू ❋ धनु - प्रतञ्च दर्पनमय[1] करहू
दर्पन निज मुख लखि निज लोचन❋ जरै स्वयं खल भस्मविलोचन
सुनि अति तोष मुदित रघुनन्दन ❋ ब्रह्मायुध साजे बहु दर्पन
दर्पन समुख दनुज-रथ आवा ❋ दनुज बेगि दृग - चर्म हटावा
निज मुख दर्पन बीच निहारा ❋ निसिचर भसम भयेउ जरि छारा
लखि निसिचरन अतुल भय छावा ❋ प्रथम समर रघुपति जय पावा
यहि बिधि लंक राम पग दीन्हा ❋ कपिगन सकल 'रामजय' कीन्हा
बीच जलधि[2], उत सिय इत रामा ❋ अब समीप दोउ लंका धामा

दो० डेढ़ पहर रजनी रहत, कपिदल धाय निसंक ।
ध्याय राम रघुपति-चरन, घेरि लीन चहुँ लंक ।।
गाथा मंजु सुपावनी, अमिय-मूरि मधुभाण्ड ।
भयेउ समापन गान इत, सुन्दर सुन्दरकाण्ड ।।
नाना दानव सुभट पुनि, कपि अनन्त बलवन्त ।
युद्धकाण्ड गाथा - समर, सरुचि सुनैं गुनवन्त ।।
कृत्तिवास बंगीय कवि विरचित छंद पयार ।
सानुवाद लिप्यन्तरण—सो किय 'नन्दकुमार' ।।
अमर भारती नागरी, भाषा बंग ललाम ।
उभय ज्ञान लहि विज्ञवर, लहैं राम सुखधाम ।।१०४।।

श्रीराम ब'लेन, मिता, बलह उपाय ❋ केमने वानरगण इथे रक्षा पाय
एत शुनि वलिछे राक्षस विभीषण ❋ धनुकेर गुणे राम जोड़ह दर्पण
दर्पणे देखिते पाबे आपनार मुख ❋ आपनि हइबे भस्म, देखह कौतुक
एत शुनि रघुनाथ आनन्दित मन ❋ ब्रह्म-अस्त्रे कोटि-कोटि सृजिल दर्पण
रथ आगुलिया तार रहिल दर्पणे ❋ घुचाय चक्षेर ठुलि चाहे चारि पाने
आपनार मुख देखे दर्पण भितर ❋ भस्म ह'ये उड़े गेल सेइ निशाचर
देखिया राक्षसगण पाइलेक भय ❋ हइल प्रथम रणे श्रीरामेर जय
पार हये लंकाय उठिल नारायण ❋ 'राम जय' बलि डाके यत कपिगन
दूरे छिला सीतादेवी, दूरे छिला राम ❋ दुइ जने मिलिया हइला एक स्थान
पोहाते तखन रात्रि आछे प्रहर देड़ ❋ रामेर कटके लंकापुरी कैल वेड़
कृत्तिवास रचे गीत अमृतेर भाण्ड ❋ एतदूरे पूर्ण हैल एइ सुन्दरकाण्ड

।। इति सुन्दरकाण्ड ।।

---

१ धनुष की डोरी पर शीशे जड़ दीजिये २ समुद्र ।

देवनागरी लिपि के माध्यम से समस्त भाषाई क्षेत्र

समस्त भाषाओं के सत्साहित्य का समानरूपेण रसास्वादन करें:—

विविध भाषाओं के अनमोल वृहद् ग्रन्थ

जिनमें उन भाषाओं के मूल पाठ को,

तद्वत् उच्चारणों सहित,

देवनागरी लिपि में देते हुए, सुन्दर हिन्दी अनुवाद दिया गया है :—

★ **मलयाळम - महाभारत—** अेळुत्तच्छन् कृत—रचनाकाल—१५ वीं शताब्दी; लिप्यन्तरणकार एवं हिन्दी-अनुवादक— श्री के०एं०सुब्रह्मण्य अय्यर भू० पू० उपकुलपति संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, एवं लखनऊ विश्वविदयालय, लखनऊ। मलयाळम का मूल मधुर पाठ देवनागरी लिपि में देते हुए हिन्दी भाषा में अनुवाद दिया गया है। पृष्ठ संख्या लगभग १२२५। मूल्य ४०·००, डाक व्यय पृथक्।

★ **बँगला - कृत्तिवास रामायण—** (आदि, अयोध्या, अरण्य, किष्किन्ध्या और सुन्दरकाण्ड) रचनाकाल—१५ वीं शताब्दी; मूल बँगला पाठ देवनागरी लिपि में तथा अवधी दोहा-चौपाई में ललित पदयानुवाद। अनुवादक एवं लिप्यन्तरणकार— श्री नन्दकुमार अवस्थी सम्पादक, वाणी-सरोवर एवं प्रतिष्ठाता भुवन वाणी ट्रस्ट। देवनागरी अक्षरों में ग्रन्थ का चाहे बँगला पाठ सुबोध-सुललित पयार छन्दों में पढ़िये, चाहे अवधी पदयानुवाद। दोनों का पृथक् अद्भुत आनन्द है। पृष्ठ संख्या लगभग ६२५। मूल्य २५·०० डाक व्यय पृथक्।

★ **बँगला - कृत्तिवास (लंकाकाण्ड)—** रचनाकाल—१५ वीं शती; मूल बँगला पाठ देवनागरी लिपि में तथा हिन्दी गदयानुवाद—क्रमशः श्री नन्दकुमार अवस्थी एवं श्री प्रबोध मजुमदार। पृष्ठ संख्या ४८८ मूल्य १५·००, डाक व्यय पृथक्।

★ **कश्मीरी - रामावतारचरित—** प्रकाशराम कुर्यग्रामी कृत। रचनाकाल १८ वीं शताब्दी। देवनागरी लिपि में कश्मीरी पाठ का लिप्यन्तरण तथा हिन्दी अनुवाद के कर्ता डॉ० शिबन कृष्ण रैणा, हिन्दी विभागाध्यक्ष, राजकीय महाविदयालय, नाथद्वारा। भूमिका-लेखक डॉ० युवराज कर्णसिंह, मंत्री भारत सरकार। पृष्ठ संख्या लगभग ४८० मूल्य २०·००। डाक व्यय पृथक्।

★ **उर्दू - शरीफ़ज़ादः (आर्यपुत्र)**— 'उमरावजान अदा' के प्रख्यात लेखक मिर्जा रुस्वा द्वारा रचित अति रोचक उपन्यास। देवनागरी लिपि में लखनऊ की सुमधुर उर्दू भाषा का आनन्द उठाइये। मूल्य ५.०० । डाक व्यय पृथक् ।

★ **गुरमुखी - श्री जपुजी सुखमनी साहिब**— गुरु नानकदेव और गुरु अर्जुनदेव की अमर वाणी देवनागरी लिपि में। साथ में गीता के सफल पद्यानुवादक खानबहादुर ख्वाजः दिलमुहम्मद का अति प्रसिद्ध प्रवाहमय पद्यानुवाद। अनुवाद को पढ़ते समय पाठक झूम उठता है। मूल्य ५.०० । डाक व्यय पृथक् ।

★ **अरबी - ज़ादे सफ़र (रियाज़ुस्सालिहीन)**— प्रसिद्ध प्रामाणिक हदीस (पैग़म्बर के कलाम) के उर्दू अनुवाद ज़ादे सफ़र का देवनागरी लिपि में सारा पाठ देते हुए कठिन उर्दू शब्दों का हिन्दी अर्थ फ़ुटनोट में दिया गया है। इस्लामी धर्म के सदाचार की स्पष्ट झाँकी है। पृष्ठ संख्या ३३६ मूल्य १२.०० । डाक व्यय पृथक् ।

★ **फ़ारसी - सिर्रे अक्बर**— (शाहज़ादः दाराशिकोह कृत—५० उपनिषदों की फ़ारसी व्याख्या में से ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय और श्वेताश्वतर— इन ९ उपनिषदों का अनुवाद। ग्रन्थ में उपनिषदों का मूल संस्कृत पाठ, उनका भारतीय अनुवाद, साथ में शाहज़ादः दारा की स्पष्ट व्याख्या, पाद-टिप्पणी सहित। एक अभारतीय मुस्लिम शाहजादे की तत्वज्ञान में पैठ देखते ही बनती है। हिन्दी रूपान्तरकार हैं काशी विश्वविद्यालय के डॉ० हर्षनारायण। पृष्ठ ३०० । इस परिश्रमसाध्य ग्रन्थ का मूल्य २०.०० मात्र है। डाक खर्च पृथक् ।

☆ **बाइबिल - सार**— इस पुस्तिका में बाइबिल में दिये गये सालोमन के नीति-वाक्यों को देते हुए उनके समानान्तर भारतीय नीति-वचनों को उद्धृत किया गया है। मूल्य १.०० मात्र ।

वाणी सरोवर

(अपने ढंग का निराला त्रैमासिक पत्र)

इस पत्र में हिन्दी, उर्दू, अरबी, फ़ारसी, संस्कृत, पारसी, बंगला, ओड़िया, मराठी, गुरुमुखी, तमिळ, मलयाळम, असमी, गुजराती, तेलुगु, कन्नड, सिन्धी, कश्मीरी, राजस्थानी और नेपाली के अनुपम ग्रंथों का हिन्दी अनुवाद तथा देवनागरी लिपि में उनका मूल पाठ धारावाहिक प्रकाशित हो रहा है। वार्षिक शुल्क १०.०० मात्र ।

नवीन ग्राहक बननेवाले सज्जनों को सन् १९७० से अब तक का १०.०० प्रतिवर्ष के हिसाब से शुल्क भेजना उनके हित में होगा। बीते हुए वर्षों के अंक न मँगाने पर धारावाहिक चलनेवाले पहले से शुरू अनेक ग्रंथ उनके संग्रहालय में अपूर्ण रह जायँगे। वैसे ट्रस्ट को आपत्ति नहीं है; आप जिस वर्ष से चाहें ग्राहक बन सकते हैं।

ओड़िया-संस्करण

रामचरितमानस-मूल ओड़िया लिपि में
गद्य-पद्य अनुवाद ओड़िया भाषा में

ଗୋସ୍ୱାମୀ ତୁଳସୀଦାସକୃତ

ଶ୍ରୀରାମଚରିତ ମାନସ

(ଓଡ଼ିଆ ଲିପିରେ ମୂଳପାଠ ଏବଂ ଓଡ଼ିଆ ଭାଷାରେ ପଦ୍ୟଗଦ୍ୟାନୁବାଦ)

ପ୍ରଥମ ସୋପାନ

ବାଳକାଣ୍ଡ

ବର୍ଣ୍ଣାନାମର୍ଥସଂଘାନାଂ ରସାନାଂ ଛନ୍ଦସାମପି ।
ମଙ୍ଗଳାନାଂ ଚ କର୍ତ୍ତାରୌ ବନ୍ଦେ ବାଣୀବିନାୟକୌ ॥୧॥
ଭବାନୀଶଙ୍କରୌ ବନ୍ଦେ ଶ୍ରଦ୍ଧାବିଶ୍ୱାସରୂପିଣୌ ।
ଯାଭ୍ୟାଂ ବିନା ନ ପଶ୍ୟନ୍ତି ସିଦ୍ଧାଃ ସ୍ୱାନ୍ତଃସ୍ଥମୀଶ୍ୱରମ୍ ॥୨॥
ବନ୍ଦେ ବୋଧମୟଂ ନିତ୍ୟଂ ଗୁରୁଂ ଶଙ୍କରରୂପିଣମ୍ ।
ଯମାଶ୍ରିତୋ ହି ବକ୍ରୋଽପି ଚନ୍ଦ୍ରଃ ସର୍ବତ୍ର ବନ୍ଦ୍ୟତେ ॥୩॥

ବିବିଧ ପ୍ରକାର   ବର୍ଣ୍ଣ ଅର୍ଥ ରସ   ଛନ୍ଦ ଆବର ।
ମଙ୍ଗଳଙ୍କ କର୍ତ୍ତା   ବାଣୀ ବିନାୟକେ   ବନ୍ଦେ ସାଦର ॥ ୧ ॥
ବନ୍ଦେ ପୁଣି ଶ୍ରଦ୍ଧା   ବିଶ୍ୱାସ ମୂରତି   ଉମା ମହେଶେ ।
ଯା ବିହୁନେ ସିଦ୍ଧେ   ଦେଖି ନ ପାରନ୍ତି   ସ୍ୱ ହୃଦଈଶେ ॥ ୨ ॥
ବନ୍ଦେ ଜ୍ଞାନମୟ   ନିତ୍ୟ ଶିବ ରୂପ   ଶ୍ରୀଗୁରୁ ପଦ ।
ଯାହାଙ୍କୁ ଆଶ୍ରିଣ   ବକ୍ର ଚନ୍ଦ୍ର ମଧ   ସର୍ବତ୍ର ବନ୍ଦ୍ୟ ॥ ୩ ॥

ବର୍ଣ୍ଣ, ଅର୍ଥ, ରସ, ଛନ୍ଦ ଓ ମଙ୍ଗଳସମୂହର ସୃଷ୍ଟିକାରିଣୀ ବାଣୀ ଓ ସୃଷ୍ଟିକାରୀ ଶ୍ରୀ ଗଣେଶଙ୍କୁ ମୁଁ ବନ୍ଦନା କରୁଅଛି ॥ ୧ ॥ ଯାହାଙ୍କ ବ୍ୟତିରେକେ ସିଦ୍ଧ ପୁରୁଷଗଣ ମଧ ନିଜ ହୃଦୟସ୍ଥିତ ଈଶ୍ୱରଙ୍କୁ ଦେଖି ପାରନ୍ତି ନାହିଁ, ଶ୍ରଦ୍ଧା ଓ ବିଶ୍ୱାସର ମୂର୍ତ୍ତି ସେହି ଦେବୀ ଶ୍ରୀ ପାର୍ବତୀ ଓ ମହାପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀ ଶଙ୍କରଙ୍କୁ ମୁଁ ବନ୍ଦନା କରୁଅଛି ॥ ୨ ॥ ଯାହାଙ୍କ ଆଶ୍ରୟ ବଳରେ ଚନ୍ଦ୍ର ବକ୍ର ହୋଇ ସୁଦ୍ଧା ଜଗତରେ ସର୍ବତ୍ର ବନ୍ଦିତ, ସେହି ଜ୍ଞାନମୟ, ନିତ୍ୟ, ଶଙ୍କରରୂପୀ ଗୁରୁଙ୍କୁ ମୁଁ ବନ୍ଦନା କରୁଅଛି ॥ ୩ ॥

संस्कृत मानस-भारती

रामचरितमानस-मूलपाठ-सहित पंक्ति-अनुपंक्ति संस्कृत पद्यानुवाद

तासु प्रभाउ जान नहिं सोई। तथा हृदयँ मम संसय होई ॥
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच बिहाइ मागु नृप! मोही। मोरें नहिं अदेय कछु तोही ॥

दो०—दानि-सिरोमनि! कृपानिधि, नाथ! कहउँ सतिभाउ।
चाहउँ तुम्हहि समान सुत, प्रभु सन कवन दुराउ ॥ १४९ ॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥
आपु-सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप! तव तनय होब मैं आई ॥
सतरूपहि बिलोकि कर जोरें। देबि! मागु बरु जो रुचि तोरें ॥
जो बरु नाथ! चतुर नृप मागा। सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा ॥
प्रभु, परंतु सुठि होति ढिठाई। जदपि भगत-हित तुम्हहि सोहाई ॥
तुम्ह ब्रह्मादि-जनक जग-स्वामी। ब्रह्म, सकल-उर-अंतरजामी ॥
अस समुझत मन संसय होई। कहा जो प्रभु, प्रवान पुनि सोई ॥
जे निज भगत, नाथ! तव अहहीं। जो सुख पावहिं, जो गति लहहीं ॥

दो०—सोइ सुख, सोइ गति, सोइ भगति, सोइ निज-चरन-सनेहु।
सोइ बिबेक, सोइ रहनि प्रभु, हमहि कृपा करि देहु ॥ १५० ॥

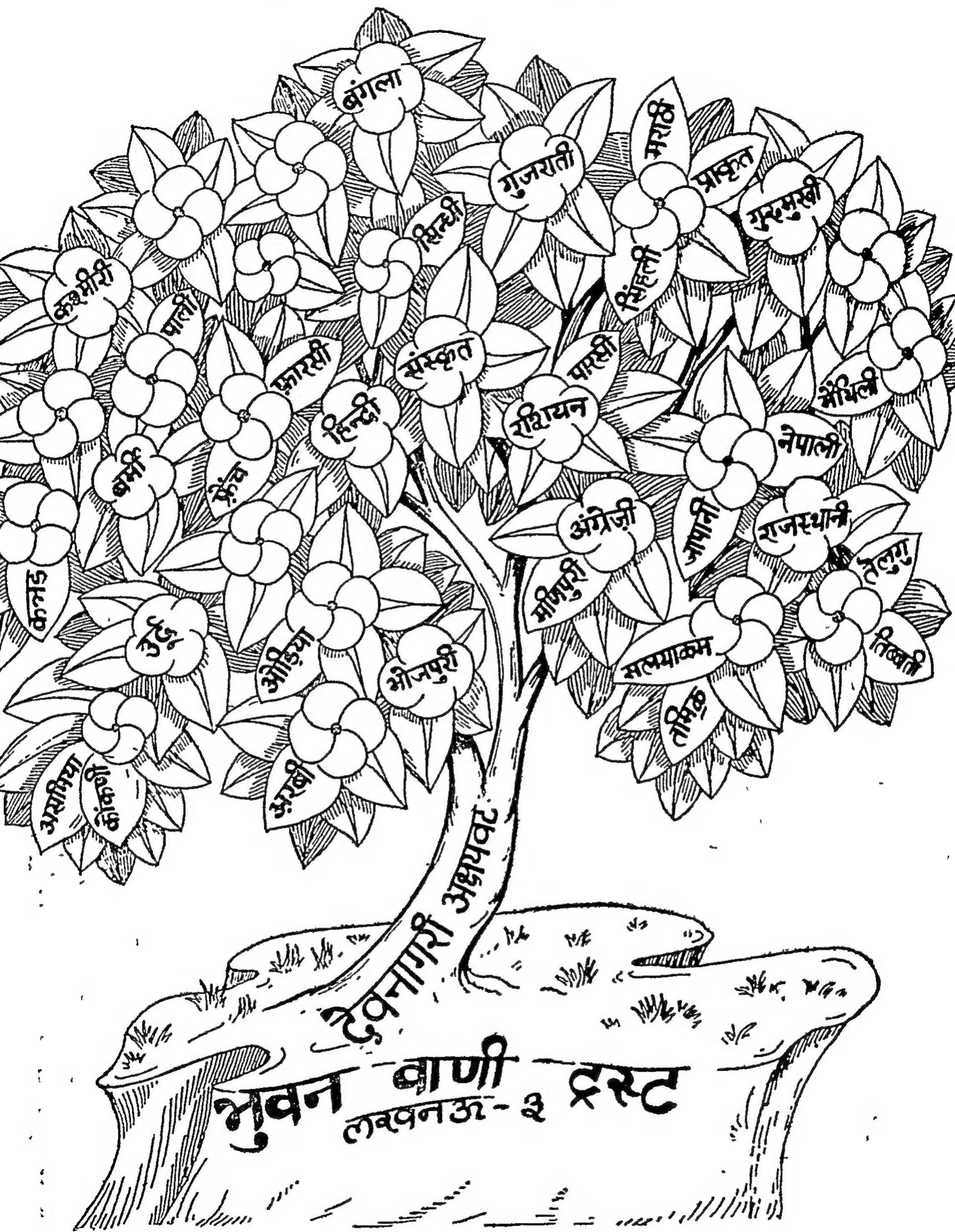
पादपस्य यतस्तस्य स प्रभाव न वुध्यति। तथा ममापि हृदये संशयः सम्प्रजायते ॥
विजानात्येव सर्वं तमन्तर्यामी यतो भवान्। हे स्वामिन्! ममतं काममतो नयतु पूर्णताम् ॥
ईशोऽवदद् याच राजन्! सङ्कोचं परिहाय माम्। न तत् किमपि मे पार्श्वे तुभ्यं देयं न यद् भवेत् ॥

कृपानिधे! दानशिरोमणे! च सत्येन भावेन वदामि नाथ!।
वाञ्छामि पुत्रं भवता समानं गुह्यं प्रभोः किं नृप इत्यवोचत् ॥ १४९ ॥

तस्यामूल्यं वचः श्रुत्वा विलोक्य प्रेम चेदृशम्। दयानिधिस्तमवदद् भवतादेवमेव तत् ॥
किन्तु प्रगत्य कुत्राहं मृगयिष्ये स्वसन्निभम्। स्वयमेव भविष्यामि तस्मात् तव सुतो नृप ॥
बद्धाञ्जलिं समालोक्य शतरूपां हरिस्ततः। ऊचे यद् याच त देवि! वरो यस्ते प्ररोचते ॥
सोचे यन्नाथ! पटुना राज्ञा यो याचितो वरः। कृपालो! रुचिरोऽतीव प्रतिभातः स एव मे ॥
परन्तु धृष्टता नाथ! महतीयं प्रजायते। रोचते सापि भवते भक्तशङ्कर! यद्यपि ॥
भवान् ब्रह्मादिजनकः समग्रजगतः प्रभुः। समेषां चेतसामन्तर्यामि ब्रह्म च वर्तते ॥
इति ज्ञाने प्रजाते तु संशयो हृदि जायते। तथापि नाथ! भवता प्रोक्तं सर्वं प्रमात्मकम् ॥
वर्तन्तेऽत्यन्तमात्मीया भक्ता ये भवतः प्रभो!। त आप्नुवन्ति यत् सौख्यं यां गतिञ्चाप्नुवन्ति ते ॥

सौख्यञ्च तद् भक्तिगती त एव स्वपादगं प्रेम तदेव सर्वम्।
प्रभो! विवेकः स स एव वासः सर्वं ददात्वित्थमिदं भवान् मे ॥ १५० ॥

'प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक संत की बानी ।
सम्पूर्ण विश्व में घर-घर है पहुँचानी ॥'



प्रतिष्ठाता— नन्दकुमार अवस्थी

कथन-सीय सुनि आस गवाँवा ※ दुष्ट, विकट राच्छसिन बुलावा
गमनेउ गेह राखि तहँ चेरी ※ मारहिं कुगति करहिं सिय केरी
साम-दाम सब विधि समुझावैं ※ दुष्ट वचन सिय-मनहिं न भावैं
त्रिजटा दनुजि सिया-हित-करनी ※ निसि लखि सपन कथा सब वरनी
तेहि ढिग सपन सुनैं जब चेरी ※ तरु तजि गयेउँ सुअवसर हेरी
पूँछी मातु, कवन तैं कीसा ※ वरनेउँ तव सहचर्य्य-कपीसा[1]
पुनि तव चिह्न मुद्रिका दीन्हा ※ सो लहि रुदन अतिव सिय कीन्हा
जननि भेंटि लौटति, उर व्यापा ※ करहिं प्रकट निज कछुक प्रतापा
भञ्जि सुधाकानन[2] मन-हारी ※ कोटि-कोटि निसिचरन सँहारी
अखयकुमार आदि कर प्राना ※ लीन, बधे सेनापति नाना
चक्षु-निमेष सकल संहारा ※ मेघनाद रन हित पग धारा

दो० सुवन-लंकपति इन्द्रजित्, समर पहर दुइ साधि।
ब्रह्मपाश संधानि पुनि, असुर लीन मोहिं बाँधि ॥ ७४ ॥

लै प्रस्तुत किय जहँ लंकेसू ※ कहेउँ ताहि दुर्वचन असेसू
मम वध आयसु दीन दशानन ※ सो निषेध किय अनुज विभीषन
तासु वचन मम जीवन राखा ※ जारहु पुच्छ, दनुजपति भाषा

निराश हइल दुष्ट सीतार वचने ※ विषम राक्षसी चेड़ी डाक दिया आने
घरे गेल दशानन ठेकाइया चेड़ी ※ सीतारे मारिते सवे करे हुड़ाहुड़ि
सीतारे बुझाय चेड़ी अशेष प्रकारे ※ कोन मते सीता दुष्ट-वचन ना धरे
त्रिजटा राक्षसी रात्रे देखिल स्वपन ※ सीतार मंगल सेइ चिन्ते अनुक्षन
स्वप्न शुनिवारे चेड़ी गेल तार पाश ※ गाछे थाकि सीता सह करिनु सम्भाष
कोथा हैते एले, मोरे सुधान वैदेही ※ सुग्रीवेर संगे सख्य आमि सव कहि
तोमार अँगुरी ताँरे कराइ दर्शन ※ अंगुरी पाइया सीता करेन रोदन
मेलानि पाइया आमि जबे देशे आसि ※ मने करिलाम, किछु विक्रम प्रकाशि
भांगिलाम मनोहर अमृत-कानन ※ कोटि-कोटि राक्षसेरे वधिनु जीवन
क्रमे बधिलाम तार बहु सेनापति ※ प्राणे मारिलाम अक्षकुमार प्रभृति
चक्षुर निमिषे सब करिनु संहार ※ इन्द्रजित् करिल समरे आगुसार
दु प्रहर तार सगे करिलाम रन ※ ब्रह्मपाशे से आमारे करिल बन्धन
धरियां लइया गेल रावण गोचर ※ रावणेर प्रति गालि दिलाम विस्तर
आमारे काटिते आज्ञा दिल दशानन ※ निषेध करिल तारे भाइ विभीषन
तार वाक्ये आमि तबे एड़ाइ मरण ※ लेजे पोड़ाइते आज्ञा करिल रावण

---

१ सुग्रीव से आपकी मित्रता २ अमृत वन।

मम जारन हित पूछ जराई ※ लंक अगिनि सो घर-घर छाई
लंका अखिल कीन मैं छारा ※ दहकि भसम कहुँ सुलग अँगारा
सोचि विपति-मम, आकुल सीता ※ जहँ सिय, बेगि भयेउँ उपनीता[1]
निरखि मोहिं सिय हर्ष बिशेषू ※ करि कारज प्रस्तुत प्रभु-देसू
शशि घन-ओट यथा छबि-हीना ※ लखेउँ सिया तव बिरह-मलीना
अलस[2] नित्य जिमि विद्या-छीना ※ तिमि सिय-तन विगलित श्री-हीना
जस देखेउँ वरनेउँ तस गाथा ※ लखहु तासु मस्तक-मणि, नाथा!
ललकि बाम कर मणि प्रभु लीन्हा ※ लखि सिय-चिह्न रुदन बहु कीन्हा
दै मणि, सीय कहेउ मम हेतू ※ सुनहुँ यथा, बरनहु कपिकेतू
कहेउ पवनसुत रघुपति-चरना ※ सिय जिमि रोय कहेउ सो वरना
बिलमौ[3] कपि! जब लौं मणि तोरा ※ कछु बतराय हरौं उर-पीरा
तुम पुनि मैं मणि भगिनि सरूपा ※ प्रतिपालेउ भल मैथिल-भूपा[4]
पुनि सादर रामहिं दिय दाना ※ सुता सहित मणि-रतन प्रदाना[5]

दो० भगिनि युगुल निवसैं सदा संग—जनक[6]-अभिलाष।
तुम जेठी! मम माथ रहि अहि-निसि करहु प्रकास ॥ ७५ ॥

लेजे अग्नि दिल लेज पोड़ावार तरे ※ सेइ अग्नि दिलाम लंकार घरे घरे
लंका पोड़ाइया करिलाम छारखार ※ कतक हइल भस्म, कतक अंगार
आमार विपद् भावि भाविछेन माता ※ हेनकाले उपनीत हइलाम तथा
आमारे देखिया सीता हर्षिता विशेष ※ सर्व्वकार्य्य सिद्ध करि आइलाम देश
देखिलाम जानकीरे विरहे मलिना ※ मेघे ढाका शशी यथा लावण्यविहीना
सीता मार देह खानि देखिलाम क्षीन ※ अलसेर विद्या यथा क्षीण दिन दिन
देखिनु शुनिनु यत कहिनु काहिनी ※ लह रघुमणि, तोर मस्तकेर मनि
राम हस्ते मनि दिल पवननन्दन ※ मनि देखि रघुमनि करेन क्रन्दन
मनि दिया कि कहिला जानकी आमार ※ ब'ल ब'ल ओरे हनू, शुनि एकवार
हनूमान ब'ले, प्रभु, जनकनन्दिनी ※ कान्दिते कान्दिते एइ कहिला काहिनी
क्षणेक विश्राम कर वाछा हनूमान ※ मनि सने कथा कहि जुड़ाइ परान
तुमि मनि, आमि मनि, दुइटि भगिनी ※ दोंहे पालिलेन यत्ने जनक - नृमनि
विवाहेर काले पिता परम आदरे ※ अंगुरी करिला दान श्रीरामेर करे
तुमि आमि दुइ भग्नी थाकि एक खाने ※ इहायू पितार इच्छा छिल मने मने
तुमि ज्येष्ठा वलि ताइ तोमारे लइया ※ माथार उपर मोर दिलेन सँपिया

१ उपस्थित २ आलसी की ३ ठहरो ४ राजा जनक ने ५ कन्या और मणि दोनों ही दी ६ पिता की।